





ΣΤΟΙΧΕΙΩΣ  
ΑΛΓΕΒΡΑΣ

11















8/11 M. Joh. Henrici Leder 29<sup>er</sup>

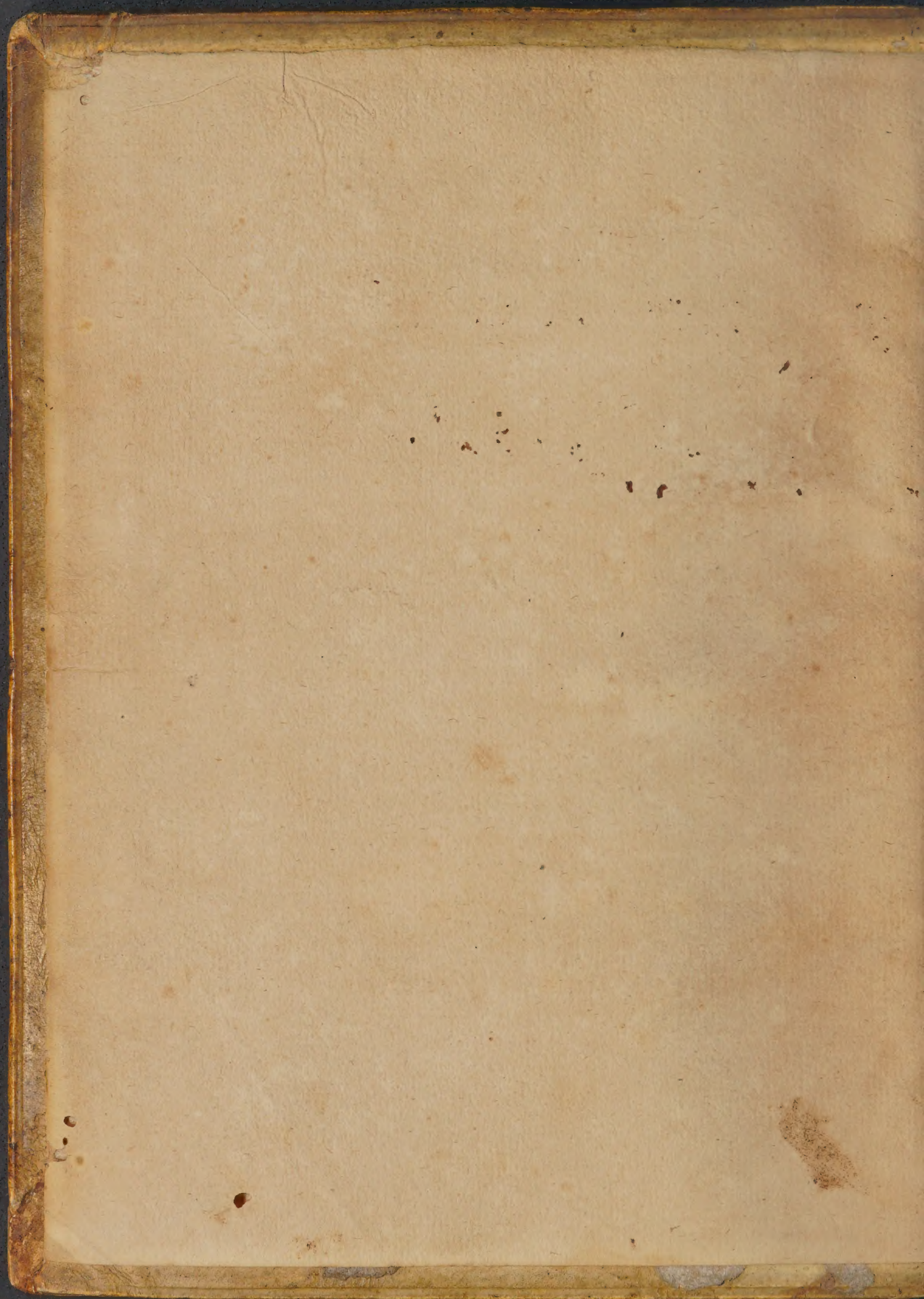
Oswald Weigl  
Antiquariat & Buchhandlung  
Leipzig, Königsstr. 1.

Fritz



4874







# ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ

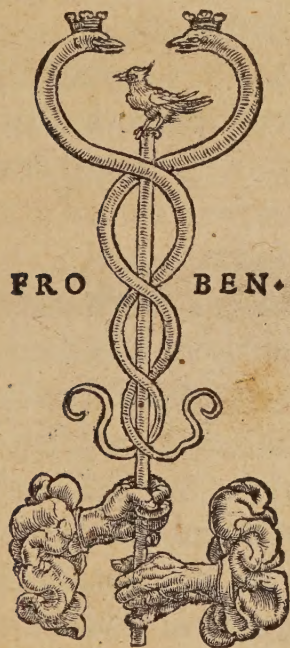
ΛΑΕΡΤΙΟΥ ΠΕΡΙ ΒΙΩΝ, ΔΟΓΜΑ-

των ἐκ ἀρχαίων τῶν ἐν φιλοσοφίᾳ

εὐδοκίμησάντων, βιβλία δέκα,

νῦν πρῶτον ἐκτυπωθέντα.

Diogenis Laertij De uitis, decretis, & respon/  
sis celebrium philosophorum Libri  
decem, nunc primum excusi.



BASILEAE ANNO M D XXXIII



# ΔΙΟΤΕΝΟΥΣ

ΑΔΕΛΦΟΤΗΤΟΣ ΕΛΛΗΝΩΝ

ΕΤΕΡΟΤΕΛΕΣ

ΕΤΕΡΟΤΕΛΕΣ

ΕΤΕΡΟΤΕΛΕΣ

ΕΤΕΡΟΤΕΛΕΣ

ΕΤΕΡΟΤΕΛΕΣ

ΕΤΕΡΟΤΕΛΕΣ

ΕΤΕΡΟΤΕΛΕΣ



ΕΤΕΡΟΤΕΛΕΣ

ΕΤΕΡΟΤΕΛΕΣ

ΕΤΕΡΟΤΕΛΕΣ

ΕΤΕΡΟΤΕΛΕΣ



HIERONYMVS FROBE-  
NIVS ET NICOLAVS EPISCOPIVS  
studiosis S. P. D.



**I**NDIES quasi θεόωνδους qui-  
dam prouehēdi meliora studia  
ardor crescit in nobis. Atq; utinā  
animo par esset facultatū copia,  
quo uidelicet hanc operā in pu-  
blicam studiosorū utilitatē gra-  
tuitò liceret impendere. Abunde magnum fructum  
nobis percepisse uideremur, si nostram industriam  
uiris eruditis & iuuenibus solidioris doctrinæ candi-  
datis, tum gratam, tum frugiferam esse intelligere-  
mus. Sed quicunq; successus erit nostris emolumen-  
tis, certum tamen est in hoc negotio non defatigari.  
Pergemus enim huc eniti, ut quotannis aliquid ex  
officina nostra prodeat utriusq; linguæ studiosis uo-  
luptatem cum utilitate coniūctam allaturū. Damus  
nunc præter cætera Diogenem Laertium de uitis, di-  
ctis, ac dogmatibus illustrium philosophorū, opus  
iam olim manibus omnīū detritum, interprete Am-  
brosio monacho, uiro nō uulgariter erudito, cuiusq;  
industriæ plurimū debent omnes *ολόγοι*. Quum  
enim in hoc uolumen ex plurimis scriptoribus adeo  
breuiter cōgesta sint multa, ut indicata uerius quàm  
2 expressa



# EPISTOLA

expressa uideantur, nemo potuisset bona fide Latinis auribus tradere, nisi uir undiquaq; doctus, & in omni disciplinarū autorūmq; genere non indiligenter exercitatus. Et tamen qui Græca Diogenis cum Ambrosij Latinis cōferre uolet, facile uidebit quantum intersit inter puros fontes, & lacunas licet non omnino turbidas. Quis autē fuerit Diogenes Laertius nōdum ullis uestigijs licuit odorari. Neq; enim illius extat ulla præfatio, sed Aristotelico more protinus ipsam aggreditur rem, nec ab ullo ueterū, quod sane meminerimus, citatur huius autoritas. Laertius dictus est, à Laerte oppido Ciliciæ. Res ipsa declarat hominem fuisse magna ueterum autorū copia *πλουσιώως* instructū, in quibus citandis nequaquam indiligens est: quæ res uehementer esset commodastudiosis, si extarent omnes quorū hic uidemus nomenclaturā. Quanq; uidetur plus studiū adhibuisse in congerēdo, q̃ iudiciū uel in deligēdo uel digerendo. In dictis philosophorū, in quibus plurimum est acuminis, concisior est q̃ optaremus, & interdū ueluti delassatus fateetur se multa prætermittere. Rursus in congerēdis epigramatibus æquo diligentior est, frequenter & suos attexens uersiculos, non multum ad rem facientes, ut suspicari possis in hoc ipsū hanc illi fuisse susceptā operam, ut sua poematia posteris obtruderet. Mirum uero quur Ambrosius hāc operæ par-



# AD LECTOREM

re partem fastidierit, uelut ipso indignam, ut uersus quibus undiq; totum scatet opus, eodem metro redderet, quum ea res faciat non mediocriter ad totius argumenti decorem. Quod si ipsi ad id præstādum uel animus uel usus uel ociū deerat, poterat alijs eā delegare functionem, Quod à Theodoro Gaza factum in libris Aristotelis uertēdis narrant, qui cum illo domesticā habuere familiaritatē. Sed hoc nunc docto cuiuis addere fuerit in procliui, nimirum ipso Diogene Græce publicato. In nōnullis philosophorum dictis est obscenæ rei significatio. Quæ res facit, ut hi libri magis cōueniant uiris eruditīs q̃ ætati teneræ. Sed hoc incōmodum deuorandū est in plerisq; ueterū Græcorum uoluminibus: atq; hic cōuenit medicorū exemplū imitari, qui ex h̃sdem hortis ac pratis legūt herbas salutiferas, in quibus nascitur cicuta & aconitum. Expedit autem & uenena nosse, ne fallant. Exemplar nobis exhibuit, uir Hebraicæ Græcæq; literaturæ professione clarus Matthæus Aurigallus, quod eò testari uisum est, ne & is debita laudis portione fraudetur. Si uiderimus hæc quædamus tanto candore à studiosis accipi, quanto studio nos largimur, alacriores aggrediemur maiora, plūsque commoditatis ut speramus allatura. Basileæ, ex officina nostra, pridie idus Martias, anno à Christo nato M D XXXLII.



# ΟΙΑ' ΕΝΕΙΣΙΝ ΤΩ

ΠΡΩΤΩ ΒΙΒΛΙΩ ΤΩΝ ΔΕΚΑ

Διογύνου Λαορτίου.

|            |    |            |     |
|------------|----|------------|-----|
| Θαλῆς      | 10 | ἀρίσιππ    | 92  |
| σύλωρ      | 21 | ἡγῆσιανοί  | 105 |
| χείλωρ     | 32 | θεοδώρειοι | 107 |
| πιπταῖος   | 35 | φαίδωρ     | 111 |
| βίας       | 39 | ἐνκλείδης  | 111 |
| κλεόβουλ   | 43 | δρόδωρ     | 114 |
| πορίανδ    | 45 | σίλωρ      | 115 |
| αἰώχαρις   | 49 | κρίτωρ     | 119 |
| μύσωρ      | 52 | σίμων      | 119 |
| ὑπὸ μνίδης | 54 | γλαύκωρ    | 120 |
| φοβεκύδης  | 57 | σιμμία     | 120 |
|            |    | κίβης      | 121 |
|            |    | μνίδημ     | 121 |
| Τὸ δὲ τότ. |    |            |     |

|            |    |            |     |
|------------|----|------------|-----|
| ἀναξίμανδ  | 62 | Τὸ τρίτ.   |     |
| ἀναξιμένης | 63 |            |     |
| ἀναξαγόρας | 64 | πλάτωρ     | 131 |
| ἀρχίλα     | 69 |            |     |
| σωκρατής   | 70 | Τὸ τετάρτ. |     |
| ξυνοφῶν    | 84 |            |     |
| αἰσχίνης   | 90 | πρόσιππ    | 180 |
|            |    | ξυνοκράτ.  |     |



|                 |     |           |     |
|-----------------|-----|-----------|-----|
| ξυνοκρωτης      | 183 | κρωτης    | 300 |
| πρλέμων         | 188 | μητροκλῆς | 304 |
| κράτης ὁ ἀθλωαῖ | 190 | ἵππαρχία  | 305 |
| κράτωρ          | 192 | μερίππ    | 307 |
| ἀρκεσίλα        | 194 | μυνίδημ   | 308 |
| βίωρ            | 203 |           |     |
| λακύνδης        | 209 |           |     |
| καρνεαδης       | 210 |           |     |
| κλειτόμαχ       | 212 |           |     |

Τδ πέμωτ.

|            |     |                 |     |
|------------|-----|-----------------|-----|
| αἰσοτέλης  | 214 | ξλώωρ ὁ κιπιδύς | 311 |
| θεόφρας    | 231 | ἦελμ            | 385 |
| ερωτωρ     | 242 | διούσι          | 385 |
| λύκωρ      | 245 | κλεαύθης        | 386 |
| δημήτει    | 250 | σφαῖρ           | 391 |
| ἡρακλείδης | 256 | χεύσιππ         | 392 |

Τδ ὀγδό.

|  |  |            |     |
|--|--|------------|-----|
|  |  | πυθαγόρας  | 404 |
|  |  | ἱμπεδοκλῆς | 427 |

Τδ ἑκτ.

|                    |     |           |     |
|--------------------|-----|-----------|-----|
| ἀντιδρῆς           | 261 | ἐπίχαρμ   | 439 |
| διογῆνης ὁ κυριεύς | 270 | ἀρχύτας   | 439 |
| μόνιμ              | 298 | ἀλκυμαίωρ | 441 |
| ὀνησίκειτ          | 299 | ἵππασ     | 442 |
|                    |     | φιλόλα    | 442 |
|                    |     | ἑνδοξ     | 443 |

Τδ ἑννα.



|            |     |              |     |
|------------|-----|--------------|-----|
| Τὸ ἑνὸς.   |     | πρωταγόρας   | 471 |
|            |     | δογμῆς       | 474 |
| ἡρακλείτης | 447 | ἀνὰ ξαφχ     | 475 |
| ξυνοφανίης | 455 | πύργων       | 476 |
| παρμενίδης | 457 | τίμων        | 497 |
| μέλιος     | 458 |              |     |
| ζώνων      | 459 | Τὸ δευτέρου. |     |
| λόνικιππ   | 461 |              |     |
| δημόκειτος | 463 | ἐπίκουρος    | 501 |

Τέλος





ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ ΛΑΕΡ-  
ΤΙΟΥ ΒΙΩΝ ΚΑΙ ΓΝΩΜΩΝ ΤΩΝ ΕΝ  
ΦΙΛΟΣΟΦΙΑ ΕΥΔΟΚΙΜΗΣΑΝ-  
ΤΩΝ, ΤΩΝ ΕΙΣ ΔΕΚΑ  
ΤΟ ΠΡΩΤΟΝ

ΠΡΟΟΙΜΙΟΝ



Ο ΤΗΣ ΦΙΛΟΣΟΦΙΑΣ

ἔρπον ἑῷιοι φασὶν ἀπὸ βαρ-

βαρῶν ἀρξαι. γεγενῆσθαι γὰρ

πρὸ μὲν πόρ<sup>ρ</sup>αις ματρὸς.

παρὰ ἣ μαβυλωνίους ἢ ἀσι

συεῖοις χαλδαίους, ἢ γυ

μνοσσοφισὰς παρὰ Ἰνδοῖς.

παρὰ τε κελτίς καὶ γα

πόρ<sup>ρ</sup>αις ἔρρε

σεως τ' εὐλο

σοφίας

λαῖταις αὖ κελτικῶν αὖ κελτικῶν καὶ κελτικῶν.

καὶ δὲ φησὶν ἀριστοτέλης ἐν τοῖς μαγικῶ, καὶ σωτίων

ἐν τοῖς εἰρησῶ τρίτῳ τῷ ὁδοχῶς. φοίνικα τε γένε

σθαι ὡς καὶ βράχια. καὶ μολξίμ καὶ λίβω ἀτλαν

τα. αὐγύπτιοι μὲν γὰρ νεῖλου γένεσθαι πᾶσι δὲ ἤφαιστον.

ὁμ ἀρξαι φιλοσοφίας, ἥς αὖ προεσώτας ἰζίας εἶναι

πρυφίτας. ἀπὸ ἣ τὸ τὸ εἰς ἀλέξανδρον τὸ μακεδόννα

ἔτῳ εἶναι μυριαδας τέσσαρας καὶ ὀκτακιοχίλια ὄντα

κῶσια ἔτι ἐξηκοντα τρία. ἐν οἷς ἡλίς μὲν ἐλείψθη γὰρ

a

νέσθαι



νῆσται τειληροσίας ἐβδμηκοντατρεῖς. σελῶης δὲ  
 οὐκ τεληροσίας τειληκονταδύο. ἀπὸ δὲ τῶν μάγων, ὧν  
 ἀρξαι ξωροάστρων ἔννυ πόρσω, ἐρμόδωρ Θ' ἢ ὁ πλά  
 τωνικός ἦν ἔφ' ὅτι μαθηματῶν φησὶν εἰς τὴν τρεῖς  
 ας ἄλωσιν ἔτη γέγονεναι πρὸς τὰς χίλια. ξανθὸν δὲ  
 ὁ λυδὸς εἰς τὴν ξόρξον διαλυασιν ἀπὸ τοῦ ξωροάστρου  
 ἐξακρόσια φησὶ, καὶ μετ' αὐτὸν γέγονεναι πρὸς τὴν  
 νας μάγων καὶ διαδοχῶν ὁσαύτας ἔ' ἄστρα-τύχους  
 καὶ γωβρέας καὶ παζώτας, μείχει γ' ἢ πόρσω ἕως  
 ἀλδζανθῶν καὶ ταλύσεως. λαμβάνουσι δ' αὐτῶν τὰ  
 τῶν ἐλλώων καὶ τρεθώματα, ἀφ' ὧν μνόπηκε φιλοσο-  
 φία, ἀλλὰ καὶ γνῶσις ἀνθρώπων ἤρξε, βαρυσφοῖς πρὸ  
 σάπουντος. ἰδὼν γοῶν παρὰ μὲν ἀθλωαίοις γέγονε μυ-  
σαῖον. παρὰ δὲ θηβαιαίοις λίνον. καὶ ἔννυ, ἐν μολῶν  
 παῖδα φασί. πρὶν δὲ θεογονίαν καὶ σφαῖραν πρὸς  
 γρ. φαῖναι τὴν ἐνὸς τὰ πάντα γίνεσθαι καὶ εἰς ταῦτα  
 ἔννυ ἀναλύεσθαι. ἔσθ' ἔννυ τελευτῆσαι φαλαροῖ, καὶ αὐτῶν  
 ὑπὸ γέγραπθαι τόδε ἔννυ ἐλεγεῖον,  
 ἐν μολῶν φίλον ἦν ἔχει ἔννυ φαληνὸν ἔσθ' ας,  
 μυσσῶν φθίμνον σῶμα ἕως ἔφ' ὅδε τῶν.  
 Ἀπὸ τοῦ πατρὸς δὲ τοῦ μυσσῶν καὶ ἐν μολῶν πίδααι καὶ  
 λαῶνται παρ' ἀθλωαίοις. ἔννυ δὲ λίνον παῖδα εἶν' ἔφ' 4  
 μου ἔ' μύσης ἔσθ' ας. πρὶν δὲ κρονογονίαν, ἡλίσθ' ας  
 καὶ σελῶης πρὸς αἶαν, καὶ ζώων ἔ' καὶ πῶν γνέσεις.  
 τῶν αἶαν ἢ τῶν πρὶν ματῶν ἢ δὲ,  
ὡς πρὸς γι γρόν Θ' ἔσθ' ας, ἔννυ ἅμα πάντ' ἐπεφύκη.  
 ὅθ' ας



ὅθεν λαβὼν ἀναξαγόρας, πάντα ἔφη χεῖματα γέ-  
 νηαι ὁμοῖ. νοῦν δὲ ἐλθόντα, αὐτὰ δεικνυσμῆσαι. ἦν  
 δὲ λίνον τελευτήσαι ἔν ἐνβοίᾳ, ὅξυθνήτα ὑπὸ ἀπὲρ  
 λωνθ, καὶ αὐτῷ ὑπὸ γέγραπται,  
 ὥστε λίνον θηβαῖον ἐδέξατο γαῖα θανόντα,

μῦθος ἑρμηνεύει ἦν ὑπερφανής.

καὶ ὥστε μὲν ἀφ' ἐλλύων ἦρξε φιλοσοφία, ἧς καὶ αὐτὸ  
 ἦ ὄνομα τῷ βαρμαρορ ἀπὲρ ἀπῆται προσφορίαν. οἱ  
 δὲ τῷ ἑρμηνεύει δίδοντες ἐκείνοις, παρὰ φύσει καὶ ὁρ-  
 φία ἦν θρᾶν, λέγοντες φιλόσοφον γέγονεναι ἔστι  
 ἀρχαιοτάτην. ἐγὼ δὲ ἐπὶ τὴν πόλιν θεῶν ἀναγορεύοντα  
 τριαῦτα χεῖ φιλόσοφον καλεῖν, ἔκ οἷδα τίνα Δεῖ  
 προσφορεύειν, ἦν παῦν ἦ ἀνθρώπων πᾶσιν ἀφει-  
 δουῖν ταῖς θεοῖς προσεῖται, καὶ τὰ ἀπὸ αὐτῶν ὑπὸ  
 πινωρ ἀνθρώπων ἀσχετοῦ μὲν καὶ τῷ τῷ φωνῆς  
 ὁργάνῳ. ἔστι δὲ ὁ μὲν μῦθος ὑπὸ γυναικῶν ἀκλῆ-  
 οῦται φησὶ. τὸ δ' ἐν Δίῳ τῷ μακεδονίας ἐπίγραμμα  
 ὑποκρινόμεναι αὐτῇ, λέγον ὅτι,

θρήνηα χρυσολύρῳ τῇ δ' ὁρφία μῦσαι ἔδανται,

ὁρμὴ τῶν ὑπὸ μῦθῳ ζεῦς φολόνητι βίλει.

οἱ δὲ φολοκοντοὶ ἀπὸ μαρβάρων ἀρξαι φιλοσοφίαν  
 καὶ ἦν τῇ τῇ παρ' ἡμέτεροις αὐτῇ ἐκτίθενται. ἔφα-  
 σὶ σὺ μὲν γυμνοσολιστὴς καὶ δρυΐδης ἀνιγματο-  
 δῶς ἀποφθεγομένης φιλοσοφίας, σέβειν θεοὺ καὶ  
 μηδὲν ἡγήσασθαι, καὶ ἀνδρείαν ἀσκήν. σὺ γοῦν  
 γυμνοσολιστὴς καὶ δανάρη ἡγεταφρονεῖν φησὶ ἡλείν



ταρχ<sup>Θ</sup> ἐν τῇ Δωδεκάτῃ. οὗ δὲ χαλδαίσι ποδὶ  
 ἀστρονομίαν καὶ προῤῥήσιμ ἀσχολέσθαι. οὗ δὲ μαδ  
 γου πόρι τε βοῤῥαπείας θεῶν διατρέβειν καὶ θυσί  
<sup>ἀφαι τῶν</sup> <sup>μαλγων</sup> ας καὶ ἐυχὰς, ὡς αὐτοὺς μόνους ἀκονομῆναι. ἀπ  
 φαίνεσθαι τε πόρι τε εὐσίας θεῶν καὶ γνέσεως, ὅς  
 καὶ πύρ<sup>ειν</sup> καὶ γλῶ καὶ ὕδωρ. τῶν δὲ ξοάνων κατὰ  
 γινώσκειν, Ἐ μάλιστα τῶν λεγόντων ἀρῆγας εἶναι  
 θεοὺς ἢ θηλείας. πόρι τε διηχοισιῶν λόγου πρὶν  
 ὁδοῦ, καὶ αἰόσιον ἠγέσθαι πυρὶ δάπτειν, καὶ ὅσιον νο  
 μίζειν μητεὶ ἢ θυγατεὶ μιγνύσθαι, ὡς ἐν τῷ εἰρη  
 σῶ τρίτω φησὶν ὁ σωτήρ. ἀσκήειν τε καὶ μαντικῶν  
 καὶ προῤῥήσιμ καὶ αὐτοῖς θεοὺς ἐμφανίζεσθαι λίγον  
 τας. ἀλλὰ καὶ εἰδῶλων πλήρη εἶναι ἅρ ἀόρα καὶ ἀπῥ  
 ῥοιαν ὑπὸ ἀναθυμιάσεως, εἰσκεινομένων τοὺς ὀφεί  
 σι τῶν ὀξυδερκῶν. προηροσμήματα τε καὶ χρυσοφο  
 ρίας ἀπαφορσύνειν. τὸ τῶν δὲ θεῶν μὲν λουκή. σιβὰς  
 δὲ ἰωνή, καὶ λαλῶν τροφή, τυρὸς τε καὶ ἀφ<sup>τ</sup>Θ ἐν  
 τελῆς, καὶ ἡγάλαμ<sup>Θ</sup> ἢ βακτηρία. ὧ ἡ γυνὴ τὸ φα  
 σὶ τοῦ τυρὸς ἀνῆρου<sup>ν</sup> καὶ ἀπῆδιον. τίω δὲ σοητικῶν  
 μαντεῖαν ὅδ' ἐγνώσαν φησὶν ἀεισοτέλης ἐν ᾧ μα  
 γικῶ, καὶ Δείνων ἐν τῇ πέμπτῃ τῶν ἰσοειδῶν. ὅς καὶ  
 μεθ' ὁμῶν δούλων φησὶ ἅρ ζωροσέλιω ἀσροθύτω  
 εἶναι. φησὶ δὲ εἶδ<sup>ε</sup> καὶ ὁ ἐρμόδωρ<sup>Θ</sup>. ἀεισοτέλης δ' ἐν  
 πρώτῳ ποδὶ φιλοσοφίας καὶ προδυντόρ<sup>ου</sup> εἶναι τῶν  
 αἰγυπίων, καὶ Δύο κατ' αὐτοὺς εἶναι ἀρχὰς ἀγαθὸν  
 Δαίμονα καὶ κακὸν δαίμονα. καὶ τῷ μὲν ὄνομα εἶναι  
 ζεὺς



ρεύς, καὶ ὠρομάσδης. Ἰσθ' δέ, ἄδης καὶ ἀρσιμανίθ'.  
 φησὶ δέ ῥ' ἔρ καὶ ἔρμππθ' ἐν Ἰσθ' πρῶτῳ ποδὶ μά-  
 γωρ καὶ ἔνδξθ' ἐν τῇ ποδιδόῳ, καὶ θεόπρμπθ' ἐν  
 9 τῇ ὀγδόῃ τῇ φιλιππικῶρ, ὅς καὶ ἀναβιώσεσθαι καὶ  
 σὺ μάγ' οὗ φησὶ σὺς ἀνθρώπων καὶ ἔσεσθαι ἀθανά-  
 τος, καὶ τὰ ὄντα ταῖς αὐτῇ ὑπὸ κλήσεσι δ' ἔμνεν.  
 ταῦτα δέ καὶ ἔνδ' ἡμ' ὁ ῥόδιθ' ἰσορεῖ. ἐξαταῦθ'  
 δέ καὶ γ' ἡμ' οὗ σὺ θεὸς εἶν' ἡγ' αὐτὸς. ἡλίαρ-  
χθ' δέ ὁ σπλεὺς ἐν Ἰσθ' ποδὶ παιδείας καὶ σὺ γυ-  
μνοσσοφίας ἀκρίβους εἶν' τῇ μάγωρ φησιν. ἐνίοι ἦ  
καὶ σὺ ἰσθαίης ἐν τῇ εἶν'. πρὸς τούτοις ἡγ' αὐ-  
 γινώσκουσιν ἡροδότ' οἱ τὰ ποδὶ μάγωρ γράψαν-  
 τος. μὴ γὰρ αὖ εἰς τὸν ἥλιον βίβη ξόρξιν ἀκοντί-  
 ζαι, μηδ' εἰς τὴν θάλασσαν πέδας ἡγ' εἶναι, θεὸς  
 ἅπ' τῇ μάγωρ παραδεδομῆς. τὰ μὲν γὰρ ἀγάλ-  
 10 ματα εἰκότως ἡγ' αὐρεῖν. τὴν δέ τῇ αὐγ' ὡπύωρ δύξει φιλοφ  
φιλοσοφίαν εἶν' ῥαυτὴν πόρι τε θεῶν καὶ ἑσθ' δι- φίας αὐγ-  
ημοσιώης. φασκεῖν τὴν ἀρχὴν μὲν εἶν' τὴν ὕλην. εἶ- πύωρ  
τα τὰ τέσσαρα σοιχέια δὲ αὐτῇ δ' ἡμ' αὐθιῶν, καὶ  
ζῶα πινὰ ἀκτελεσθῆναι. θεὸς δ' εἶν' ἥλιον καὶ σε-  
λιώην. τὸν μὲν ὀσιμ, τὴν δ' ἴσιν ἡγ' αὐθιῶν. αὐ-  
νίτ' ἑσθ' αὐτὸς διὰ τε ἡγ' αὐθιῶν καὶ δ' ἡμ' αὐθιῶν  
καὶ ἰδ' ἡμ' καὶ ἄλλων ὡς φησὶ μάνεθθ' ἐν τῇ τῇ  
φυσικῶν ὑπ' ἡμ', καὶ ἐξαταῦθ' ἐν τῇ πρῶτῃ ποδὶ τ'  
αὐγ' ὡπύωρ φιλοσοφίας. ἡγ' αὐθιῶν δὲ ἀγ' αὐθιῶν  
ματα καὶ τε μὲν Ἰσθ' μὴ εἰδ' ἡμ' αὐθιῶν τὴν τοῦ θεῶ μορ-  
 α 3 φλώ



φύ. ἤρ' ἰσμορ γέννητ' ἡ καὶ φθαρτ' ἡ καὶ σφαιροειδ' 11.  
 δι' οὗ ἀσώρας πύρ' εἶν', καὶ τῇ τ' ὅτ' ἡ κελεύσει τὰ  
 ὡδ' γῆς γίνεσθαι. σελυῖω ἐκλείπειρ εἰς ἡ σκίασι  
 ματ' ἡ γῆς ἐμπίπῃσιν, τὴν ψυχὴν καὶ ὡδ' ἀμέ-  
 νειρ εἰ μετεμβαίνειρ, νεοῦ καὶ ἀόρ' τροπὴν ἀρ-  
 τελεῖσθαι, τὰ τε ἄλλα φυσιολογεῖρ ὡς ἐκταῦθ'  
 τὴ καὶ ἀρσαγόρας ἰσοροῦσιν. ἐθόσαν δὲ καὶ νόμου  
 ὑποδ' διηγοισυῖν, ὅς εἰς ἐρμῶν αἰώνηγεν, καὶ τὰ  
 εὐχρησατ' ἡ ζώων θεῶς ἐδόξατο. λίσουσι δὲ καὶ ὡς  
 αὐτὶ γεωμετρίαν καὶ ἀστρολογίαν καὶ ἀριθμητικὴν  
 ἀνέειρον. καὶ τὰ μὲν ποδὶ τ' ἐνέρισετ' ὡδ' ἔχει. Φίλο 12.

*Conf. Plutarch.  
 de Plat. Philo.  
 l. 1. c. 3. p. 876.*  
 ὅτι πρῶτος  
 πυνδαγόρας  
 εὐλοσοφίαν  
 ἀνόμασε

σοφίαν δὲ πρῶτ' ὠνόμασε πυνδαγόρας καὶ ἰαυτ' ἡ  
 φιλόσοφον, ἣν σικυωνί' ἀγαλόμενον λέοντι ἱερ' σικνω  
 νίωμ' τυραννέω ἡ φλιασίωμ'. κατὰ τοῖσιν ἡρακλείδης ὁ  
 πρυπτικός ἦν τῇ ποδὶ τ' ἄπνου. μηδὲν γὰρ εἶν' σοφόν  
ἀνθρώπων ἀλλ' ἢ θεόν. θάπτορ δὲ ἐκλείτ' σοφία, καὶ  
 σοφός ὁ ταύτῃ ἐπαγγελλόμενος, ὅς εἰν' αὐτ' ἡ ἀκρό-  
 τητα ψυχῆς ἀπνηκρυμμένη. φιλόσοφ' δὲ ὁ σο-  
 φίαν ἀπαζόμενος. οἱ δὲ σοφοὶ καὶ σοφισαὶ ἐκταῦθ'  
 γ, καὶ ὁ μόνον ἀλλὰ καὶ οἱ πρηνταὶ σοφισαί, κατὰ τὴν  
 ἡρατίν' ἣν ἀρχιλόχῳ οὗ ποδὶ ομηρορ ἡ ἡσίοδου  
 εἰ σοφοὶ ἐπαινέωρ, οὕτως καλεῖ. σοφοὶ δὲ ἐνομίζοντ' οἷδε. δα 13  
 λῆς, σόλων, πορσίανδρ', ἡλεόβδλ', χίλων, βίας,  
 πιττακός. τῶρις προσεαριθμούνσιν ἀνάλχεσιν ἡ  
 σκύθλῳ, μύσωνα ἡ χλωία, φορεκύνδλῳ ἡ σύριον,  
 ὡδ' ἡλνίδλῳ ἡ ἡρῆτα. ἐνίοι καὶ πεσσίτταρ ἡ πύ-  
 ραντορ



ρατνον. καὶ οἱ μὲν σοφοί. Φιλοσοφίας δὲ δύο γέγονασιν ὅτι φιλοσοφίας δύο ἀρχαί, ἡ τε ἀπὸ ἀναξιμανδρου καὶ ἡ ἀπὸ πυθαγόρου. τῶ μὲν δάλου διακνηρότῳ. πυθαγόρε δὲ φθρεκύδης καὶ θηγήσαρ. καὶ ἐκλαίτῳ ἢ μὲν ἰωνικὴ, ὅτι δαλὴς ἴωρ ὦρ, μιλῆσιθ γρ, καὶ θηγήσαρ ἀναξιμανδρου. ἢ δὲ ἰταλικὴ ἀπὸ πυθαγόρου. ὅτι τὰ πλείεσα καὶ τὴν ἰτα

φιλοσοφίας δύο ἀρχαί, ἡ μὲν ἰωνικὴ, ἡ δὲ ἰταλική

14 λίαν δέ τριφεμεταλήγει δὲ, ἢ μὲν εἰς ἡλειτόμαχον καὶ χρύσιππον καὶ θεόφρασον, ἢ ἰωνικὴ. ἢ δὲ ἰταλικὴ εἰς ἐπίκουρον. δάλου μὲν γρ ἀναξιμανδρου, ὃ ἀναξιμενῆς, ὃ ἀναξαγόρας, ὃ ἀρχίλαθ, ὃ σωκρατῆς, ὃ τὴν ἡδικὴν εἰσαγαγὼν, ὃ οἱ τε ἄλλοι σωκρατικοὶ ἐπλάτῳ, ὃ τὴν ἀρχαίαν ἀναδημίαν συνησάμεν. ὃ ἀποδύσιππο καὶ ξυνοκρατῆς, ὃ πρίμωρ, ὃ ἡρακλῆος καὶ ἡρακλῆος, ὃ ἀριστὶλαθ, ὃ τὴν μέστω ἀναδημίαν εἰσηγησάμεν. ὃ λακύνδης, ὃ τὴν νέαν ἀναδημίαν φιλοσοφῆσας. ὃ καρνεαδῆς, ὃ ἡλειτόμαχθ. καὶ ὡδὲ μὲν εἰς ἡλειτόμαχον. εἰς δὲ χρύσιππον οὕτω μεταλήγει. σωκρατῆς ἀντιογῆς, ὃ διογῆς ὃ λύωρ, ὃ ἡρακλῆος ὃ θηβαῖθ, ὃ ζιῶωρ ὃ λιτῆς, ὃ ἡλεαδῆς, ὃ χρύσιππο. εἰς δὲ θεόφρασον οὕτως. πλάτωνθ, ἀριστοτέλης, ὃ θεόφρασθ. καὶ ἢ μὲν ἰωνικὴ ἴδμεν μεταλήγει γρ τρόπῳ. ἢ δὲ ἰταλικὴ οὕτω. φθρεκύδους πυθαγόρας, ὃ τηλαυγῆς ὃ ὕος, ὃ ξυνοφανῆς, ὃ παρμενίδης, ὃ ζιῶωρ ὃ ἡλεαδῆς, ὃ λούκιππο, ὃ Δημόκριτθ. ὃ πολλοὶ μὲν ἐπὶ ὀνόματθ δὲ, ναυσιφανῆς, καὶ ναυκύδης, ὡρ ἐπίκουροθ.

14V

Τὸρ



ἔστι φιλοσό-  
φωι καὶ αὐτὴ  
κλήσεις αὐτῶν

πίνοντες γὰρ  
φασὶ καὶ πίνοντες

πόθεν ἐκλή-  
θησαν οἱ φι-  
λοσοφοί

μόνη δὲ φι-  
λοσοφίας

Τῶν δὲ φιλοσόφων, οἱ μὲν γὰρ ὀνόμασι δογματικοί, οἱ δὲ ἰβ. ἐφεκτικοί. δογματικοί μὲν ὅσοι ποῦν τῶν πραγμάτων ἀκρφαίνονται ὡς ἡγεταλήπλων. ἐφεκτικοί δὲ ὅσοι ἐπὶ χεῖρας ποῦν αὐτῶν ὡς ἀγεταλήπλων. καὶ οἱ μὲν αὖ τῶν ἡγετέλιπρ ὑπομνήματα. οἱ δ' ὅλως δ' ὑμῖν γρά-  
ψαν, ὡς ποῦ ἡγετὰ πινας σωκράτης, σίλπων, φίλιπ-  
πῶ, μνίδην, πύρξων, θεόδωρῶ, ἡγερεαδῆς,  
βρύσων, ἡγετὰ πινας πυθαγόρας, ἀρίσων ὁ χιῶ,  
πλῶν ὑπὸ σολῶν ὀλίγων. οἱ δὲ ἀνὰ ἑμ συγγράψαν-  
τες, μέλιος, παρεμνίδης, ἀναξαγόρας. πολλὰ δὲ  
ζῶων, πλείω ξυνοφανῆς, πλείω Δημόκριτος, πλείω  
ἀριστοτέλης, πλείω ἐπίκουρος, πλείω χρύσιππος.

Τῶν δὲ φιλοσόφων, οἱ μὲν ἀπὸ τέλεων προσηγορεύθη 17. σαμ, ὡς οἱ ἡλιακοί καὶ μεγαρεοί, καὶ ἡερικαῖοι. οἱ δὲ ἀπὸ τόπων ὡς οἱ ἀγεδαμναῖοι, Ἐσσηνοί. ἀπὸ συμ-  
πλωμάτων δὲ ὡς οἱ ποῦ πατητικοί, καὶ ἀπὸ σκωμμά-  
των ὡς οἱ ἡωικοί. οἱ δὲ ἀπὸ σχολείων ὡς ἡουδαίονια-  
κοί. πινες ἀπὸ οἰκίσεως ὡς οἱ φιλαλήθεις, καὶ ἡεγνη-  
κοί, καὶ ἀναλογητικοί. ἡῖοι δ' ἀπὸ τῶν διδασκαλῶν  
ὡς οἱ σωκρατικοί καὶ ὑπὸ κούρειοι καὶ τὰ ὅμοια. καὶ οἱ  
μὲν ἀπὸ τῆς ποῦ φύσιν πραγματείας φυσικοί. οἱ δὲ,  
ἀπὸ τῆς ποῦ τὰ ἡῖα σχολῆς ἡθικοί. σχολητικοί δὲ,  
ὅσοι ποῦ τῶν λόγων τὸ βρεῖαν ἡγετατεῖβοντες.

Μόνη δὲ φιλοσοφίας τεῖα, φυσικόν, ἡθικόν, σχολη- 18.  
κόν. φυσικόν μὲν τὸ ποῦ ἡσ μὲ καὶ τῶν ἐν αὐτῶν. ἡθι-  
κόν δὲ τὸ ποῦ βίον καὶ τῶν πρὸς ἡμᾶς. σχολητικόν  
δὲ τὸ



δε τὸ ἀμφοτέρωθεν τοῦ λόγου περὶ τοῦ ἐνδοῦ καὶ μίχαι  
 μὲν ἀρχιελεὺς τὸ φυσικὸν εἶδεν ὡς. ἀπὸ δὲ σωκερ-  
 τος ὡς προείρηται τὸ ἡθικόν. ἀπὸ δὲ ζώων το  
 ἐλεῶν τὸ δὲ ἀλεκτικόν. **Τ**ὸ δὲ ἡθικὸν γένονασι καὶ ὅτι δέκα  
 ρίσεις Δείμα, ἀναθημαϊκὴ, κυρτωαϊκὴ, ἡλιακὴ, μεγα ἀερίσεις ἡθικῶς.  
 ρικὴ, λιωικὴ, ἐρετικὴ, ἀλεκτικὴ, ποδπατητικὴ, ἡθικῶς.  
 19. σωικὴ, ὑπὸνύρει. **Α**ναθημαϊκὴς μὲν οὖν τὸ ἀρ-  
 χίας προείρη πλάττειν, τὸ μίσην ἀρκεσίλα, τὸ  
 νίας λακύνει, **κ**υρτωαϊκὴς ἀρκεσίπαι οὗ κυρτωα-  
 ῖος, ἡλιακὴς φαίδωρ ὁ ἡλίου. **μ**εγαρικὴς ἐκλεί-  
 δης μεγαρεὺς, **λ**ιωικὴς ἀντιδύνης ὁ ἀθιωαῖος, **ἐ**ρε-  
 τικὴς μινίδημος, **ἀ**λεκτικὴς ἡλετό-  
 μαχος, **π**οδπατητικὴς ἀριστέλης  
 σαγειρίτης, **σ**ωικὴς ζώων λιπιδός. ἡ δὲ ὑπὸνύρεος  
 ἀπὸ αὐτοῦ λέκεται ὑπὸνύρεος. **ἰ**ππόβοτος δὲ ἐν τοῖς  
 ποδὶ ἀερίσεως ἐννία φησὶν ἀερίσεις καὶ ἀγωγὰς εἶναι.  
**π**ρώτῳ μεγαρικῷ, **δ**ευτέρῳ ἐρετικῷ, **τ**ρίτῳ  
 κυρτωαϊκῷ, **τ**ετάρτῳ ὑπὸνύρεον, **π**έμπτῳ ἀντι-  
 κόρεον, **ἑ**κτῷ θεοδώρεον, **ἑ**βδόμῳ ζωνώνεον τὸ  
 καὶ σωικῷ, **ὀ**γδόμῳ ἀναθημαϊκῷ τὸ ἀρχία, **ἐ**ν-  
 20. νατῷ ποδπατητικῷ. ὅτε δὲ λιωικῷ, ὅτε ἡλια-  
 κῷ, ὅτε ἀλεκτικῷ. τὸ μὲν γὰρ πυρρῶνεον, ὅτε  
 οἱ πλείους προστριβῶνται ὅτε τὸ ἀσάφειον. ἔνιοι  
 δὲ, **η**γὰρ πρὸς ἀρκεσίμῳ εἶναι φασὶν αὐτῷ, **η**γὰρ π  
 δὲ ὅτε. δοκεῖ μὲν γὰρ ἀρκεσίμῳ εἶναι. ἀρκεσίμῳ μὲν γὰρ λέ- πὶ δὲ τῶν ἀε-  
 γομεν τὸν λόγον τινὶ **η**γὰρ τὸ φαινόμενον ἀκροῦ εἶδους  
b βοῦταμ



θούσας ἢ δουλοῦσας ἀκολουθεῖν, καὶ ὁ ἐν λόγῳ αὐτῶν  
 αἰρεῖται τὴν συνεπικλήν καὶ αἰρεῖται. εἰ δὲ αἰρεῖται νοοῖν  
μὴν πρόσκλησις ἐν δόγμασι ἀκολουθίαν ἔχουσι, ὅ  
τ' αὐτὸν προσεφοροῦσι αἰρεῖται. ὅ γὰρ ἔχει δόγματα.  
αἰδεῖται μὴν ἀρχαὶ καὶ διαδοχαὶ, καὶ ῥαυτά μορφή  
τοῦ φιλοσοφίας αἰρέσεις. ἐπὶ δὲ πρὸ ὀλίγου καὶ φησὶ  
ἡ κτικὴ τις αἰρεῖται εἰσὶν ἡ ἀπὸ πρῶτον, τοῦ ἀλε  
ξανδρείως, ἐκλεξαμένης τὰ ἀρίστα ταῦ ἐκείνης τῆς  
αἰρέσεως. ἀρίστη δ' αὐτῶν καὶ φησὶν ἐν τῇ σοικεῖ  
σει, ἡ ἀληθεία τῇ ἀληθείας εἶναι. ὅ μὴν, ὡς ὑφ' ὅ γίγνε  
ται ἡ ἀρίστη. ταῦτα ἡ ἡγεμονίῳ. ὅ δὲ, ὡς Δι' ὅ  
οἶον τὴν ἀκριβεστάτην φαντασίαν. ἀρχὰς τὴν  
ὅλων τὴν τε ὕλην καὶ ὅ πρῶτον, πρῶτον τε ὅ τῶν.  
ὅ δὲ γὰρ καὶ ὑφ' ὅ καὶ πρῶτον καὶ ὅ. τέλος δὲ εἶναι ἐφ'  
ὅ πάντα ἀναφορῆται, ὡς καὶ πᾶσαν ἀρετὴν τε  
λείαν, ὅ καὶ αὐτὴ τῇ τῷ σώματι καὶ φύσει καὶ τῇ  
ἐκτός. λεκτέον δὲ πρὸς αὐτῶν τῇ ἀνδρῶν, καὶ πρὸς  
τῶν γε πρὸς θεῶν.

21.

/ ἐκλεμνή  
 ποταμῶν  
 ἐλεγκτός  
 δεῖται αὐτῶν

/ ποῖς  
 / 1  
 / 2

Σδ. 5.  
 ἐξ αὐτῶν

ΗΝ γίνωσκον ὁ θαλῆς ὡς μὴν ἡρόδοτος καὶ δούρις  
 καὶ Δημόκριτος φασὶν, πατὴρ μὴν θεαμίς.  
 μητὴρ δὲ ἡλεοβοστλίνης, ἐκ τῆς θηλιδωρ, οἱ εἰσὶ φοῖνι.  
 καὶ ἐκ γυνέσαρι τῆς ἀπὸ ἡγάδιμα καὶ ἀγνώριος, καὶ  
 θὰ καὶ πλὴν τῆς φησί. καὶ πρῶτος σοφός ὡνομάσθη  
 ἀρχόντος ἀθλῶνσι Δαμασίῳ, καὶ ὁ καὶ οἱ ἐπὶ αὐτῷ  
 φοῖ ἐκλήθησαν. ὡς φησὶ Δημόκριτος ὁ φαληρεὺς ἐν  
 τῇ τῆς

22.

τῇ τῷ ἀρχόντῳ ἀναγραφῇ. ἐπὶ λιγυροφῇ δὲ ἐν με-  
λήτω, ὅτε ἦλθε (ὡν νειλίῳ ἐκπεσόντι φοινίκης. ὡς Δ'  
οἱ πλείους φασι, ἰθαγγῆς μελήσιθ' ὡν καὶ γῆντος  
23. λαμπροῦ. μετὰ δὲ τὰ περὶ τὰ φυσικὰ καὶ φυσικῆς ἐξήγη-  
σεως, ἔκταται τινες μὲν σύγγραμμα κατέλιπον  
ἐδιδόν. ἢ δ' εἰς αὐτὴν ἀναφορὰς ἐνηντατικὴν ἀστρολογία,  
φώνου λέγεται εἶναι τοὶ σαμίς. καλλιμάχῳ δ' αὖ  
τ' οἶδεν ἐνρίτῳ καὶ ἀφ' ἑνὸς καὶ μικρὰς. λέγων ἐν τῇς  
ἰαμβοῖς οὕτως,

καὶ καὶ ἀμολῆς ἐλέγχο σαθμύσσεσθαι

τοῖς ἀστρονόμοις ἢ πλείοσι φοινικῶν.

καταλείπει δὲ δύο μόνον συνήγαγε πόδι τροπῆς  
καὶ ἰσημερίας, τὰ ἄλλα καταλείπωντα εἶναι δοκιμάσας. ὅσα ἐφ' ὧν  
δοκεῖ δὲ κατὰ τινες περὶ ἀστρολογίας, ἔκταται ἡλια ὅσα ἐφ' ὧν  
ὁ θαλῆς  
καὶ ἐκλείψεις καὶ τροπὰς προειπεῖν. ὡς φησὶν ἐν  
δὴμῳ, ἐν τῇ πόδι τῷ ἀστρολόγου μόνον ἰσορία. ὅθεν  
αὐτὴ καὶ ἐξνοφανῆς καὶ ἐρόδοτος θαυμάζει. μαρ-  
τυρεῖ δ' αὐτὴ καὶ ἐρωκλείτης, καὶ Δημόκριτος.

24. ἔνιοι δὲ καὶ αὐτὴν περὶ ἐπιπερὶ φασι ἀθανάτους  
τὰς ψυχὰς, ὡς ὅτι χρίσθαι ὁ πρὸς τῆς. περὶ δὲ  
καὶ τῶν ἀπὸ τροπῆς ὑπὸ τροπῶν πάροδοι ἐνδε, καὶ  
περὶ τῶν ἡλίου μέγεθος τοὶ σελήνης ἐπὶ ταχο-  
σιοςόν καὶ εἰς ὅσον μόνον ἀπεφύλαξε κατὰ τινες.  
περὶ δὲ καὶ τῶν ἰσορῶν τοὶ μὲν δὲ τριακῶν δὲ  
εἶπε. περὶ δὲ καὶ πόδι φύσεως διελέχθη ὡς πρὸς  
νότον. ἀριστοτέλης δὲ καὶ ἰππίας φασι αὐτὴν καὶ τῇς



ἀφύχοις μεθεσθόναι ψυχὰς, τεκμαιρόμενον ἐκ τῆς  
 λίθου τῆς μαγνήτιδος καὶ τοῦ ὑλίκτου. παρὰ τε αἱ  
 γὰρ πῶν γεωμετρῶν μαθόντα, φησὶ παμφίλη πρὸς  
 τὴν κατὰ γεωμετρῶν λύκλου τὴν τρίγωνον ὀρθογώνιον,  
 καὶ θύραι βοῶν. οἱ δὲ, πυθαγόραν φασὶν, ὡς ἔστιν ἄλλοι 25  
 πολλοὶ δὲ ὁ λογιστικός. ἔστι παρὰ γὰρ πλεί-  
 σον, ἃ φησι καλὴ μαχὶ καὶ ἐν τῇς ἰσόμεναις ὑποφθορᾷ  
 εὐρεῖν τὴν φεγγα, οἷον σηαλίαν καὶ τρίγωνον, καὶ  
 ὅσα γεωμετρικὰ ἔχεται θεωρίας. δοκεῖ δὲ καὶ ἐν τῇς  
 πολιτικαῖς ἀρεταῖς βεβηλυνθῆναι. ἡροίστου γοῶν πῆμ-  
 νος 26  
 ἐκ τῆς ἀρετῆς φαντὶ πρὸς μιλησίῃσι ὑπὸ συμμαχίᾳ ἐκώλυ-  
 σεν, ὃ πόρ' ἑλὼν ἡρακλῆιδης ἰσορεῖ μόνῃσιν αὐτὴν  
 γέγονέναι καὶ ἰσθῆσθαι. ἦνιοι δὲ καὶ γῆμαι αὐτὴν καὶ  
 κίβιστον ὑπὸ ἔχειν. οἱ δὲ, ἀγαθὸν μένειν. τῇ δὲ αἰ-  
 δελφῆς τὴν ὑπὸν θέσθαι. ὅτε καὶ ἐρωτηθέντα ἔλεγε τίς  
 τεκνοποιεῖ, δὲ ἀφελος τεκνίαν εἰπεῖν. καὶ λείγουσιν ὅτι  
 τῇ μητρὸς ἀναγκαζέσθης αὐτὴν γῆμαι, καὶ Δία, ἔλε-  
 γον, ὃ δὲ πῶν καὶ ἰσθῆσθαι. εἰτα ἐπὶ δὲ παρὰ βῆσιν ἐγκειμέ-  
 νης εἰπεῖν, ὃ καὶ πῶν καὶ ἰσθῆσθαι. φησὶ καὶ ὁ ἑρμῆς ἰδρῶν  
 μὲν τῇ δὲ Διὶ τὸν πόρ' ἀπορῶν δὲ ὑπομνημα-  
 τῶν, ὅτι βελόμην δειξάμενος ἔλεγε πλουτεῖν, φο-  
 ρὰς μελλέσθης ἰσοδοῦναι πλουτήσας, ἐμειώσας τὰ  
 ἐλαττωμένα καὶ πάντας σωεῖν χεῖματα. ἀρ- 27  
 χὼν δὲ πάντῃ ὑδρὶ ὑποεσθῆσθαι, καὶ τὴν νόστον  
 ἐμψυχον καὶ δαιμόνιον πλήρη. τὰς τε ὥρας τοῦ ἐν  
 αὐτῇ

Arles Polihic. lib. 1. cap. 7.  
 Cic. de Divin. lib. 1.  
 tom. 4. p. 237. b.

αὐτοὶ φασίμ αὐτὸν ἐνρεῖν, καὶ εἰς τελειοσύνης ἐξηκον  
 ταπέντε ἡμέρας διελεῖν. ὅδεῖς τὲ αὐτοὶ καὶ ἡγεγῆται  
 τῶν πλῶν ὅτ' εἰς αἰγῶν τῶν ἐλθὼν τῆς ἰορδένου συωδὲ  
 τρεῖς. ὁ δὲ ἰορδάνου καὶ ἐκμετρήσαι φησίμ αὐ-  
 τὸν τὰς πυραμίδας ἐκ τῆς σκιᾶς, παρατηρήσαντα  
 ὅτε ἡμῖν ἰσομεγέθεις εἰσὶ. συωβίω δὲ καὶ θρασυβεί-  
 λω τῶν μλησιῶν τυραννῶν καὶ φησίμ μινύης. τὰ δὲ  
 πόδι τὸν τρεῖς, φανερὰ, τὸν ἐνρεβέντα ὑπὸ τῶν ἀ-  
 λειῶν, καὶ ὅλα πεμφθέντα τῆς σοφοῦς ὑπὸ τοῦ δήμου

28. τῶν μλησιῶν. Φασί γὰρ ἰουδαίους πινὰς νεανίσκους  
 βόλον ἀφορᾶσαι παρὰ μλησιῶν ἀλειῶν. ἀναπα-  
 ράξας δὲ τοῦ τρεῖς ἀμφοιούησις ἡμῶν, ὡς οἱ μ-  
 λήσιοι ἐπεμψαν εἰς δελφῶς ὑπὸ θεοῦ ἐχρήσεν οὕτως.  
 ἐκόνε μλησὶν τρεῖς πόδι φοῖβον ἐρωτᾶς;

πόδι τ' ἐνρε-  
 σεως τοῦ τε-  
 ποδὸς δόξα  
 διαφοροῖ

τίς σοφία πάντῃν περὶ τῶν τρεῖς τρεῖς αὐτῶν.  
 δίδουσι ἐν θαλῇ. ὁ δὲ ἄλλω, καὶ ἄλλω ἄλλω ἕως σο-  
 λων. ὁ δὲ ἔφη σοφία περὶ τῶν εἶν' τὸν θεόν, καὶ ἀπὲρ  
 σφλῶν εἰς δελφῶς. ταῦτα δὲ ὁ καλὸς μαχῶν ἐν τῆς  
 ἰορδάνου ἄλλως ἰσορεῖ, παρὰ λεανόφω λαβὼν τοῦ  
 μλησιῶν. βαθυκλῆα γὰρ πινὰ ἀφ' ἧς ἀφ' ἧς ἀφ' ἧς ἀφ' ἧς  
 λιπῆν, καὶ ὑπὸ σκῆψαι δοῦναι τῶν σοφῶν περὶ τῶν.  
 29. ἰδοὺ δὲ δὲ θαλῇ, καὶ ὑπὸ πόριον πάλιν θαλῇ. ὁ δὲ,  
 τῶν διδυμαῶν ἀπὸ τῶν ἀπὸ τῶν ἀπὸ τῶν ἀπὸ τῶν ἀπὸ τῶν  
 ὑπὸ τὸν καλὸν μαχῶν.

θαλῆς με τῶν μεθεῶν πινεῖω δὲ μὲν  
 δίδωσι ὅδε δὲ λαβὼν ἀριστεῖον.



ἢ δὲ περὶ οὕτως ἔχει, θαλῆς διαμύσσει μιλῆσιΘ  
 ἀπὸ λωνι δελφινίω ἐκλινώων ἀεισεῖον δις λαβών. ὁ  
 δὲ ποδινεγκών τῷ θιάλλῳ το βαθυκλί-ου πᾶς  
 θυρίων ἐκκλείει, καὶ φησιν ἔλδουσις ἐν τῷ ποδὶ ἀ-  
 χιλίως, ὅ ἀλῆξωρ ὁ μύδιΘ ἐν ἐννάτῳ μυθικῶν.  
 ἐνδεξΘ δ' ὁ κνίδιΘ καὶ ἐναύθης ὁ μιλῆσιΘ, φασὶ  
 τῷ ἱεροῖσιν τινα φίλων λαβεῖν παρὰ τοῦ υασιλείως  
 κτήριον χερσῶν, ὅπως διδῶ τῷ ὁφωτάτῳ τῷ ἐλ-  
 λινώων. ἢ δὲ δοῦναι θαλῆ, καὶ ποδιελθεῖν εἰς χεῖρ 30.  
 λωνα, ὅρ πωιδάνεσθαι τοῦ πυθὶς τίς αὐτοῦ σφώτε-  
 ρΘ. καὶ ἢ ἀνείπειν μύσωνα ποδὶ ὅ λῆξορην. ὅθεν  
 οἱ ποδὶ ἢ ἐνδεξορ ἀντὶ ἡλιοβόλου τιθείασιν. πλάτῃ  
 Δ' ἀντὶ ποδιμάδου. ποδὶ αὐτοῦ δὴ τὰ δε ἀνείπην ὁ  
 πύδιΘ.

οἱ τῶν οὐρανῶν τινα φημι μύσων ἐν χιλίῳ γινέσθαι,  
 ὅ μᾶλλον κερπίδεσιν ἀφηρότα πόνυαλίμησιν.  
 ὁ δὲ ἐρωτήσας ἡν ἀνάχεσις. ΔαίδαχΘ δ' ὁ πλαι-  
 πωνικός καὶ ἡλῆαρχΘ θιάλλῳ ἀρσαλλῶναι ἔωδ  
 ἱεροῖσιν πιττακῶ, καὶ ὅ τῳ ποδινεχθῶναι. Ἀνδρῶν  
 δ' ἐν τῷ τρείπιδι, ἀργεί-ου ἄθλον ἀφείτῃ τῷ ὁφω-  
 τάτῳ τῷ ἐκλινώων τρείπιδι θέναι. ἡελθῶναι δὲ ἀρ-  
 σόδημον παρπιάτῳ, ὅρ παραχωρήσαι χεῖλωνι.  
 μέμνηται τοῦ ἀριστοδήμου καὶ ἀληγῆΘ οὕτως. ὥς 31.  
 γὰρ Δὴ πρὶ ἀριστοδήμου ὅρ φασιν ἐν ἀπάλαμνον  
 ἐν πᾶσι λόγοις εἰπεῖν,  
 χεῖματ' ἀνῆρ, πνιχρὸς Δ' ὅδεῖς πέλειτ' ἀσθλός.

ἔνιοι δὲ φασὶν ἕως ποταμὸν θρασυβέλω τοῖς με-  
 λησίωρ τυράννω, πλοῖον ἔμπορον ἀρσαλλύει. τα-  
 ρε, ποῦ τῷ κώαν δάλασαν ναυαγῆσαντο, ὅς ἐ-  
 ρον ἐνρεβλύει πρὸς πυνωρ ἀλίας ἔρμ τείπεδα. φανό-  
 σκετο δὲ ποῦ τῷ ἀβλωαίωρ δάλασαν ἐνρεβλύει  
 καὶ ἀναχθῆντα εἰς ἄστυ γημομένης ἐκκλησίας βίαν-  
 τι πέμφλυαι. διὰ τι δὲ ἐν τοῖς ποῦ βίαντο λέξοι-  
 32. μιν. ἄλλοι φασιν ἡφαίστοδον κερ εἶναι αὐτὸν καὶ δοθῆ-  
 ναι πρὸς τοῖς πέλοπι γαμοῦντι. αὐτοῖς τὲ εἰς με-  
 νίλαον ἐλθεῖν, καὶ (ὡς τῇ ἐλγῇ ἀρπαδῆντα ἕως ἀ-  
 λεξανδρῶς ξιφβλύει εἰς τῷ κώαν δάλασαν πρὸς  
 τῇ λακαίνης ἐπρύσης ὅτι ποῦ μάχητο ἔσαι. χρο-  
 νῶ δὲ λεβεντίωρ πυνωρ αὐτόδι γρύττω ὠνησεμένων  
 καταληφθῆναι καὶ ἔρμ τείπεδα. μαχημένων δὲ  
 πρὸς αὐτὸν ἀλίας γνέσθαι τῷ αἰοδον ἕως τῇ κώ. καὶ  
 ὡς ὁ δὲ ἐν ἡνυτορ, τῶς μελησίοις μητροπῆλαι ὅσι με-  
 νύσιν. οἱ δ' ἐπειδὴ δὲ παρδουδύμνοι ἡλοφούρ,  
 πρὸς αὐτὸν κώου πλεμῶσι. καὶ πρὸς ἐκτόρωθιν  
 ποιπλόντων ἐκπίπτει χροσμός δουῶν τοῖς σφωτά-  
 τω, καὶ ἀμφοτέρωι σωηδύσαν θαλῆ. ὁ δὲ, μὲν τῷ πε-  
 33. ρίοδον τοῖς διδυμαίω τίθησιν ἀπὸ λωνι. κώοις μὲν ἐν-  
 τῶν ἐν χροσθῇ ἔρμ τρόπον,  
 μὴ πρὸς τόπον λήξειν νείκετο μὲν ὁ πυνωρ ἐῖ ἰώνωρ  
 πείρ τείπεδα χροσθῶν ὅρ ἡφαιστοῦ βάλε πρὸν τῷ  
 ἐκ πρὸς πῆμψιν καὶ ὅς δὲ δόμον αἰνδρὸς ἵκηται  
 ὅς δὲ δάκηκε τὰ τ' ὄντα τὰ τ' ὄντο μὲν πρὸ τ' ἵόντα.  
 μὲν



μλησίοις δέ. ἔκγονε μλήτῃ τέρπῃ δ' ὅτι ποῦ φοῖβόν  
 ἔρωτᾷς; ὡς προείρηται. καὶ τόδε μὲν οὕτως. ἐρμιπ  
 πῶ δ' ἐν ῥῖς βίοις, εἰς ἑῶν ἀναφορῇ ὃ λεγόμε  
 νομ ὑπὸ πινῶ πόρι σωκράτους. ἔφασκε γὰρ φασί  
 τριῶν τῶ τῇ ἐνεία χεῖρ ἔχειν τῇ τύχῃ. πρῶτον  
 μὲν ὅτι ἀνθρώπων ἐχθρόμην καὶ ὃ θηρίον. εἶτα ὅτι ἀ  
 νὴρ καὶ ὃ γυνή. τέρπῃ ὅτι ἔλλω καὶ ὃ βαρύνω. λέ  
 γεται δ' ἀγόμην ὑπὸ γράος ἐν ῥῇ οἰκίας ἵνα τὰ  
 ἄλλα κατανόησιν εἰς βόθρον ἐμπόειν, καὶ αὐτῶ ἀνοι  
 μώξαντι φαῖναι τῶν γραῦν. σὺ γὰρ ὦ θαλὴ τὰ ἐν πρ  
 σὶν ὃ δωάμην ἰδέειν, τὰ ὡδ' τοῖς ἔραυθ' οἷσι γνῶ  
 σεσθαι; οἳ δὲ δ' αὐτῶν ἀστρονομέμνον καὶ τίμων, ἔ  
 ῥῃ ῥῖς σίλλαις ἐπαινέει αὐτῶν λέγων,  
 οἷον ἔπειτα δάλητα βῶν βόρον ἀστρονόμημα.  
 τὰ δὲ γεγραμμένα ὑπὸ αὐτοῖς φησὶ λόβων ὁ ἀργεῖ  
 εἰς ἔπη τείνειν δὲ κήσια. ὡς γεγράφται δ' αὐτοῖς  
 ῥῇ εἰκόνῃ τὰδε,

τόμδε θαλὴ μλήτῃ ἱὰς θείας ἀνδείξεν

ἀστρολόγον πάντῃν περὶ αὐτῶν βολία.

τῶν τε ἀδελφῶν αὐτοῖς τὰδε εἶν. ὃ πὰρ πρὸς ἔπη 35.

ἀκροβύμα  
 τα θαλῶ

φρονίμην ἀπεφύλατ' Δόξαν. ἐν τῇ μαντίῃ σφόν,  
 ἐν τῇ κεδνῶν αἰετῶν λύσεις γὰρ ἀνδρῶν κωτίλων γλώσ  
 σας ἀποδαντλόγους. φόρεται δὲ ἀκροβύματα  
 αὐτοῖς τὰδε. περὶ αὐτῶν τῶν οὐτῶν θεός. ἀχύνων  
 γὰρ κήλυσον κήσμον. πρῶτον γὰρ θεῶν μέγιστον τό  
 πον. ἅπαντα γὰρ χωρεῖ. τάχισον νοῦς. δὲ παντὸς  
 γὰρ

γὰρ τρέχει. ἰαχυρότατον ἀνάλυκν. ἰερατεῖ γὰρ πάν-  
 τῶν. σφώτατον χερόν. ἀνδρείσκει γὰρ πάντα. ὁ  
 δὲ ἴφν ἔρ δάνατον διαφόρειν το ζῶ. σὺ ἐν ἴφν πρ  
 36. δια τί ἐκ ἀρβυήσκει; ὅτι ἴφν ὁ δὲ διαφόρει. πρὸς  
 ἔρ πυθόμνον τί πρότορον ἰγόνει νύξ ἢ ἡμόρα, ἢ  
 νύξ ἴφν μᾶ ἡμόρα πρότορον. ἡρώπσέ τις αὐτῶν εἰ-  
 λήθοι θεὸς ἀνθρώπων ἀδικῶν. ἀλλ' ὁ δὲ διανοοῦμε-  
 νος ἴφν. πρὸς ἔρ μοιχὸν ἐρόμνον εἰ ὁμόσει μὴ με-  
 μοιχόνειναι, ὁ χεῖρον ἴφν μοιχείας ὑπορκία. Ερω-  
 τηθεὶς τί δύσκολον, ἴφν ἑαυτὸν γινώσκει τί ἢ ἴφν  
 λον, ἢ ἄλλω ὑποτίθεσθαι. τί ἡδιστον, ἢ ὑπὸ τυγχάνειν.  
 τί ἢ θείον, ἢ μὴ τε ἀρχὴν ἔχον μὴ τε τελουτῶν. τί  
 δύσκολον εἴη τεθιαμενός, γόροντα ἴφν τύραννον.  
 πῶς αὖ τις ἀτυχίαν ἔασα φόροι, εἰ σὺ ἐχθερὸς χεῖ-  
 ρον πρᾶσσοντας υἱέρι. πῶς αὖ ἄριστα καὶ δικαιοτά-  
 τα βιώσκειν, εἰ ἂν ἄ τις ἄλλοις ὑπὸ πμῶν, αὐτὸν μὴ  
 37. δρῶν. τίς ἐν δαίμων, ὁ ἢ μὴν σῶμα ὑγίης, τῶν δὲ  
 ψυχῶν ἐπαίδουτος. φίλων παρόντων καὶ ἀπέν-  
 των μεμνήσθαι φησί. μὴ τῶν ὅτιν καλωπίζεσθαι,  
 ἀλλὰ τίς ὑπὸ τῆς δόμας εἶναι καλόν. μὴ πλούτου  
 φησί κακῶς. μὴ δὲ διαβαλίτω σε λόγος πρὸς σὺ  
 πίσεως λεηρονωτηκότας. ὅς αὖ ἐραὶ σὺ εἰσφύγης  
 φησί τίς γονεῖσι, σὺ αὐτῶν προσδέχῃ καὶ παρὰ  
 τῶν τέκνων. ἔρ νεῖλον εἶπε πληθύνειν ἀνακοπτομέ-  
 νων τῶν ῥόμω τῶν ὑπὸ τῶν ἐπισίων ἐναντίων ὄν-  
 τῶν. φησί Δ' ἀρμόδιος ἔν τις χερσιν οἰς, γέγνη-





αὐτῶν χεῖλωνα. ποῦ δὲ τῶν ἐπὶ αὐτοῖς, ἄξιον γὰρ ἐν ταῦτα ποῦ τῶν ἐπὶ  
 καθολικῶς ἀκείνων ὑπὸ μνηστῶναι, λόγοι φόρονται σοφῶν δόξα  
 τριῶν. δαμῶν ὁ ὑπερῶν αὐτῶν γράφως ποῦ τῶν διὰ  
 λεσφόρων πᾶσι ἐγχαλῆ. μάλιστα δὲ τῶν ἐπὶ αὐτοῖς. ἀνα-  
 ξιμῆς δὲ πάντα ὑπὸ μνηστῶναι τριηκτῶν. ὁ δὲ διηκτῶν  
 χῶν ὅτε ὁφθῶν ὅτε διλεσφόρων φησὶν αὐτῶν γὰρ  
 νῆναι. σωθῶν δὲ πρὸς καὶ νομοθετηνῶν. ἀρχιπι-  
 μὸς τε ὁ συρακοῦσι ὁμιλίαν αὐτῶν γράφων πα-  
 ρὰ κυφίλω, ἢ ἔα αὐτὸς φησὶ ποῦ τυχεῖν. Εὐφορῶν ὅ  
 παρὰ κροίσω πλὴν θαλῶν. φασὶ δὲ πινῶν καὶ ἐν πα-  
 νωνίῳ καὶ ἐν κροίῳ καὶ ἐν δελφοῖς σωελθεῖν αὐ-  
 41. τῶν. δόξα φωνοῦνται δὲ καὶ ἀρχαῖς αὐτῶν, καὶ ἄλ-  
 λων ἄλλω φασὶν εἶναι, ὡς ἐκείνο.

ὡς λακεδαίμονι χεῖλων σοφός, ὅς τὰ δ' ἔλθῃ.

μηδὲν ἄγαλ, καὶ εἰς πάντα πρόσθεσι καλὰ.

σασιάζεται δὲ ἔα ποῦ τῶν ἀειθμῶν αὐτῶν. λεανδρίος δόξα διὰ φο-  
 μὴν γὰρ ἀντὶ κλεοβόλου καὶ μύσων, λεόφαντον ροὶ ποῦ ἀει-  
 φορσιὰς, λεβέδιον ἢ ἐφίσιον ἐγχεῖν, καὶ ὑπὸ μνη- θμοῦ αὐτῶν  
 δὴν γὰρ κρῆτα. πλὴν τῶν δ' ἐν προταξόρα μύσων  
 ἀντὶ ποῦ αὐτῶν. Εὐφορῶν δὲ ἀντὶ μύσων ἀνα-  
 χαρσι. οἱ δὲ, καὶ πινδαφόραν προσγράφουσι. δικά-  
 αρχῶν δὲ τεσσάρων ὁμολογημένων ἡμῖν παραδί-  
 δωσι. θαλῶν, βίαντα, πιττακὸν, σόλων. ἄλλων δὲ  
 ὀνομαζοῖται, ὡς ἐκλέξατο τρεῖς. ἀεισόδημον, πέμ-  
 φλον, χεῖλων λακεδαίμονιον, κλεοβόλον, ἀναχάρ-  
 σιν, πόριανδρον. ἔτι οἱ προσβίβασιν ἀκουσίλαον καὶ



βα ἢ σηάβεα, ἀργείοι. ἔρμυπποθ ἐν τῷ πόδι τῷ σὺ 42.  
 φῶν ἑωτα καὶ δεηα φησίμ. ὦμ σὺ ἑωτὰ ἄλλους ἄλ-  
 λως αἰρεῖσθαι. εἴη δὲ σόλων, θαλλῷ, πιττανόρ, βίαν-  
 τα, χεῖλων, κλεόβουλον, πόριανδρον, ἀνάχαρτον,  
 ἀκουσίλαον, ὑπὸ μινίδην, λεόφαντον, φῶρεκύνδην, ἀρ-  
 σόδημον, πυθαγόραν, λάστον, χειρμαντίδην ἢ συμβεῖ-  
 νος ἢ ὡς αἰετοδόξον. χαβείνου, ἔρμου, ἀναξαγόραν,  
 ἰππόβοτον. Δ' ἐν τῇ τῷ φιλοσόφῳ ἀναγραφῇ, ὅρ-  
 φία, λίνον, σόλων, πόριανδρον, ἀνάχαρτον, κλεόβου-  
 λον, μύσωνα, θαλλῷ, βίαντα, πιττανόρ, ἐπίχαρτον,  
 πυθαγόραν. φέρονται δὲ ἐν τῷ θαλάτῳ ὑπὸ σολαί αἰδε-  
 Θαλῆς Φῶρεκύνδης.

Πωδάνομαί σε πρῶτον ἰώνων μέλει λόγους ἀμ 43.  
 φὶ τῷ θείῳ χρημάτῳ εἰς σὺ ἐλλυας φαίνει. ἐ-  
 τάχα μὲν ἡ γνώμη τῇ δικαίῃ δὲ τ' ἑξωτὴν καταβίαν  
 γραφῇ, καὶ μάλλον ἢ ἐφ' ὅριστον ὑπὸ τῇ πρὸς χεῖ-  
 μα εἰς δὲ ἔρμυ. εἰ δὲ τῇ ἡδονῇ, ἐθέλω γνῶσθαι  
 λόγον χλωτῆς πρὸς ὅπως γράφεις, καὶ ἡμ κελδύνης  
 παρὰ σὲ ἀφίξομαι δὲ ἔρμυ. ἢ γὰρ αὖτ' ἐφ' ἑρμῆς εἰν  
 μὲν ἐγώ τε καὶ σόλων ὁ ἀθλῶν, πλώσαντες μὲν  
 δὲ κρήνῃ καὶ τῷ κείνῳ ἰσορίῳ, πλώσαντες δὲ δὲ  
 αἰγῶν ὁμολήσαντες τῇ ἐκείνῃ, ὅσοι ἰδρῶν τε  
 καὶ ἀστρονόμοι. παρὰ σὲ δὲ μὴ πλώσαι μὲν. ἢ ξείνῳ 44  
 ὁ σόλων, ἢ ὑπὸ τῇ πρὸς. σὺ μὲν τῇ χωροφιλίῳ, ὅλιν  
 γὰρ φοιτεῖς δὲ ἰωνίῳ. δὲ σὲ πρὸς ἰσχυρὸν ἀνδρῶν ξεί-  
 νων. ἀλλὰ ὡς ἔλθῃμαι ἐνὶ μουσῷ χεῖματι πρόσκειαι,  
 τῇ

ἡ γραφή. ἡμεῖς δὲ οἱ μηδὲν γράφοντες ποδὶ χω-  
ρίοις τῷ τε ἱμαδίᾳ καὶ ἀσίῳ.

Θαλῆς Σόλωνι.

Υπαρξὰς δὲ ἀθλωαίων δούκεις αὐτοὶ μοι ἀρμοδίῳ  
παταγῇ μλήτω οἶον πρίεσθαι παρὰ τῆς ἀρχῆς  
ὑμῶν. καὶ γὰρ ἐν ταῦτά γε δεινὸν ἔστιν. εἰ δὲ ἀσχε-  
λήσεις ὅτι καὶ μλήσοι τυραννεόμεθα, ἐχθαίρεις γὰρ  
πάντας αἰσυνήτας, ἀλλὰ τότῳ αὖν (ὡς τῆς ἐταί-  
ροις ἡμῶν ἡγεταβιδός. ἐπέσειλε δὲ σοὶ καὶ βίης ἡμεῖς  
δὲ περιώλω, σὺ ἢ εἰ προσωλέσθῃς γὰρ τὸ περιώλω  
ἄστυ κείδι οἰκίειν, καὶ αὐτὶ παρὰ σε οἰκήσουσιν.

ΣΟΛΩΝ

45. **Σ** Ολων δὲ κινεσίδος ἀλαμῖνιΘ, πρῶτον μὲν τῷ  
σεισάχθῃαν εἰσηγήσατο ἀθλωαίοις. τὸ ἢ ὡς λύ-  
πρωσις σωμάτων τῶν τε καὶ ὑπὸ μαλ' τῶν. καὶ γὰρ ὡς σῶ-  
μασι μὲν εἰς ἀνείχοντες, καὶ πολλοὶ δὲ ἀρχαίαν ἐβήτδοον.  
ἰωτὰ δὲ τὰ λαλάντῃν ὀφειλομένων αὐτῶν πατρῶων  
συμπεχώρησε πρῶτον, καὶ σὺ λοιπὸν τὸ ὅμοιον πρῶτον  
τρεφετέον. καὶ ἔπειτα ὁ νόμος ἐκλήθη σειςάχθῃα.  
φανερὸν δὲ ὅτι. ἐπειτα σὺ λοιπὸν νόμος ἐβήτδοον  
δὲ μακρόν αὖ εἰς δεξιότατον, καὶ δὲ σὺ ἄξονας ἡγε-  
46. τῶν. τὸ δὲ μέγιστον, τὸ πατρίδῃ αὐτῶν ἀμφοισὶν  
τομῆς, δηλονότι τὸ σαλαμῖνιΘ, ὡς τε ἀθλωαί-  
ων καὶ μεγαρίων, καὶ πολλοὶς τῶν ἀθλωαίων ἐπὶ  
νότῃν ὡς τῆς πλείοις, καὶ τῇ ἡμετέρας μὲν εἰς τῆς ἐπὶ  
συμβολούσει ποδὶ σαλαμῖνιΘ μάχεσθαι, δαυαίτῃ



ζημιῶνται, ὅτι ὁ μαινέσθαι προσποιεσθῆναι ἢ σε  
φανωσάμεν, εἰσέπυσεν εἰς τὴν ἀγοράν. ἔνθα τις  
ἀθλωαίοις ἀνέγνω ὅτι τοὺς ἡέρναι τοὺς σωτείνοντα  
πῶς σαλαμῖν ἐλεγεία, καὶ παρώρμησεν αὐτοῦ.  
καὶ αὐτοὺς πρὸς τοῦ μεγαρίας ἐπλήμνησαν, καὶ ἔνι  
κωρ ὅτι σόλων. ὡς δὲ τὰ ἐλεγεία τὰ μολισα καὶ 47.  
ἡλμυρὰ τῶν ἀθλωαίων ταῦτα.

εἰς Δὴ τὸτ' ἐγὼ φολεγαίνεσθαι ἢ σικινίτης  
ἀντί γ' ἀθλωαίς πατρίδ' ἀμειψάμεν.

Εἰς Saml.  
τῆς Σαλαμῖνος φέρει  
ἔπειτα γὰρ αὐτὸς φησὶ ἡδὲ μετ' ἀνθρώποις γήνοιν.  
ἀπὸ τοῦ ὅτι ἀνὴρ τῶν σαλαμῖν ἀφῆν τῶν. ἔπειτα  
ἱορῶν εἰς σαλαμῖνα, μαχιστοὶ πῶς νῆσος  
ἰμορῶν, χαλεπὸν τ' αἰσχρὸν ἀποσώμενοι.

ἔπεισε δὲ αὐτοῦ καὶ τὴν ἐν θρακίῃ χερσὶν ὀνησθῆναι προ-  
σκήσασθαι. ἵνα δὲ μὴ δουρίῃ βίᾳ μόνον ἀλλὰ καὶ 48.  
καὶ τὴν σαλαμῖνα λεκτῆσθαι, ἀνασηλάσας τινὰς τά-  
φους, ἰδὲξεν τοῦ νεκροῦ πρὸς ἀναγλὰς ἱεραμμί-  
νης, ὡς ὡς ἔθ' ὁ δὲ πῆρ ἀθλωαίοις, ἀλλὰ καὶ αὐτοῦ  
τοῦ τῶν φθου πρὸς ἑὸν βλέπντας, καὶ ἄρ' τῶν Δὴ  
μωρ τοῦ χρηματισμοῦ ἐγχεχαρὰ γένετο, ὃ πορ-  
ῶν ἱστορ ἀθλωαίων. ἔνιοι δὲ φασὶ καὶ ἐγγράφαι αὐ-  
τὸν καὶ τῶν τοῦ τοῦ οἰκιστοῦ τοῦ οἰκιστοῦ, μὲν τὸν  
αἰῶς δ' ἐκ σαλαμῖν ἄλλ' Διοναΐδεος νῆας,  
εἴσε δ' ἄγων ἵν' ἀθλωαίων ἴσαντο φάλαγγος.  
τοὺς δὲ λοιποὺς προσεῖχεν αὐτοῦ ὁ Δῆμος, καὶ ἠδὲ  
ὡς καὶ τυραννείῳ ἤθελεν παρ' αὐτοῦ. ὁ δὲ, ὅτι χ' εἴλετο 49.  
καὶ ἀλλὰ

καὶ ἀλλὰ καὶ πεισίερα γὰρ ἢ συγγενὴ καὶ δάφνησι σωί  
 σκευάτης, προαιδομένοιο ἢ ἐφ' ἑαυτοῦ δεικνύου  
 σεν. ἤξας γὰρ εἰς τινα ἐκκλησίαν μετὰ θώρακιο καὶ  
 καπνίδιο προέειπεν αὐτοῖς τὴν ἐπίθεσιν τοῦ πεισι-  
 εράτου, καὶ ὃ μόνον ἀλλὰ καὶ βοηθεῖν ἐριμὸν εἶναι  
 λέγων ταῦτα. ἀνδρόδε ἀθλωαῖοι. τῶν μὲν, σοφώτορος.  
 τῶν δὲ, ἀνδρειότορο εἰμὶ. σοφώτορο μὲν τῶν τῶν  
 ἀπάτῃ πεισιεράτου μὴ σωισιν τῶν. ἀνδρειότορο  
 δὲ τῶν ὑπὸ σαμῶν μὲν, ὅτε δέος δὲ σιωπῶν τῶν. καὶ  
 ἡ βουλὴ πεισιεράτιοι οὐκ οὐδὲ, μαίνεσθαι ἔλεγον αὐ-  
 τοῖς, ὅθεν εἶπε ταυτί.

Δείξει δὲ μακίλῃ μὲν ἐμὴν βαυὸς χρόνιο ἀσπίς

Δείξει, ἀληθείης ὅτι μέσον ἐρχομένης.

50. τὰ δὲ ποῦ τῇ τοῦ πεισιεράτου τυραννίδιο περὶ  
 γυντὸ αὐτοῦ ταῦτα εἶναι.

ἐκ νεφέλης φόρεται χιόνιο υἷα ἢ δὲ χαλάρης,

μεροντή τ' ἐκ λαμπρῆς γίνεται ἀσδροπῆς.

ἀνδρὸς δ' ἐκ μεγάλων πόλις ὅλυν. εἰς ἣ μονάρχου

Δῆμοιο ἀνδρείη δουλοσυώλῃ ἐπιδεν.

ἦδ' ἡ ἑαυτὴν ἑραρυῶνς ὃ πείθωρ ἔθηκε τὰ ὅπλα περὶ  
 τοῦ στρατηγίου, καὶ εἰπὼν ὡ πατεῖς βεβοήθηκά σοι καὶ

λόγω δ' ἐργῶ, ἀπὲρ πλοῦσεν εἰς αἰγυπτον, καὶ εἰς λυ-  
 πτον. καὶ πρὸς κροῖον ἦλθεν, ὅτε καὶ ἐρωτηθεὶς ὑπὸ αὐτῇ

τίς σοι δοκεῖ ἐν δαίμων, Τέλος ἔφη ἀθλωαῖος, καὶ κλεό-

51. εἰς καὶ εἰ τῶν, δ' τὰ θρυλλόμενα. Φασὶ δὲ ἴνδ' ὅτι κρο-

μήσας ἑαυτὸν ὁ κροῖος παντράτωρ καὶ καδίσας

εἰς τὸν



ἐπὶ κείσιν σό-  
λων<sup>Θ</sup> πῶς  
λεγοῖσιν

εἰς τὸν θρόνον, ἤθεο αὐτὸν εἰπὶ θάμα καὶ ἄλλιοι τιθίαι  
ταί. ὁ δὲ, ἀλεκτερόνας εἶπε, φασίαν δὲ, καὶ ταῶς. φυ-  
σικῶ γὰρ αὐτῷ λεκρόσμιλνται, καὶ μυρίω καλῶσι.  
ἐκείθιν τι ἀπαλαγείς ἐγγύθιν ἐν λιλικία, καὶ τῶν  
ῥοκισιν ἡν ἀπὸ αὐτῶν σόλους ἐκάλουν. ὀλίγους τέ π-  
νας τῶν ἀθλωαίων ἐγκατώκισιν, οἱ τοῦ χρόνου τῶν  
φωλῶν ἀπεξγνωθγῶν σολοικίζειν ἐλίχθησαν. καὶ  
εἰσὶν οἱ μὲν ἔνθεν σολῆες. οἱ δὲ ἄλλοι κύπρου σόλιοι. ὅτε  
δὲ τὸν πεισίστρατον ἔμαθον ἦδη τυραννῆν, ταῖς  
ἐγγράφει πρὸς αὐτὸν ἀθλωαίαν.

εἰ δὲ πεπνυθῆτε δεινὰ Διὶ ὑμετέρῳ κακότητι,

μή τι θεοῖς τῶν μοῖραν ἐπαμφορέτε.

αὐτῷ γὰρ τῶνδε ἠνέχσατε δύσια δόντες,

καὶ δῶκε ταῦτα κακῶν ἔχετε διδωσύνῳ.

ὑμῶν δ' εἰς μὲν ἔκαστος ἀλώπεινος ἔχνεσι βαίνει.

σύμπασι δ' ὑμῶν κρύφος ἔνεσι νόθος.

εἰς γὰρ γλῶσσαν ὁρᾶτε, εἰς ἔπος αἰόλον ἀνδρός,

εἰς ἔργον δ' ὅδ' ἐμὲ γιγνόμενον βλέπετε.

καὶ ἔργον μὲν ταῦτα. πεισίστρατος δ' αὐτῶν φύγοντι  
εἴθερ ὡς εἰμαι τὸν τρόπον.

Πεισίστρατος Σόλωνι.

Οὐτε μόνος ἐμὲ τῶν τυραννίδων ἐπεθίμην, ὅτε

ὥς ὁ προσήγορ μοι, γῆνυσ ὄντι τῶν κοδριδῶν. ἀνέ-

λαβον γὰρ ἐγὼ ἀόμωσαντες ἀθλῶνται παρῆξιν κῶ-

δρωτὶ καὶ τοῦ ἐκείνου γῆνι, ἀφείλοντο. ταῖς τε ἄλλα

ἀμαρτανῶν ὅδ' ἐμὲ ἢ πόδ' ἀνθρώπου ἢ πόδ' ἀνθρώπου. ἀλλὰ

καθό

καὶ ὅτι σὺ διέθικας σὺ θόρυβόν ἀθλωαίοις ὑπὲρ  
 πῶς πλιτύνειν. καὶ ἄμεινόν τε πλιτύνουσιν ἢ καὶ  
 Δημοκρατίαν. ἐγὼ γὰρ ἐδίδαξα ὑβρίζειν. καὶ ὁ τύραν-  
 νος ἐγὼ δὲ πλείον τί φοβομαι τὰ ξιώματά σου καὶ τῇ  
 τιμῇ. ὅπρῃα δὲ καὶ τίς πειρ βασιλεύσιν, ὡς τὰ θε-  
 τὰ γόρα. ἀπάγει ἢ ἐμὰς ἀθλωαίω τὸ αὐτὸ κλή-  
 ρος δευτέρῳ, ὅτι ἐμοί, ἀλλὰ ὁπρὲν ἔσαι ἀναλυσῶν εἰς  
 58 τε θυσίας δημοτελεῖς, καὶ εἰπ ἄλλο τῶν κοινῶν, καὶ  
 54 ἢ ὁ πόλεμος ἡμᾶς καταλάβη. σοὶ δὲ ἐγὼ ὅτε μέμ-  
 φομαι μενύσαντι τῶν ἐμῶν διανοίαν. ἐμοί γὰρ τῇ  
 πόλει μάλλον ἢ καὶ τῷ ἐμῷ ἔχθρῳ ἐμὴν δὲ, εἰπ τί  
 ἀμαθία τῇ ἀρχῇ, ὅπρῃαν πῶς ἐγὼ καταστήσομαι.  
 εἰπὶ μαθὼν τὰ χαρὰν ἡνέχθη καὶ διαμνήσθ, ὅτε ἐφύ-  
 γες. ἐπὶ πάντιν ῥήνῳ οἴκῳ, πιστεύω μοι καὶ ἀνωμό-  
 τῳ ἄχαρι μηδὲρ πείσεσθαι σόλωνά ἐκ πείσεσθαι.  
 ἴδι γὰρ μηδὲ ἄλλοι πῶς πεπνυγῆναι τῶν ἐμῶν ἔχ-  
 θρῶν. εἰ δὲ ἀξιώσεις τῶν ἐμῶν φίλων εἰς εἶν, ἔσθι ἀνὰ  
 πρῶτος. ὅ γὰρ πῶς σοὶ ἐνορῶ δολοφόνῳ ἢ ἀπίστον. εἰ-  
 τε ἄλλως ἀθλῶσι δὲ οἴκῳ, ὑπὲρ τετραπλεῖται. ἡμῶν δὲ  
 εἴνεκα μὴ ἐσθῆσοι πατρίδα.

ταῦτα μὲν πείσεσθαι. Σόλων δὲ ὅρον ἀνθρώπι-  
 55 νος βίος φησὶν ἐπὶ ἐβδμήκοντα. δοκεῖ δὲ καὶ ἡγάμι-  
 σα νομοθετῆσαι. ἐάν τις μὴ τρέφῃ σὺν γονίᾳ, ἀπὸ μὲν  
 ἔσω. ἀλλὰ καὶ ὁ πᾶς πατὴρ καὶ τεθνηδυνῶς, ὁμοίως.  
 καὶ ὁ ἀργὸς ἐπὶ δόλῳ ἔσω παντὶ τῷ ἀδελφῷ  
 γράφεται. λύσις δὲ ἐν τῷ καὶ νικίᾳ Δράκοντος

d

φῃσι.

νομοθεσίαι  
 σόλωνος



φθοί γε γραφῆναι ἔρ νόμον. σόλωνα δὲ τιθεμένην.  
 τὸν τε ἡταιρηκότεν εἰργεῖν τῷ βήματι Θ. σωῖσει  
 λε δὲ καὶ τὰς πμὰς τῶν ἐν ἀγῶνι ἀθλητῶν. ὀλυμπιο  
 νίκη μὲν τάλαντος πεντακισίας δραχμάς. ἰσθμονίκη  
 δὲ ἡξαῖον, καὶ ἀναλκτορ ὡδ' τῶν ἄλλων. ἀπειρόχα-  
 λον γὰρ δεξαίρειν τὰς τέτῳ πμὰς, ἀλλὰ μόνον ἐκεί-  
 νων τῶν ἐν πλείμοις τελευτήσαντων. ὥρ' εἰς δὲ ἡδὲ  
 δημοσία τρέφονται καὶ παιδιδύεσθαι. ὄβρι καὶ ἐξή- 56.  
 λωυ καλοὶ καὶ γαθοὶ γίνεσθαι καὶ πύλεμον, ὡς πλύ-  
 ρηλ Θ, ὡς κυοαίγει Θ, ὡς χαλμίμαχ Θ, ὡς σύμ-  
 παντός οἱ μαρσθωνομάχοι. ἐπὶ δ' ἀρμόδι Θ καὶ ἀ-  
 ρισογείτῳ καὶ μιλτιάδης καὶ μυρτοὶ ὅσοι. ἀθλητὰν  
 δὲ καὶ ἀσκητόν μιν πλυνδάλπατοι, καὶ νικῶντος ὡν-  
 ρήμοι, καὶ σεφανοῦνται καὶ τῷ πατρίδ Θ μάλλον  
 ἢ καὶ τῷ ἀνταγωνιστῶν, γόροντες τε γυμναστικοὶ κατὰ  
 ἔρ ἐν ἐπιδιδῶν,

τείβων δὲ ἐκλείποντες οἱ χονταὶ ἡρόης.

ὅπου σωιδῶν ὁ σόλων μετρίως αὐτῶν ἀπεδείξατο.  
 χαλμίσορ δὲ κακῆνο, ἔρ ἐπίτροπρ τῇ τῶν ὀρφανῶν  
 μητρί μὴ σιωοικῆν. μηδ' ὡντροπύειν, εἰς δὲ ἡ δὲ  
 σία ἔρχεται τῶν ὀρφανῶν τελευτήσαντων. κακῆνο, 57.  
 διακτυλιογλύφω μὴ δεῖναι σφραγίδα φυλατῆν  
 τῶν πρᾶξντ Θ διακτυλίσ. καὶ ἐάν τις ὀφθαλμὸν  
 ἔχοντες ἐκκρότη τις, ἀντεκκρότην εἰς δύο. ἢ μὴ ἔθῃ  
 μὴ ἀνέλη. εἰ δὲ μὴ, θάνατος ἢ ζημία. τῶν ἀρχοντι αὐ-  
 μεθύων ληφθῇ θάνατον εἰν τῶν ζημίαν. τὰ τε ὁμήρῳ  
 δεῖ ἔπειτα

ἔξ ὑποβολῆς γέγραφε ῥα-τωδεῖσθαι. ὁιορ ὅπου ὁ  
 πρῶτ' ἔλθον ἐκείθεν ἀρχεσθαι ἥ ἐχρόνον. μάλ-  
 λον ὅσω σόλων ὁμηρον ἐφώπουν ἢ πεισίρατ'. ὥς  
 φησι διδυχίδας ἐν πέμπτῳ μεγαρικῶν. ὡς δὲ μάλι-  
 σα τὰ ἐπὶ ταυτί. οἱ δ' ἄρ' ἀβλυίας ἔχον, καὶ τὰ ἐξῆς.  
 πρῶτ' δὲ σόλων τῶν τριακῶν ἐν τῷ καὶ νῆαν ἐν ἑ-  
 58. λῶν. Ἐπρῶτ' τῶν συναγωγῶν τῶν ἐν νῆα ἀρχόν-  
 τῶν ἐπρίσκον, εἰς ὃ σωματεῖν, ὡς ἀρχιλόδωρ' φη-  
 σὶν ἐν δίδυτορῶ πόδι νομοθετῶν. ἀλλὰ καὶ τῷ σάσεως  
 γηνομένης ὅτε μὲν τῶν δὲ ἄσσει' ὅτε μὲν τῶν πεδύ-  
 ων, ἀλλ' ὅτε μετὰ τῶν παρὰ λίωρ ἐτάχθη. ἔλεγε δὲ  
 ἥρ' μὲν λόγον εἶν' τῶν ἔργων. βασιλῆα δὲ ἥρ' ἰσχυροί-  
 ταν τῇ δυνάμει. σὺ δὲ νόμος τῆς ἀρχαχνίους ὁ-  
 μοίως. καὶ γὰρ ἐκείνα ἐὰν μὲν ἐμπέσῃ τί κούφορ καὶ  
 ἀσθενὲς σίγειν. ἐὰν δὲ μείζον, δεικνύειν οἰχεσθαι.  
 ἔφασκε τε σφραγίζεσθαι ἥρ' μὲν λόγον σιγῇ. τῶν  
 59. σιγῶν δὲ καὶ ἑρῶ. ἔλεγε δὲ τοὺς παρὰ τοῖς τυράν-  
 νοις δυνάμειν συ παρὰ πλησίον εἶναι ταῦς ψή-  
 φοις ταῦς ὑπὲρ τῶν λογισμῶν. καὶ γὰρ ἐκείνων ἐν ἑ-  
 σίω κατὰ μὲν πλείω σημαίνειν κατὰ δὲ ἥττω. καὶ τὸ  
 τῶν σὺ τυράννων κατὰ μὲν ἐν ἑσέσον μίγαν ἀγειρ  
 καὶ λαμπρόν. ὅτε δὲ ἀπμορ. ἐρωτηθεὶς δὲ τί ηὐ-  
 τὰ πατροκτόνου νόμον οὐκ ἔθηκε, δὲ ἥρ' ἀπελπίσαι  
 ἔφη. πῶς τε ἥκιστα ἀδικοῦν οἱ ἀνθρώποι, εἰ ὁμοίως ἔ-  
 φη ἀχθοῖν τῆς ἀδικουμένων οἱ μὴ ἀδικούμενοι.  
 καὶ τὸν μὲν κέρου ὑπὸ τοῦ πλούτου γενναῖσθαι.  
 d 2 τῶν



ἀφ' οὗ γμα-  
τε αὐτοῦ

τῶν δὲ ὕβρις ἀπὸ τοῦ κέρους. ἡξίωσε τε ἀβλυαί τε τὰς  
ἡμόρους κατὰ σελῶν ἄγειν, καὶ θέσπις ἐκώλυσε  
πραγματοδίας ἄγειν τε καὶ διδάσκειν, ὥς ἀνοφελῇ  
τῶν φιλοσοφίαν. ὅτ' ὅσω πείσεις αὐτὸν ἑαυτὸν καὶ ὅ  
τέτρωσεν, ἐκείθεν μὲν ἔφη ταῦτα φεύγει. τίς τε αὖ  
βρώτης συνεβόλυσεν, ὥς φησιν ἀρχιλόδωρος. ὃν  
τοῦ πόδι τῶν φιλοσόφων αἰετῶν, τὰ δὲ καὶ λαοὶ γὰρ  
δῖαν ὅρου πεισοτόραν ἔχει. μὴ φύδου. τὰ ἀποδοῖα  
μελέτα. φίλους μὴ ταχύνετω. ὅς δ' αὖ ἐπὶ τῇ μὴ δὲ  
κίμαζε. ἀρχὴ πρῶτον μαθὼν ἀρχεσθαι. συμμέλῳ  
μὴ τὰ ἡδίστα ἀλλὰ τὰ ἡγέλισα. νοῦν ἡγεμόνα πρῶτον.  
μὴ κακοῖς ὁμιλεῖ. θεὸν τίμα. γονίας αἰδοῦ. φασὶ δ'  
αὐτὸν καὶ μινδύμω γράψαντα,  
αἱ γὰρ ἀτόρυσσων τε καὶ ἀργαλεδόνων  
ἐξηκονταίτη μοῖρα λίχρι θανώτε,  
ὡν πμῶντα αὐτὸς εἰπὲν.  
ἀλλ' εἰ μοι καὶ νῦν ἐπὶ πείσεται ἔξελε ἔσθω.  
μὴ δὲ μέγα ἔσθω ὅπ' ἐν τῷ ἐπεφρασάμην.  
καὶ μετρίως ἄγχι, τὰ δ' ὡς αἰετὶ,  
ὁ γδοηκονταίτη μοῖρα λίχρι θανώτε.  
τῶν δὲ ἀδωμνῶν αὐτοῖς ἔσι τὰ δὲ.  
πεφυλαγμένον ἀνδρῶν ἔχον,  
ὅρα μὴ κρυπτόν ἔγχετο ἔχωρ.  
ἡραδίῳ φαίδρῳ προσγένηται προσώπῳ.  
γλῶσσα δ' εἰ δὲ χόμνῳ  
ἐκ μελαίνης φερνός γε γωνῆ.

γῆρα

γέγραφε δὲ Δὺλον μὲν ὅτι σὺ νόμος. καὶ Δημησό-  
 ρείας δὲ, καὶ εἰς αὐτὴν ἑποθήκας ἐλεγείας, καὶ τὰ πόδι  
 62 σαλαμῖν Θ καὶ τῇ ἀθλωαίωμ πελιτείας ἐπὶ πην  
 πακιοχίλια, καὶ ἰσμι-ς καὶ ἑποδούς. ὡδὶ δὲ τῇ ε  
 κόν Θ αὐτῷ ὑπὲρ γέγραπται τόδε.

ἢ μήδωρ ἀδικορ παύσας ὕβειρ, ἡ δὲ σόλωνα  
 τόνδε τεκνέι σαλαμῖς θδσμοθέττω ἰδρόρ.

ἡμαρ μὲν ἐν πόδι τῶν τεσσάρων σὺν ἐκτὼ ὀλυμι  
 πιαδία, ἡς ἑξ ἑξ τῶν ἡξεν ἀθλωαίωμ, καὶ δάφι  
 σισωπικρῶτης. ὅτε καὶ τίθησι σὺ νόμος. ἐτελεύτη  
 σε δ' ἐν λύπῃ βίος ἐπὶ ὀδυρόντα, ὅσον ὑπὸ σκῆ  
 φας τῆς ἰδίοις τὴν τρόπῃ. ἀρκομίσει αὐτὸ τὰ ὅσα  
 εἰς σαλαμῖνα, καὶ τεφρώσαντας εἰς τὴν χώραν  
 ἀπείρει. ὅθεν καὶ κρατίν Θ ἐν τῆς χείρωσι φησίρ,  
 αὐτὴν τριῶν λείοντα. οἰκίω ἡ νῆσον, ὡς μὲν ἀνθρώπων  
 λόγ Θ, ὅσπαρ μὲν Θ καὶ πᾶσαν αἶαντ Θ ἥλιρ.  
 63 ἔσι δὲ καὶ ἡμέτερόρ ἐπὶ γράμμα ἐν τῇ προειρημένῃ  
 παμμίτρω, ἐντα καὶ πόδι πάντῃν τελευτήσαντῃν  
 ἐκλογίμων δειλεγμαὶ παντὶ μέτρω καὶ ἐνθμῶ ὑπὸ  
 γράμμασι μέλδωρ, ἐχρ ὅπως.

σώμα μὲν ἦρε σόλων Θ ἐν ἀλλοδαπῇ κύπειον πύρ.  
 ὅσα δ' ἔχει σαλαμῖς, ὡρ κόνις ἀσάχυδς.

ψυχὴ δ' ἄξουδς ἐνθὺς ὅς ὅρανόν ἡγάγον. ἐν γὰρ  
 θῆκε νόμος αὐτῆς ἀχθεα κρυφότητα.

ἀπεφθέγγασθ δὲ φασί, μηδὲρ ἄγαν. καὶ αὐτόρ φησι  
 διοσηνείδης ἐν τῆς ἀρμνημονύμασι, ἐπειδὴ Δα

d 3 κρύει

Ed. Sant. D. y. 1001



κρύει ἤν' πᾶσι δα τελευτήσαντα, ὃν ἡμεῖς δ' παρεια-  
λήφαμεν, πρὸς ἤν' εἰπύοντα ἀλλ' οὐδ' ἐν ἀνύτῃσι εἰ-  
πείμ. δι' αὐτὸν ἧ ἴδ' οὐ διακρύψω ὅτι οὐδ' ἐν ἀνύτῃσι. φόβου  
ται δὲ αὐτοὶ καὶ ὑπὸ σολῶν αἰδε.

Σόλων Περικλίδῳ.

Ἐπαγγέλμεις μοι πολλοὺς γὰρ ὑπὸ βουλεύειν. σὺ 64  
δὲ εἰ μὴν μέλεις ἐκπεδῶν ἅπαντας προήσασθαι οὐκ  
αὖν φθάνοις. ὑπὸ βουλεύσει δ' ἂν τις καὶ τῷ ἀντιπῶ-  
ντι. ὁ μὲν, δεδιὼς πόλιν αὐτῆς. ὁ δὲ, σὺν κραταγυνῇ,  
οὐκ ἔδ' ὅτι οὐκ ὀρῶσθαι αὐτῇ, καὶ τῇ πόλει χεῖρ  
κραταβοῖν θεοῦ ἢ μὴ ὑπὸ τῇ εἴης. αἰσο-  
μὲν οὐκ ἔχοντα ἵνα τῆς αἰτίας ἀπαλλαγεί-  
ης. εἰ δὲ πάντως τυραννῆτορ, φροντίζειν ὅπως τῷ  
ἄλλοδαπῷ δυνάμει μείζονα ἔξῃς τῆς ἧς τῇ πό-  
λει, καὶ οὐδ' εἰς ἐπιτοὶ δεινός. μὴ δὲ σὺ ἐκπεδῶν  
τινὰ ποιῇ.

Σόλων Επιπιδίδῃ.

Οὔτε οἱ ἐμοὶ θεοὶ αἶψα ἀθλιωαί-σιν ὑπὸ πλὴν οὐκ  
σεῖν ἔμελλον, ὅτε σὺ κρατήρας τῷ πόλιν ὤνησας. τό-  
τε γὰρ θέοι καὶ οἱ νομοθέται δ' ἐκ τῆς αἰτίας δύνανται  
οὐκ ἔχοντα τὰς πόλεις. οἱ δὲ αἶψα πλὴν αἶψον τῶν  
πῶς αὖν γνώμης ἔχωσι. οὕτω δὲ καὶ τῇ θέῳ καὶ οἱ  
νόμοι. ἐν μὲν αἶψον τῇ εἰσὶν ὠφέλιμοι. κρατὴς δὲ αἶψον  
τῇ οὐδ' ἐν ὠφελισμῷ. ὅτε οἱ ἐμοὶ ἀμείν-σιν εἰσὶ, καὶ  
ὅσα ἐγὼ νομοθέτησα. οἱ δὲ ὑπὸ τρέποντες τῇ κοινῇ ἐκ-  
μλαπῶν, οἱ οὐκ ἐγγόνων ἐκπεδῶν πεισιγνώτῃ ὑπὸ  
οὐκ ἔχοντα

θαι τυραννίδι. οὐδὲ ἐγὼ προλέγων πισὸς ἴν. ἐκεί-  
 οθ δὲ πισότορθο ἡλακδύωρ ἀθλωαί-συ ἐμου' ἀ-  
 ληθδύνουτθ. ἐγὼ δὲ θέμνωθ πρὸ τοι στρατηγίς τὰ  
 ὅπλα ἔπρ. τῶ μὲν μὴ αἰδανομενῶν πεισίστρατμ  
 τυραννησεῖοντα εἶναι ξυετώτορος. τῶ δὲ ὀκνουῶ-  
 τῶ ἀμυῶσθαι ἀλκιμώτορος. οἱ δὲ, μακίαν σόλω-  
 νος κατεγίνωσθον. τελοῦ τῶ δὲ ἐμαρτυραμῶ. ὦ  
 πατεῖς, ἔτθ μὲν σόλωρ, ἐριμός γι καὶ λόγω καὶ  
 ἔργω ἀμυῶει. ρίς δ' αὖ καὶ μαίνεσθαι δοκῶ. ὥς τε  
 ἄπειμί οἱ ἐκ μίσου ὁ μόνθ ἐχθρὸς πεισιστράτ. V C. γεωτάτης  
 ἔρι δὲ καὶ δαρυφορουῶτων αὐτὸν εἶπ βούλονται.  
 ἴδι γὰρ τὸν ἀνδρα ὦ ἱταῖρε δεινότατα ἀφώμε-  
 νον τῆς τυραννίδθ. ἤρξατο μὲν Δημαγωγέιρ,  
 ἔπα δὲ ἱαυθρὸ τραύματα πρίσας, παρελθὼν ἐπ'  
 ἡλιαίαν ἐβόα φάμνωθ πεπουνθῆναι ταῦτα ἔσθ  
 τῶν ἐχθρῶν, καὶ φύλακας ἡξίωσιν παρασχέιρ οἱ  
 τετρακροσί-συ τοῦς. οἱ δὲ, ἀνηκουσῆσαντες μου,  
 παρῆσχομ τὸν ἀνδρας. οὐρι δὲ ἦσαν κορυμν-  
 φόροι. καὶ μετὰ τοῦτο τὸν Δῆμον κατέλυσον. ἡ  
 μάττω ἴσπυδθρ ἀπαμάλξαι σὺ πρῆντας αὐ-  
 τῶν πῆς θητείας, οἱ γὰρ Δὲ νῦν ξύμπαντες ἐνὶ δυν-  
 αδύνουσι πεισιστράτ.

Σόλωρ Πεισιστράτ.

Πισδύω μηδὲρ κακὸν ἔσθ σὺ πείσεσθαι. καὶ γὰρ  
 πρὸ τῇ τυραννίδος φίλθ σοι ἴν, καὶ νῦν ἔ μᾶλλον  
 διαφόρθ ἢ τῶ ἄλλων πῆς ἀθλωαίωρ ὅττω μὴ ἀξέ-



σινδ τυραννίς. εἴτε ὑφ' ἑνὸς ἀρχεῖσθαι ἄμεινον αὐτοῖς,  
εἴτε Δεῖ Δημοκρατεῖσθαι, πεπεισὼ ἢ ἐχάτορον  
γινώσκειν. καὶ σε φημί πάντῃν τυραννὸν εἶν' βέλπι-  
στον. ἐπανήκειν Δέ μοι ἀθλιώτερος καλῶς ἔχον ὁρῶ,  
μὴ μί τις μίμνηται. εἰ δ' ἄγε βίης ἀθλιωαίοις ἰσοπρλιπ-  
τὴν καὶ παρὸν τυραννέειν, αὐτὸς δ' ἐκ ἀξιώσεως, νῦν ἐπα-  
νελθὼν ἀρδύχοιμιν οἷς σὺ πρῶσας.

Σόλων Κροίσῳ.

Αγαμαι σε ὅτι ποῦ ἡμᾶς φιλοφροσύνῃς, καὶ νῦν  
τῶν ἀθλιωτῶν εἰ μὴ ποῦ παντός μοι λῶν οἰκείον ἔν Δη-  
μοκρατία, ἐδεξάμην αὖν μᾶλλον τῶν δίκαιων ἔχον  
ἔν τῇ παρὰ σοῦ κασιλείᾳ ἢ ἀθλιώσι τυραννοῦντο  
βιάως πεισιγάρῳ. ἀλλὰ καὶ ἡδίων ἡμῖν ἡ βιοτὴ ἔν  
ταῖς πᾶσι τὰ δίκαια εἶσα. ἀφ' ἧς μοι δι' ἔν παρὰ σέ,  
αὐτοῦ δ' ὡς γιγνώσκω γινέσθαι.

ΧΕΙΛΩΝ

V. C. εἰλεῖται

**Χ**Εῖλων Δαμαγῆτος λακεδαιμόνιου, ὅστις ἐπὶ  
ἡσυχίᾳ ἐλεγείαν εἰς ἔπη δ' ἀκρόσια, καὶ ἔφασκε πρό-  
νοιαν ποῦ το μέλλοντο λογισμῶν κατὰ ληπῶν εἶν'  
ἀνδρὸς ἀρετῶν. πρὸς τε τῶν ἀδελφῶν Δυσφοροῦντα  
ὅτι μὴ ἔφορος ἐγὼ αὐτοῖς οὐκ εἶμι, ἐγὼ μὲν γὰρ ἐπί-  
σταμαι ἀδικεῖσθαι, σὺ δὲ ὅτι γέροντες εἶμι ἔφορος καὶ τῶν  
πρὸς τῆς ἐκτὸς ἐκτὸς ἐκτὸς ἐκτὸς ἐκτὸς ἐκτὸς ἐκτὸς  
καὶ τῶν ἐκτὸς ἐκτὸς ἐκτὸς ἐκτὸς ἐκτὸς ἐκτὸς ἐκτὸς  
δὴ μὲν ὡς φησι σωσιφάνης. καὶ πρὸς τὸ εἰσηγήσασθαι  
τὸν ἐφόρον τοῖς βασιλεῦσι παραχρῆμα γινώσκαι. οὐκ ἔστι  
δὲ λυ-

δε λυκονεργον. ετθ ως φησιν ηρόδοτθ ιπποικρωτη  
 θυομενών εν δολυμπία τῶν λεβήτων αυτημων τῶν ρε-  
 σάντων, σιμβεβλουσεν η μη γῆμαι η ει εχρη γυναι-  
 ηα εκπέμψαι καὶ παῖδας ἀπείπαοται. φασί δι' αυ-  
 τῶν καὶ αἰσώπην πυθίοται ο ρεὺς τί εἴη τριών. τῶν δέ,  
 φαῖναι. τὰ μὲν ὑψηλὰ ταπεινοῦν. τὰ δὲ ταπεινὰ ὑ-  
 ψοῦν. ἐρωτηθεῖς τίνι διαφόρεσσιν οἱ πεποιθόσμενοι ἀρφδιγμα-  
 τῶν ἀπαιδούτων, ἔφη ἐλπίσιν ἀγαθαῖς. τί δύσκει-  
 λον. τὸ τὰ ἀπρόσῃτα σιωπῆσαι, καὶ σχολῶν ἐν διαθέ-  
 οται. καὶ ἀδικοῦ μὲν δύναιτο φοβεῖν. προσέτατι  
 τε δὲ καὶ ταῦτα. γλώττης ἡρατῆρ, καὶ μάλισα ἐν  
 συμπρω. μὴ ηρατολογεῖν εὖ πλησίον. εἰ δὲ μὴ, ἀ-  
 κούσεοται ἐφ' οἷς λωπήσεοται. μὴ ἀπειλεῖν μηδ' ἐνί.  
 γυναικιδόδε γὰρ. ταχύτορον τῶν τὰς ἀτυχίας τῶν  
 φίλων ηὔδι' τὰς εὐτυχίας προσέοται. γάμον ἐντε-  
 λῶ πρῆοται. τῶν τεθυητότα μὴ ηρατολογεῖν. γῆρας  
 πμαῖν. φυλάττειν ἑαυτῶν. ζημίαν αἰρεῖοται μάλλον  
 ηὔλοδοθ' αἰσχροῦ. ἢ μὲν γὰρ ἀπαξ ἐλύπησε. τὸ δέ,  
 διαπαντός. ἀτυχῶντι μὴ ὑπὲρ γέλοιον. ἰσχυρόν οὐτα  
 πρῶτον εἶν, ὅπως οἱ πλησίον αἰδιδύντου μάλλον ηὔφο-  
 βύντου. μανθάνειν τῶν αὐτῶν οἰκίας ηραλῶς πρῶτα  
 τῆρ. τῶν γλώττων μὴ προτρέχειν τῶν νῶ. θυμῶ ηρα  
 τῆρ. μαντικῶν μὴ ἐχθαίρειν. μὴ ὑπὲρ θυμῶν ἀδυνα-  
 τῶν. ἐν ὁδῶ μὴ ἀπ' αὐτῶν. λέγοντα μὴ κινεῖν τῶν χεί-  
 ρα. μαντικὸν γὰρ νόμοις πείθεοται. ἡρεμῶς χεῖρ οἰοται.  
 τῶν δὲ ἀδόμενων αὐτῶν μάλισα ἐνδοκίμησεν ἐκείν-  
 e      νο. ἐν



νο. ἦν λιθίναις ἀκόναις ὁ χερσὸς διετάσσεται, διδύς  
 βασιανον φανδράν. ἦν δὲ χερσὶ ἀνδρῶν ἀγαθῶν τε  
 καὶ κακῶν τε νῶς ἰδὼν ἔλεγχον. φασὶ δ' αὖτ' ἂν πρὶ γη  
 ραίον ἦδ' ἂν οὐτὰ εἰπεῖν. ὥς δ' ἐμ' οὐκ εἰδὲν ἀγνώμον  
 ἰαυτὸς ἦν τὸς υἱῶ. διδάσκειν δὲ ποδὶ ἐνός. λεῖνων γὰρ  
 πρὶ φίλῳ δύνῃ αὐτὸς μὲν κτλ ἦν νόμον, ἦν δὲ φί  
 λον πείσειν ἀρδινάσαι αὐτὸν. ἵνα ἀμφοτέρω εἴ ἦν  
 νόμον καὶ ἦν φίλον τηρήσῃ. ἦν δὲ ξότατ' ὅ δ' ἡ μάλι  
 σα παρὰ τοῖς ἑλλησιν ἐγὼ, προσιῶν ποδὶ λιυθί  
 ρσ' ὅτι νῆσ' ὅτι λακωνικῆς. κατὰ μαθὼν γὰρ τὴν φύ  
 σιν αὐτῶν, εἴθε ἔφη μὴ γένοιτο, ἢ γηνομένη κατὰ βυθί  
 διλῶναι. καὶ ἐν προσηύδατ' ὅ δ' ἡμᾶς αὐτὸς μὲν γὰρ  
 γὰς ὡν λακεδαιμονίῳ, ξόρξῃ συνεβούλουσε τὰς  
 ναῦς συνέχειν ἦν τῇ νῆσῳ. καὶ ἰαλῶκει ἢ ἱλλάς, εἰ  
 ἐπείδ' ἡ ξόρξῃς. ὅς δ' ὁρὸν τε νικίας ὡδ' ἡ πελοπον  
 νησιακῶν κατὰ σφ' ἀμύνῃ τὴν νῆσῳ, φρουρὰν ἐγ  
 κατέστησεν ἀθλιαίῳ, καὶ πάμπαν αὐτὸν λακεδαι  
 μονίῳ καὶ δέθηκε. βραχυλόγ' ὅτι λῶ. ὅθεν καὶ  
 ἀριστὰς ὁ μιλῆσι' ὅς δ' ἦν ἦν τὸν χερσὶν χερσὶν  
 καλῇ. βράγχου δὲ εἶν', ὅς ὁ ἰδὸν ἐκτισε ἦν ἡραγ  
 χίδαις. λῶ δὲ γόρῳ ποδὶ τὴν περὶ τῆς δούτε  
 ραν ὀλυμπιάδα, ὅτε αἰσώπ' ὁ λογοποιὸς ἡμᾶς  
 ἐτελεύτησε δ', ὥς φησιν ἑρμῆς, ἦν πῖσῃ, ἦν ὅν  
 ὀλυμπιονίκῳ ἀσπασάμεν' ὅτι πυγμῆς. ἐπαθε δὲ  
 ὅς δ' ἦν ἐπὶ βολῇ τὴν χερσὶ καὶ ἀδ' ἡμᾶς πλυντίας.  
 καὶ αὐτὸν πάντας οἱ κτλ τὴν παυήγειν ἦν τιμότη

τὰ παρ' ἐπιμύσαν. ἔσι δὲ καὶ εἰς ἄλλ' ἐπίγραμμα  
ἡμῶν.

φωσφόρε σοι πρὸς δ' οὐκ ἔχω χεῖρ, οὐκ ἔχω

χείλων· πυγμαῖα χλωρόν ἔλγν' ἡρότινον.

εἰ δ' ὁ πατήρ σε φανέσχοι, ἰδὼν τέκνον ἡμυσεν ἡδ' εἰς

ὅς νεμεσητῆρ, ἐμοὶ γὰρ ἴτω θάνατ'.

ὡδ' δὲ γὰρ εἰρήνην· αὐτὰρ ὡς ἡγήσασθαι τόδε.

τόνδε δ' οὐδ' ἐφάνθη· πάρα χείλων· ἐφύττουσιν

ὅς τ' ἦν ἐπ' ἄσπετον πρῶτ'· ἐφύττουσιν

ἀπεφθίγγατ'. ἐγγὺν πάρα δ' ἄτη. ἔσιν αὐτοὶ ἔτι ὡς  
σώλιον τόδε.

### Χείλων Περικλῆος.

Επισίμεις ἐμὴν ἀσρατείαν· ἔκδ' ἀμὲν ὡς αὐ-  
τὸς καὶ θ' ὁρῶντις. ἐγὼ δὲ δοκέω, καὶ τὰ δικαία σφα-  
λῶς ἡμῶν ἀνδρῶν μοναρχῶ, καὶ τῆνον τυραννῶν ἐν-  
δαιμονίζω, ὅς τις καὶ δικροὶ θ' αὐτὸς αὐτοὶ κατὰ δαίμον.

### ΠΙΤΤΑΚΟΣ

Πίττακος ὕψ' ἀδελφὸς μετυλινῶν, φησὶ δὲ δούρις  
τὸν πατὴρα αὐτοῦ θραῖνα εἶν'. ἔτ' ὡς μὲν τῶν  
ἀλκίον γνόντων ἀδελφῶν, μέλαγχρον καθεῖλε  
τὸν γὰρ λίσσετο τύραννον. καὶ πόδ' ὅτι ἀχιλῆϊ πρὸ  
χώρας μαχόμενων ἀθληαίων καὶ μετυλινῶν, ἐ-  
σρατήγει μὲν αὐτὸς. ἀθληαίων δὲ φρυγῶν παγκρα-  
τίας ὀλυμπιονίκης. σικεῖτο δ' ἡ μονομαχῆσαι  
πρὸς αὐτὸν, καὶ δίκτυον ἔχων ἐπὶ τῷ ἀσπίδα λα-  
θραῖως πόδ' ἐβαλε τὸν φρυγῶνα, καὶ ἡττήσας ἀνδρῶν



σαρ ῥ' χωρίον. ὕσδρον μὲν γι φησὶν ἀκλιδωρθε  
 ἐν τοῖς χρονικοῖς διασημαδιῶναι. σὺ ἀθλωαί σου πε  
 εἰ το χωρίον πρὸς σὺ μυλλωαί σου, ἀκρούοντο  
 ῥ' δίκης ποταμίδου. ὁμ καὶ τοῖς ἀθλωαίοις προσκρί  
 ναι. τότε δ' ἐν ῥ' πιπλάνω ἰσχυρῶς ἐτίμησαν οἱ μυ  
 τωλλωαῖοι, καὶ τὴν ἀρχὴν ἐνεχέισαν αὐτοῖς. ὁ δὲ,  
 δέησ' ἔτι κατὰ χῶν καὶ εἰς ταῖς ἀγαγὼν ῥ' πρὸς  
 τοῦμα, κατὰ τὸν τὴν ἀρχὴν, καὶ δέησ' ἐπεβίω ἀλ  
 λα. καὶ χῶσαν αὐτοῖς ἀπένειμαν οἱ μυτωλλωαῖοι. ὁ  
 δὲ, ἰδὼν αὐτὴν, ἢ πρὸς νῦν πιπλάνει καλεῖται.  
 σωσιπρῶς τῆς δὲ φησὶν ὅτι ὁλίγον ἀκρυγχανόμην  
 ἔφη, ῥ' ἡμῶν τοῖς παντὶς πλείον ἐῖν. ἀλλὰ καὶ κροίσου  
 διδόντο χρέματα ἐν ἰδέξασ. εἰπὼν ἔχειν ὦν  
 ἐβόλῃ διπλοῖα. ἀπὸ δὲ γὰρ τὰ δελφὸς τελοῦ  
 πῶσαντο λεκληρονομικῆναι. παμφίλῃ δὲ φησὶν  
 ἐν δούτορῳ τῶν ὑπομνημάτων ὡς ῥ' ὦν αὐτοῖς τυρ  
 ῥαῖον καθήμενον πρὸς καρεῖς ἐν λύμῃ χαλκίδος πρὸς  
 λεκκωῖμαλὼν αἰέλοι. τῶν δὲ λεκκωῖμαλὼν πεμφάν  
 τῶν ῥ' φονία τοῖς πιπλάνω, μαθόντα καὶ ἀκλύσαν  
 τα εἰπεῖν, συγγνώμῃ μενοιῖας ὑρεῖσιν. ἡρῶν κλει  
 τὸ δὲ φησὶν ἀληθεῖον ὑποχείριον λαβόντα καὶ  
 ἀκλύσαντα φαῖναι, συγγνώμῃ πτωχείας ὑρεῖσιν. νό  
 μος δὲ ἔθηκε, τοῖς μεθύοντι ἐὰν ἀμαρτή διπλὴν εἶν  
 τὴν ζημίαν, ἵνα μὴ μεθύωσι, πολλοὶ γὰρ νῦν οἶνον  
 γυνομῶν. εἰπε τε χαλεπὸν ὄσθλον ἔμμεναι. ὁ καὶ σι  
 μωνίδης μίμνηται. ἀνδρᾶ ἀγαθὸν ἀλαθίως γνῶναι  
 χαλεπὸν

νόμοι τοῖς  
 πιπλάνω

χαλεπόρ, ὃ πιπλύνειον. μέμνηται αὐτὸ καὶ πλά-  
 τῶν ἐν πρῶτα βόρα. ἀνάλγνα δὲ θεοὶ μάχονται. καὶ ἀφ' ἑγμά-  
 ἀρχὴν ἀνδρα δεικνύει. ἐρωτηθεὶς δὲ ποτε τί ἄριστον, τα αὐτὰ  
 ὃ παρὸν ἐν πρίειρ. καὶ ὑπὸ ἱεροίστου τίς ἀρχὴ μεγί-  
 ση, ἢ τὸ πικίλου ἔφη ξύλου. σημαίνων ὃν νόμον. ἔλε-  
 γε δὲ καὶ τὰς νύκτας ἀνδρῶν αἵματι πρίειται. ἔφη ἡ  
 καὶ πρὸς ὃν φωναϊκὸν φάσκοντα, δέει ζητεῖν ἀν-  
 θρωπῶν παρ' ἀλλήλων, ἀν' ἑαυτὸν ἔφη ζητῶν ὃ χ' ἐυρήσεις. ὁ  
 πρὸς αὐτὸν πωθανομένης τί ἐυχάριστον, χροῦν ἔφη.  
 ἀφανὲς ὃ μέλλον. πισὸν γὰρ. ἀπιστον δ' ἀλάσγα. ἔλε-  
 γε τε συνετῶν ἀνδρῶν πείρ γνῶναι τὰ δύσχερῶν  
 προνοῦσαι ὅπως μὴ γίνηται. ἀνδρείων δὲ γνόντων  
 ἐν θείῳ. ὁ μέλλεις πρᾶττει μὴ πρόλεγε. ἀτυχῶν  
 γὰρ γελασθήσῃ. ἀτυχίαν μὴ οὐκ εὐρίσκει, νέμειν αὐ-  
 τὸν δούλων. παρὰ κηρατὰ κήλη λαβόντα ἀκροδύῃαι. φί-  
 λον μὴ λέγειν κακῶς. ἀλλὰ μηδὲ ἐχθρόν. ἐυσέβειαν  
 ἀσκήν. σωφροσύνην φιλεῖν. ἀλήθειαν ἔχειν, πίσιν,  
 ἐμπειρίαν, ὑπὸ δεξιότητα, ἑταιρίαν, ὑπὸ μέλειαν. τῶν  
 δὲ ἀδελφῶν αὐτὸ μάλισα ἐυδοκίμησε τὰ δὲ ἔχον-  
 τα δέει τόξον καὶ ἰοδόκον φαρμάκον, σείχειν <sup>5</sup> φῶ-  
 τα κακῶν. πισὸν γὰρ ὃ δὲ γλῶσσα δὲ σώματι  
 λαλεῖ, δι' ἑκτον ἔχουσα ἱερὰ δὲ νόημα. ἐπρίνησε ἡ  
 καὶ ἐλεγεία ἔπη ἐξακρόσια. καὶ ὑπὸ νόμων κατὰ λό-  
 γον δὲ τῶν πολιτῶν. Ημεγε μὲν ἐν πόδι τῶν τε σ-  
 σαρακοντῶν δούτρων ὀλυμπιαδᾶ. ἐτελεύτησε δ'  
 ὡδὲ ἀριστοδῆμος ὃ τρίτῳ ἔτει 97 περὶ τῆς σῆς δού-  
 τας



ἰδίος ἱερῶν  
καὶ μηδὲν

τόρας ὀλυμπιαδῶν, αἵ τ' ἐπὶ ἔτη ἰβδμήκων  
ταῖσιν ἡδὲ γηραιός. καὶ αὐτῶν ὡδ' τὸ μνήματ' ὡπλίσ-  
σεται τόδε.

οἰκείοις δ' ἀκρύοις ἅ γεναμένα κατὰ δέπῃ  
ἐνθάδε πιπτανὸν ἡδ' ἰδρὰ λίσουθ'.

ἀπρόφθεγμα αὐτῷ, ἡμερὸν γυνῶδι. γέγονε δ' ἐκεί-  
νῳ πιπτανὸς νομοθέτης ὥς φησι φαβωρίνῳ ἀπ' ἑ-  
μνημονομασίῃν πρῶτῳ. ἔδ' ἡμῖν τε ὁμωνύμοις.  
ὅς καὶ μικρὸς προσήγορεύθη. ἔρ' δ' ἐν σφῶν λίσ-  
ταί ποτε νεανίσκῳ συμουλδομένῳ πόδι γάμου  
ταῦτα εἰπέει. ἅ φησι καλὸν ἡμαχῶν ἐν τοῖς ὡπ-  
λισμένοι.

ξείνῳ ἀταρξείῃς τις ἀνὴρ πιπτανὸν οὕτως,  
ἔρ' ἐμὴν ἡμῶν, παῖδα ἔρ' ὑρῶν δ' ἴσ.

ἅπτα γόρον, δίδος με καλεῖ γάμῳ. ἢ μίαν μὲν δὴ  
νύμφην, καὶ πολύτῳ καὶ γυνῇ κατ' ἐμῇ.

ἢ δ' ἐτόρην προέβηκε. τί λῶϊον; εἰ δ' ἄγε σὺ μοι  
βέλδυσον πετόνῳ εἰς ὑμῶν αἶμα.

εἴ ποιν' ὁ δὲ σκίῳνα γόρου πικρὸν ὅπλον αἰείρας  
ἡνίδε, ἡεῖνοί σοι πᾶν ἔρεσσιν ἔωθ'.

οἱ δ' ἄρ' ἐπὶ πληγῇσι θαῶς βέμβησας ἔχοντες  
ἔσρεφον εὐρεῖν παῖδ' ὅς ἐν τριόδῳ.

κείνων ἔρχεο, φησὶ, μετ' ἔχνηα. χ' ὡ μὲν ἐπείσῃ  
πλησίον, οἱ δ' ἔλεγον, τίς κ' ἔσται ἔρ' ἴλα.

ταῦτ' αἶψα ὁ ξείνῳ ἐφείσατο μείζονθ' οἴκου  
δραξάσθαι παῖδ' ὡν ἡλιδόνη σιωπῇ μὲν

ἡλιδόνη

τίς

τῶν δ' ὀλίγων, ὥς ἑένος, ὅς οἰκίον ἤγαγε νύμφην.

οὕτω καὶ σὺ δῖον τῶν κῆρ στυγρὴν ἔλα.

δοκεῖ δ' ἐν δολιχέσῃ αὐτὰ εἰρηκῆναι. ἐν γυνεσὶ βα-  
 γρὸν αὐτῶν ὅσπερ ἡ γυνή, ἐπεὶ πόρῳ ἡ δολιχὸν τῶ ἀ-  
 δελφῇ τῷ περὶ δόλου, σφόδρα κατεβάρυντο αὐτῶν.  
 ἴδμεν ἀλκαῖαν σαρὰν ποδὰ μὲν καὶ σάρα περ ἀρηγε-  
 λει, δὲ τὴν πλατύνειν ἔτι καὶ ὑπὸ σῦν τῶν τῶδε.  
 χειροπόδων δὲ δὲ τὰς ἐν τῇς πρὸς ξαγὰδας ἄς  
 χειρὰδας ἐκάλει. γαυρεῖα δὲ ὥς εἰκὴ γαυρεῖν  
 τα. φύσκωνα δὲ καὶ γαστρὶνα ὅτι παχὺς ἡ. ἀλλὰ  
 μὲν καὶ χοροδερπίδαν ὥς ἄλυσον. ἀγαστρὶν δὲ  
 ὥς ὑπὸ σῦν μὲν καὶ ὑπὸ σῦν. τῶν γυναικῶν  
 σῖν ἀλκαῖαν, ὥς φησὶ ἡλέαρχος ὁ φιλόσοφος. ἔτι αὐ-  
 τῷ ὅστις ὑπὸ σῦν τῶν τῶδε.

Πιττακὸς Κροίσω.

Κέλυσσά με ἰκνέσθαι ὅς λυδῖαν ἔπως σοὶ τὴν  
 ὀλιον ἴδωμι. ἐγὼ δὲ καὶ μὴ ὅρῃς πέπεισμαι τὴν  
 ἀλύτῳ πᾶν τῶν βασιλῶν πλὴν χρυσότατον πέ-  
 λει. ὅστις τὴν πλείον ἀμυν ἰσομεγέθους ὅς σάραεις.  
 χρυσὸν γὰρ ὅστις μεῖον, ἀλλ' ἂν πέπαμαι ἀρκεῖ καὶ  
 τῇς ἐμοῖς ἰταίροις. ἐμπας δ' ἴξομαι, ὥς αὐτῶν ξεί-  
 νῳ γηνοίμην τῇ ὁμίλῳ.

ΒΙΑΣ

Βίᾱς τῶν τῶν πειλυνὲς προκειμενῶν τῶν τῶν τῶν  
 εἰς δὲ πᾶροιον φησὶ γέγονται. φανόθεν δὲ ἡ  
 ρας



ρας αἰχμαλώτους λυζωσάμενον μεστωίας θρίψαι  
 τίως θυγάτρως καὶ προίτης ὑπὸ δουῶναι, καὶ εἰς  
 τὴν μεστωίαν ἀρσεῖλαι τῆς πατρόςιν αὐτῶν. χεῖρ  
 νω δὲ ἐν ταῖς ἀθλίωσις ὡς πρεῖρηται τοῦ τριπύρου  
 ἐνρεθγῆται ὑπὸ τῶν ἀλίων, τοῦ χαλκῶν ὑπὸ γραφῶν  
 ἔχοντες τῶν σφῶ, σάτυρ ἢ μὲν φησὶ παρελθεῖν τὰς  
 κῆρας. οἱ δὲ, ἐν πατρίδα αὐτῶν ὡς καὶ φανόσκηται,  
 ἐν τὴν ἐκκλησίαν καὶ εἰπὲν ἐν υἱάντα σφόν, δηκῆ  
 σαμῆρας τὰ καὶ ἑαυτὰς. καὶ ἀπεσάλη ὁ τριπύρου,  
 καὶ οὐκ εἰς ἰδὼν ἔφη ἐν ἀπώλῃ σφόν ἔιν, ὃ δὲ προ  
 σήκαρ. οἱ δὲ, λίσουσιν ἐν θήβαις τῶν ἡρακλῆι αὐτῶν  
 αἰαθεῖναι. ἐπεὶ ἀπώλῃ ἢ θηβαίων ἀρχικίαν εἰς  
 περιώλῃ σελαίνῃ, ὡς πόρ καὶ φανόσκηται φησὶ.  
 λέγεται δὲ καὶ ἀλυάτῃου τριπύρου περιώλῃ  
 ἐν υἱάντα πιλώαντα δύο ἡμῶντος θηλάσαι εἰς τὸ  
 σφατόπεδον. ἐν δὲ, σφιδόντα καὶ ταπλαγῆναι μί  
 χει καὶ ἀλόγων δακτεῖναι αὐτῶν τὴν ἐνδογῆσαν,  
 καὶ ἐβουλήθη σφιδάσαι, καὶ εἰσέπεμψεν ἄγγελον.  
 υἱας δὲ σωροὺς φάμμο χίας καὶ ἀνώθη σῆν πῶν  
 χίας ἰδὲξε τῶν ἀνθρώπων, καὶ τέλει μαθὼν ὁ ἀλυ  
 άτῃς εἰρωλῃ εἰσέκαρ πρὸς εἰς περιωίας. θάτι  
 τῇ δ' αὐτῶν πέμψαντι πρὸς τὸν υἱάντα ἵνα ἦκη  
 παρ' αὐτῶν, ἐγὼ δὲ φησιν ἀλυάτῃ ἡελούω κρώμμου  
 εἰσδῆναι, ἴσων τῶν ἡλαίειν. λέγεται δὲ καὶ διηγεῖται  
 νόταται γένουσαι εἰπὲν. ἐπὶ ἀγαθῶ μὲν τῇ τῶν  
 λόγων ἰσχύϊ προσεχῆν. ὅθεν καὶ δημόσκηται ὁ ἀλεί  
 νεται

ὁ δὲ ἔδωκε ἀντίπτεται λίγων. ἤν τυχῆς κρύνων διηγά  
 ρου τῶν περικύκλω δίκῳ. καὶ ἱππῶναξ. ἃ καὶ διηγά  
 ρεοδαί μίαντο τοὺς περικύκλως κρεῖσσον. ἔδωκε δὲ καὶ  
 ἑτελούτα ἔν τῷ τρόπῳ. δίκῳ γὰρ ἑπὶ πῶν τοὺς λίξας  
 ἤδη ἑπὶ ὀργῆς ἑπὶ ἀφ' ὧν, μὲν ἔκαστα παύσαι ἔν  
 λόγον, ἀπὲν ἔκαστε τῶν κεφαλῶν εἰς οὗ τοι φησὶ θυγα  
 τρὸς ἡδὲ κὼλῳ συ. εἰπὺντο δὲ καὶ τοὺς ἐναντίας,  
 τῶν διηγάσων τῶν φησὶν ἐνεγνόντων ἑπὶ ἑπὶ τοὺς αἰ  
 αντοὺς βοηθουμένων, λυθῆντο τοὺς διηγάσων νεκρὸς  
 ἐν τῷ κὼλῳ ἐν τῷ ἐν τῷ, καὶ αὐτὸν μεγαλοπρεπῶς ἔδωκε  
 φησὶν ἡ πόλις, καὶ ἐπὶ ἑπὶ ἑπὶ.

ἡ δὲ αἰώνος ἐν διαπύδισι περικύκλως φησὶν καλῶς.

ἡ δὲ αἰώνος πύδισι περικύκλως φησὶν καλῶς.

ἀλλὰ καὶ ἡμεῖς.

τῇ δὲ βίαντα κένουθε, ἔν τῷ ἀτρείμας ἡγάγῃ ἐρμῆς.

εἰς αἰδῶν περικύκλως γησὶν νιφόμηνον.

εἶπε γὰρ εἶπε δίκῳ ἑπὶ τῷ πνός, εἶτ' ἀρκυλινθεῖς.

παιδὸς δὲ ἀγκυλινθεῖς μακρὸν ἑπὶ τῷ πνός.

ἐπὶ κίσε δὲ πύδισι ἑπὶ τῷ πνός, πύδισι ἑπὶ τῷ πνός. ἀδύμνα

μονοῖν, εἰς ἑπὶ τῷ πνός. τῇ δὲ ἀδύμνων αὐτὸν ἐν, βίαντο.

δοκίμησε τῷ δὲ ἀδύμνων αὐτὸν ἐν, πύδισι ἑπὶ τῷ πνός.

μῆνης, πύδισι γὰρ ἑπὶ τῷ πνός. αὐτὸν ἐν, πύδισι ἑπὶ τῷ πνός.

πύδισι βλαβόρην ἐπὶ τῷ πνός. αὐτὸν ἐν, πύδισι ἑπὶ τῷ πνός.

χυρὸν γησὶν, φησὶν φύσεως ἑπὶ τῷ πνός. ἡ δὲ λίγειν δύδισι.

ἑπὶ τῷ πνός. ἐπὶ τῷ πνός. ἐπὶ τῷ πνός. ἐπὶ τῷ πνός.

φρονήσεως. ἐπὶ τῷ πνός. ἐπὶ τῷ πνός. ἐπὶ τῷ πνός.

ἐπὶ τῷ πνός. ἐπὶ τῷ πνός. ἐπὶ τῷ πνός. ἐπὶ τῷ πνός.

f τυχῶ



πύχλω ποδὶ γίνεσθαι. ἔλεγε δὲ ἀτυχὴ εἶναι ἢ ἀτυχίῃ  
 V. C. ἀπλοτέρως τε καὶ ἀν μὴ φόβοντα. καὶ νόστον ψυχῆς ἢ τῷ ἀδωάτῳ ἐ-  
 κείνῳ. ἀλλοτρίω δὲ ἡγεῖσθαι ἀμνημόνιστον εἶναι. Ερωτη-  
 θείς τί δυναχόρις. τῷ ὡδὶ ἢ χεῖρον ἔφη μεμβολίῳ  
 ἐυχρῶς ἐνεγκεῖν. συμπλήρω πρὶ ἀσεβέσι χειμα-  
 ρομῆς τῆ νεώς, καὶ κείνων σὺ θεός ὡν ἡ γαλυνόμενος,  
 V. C. ἡ γὰρ σιγαῖτε ἔφη, μὴ αἰδωνοῦνται ὑμᾶς ἐνθάδε πλείοντας.  
 Ερωτηθεὶς ὑπὸ ἀσεβῆς ἀνθρώπου τί πρὶ ὅτι εἰς ἐν σέ-  
 βεια, δειγὰ. τοῦ δὲ, τῷ αἰτίαν ᾧ σιγαῖς πυθομῆναι,  
 σιωπῶν ἔφη ὅτι ποδὶ τῷ ὅδῳ σοι προσηκόντων πω-  
 δάνει. Ερωτηθεὶς τί γλυκὺ ἀνθρώποις, ἐλπίς ἔφη. ἢ  
 διορ ἔλεγε διηγάριμ μετὰ ἐχθρῶν ἢ φίλων. τῷ μὲν  
 γὰρ φίλων πάντως ἐχθρὸν ἴσεται ἢ ἐτόρον. τῷ  
 δὲ ἐχθρῶν ἢ ἐτόρον φίλων. Ερωτηθεὶς τί πρὶ ἀν-  
 θρώπου τὸ τῷ πετα, ἔφη ὑποδαίνωμ. ἔλεγε ἢ βίον  
 οὗτω μετρεῖν, ὡς καὶ πρὶν καὶ ὀλίγον χρόνον βιω-  
 μένους. καὶ φιλεῖν ὡς μισήσοντας. σὺ γὰρ πλείους  
 συμβελαί εἶναι ἡγεῖσθαι. συνεβόλον τέ ὡδε. βραδείως ἐγχείρει  
 αὐτῷ τοῖς πατομένοις. ὁ δ' αὖ ἐλθὼν βεβαίως τηρῶν δια-  
 μνη. μὴ ταχὺ λαλεῖ, μανίαν γὰρ ἐμφαίνει. φρόνη-  
 σιν ἀγαπᾷ. ποδὶ θεῶν λέγει ὡς εἰσὶν. ἀνώξιον ἀνδρα-  
 μὴ ἐπαινεῖ ὅτι πρὶν πείσας λαλεῖ, μὴ βιασά-  
 μνη. ὅτι αὖ ἀγαθὸν πράττης, εἰς θεὸν ἀνάλπεμπε.  
 ἐφόδιον ἀπὸ νεότητος εἰς γῆρας ἀναλάμματα σοφί-  
 αν. βεβαίοντόρον γὰρ εἶδε τῷ ἄλλων ὑπὸ τῶν. μὴ  
 μνηται τοῦ βίαντος καὶ ἱππῶναξ ὡς προείρηται, καὶ  
 ὁ δύναται

ὁ δὲ οὐδ' ἔτι κλειτὸ μάλισα αὐτῶν ἐπὶ νύκτε  
 γραφας, ὃν περὶ νύκτα βίας ἐγνήσθη ὁ τούτῳ μεω. ὃ  
 πλείων λόγῳ ἢ τῶν ἄλλων. καὶ οἱ περὶ νύκτα δὲ αὐ-  
 τῷ τέμνῳ καὶ διέρωσαν τὸ τούτῳ μεῖον λεγόμενον.  
 ἀνεφθίγγατ', οἱ πλείστοι, καὶ οἱ.

## ΚΛΕΟΒΟΥΛΟΣ

**Κ**λεόβουλῳ ἐναγόρου λίνδιῳ, ὡς δὲ δούρειοι  
 κῆρ. ὅτι οἱ δὲ εἰς ἑρακλῆα ἀναφορὴν τὸ γῆν  
 αὐτόν. ὅτι οἱ δὲ καὶ ἑρμῆα ἀναφορὴν, μῆτις τε  
 ὅτι ὃν αὐγύπῳ οὐλοσσοφίας. γῆν τε αὐτῷ θυγα-  
 τῶρα ἡλεοβουλίνῳ, ἀνιγμῶ τῶν ἐξαμέτρων πρὶν  
 τελεῶν. ἡς μέμνηται καὶ ἡρατῶν ὃν τῷ ὁμωνύμῳ  
 δράματι, πληθυντικῶς ὑπὲρ γραφας. ἀλλὰ ὃ ἰδὼν  
 ὅτι ἀβλυῶς ἀνανέωσθαι αὐτῶν ἀπὸ δαναῶν. ὅτι ἐπὶ  
 σφῶν ἄσματα ὃ γείφας εἰς ἐπὶ τετραχίλια. ὃ ἑπὶ  
 γραμματῶν τῶν μῆτις ὅτι μῆτις ὅτι φασὶ πρὶν  
 χαλκῇ παρεχέσθαι εἰμι, μῆτις δ' ὅτι σήματι ἡεῖμαι.  
 εἰς τ' αὐτῶν ὅτι ὅτι, καὶ δ' ὅτι φασὶ μακρὰ τεθῆλη,  
 ἡεῖται τ' αὐτῶν λάμπη, λαμπρὰ τε τελεῶν,  
 καὶ πεταμοὶ ὅτι οἱ, ἀνακλύζη δὲ δάλασσα  
 αὐτῷ τῇ δὲ μῆτις τε περὶ λαμπρῶν ὅτι τῇ μῆτις  
 ἀγγελίῳ παρεχέσθαι, μῆτις ὅτι τῇ δὲ τῇ δὲ πῆται.  
 φόρουσι δὲ μαρτύριον σιμωνίδου ἄσματος ὅτι φησὶ,  
 τίς καὶ ἀνέστη νῦν πίσυρσιν λίνδου ναίταρ κλεόβου-  
 λον, ἀφ' ἡμετέρων πεταμοῖς, ἀνέστη τ' εἰαρινῶν, ἀελίου  
 τὸ φλογί, χερσὶς τὸ τελεῶν, καὶ δάλασσιν αἰσι δὲ



ἡ τὴν ἐξωιν

ναὶς ἀντιβρύμενθ' σήλας. ἅπαντα γὰρ ὅτι θεῶν ἥσσω. λίθον δὲ καὶ βρόττειοι παλάμαι θραύουσι. μωροὺ φωτὸς ἀδὲ βουλαί. ὃ γὰρ εἶν' ὁμήρου ἢ ἐπὶ γράμμα, πολλοὺς ἔτσι πρὶν ἔχονθ' φασὶ ἢ μὴ δαν. φέρεται δ' αὐτὸ ἐν τῷ παμφίλῃς ἑπομνήμασι καὶ ἀνιγμα τῶν.  
 εἰς ὃ πατὴρ, παῖδ' δὲ δυνάσθηα. τῶν δὲ ἐχέσω παῖδ' δὲ τεικόνοντα διαύδιχα εἶδ' ἔχουσαι. αἱ μὲν, λουκαὶ ἑασιν ἰδέειν, αἶδ' αὐτὲ μέλαινα. ἀδάνναρ δὲ τε ἔχει ἀρφδινηθσιν ἀπαλαί.  
 ἔσι δὲ ὁ ἐνιαιυτός. τῶν δὲ ἀδρυμένων ἐνδοκίμησεν αὐτῶν τὰ δὲ ἀμυσία ἢ πλῖον μὲνθ' ἐν βροτῶσι, λόγων τὲ πλῆθ' ἔχει. ἀλλ' ὁ καιρὸς ἀρκέσει. φρόνει τί κενδύρ. μὴ μὰ ταῦθ' ἄχαρις γινέσθω. ἔφη δὲ δέειρ σιωοικί. ρειρ τὰς θυγατράς παρεθνήσθω μὲν τῶν ἡλικίαν. ἢ φρονέειρ δὲ γυναικῶν. ἑποδαικνὺς ὅπ' δέει παιδούει. οὐα καὶ τὰς παρεθνήσθω. ἔλεγε τε ἢ φίλον δέειρ ἐν. οὐρατῆρ, ὅπως ἢ μᾶλλον φίλθω. ἢ δὲ ἐχθρόν φίλον πρῆειρ. φυλάσσεσθαι γὰρ τῶν μὲν φίλων ἢ φόρον. τῶν δὲ ἐχθρῶν τῶν ὑπὸ βουλήν. καὶ ὅταν τις ἐξίη πρὶν οἰκίας ζητείτω πρότορον τί μίμει πρᾶσσει. ὅταν εἰσέλθῃ πάλιν ζητείτω τί ἔπραξε. σιωεβούλου τε ἐν ἢ σῶμα ἀσκήειρ. φιλήνορ εἶν' μᾶλλον ἢ φιλόλαλ' ἢ φιλομαθῆ μᾶλλον ἢ ἀμαθῆ. γλωσσάν ἑυφημον ἢ ἰσχειρ. ἀρετὴ οἰκείον εἶν', κακίας ἀλλότριον. ἀδικίαν φεύγειρ. πῶς τὰ βέλπιστα συμβουλεύει. ἡδονῆς

ἀδρυμένων  
 κενδύλου

ἡδυνῆς ἡρατῆρ. βία μὴδὲν πρᾶττειν. τέκνα πάδ' ὀλέειν. ἔχθραν δ' ἀλύειν. γυναικὶ μὴ φιλοφρονεῖσθαι, μὴδὲ μάχεσθαι, ἀλλοτρίων παρόντων. ὃ μὲν γὰρ αἰνοῖαν, ὃ δὲ, μακίαν σημαίνει. οἰκίῳ παρόνον μὴ κολαζειν. δοκεῖν γὰρ παροῦν. γαμῆρ ἐν τῷ ὀμοίῳ. αὐτὸ γὰρ ἐν τῷ ἡρατῆρων λαοῦ φησὶ, δὲ τὰς ἡτῆσιν αὐτοῦ συγγενίας. μὴ ὑπὲρ γλαυρὸς σκωπτοί μύθοις. ἀπεχθῆσθαι γὰρ τὸ τοῖς. εὐτυχῶν μὴ ἰδοῖν ὥδ' ἡφανθῆ. ἀκρήσας μὴ ταπεινῶ. τὰς μεμβολὰς τῇ τύχῃς γυναικὸς ἐπίσαστο φόβον. ἐτελεύτησε δὲ γυναικὸς ἐπὶ βιτὸς ἐβδμήκοντα. καὶ αὐτὸς ὑπὲρ γλαυρὸν αὐτῇ.

ἀνδρα σοφὸν ἡλεόβουλον ἀκροδύμνον καταπνεύει  
 ὃς δὲ πατέρα λίνδιον πέντω ἀγαλλομένη.  
 ἀπεφθίγξαρ, μέτρον ἄριστον. καὶ σόλωνι ἐπίσειλυν  
 οὐτω.

Κλεόβουλον Σόλωνι.

Πολλοὶ μὲν πνύθ' εἰσὶν ἡταῖροι καὶ οἷον παντὶ. ἑταῖροι  
 φημι δὲ ἐγὼν πρτανωτάτων εὐεῖσθαι σόλωνι τὰν  
 λίνδον διαμοκρατομένην. καὶ ἡ νῆσος πελαγία.  
 ἥντα οἰκίουντι δὲ δὲ δεινὸν ἐν πῶσις ἄτ' αὐ. καὶ τῇ ἡταῖ  
 ροι δὲ ἐν ἡσσοῦν πάρ τῇ βασιλεύει.

ΠΕΡΙΑΝΔΡΟΣ

Περῖανδρος ἡνελίου κορίνθιος, ἀπὸ τοῦ τῷ ἡν  
 ρακλειδῶν γένους. οὐτὸς γήμας λυσίδην ἡν  
 αὐτὸς μέλιαν ἐν ἡλῶ τῷ προκλήσει τοῦ ἡνελίου  
 f 3 εἶωρ



εἰώμ τυράννυ καὶ ἐριδνεΐας φη' αἰσυράτης παῖ  
 δὺς ἀδελφῆς δὲ τοῖς αἰσοδ' ἡμῶς θυγατρά, δι' αἰσὺν  
 πάσης ἀρχιδίας ἐπ' ἤρξαν, ὥς φησιν ἡρακλείδης ὁ  
 πρυπτικός ἐν τῷ ποδὶ ἀρχῆς, παῖδας δὲ αὐτῷ ἐπ' ἴκη  
 σε δύο, κύψελον καὶ λυκόφρονα. ἄρ' μὲν νεώτορον  
 σιωπτόν. ἄρ' δὲ πρεσβυτόρον ἀφρονα. χρόνῳ δὲ ἔπει  
 ὀργῆς βαλὼν ἔποσθ' ἄλλω ἢ λακτίσας τῷ γυναικῶ  
 ἔγκυον ἔσαν ἀπ' ἐκτείνε, παιδὲς δὲ βολαῖς παλ  
 λακίδωρ, ἃς ὕσδορον ἔκρυψε. τότε παῖδα ἀπ' ἐκρύψ  
 ξον εἰς ὑδρὺν ἔλκυσεν, ἔπειτα μὲν ὡς ἔπειτα  
 μα λυκόφρον. ἡ δὲ δὲ ἐν γῆρα κηθεσὺς μετεπ' ἴμπε  
 ρ αὐτῷ ὅπως παρὰ λάβη τῷ τυραννίδῃ, ὅρ' φθάν  
 σκεντὸς οἱ κούρῳ αἰοὶ διεχρήσαντο. ὅθεν ὀργισθεὶς  
 ἔπεμψε τοῖς παῖδας αὐτῷ πρὸς ἀλυστῆρα ἐπ' ἐκ  
 ἄρ' μὲν. προσσχέσης δὲ φη' νεὺς σέμω, ἵκετ' ἐκτείνε  
 τῷ ἡρῶν ἔπειτα σέμωρ διδύωθ' ἔσαν. καὶ ὅς ἄβν  
 μήσας ἐτελεύτησεν ἡ δὲ γέγονε ἐπ' ὀργισμένη.  
 σωσιπράτης δὲ φησιν πρεσβυτόρον κούρῳ τελευτῆσαι  
 αὐτῷ, ἔπειτα τελευτῆσαν καὶ ἐπ' ἴμπε φη' τρεῖς ἀρ  
 κούσας ἐκτείνε ὀλυμπιάδῃ. ἔπειτα ἡρόδοτος ἐν  
 τῇ πρώτῃ ξένον φησὶν εἶν' ἑρασυβούλιον τῷ μιλκί  
 ων τυράννῳ. φησὶ δὲ αἰσιππὸς ἐν πρώτῳ ποδὶ πα  
 λαίᾳς τρυφῆς ποδὶ αὐτοῦ τάλδε, ὥς ἄρα ἐραδ' εἶσα ἡ  
 μήτης αὐτοῦ κρατεία, σωλὺ αὐτῷ λαλῆρα. καὶ ὅς  
 ἡ δὲ φανερὸν δὲ γέγονε βαρὺς πᾶσι ἐκτείνε φη'  
 ἄρ' ἀλγὲρ αὐτῷ τῇ φωνῇ. ἀλλὰ καὶ ἔφορος ἴσους ὡς  
 ἐν ξαντῷ

51. χύρα

ἔνθα ἔει νικήσειν ὀλύμπια τεθείπῳ, χερσὶν αὖ  
 διακίτα ἀναβῆναι. νικήσας δὲ καὶ ἀκρωρὶ χερσίου  
 κρατὶ πνα ἰορτῶν ὑπὸ χέλιον κενεομνημένης ἰδὼν  
 τὰς γυναικας, πάντα ἀφείλετο τὸν νόμον καὶ ἔν  
 πεμφε τὸ ἀνάθημα. λέγουσι δὲ πινθεὶς ὡς θελήσας αὖ  
 τῷ τὸν τάφορ μὴ γνωθῆναι ριζὸν πῶς μηχανήσαι  
 τ. διυσίρ ἐκίλυσεν νεανίσκους δειξας πινὰ ὁδὸν δι  
 ελθεῖν νύκτωρ, καὶ τῷ ἀπαυπνέοντα ἀνελεῖν καὶ δά  
 ψαι. ἔπειτα βαδίζειν ἄλλους τὲ καὶ τὰ τῶν τέταρ  
 ρας, καὶ ἀνελόντας δάψαι. πάλιν τὲ κρατὶ τῶν  
 πλείονας. καὶ οὕτως αὖτς ῥίς πρῶτης ἐντυχῶν, ἀνι  
 ρέθη. κορινθιοὶ δὲ ἐπὶ τῇ κρυοτάφορ ἐπέγραψαν αὖ  
 τοῦτόδε.

ωλούτῃ καὶ σοφίης πρὸς τανὶν πατεῖς ἡδὲ κόρινθοι

κόλῃς ἀγχιόλοις γῇ πόριανδρον ἔχει.

ἔσι καὶ ἡμῶν.

μή ποτε λυώσῃ σε τὸ μή σε τυχεῖν πινθεῖ, ἀλλὰ

τόρπεο πᾶσιρ ὁμῶς οἷσι δίδωσι θεός.

καὶ γὰρ ἀθυμήσας ὁ σοφὸς πόριανδρον ἀπίσκει

οὐκ ἐκ τυχερὴν πρῆξιθ ἢς ἔβελον.

τὸτῃ ἔσι καὶ τῷ μνηδὲν χρηματῶν ἐνεχα πρᾶτται. <sup>ἔστι.</sup>

δεῖν γὰρ τὰ κορδαίντα κορδαίνειν. ἐπρίνσε δὲ καὶ

ὑποθήκας εἰς ἔπη δυοχίλια. ἔπε τὲ τοῦ μέλλον

τας ἀσφαλῶς τυραννήσειν, τῇ ἐκαστῇ δυνάμει δοτα

καὶ μὴ ῥίς ὁπωλοῖς. καὶ ποτε ἐρωτηθεὶς εἶπε τί τυραν

νείη, ὅτι καὶ τὸ ἐκαστῶς ἀρσέναι καὶ τὸ ἀφαιρε

θῆναι



ἀφ' ὧν μαῖα  
αὐτὸ

θιῶναι κίνδυνον φόβει. ἔλεγε δὲ καὶ τάδε, καλὸν ἦν  
χία, ὡς φαλῆς προπέτεια. κορδὸ αἰσχρόν. δη-  
μοκρατία κρείττον τυραννίδος. αἰ μὲν ἡδοναὶ φθαρ-  
ταί. αἰ δὲ τιμαὶ ἀθάναται. ἐντυχὼν μὲν μέτειθ' ἰ-  
δί, δυστυχὼν δὲ φρόνιμος. φίλοις ἐντυχούσι καὶ  
ἀτυχούσιν ὁ αὐτὸς ἴδι. ὃ αὖ ὁμολογήσης δεικνύει. λό-  
γων ἀκρόβητῶν ἐκφορὰν μὴ πρῶ. μὴ μόνον σὺ ἀμαρ-  
τανώντας, ἀλλὰ καὶ σὺ μέλλοντας, κόλαζε. ἔτι  
πρῶτος δδρυφόρος ἔαχε, ὃ τῷ ἀρχῶν εἰς τυραν-  
νίδα μετέστησε, καὶ ἔκ εἰς ἣν ἄσει ζῶν σὺ βουλομέ-  
νους, καὶ δὲ φησὶν ἐνφορὸν καὶ ἀριστοτέλῃς. ἤμαρ  
δὲ ποῦ τῷ τριακσὺν ὀγδόῳ ὀλυμπιάδα, καὶ  
ἐκτυράννιστον ἔτι τετάρτην ὄντα. σωπῶν δὲ καὶ ἡρα-  
κλείδῃς, καὶ παμφίλῃ ἣν ἔδ' πέμπτω τῶν ἑπομνη-  
μάτων δύο φησὶ ποδαιάνδρου γέγονέναι. ἄρ μὲν, τύ-  
ραννον. ἄρ δὲ, σοφὸν καὶ ἀμπερακίῳ τῷ. ἔδ' καὶ νε-  
αίνης φησὶν ὁ λυζικλῆος, ἀνελίξας τε εἶν' ἀλλήλοισ,  
καὶ ἀριστοτέλῃς μὲν ἄρ κρείνδιον φησὶν εἶν' ἄρ σο-  
φόν. πλάτῃν δὲ ἔφησι. τὸ τὸ δὲ, μελέτη ἢ παῦ. ἢ  
θελε δὲ καὶ ἄρ ἰσθμὸν διορύξαι. φόρεται δὲ αὐτὰ  
καὶ ὡς οὐλή.

Περὶ ἀνδρῶν τοῖς ὁμοῖς.

Πολλὰ χεῖρας ἔδ' πυθοὶ ἀπὸ μω, ὅτ' εἰς ἑμ' ἐλθόντι  
τὸ αὐτὸ ἡξίωσι καὶ ὅς κρείντορας τὰς ἐμὰς ὡς οὐ-  
λῆς. ἐγὼ δὲ ὑμᾶς ἀφ' ἐχέμαι ὡς ἴσεται αὐτῶν, ὅτι δια-  
μοικνῶτατα πόσιν μοι ὡς πόρῃ ἐγγύς ὑμῶν ἄν-  
λῆς

λίαν παρὰ τὴν λυδὴν δὲ σάεδεις, ἡ δὲ ὥρ μὴ ὀκνεῖτε  
καὶ παρ' ἐμὲ φοιτῆτε τὴν κορινθίαν τύραννον. ὑμᾶς γὰρ  
καὶ ἄσμενοι ὄντες κορινθιοὶ φοιτῶντας εἰς ὁίκον  
τὴν ποδαϊστήν.

Ποδαϊστὸν Προκλῆι.

Ἀμὴν μὲν ἀκούσι τὰς δάμαρτον τὴν ἁγίαν. τὴν ἡ  
ἐκὼν τοῦ παιδὸς ἢν ἀπὸ θυμὸς πρὸς αὐτὸν, ἀδικεῖς. ἡ δὲ ὥρ  
παύσασθαι τὴν ἀπλῆν τῶ παιδὸς, ἡ ἐγὼ γὰρ ἀμυν-  
μαι. καὶ γὰρ δὴ καὶ αὐτὸς πρὸς ἐπὶ τῇ τε θυγα-  
τρὶ καὶ τακαύσας αὐτὰ κατὰ πᾶσαν κορινθίαν  
ἐμάτα.

ἔγραψεν δὲ αὐτὸν καὶ θεασύβουλον οὕτως.

Θεασύβουλον Ποδαϊστήν.

Τῶ μὲν κήρυξι σεῦ ἔδωκεν ἀρκυνάμην. ἀγαγὼν  
δὲ αὐτὴν δὲ λήϊον, σὺ ἐσθλὴν τῇν ἀσυχύων δὲ  
βδωπαίω ἀπεβίβωρον ὁμαρτίοντ' ἐκείνου. καὶ  
σοὶ ἀναγγελεῖ εἰ ἐπὶ πόρῳ, ὅτι μὲν ἀκούσεις ἡ ἰδοὺ σὺ  
τε κρίνεις οὕτως, ἢν γὰρ ἐθέλῃς κατεργάζεσθαι τῶν αἰσιν  
μνηστῆρ, σὺ δὲ ὁχλὸς τῇν πρὸς τὴν δὲ αἰσιν. ἢν τε  
πρὸς ἐχθρὸς γὰρ φαίνεται ἢν τε μὴ. ὑπερπλήσας αὐτὸν αἰ-  
συμνήτη καὶ τῇν πρὸς ἐταίρων.

ΑΝΑΧΑΡΣΙΣ Ο ΣΚΥΘΗΣ

Ἀναχάρσις ὁ σκυθὴς γινώσκων μὲν τῶν ἡρώδων, ἀδελ-  
φὸς δὲ καὶ δυνάστην τῶ σκυθῶν βασιλῆως, μητρὸς  
δὲ ἐκ τῆς δὲ. διὸ καὶ δὲ γλωττῶν τῶν δὲ ἐπὶ τῇ  
τῇν τε παρὰ τοῖς σκυθαῖς νομίμων ἢ τῇν παρὰ τοῖς  
ἐλλήσι



Ἕλλησιρ εἰς ἐντέλειαν βίῃ, καὶ τὰ κτλ ἥρπ λεμον, ἐπὶ  
 τὴν ὀκτακόσια. παρέχε δὲ καὶ ἀφορμὴν παροίμιας  
 δὲ ἡ παρρησιασὶς εἶν, τὴν ἀπὸ σκυθῶν ῥήσιρ. λέγει  
 δὲ αὐτῶν σωσικράτης ἰλθεῖν εἰς ἀβλώας κτλ πλὴν τε σ  
 σαρακηνῶν ἰβδόμῳ ὀλυμπιάδα, ὡδὶ ἀρχεντΘ ἐν  
 κρωτς. ἔρμυππΘ δὲ πρὸς τὴν σόλωνΘ οἰκίαν ἀ/  
 φικόμενον τῶν θορακῶν τῶν πνὶ κελεύει μινύσαι  
 ὅτι παρὲν πρὸς αὐτῶν ἀνολχαρσις, καὶ βούλοιντ αὐτ  
 ῶν θεώσασθαι, ξγνΘ τὲ εἰς οἶον τε γνέσθαι. καὶ ὁ θε  
 ρωπων εἰσαγγείλας ἐκελεύσθη ἑπὶ τοῖ σόλωνΘ  
 εἰπῶν αὐτοῖς, ὅτι πρὶν ταῦς ἰδίαις πατρίσι ξγνός  
 τριούται. γνῶν ὁ ἀνολχαρσις ἰλθῶν ἔφη, νῦν αὐτὸς  
 γνὴ τῇ πατρίδι εἶν, ἔπεισθήκειν αὐτοῖς ξγνός τριεῖ  
 σθαι. ὁ δὲ, ἡγαπα πλάγεις τὴν ἐριμότητα εἰσέφεικν  
 αὐτῶν, καὶ μέγιστον φίλον ἐποίησαρ. μὲν χρόνον δὲ  
 παραγνόμενΘ εἰς σκυθίαν καὶ νομίζων τὰ νόμιμα  
 παραλύειν τῇ πατρίδιΘ, πρὸς ὧν γνὴ τοῖ ἱλλωί/  
 ρειρ, ῥέδουθεις γνὴ κυνηγούω πρὸς τὰ δελφῶ τελευ  
 τᾶ. εἰπὼν δὲ μὴν ῥὺν λόγον ἐκ τῇ ἱλλωίΘ σωθῆν  
 ναι. δὲ ῥὺν φθονὸν γνὴ τῇ οἰκείᾳ ἀκρίβεται. γνῶν δὲ  
 τελευτὰς ἱλλωινὰς δὲ τελευτᾶ δὲ χροδιῶναι. ἔ  
 ἴσιρ ἡμῶν εἰς αὐτόν.

ὅτ σκυθίῳ ἀνολχαρσις ὅτ ἦλθε πρὸς πλὴν πλανηθεῖς  
 πάντας ἔπειθε βίου ἡθούρι ἱλλωινῶν.  
 ῥὺν δὲ ἐπὶ μῦθον ἀκράντρ γνὴ σομωτῶσιρ ἔχοντα  
 πῆλως ὅτ ἀθανάτως ἡρπασεν ὧν δόναξ.

εἰτι τῷ ἄμπελον εἶπε τρεῖς φόβον βότρυς. ἔρ  
 πωδερμ ἡδυνῆς, ἔρ δούτορον μέθης, ἔρ τειρ ἁηδί <sup>ἀκφθεγμαῖα</sup>  
 ας. δαυμάζειν δὲ ἔφη πῶς παρὰ τῆς ἑλλήσι ἀγωνί <sup>αὐτῶ</sup>  
 ζονται μὲν οἱ τεχνίται, κύνει δὲ οἱ μὴ τεχνίται.  
 Ερωτηθεὶς πῶς ἔκ ἂν γήνοιτο τις φιλοπότης, εἰ πρὸ  
 ὀφθαλμῶν εἶπεν ἔχει τὰς τῶν μεθύοντων ἀχνημοσύ  
 νας. Θαυμάζειν τί ἔλεγε πῶς οἱ ἑλλωδὺ νομοθετῶν  
 τὸν ἡγῶν τῶν ὑβειζόντων σὺν ἀθλητὰς πρῶσι <sup>εἰς</sup> ὧ  
 τύπῃν ἀλλήλους. μαθὼν τέτταρας διακτύλους εἶν ἔρ  
 πάχ <sup>εἰς</sup> τῇ νεῶς, ῥοσούρρ ἔφη τῷ θανάτῳ σὺ πλεί  
 οντας ἀπέχειν. ἔρ ἑλαιον μαλίας φάρμακον ἔλεγε,  
 δὲ ἔρ ἀλειφομένης σὺν ἀθλητὰς ὑπὸ μαινέας ἀλλή  
 λους. πῶς ἔλεγε ἀπαγορεύοντες ἔρ ψεύδεας ἐν ταῖς  
 ἡγῶν πλείαις φανερῶς ψεύδονται. καὶ θαυμάζειν φη  
 σὶ πῶς ἑλλωδὺ ἀρχόμενοι ἢ ἐν μικροῖς πίνουσι. πῶ  
 σὶ γὰρ τὸ δὲ ἐν μεγάλοις. ὑπὸ γράφεται δὲ αὐτῷ ταῖς  
 εἰσὶν, γλώσσης γαστρὸς αἰσθῆσι <sup>κερατῆρ</sup> κρατῆρ. ἐρωτηθεὶς  
 εἰ εἰσὶν ἐν σκύδαις αὐτοῖς, εἶπεν, ἀλλ' ἔρ δὲ ἄμπελοι.  
 Ερωτηθεὶς τίνα τῶν πλοίων εἰσὶν ἀσφαλίσδρα, ἔρ  
 φη, τὰ νηγεωλκηνεγνά. καὶ εἶπε ἔρ θαυμασιώτατον  
 ἰωρακῆσαι παρὰ τῆς ἑλλήσι, ὅτι ἔρ μὲν ἡραπυδὸν ἐν  
 τῆς ὄρεσι ἡραταλείπουσι. τὰ δὲ ξύλα εἰς τῷ κῆλιν  
 κρημίζουσι. Ερωτηθεὶς πότορον πλείονος εἰσὶν, οἱ  
 ζῶντες, ἢ οἱ νεκροί, ἔφη. σὺν οὖν πλείοντος ποῦ τίθης.  
 Ουειδίζόμενος ἔρ ἀπὸ ἀπικροῦ ὅτι σκύθης ὄξιν ἔφη.  
 ἀλλ' ἐμοὶ μὲν ὄνειδος ἢ πατὴρ, σὺ δὲ τῇ πατρίδῳ.



15.  $\int_{49}^{\infty} \frac{1}{\sqrt{x}} dx$

Εγὼ βασιλεῦ λυδοῦν ἀφ' ἑγμαι εἰς τὴν ἑλλή-  
νων διδ' ἀχθισόμην· ἦθη τὰ τέτλην καὶ ὑπὸ τοῦ  
ματα. χρυσοῦ δ' ἔδ' ἐν δέομαι, ἀλλ' ἀπ' ἑχεν με ἔπα-  
νήκειρ δ' ἐσκύδατ' αὐδ' ἀμείνονα. ἦ κω σοῦ δ' ἐσάρι-  
δεις, πρὸς μεγάλου πρὶς μὲν· ἐν γυνώμη γι γνέατ'.

Μὴ ὥς φησι σωσιπράτης ἱερμπε  
 πρὸ παρατίθεται, ὅτι γὰρ ὁ χλωὺς ἀπὸ κώ  
 μης πρὸς οὐταίνης ἢ ὅτι λακωνικῆς (ὡς ῥίς ἐπὶ ἀκα  
 ταριθμῆται. φασὶ δὲ αὐτὸν καὶ τυραίνου πατρὸς εἶ  
 ναι. λέγεται δὲ πρὸς τινὲς αἰναχάρσι δὲ πωδανο  
 μέν, εἴ τις αὐτὸν σφόδρῳ, τὴν πυδίαν εἰπεῖν ἃ  
 πόρ προείρηται ἐν τῷ θαλάτῳ βίω ὑπὸ χείλων.  
 Οἱ τοῦ ὅτι πινὰ φημι μύσων, ἐν χλωὶ γηῖσθαι  
 σοῦ μάλλον πρὸς πίδασι ἀρεστάτα πόνυα γλῆμοι.  
 πολυπραγμονήσαντα δὲ ἰλθεῖν εἰς τὴν κώμην καὶ  
 ἰνέειν

εὐρεῖν αὐτὸν θόρυβος ἐχέτω ἀφ' ὅτε πρὸς αὐτόν  
 ἦν. καὶ εἰπὲν, ἀλλ' ὡς μύσων δ' ἔχ' ὥρα νῦν ἀφ' ὅτε  
 καὶ μάλα εἶπεν, ὥς τε ὑπὸ σκυδάλειρον. ἄλλοι δὲ τὸν  
 χροσμὸν οὕτως ἔχειν φασί. ἡτεῖον τινα φημι, καὶ  
 ζητοῦσι τί ὅστις ἢ ἡτεῖον. παρ' ἐν δὲ δῆμον  
 εἶναι λακωνικῆς, ὅθεν εἶναι τὸν μύσωνα. σωσιπράτης δ'  
 ἐν δ' ἀδελφῶν, ἀπὸ μὲν πατρὸς ἡτεῖον εἶναι. ἀπὸ δὲ μη-  
 τρὸς χλωῖα. ἐνθ' ὅφρων δ' ὁ ἡρακλείδης τοῦ περὶ τοῦ  
 κρήτα φησιν εἶναι. ἡτεῖον γὰρ κρήτα εἶναι κρήτης. ἀνα-  
 ξίλαος δ' ἀφ' ἡμέρας. μέμνηται δὲ αὐτοῦ καὶ ἰππῶνας  
 εἶπεν, καὶ μύσων ὃν ἀπὸ τῶν ἀνείπεν ἀνδρῶν σω-  
 φρονέσασθαι πάντων. ἀεισόμενος δὲ φησιν ἐν τῇσιν ἀπο-  
 ραδίῳ, δ' ἔργον τίμων. αὐτὸν καὶ ἀπὸ τῆς αὐτῆς γε-  
 γονῆναι. μισανθροπῶν γὰρ ὡφελῆναι τοῦ ἐν λακωνί-  
 δαίμονι μόνον ἐπ' ἐρημίας γελῶντα. ἀφ' ὧν δὲ τινος  
 ὑπὸ αὐτῶν \* γελᾷ. φαῖναι, δι' αὐτὸν εἶδεν. Φησὶ δ' ἀει-  
 σόμενος ὅτι ἐνθ' ἦν καὶ ἀδελφῶν ὧν, ὅτι μὴ δὲ κλέως  
 ἀλλὰ κώμης, καὶ ταῦτα ἀφανῆς. ὅθεν δ' ἔτι τῶν ἀδελφῶν  
 αὐτοῦ καὶ τὰ αὐτοῦ τινὰς πεισιπράτω ποιεῖναι  
 ἔθ' τυραννῶν, χωρὶς πλάτωνος τοῦ φιλοσόφου. μέ-  
 μνηται γὰρ αὐτοῦ καὶ ὅτι ἐν τῷ πρῶτα ὅρα αὐτὸ  
 ποιεῖν αὐτὸν. ἔφασκε δὲ, μὴ ἐκ τῶν λόγων  
 τὰ πρᾶγματα, ἀλλ' ἐκ τῶν πραγμάτων αὐτῶν λόγους  
 ζητεῖν. δ' γὰρ ἐν τῇσιν λόγων τὰ πρᾶγματα σω-  
 τελεῖσθαι, ἀλλ' ἐν τῇσιν πραγμάτων αὐτῶν λόγους.  
 κατέστρεψε δὲ βίος ἐπὶ τὰ καὶ ἐν τῇσιν ἔχοντα.

[δ] εἶπεν

[8]

 καὶ πρὸς τὸν δὲ τὸν  
 καὶ τὸν ἀφ' ὅτε



**Ε**Πιρηνίδης καὶ δὲ φησι θεόπρωτον καὶ ἄλλοι συ-  
 χνοί, πατρὸς μὲν ἴω φαίσις. οἱ δὲ, Δωσιάδης. οἱ  
 δὲ ἀγιστάρευν. κρήν ῥ γγύθ, ἀπὸ κυνασοῦ, καὶ θίσει  
 τῆς κρήνης ῥ εἶδθ παραλλάσσων. ἔτθ πρὶ περ  
 μφθεις παρὰ τοῦ πατρὸς ἔτθ ἀγρόν ὡδὶ πρόσβατον, ἔτθ  
 ὀδθ καὶ μόνιμβείαν ἐκκλίνας ἔτθ ἀντρω πρὶ κατε  
 κριμήθη ἐπὶ καὶ πρὶν τήκοντα ἔτθ. ὁφθαλμοὺς δὲ μῦθ  
 τῶντα ἐκρίτει ῥ πρόσβατον, νομίζων ἐπὶ λίσον κεκοι-  
 μῆσθαι. ὡς δὲ ἔχεν εὐεσκε παρὲν γγύθ εἰς τὸν ἀγρόν,  
 καὶ μῦθ σκούασμῶν καὶ καταβῶν ἔτθ παρὲν τῶν τῶν  
 κτήσιμ, πάλιν ἦκε εἰς ἄσθ ὁφθαλμοῦ μὲν θ. καὶ κῆι δὲ  
 εἰς τῶντα εἰσὶν οἰκίαν, ποδὲν τυχε ρὶς πωθαι  
 νομῶν πρὶ εἶν. ἔως τὸν νεώτοτον ἀδελφόν ἐν τῶν τῶν  
 τε ἦδθ γόροντα ὄντα, πᾶσαν ἔμαθε παρὲν ἐκείνθ τῶν  
 ἀλήθειαν. γνωθ εἰς δὲ παρὰ ρὶς ἔλθαι, θεοφιλέσαι  
 τθ εἶν ἔπειθ ἔλθαι ἔθθ ἀθλυνάοις τότε λοιμῶ κατε  
 χρομῶν, ἔχουσιν ἢ πυθία καὶ θῆραι τῶν πρὶν. οἱ δὲ,  
 πέμπουσι ναῦν τε καὶ νικίαν τὸν νικησάτθ εἰς κρή-  
 ν τῶν καὶ τῶν τῶν τὸν ὡδὶ μὲν ἰδῶν. καὶ ὅς ἐλθὼν ὀλυμ-  
 πιαδὲν τε σαρακοστὴ ἐκτὴ ἐκείνησιν αὐτῶ τῶν πρὶν,  
 καὶ ἔπαυσε τὸν λοιμὸν ἔτθ τὸν τῶν τῶν. λαβὼν πρὸ  
 βατα μέλανα τε καὶ λουκά, ἦγαγε πρὸς τὸν ἄρειον  
 πᾶσον. καὶ κῆιθ ἐκείνθ ἰγύαι οἱ βούλουντ, πρὸς ἄξας  
 ρὶς ἀκρολῦθοις ἔνθα αὐτὸν κατεκλίνου αὐτῶ ἔκασον  
 θύειν τῶν προσήκοντι θεῶ. καὶ ὄντω λῆξαι ῥ κακόν.  
 ὀθῶν

αἱ. V. f. πάντα  
 καὶ τῶν

ὄθρην ἔπ' καὶ νῦν δ' ἔτι ἐν ῥέει κ' ἔτι σὺ δὴ μὲν τῷ ἄθρ  
 ναίωρ βωμὸν ἀνώνυμους, ἐπὶ μνηματὶ τότε γῆροι  
 μένης θύλασσεως. οἱ δὲ, τῶν αἰτίαν εἰπεῖν τοῖσι μοῖ  
 ῥ' κυλώνειον ἄγ' ὅ, σημαίνοντα τῶν ἀπαλλαγῶν.  
 καὶ δὲ ἔδ' ἄρ' ἀνδάνειν δύο νεανίας κρατίνον καὶ  
 κτησίβιον, καὶ λυθλῶναι τῶν συμφορῶν. ἄθρωναῖοι δὲ  
 τάλαντον ἐφ' ἡμέραν δαῖναι αὐτοῖς καὶ ναῦν τῶν  
 ὄν κρήτῳ ἀπάξουσιν αὐτόν. ὁ δὲ, ῥ' μὲν ἀργύριον ἔ  
 προσήγαγ' ὀλίγον δὲ καὶ συμμαχίαν ἐποίησε το  
 κνωσίων καὶ ἄθρωναῖων. καὶ ἐπανελθὼν ἐπ' ὅρου με  
 τ' ἔπ' ἄλλ' μετήλλαξεν ὡς φησι/φασγῶν ἐν τῷ ποδὶ  
 μακροβίων βιτὸν ἔτι ἑπτά καὶ πεντήκοντα καὶ ἐ  
 κχτόν. ὡς δὲ κρήτῳ λείγουσιν ἔνός δ' ἵοντο τριαν  
 σίων. ὡς δὲ ξυνοφάνης ὁ κοροφώνιος ἀκηκοέναι φη  
 σι, τεπάρτα πεντήκοντα καὶ ἑκατόν. Επείησε δὲ κου  
 ρήτων καὶ κορυβαίων τῶν γῆνδριν καὶ θεογονίαν ἔπ' ἑ  
 πεντακισχίλια. ἀργούς ναυπηγίαν τε καὶ ἰώσου  
 εἰς κόλχους ἀπέπλευσεν, ἔπ' ἑξακισχίλια πεντακί  
 σια. σωίγραφε δὲ καὶ καταλογισθῆναι ποδὶ θυσιῶν  
 καὶ τῇ ἐν κρήτῳ πεντήκοντα. καὶ ποδὶ μύων καὶ ῥαδα  
 μάνθου εἰς ἔπ' ἑξακισχίλια. ἰσχύστερ δὲ καὶ  
 παρ' ἄθρωναῖοις ῥ' ἰδρὸν τῶν σεμνῶν θεῶν. ὡς φησι λό  
 βων ὁ ἀργεῖος ἐν τῷ ποδὶ πεντήκοντα. λέγεται δὲ καὶ  
 πρῶτον οἰκίας καὶ ἀγρὸς καθεῖραι, ἔ' ἰδρὰ ἰσχύστε  
 ρ. εἰσὶ δ' οἱ μὴ κορυμνῶναι αὐτὸν λείγουσιν, ἀλλὰ χρό  
 νον πινὰ ἐκπατῆσαι, ἀσχολεύμενον ποδὶ δ' ἰσορμῆαν.  
 φόρεται

καὶ Κ. C. φησὶν



φορεται δι' αὐτοὺς καὶ ὑπὸ σολῆ πρὸς σόλωνά τῳ νομο  
θέτῳ, ποδὲ ἔχοντα πολιτείαν ὡς δέταξε κρησὶ μῖνως.  
ἀλλὰ δημήτειος ὁ μάγνης ἐν τοῖς ποδὶ ὁμωνύμων  
πρὸς τῶν τε καὶ συγγραφῶν διελέγχειν πειρᾶται  
τῷ ὑπὸ σολῶν ὡς νεαράν, καὶ μὴ τῇ κρητικῇ φωνῇ γι  
γραμμῶν. ἀττίδι δὲ καὶ ταύτῃ νῆα. ἐγὼ δὲ καὶ ἄλλ  
λῳ ἐνδορ ὑπὸ σολῶν ἔχονσαν οὕτως.

Επιμηνίδης Σόλωνι.

Θαύρξει ὦ ἑταῖρε. αἶ γὰρ ἐπὶ θητοδύσσιρ ἀθλῶν αἰοῖς  
καὶ μὴ ἐνωμομηγῶν ἐπεθήκατ' πεισίςρατ', ἔ  
χε καὶ τὰν ἀρχαὶν ἀεὶ, ἀνδραπρωδῶν τὼς π  
λήτας. νῦν δὲ ὁ κακῶς ἀνδρας δ' ἄλῳτ'. γι μεμνα  
μῶν τὰς σόλωνος μακρύσι, ἀλγόντι πᾶσι δα αἰ  
σχῶας, ὁ δὲ ἀνέξονται τυραννῶντες. ἀλλ' αἶνε πει  
σίςρατ' ἡτασχεθῇ τὰν πόλιν, ὁ μὲν δὲ πᾶσι δα  
τῶν ἔλπεται ὅτι καὶ τ' ἔξεσθαι. δυσμάχων γὰρ  
ἀνθρώπων ἐλδοθῶν ἰάξαντας ἐν τεθμοῖς ἀρίστοις δού  
λως ἦεν. τὸ δὲ μὴ ἀλᾶσθαι, ἀλλ' ἔρωε δὲ κρήτιν π  
θ' ἄμμε. γυντᾶ γὰρ ἐκ δέεται γι δεινός ὁ μόνος  
χ'. αἶσα' ἐπὶ πλατεῖν ἐγκύρουντ' ἐν τῶν γι  
φίλοι, δαμαίνω μὴ τί δεινὸν πάθης.

καὶ εἴτ' ἐμὴν ὦδε. Φησὶ δὲ δημήτειος πᾶς ἴσοι  
ρεῖν ὡς λαῶν παρὰ νυμφῶν ἰδοῦμαι π καὶ φυλάτ  
γι ἐν χηλῇ βοός. πρὸς φοβρόμῳς τε καὶ ὀλίγοι, μὴ  
δεμᾶ κενεσθαι ἀρκείσει, μὴ δὲ ὀφθῆναι πρὸς δει  
ωρ. μέμνηται αὐτοὺς καὶ τίμαι ἐν τῇ δεινότητι. λέ  
γουσι

γούσι δὲ πινὺς ὅτι κρήτης αὐτῆς θύσιν ὡς θεῶ. φασὶ  
 γὰρ καὶ γνωσικώτατοι γέγονέναι. ἰδόντα γούιν τῶν  
 μουονχίων παρ' ἀθλιωαίοις, ἀγνοεῖν φαῖναι αὐτοῦ ὅ-  
 σων ηγεκὼν αἵ πορ ἔσαι εἶδεν ὃ χωρίον αὐτοῖς. ἐπεὶ  
 καὶ τοῖς ὁδοῦσιν αὐτὸν διαφορῆσαι. ταῦτα ἔλεγε ῥοδ-  
 τοῖς πρότοτον χρόνοις. λέγεται δὲ ὡς καὶ πρῶτον  
 αὐτὸν αἰανὸν λέγοι, ἔλανε δαιμονίοις προείρη τῶν  
 ἐπὶ ἀρηγῶν ἀλωσιμ. προσωποθεῖναι τε πρῶτος  
 ἀναβεβιωχῆναι. θεότρεπον δ' ἐν τοῖς δαιμονίοις,  
 ηγετασκόναζοντο αὐτὸν ὃν νυμφῶν ἰδὼν ῥα-  
 γῶναι φωνῶν δὲ οὐρανῶν, ὑπὸ μιν δὲ μὴ νυμφῶν ἀλλὰ  
 διός. κρησὶ τὲ προείρη τῶν λακεδαιμονίων ἦσαν  
 ἐπὶ ἀρηγῶν ηγετὰ πορ προείρηται. καὶ δὲ ἔλ-  
 φθησαν πρὸς ὅς χερσίν. γηρεῖναι τὲ ἐν ῥοδύτοις ἡ-  
 μόροις αὐτὸν ὅσα πορ ἔτη ηγετασκόναζον. καὶ γὰρ οὐ-  
 τω φησὶ θεότρεπον. μυρωνιανὸς δὲ ἐν ὁμοίοις φησιν  
 ὅτι κούρηται αὐτὸν ἐν ἡλίου κρήτης. καὶ ὃ σῶμα αὐ-  
 τὸ φυλάττει λακεδαιμόνιοι παρ' ἑαυτοῖς ηγετὰ π-  
 λόγιον. ὡς φησὶ σωσίβιον ὁ λακων. γέγονασι δὲ καὶ  
 ὑπὸ μιν δὲ ἄλλοι. δύο, ὃ τε γηεαλόγῳ, καὶ τριτῷ  
 ὁ δῶκεσι γεγραφὼς πορ ῥοδῶ.

## ΦΕΡΕΚΥΔΗΣ

Φερεκύδης βολύον σύριον ηγετὰ φησιν ἀλ-  
 ξανδρῶν ἐν διαδοχαῖς πιπτακῶν διακίνοε.  
 εἶδεν φησὶ θεότρεπον πρῶτον πορ φύσεως, ἔλ-  
 λησι γραφῆναι. πρῶτον καὶ δαιμονία δὲ λέγεται πορ  
 h αὐτὸ



αὐτοῖ. καὶ γὰρ παρὰ τὸν αἰγιαλὸν τῇ ἑσπέρῃ ποδὶ  
 θανυμῶσαι παρυῦντα καὶ ναῦν οὐροδρομῶσαν ἰδόντα εἰπεῖν,  
 πῶς αὐτοῖ ὥς μετ' ὃ πρὸν ἤστα δύσετο. καὶ ἐν ὀφθαλμοῖς αὐ-  
 τοῖ ἤστα δύναι. καὶ ἀναμνησθέντες ἐν φρέσιν ὕδα-  
 τος πίνοντα προειπεῖν ὥς εἰς τρίτῳ ἡμόρῳ ἴσσι  
 γροισμός. καὶ γνέσθαι. ἀνιόντα τὴν εἰς ὀλυμπίαν ὄν-  
 τοι μολύνει, τῷ ξένῳ ποδὶ λαῶν συμβουλευσάμενος  
 καὶ μὲν τῷ οἰκίῳ. ἔπειτα, μὴ πειδύναι. μολύνει  
 δὲ ἱαλῶκεν. ἔπειτα λακεδαίμονις εἰπεῖν, μήτε χερ-  
 σὶν πῶς μήτε ἀργυροῖ, ὥς φησι θεόπρωτος ἐν  
 θανυμασίῳ. προσάξαι δὲ αὐτῷ ὄναρ ὅσον τὸν ἥρα,  
 κλῆα. ὅρ καὶ τῇ αὐτῇ νυκτὶ τῆς βασιλεῦσι κελεύ-  
 σαι φερέκυνθον πείθεσθαι. γένιοι δὲ πυθαγόρα ποδὶ  
 θάνατον πῶς ταῦτα. φησὶ δὲ ἔρμης πρὸς πλείους ἐφεσώ-  
 τῳ αὐτοῖ ἐφούσιος καὶ μάγνησι, βουλόμηνος ὅτι ἐφούσιος νικῶ-  
 σαι πυνθῆσθαι τινὸς παριόντος ἥθην εἶναι. τοῖ δ' εἰπὺν  
 τῷ ἐφέσου. ἔλκυσον με ρίνω ἐφῇ τῷ σκελῶρ. καὶ  
 θῆς εἰς τὴν τῷ μαγνήτην χώραν. καὶ ἀπάγγελον  
 σου τῆς πελῖταις, μὲν τὸν νικῶσαι αὐτόν με δάφαι. ἐν  
 πεδονηφῶναι τε ταῦτα φερέκυνθον. ὁ μὲν, ἀπῆγγει-  
 λον. οἱ δὲ, μὲν μίαν ἐπελθόντες κρατοῦσι τῷ μαγνή-  
 τη. καὶ τότε τε φερέκυνθον μὲν λαλῶντα δάφαι  
 σιν αὐτόν καὶ μεγαλοπρεπῶς τιμῶσιν. γένιοι δὲ φα-  
 σιν ἐλθόντα εἰς δελφῶν ἀπὸ τοῦ κωρυκείου ὄρεος αὐ-  
 τὸν δισκῶσαι. ἀριστότερον δὲ ἐν τῷ ποδὶ πυθαγόρου  
 καὶ τῷ γνωρίμῳ αὐτοῖ, φησὶ, νοσήσαντα αὐτὸν ὑπὸ  
 πυνθῆ





Εσι καὶ ἡμῶν οὕτως ἔχοι τῶν μέτρων τῶν φορ-  
κρατείω.

ῥῆν κλεινὸν φορκευδῶν  
ὅρ τι κτεῖ πρὶ σὺρ  
δὲ φθέραις λόγῳ δῶρι  
ἀλλὰ ξαὶ ῥ πείρ εἶδῳ,  
θεῖναι τ' ἐνθὺν κελούειν  
μαγνήτην, ἵνα νίκῃ  
δοίη τις ἐφέστιο  
γυναικίαις πελιδνῶν.  
ὡ γὰρ χερσὶν ὅρ ἡδὲ  
μοῦν ῥ ῥ κελούων,  
καὶ θυήσκει παρ' ἐκείνοις.  
ἄρ' ὅω τοῦτ' ἄρ' ἀληθὲς  
ὡ, εἴ τις σοφὸς οὕτως,  
καὶ ῥῶν δῶρι ὄνκοις,  
χ' ὅταν μηδὲν ἔπαυχα.  
γέγονε δὲ καὶ τῶν περὶ τῆς ὀλυμπίας  
δα. καὶ ἐπίσειλιν ὡδε.

Φορκευδὲς Θαλῆ.

Εὐ θυήσκει οὕτω γὰρ ῥ χερσὶν ἡκοι νῶσθ' με κα  
ταλελάβηκε, δεδεγμένον τὰ παρὰ σέο γραμματά.  
φθέρων ἔβρον παρ' εἰ με εἶχον ὑπὲρ αἶθ' ἐπίσκη  
τα δ' ὡν ῥισιρ ὀικητήσιρ ἐπὶ ὡ με κατὰ δάτωσιρ δὲ  
σὲ τῶν γραφῶν ἐνέγκαι. σὺ δὲ ἡν δοκιμώσης (ὡν ῥις  
ἄλλοις σοφοῖς οὕτω μὴ φῆνορ. ἡν δὲ δὲ δοκιμώσῃτε  
μὴ

μὴ φήνῃς. ἐμοὶ μὲν γὰρ ἔκω ἤνδιανεν. ἔσι δὲ ἔκ ἀτρε-  
κίῃ πνευματῶν, ἔδ' ὑποχέομαι, ἔτ' ἀληθὲς εἶ-  
δέναι. ἀσφα δ' αὖ ὑπλήγῃ θεολογίῳ, τὰ ἄλλα χεῖ-  
ροῖς. ἅπαντα γὰρ ἀνίσταμαι. τῇ δὲ νούσῳ πιεζό-  
μεν. ὡς μᾶλλον, ἔτε τῶν πῖνα ἰητρῶν, ἔτε τοῦ  
ἐταίρου δίδίμῳ. προσεσεῶσι δὲ τῇ θύρῃ, καὶ ἡρο-  
μενοῖς ὁκοῖον τί εἴη, δεῖς δ' αὖτε τῶν ἐκ τῆς κλει-  
θρῆς, ἔδειξ' αὖ ὡς ἔθυον τοῖς κακοῖς. καὶ προεῖπ' αὖ  
τοῖσι μὴ εἰς τὴν ὑστέραν αὖτε τὰς φερεῖς  
δεῦτα φάσ.

Καὶ ἔτι μὲν οἱ κληθέντες σοφοί. οἷς πῖνα καὶ πει-  
σίρατ' ἔμ' ὑμῶν προσηγαταλίσουσι. λε-  
κτέον δὲ πᾶσι τῶν φιλοσόφων. καὶ πρῶτον  
γὰρ ἀφ' ἑκτέον ἀπὸ τῆς ἰωνικῆς φιλοσοφί-  
ας, ἧς καὶ ἐκινήσατ' ἀπὸ τῆς, ἔπειτα  
κρυσταλλοῦ ἀναξίμανδρου.

Τοῦ πρώτου  
τέλους





ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ ΛΑΕΡ-  
ΤΙΟΥ ΒΙΩΝ ΚΑΙ ΓΝΩΜΩΝ ΤΩΝ ΕΝ  
ΦΙΛΟΣΟΦΙΑ ΕΥΔΟΚΙΜΗΣΑΝ-  
ΤΩΝ, ΤΩΝ ΕΙΣ ΔΕΚΑ  
ΤΟ ΔΕΥΤΕΡΟΝ

ΑΝΑΞΙΜΑΝΔΡΟΣ

1 Vc. κα



Ναξίμανδρ<sup>ος</sup> πρ<sup>ος</sup> αξιω<sup>ς</sup> δ<sup>α</sup> μιλ<sup>η</sup>σι<sup>ς</sup>  
ος. ε<sup>στι</sup> τ<sup>ο</sup> ε<sup>κ</sup> φασκε<sup>ν</sup> αρχ<sup>η</sup> λ<sup>ω</sup> σοι<sup>χ</sup>ειο<sup>ν</sup>  
ρ<sup>η</sup> α<sup>ν</sup>ειρο<sup>ν</sup>, ε<sup>στι</sup> διο<sup>ρ</sup>ιζω<sup>ν</sup> α<sup>ν</sup>δρα<sup>ς</sup> η<sup>ν</sup> υ<sup>δ</sup>ωρ<sup>η</sup>,  
η<sup>ν</sup> α<sup>λ</sup>λο<sup>ν</sup> π<sup>ο</sup>ι<sup>α</sup> κα<sup>ι</sup> τα<sup>ς</sup> μ<sup>ε</sup>ν μ<sup>ε</sup>ρη<sup>α</sup> με<sup>τ</sup>α<sup>ν</sup>ε<sup>σ</sup>τ<sup>α</sup>ν<sup>αι</sup>  
λει<sup>ν</sup>. ρ<sup>η</sup> δ<sup>ε</sup> πα<sup>ν</sup> α<sup>ν</sup>με<sup>τ</sup>α<sup>ν</sup>ε<sup>σ</sup>τ<sup>α</sup>ν<sup>αι</sup> η<sup>ν</sup> ε<sup>στι</sup>ναι.  
μ<sup>ε</sup>ισ<sup>τ</sup>ω<sup>ν</sup> τε<sup>ν</sup> τ<sup>ω</sup>ν γ<sup>α</sup>λ<sup>ω</sup>ν κ<sup>ε</sup>ι<sup>σ</sup>θ<sup>αι</sup>, κ<sup>ε</sup>ν<sup>τ</sup>ρου<sup>ν</sup> τα<sup>ς</sup> ξ<sup>ι</sup>μ<sup>η</sup>ρ<sup>η</sup>ς ε<sup>π</sup>ι<sup>ε</sup>χ<sup>ου</sup>  
σα<sup>ν</sup>, ε<sup>στι</sup> σα<sup>ν</sup> σ<sup>φ</sup>αι<sup>ρ</sup>οει<sup>δ</sup>η<sup>ς</sup>, τ<sup>ω</sup>ν τε<sup>ν</sup> σε<sup>λ</sup>η<sup>ν</sup>ω<sup>ν</sup> ψ<sup>α</sup>λ<sup>μ</sup>ω<sup>ν</sup> δ<sup>ει</sup>δ<sup>η</sup>  
κα<sup>ι</sup> α<sup>ν</sup>τ<sup>η</sup>ρ<sup>η</sup> η<sup>λ</sup>ι<sup>ου</sup> φω<sup>τ</sup>ι<sup>ζ</sup>ε<sup>σ</sup>θ<sup>αι</sup>. α<sup>λ</sup>λ<sup>α</sup> κα<sup>ι</sup> ρ<sup>η</sup> η<sup>λ</sup>ιο<sup>ν</sup> ε<sup>στι</sup>ν  
λα<sup>λ</sup>η<sup>ν</sup>ονα<sup>ς</sup> τ<sup>η</sup>ς γ<sup>η</sup>ς, κα<sup>ι</sup> η<sup>κ</sup>α<sup>ν</sup>τα<sup>ρ</sup>ό<sup>ν</sup>τα<sup>ρ</sup>η<sup>ν</sup> π<sup>υ</sup>ρ<sup>η</sup>. ε<sup>υ</sup>ρε<sup>ν</sup> δ<sup>ε</sup> κα<sup>ι</sup>  
γ<sup>ν</sup>ω<sup>μ</sup>ονα<sup>ς</sup> π<sup>ρ</sup>ω<sup>τ</sup>η<sup>ς</sup>, κα<sup>ι</sup> ε<sup>στι</sup> η<sup>ν</sup> ο<sup>ν</sup> ο<sup>ν</sup> τ<sup>η</sup>ν σ<sup>κ</sup>ιο<sup>θ</sup>η<sup>ρ</sup>ω<sup>ν</sup> ε<sup>ν</sup>  
λα<sup>κ</sup>ε<sup>δ</sup>α<sup>ι</sup>μο<sup>ν</sup>ι, η<sup>κ</sup>α<sup>ν</sup>τα<sup>ρ</sup> φ<sup>η</sup>σι<sup>ς</sup> φα<sup>β</sup>ω<sup>ρ</sup>η<sup>ν</sup> ε<sup>ν</sup> πα<sup>ν</sup>τ<sup>η</sup>ρ<sup>η</sup> δ<sup>α</sup>π<sup>η</sup>  
ι<sup>σ</sup>ο<sup>ρ</sup>η<sup>α</sup>. τ<sup>ρ</sup>ο<sup>π</sup>α<sup>ς</sup> τε<sup>ν</sup> κα<sup>ι</sup> ι<sup>σ</sup>η<sup>μ</sup>ε<sup>ρ</sup>η<sup>α</sup>ς ση<sup>μ</sup>α<sup>ν</sup>ι<sup>σ</sup>κ<sup>η</sup>ν<sup>αι</sup> κα<sup>ι</sup> ω<sup>ν</sup>  
ρο<sup>σ</sup>η<sup>ο</sup>π<sup>ια</sup> η<sup>κ</sup>α<sup>ν</sup>τα<sup>ρ</sup> ο<sup>ν</sup> ο<sup>ν</sup> α<sup>ν</sup>ε<sup>σ</sup>θ<sup>αι</sup>. κα<sup>ι</sup> γ<sup>η</sup>ς κα<sup>ι</sup> θα<sup>λ</sup>α<sup>σ</sup>σ<sup>η</sup>ς πε<sup>ρ</sup>  
ε<sup>ι</sup>με<sup>τ</sup>ρο<sup>ν</sup> π<sup>ρ</sup>ω<sup>τ</sup>η<sup>ς</sup> ε<sup>κ</sup> γ<sup>α</sup>ρ<sup>η</sup>ς. α<sup>λ</sup>λ<sup>α</sup> κα<sup>ι</sup> σ<sup>φ</sup>αι<sup>ρ</sup>αν η<sup>κ</sup>α<sup>ν</sup>  
τα<sup>ρ</sup> ο<sup>ν</sup> ο<sup>ν</sup> α<sup>ν</sup>ε<sup>σ</sup>θ<sup>αι</sup>. τ<sup>η</sup>ν δ<sup>ε</sup> α<sup>ν</sup>ε<sup>σ</sup>θ<sup>αι</sup> ο<sup>ν</sup> ο<sup>ν</sup> α<sup>ν</sup>ε<sup>σ</sup>θ<sup>αι</sup> πε<sup>ρ</sup>ι<sup>η</sup>ται<sup>ς</sup> κε<sup>ν</sup>  
φα<sup>λ</sup>αι<sup>ω</sup>δ<sup>η</sup> τ<sup>ω</sup>ν ε<sup>κ</sup>θ<sup>η</sup>ς, η<sup>ν</sup> πο<sup>ρ</sup> πο<sup>ρ</sup>η<sup>ν</sup> τυ<sup>χ</sup>η<sup>ς</sup> κα<sup>ι</sup> ο<sup>ν</sup> α<sup>ν</sup>ε<sup>σ</sup>θ<sup>αι</sup>  
λό<sup>δ</sup>ω<sup>ρ</sup>ος

λόδωρ Θ' ὁ ἀθλωαῖ Θ'. ὅς ἐ' φησίμ αὐτῶν ὃν τις χρο-  
νικοῖς ἔσ' δ' αὐτοῖς ἔτει ΦΙ' πνυτηνοῦς ὁ γυδίους δι-  
λυμπιαδί Θ', ἐτ' ἔ' ἐ' ἐξήκοντα τεσσάρων, καὶ μετ'  
ὀλίγον τελευτήσας. ἀκμασάντων πη μάλιστα κατὰ  
πλευρατίω τῶν σάμυ τύραννον. τὰ τὰ φασίμ ἄδου  
τ' κατὰ γλώσσαι τὰ παιδαλεια. τῶν δὲ, μαθόντα  
φαῖναι. βέλπορ ἐν ἡμῖν ἀσίον δ' ἔχ' τὰ παιδαλεια. γέ-  
γονε δὲ καὶ ἄλλ' ἀναξιμανδρ' ἰσοεικός, ἐ' αὐτῶς  
μυλήσι Θ', τῇ ἰωδὶ γεγραφώς.

## ΑΝΑΞΙΜΕΝΗΣ

**Α**ναξιμένης ἐντυσφάτω μυλήσι Θ', ἤκουσεν  
ἀναξιμανδρ'. ἤνιοι δὲ καὶ παρμυλίδου φασίμ  
ἀκούσαι αὐτόν. ἐτ' ἀρχὴν ἀδρά ἐῖπε, καὶ τ' ἀ-  
πειρορ. κινεῖσθαι δὲ τὰ ἄσρα ἔχ' ἔωδ' γλῶσσαι ἀλλὰ  
πὸδ' γλῶσσαι. κέχρηται τε γλώσση ἰωδὶ ἀπλή καὶ ἀ-  
πορίτῳ. καὶ γεγνήνται μὲν κατὰ φησίμ ἀπλό-  
δωρ Θ' τῇ ἐξήκωσῃ τρίτῃ ὀλυμπιαδί. ἐτελεύτη-  
σε δὲ πὸδ' τῶν σάμυ τῶν ἀλωσιμ. γεγόνασι δὲ καὶ ἄλ-  
λοι δύο, λαμψακίνοι, ῥήτωρ, καὶ ἰσοεικός. ὅς ἀδελ-  
φῶς ὑπὸ τῷ ῥήτῳ τῷ τὰς ἀλδραϊδρὸν πλά-  
ξεις γεγραφότ'. ἐτ' δὲ ὁ φιλόσοφ' καὶ ἐπεί-  
σειλῳ ὥδε.

## Αναξιμένης Πυθαγόρη.

Θαλῆς ἐν καλῶν ὡδ' γήρεως ἐκ' ἔωδοτ' οἰ-  
χεται. ἐνφρόνης ὥς πορ εἰωθεν ἅμα τῇ ἀμολπῳ  
πρωῶν ἐν τῷ αὐλίου τὰ ἄσρα ἐθκείτ'. καὶ, ἔ' γὰρ ἔσ'  
μνήμῳ



μνήμην ἔσθω, θησύνωθ' εἰς τὸ κρημνῶδες ἐμβαλὼν  
 καταπίπτει. μλησίοισι μὲν νῦν ὁ αὐθορολόγῳ ἐν  
 τῷδε κείτῳ τέλει. ἡμεῖς δὲ οἱ λουχλῶται. ἡμεῖς  
 (αὐτοὶ τε γὰρ καὶ οἱ παῖδες καὶ οἱ γυναῖκες) δεξιοίμεθα δ' ἐπὶ τῇς ἐκείνῃ λόφοις. ἀρχὰ μὲν γὰρ  
 αὐτὸς ὁ γὰρ οἱ αὐτοὶ πάντες τοῦ λόφου θαλῆ ἀνακείδω.  
 παῖδες καὶ γυναῖκες, Καὶ πάλιν.

### Αναξιμένης Πυθαγόρη.

Εὐβουλότατ' ἦς ἡμῶν, μνησας εἰς σάμψ εἰς  
 κρότωνα ἐνθάδε εἰρωεῖς. οἱ δὲ αἰάκεθ' πᾶσι δὲ ἄλ  
 λοις τὰ κακὰ ἐρεθισι. καὶ μλησίτου ἐκ ὑπλείπτει  
 σιν αἰσυνήτου. δεινὸς δὲ ἡμῖν καὶ ὁ μέδων βασι  
 λεύς, ἐκ εἰ γὰρ ἐβίλωμεν διασμοφορεῖν. ἀλλὰ μέλ  
 λουσι δὲ ἅμψι τῇ ἐλευθερίας ἀπάντην, ἵων δὲ μή  
 ρους καδίσασθαι δὲ πλέμορ. κατὰ δὲ ἐκείνῃ ἐλπίς  
 ἡμῖν σωτηρίας. κῶς αὖ ἐν ἀναξιμένης ἐν θυμῷ ἐπέ  
 χοι αὐθορολόγειν ἐν δείματι ἰὼν ὀλίθερ ἢ διχλυσύ  
 νης. σὺ δὲ εἰ καταθύμιθ' μὲν κρωτωνήτῃσι καὶ τῇ  
 σι ἄλλοισιν ἰταλιώτῃσι. φοιτῆσαι δὲ γὰρ λουχλῶ  
 ται, καὶ ἐκ σικελίης.

### ΑΝΑΞΑΓΟΡΑΣ

ΑΝΑΞΑΓΟΡΑΣ ἡγεσιβούλου ἢ εὐβούλου κλαρομέ  
 νιθ', ἐτ' ἡκουσεν ἀναξιμένης. Ἐπρωτ' ἔ  
 πη ὕλη νοῦν ἐπίσκησεν, ἀρξάμενθ' οὕτω τοῖ συγγράμ  
 ματ'. ὁ δὲ τῇ ἡδύει καὶ μεγαλοφρονῶς ἡμελῶδ  
 μέγορ. πάντα χρήματα ὡς ὁμοῦ. εἴτα νῆς ἐλθὼν αὐ  
 τὰ διεκρόσμησε. παρὸ καὶ νῆς ἐπεκλήθη. Ἐφθισί ποτα  
 μῶν

αὐτὸ τίμων ἐν τοῖς σίλλοις οὕτω.

καὶ πρὸ ἀναξαγόρου φασὶ ἐμμελεῖν ἄλκιμον ἦρω,  
 νοῦν, ὅτι διήνοτο αὐτῷ. ὃς διαπίνης ἐπαγείρας,  
 πάντα σωδὸφῆκωσεν ὁμῶς τελευταγμένα πρόδον.  
 Οὗτο ἐν γυνεῖα καὶ πολύτῳ διαφόρων ἡ, ἀλλὰ ἐ  
 μεγαλοφροσύνη. ὃς γὰρ τὰ πατρῷα παρεχώρησε τοῖς  
 οἰκείοις. αἰπαθεῖς γὰρ ἔω αὐτῷ ὡς ἀμελῶν, τί δὲ  
 ἔφη ἔχῃ μῆτις ὑπὸ μελέιδε. καὶ τέλει ἀπέστη. καὶ  
 ποῦ τῷ τῷ φυσικῶν θεωρίαν ἡ, ὃ φροντίζων τῷ  
 περὶ πικρῶν, ὅτε καὶ πρὸς τὴν εἰρήνην ὁ δὲ σοὶ μέλει  
 ὅτι πατρίδω; ἐν φημί ἔφη. ἐμοὶ γὰρ καὶ σφόδρα μέ-  
 λει ὅτι πατρίδω. δείξας τὴν οὐρανόν. λέγεται δὲ  
 καὶ τῷ ξόρξω διαβασίρ εἰσοίρ ἐτῷ εἶν. βεβιωκί-  
 ναι δὲ ἐβδμηκοντα δύο. φησὶ δὲ ἀκρολόγως ἐν  
 τοῖς χρονικοῖς γεγενῆσθαι αὐτὴν τῇ ἐβδμηκῇ ὀλυμ-  
 πιάδι. τιθυνησθαι δὲ τῷ πρώτῳ ἔτει ὅτι ἐβδμηκο-  
 σῆς ὀγδόης. ἤρξατο δὲ φιλοσοφεῖν ἀθλῶσις καὶ  
 λίσ ἐτῷ εἰσοίρ ὡς φησὶ διημήτειος ὁ φαληρεὺς  
 ἐν τῇ τῷ ἀρχόντῳ ἀναγραφῇ. ἐν δὲ καὶ φασὶν αὐτὴν  
 ἐτῷ διατελεῖται τελευτῶντα. ὅτε ἔλεγε τὴν ἡλιον  
 μύθοις εἶν διαπυρορ. καὶ μείζων ὅτι πελοποννήσου.  
 οἱ δὲ, φασὶ τὰνταλῶν. τῷ δὲ σελλωίῳ οἰκήσεις ἐ-  
 χειρ. ἀλλὰ καὶ λόφος καὶ φάραγας. ἀρχὰς δὲ τὰς  
 ὁμοιομορφίας. καὶ δὲ πόρ γὰρ ἐν τῷ φηγμάτων λε-  
 γομένων τὴν χευσὸν συνεσθῆναι, οὕτως ἐν τῷ ὁμοιο-  
 μορφῶν μικρῶν σωματῶν τὴν πᾶν συγκεκρίσθαι. καὶ

δοῖται ἀνα-  
 ξαγόρου



νοῦν μὲν ἀρχὴν κινήσεως. τῇ δὲ σωματικῇ τὰ μὲν  
 βαρὺα ἤματα τότῃ ὡς τῷ γλῶ. τὰ δὲ κοῦφα ἤμα  
 αἰὼν ὑποχέειν ὡς ἡ πῦρ. ὕδωρ δὲ καὶ ἀόρα ἤμα μέ-  
 σον. οὕτω γὰρ ὑπὲρ τῆς γῆς πλατείας ἔσσης, τῷ θά-  
 λασσαν ὑποσλῶναι, διατμηθὲν τῇ ὑπὸ τοῦ ἡλίου τῇ  
 ὑγρῶν. τὰ δ' ἄστρα, κατὰσχὰς μὲν βοιωσιδῶς ἐνε-  
 χθῶναι, ὡς τε κατὰ κορυφῇ τῆς γῆς ἤμα αἰεὶ φαί-  
 νομενον εἶναι πᾶσι. ὕδωρ δὲ τῷ ἐγκλισμὶ λα-  
 βῆν. καὶ ἤμα γαλαξίαν ἀνακλασιν εἶναι φῶρς ἡ-  
 λιακοῦ μὴ κατὰ λαμπρομένην τῇ ἄστρων. οὗ δὲ κο-  
 μήτας σιμόδορον πλανητῶν, φλόγας ἀφ' ἑνὸς τῇ.  
 τε διαπῶντας οἷον πωινθῆρας ἀπὸ τοῦ ἀόρατος ἀφ-  
 πάλλεσθαι. αἰεὶ μὲν γίνεσθαι λεπτωμομένην τοῦ  
 ἀόρατος ὑπὸ τοῦ ἡλίου. βροντὰς σύγκρουσιν νεφῶν. ἀ-  
 στραπὰς ἐκτετακτῶν νεφῶν. σεισμόν ὑπονόησιν ἀέ-  
 ρος εἰς γλῶ. ζῶα γινώσθαι δι' ὑγρῶν καὶ θερμῶν καὶ  
 γῆς οὗ. ὕδωρ δὲ δι' ἀλλήλων. καὶ ἄρξιν μὲν ἀπὸ  
 τῇ δεξιῶν. θήλειά δὲ ἀπὸ τῇ ἀριστερῶν. φασὶ δ' αὖ-  
 ἤμα προεπεῖν τῷ πᾶσι αἰγὸς κατὰ μὲν γῆς οὗ  
 τοῦ λίθου πᾶσι. ὅρ' εἶπεν ἐκ τοῦ ἡλίου πᾶσι εἶσθαι. ὅ-  
 θεν καὶ ἐνερπίδων μαθητῶν οὕτα αὐτοῦ, χρυσέαν βῶ-  
 λον εἶπεν ἤλιον ἐν τῷ φαίθοντι. ἀλλὰ καὶ εἰς ὁ-  
 λυμπίαν ἐλθόντα ἐν δόρυματίνω καθεῖσθαι ὡς μέλλον  
 τῷ ὕσειν. καὶ γινώσθαι. πρὸς τε ἤμα εἰρήνην, εἰ τὰ  
 ἐν λαμπρῶν ὅρ' εἶσαι κατὰ δάλαττα, φασὶν εἶπεν,  
 εἰ μὴ ὁ χρόνος μὴ ὑπὸ λήρει. ἐρωτηθεὶς κατὰ εἰς τὴν  
γεγῆναι

γελήνται, εἰς θεωρίαν ἔφη ἡλίου καὶ σελήνης καὶ οὐ-  
 ρανοῦ. πρὸς τὸν εἰπόντα ἐσθρέβης ἀθλωαίωρ, οὐ με-  
 νοῦν ἔφη. ἀλλὰ ἐκείνοι ἐμοῦ. ἰδὼν τὸν μανώλευστα, <sup>ἀποφθίγματα</sup>  
 φορ ἔφη. τὰ φθ. πλυτελής λελιθωμένης ὅτι οὐ-  
 σίας εἰδὼν. πρὸς τὸν δυσφοροῦντα ὅτι ὑπὸ ξύνης  
 τελούτῃ, πανταχόθεν ἔφη ὁμοία ὅτι ἡ εἰς ἀδου-  
 ηατάβασιν. δοκεῖ δὲ πρῶτον καὶ φησι φαβωρῖ-  
 νον ἐν παντὶ ἀπὸ ἰσορίας τῷ ὁμήρου πρῶτον ἀπ-  
 φιλώσθαι εἶναι πόλιν ἀρετῆς καὶ δικαιοσύνης. ὑπὸ  
 πλείον δὲ προσλῶναι τοῦ λόγου μητροδωρον τὸν  
 λαμπανκλὸν γνώριμον ὄντα αὐτοῦ, ὃν καὶ πρῶτον  
 πρῶτον αὐτῷ πρῶτον πόλιν φυσικὴν πραγμα-  
 τείαν. πρῶτον δὲ ἀναξαγόρας καὶ βιβλίον ἐξέδωκε  
 καὶ συγγραφῆς. φησὶ δὲ σελήνης ἐν τῇ πρώτῃ τῶν  
 ἰσοριῶν, ὑπὸ ἀρχοντὶ διμύλου λίθον ἐξ οὐρανοῦ  
 πέσειν. τὸν δὲ ἀναξαγόραν εἰπεῖν ὡς ὅλον ὁ οὐ-  
 ρανὸς ἐκ λίθων συγκέοιτο. τῇ σφοδρᾷ δὲ πόλιν ἐκ-  
 σει σιωπᾶναι, καὶ ἀνεθνήτα κατὰ γενεχθήσεσθαι.  
 Περὶ δὲ τῆς δίκης αὐτῆς διαφορά λέγεται. σωπί-  
 ων μὲν γὰρ φησὶν ἐν τῇ διαδοχῇ τῶν φιλοσόφων  
 ὑπὸ κλέωνος αὐτὸν ἀσεβείας κατεβλήναι. διότι τὸν  
 ἡλίου μύθον ἔλεγε διαπυροῖν. ἀπολογησαμένου δὲ  
 ὑπὸ αὐτοῦ πόλιν κλέος τοῖς μαθηταῖς πέντε ταλάνους  
 χρημωθῆναι καὶ φυγαδευθῆναι. σάτυρος δ' ἐν τῇ  
 βίοις ὑπὸ θουκυδίδου φησὶν εἰσαχθῆναι τῷ δῖ-  
 κῳ ἀντιπρὸς τὸν σαμίου ἔξω πόλιν κλέει. καὶ ὁ μόνον

δίκη αὐτοῦ

ἔστι



προς ἀφελόντων

ἀσεβείας, ἀλλὰ καὶ μηδισμῶ. καὶ ἀπύντα κατὰ δὴ  
 καδιδῶναι θανάτῳ. ὅτε καὶ ἀμφοτέρωρ αὐτῶν προ/  
 σαγγελόντων ὅτι κατὰ δίκης καὶ ὅτι τῶν παίδων  
 τελευτῇ εἰπεῖν. ποῦ μὲν ὅτι κατὰ δίκης ὅτι ἄρα καὶ  
 κείνων καμῶ πάλαι ἡ φύσις κατεφροίσατο. ποῦ δὲ  
 τῶν παίδων, ὅτι ἡδὴν αὐτῶν θνηστὶς γέννησας. οἱ δὲ, εἰς  
 σόλωνα εἶδον ἀναφόρῳσι. ἄλλοι εἰς ξηνοφῶντα. τοί/  
 ρη δὲ καὶ δάψαι τοῖς ἰδίαις χερσὶν αὐτῶν διημή/  
 τεῖσθαι φησὶν ὁ φαληρεὺς ἐν τῷ ποῦ γήρως. ἔρμυ/  
 πῳ δ' ἐν τοῖς βίοις φησὶν ὅτι καθεῖρχθην ἐν τῷ δε/  
 σμωθῆναι τεθυηξόμην. ποδὶ κλῆς δὲ παρελθὼν εἰ/  
 πὴν εἰπὶ ἔχουσιν ἐγχαλεῖν αὐτῶν καὶ τὸν βίον. ὁ δὲ μ/  
 δὲ εἰπὴν τῶν. καὶ μὲν ἐγὼ ἔφη τὸ τὸ μαθητὴς εἰμὶ.  
 μὴ δὲν δευβολαῖς ἐπαρθῆναι ἀρκτεῖν τε τὸν αὐ/  
 θρωπον, ἀλλ' ἐμοὶ πεισθῆναι ἀφετε. καὶ ἀφείδην. ὁ δὲ  
 ἐνεγκὼν δὲ τὴν ὕβριν, αὐτὸν δὲ γαλῶν. ἰδρῶν μῶ/  
 δὲ ἐν τῷ δουτέρῳ τῶν ποροαδῶν ἐπομνηματῶν,  
 φησὶν. ὅτι ὁ ποδὶ κλῆς παρὲν γαλῶν αὐτὸν καὶ τὸν διηγα/  
 σῆμον, διεγύνηντα εἰς λεωτὸν ἐπὶ νόσῳ, ὡς τε ἐλῶ/  
 μάλλον ἢ κείσει ἀφελῶναι. καὶ τὰ μὲν ποῦ ὅτι δίκης  
 αὐτῷ, ῥοαῦτα. ἔδωξε δὲ πῶς καὶ δημοκρίτῳ ἀπε/  
 χθῶς ἀσχηκῆναι ἀστυχῶν ὅτι πρὸς αὐτὸν κοινολο/  
 γίας. καὶ τέλῳ ἀρχωρῆσας εἰς λαμψακὸν αὐτὸ  
 διηγάρεται. ὅτε καὶ τῶν ἀρχόντων ὅτι πᾶσις ἀ/  
 ξιοῦν τῶν τί βούλεται αὐτῶν γένεσθαι φαῖναι. αὐτὸν πᾶ/  
 δας ἐν ᾧ αὐτὸν ἀρκτεῖν μὲν καὶ ἔτῳ παίρειν συγ/  
 χωρεῖν

καὶ τὸν βίον

χωρεῖν. καὶ φυλαττεται ὃ ἔθθη καὶ νῦν. τελευτή-  
σαντα δὴ αὐτὸν ἔθαψαν ἐντίμως οἱ λαμψανῶοι,  
καὶ ἐπέγραψαν.

ἐνθάδε πλείστον ἀληθείας ὑπὸ τὸν μα πόρῃσας

οὐρανίῳ νόσμου κείται ἀναξαγόρας.

ἔσι καὶ ἡμῶν εἰς αὐτόν.

ἡλίον πυρόμεντα μύθοις καὶ φάσκειν ὑπαρχεῖν,

καὶ οἷον ἔσθαι θανεῖν μέλλειν ἀναξαγόρας.

ἀλλ' ὁ φίλος ποικιλῆς μὲν ἐρξύνει ἔσθαι. ὅδ' αὐτὸν

θζωγαγὼν βιότῳ, μαλθακὴν σοφίῃς.

γεγονάσι δὲ καὶ ἄλλοι τρεῖς ἀναξαγόρας, ὧν ἐν ἑσθιῇ

πάντα. ἀλλ' ὁ μὲν ὡς ἑκτὼρ ἰσοκράτει. ὁ δ' ἀνδρῶν

ανητριός, ὃ μὲν μνηται ἀντίφον. ἄλλος γραμματι-

κὸς ῥινοδότει.

#### ΑΡΧΕΛΑΟΣ

**Α**ρχέλαος ἀθλιώτης ἢ μιλῆσιος, πατρὸς ἀ-  
πλοδοῦρος. ὡς δὲ πνύει, μύθων. μαθητὴς  
ἀναξαγόρος. διδάσκειν αὐτὸν σωκράτους. ἔτθη πρῶ-  
τος ἐν τῇ ἰωνίᾳ τῶν φυσικῶν φιλοσοφίαν μετῆγα-  
γὼν ἀθλιώζει. καὶ ἐκλήθη φυσικός. παρὸ καὶ ἔλκειν ἐν  
αὐτῷ ἡ φυσικὴ φιλοσοφία, σωκράτους. τῶν ἡθικῶν  
εἰσαγαγόντος. ἴοικε δὲ καὶ ἔτθη ἀφαιδαι τῇ ἡθι-  
κῇ. ὃ γὰρ ποῦ νόμων πεφιλοσόφηκε καὶ ἡρώδης ὃ  
δικαίωρ. παρ' ὃ λαβὼν σωκράτους ἔθ' αὐξύνει ὃ ἐν  
ῥεῖν ὑπελήφθη. ἔλεγε δὲ δύο αἰτίας εἶναι γήνσεως.  
θερμὸν καὶ ψυχρόν. καὶ τὰ ῥῶα ἀπὸ τῇ ἰλύθ' ἡννη





πνας, ἀλλὰ καὶ δαίμων<sup>Θ</sup>, ὡς ἀλέξανδρ<sup>Θ</sup> ἐν δισ-  
δοχαῖς, μὲν τὴν ἐκείν<sup>ο</sup> κατὰ δίκην δεικνύσκειν ἀρ-  
χέλα<sup>ο</sup> τοῦ φυσικοῦ. ὃ καὶ παιδικὰ γνῶναι φησὶν  
ἀριστόξεν<sup>Θ</sup>. δοῦναι δὲ καὶ δουλεύειν αὐτῷ καὶ ἐρ-  
γαῖσθαι λίθου. εἴ<sup>τι</sup> αὐτοὶ καὶ τὰς ἐν ἀκροτέρ-  
λαι χεῖρας ἐνίοι φασὶν, ἐνδεδυμένας οὖσας. ὅθεν  
καὶ πῦρ καὶ ἡ σίλῃς ἐπείρ.

ἐκ δ' ἄρα τῶν ἀπέκλινε λιθοξό<sup>Θ</sup> ἐννομολίας  
ἐκλύων ἐπαροιδῶν, ἀκροβολόγ<sup>ο</sup>ν ἀκρόφιν<sup>ο</sup>,  
μυκτῆρ ἡνερρόμικτ<sup>Θ</sup> ὑπαπικῶν, ἐρωνόυτης.

ὡς γὰρ καὶ ἐν τῇς ἡνερρόμικτ<sup>Θ</sup> δεινός, ὡς φησὶ καὶ ἰδο-  
μνός. ἀλλὰ καὶ οἱ τεινόντες αὐτῷ ἐκώλυσαν τέ-  
χνας διδάσκειν λόγων, ὡς φησὶ ξηνοφῶν. καὶ ἀρισ-  
τοφάνης αὐτῷ κωμωδεῖ, ὡς ὅτι ἡτῶ λόγον κρείττω πρι-  
οῦντα. καὶ γὰρ πρῶτ<sup>Θ</sup>, ὡς φησὶ φαβαρίν<sup>Θ</sup> ἐν παν-  
τοῦ ἀπὸ ἰσορείας, μὲν τοῦ μαθητοῦ ἀσχίν<sup>ο</sup> ἡνερρόμικτ<sup>Θ</sup> ἐν  
διδάξει. λέγει δὲ ἑὸν καὶ ἰδομνός ἐν τῇς πόδι τῶν  
σωκρατικῶν. καὶ πρῶτ<sup>Θ</sup> πόδι βίς διελέχθη. καὶ  
πρῶτ<sup>Θ</sup> φιλοσόφων κατὰ διχαθεῖς ἐτελεύτα.  
φησὶ δ' αὐτὸν ἀριστόξεν<sup>Θ</sup> ὁ πωινθαίου καὶ χρημα-  
τίζων. τινόντα γοῦν τὸ βαλλόμενον κόρμα ἀ-  
θροίζει. ἔτ' ἀναλῶσαντα παλιν τινόντα. *κρείττω*  
τὴν δ' ἀνασῆσαι αὐτῷ ἀπὸ τοῦ ἐργασίου. καὶ παι-  
δεύσαι τῆς κατὰ τὴν χεῖρ<sup>ο</sup> ἐραδύντα, διημή-  
τει<sup>Θ</sup> φησὶν ὁ βυζαίντι<sup>Θ</sup>. γνόντα δὲ τὴν φυσικὴν  
θεωρίαν μηδὲν εἶν<sup>τι</sup> πρὸς ἡμᾶς, τὰ ἡθικά φιλοσοφῆν  
ἐπὶ τε



ἐπί τε τῶν ἐργασησίων καὶ ἐν τῇ ἀγορᾷ. κακῆϊνα δὲ  
φάσκον ζητεῖν.

ὅτι ῥιζὴν μεγαροισι, κακὸν τ' ἀγαθὸν τε τέτυκτο.  
πρῶτος δὲ βιασιότορον ἐν ταῖς ζητήσεσιν ἀφ' ἑλ-  
γόντων κρυπυλίζεσθαι καὶ παρατίλλεσθαι. ὃ πλείον  
τὲ γελᾶσθαι καὶ ταφροσύμενον, καὶ πάντα ταῦτα  
φόρειν ἀνδριόκως. ὅθεν καὶ λακπιδεῖντα ἐπειδὴ ἢ  
νύχθον πινὸς δαυμάσαντο εἰπεῖν. εἰδέμε ὄντο  
ἐλακπιδεῖν δύνω ἀν' αὐτοῦ ἐλαγχανον; καὶ ταῦτα  
μὲν ὁ δὴ μῆταιτο. ἀπὸ δὴ μίας δὲ ἐκιδεῖσθαι καὶ δὲ πρ  
οὐ πλείον. πλὴν εἰ μὴ στρατεύεσθαι εἶδει. ὃ δὲ λοι-  
πὸν αὐτόδι μόνον, φιλονεικίον σωμαζήτει ῥίς  
προσφάλεσθαι μόνον. ὅχως τε ἀφελίεσθαι τὴν δόξαν  
αὐτοῦ, ἀλλ' ὥς τε ὃ ἀληθὲς ἐκμαθεῖν πειράσθαι. φα-  
σὶ δ' ἐνυπιδίω αὐτοῦ δόντα τοῖς ἡρακλείδῃς σύγ-  
γραμμα ἔρεσθαι τί δοκεῖ. ὃν δὲ, φαῖται. ἀ μὲν σωῆσθαι  
γυναικῶν. οἶμαι δὲ καὶ ἀ μὲν σωῆσθαι. πλὴν δηλίου γέ-  
νητο δέεται κρυμμένη. ἐπεμελεῖται δὲ καὶ σωμα-  
σίας. καὶ ὡς ἐνέκτης. ἐστρατεύσας γούν εἰς ἀμφίτη-  
λιν. καὶ ξυνοφῶντα ἀφ' ἵππων ποδόντα ἐν τῇ κτλ. δὴ  
λιον μάχη δέσωσεν ὑπολαβών. ὅτε καὶ πάντων  
φουδόντων ἀθλησίων αὐτὸς ἡγεῖμα ἀνεχώρει, παρε-  
πισρεφόμηντο ἡσυχῇ, καὶ τηρῶν ἀμυνάσθαι εἰ τις  
οὐκ ἐπὶ λθοι. ἐστρατεύσας δὲ καὶ εἰς τὴν πείσαν ἀφ' ἑλ-  
λατῆς. περὶ γὰρ ἐκ ἐνὶ τῷ τοῖς πλείον κρυπύοντο.  
ὅτε καὶ μέναι νυκτὸς ὅλης ἐφ' ἑνὸς οὐράματος αὐ-  
τὸν φα

ἤν φασι. καὶ ἀρξιδύσαντα αὐτόν· παραχωρεῖν  
 ἀλκιβιάδῃ τὸ ἀρξείον. ὃ καὶ ἱεροδωτοῖσι φησὶν αὐτὸν ἀρξίον  
 ἤν ἀρξισιππῶν ἐν τεταρτῷ πόδι παλαιᾶς τρυφῆς.  
 ἴωρ δὲ ὁ χιθὼν καὶ νίον ὄντα εἰς σάμορ (ὡς ἀρχελάω  
 ἀρεδμημέναι. καὶ πυθῶν δὲ ἰλθέιν ἀρξιστέλης φησὶν.  
 ἀλλὰ καὶ ἰσθμόν ὡς φαβωρεῖν ἐν τῷ πρώτῳ τῷ  
 ἀκρμνημονοματῶν. ὡς δὲ καὶ ἰοχυρογνώμων ἐδὴ  
 μοκρᾶπνός. ὡς δὴ λον ἐκτε τοῖς μὴ εἶξαι τῶν πόδων καὶ  
 τῶν κελύσσι λείοντα ἤν σαλαμίνιον πολύσιον αὐτὸν  
 δρᾶ ἀγαγεῖν πρὸς αὐτοῦ ὡς τε ἀκρίδια. ἀλλὰ ἐ  
 μόνον ἀκρίδιασιν αὐτῶν δὲ ἱεροδωτοῖσι φησὶν.  
 αὐτὸν ἀκρίδιασιν αὐτῶν δὲ ἱεροδωτοῖσι φησὶν.  
 οὐσίαν αὐτῶν ὡς πλῆξαι. καὶ αὐτὸν ἱεροδωτοῖσι φησὶν  
 κείνους δὲ δεμνίον δρᾶσθαι. αὐτῶν τῶν καὶ σε  
 μνός. καὶ πρὶν ἀλκιβιάδῃ καὶ δὲ φησὶ παμφίλῃ ἐν  
 τῷ ἐβδόμῳ τῷ ἱεροδωτοῖσι φησὶν διδόντων αὐτῶν  
 χώραν μεγάλῃ ἵνα διορθωμένηται οὐκίαν φαῖναι,  
 καὶ εἰ ἱεροδωτοῖσι φησὶν ἴδει, βύρσαν μοι εἰδίδου ἵν' ἐν  
 μαυρῶν ἱεροδωτοῖσι φησὶν πρὸς αὐτόν. πρὸς αὐτόν ἐγὼ χρεῖ  
 αν ὅτι ἔχω. καὶ συνεχὶς ἐκείνῃ ἀνεφθίγγου τὰ ἱαμι  
 βεία. τὰ δ' ἀργυρώματα ὅσιν ἢ τε πρὸς αὐτὸν εἰς αὐτὸν  
 τραγωδῶν χρεῖσιν ὅτι εἰς ἤν βίον. ἱεροδωτοῖσι φησὶν  
 δὲ καὶ ἀρχελάω τὸ μακεδόνον, καὶ σκώπτε τοῖς κρα  
 νούσι, καὶ ἐνυλόχου τοῖς λαομαίσι, μήτε χρεῖματα  
 k πρὸ



τη δεινότητος

προσέμνητο αὐτῷ μήτε παρ' αὐτοῦ ἀπελθὼν. ἐν  
 πακτός τε τῷ δίκαιον ὅντως, ὥς τε πρὸς ἀθλή-  
 νησι λυμῶν γυμνασίων μόνον οὐκ ἐνόησε. φησὶ δ' ἄ-  
 ριστοτέλης δύο γυμνασίων αὐτῷ ἀγαγεῖν. πρὶν  
 ἔσθ' ἢ ξανδίππῳ. ἔξ ἧς αὐτῷ γινέσθαι λαμπρο-  
 κλία. δευτέρῳ δὲ μυρτῷ τῷ ἀρκεῖναι τοὺς δικαίους  
 θυγατέρας. ὧν καὶ ἀπλοῖον λαβεῖν. ἔξ ἧς γινέσθαι  
 σωφρονισκὸν καὶ μνῆξιν. οἱ δὲ, πρὶν γυμνα-  
 σίῳ μυρτῷ φασί. ἔτι δὲ καὶ ἀμφοτέρους ἔχειν ὁ-  
 μοῦ, ὧν ἕστι σάτυρος τε καὶ ἰδρώνου. ὁ δὲ φησὶ  
 σὶ γὰρ βουληθέντας ἀθληταίους δὲ καὶ λειπανδρεῖς  
 σωαυξήσαι καὶ πληθεῖν, ἡμῶν σκεῖν. γὰρ μὲν ἄ-  
 λῳ μίαν παιδοπαιδεῖναι δὲ καὶ ἔξ ἑτοῦτος. ὅθεν ἔσθ' ἢ  
 πρὶν καὶ σωκρατῶν. ὧν δ' ἰσχυρὸς καὶ τῷ σκω-  
 πτόν τῳ ἐσθ' ἢ, καὶ ἀντιμυῖον τῷ τῇ ἐντελείᾳ.  
 μισθὸν τὸ δὲ εἶναι εἰσεπλάξαι. καὶ ἔλεγον ἡδίστα ὅτι  
 ὧν ἡμισα ὅτι πρὸς δὲ εἶναι. καὶ ἡδίστα πῶν ἡμισα  
 καὶ μὴ παρὸν καὶ ἡμισα. καὶ ἔλαχιστον δὲ ὅτι  
 καὶ ἡμισα εἶναι. ὅθεν δ' ἔστιν εἶναι εἰ παρὰ τῷ καὶ  
 μισθὸν πρὶν λαβεῖν, οἱ λαμβάνουσιν ἡμισα δὲ ὧν σκω-  
 πτόν τῳ ἐπαινοῦν τὸ αὐτῷ. ἀριστοφάνης μὲν ὅντως.  
 ὧν τ' μεγάλης πῶν μῆκος ὁρίαν ἀνθρώπων διηγεῖται,  
 ὧς ἐνδοξίμων παρ' ἀθληταῖς καὶ τοῖς ἄλλοις δὲ καὶ ἔστι.

εἶτα.

μνήμων καὶ φροντιστής, καὶ τὸ ταλαίπωρον ἔστιν  
 ἐν τῇ γνώμῃ, καὶ ἐπὶ ἡμῶν δὲ ὅτι ἔστιν ἔτι βαδίζων,  
 ὅτι

ἔτ' αὖ ξιγῶν ἄχθῃ λίαν, ἔτ' ἀρίσων ὑπὸ θυμῷ,  
 οἷον τ' ἀπέχῃ ἢ ἀδ' ἡφαγίας ἢ τ' ἄλλων ἀνοήτῳ.  
 Αμειψίας δ' ἐν τείβωνι παρὰ γὰρ αὐτὸν φησὶν οὕ-  
 τως. σῶκρατες ἀνδρῶν βέλπς' ὀλίγων, πολλῶν δὲ  
 ματαιόταθ' ἦκεις καὶ σὺ πρὸς ἡμᾶς. ἡαρτορικός τ'  
 εἶ. πῶς γὰρ αὖ σοι χλαῖνα γήϊοι. τίς τ' ἡ ἀκὸρ τῷ σκυ-  
 ρτόμῳ ἡ γὰρ ἐπ' ἡρείαν γελῶνται. ἔτ' ὁ μὲν γὰρ πρὸ  
 νῶν οὕτως, ἔπῳ πρὶν ἔτλην ἡολακεῦσαι. εἶσα δ' αὖ  
 τοῖς ἡγετορῶσι καὶ μεγαλόφρονος ἐμφαίνει καὶ  
 ἀριστοφάνης λέγων οὕτως. ὅτι  
 βρενθὴν τ' ἐν ταῖς ὁδοῖς εἰ τὸν φθαλμὸν παρὰ μάστι-  
 γαὶ καὶ ποδὶ τῆς, ἡ ἀκὸρ πρὸς ἀνέχῃ, εἰ ἐν ἡμῖν σεμνὸν  
 πρεσβύτης. καὶ γὰρ ἐνιότι πρὸς τοῦ καὶ τὸν ἀρμότιον  
 μὲν καὶ λαμπρὰ ἡμῖν ἔστι. καὶ δὲ πόρ ἐν ᾧ πλά-  
 τῳ συμπίπτει παρὰ ἀγαθῶνα βαδίζων. ἡ ἀκὸρ  
 δ' ἀμφοτέρω καὶ προτρέψαι καὶ ἀφ' ἑαυτῆς. ὡς  
 πόρ ἔνθ' ἀνέστην πόρ ὑπὸ σήμερος ἀφ' ἑαυτῆς, ἐνθ' ἀνέ-  
 στ' ἀπὲς περ. καὶ δὲ καὶ πλάτῳ φησὶν. ἐνθ' ἀνέστην  
 δὲ ἡ πατεὶ γραμμῶν ξενίας δίκῃ, πόρ ὅσίου  
 πινὰ ἀφ' ἑαυτῆς ἀπὸ γὰρ. καὶ τὸν λύσις δὲ ἡ δικήν  
 ταρρ' ἐπείνε προτρέψαι. καὶ γὰρ ἡ ἀκὸρ ἀφ' ἑαυτῆς  
 πραγμάτων τὸν λόγον ἐνέσκει. ἐνθ' ἀνέστην δὲ  
 καὶ λαμπροκλῆα τὸν υἱὸν τῇ μνητεὶ ἀγλαυνόμε-  
 νον, ὡς πον καὶ ξηνοφῶν εἴρηκε. καὶ γλαυκῶνα μὲν  
 τὸν πλάτῳ ἀδελφὸν θέλοντα πολιτεύεσθαι  
 ἀπίσινε ὅτι τὸ ἀπείρως ἔχειν ὡς φησὶ ξηνοφῶν.

πάντων  
 ἡ ἀκὸρ  
 ἡ ἀκὸρ



χαρμίδω δὲ τὸν αὐτὸν ἐπίσηκον οἰκείως ἔχοντα.  
 ἐπῆρε δὲ καὶ εἰς φρόνημα ἰοικρατίω ἢ στρατηγόν,  
 δείξας αὐτῷ τὸν κούρεϊος μῦθον ἀλεκτρυόνας αὐτὸν  
 τῷ ἡγάμισι παύσαμην. καὶ αὐτὸν γλαυκωνί-  
 δης ἡξίει τῇ πρὸς ποδὶ περιεῖν, ἡγάδα πόρ φασιανόν ὄρ-  
 νιν ἢ ταῦ ἔλεγε δὲ ὡς θαῦμα, τὰ μὲν ἔχοντα εἰπεῖν  
 αὐτὸν ἡγάδως ὅσα ἔχει. φίλους δ' ἔκ' αὐτὸν ὀνομαίνει ὅτι  
 σους κέκτηται. οὕτως ὀλιγώρως ἔχει ποδὶ αὐτὸς.  
 ὄρνων δ' ἐν κλείδω ἄνθρωποι ἀκρότα ποδὶ σὺν εἰσικόνε  
 λόγους, ὡς ἐν κλήδῃ ἔφη, σοφισαῖς μὲν δωκόσῃ χεῖ-  
 ρι. ἀνθρώποις δὲ ἔδαμῶς. ἄχρηστον γὰρ ὡς εἶναι  
 τὴν ποδὶ ταῦτα ἀσχερολογίαν. ὡς καὶ πάλαι τῶν ἐν  
 θυδὴ μὲν φησί. χαρμίδος τὴν οἰκίαν αὐτῷ διδόντες  
 ἵν' ἀπ' αὐτῶν προσδοκῶντες ἔχ' εἴλω. καὶ ἢ ἡγά-  
 λῃ ὑποδείδον ἀλκιβιάδου ἡγάδα πνας. καὶ ἐπὶ  
 νειοχολῶν ὡς ἡγάμισον κτηματῶν. ἡγάδα καὶ ξυνο-  
 φῶν ἐν συμποσίῳ φησί. ἔλεγε δὲ καὶ ἐν μόνον ἀγα-  
 θὸν εἶναι τὴν ὑπὸ σῆμιν, καὶ ἐν μόνον ἡγάδον τὴν ἀμα-  
 θίαν. πολὺ γὰρ δὲ καὶ ἐν γένειαν ἔδεμ σεμνὸν ἔχειν.  
 πάντες δὲ τὸν αὐτὸν ἡγάδον. εἰπὺν τῷ σοῦ πινὸς αὐ-  
 τῷ ὡς εἶναι ἀντιπρόσθεν μητρὸς θρατήης. σὺ δ' ὡς ἔφη  
 οὕτως αὐτὸν γυμνασίον ἐκ δυοῖν ἀθληαίων γνέσθαι; φαί-  
 δωνα δὲ δι' ἀχμαλωσίαν ἐπ' οἰκίαν τῷ ἡγάδῃ  
 νομ προσέταξε κείτῳ λυτρώσασθαι καὶ φιλόσοφον  
 ἀπειργασθαι. ἀλλὰ καὶ λυγίζειν ἐμάνθανον ὅτε  
 καιρὸς, μηδὲν λέγων ἄρτιον εἶναι, ἅπας μὴ οἶδεν ἐκ  
 μανθάνει

δέξαι σω-  
 κράτους

μανδάνειν. ἐπὶ τὴν ὥρην σωεχίς, τῇ τοῖ σώματος  
 ἐνδία λυσitteλειρ ἡσούρην. τῷ τριαύτῳ γυμνα-  
 σία. ὡς καὶ ξηνοφῶν ἐν συμποσίῳ φησὶν. ἔλεγε δὲ καὶ  
 προσμαίνειν ὃ δαιμόνιον τὰ μέλλοντα αὐτῷ. τὸ  
 τεῖν ἀφ' ἑαυτοῦ μικρὸν μὲν μὴ εἶναι, παρὰ μικρὸν δὲ. ὅ-  
 τι εἶδέναι μὲν μηδὲν, πλεοναυτὸν δὲ εἶδέναι. τὰς τε  
 τὰ ὥρα πολλὰ ἐκονημένους ἀργυρῶσκειν ἔλεγον εἰς  
 τὰς ὥρας ἐλθεῖν. καὶ πρὶν ἐρωτηθεῖς τίς ἀρετὴ νίου.  
 ὃ μηδὲν ἄγαθον εἶπεν. ἔφασκε τε δέειν γεωμετρεῖν  
 μέτρον αὐτοῦ μετρώ δύνῃται γὰρ τὴν παραλαβὴν  
 καὶ παραδουῶναι. ἐνελπίδου δὲ ἐν τῇ αὐτῇ ἐπὶ τῷ  
 ποταμῷ, καὶ τισιν εἰκὴ ταῦτ' ἰαὺ ἀφειμένα, ἀνα-  
 στας δ' ἐξῆλθε φήσας. γελοῖον εἶναι, ἀνδραποδῆν μὲν μὴ  
 ἐνδομήδην ἀξιουῶν ζητεῖν. ἀρετὴν δ' οὕτω ἰαὺ ἀρ-  
 λωλῆναι. ἐρωτηθεῖς πρὸς τὸν γυμνασίῳ ἢ μὴ, ἔφη. ὁ αὖ αὐ-  
 τῷ πρὸς τὴν μετρώσῃ. ἔλεγε τε δαυμάζειν τῷ τὰς  
 λίθων τοῦ εἰκόνας κατὰ σκόδαρομένω. τοῖ μὲν λίθου  
 προνοεῖν, ὡς ὁμοίωται ἔσαι. αὐτῷ δ' ἀμελεῖν  
 ὡς μὴ ὁμοίωται τῷ λίθῳ φαίνεσθαι. ἡξίον δὲ καὶ τοῦ  
 νέου σωεχῶς κατὰ πείρεσθαι. ἵν' εἰ μὲν καλὸν εἶναι,  
 ἀξιοὶ γίγνουνται. εἰ δ' ἀκαχοὶ παιδεία τῷ δυσείδει  
 αὐτῷ καλῶνται. καλίστας αὐτῷ δέειπνον πλουσίους  
 καὶ τῷ ξανδίππῳ ἀδουμένης, ἔφη δ' ἀρῶν. εἰ μὲν γὰρ  
 εἶναι μέτροι συμποδίζοντες αὐτῷ. εἰ ὅ φανταί, ἡμῖν  
 αὐτῷ δ' ἐν μελίσσει. ἔλεγε τοῦ μὲν ἄλλος ἀνθρώπου  
 γὰρ ἵν' ἀεδίοιεν. αὐτῷ δὲ ἀεδίοιεν ἵνα ζῶν. πρὸς ὃ δ' αὖ

ἀφ' ἑαυτοῦ  
 αὐτοῖς

121



ἀξιόλογον πλῆθος ἴφασκεν, ὁμοίον εἶπε τετραδρα-  
 χμον ἐν ἀρχοκιμαζωμ, ἥρην τῇ τριτῇ σωρὸν ὡς  
 δόκιμον ἀρχοκίχου. αἰσχίνου δὲ εἰπὺν τῷ πύγῃς εἰ-  
 μί, καὶ ἄλλο μὲν ὁ δὲρ ἔχω, δίδωμι δὲ σοι ἐμαυτόν.  
 ἄρ' ὅν εἰπὺν ὅκ αἰσθάνη τὰ μέγιστά μοι διδούς. πρὸς  
 ἥρην ἀρχοκίμαζωμ τῷ τῷ παρορᾶσθ' ὁπότε ἐπανέ-  
 σθερ οἱ τειάκοντα, ἄρα ἔφη μή τι τοι μεμείλῃ; πρὸς  
 ἥρην εἰπὺν τα, δάνατόν σου κατέγνωσα μ' ἀβλυαῖοι, καί  
 κείνων φησὶν ἡ φύσις. οἱ δὲ, τοῦτ' ἀναξαφόρου φασι. τῷ  
 γυναικὸς εἰπὺν ἀδίκως ἀρχοκίμαζωμ, σὺ δὲ ἔφη δὲ  
 καίως ἐβόλου; ὅναρ δόξας πνᾶ αὐτῷ λέγειν,  
 ἡματι κεν τειάκω φθίλω ἐρίβωλον ἴκιο.  
 πρὸς αἰσχίνω ἔφη, εἰς τρίτῳ ἀρχοκίμαζωμ. μέμον-  
 τί τε αὐτῷ ἥ κώνειον πίεσθαι, ἀρχοκίμαζωμ ἰματι.  
 πορ' ἐδίδου καλὸν ἴν' ἐκείνῳ ἡναρ δάνη. καὶ ὅς, τί δ' ἔ-  
 φη ἥ ἐμὸν ἰματι πορ' ἐμβιῶναι μὲν ὑπὸ τῷ δειον, ἡναρ  
 δανῆν δὲ ὁ χί; πρὸς ἥρην εἰπὺν τα κακῶς ὁδεῖνα σε  
 λέγει, καλῶς γὰρ ἔφη λέγειν ὅκ ἐμαθε. σρέφαντ' ὅ-  
 αν πορ' ἡν τῷ ἡν δειρῶ γὸς τοῦ τειβωντ' εἰς τῷ μφα-  
 νῆς, ὁρῶσιν ἔφη δὲ τοῦ τειβωντ' τῷ κεν οδοξία.  
 πρὸς ἥρην εἰπὺν τα ὅ τοι λειδορεῖται ὁ δεινα; ὁ χί ἔφη.  
 ἐμοὶ ἢ ὁ πρόσσεσι ταῦτα. ἔλεγε δὲ τῷς κωμικῶς δειν  
 ἐπίτηδ' ἰαυτῷ διδόναι. εἰ μὲν γὰρ τι τῷ προσόν-  
 τῷ λείξαν, διορθῶσονται. εἰ δ' ὅν, ὁ δὲρ πρὸς ἡμᾶς.  
 πρὸς ξανθίππῳ πρόστορον μὲν λειδορεῖσθαι ὅς τορον  
 δὲ καὶ πορ' χίασθαι αὐτῷ, ὅκ ἔλεγον εἰπὺν ὅτι ξαν-  
 θίππη

δίππῃ βροντῶσα ἐὶ ὕδαρ τρήσει· πρὸς ἀλκιβιάδῃ  
 εἰπόντα, ὃν ἀνεντήνῃ ξανδίππῃ λοιδορῶσα, ἀλλ' ἔγω  
 γ' ἔφη σιωεῖσθαι. καὶ δα πόρ' ἐπὶ προχηλίας ἀκού  
 ων σιωχέει. καὶ θὶ μὲν εἶπε χλωῶν βοώντων ἀνέχῃ.  
 τῷ δ' ἐπ' ἔνθ' ἄλλω μοι ὦν καὶ νεοττοῦ τίκτυσι,  
 καὶ μοὶ φησὶ ξανδίππῃ παυδία γυνῆ. καὶ τὴν αὐτὴν ἐν ἀ  
 φορῇ καὶ βοιμάτορ ποδὲλεμενῆς (σωεβόλοιοι γυνώ  
 ριμοι χροσὶν ἀμύαοι, καὶ δὲ εἶπεν ἴν' ἡμῶν πυ  
 κτοδούντων ἔχας· ὑμῶν λέγ' ἐν σῶκρατος, ἐν ξαν  
 δίππῃ. ἔλεγε σιωεῖναι τραχεία γυναικὶ καὶ δα πόρ  
 οὶ ἰππικροὶ θυμοειδέσιρ ἵπποισι. ἀλλ' ὥς ἐκείνοι φησὶ  
 τῶν κρατήσαντων ῥαδίως τῶν ἄλλων ποδὲ γίνον  
 ται, οὕτω καὶ γὰρ ξανδίππῃ χρώμενθ', καὶ ἄλλοις ἀν  
 θρώποις συμποδιστὴς χθίσσεται. ταῦτα δὲ ἐπ' αὐτὰ  
 λέγων ἐπὶ πλάτῃ πρὸς τὴν πυθίαν ἐμαρτυρήθη· χει  
 ραφῶν τι ἀνελεύσεως ἐκείνο δὲ καὶ ποδὲ φερόμενον.  
 ἀνδρῶν ἀπάντων σωκράτης σφώτατ'·  
 ἀφ' ὃ δὲ καὶ ἐφθονήθη μάλιστα. καὶ δὲ ἐπὶ δὴ λέγει  
 καὶ τοῦ μεγαλοφρονουῦντος ἐφ' ἑαυτοῦ ὡς αἰοήτ'·  
 καὶ δα πόρ' ἐπὶ μέλιτ' καὶ ἀνύτ' ὡς καὶ ἐν τῷ πλάτῃ  
 καὶ δὲ μέλιτι. καὶ τὸ γὰρ ἐφ' ὅρων καὶ ἐπὶ σωκρά  
 τος χλοῦσμον, πρῶτον μὲν ἐπὶ πλάτῃ αὐτῷ καὶ  
 ποδὲ ἀριστοφάνει. ἐπειτα καὶ μέλιτ' (σωεβόλοιοι ἀπε  
 νέχοντο καὶ τὸ γὰρ ἀσεβείας ἐπὶ νέων δὲ  
 φθορᾶς. ἀπὸ λέγει καὶ ἐν τῷ γὰρ ὁ μέλις. ἐπε  
 ὅτι τῷ δὲ πλάτῃ πλάτῃ ὡς φησὶ φαβωρίνος ἐν πλάτῃ  
 δαπῇ

προχηλίας  
 60



διαπῆϊσθαι. σωτήρα. τε δὲ τὸν λόγον πελυκράτης ὁ  
 σοφιστὴς ὡς φησιν ἐρμυπποῦ. ἢ αὐτῷ ὡς πινθε.  
 προητίμασε δὲ πάντα λύκων ὁ δημαγωγός. ἀντι-  
 δόξῃς δ' ἐν ταῖς τῶν φιλοσόφων διαδοχαῖς καὶ πλά-  
 τῶν ἐν ἀκρολογία τρεῖς αὐτοὶ κατηγόρησαι φασί. αἰ-  
 νυτῆν καὶ λύκωνα καὶ μέλιτην. τὸν μὲν αἰνυτῆν ποδὶ τῇ  
 δημιουργῶν καὶ τῶν πολιτικῶν ὀργιζόμενον. τὸν δὲ  
 λύκωνα ὑπὸ τῶν ῥητόρων, καὶ τὸν μέλιτην ὑπὸ τῇ  
 ποιητῶν. ὅς ἀπανταὶς ὁ σωκράτης δίδουρε. φαβωρί-  
 νου δὲ φησιν ἐν τοῖς πρώτοις τῶν ἀκρομημονοῦ μάτῶν  
 μὴ εἶναι ἀληθῆ τὸν λόγον τὸν πελυκράτους καὶ σωκρά-  
 τος. ἐν αὐτοῖς γὰρ φησι μνημονοῦναι τῶν ὑπὸ κύνων  
 καὶ τεχνῶν αἰασαθῆναι τῶν ἀγέροντων ἐν ἑταίρῳ ἐξ ὧν  
 σωκράτης κλυδῶν ὕδατος. καὶ ἔσιρ ὅπως ἔχρη.  
 ἢ δ' αὐτομοσία τῇ δίκῃς, ὅθεν ἔχει τὸν τρόπον. αὐτὰ  
 κείται γὰρ ἐπὶ καὶ νῦν φησι φαβορίνου ἐν τοῖς μνη-  
 τρώ. ταῦτα δὲ ἐγράψατο καὶ ἀνθρωπολογήσατο, μέλι-  
 τος μελίτῃσι πετθεὺς σωκράτης σωφρονίσκου ἀλὼ  
 πεκῆθον. ἀδικεῖ σωκράτης ὅς μὲν ἢ πόλις νομίζει  
 θεοὺς ὅς νομίζω. ἔτορα δὲ καὶ ἀνὰ δαιμόνια εἰσηγού-  
 μιν. ἀδικεῖ δὲ καὶ αὐτὸς νέεσθαι διαφθείρων. τίμημα  
 θάνατος. ὁ δ' αὖ φιλόσοφος λυσίππῳ γράφει τῷ  
 ἀκρολογία αὐτοῖς διαγνῶντις ἔφη. καλὸς μὲν ὁ λόγος  
 ὡς λυσία. ὅ μὲν ἀρμότιον ἐμοί. δηλαδὴ γὰρ ὡς πλεί-  
 ον διανοητὸς ἢ ἐμφιλόσοφος. εἰπόντος δὲ τοῦ λυσίπ-  
 πῳς εἰ καλὸς ἔστιν ὁ λόγος. ἀνὰ σοὶ ἀρμότιον, ἔφη.  
 ὅ γὰρ

διαναφύει

ὃ γὰρ καὶ ἰμάτια καλὰ καὶ ὑποδήματα εἰν αὐτοῖς  
 ἀνάμμοσα· κεινομένης δ' αὐτοῖς φησὶν ἰδοῦθ' ὃ πβε-  
 ρεύς ἐν τῷ σέμματι, πλάτωνα ἀναβλῶαι ὡδὶ ἢ βῆ-  
 μα ἔειπεν. νεώτατόν ὡς ὁ ἀνδρὸς ἀθλῶται τῶν  
 ὡδὶ ἢ βῆμα ἀναβαίνων. οὗτος δὲ διαστὰς ἐκβοῶσαι, κα-  
 ταβαίνων, τὰ τέσι κατὰ βῆμα. ὅτ' ἐν κατεδιδόχῃ  
 διακροσίου οὐδὲν κινουμένη πλείοσι ψήφοις τῶν ἀρ-  
 λυσοῶν, καὶ πτωμένων τῶν διακροῶν τί χρεὶ πα-  
 θεῖν αὐτῶν ἢ ἀκρίβειαν, πρὸν καὶ εἰσοπρὶν εἶναι  
 χρεὶς ἀκρίβειαν. ἐν βουλίδῃς μὲν γὰρ φησὶν ἐκ τῶν  
 ὁμολογῶν. βορυβησάντων δὲ τῶν διακροῶν, ἐνεκα  
 εἶπε τῶν ἐμοὶ διαπεπραγμένων ἡμῶμαι τὴν δίκην  
 ὅτι ἐν πρυτανείῳ σιτησεως. καὶ οἱ δ' ἀναγρὰ αὐτοῖς κα-  
 τέγνωσεν, προδόντες ἄλλας ψήφους οὐδὲν κινου-  
 καὶ δεθείς μετ' ὃ πολλὰς ἡμέρας ἐπὶ τὸ κῶνειον,  
 πολλὰ καὶ γὰρ ἀσχετοὶς, ἀπὸ τῶν ἐν ᾧ φαίδωνι  
 φησιν. ἀλλὰ καὶ παιᾶνα κατὰ λῆρας ἐπρήσειν ὃ ἡ ἀρχή.  
 δῆλόν ἄπρμωρ χαῖρε, καὶ ἀρτέμι παῖδε κλεινῶ.  
 διονυσόδωρος δὲ φησὶ μὴ εἶναι αὐτοῖς τὸν παιᾶνα. ἐπὶ  
 ης δὲ καὶ μῦθον αἰσώπειον ὃ πάνυ ὡπτετο γυμ-  
 νως. ὃ ἡ ἀρχή.

αἰσώπων πρὶ ἑλθεῖν κρένδιον ἄστυ νέμει,

μὴ κρένειν ἀρετῶν λαοδίκω σοφίῃ.

ὁ μὲν, ἐν δὲ ἀνθρώπων ὡς. ἀθλῶται δ' ἐνθὺς μετέγνω-  
 σεν ὡς τε κλεῖσαι καὶ παλαίστρας καὶ γυμνασία.  
 καὶ οὗτος μὲν ἐφυγάδισεν. μελίτῃ δὲ δάναρρ κα-

1 τέγνω



τε γνωσάμ. σωκράτη δὲ χαλκῆς εἰκόνι ἐπιμήσαντι  
 ἦν ἰδεῖν ἐν τῷ περὶ πύλων σίπτει τὰ τῶν ἐργα-  
 σαμένων. αὐτὸν τε ὑπὸ δὴμήσαντα αὐθιγὰ δὲ  
 κήρυξαν ἡρακλεῶται. ὃ μόνον δὲ ὑπὸ σωκράτῃ  
 ἀθλῶνται περὶ πύλων σίπτει, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ πλείων ὁ-  
 σων. καὶ γὰρ ὁμηρον καὶ δάφνην ἡρακλείδης πύλῃ  
 κόντα δαχμαῖς ὡς μαινόμενον ἐτίμησαν. καὶ τυρ-  
 ταῖον παρανόπειν ἔλεγον. καὶ ἀστυδολογία πρῶ-  
 τῃ ἢ πόδι αἰσχύλον, ἐτίμησαν εἰκόνι χαλκῇ. ἐν-  
 πίδῃς δὲ καὶ οὐκ εἰδίζει αὐτὸς ἐν τῷ παλαμῇ  
 λέγων. ἐκταάνει ἐκταάνετε τὰ πάντοτε τὰν ὁ-  
 δὲ ἀλγύνουσαν ἀκρόναι μουσαν. καὶ τὰ δὲ μὲν ὦδε.  
 φιλόχως δὲ φησι προτελευτήσαι τὸν ἰσχυρί-  
 δῃον τὸ σωκράτῃ. ἐγνηθήν δὲ καὶ δάφνην ἀκρό-  
 δῶς ἐν τῇ χρονικῇ ὑπὸ ἀφελῶν ἐν τῷ τε-  
 τάρτῳ ἔτει τῆς ἐβδόμενης ἐβδόμης ὀλυμπια-  
 δῇ θαργυλίων ἐκτὴ. ὅτε καὶ αἰρουσι τὴν τέλιν  
 ἀθλῶνται. καὶ τὴν ἀρτεμὶν γνέσθαι δῆλοι φασί. ἐ-  
 τελευτήσε δὲ τῷ πρῶτῳ ἔτει τῆς ἐννεμῆς πέ-  
 μπτης ὀλυμπιαδῇ, γενοῦς ἐτὶν ἐβδόμενοντα.  
 καὶ τὰτα φησὶ καὶ δὴμήτριος ὁ φαληρεὺς. ἐνίοι  
 γὰρ ἐξήκοντα ἐτὶν τελευτήσαι αὐτὸν φασί. ἀμφό-  
 τῃ δὲ ἡγουσάμ ἀναξαγόρου, καὶ οὗτος καὶ ἐν ἐπι-  
 δῃς. ὅς καὶ τῷ πρῶτῳ ἔτει τῆς ἐβδόμενης πέ-  
 μπτης ὀλυμπιαδῇ ἐγνηθήν ὑπὸ καλλιπιδου. δῆ-  
 κει δὲ μοι καὶ πόδι τῇ φυσικῇ ὁ σωκράτης διηλέ-

χθαι

χεται. ὅπ' οὖν καὶ πόδι προνοίας τινὰ δ' ἀλέγεται.  
 καὶ δ' αὖ φησι καὶ ξυνοφῶν, καὶ γὰρ πόδι μόνων τῶν ἡδὲ  
 κῶν πρὶς οὖν τοῦ λόγου αὐτῶν εἰπῶν. ἀλλὰ καὶ  
 πάλιν ἐν τῇ ἀκρολογία μνηστῆς ἀναξαγόρου καὶ  
 ἄλλων φυσικῶν ἀσωκρατῆς ἀρνέεται πόδι τῶν  
 αὐτῶν λέγει, καὶ πόρ ἀναπιθεὶς σωκρατεῖ. φησὶ  
 δ' ἀριστοτέλης μολγοῖ τινὰ ἐλθόντα ἐκ σύρας εἰς  
 ἀθλῶας τῶν τε ἄλλα καταγινῶναι τοῦ σωκρατῆς καὶ  
 δὴ καὶ βίαιον ἴσεται τὴν τελευτὴν αὐτοῦ. ἔστι δὲ καὶ  
 ἡμῶν εἰς αὐτῶν οὕτω.

πῖνε νῦν ἐν δὲ οὖν, ὡς σώκρατος. ἢ σε γὰρ οὕτως

καὶ σοφὸν εἶπε θεὸς καὶ θεὸς ἡ σοφία.

πρὸς γὰρ ἀθλῶν κῶνειον ἀπλῶς μὲν εἰδὲξω

αὐτῶν δ' ἐξέπιον ἔδωκε τῶν σώματι.

τῶν περ καὶ φησι ἀριστοτέλης ἐν τρίτῳ πόδι πρὸς  
 κτικῆς ἐπιλογίᾳ ἀντιόλοχον λήμνιν καὶ ἀντι-  
 φῶν ὁ τὸν ἀρσινόπῳ, ὡς πυθαγόρα κύδιον ἐδὲ οὐκ  
 τας. καὶ σάγαρις ὁμήρῳ ζῶντι. ἀκροατὸν δὲ ξυνο-  
 φαίνης ὁ κολοφῶνιν. καὶ κῶν κῶν, ἡσίοδῳ ζῶντι. τε-  
 λευτήσαντι δὲ ὁ προειρημένῳ ξυνοφαίνης. καὶ πιν-  
 διατῶ ἀμφοτέρων ὁ κῶν. δάλητι δὲ φοβεκύνδης.  
 καὶ βίαντι σάλαρ πειλωδῶν. πιπτακῶ ἀντι-  
 μνήδης καὶ ἀλκῶν. ἀναξαγόρα σωσίβιν. καὶ  
 σιμωνίδην τιμοκρίων. τῶν δὲ ἀναδεξαμένων αὐ-  
 τῶν, τῶν λεγομένων σωκρατικῶν, οἱ κορυφαί-  
 οὗται μὲν πάλιν. ξυνοφῶν. ἀντιοδῆνης. τῶν δὲ

πάντων



φορομεγνών δ' ἔηγε οἱ δ' ἄσκημότατοι, τ' ἐσθ' ἀφ' αὐτοῦ. αἰσχί-  
νης. φαίδωρ. ἐν κλείδης. ἀρίσιππος. λεκτερόν δ' ἐπ' ὧ  
ρην ποδὶ ξυνοφῶντο. ἔτα ποδὶ ἀντιοδ' ἔν τ' ὧ ρίς  
κωκυτοῖς. ἔπειτα ποδὶ τ' ὧ σωκρατικῶν. ἔθ' οὐτω πε-  
ρὶ πλάτων. ἔπειτα κατὰρχαι τ' ὧ δ' ἔηγε αἰετίστων,  
καὶ τὴν πρῶτον ἀναδημίαν αὐτὸς συνεστήσατο. ἡ  
μὲν ἀκολουθία τοῦτον ἔχεται τὸν τρόπον. γέγονε  
δὲ σωκρατὴς καὶ ἑτορὸς ἰσοκλὸς ποδὶ ἡγεσιμ' ἀρ-  
γυροῦ γεγραφώς. καὶ ἄλλος ποδὶ πατητικὸς βιβιωός.  
καὶ ἑτορὸς ὑπὲρ γραμματ' ἡν πρηνῆς. καὶ ὁ κῶς ἐπὶ  
| κλήσεις | σεῖς θεῶν γεγραφώς.

## ΞΕΝΟΦΩΝ

— Εὐνοφῶν γρύμης μὲν ἴω ἀθλωαῖτο, τ' ὧ δ' ἡμῶν  
— ἀρχισίς. αἰδ' ἡμῶν δ' ἐ καὶ ἐνιδέσαστο εἰς ὕ-  
ποβολῶν. ἔδ' ἔν τ' ὧ σ' ἡνωτῶ φασίμ ἀπαντήσαντα  
σωκρατὴν, δ' ἔτα εἶναι τὴν βακτηρίαν καὶ κωλύειν  
παρὶ γὰρ, πωδανόμλόν | οἱ πιπλάσκειν τ' ὧ προ-  
σφορομεγνῶν ἔησεν. ἀρκευνομεγνὸς δ' ἐ πάλιν πυθί-  
δα. π' δ' ἐ καὶ καὶ γαθοὶ γίνονται ἀνθρώποι. ἀρκε-  
σαντο δ' ἐ π' ὧ ρίνω φαῖναι καὶ μαίνεσθαι. καὶ τ' ὧ  
τεῦθεν ἀκροατὴς σωκρατὸς ἴω. καὶ πρῶτο ἔπο-  
σημειωσάμεντο τὰ λεγόμενα, εἰς ἀνθρώπων ἡγαι-  
γην, ἀρκευνομεγνῶν ὑπὲρ γράφας. ἀλλὰ καὶ ἰσοκλὸν  
ἐλυσόφωρ πρῶτο ἔγραφε. καὶ αὐτὸν φησὶν ἀρί-  
σιππος ἔν τε τὰ τῶ ποδὶ παλαιᾷς τρυφῆς ἐραδ' ἡ-  
νο καλινίς. πρὸς ὅν καὶ ταῦτα εἰπέμ. νῦν γὰρ ἐγὼ  
κλα

κλεινίαν ἡδονὴν μὲν θεῶμαι ἢ τ' ἄλλα πάντα ἐν ἀνθρώ-  
 πῳ καὶ λαῷ. τυφλὸς δὲ τῶν ἄλλων πάντων δεξαίμεναι  
 αὐτὴν κλεινὴς ἐνός οὐ τὸ γινώσκει. ἄχθομαι δὲ καὶ νυ-  
 κτὶ καὶ ὑπνῷ ὅτι ἐκείνοισιν ἔχ' ὁρῶ. ἡμῶρα δὲ καὶ ἡλίῳ  
 τῷ μεγίστῳ χεῖρ οἶδα ὅτι μοι κλεινίαν ἀναφαίνου-  
 σι. κύρω δὲ φίλῳ ἐγγίγω τὸν τῶν τῶν. ἡ αὐτὴ  
 σωκράτης πρόσθεν ὄνομα, γινώσκει βοιωτῶν. μαθητὴς  
 μὲν Γοργίας τοῦ Λεοντίου, φίλῳ ἢ κύρω. ἔτ' ἐν σά-  
 δεσι δ' ἔλαττο παρὰ τοῦ κύρω, ἔπειτα εἰς ἀθή-  
 νας ὑπὸ πολλῶν ξηνοφῶντι, καλῶν αὐτὸν ἵνα γινώσκῃ  
 κύρω φίλῳ. ὁ δὲ, τῷ ὑπὸ πολλῶν δεικνύει σωκρά-  
 τει. καὶ σύμβουλον ἡρεῖται. καὶ ὅς ἀπέσειλεν αὐτὸν  
 εἰς δελφούς, χρησόμενον τοῦ θεῶ. πείθεται ξηνοφῶν.  
 ἦκει παρὰ τὸν θεόν. πωθάνεται ἔχ' εἰς χεῖρ ἀπιγῆναι  
 πρὸς κύρω, ἁλ' ὅπως. ἐφ' ᾧ καὶ σωκράτης αὐτὸν ἡ-  
 πιάτῃ μὲν, συνεβούλευσε δὲ ἐξελθεῖν. καὶ ὅς γίνεται  
 παρὰ κύρω. καὶ τοῦ προσέειπε φίλῳ ἔχ' ἡττορ ἡ αὐ-  
 τοῦ. τὰ μὲν ἐν ἄλλοις τὰ κατὰ τῷ ἀναβασιρ γινόμενα  
 καὶ τῷ καλῶς ἡγεμένῳ αὐτὸς ἡμῖν διηγείται. ἐχ-  
 θεῶς δὲ δέκνεται πρὸς μέγωνα τὸν φαροτέλιον πό-  
 τινος χρόνου τῇ ἀναβολῆς τὸν ξηνοφῶν. ὅτε καὶ λειδο-  
 ρῶν αὐτὸν φησὶν αὐτὸ μείζωσι κεχεῖται παιδικῶς.  
 ἀλλὰ καὶ ἀρχαῖον ἡμῖν οὐκ οἶδ' εἰς τετρήσθαι τὰ ὡ-  
 τα. μὲν δὲ τῷ τε ἀναβασιρ καὶ τὰς ἐν τοῦ πέντω  
 συμφορὰς καὶ τὰς παραπαιδείσεις τὰς σούθας τοῦ  
 τῶν ὁδοποιοῦ βασιλείας, ἦκον εἰς ἀσίαν πρὸς ἀγασί-

πρὸς πρόσω  
 φίλῳ ἐγγί-  
 γω κύρω



λαορ ἤν λακεδαιμονίων βασιλία μοδοῦ τοῦ κῦρου  
 στρατιώτας αὐτοῦ παραχώρ. φίλθ' τε ἡμῖν εἰς ἑσπέρην  
 βολὴν παρ' ὅν καιρὸν ἡδὲ λακωνισμῷ φυγὴν ἔσθ'  
 ἀθλιωαίων ηγαγεγνώσθην. γινώσκοντες δ' ἐν ἐφίσει καὶ  
 χενσίον ἔχωρ, ἥ μὲν ἡμῶν μεγαβύζω δίδωσι τοῦ  
 τοῦ ἀρτέμιδοιο ἰδρύει φυλακῆν ἕως αὖ ἐπανέλθῃ.  
 εἰ δὲ μὴ ἀγαλμα πρηνόσμενον, ἀναθεῖναι τῇ θεῷ. τοῖ  
 δὲ ἡμῖν ἐπέμψεν εἰς δελφῶν ἀναθήματα. ἐν  
 τεῦθεν ἦλθεν μετὰ ἀγχιπλάου εἰς τὴν ἐλαδία κε-  
 κλημένον εἰς τὴν πρὸς θηβαίων πόλεμον. καὶ αὐ-  
 τοῦ προξενίαν ἔδωκεν λακεδαιμόνιοι. ἐν τεῦθεν ἰα-  
 σας τὴν ἀγχοσίλαον ἦκον εἰς σκιλλοῦντα χωρίον  
 ἡλείας ὀλίγον τῆς πόλεως ἀπέχεσθαι. εἰπερ δὲ αὐτοῦ  
 καὶ γυναικὶ ὄνομα φιλοσία, καὶ δὲ φησι δὴμήτριον  
 ὁ μάγνης. καὶ δύο υἱεῖς, γρύλλον, καὶ δίοδωρον.  
 ὡς φησι δειναρχῶν ἐν τοῦ πρὸς ξηνοφῶντα ἀρσα-  
 σίου. οἱ καὶ δίοσκουροι ἐκλαοῦντο. ἀφρομεγνίου δὲ τοῦ  
 μεγαβύζου κατὰ πρόφασιν τῆς πανηγύρεως, κομι-  
 σάμενον τὰ χρήματα, χωρίον ἐπελάττει, καὶ καθιέ-  
 ρωσε τῇ θεῷ. δι' ἧς πρταμὸς ἔρξαι σελινοῦς, ὁ μώνυμον  
 τοῦ ἐν ἐφίσει. τοῦ τεῦθεν διετέλει κυωνηκτῶν, καὶ  
 τοῦ φίλτου ἐσιῶν, καὶ τὰς ἰσορίας συγγράφων. φη-  
 σὶ δ' ὁ δειναρχῶν ὅτι καὶ οἰκίαν καὶ ἀγρὸν αὐτῷ  
 ἔδωκεν λακεδαιμόνιοι. ἀλλὰ καὶ φιλοπιδίαν τὸν  
 σαρπηδάτην φασὶν αὐτοῦ πέμψαι αὐτόθεν δωρεάν  
 ἀνδράν τε καὶ αἰχμαλώτους ἐκ δαρδανίου. καὶ τὴν σὺν  
 θιάσει

θιάται αὐτὰ ὡς ἐβέλετο. ἡλείους τὶ στρατοῦσα μνήσας  
 εἰς τὸν σκιλλοῦντα καὶ βρωόν τῶν λακεδαιμονίων,  
 ἐξελεῖν τὸ χωρίον. ὅτε καὶ εὖ ἤϊας αὐτοὶ εἰς λήπρε-  
 ον ἔωδελθεῖν μετ' ὀλίγων ὀικετῶν. καὶ αὐτὸν ξυνο-  
 φῶντα εἰς τὴν ἡλιν πρόστορον. εἶτα καὶ εἰς λήπρεον  
 πρὸς εὖ παῖδας, καὶ κείθην (ὡς αὐτοὶ εἰς κρύενθον  
 δέξωθαι αὐτοὺς) καὶ αὐτοὶ καὶ τῶν αὐτῶν δὲ φησι  
 σαμνίων ἀθλοῦσιν βοηθεῖν λακεδαιμονίοις ἐπεμψέ  
 εὖ παῖδας εἰς τὰς ἀθλοῦσας, στρατοῦσας μνήσας ἔωδρ  
 τῶν λακεδαιμονίων. καὶ ἔπειτα δὴ αὐτοὶ ἐν τῇ  
 σφαίρῃ καὶ φησι διοκλῆς ἐν τῇ βίῳ τῶν φιλοσό-  
 φων. ὁ μὲν ἐν διοδώρῳ ἔδερ ὑπὸ φανὲς πράξας ἐκ τῆ  
 μάχης ἀνασώζεται. καὶ αὐτὸς ὅς ὁ μὲν γινέ-  
 ται τὰ δὲ φησὶ. ὁ δὲ γρύλλος τεταγμένος καὶ εὖ ἰσ-  
 πίας, ὡς δὲ ἡ μάχη πόδι μαντίνειαν, ἰσχυρῶς ἀγω-  
 νισάμενος ἐτελεύτησεν ἵως φησὶν ἔφορος ἐν τῇ πέ-  
 μπτῃ καὶ εἰκοστῇ. καὶ διοδώρου μὲν ἰππαρχοῦτος  
 ἡγεσίλειω δὲ στρατηγοῦτος. ἐν ταύτῃ τῇ μάχῃ  
 καὶ ἐπαμεινώνδας ἐπέσβε. τὴν καὶ αὐτὰ δὴ καὶ τὸν  
 ξυνοφῶντα φασὶν θύειν ἐσεμμένον. ἀπαγγελούντῃ  
 δ' αὐτῷ τοῦ θανάτου ἀποσεφάνωσθαι. ἔπειτα  
 μαθόντα ὅτι γηναίως, πάλιν ὑπὸ θείῳ τὸν εἶφανον.  
 ἐνίοι δὲ, ὅς δὲ διακρύσαι φασὶν αὐτόν. ἀλλὰ γὰρ εἰ-  
 πέειν ἢ δεινὸν θνητὸν γιγνηκώς. φησὶ δὲ ἀριστοτέλης  
 ὅτι ἐγκώμα (ὡς ὑπὸ τῷ φησὶ γρύλλου, μύριοι ὅσοι συγ-  
 γράψαντες τὸν μὲν καὶ τὸν πατρὶ χαριζόμενοι.

ἀλλὰ

1/12a



ἀλλὰ καὶ ἔρμυπποθ' ἐν τῷ ποδὶ θεοφράσσει καὶ σω-  
 κρᾶτι φησὶ γρύλλου ἐγκώμιον γεγραφέναι. τίμων  
 δ' ὑποσκόπει αὐτὸν ἐν τούτοις. ἀσθενική τε λόγων  
 δύας ἢ τριάς ἢ ἑπτάσσω, οἷθ' ἐξνοφώων ἢ τ' αἰσχίνων  
 ἐκ ἀπειθείς γραφάς. καὶ ὁ μὲν βίθ' αὐτῷ ριόσδε.  
 ἦμαρ δὲ καὶ ἡ τέταρτη ἔτθ' ὅτι τετάρτης καὶ  
 ἐννεμης οὐλυμπιάδθ'. καὶ ἀναβέβηκε (ὡν κύρω  
 ὡδ' ἀρχοντ' ἐξαίνετο ἐν προτέρῳ ἔτι ὅτι σω-  
 κρᾶτος τελευτῇ. κατέστρεψε κατὰ φησι σπυικλεί-  
 δης ὁ ἀθλωαῖθ' ἐν τῇ τῇ ἀρχόντῃ καὶ οὐλυμπιονι-  
 κῶν ἀναγραφῇ ἔτι πρώτῳ ὅτι πέμπτης καὶ ἑκα-  
 τῆς οὐλυμπιάδθ', ὡδ' ἀρχοντ' καὶ ἡμιδιδις ἐφ'  
 ἔ καὶ ὀλίπιπθ' ὁ ἀμύντο μακεδόνων ἦξε. τέθυ-  
 κε δὲ ἐν κρείνθῳ ὡς φησι διημήτειθ' ὁ μάγνης, ἥδη  
 γηραὶος ἱερῶς. ἀνὴρ τὰ τε ἄλλα γεροντὶς ἀγαθός  
 καὶ δὴ καὶ ὀλίπιπθ' καὶ φιλοκύνῃθ' καὶ τακτι-  
 κός ὡς ἐν τῇ συγγραμμάτῃ δὴλον. ἐνσεβής τε καὶ  
 φιλοθύτης, καὶ ἰδρύεια δαγνῶναι ἱερῶς, καὶ σωκρά-  
 τη ζηλώσας ἀκείβως. συνέγραψε δὲ βιβλία πρὸς  
 τὰ τετρακόντα, ἄλλων ἄλλως δαγνῶντῃν. τὴν τε  
 ἀναβάσιν ἣς καὶ βιβλίον μὲν ἐπὶ ἴκσε προίμιον. ὅλης  
 δὲ ἔ. καὶ κύρω παιδείαν. καὶ ἐλλωικά ἀκρμνημονό-  
 ματα. συμπόσιον τε καὶ οἰκονομικόν. καὶ ποδὶ ἵππι-  
 κῆς καὶ κωπηγικῆς καὶ ἵππαρχικῆς. ἀκρογίαν τε  
 σωκράτους. καὶ ποδὶ ἀπόρων. ἔ. ἰδρύων ἢ τυραννι-  
 κόν. ἀγνοίαν τε ἔ. ἀθλωαίω ἔ. λακεδαιμονίω  
 περλίτιαν

ὅσα σωί-  
 γραφε

πρλιτίαν, ἡν φησὶν ὅτι εἶν' ἐγνωφῶντες ὁ μάγνης δὴ  
μήτερος. λέγεται δ' ὅτι καὶ τὰ θουκυδίδου βιβλία  
λανθάνοντα, ὑφελίοντα διωαμνῶν, αὐτὸς εἰς δό-  
ξαν ἡγάγην. ἐξαλείφει δὲ καὶ ἀπὸ τῆς μεσο γλυκύτητι  
ἐν ἐρμυνείας. ὅθεν καὶ πρὸς ἀλλήλους ζηλοτύπως  
εἶχε αὐτὸς τε καὶ πλάτῃν, ὡς ἐν τῷ πόρῃ πλάτῃ  
νῶν λέξομεν. ἐσι δὲ καὶ εἰς τῶν ἡμῶν ὑπὸ γράμμα-  
τα τῶν ἡμῶν ἔχοντα τὸν τρόπον.

ὁ μόνος δὲ πόρσας ἀνέβη ἐγνωφῶν δὲ αὐτὸν  
ἀλλ' ἀνόδουρ ζητῇν δὲ διὸς ἡπ' αἶσοι.

παυδείης γὰρ ἡς ἐλλυικὰ πλάγματα δείξας  
ὡς καλὸν ἡ σοφίη μνήσας τὸ σωκράτεος.

ἄλλο, ὡς ἐτελεύτα,

εἰ καὶ σὶ ἐγνωφῶν κραναῶν κίεροφός τε πρλιτάι  
φδύγειν κατέγνωρ τὸ φίλου χάρις κύρσ  
ἀλλὰ κερυνθῶν ἔδεκτο φιλόξενος ἡ σὺ φιληδῶν  
οὕτως ἀφίσκη, κείδι καὶ μνῆν ἔγνωσ.

ἐνρομ δὲ ἀλλαχόθι ἀκμαίαι αὐτὸν πόρῃ τῶν ἐνάτιω  
ὑπογδοηκοσὶν ὀλυμπιάδα, ἡν τῆς ἄλλοις σωκρατῇ  
κοῖς. καὶ ἔσθ' φησὶν αὐτὸν φυγεῖν καὶ φήμισμα  
ἐν βούλων, καὶ κατελθεῖν καὶ φήμισμα τὸ αὐτό. γε-  
γόνασι δὲ ἐγνωφῶντες ἐπ' αὐτὸν. πρῶτος αὐτὸς ἔστ' ὅς  
δούτορος ἀθλωαῖ ἀδελφὸς πυθοσφάτης, τὸ τῶν  
θησπιδά πεπρινκός, γεγραφὼς ἄλλα τε, καὶ βίον  
ἐπαμυνώνδρα καὶ πελοπίδα. τρίτος ἰατρὸς καὶ  
τέταρτος ἰσορίαν ἀνιβαῖν καὶ γεγραφὼς. πέμπτος

m μυθῶ

10ν  
5.

11. 10. 11. 12.



μυθώδῃ τῶρατείᾳ πεπραγματεύμενός· ἐκ τούτου  
παύειτο ἀγαλμαρπυῖος· ἐβδύμετο καμωδίας ἀφ'  
χαῖτο τριητής.

## ΑΙΣΧΙΝΗΣ

**Α**ἰσχίνης χερσίνου τοῦ ἀλανρπυῖ, οἱ δὲ λυσανίς  
ἀθλιωαῖος, ἐκ νέου φιλόπρυνός· διὸ καὶ σωκρά-  
τους ἐκ ἀπίστῃ· διὸ καὶ ἔλεγε, μόνος ἡμᾶς οἶδε τι  
μαῖν ὁ τοῦ ἀλανρπυῖ· ὅθεν ἔφη ἰδὼς μνηστὴς ἐν τῷ  
διδωμωτηρίῳ συμβουλευθεῖν ποδὶ τι φυγῆς σωκρά-  
τει καὶ ἐκ κείτωνα· πλάτωνα δὲ ὅτ' αὐτὸν ἀεισίππων  
μᾶλλον φίλος κείτωνα ποδὶ θέναι σὺν λόγῳ· δι-  
εβόλητο δ' ὁ αἰσχίνης καὶ μάστιγι· ἔπειθ' ἐπὶ μνησθῆναι  
τοῦ ἐρετρίως, ὡς σὺ πλείους τοῦ δὲ λόγῳ ὄντας σω-  
κράτους ἔποβαλλοι· λαμβανῶν παρὰ ξανδίπι-  
πης· ὥρ' οἱ μὲν ἡλαθύνοντο ἀκίφαλοι σφόδρ' εἰσὶν ἐκ  
λελυμένοι καὶ ἐκ ὑπὸ φαίνοντο τῷ σωκρατικῷ ἐν-  
γνῶν· ὅς καὶ πεισίστρατος ὁ ἐφίσιτος ἔλεγε μὴ εἶναι  
αἰσχίνου· καὶ τῶν ἰωτᾶ δὲ σὺ πλείους τοῦ πόρσοῦ  
φασὶ πασιφῶντος· εἶναι τοῦ ἐρετρίου· εἰς σὺν αἰσχί-  
νου δὲ κραταύξαι· ἀλλὰ καὶ ἔρ' ἀντιπρὸς τοῦ τὸν τε  
μικρὸν κύρου καὶ ἡρακλῆα ἔρ' ἐλάσσω καὶ ἀλκιβιά-  
δῳ, καὶ σὺν τῶν ἄλλων δὲ ὁκλύωρηται· οἱ δ' οὕτω  
τῶν αἰσχίνου ἢ σωκρατικὸν ἦθός· ἀρμεμαγμένοι,  
εἰσὶν ἰωτᾶ· πρῶτος μιλτιάδης· διὸ καὶ ἀδυνά-  
τοδ' ὡς ἔχει· ἡαλίας· ἀξίον· ἀπασία· ἀλ-  
κιβιάδης· τηλαυγής· γίνωρ· φασὶ δ' αὖτ' ἐπὶ ἀπ-  
ρίαν

διὰ λόγους  
αἰσχίνης

ρίαν ἰλθεῖν εἰς σικελίαν πρὸς διονύσιον· καὶ ἔσθ' ὁ  
 μὲν πλάτων παροφθιῶναι. ἔσθ' δὲ ἀρίσιππου συ-  
 σαβλιῶναι. δόντα τέ τινας τῶν ὁμιλόγων, διῶρα λα-  
 βεῖν. ἔπειτ' ἀφιχόμενον ἀβλιῶζε μὴ τολμαῖν σοι  
 πρὸς δούειν, ἐνδοκιμοῦντων τότε τῶν πόδ' ἑπλάτωννα  
 καὶ ἀρίσιππον. ἐμμεῖδ' οὖν δὲ ἀκροασεῖς ποιεῖσθαι.  
 ἔτα συγγράφειν λόγους διηγητικούς ταῖς ἀσκησι-  
 μένοις. διὸ καὶ ἔρ τιμωνα εἰπεῖν ἐπ' αὐτῷ. ἢ τ' αἰ-  
 σχίνου οὐκ ἀπειθὲς γράφαι. φασὶ δ' αὐτῷ λέγειν  
 σωκράτη, ἐπειδὴ πόρ ὑπὲρ ἑσθ' ἔσθ' πρὸς πρὸς παρ'  
 ἑαυτοῦ δ' ἀνείρεσθαι τῇ σιτίῳ ὑφαιρουῦντα. τού-  
 τ' οὖν ὁμιλόγους καὶ ἀρίσιππον ἔσθ' ὡς τούτων.  
 ἐν τοῦ μεγάρους ἀναγινώσκοντες αὐτὸ φασὶ σικω-  
 ραῖν εἰπύοντα, πόρ σοι λησὰ ταῦτα. φησὶ δὲ πρὸς  
 καὶ τὸ μνηστῆρ' ἐν τῷ πρῶτῳ τῇ πόδ' διονύ-  
 σιον ἄχρη τῆς ἐκπτώσεως συμβιῶναι αὐτῷ τῷ τυ-  
 ράννῳ. καὶ ἔως τῆς δίκης εἰς συρακούσας κατὰ  
 δού, λέγων εἶναι (ὡς αὐτῷ κατέκρινον ἔρ κωμωδία  
 πρὸς. φέρεται δὲ καὶ ὑπὸ σολῆ πρὸς διονύσιον αἰσχί-  
 νου. ὡς δὲ καὶ ἐν τῇς ἐκδοτικαῖς ἱερῶς γεγενημέ-  
 σιν, ὡς δὲ ἄλλοι ἐν τῇ ἀκροατικῇ τὸ πατρὸς φαί-  
 ναν τὸ στρατηγόν, ἔδ' ὡς μάλισσά μιμεῖται σοφ-  
 γίαν ἔρ λεοντίνου. καὶ λυσίας δὲ κατ' αὐτὸ γέγρα-  
 φε λόγον πόδ' συνοφαντίας ὑπὲρ γράφας. ἔδ' ὡς δὲ ἄλλοι  
 ὅτι καὶ ἐκδοτικὸς τις ὡς γινώσκοντες δὲ αὐτὸ φέρεται  
 εἰς, ἀριστοτέλης ὁ μὲν ὡς ὑπὸ κληθείς. πάντ' ἔρ μὲν γὰρ



τῶ σωκρατικῶν δ' αὖτε λόγων παναίτιον ἀληθεὺς εἶναι  
 δοκεῖ τοῖς πλάτωνι, ξενοφῶντι, ἀντιοχίνῳ, αἰ-  
 σχίνῳ. δισώζει δὲ ποῦ τῶ φαίδωνι καὶ ἐν κλεί-  
 δῳ. τοῖς δὲ ἄλλοις ἀναιρεῖ πάντας. γέγονασι δ' αἰ-  
 σχίνοι οὕτω. πρῶτον αὐτὸς ἔτι. δεύτερον δὲ οἱ  
 τὰς τέχνας γηγραφῶς τὰς ῥητρεϊκὰς. τρίτον ὁ ῥή-  
 τωρ ὁ καὶ δημοσθένει. τέταρτον ἀρκὰς μαθητῆς  
 ἰσοκράτους. πέμπτον ὁ μυτιλλωαῖος ὅν καὶ ῥητρε-  
 ρομαλσιγα ἐνέχλου. ἕκτον νεαπελίτης φιλόσοφος  
 ἀρχαὶ μαθητὴς μελανδίδου τοῦ ῥοδίου μαθητῆς καὶ παι-  
 διῆς. ἑβδόμην μιλῆσις πελιντικὸς συγγραφεὺς.  
 ὄγδον ἀνδριανopolitanus.

## ΑΡΙΣΤΙΠΠΟΣ

Ἀρίστιππον ὃ μὲν γένετο ἐν κυρηναῖον, ἀπο-  
 γμῆν δὲ ἀθλῶαζε καὶ ἀφ' οὗ φησὶν αἰσχίνης  
 καὶ κλείων σωκρατῆος. ἔτι σοφιστεύσας ὡς φησὶ  
 φανίας ὁ ποδπατητικὸς οἰκιστὴς, πρῶτον τῶ σω-  
 κρατικῶν μετὰ τὸ εἰσεπλάξασθαι καὶ ἀπέσειλε χρήμα-  
 τα ἑρῶ διδασκάλῳ. καὶ πρὶν πέμψας αὐτῷ μὲν  
 εἰρησὶ, παλινδρόμῳ ἔλαβεν εἰρήναι σωκράτους  
 ὃ δαιμονίον αὐτῷ μὴ ὑπὸ τρεῖς μισθοῖς ὀφείλει  
 ὑπὸ τῷ τῷ. ξενοφῶν τε εἶχε πρὸς αὐτὸν δυομνῶς.  
 διὸ καὶ τὸν καὶ τὸν ἡδονῆς λόγον σωκρατῆος καὶ ἀρι-  
 στίππου ποδπατητικῶν. ὃ μὲν ἀλλὰ τὸ θεόδωρον ἐν τῷ  
 ποδπατητικῶν ἐνέχλου αὐτὸν, καὶ πλάτων ἐν τῷ  
 ποδπατητικῶν, ὡς ἐν ἄλλοις εἰρησάμεν. ἐν δὲ ἰσχυ-  
 ρὸς

ἡ δὲ ἐν τῷ τῷ  
 καὶ τῷ

νος ἀρμόσκειται καὶ τῷ πω καὶ χρόνῳ καὶ προσώ-  
 πῳ καὶ πᾶσαι πόρισασι ἀρμονίως ὑποκρίνασθαι.  
 διὸ καὶ παρὰ διονυσίῳ τῶν ἄλλων ἐνδοκίμει μάλ-  
 λον αἰετὸν προσπιδόν ἐν διαπθέμενῳ. ἀπὲλαν-  
 βε μὲν γὰρ ἡδονῆς τῶν παρόντων. ἔκ ἐβήρα δὲ τῶν  
 νῦν τῶν ἀπέλανσι τῶν παρόντων. ὅθεν καὶ διογέ-  
 νης βασιλικὸν κῦμα ἔλεγεν αὐτόν. ὁ δὲ τίμῳ παρὲν  
 φαγῆν ὡς θρωπτόμηνον οὐ τωσίως εἰπὼν, οἷα τ' ἀρ-  
 σίπτει τρυφὸς φύσις ἀμφαφύωνται. ἡ δὲ δὴ. ἔδον  
 φασὶν ἥ τε κελεύει πόρδιν πρητηκοντα δραχ-  
 μῶν ἐκινθῶναι. ἀπασαμένης δὲ πνῦν, σὺ δ' ἔκ ἀν-  
 ἔπην ὁβολοῦ ἔδον ἐπείω; ὡν δὲ σάνται δὲ, ροσὺ-  
 γην ἔφη ἐμοὶ δύνανται αἱ πρητηκοντα δραχμαί.  
 διονυσίῳ δὲ ἥ τε τειῶν ἐταίρων ἔσῳρ μίαν ἐκλέξα-  
 σθαι κελεύσανται, τὰς τρεῖς ἀπὲν γαγῆν εἰπὼν, ἔ-  
 δε ἔδ' ἀπὲν δι σκυλίε γκε μίαν προκρίναι. ἀπαγα-  
 γὼν μὲν γὰρ φασὶν αὐτὰς ἀχει το θυρῶν ἀπὲν  
 σην. οὕτως μὲν καὶ ἐλίσθαι καὶ καταφρονῆσαι πλὺς.  
 διὸ. ἥ τε σκαλῶνα, οἱ δὲ, πλῶτωνα πρὸς αὐτὸν εἰ-  
 πῆν, σοὶ μόνῳ δίδεται καὶ χλαμύδα φορεῖν καὶ  
 ἔσθαι. διονυσίου δὲ προσηύσανται αὐτῷ ἐνέ-  
 οχτρο. μεμψαμένης δὲ ἔναι, ἔτα οἱ μὲν ἀλιεῖς ἔπην  
 ὑπομνήσσει ἔσθαι πῇ θαλάτῃ ἵνα κωβίον θηρά-  
 σωσι. ἐγὼ δὲ μὴ ἀνάχωμαι κράμμα π ἔσθαι  
 ἵνα βλέπον λαβῶ; παρόντα ἥ τε αὐτὸν λάχονα  
 πλῶν διογένης ἔσθαι. καὶ φησὶν, εἰ ταῦτα ἔμα-

πάντων / ἡ



θάδε προσφθόρεται, ἔκ ἂν πυραίνων αὐλὰς ἑβδού-  
 ακφθέματα πούδω. ὁ δὲ καὶ σὺ ἔπειν εἶπὸρ ἥδεις ἀνθρώποις ὁμο-  
 ῶτοί. λέειν, ἔκ ἂν λαλῶνα ἔπλωδω. ἐρωτηθεὶς τί αὐτῷ  
 ποιεῖσθαι ἐκ φιλοσοφίας, ἔφη. ὅτι δύναιτο πᾶσι  
 θάρρους ὁμιλεῖν. ὁνειδίζοντων πρὶ ὡδὶ τῷ πρὶ  
 λυτελῶς ζῆν, εἰ τοῦτο ἔφη φαῦλόν ἐστι ἔκ ἂν ἐν ταῖς  
 τῶν βεῶν ἰορταῖς ἐγίνετο. ἐρωτηθεὶς πρὶ τί πλέον ἐ-  
 χουσι οἱ φιλόσοφοι ἔφη. ἐὰν πάντες οἱ νόμοι ἀναιρε-  
 θῶσι ὁμοίως βιώσονται. ἐρωτηθεὶς ὑπὸ διονυσίου ὅτι  
 τί οἱ μὲν φιλόσοφοι ὡδὶ τὰς τῶν πλουσίων θύρας ἐ-  
 χονται, οἱ δὲ πλούσιοι ὡδὶ τὰς τῶν φιλοσόφων ἐκεί-  
 νη, ἔφη. ὅτι οἱ μὲν, ἴσασιν ὧν δύνανται. οἱ δὲ, ἔκ ἴσασιν.  
 ὁνειδίζοντων πρὶ ὡδὶ τῷ πρὶ λυτελῶς ζῆν ὑπὸ  
 πλάτωνος ἔφη. ἄρα φαίνεται σοι διονυσίου ἄγα-  
 θός; τοῦ δὲ ὁμολογήσαντος, καὶ μὲν ἔφη ἤ ἐμοῦ πρὶ  
 λυτελέσθου. ὥς τ' ἐδὲν κωλύει καὶ πρὶ λυτελῶς ζῆν  
 καλῶς ζῆν. ἐρωτηθεὶς τί νη διαφύσσιν οἱ πεπαίδου  
 μέντοι τῶν ἀπαίδου τῶν ἔφη, ὡς πῶς οἱ δεδασμασμένοι  
 ἵπποι τῶν ἀδασμαστων. εἰσὶν πρὶ εἰς ἰταίρας οἰκί-  
 ας καὶ τῶν (ὡς αὐτῷ) μισθίων πινὸς ἐρυθείασιν  
 τῷ, ἔκ ὅτι εἰσελθεῖν ἔφη χαλεπὸν ἀλλὰ ὅτι μὴ δύνα-  
 σθαι ἐξελθεῖν. ἀνιγμά πινος αὐτῷ προτείναντος  
 καὶ εἰπὺντος λύσον, τί ὡς μάταιε ἔφη λύσαι θέλεις  
 ὁ καὶ δεδεμένον ἡμῖν πρᾶγμα παρῆχει; ἄμει-  
 νορ ἔφη ἐπαίτιον ἢ ἀπαίδου γρὶ εἶναι. οἱ μὲν, γὰρ χερ-  
 μά τῶν, οἱ δὲ ἀνθρωπισμοῦ δύνανται. λυδουμένους  
 πρὶ

ἥτις ἀνεχώρει. τοὶ δ' ὠπλίσθηκον· οἱ ἐπύοντο· τί  
 φύγεις, ὅτι φησὶ τοὺς μὲν κακῶς λέγειν, σύ τὴν δόξαν  
 οἶον ἔχεις. τοὶ δὲ μὴ ἀκούειν ἐγώ. οἱ ἐπύοντο· πυνός  
 ὡς αἰεὶ τοῦ φιλοσόφου βλέπει παρὰ τὰς τῶν πλου-  
 σίων θύρας, καὶ γὰρ καὶ οἱ ἰατροὶ φησὶ παρὰ τὰς τῶν  
 νοσηνῶν. ἀλλ' ὅτι ἴδεν τις ἐλπίς αὐτῶν νοσεῖν ἢ ἰα-  
 τρεύειν. εἰς κρήνην αὐτῶν πλέοντι ποτὶ καὶ χει-  
 μαρομένη σωίβη ταραχθῆναι. πρὸς τὸν ἐπύοντα  
 ἡμεῖς μὲν οἱ ἰδιῶται ὃ δεδιδίχαμεν, ὑμεῖς δὲ οἱ φιλό-  
 σοφοι δειλιάτε; ὃ γὰρ πόδι ὁμοίας ἔφη· τυχεῖς ἀγω-  
 νιστῶν ἦναι. σεμνωμένον πυνός ὡς πολυμαθία  
 ἔφη. ὡς πόρ' ὅτι τὰ πλείστα ὁδοῦντες καὶ γυμνα-  
 ζόμενοι ὑγιαίνουσι μᾶλλον τῶν τὰ δέοντα περισφύρο-  
 μένων, οὕτως ὅτι πολλὰ, ἀλλ' οἱ χεῖσιμα ἀναγινώ-  
 σκοντες εἰσὶ σωδ' αἰοί. πρὸς τὸν ὑπὸ αὐτῷ λογι-  
 ζόμενον δίκην ἐπύοντα ὅτι νικήσαντα, ἔπειτα φάσκον-  
 τα πρὸς αὐτὸν, τί σε ὥνησε σωκράτης; ἔφη, ὅτι, τοῦ λό-  
 γου ὅς ἐπας ὑπὸ ἐμῷ, ἀληθεῖς εἶναι. τὰ αἰετα ὥς  
 τίθετο τῇ θυγατρὶ ἀρήτη, σιωπῶν αὐτῷ ὑπὸ τοῖς  
 πτερυγίοις τοῦ πλείοντος εἶναι. ἐρωτηθεὶς ὑπὸ πυνό· τί  
 αὐτοὶ ὁ ὕψος ἀμείνων εἶναι παιδισθεῖς, καὶ εἰ μηδὲν  
 ἄλλο ἔπην, ὅτι τοῦ θεοῦ ὅτι θεοῦ τρω ὃ καθεδύσεται λί-  
 θος ὡς λίθω. σωισάντος πυνός αὐτῶν ὕψος, ἔτρησε  
 πντακροσίας φραχμας. τοῦ δ' ἐπύοντος τῶν  
 του δῶμααι ἀνδραποδὸν ὥκησασθαι, περὶ ἔφη,  
 καὶ ἔξεις δύο. ἀργύριον εἶπε παρὰ τῶν γνωρίμων  
 λαμβά



λαμβάνειν ἔχ' ἵνα αὐτὸς χεῶν, ἀλλ' ἵνα ἐκείνοι εἰ-  
 δέων εἰς τῖνα δέῃ χεῖσθαι τῆς ἀργυρείου. οὐκ ἐδιδό-  
 μην ὅτι ὅπ' δίκῃ ἔχω ἐμὸν ὥστε ῥήτρα καὶ  
 γὰρ ἔφη ὅταν δέῃ πνοὴν ἔχω μάγειρον μολοῦμαι.  
 ἀναγναζόμεν ὅτι ἄπο διονυσίου εἰπὲν τί τῷ  
 ἐκ φιλοσοφίας, γελοῖον ἔφη, εἰ ὃ λέγει μὲν παρ' ἐμῷ  
 πτωδάνῃ. ὃ δὲ τότε δέῃ λέγει, σὺ με διδασκεις.  
 ὡς τὰ τῶ δὴ ἀγανακτήσαντα τὸν διονυσίον, ἔοχα-  
 ρον αὐτὸν κατεκλίνειν. καὶ τὸν, ἐνδοξότοτον φαῖναι  
 τὸν τόπον ὑβέλυσας πρῶτον. αὐτοῦ τὸ πνός ὡς  
 ἔφ' ἐκλυμβῶν ἐκ αὐτοῦ ἐπὶ τὸν δελφῖν ἔρ-  
 γοις ἀλαζονεύομεν; ἐρωτηθεὶς ὅτι τῖνι διαφέρει  
 ὁ σοφὸς τοῦ μὴ σοφοῦ ἔφη. εἰς ἀγνώτας αὐτὸν δύο γυ-  
 μνασιὶ ἀπείρου καὶ εἰς αὐτοῦ αὐτοῦ τὸ πνός ὡς  
 πρὸς πίνειν καὶ μὴ μεθύσκεισθαι, ἔδωκε καὶ ἡμίονον  
 φησί. πρὸς τὸν αὐτὸν ὅτι ἱταίρα συνοικεῖ, ἄρα  
 γὰρ εἰπὲν μή τι διενέγκαι οἰκίαν λαβεῖν ἐν ἧ ἡ πρὸς  
 ὅτι ὥκησεν ἢ μὴ εἰς; εἰπὲν δὲ ὅτι. τί δὲ, πλεῖ-  
 σται ἐν νῆϊ, ἢ μυριοὶ ὅτι ἐν ἐπιδόσας ἢ μὴ εἰς; ὅτι  
 μῶς. ὅτι ἄρα γυναικὶ ἔφη συνοικεῖν ἢ πρὸς κί-  
 χλωται ἢ μὴ εἰς. πρὸς τὸν αὐτὸν ὅτι σωκρά-  
 τος μαθητὴς ὢν ἀργύριον λαμβάνει, καὶ μάλα  
 εἶπε. καὶ γὰρ σωκράτης πεμπόν τῷ αὐτῷ πνός καὶ  
 σίτην ὀλίγα λαμβάνοντα τὰ λοιπὰ ἀρπίζειν. εἰ-  
 χε γὰρ ταμίας αὐτὸν πρῶτον ἀθλωαίωρ. ἐγὼ δὲ ἐντυ-  
 χίσσω ἀργυρῶν τῶν ἐχέων καὶ λαΐδῃ τῇ ἱταίρᾳ κα-  
 δᾶ

δά φησι καὶ σωτίων ἢ δουτοῖα τῶν δολοχῶν.  
 πρὸς οὗτο μεμφομένην ἔφη, ἔχω λαΐδα, ἀλλ' ἔκ  
 ἔχομαι. ἐπεὶ ῥ' κρατεῖν καὶ μὴ ἡτῶσθαι ἡδυνῶν ἄρι  
 σον, ὃ ῥ' μὴ χρεῖσθαι. πρὸς ῥ' οὐκ εἰδίσαντα αὐτῶν πρ  
 λυτελῇ ὀφυνίαν ἔφη. σὺ δ' ἔκ αὖ τειωβόλου ταῦτ'  
 ἐπείω; ὁμολογήσαντο. δὲ, ἔκ ἐτι γίνωσκ' ἔφη. οὐκ ἔστι  
 νῦν ἐγὼ, ἀλλὰ σὺ οὐκ ἔστις. σίμω πρὶ τῷ διονυ  
 σίῳ ταμίῳ πρλυτελῆς οἶκον αὐτῶν καὶ λιθοστρώτους  
 δεικνύω. ἡ δὲ φρενὴ καὶ ὀλεθρῶν, ἀναχρεμύτα  
 μιν, προσέειπε τῇ ὄφει. τῷ δ' ἀγανακτήσαντι  
 τῷ, ἔκ ἐχον εἶπε τότ' ἡντιθέοτόρο. πρὸς χα  
 ρῶν δ' αὖ ἐπὶ ταῖς, οἱ δὲ, πρὸς φαίδωνα, τίς ὁ μεμνη  
 σμένη; ἐγὼ φησὶν ὁ κληροδοσίμων, καὶ μοῦ κληροδο  
 μονέσθω. ὁ πόρρω βασιλεύς. ἀλλ' ὅρα μὴ ὡς ἔ  
 δερ τῶν ἄλλων ζῶν παρὰ ἑσέ. τί ἐλαττοῦται, ἔν  
 τως ἔδ' αὖ ἀνθρώπων. κληροδοσίμων δ' ἀπὸ τῶν ῥ' οἱ  
 κίναιδαι, οἱ πινδὸν κληροδοσίμων ἡμῶν ἀλειμμα δολοχῶν  
 σιν. ἐρωτῶ μιν, πῶς ἀπὸ τῶν σωκράτης, ἔφη, ὡς  
 αὖ ἐγὼ ἐν ξαίμιν. πρλυξέντ' ἡντιθέοτόρο τὸ σφαιροῦ εἰσελ  
 θόντ' πρὸς αὐτῶν ἐλθεσάμεντος γυναικὸς τὴν καὶ  
 πρλυτελῇ ὀφυνίαν, ἐπειτα αἰτιασάμεντος, μικρὸν δολο  
 χῶν, δυνάσται ἔφη καὶ σὺ μεθ' ἡμῶν σήμερον γέν  
 ῃσθαι; τῷ δ' ἡντιθέοτόρο, τί οὖν ἔφη ἐμὲ μὲν. ἰοίησθ  
 γὰρ ὃ τῶν ὀφυνίαν ἀλλὰ ῥ' ἀνάλωμα αἰτιάσθαι. τῷ  
 θεοῖσιν τῷ ὁδῶ βασιλεύοντ' ἀργύριον καὶ βα  
 ρυνομένην, ὡς φασὶν οἱ πόδες ῥ' βίωνα ἢ ταῖς δολοχ  
 ν



βαῖς, ἀπ' ἧς ἔφη τὸ πλείον, καὶ ὅσῃ δυνάμει βαλσα  
 "ρε. πλείων ἥτε ἐπεὶ τὸ σιγάφθ' ἔγνω πειρατικόν,  
 λαβὼν τὸ χρυσίον ἠείθμει. ἔπειτα εἰς θάλατταν, ὥς  
 μὴ θέλων παραηχάτε βαλε, καὶ δὴ θῆναι ἀνώμωξεν. οἱ  
 δὲ, καὶ ἐπειπεῖν φασὶν αὐτόν. ὥς ἄμεινον ταῦτα  
 ἢ τῷ ἀρισιππῳ ἢ ὅττι ταῦτα ἀρισιππον ἀρελίσσεται.  
 διονυσίῳ ἥτε ἱερομνῆς ὡδ' ἢ ἡχοι ἔφη. ὡδ' ἔφ' ἔμελλεν  
 δώσειν ὧν ἔχει, καὶ μεταλήψεται ὧν μὴ ἔχει.  
 "γῆνοι δ' οὕτως ἀρεκρίνασθαι. ὁρτε μὲν σοφίας ἐδεόμην  
 μὲν ἡχορ παρὰ τὸν σωκράτη. νῦν δὲ χερμαῖων  
 δεόμενθ', παρὰ σὲ ἡκω. ἤκατε γίνωσκε τῷ ἀνθρώπῳ  
 πῶς, ὥς τὰ σκόλη μὲν ἐν ταῖς ἀφορασίαις σκληρύνει  
 τῶν δὲ βίβης εἰκὴ δοκιμαζόντων. οἱ δὲ, ὅττι διονυ  
 γνῆς φασί. καὶ ἥτε παρὰ τὸν κελύσαντθ'  
 διονυσίου ἔμελλεν ἐν περὶ φρεσὶ δὴ θῆναι ὀρχήσεσθαι,  
 τὸν μὲν πλάτωνα μὴ προσέειπεν, ἐκ αὐτοῦ δυν  
 ναίμην θῆλιν ἐνδύσθαι σοφίῳ. τὸν δ' ἀρισιππον  
 λαβόντα, καὶ μέλλοντα ὀρχήσεσθαι ἐνδόχως εἰ  
 πείρ. καὶ γὰρ ἐν βακχολύμασι τὸ ἥγε σώφρων, ὅ  
 σφαιδρεῖται. δεόμενθ' ἥτε πῶς φίλου διονυ  
 σίου, καὶ μὴ ὑπὸ τυγχάνων, εἰς πέρας αὐτοῦ ἐπιδε.  
 πρὸς οὗ τὸν ὑποκώφοντα, ἐκ ἐγὼ φησιν αἰπθ'  
 ἀλλὰ διονυσίῳ ὅττι τὸν πρὸς τὰς ἀκροὰς ἔχωρ. ὅττι  
 τρέβων ἐν ἀσία καὶ λιφθεῖς ὑπὸ ἀρταγόρῳ τοῖ σα  
 τραπῳ, πρὸς τὸν εἰπέντα καὶ ὡς δὲ διαρρέεις; ἥτε γὰρ  
 ἐπὶ τῷ μάλταε διαρρέειμι αὐτὸν μάλλον ἢ νῦν ὅτε  
 μέλλω

ὡς ἐν τῷ  
 οὐκ ἐστίν

τῶν ποδῶν ἡφ' αὐτοῦ καὶ  
 ἐπὶ

μέλλω ἀρταφόρην διαλέξασθαι. σὺ τὴν ἐγκυκλίωρ  
 παιδου μάτῃν μεροχόντας, φιλοστοφίας δὲ ἀκλει-  
 φθεντας, ὁμοίους ἔλεγον εἶναι τοὺς πτωχολόπης μνη-  
 σῆσι. καὶ γὰρ ἐκείνου, μελανθῶ μὲν καὶ πελυδῶσαν  
 καὶ τὰς ἄλλας βορραπαίνας ἔχει, πάντα δὲ μάλορ  
 ἢ αὐτῷ τῷ δέσποιναν δυνάσας γῆμαι. τὸ δ' ὁμοιορ  
 καὶ ἀρίστωρ. ἄρ' ὁ δυναστὴς κραταβαίντα εἰς ἄδην σὺ  
 μὲν νεκρὸς πάντας σχεδὸν ἰωρακίαι καὶ συτυτυ-  
 χηκίαι. τῷ δὲ βασιλίῳσαν αὐτῷ μήτε θεᾶσθαι. ὁ  
 δ' ἐν ἀρίσι πποῖρω τῆς τίνα δῶκεν ἂν δέῃ σὺ κα-  
 λους παῖδας μαυθάνειν, ἔφη. οἷς αὐτῶν γυμνασίου  
 χρεῖσονται. πρὸς ἄρ' εἰπόντα ἔναι αἰτία, ὥς ἀρ' σωκρά-  
 τος πρὸς Διονύσιον ἔλθοι. ἀλλὰ πρὸς σωκράτῳ εἶ-  
 πεν ἦλθον παιδείας διόμνυθαι, πρὸς δὲ Διονύσιον  
 παιδείας. δὲ ὁμιλίας αὐτῶν χρηματισαμένω φησὶ σω-  
 κράτης, πῶθ' ἔσσι τοσαῦτα; καὶ ὁ δὲ, ὅθ' ἔσσι τὰ ὀλίγα.  
 ἔταίρας εἰπύσης πρὸς αὐτῶν, ἐκ σοῦ κύω, ὅ μάλλορ  
 ἔφη γινώσκεις ἢ εἰ δὲ ὁλοχοίνωρ ἰοῦσα ἔφασκεν  
 ὑπὸ τοῦδε νεκρῶν τῆσθαι. ἠτιώσατό τις αὐτὸν τὸν  
 υἱὸν ἀπορρίπτωτα ὥς πόρ' οὐκ ἔξ αὐτοῦ γέγονοι-  
 τα. καὶ ὁ φλέγμα φησὶ καὶ σὺ φθίρας δὲ ἡμῶν  
 ἴσμεν γινώσκουσιν. ἀλλ' ἀχρεῖα ὄντα, ὥς πρῶτα  
 τῶν εἰπύμεν. ἐκδεξαμένθ' ὁ ἀργυρίου παρὰ Διο-  
 νυσίου, πλάτωνθ' ἀφαιρῶν βιβλίον, πρὸς ἄρ' αἰ-  
 πασάμενον, ἐγὼ μὲν γὰρ εἶπον ἀργυρίων, πλάτῃν  
 δὲ βιβλίων δῶκεν ἔνδεής. πρὸς τὸν εἰπόντα τίθ'



ἐνεκα ἐλέγχεται παρὰ διονυσίῳ, ὃ ἐνεκα φησὶν οἱ  
ἄλλοι ἐλέγχουσι. ἥτοι διονύσιον ἀργύριον. καὶ ὅς,  
ἀλλὰ μὴ ἔφησεν ὅτι ἀπρέσειν ἔρ σοφόν. ὃ δ' ἔπολα  
βῶν, δὲς εἶπε, καὶ ποῦ τὰ τὰ ζητῶμεν. δόντ' οὖν δέ,  
ὁρᾷς ἔφη ὅτι ὅτι ὑπέρηκα; εἰπὺντ' οὖν πρὸς αὐτὸν  
διονυσίου.

ὅς τις γὰρ ὡς τύραννον ἐμπροσθέντα,  
κείν' οὖν διδύλους καὶ ἐλδύθου μολῇ. ἔπολα βῶν.  
ὅτι ἐσι διδύλου καὶ ἐλδύθου μολῇ.

εἴτερ διονυσίου φησὶν ἐν τῷ ποῦ βίων φιλοσόφου. ἄλλοι  
γὰρ εἰς πλάτωνα ἀναφορὰν. ὁρῶντ' οὖν πρὸς  
αἰσχίνου, μετ' οὖν πρὸς, ὃ δὲ μαχθισόμεθα; ὃ παυσό  
μεθα εἶπε ληρουῶντος; ἀλλὰ ἀναμνέεις, ἔως αὖ τις ἢ  
μᾶς ὡδὲ τῆς κύλικ' οὖνου φλυαῶν δὲ ἀλέξῃ; καὶ ὅς αὖ  
σμεγνῶς ἔφη. μνημόνους τίνους, ὃ ἀρίσιππος πρὸτε  
ρ' οὖν πρὸς διδύλου ὡς προσήλθον. καὶ ὃ αἰσχίνης ἐν  
γὰρ τῷ ἤσαν ἐν λόγῳ εἶπας. εἰπὺντ' οὖν πρὸς μου βελ  
τίω ἔπαρχεις. ἐγὼ μὲν γὰρ ἔχθρας, σὺ δὲ φιλίας  
ἀρχεις. καὶ ταῦτα μὲν εἰς αὐτὸν ἀναφέρεται. γὰρ  
νασι δ' ἀρίσιπποι τέσσαρες. ποῦ δ' οὖν τὸ λόγ' οὖν. καὶ  
διδύλου ὃ τὰ ποῦ ἀρχαδίας γεγραφώς. τρεῖς  
ὃ μητροδιδάκτ' οὖν, θυγατρίδους τὸ πρῶτον. τέταρ  
τ' οὖν, ὃ ἐκ τῇ νεωτόρας ἀρχαδίας. τὸ δὲ κυρτωαῖ  
κ' οὖν φιλοσόφου φέρεται βιβλία, τρεῖς μὲν ἰσορίας τῶν  
κ' οὖν λιβύλου, ἀπεσαλμγία παρὰ διονυσίῳ. ἐν δὲ ἐν τῷ  
διαλέγοι πέντε καὶ εἰκοσι. οἱ μὲν, ἀττίδι. οἱ δὲ, δῶν  
εἰς

ἀρίσιππος  
βιβλία

εἶδ' ἀλαλκίτω γεγραμμένοι οἶδε. ἀφτάβαζΘ'.  
 πρὸς σὺ ναυαγός. πρὸς σὺ φυγάδας. πρὸς πτω  
 χόν. πρὸς λαΐδα. πρὸς πῶρον. πρὸς λαΐδα ποῦ τῷ  
 κατόπτρῳ. ἐρμείας. ἐνύπνιον. πρὸς ἤρ' ὡδ' ᾗ κύλι  
 κΘ'. φιλόμηλΘ'. πρὸς σὺ οἰκείῃς. πρὸς σὺ ὡν  
 πμῶντας ὅτι κέκτηται οἶνον παλαιόν καὶ ἰταίρας.  
 πρὸς σὺ ὡν πμῶντας ὅτι πλυτελῶς ὀφωνεῖ. ὡν  
 λη πρὸς ἀρήτιω τῷ θυγατρός. πρὸς ἤρ' εἰς ὀλυμ  
 πίαν γυμναζοῦται ἑαυτόν. ἐρώτησις. ἄλλη ἐρώτησις.  
 χρεία πρὸς διούσιορ. ἄλλη ὡδ' ᾗ εἰκόνΘ'. ἄλλη  
 ὡδ' ᾗ διουσίς θυγατρός. πρὸς ἤρ' οἰόμενον ἀπμά  
 ρεσθαι. πρὸς ἤρ' συμβουλόμεν ὡν χειροῦντα. ἐνίοι  
 δὲ καὶ σλατειβῶν αὐτὸν φασίμ' ἐξ γεγραφέναι. οἶδ'  
 ὅδ' ὅλως γραφῆναι. ὡν ὅδ' καὶ σωσικράτης ὁ ῥόδιΘ'.  
 καὶ δὲ σωτίωνα ἐν διστόρῳ, καὶ παυαίτορ, ἐσιν αὐ  
 τῷ συγγράμματα τάδε. ποῦ παιδείας. ποῦ ἀρε  
 ᾗ. πρὸς τρεπῆρος. ἀφτάβαζΘ'. ναυαγοί. φυγάδες.  
 σλατειβῶν ἐξ. χρεῶν τρία. πρὸς λαΐδα, πρὸς πῶ  
 ρον, πρὸς σωκράτῳ. ποῦ τύχης. τέλΘ' δ' ἀπέφαι  
 νε τῷ λείαν κίνησιρ εἰς αἰδοῖσιρ ἀναδιδόμενῳ.  
 Ἡμεῖς δ' ἐπειδὴ ἤρ' βίον ἀνεγράψαμεν αὐτό, φόρε  
 νῶν δέλωμεν σὺ ἀπ' αὐτοῦ κυβερναῖκός. οἱ πινδ  
 ἑαυτοῦ, οἱ μὲν ἡγεσιανοὺς, οἱ δὲ ἀννικῶνεις, οἱ δὲ θεο  
 δωρεῖς προσηνόμεζον. ὅ μὲν ἀλλὰ καὶ σὺ ἀπὸ  
 φαίδωνΘ' ὡν σὺ κορυφαυτάτῳ ἐρετικόν ἐν  
 χερσὶν οὕτως. ἀρσίππορ δίκηρουσιν ἢ θυγάτης ἀρήτη.





φεύγειν, ὡς τῶν ἐναντίων αὐτῇ ἀλγυηδόνων. εἶναι δὲ  
 τῶν ἡδονῶν ἀγαθόν, καὶ ἀπὸ τῶν ἀσχημοτάτων γέ-  
 νηται. καὶ δὲ φησὶν ἰππόβοτος ἐν τῷ πρὸς τῶν αἰρέ-  
 σεων. εἰ γὰρ καὶ ἡ πρᾶξις ἀρετὴ εἴη, ἀλλ' οὐκ ἡ ἡ-  
 δονὴ δι' αὐτὴν αἰρετὴ καὶ ἀγαθόν. ἡ δὲ τοῖς ἀλγυῶν  
 τῷ ὑποδείκνυται, ὡς εἴρηται παρ' ὑπὸ κούρω, δοκεῖ  
 αὐτοῖς μὴ εἶναι ἡδονή. εἴδῃ ἡ ἀνδρονία ἀλγυηδόνων. ἐν  
 κινήσει γὰρ εἶναι ἀμφοτέρω, μὴ ἔσσης τῆς ἀρετῆς  
 ἢ τῆς ἀνδρονίας κινήσεως. ἐπεὶ ἡ ἀπονία οἶονε καὶ  
 θούλουται εἰς κατὰσας. δυνάσθαι φησὶ καὶ  
 τῶν ἡδονῶν τινὰς μὴ αἰρεῖσθαι κατὰ δόξαν. οὐ  
 ἔσσης μὲν γὰρ τὰς ψυχικὰς ἡδονὰς καὶ ἀλγυηδόν-  
 νας ὑπὸ σωματικῶν ἡδονῶν καὶ ἀλγυηδόνων γίνε-  
 σθαι. καὶ γὰρ ὑπὸ φιλή τῆς πατρίδος ἐννομερία ἢ  
 πρὸς τῇ ἰδίᾳ χαρὰν ἐγγίνεσθαι. ἀλλὰ μὲν εἴδῃ καὶ  
 τὰ μνήμῃ τῶν ἀγαθῶν ἢ προσδοκίαν ἡδονῶν φη-  
 σιν ἀποτελεῖσθαι, ὅ πρὸς ἡρώδην ὑπὸ κούρω. ἐκλύει-  
 ται γὰρ τῷ χρόνῳ τὸ τῆς ψυχῆς κίνημα. λέγουσι  
 δὲ μηδὲ κατὰ φιλή τῶν ὀρεσίων ἢ τῶν ἀκρίων γί-  
 νεσθαι ἡδονὰς. τῶν γούν μιμουμένων θρωόντων ἢ  
 δέως ἀκρίων. τῶν δὲ κατὰ ἀλήθειαν, ἀκρίων. μέ-  
 ντας τὲ κατὰσας ὠνόμαζον ἀκρίων καὶ ἀπο-  
 νίαν. πολὺ μὲν τοι τῶν ψυχικῶν τὰς σωματικὰς  
 ἀμείνουν εἶναι. καὶ τὰς ὀχλήσεις χείρουν τὰς σω-  
 ματικὰς. ὅθεν καὶ ταύτας κολλᾶσθαι μᾶλλον  
 οὐκ ἀμαρτανόοντας. χαλεπώτερον γὰρ τὸ πνεῦμα  
 οἰκεῖ



οἰκειότορον δὲ ὃ ἡδεσθαι ὑπελάμβανον. ἤθελον καὶ  
 πλείονα οἰκονομίαν ποῦν δατόρομ ἐπριουῶν. διὸ καὶ  
 κατὰ ταῦτῳ αἶρεσι δόσις ἐπὶ ἡδονῆς, τὰ πρηντικὰ ἤνι  
 ὡν ἡδονῶν ὀχληρὰ πρηντικὰς ἤνι πρηντικὰς. ὡς δὲ συνη  
 λώταρμ αὐτοῖς φαίνεται ὅτι ἀβροισμὸν τῶν ἡδονῶν,  
 ἐνδαιμονίαν μὴ πριουώτων. ἀφίσκει δ' αὐτοῖς μήτε  
 ὅτι σοφὸν πάντα ἡδέως ζῆν, μήτε πάντα φαῦλον  
 ὑπὸ πρηνος, ἀλλὰ κατὰ τὸ πλείστον. ἀρκεῖ δὲ καὶ κατὰ μί  
 αν τις πρηνίωρυσσιν ἡδέως ἐπαυάγῃ. τὴν φρόνη  
 σιν ἀγαθὸν μὲν εἶναι λίσουσιν. ὃ δὲ ἐαυτῶν δὲ αἶρε  
 τῶν, ἀλλὰ δὲ τὰ δὲ αὐτοῖς ποῦν γινόμενα. ὅτι φαῖλον  
 ἐπὶ χρείας ἐνεχῇ. καὶ γὰρ μὲν σῶματ' ἄνθρωπος  
 αὐτὸν παρὲν ἀπαράζεσθαι. τῶν ἀρετῶν ἡδονῆς καὶ ποῦν  
 ἀφρονος συγίνασθαι. τὴν σωματικὴν ἀσκησιν συμ  
 βάλλεσθαι πρὸς ἀρετῆς ἀνάληψιν. ὅτι σοφὸν μήτε  
 φθονήσειν μήτε ἐξαδύσεσθαι ἢ δεισιδαιμονίσειν.  
 γίνεσθαι γὰρ ταῦτα παρὰ κενὴν δόξαν. λυπώσεσθαι  
 μὲν τι καὶ φοβήσεσθαι. φυσικῶς γὰρ γίνεσθαι. καὶ  
 ὅτι πολλοῦ δὲ πρηντικὸν ἡδονῆς εἶναι, ὃ δὲ αὐτοῖς αἶρε  
 τῶν. τὰ τε πάθη καὶ ταλῆπιά. ἐλεγον οὖν αὐτὰ ὅτι ἀφ  
 ὤν γίνεσθαι. ἀφίσαντ' δὲ ἐπὶ τῶν φυσικῶν δὲ τὴν ἐμ  
 φαυνομνίαν ἀναταλῆψίαν. τῶν δὲ λογικῶν δὲ τὴν  
 ἐν χρεσίαν ἡπλουν. μελέα γὰρ δὲ ἐν ὧ δὲ δὲ τῶν πε  
 ρὶ δὲ ξῶν καὶ κλειτόμαχ' ἐν τῶν πρῶτῳ ποῦν τῶν  
 αἰδέσεωρ, φασὶν αὐτοῖς ἀχρεῖαν ἡγεῖσθαι τὸ, τε φυσ  
 ικὸν μὲν καὶ ὅτι δὲ λεκτικόν. δύνανται γὰρ ἐν λεί  
 γειν

γαρ καὶ δεισιδαιμονίας ἐκὺς εἶναι, ὅτι ἴσμεν πόθεν θανά-  
 τος φόβος ἐκφύγει, τὸ πόθεν ἀγαθῶν ἔσται καὶ κακῶν λόγος  
 ἐκμεμαθηκότα. μηδὲν γὰρ εἶναι φύσει δίκαιον ἢ καλόν  
 ἢ αἰσχρόν. ἀλλὰ νόμῳ καὶ ἔθει. ὁ μὲν γὰρ παρὰ τοῦ αἵματος  
 ἔσθ' ἂν ἄρτην πρᾶξει, ὁ δὲ τὰς ὑπὸ καὶ μελέας ζημίας καὶ  
 δόξας. εἶναι δὲ ἴσμεν σοφόν προνοεῖν τὸ ἀρελείησιν  
 καὶ ἐν φιλοσοφίᾳ καὶ ἐν γινώσκῃ ἄλλοις. φασὶ δὲ καὶ λυ-  
 πείναι ἄλλοι ἄλλοι μαλλόν. καὶ τὰς αἰσθήσεις μὴ  
 πάντες ἀληθεύειν. Οἱ δὲ ἡγεστικῶν λεγόμενοι οἱ ἡγεστικῶι  
 σπουδαῖοι μὲν εἶχον τοῦ αὐτοῦ ἡδονῶν καὶ πόνου. μή-  
 τε δὲ χεῖρ πινά εἶναι, μήτε φιλίαν, μήτε εὐδυσχίαν.  
 ὁ δὲ τὸ μὴ διὰ αὐτὰ ταῦτα αἰρεῖσθαι ἡμᾶς αὐτὰ. ἀλ-  
 λά. ὁ δὲ τὰς χρείας αὐτὰς, ὡς ἀπὸ τῆς μὴδ' ἐκεί-  
 να ὑπαρξέειν. τὴν εὐδαιμονίαν ὅλως ἀδύνατον εἶναι.  
 ὁ μὲν γὰρ σῶμα πολλῶν ἀναπεπληῖσθαι παθημάτων  
 τῶν. τὴν δὲ ψυχὴν συμπαθεῖν τοῦ σώματος καὶ τα-  
 ρατῆας. τὴν δὲ τύχην πολλὰ τῶν κατ' ἐλπίδα καὶ  
 λύειν. ὡς τε ὁ δὲ ταῦτα ἀνύπαρκτον τὴν εὐδαιμονί-  
 αν εἶναι. τὴν τε ζωὴν καὶ ἴσμεν θάνατον αἰρετόν. φύσει  
 τὸ ἔσθ' ἂν ἡδὺ ἢ ἀηδὲς ὑπελαμβανόν. ὁ δὲ παρὰ  
 ἡξισμόν ἢ κέρως, τοῦ μὲν ἡδέσθαι, τοῦ δ' ἀηδέως ἐ-  
 χειρ. πέναν καὶ πλοῦτον πρὸς ἡδονῆς λόγον εἶναι ἔ-  
 σθ' ἂν. μὴ γὰρ ὁ δὲ φρονέων ἡδέσθαι τοῦ πλοῦτος ἢ  
 τοῦ πένετος. δουλείαν ἐπίσης ἐλευθερίᾳ ἀδύνατον  
 πρὸς ἡδονῆς μέτρον, καὶ εὐχρίαν δυσχρίᾳ ὅ-  
 σον ἀδύνατον. καὶ τοῦ μὲν ἀφρονίᾳ τὸ γινώσκον λυσιτελεῖν  
 οὐ εἶναι.



εἶν. τοῦ δὲ φρονίμου ἀδελφοφοροῦ. τὸν τε σοφὸν ἑαυτὸ  
 ἐνεχὰ πάντα πράξειν. ὃ δὲ γὰρ ἡγεῖσθαι τῶν ἄλ-  
 λων ἐπίσης ἄξιον αὐτοῦ. καὶ γὰρ τὰ μέγιστα δοκῶ  
 παρ' αὐτοῦ ἡραπύσθαι, μὴ εἶν' ἀνταξία ὧν αὐτὸς πα-  
 ρείχει. ἀνέρου δὲ καὶ τὰς αἰσθήσεις ὅκ' ἀκρίβεστας  
 τίω ἐπίγνωσιρ. τῶν τ' ἀλόγως φαινομένων πάντα  
 πράττειν. ἔλεον τὰ ἀμαρτήματα συγγνώμης τυγι-  
 χάνειν. ὃ γὰρ ἐκόντα ἀμαρτανύειν, ἄλλω πνι πάθει  
 πιεζόμενον. καὶ μὴ μισήσειν, μᾶλλον δὲ μεταδιδό-  
 ξειν. τὸν τε σοφὸν ὃ χ' οὕτω πλεονάσειν ἐν τῇ τῶν ἀν-  
 γαθῶν αἰρέσει, ὥς ἐν τῇ τῶν κακῶν φυγῇ, τέλει πι-  
 θέμενον ὃ μὴ ὑπὸ πνύως ζῶν, μηδὲ λυπηρῶς. ὃ δὲ πε-  
 ριγίνεσθαι τοῖς ἀδελφοφρήσασιν πᾶσι τὰ πρὶν τῇ κα-  
 ρὶ δυνῆς. Οἱ δ' ἀνικέριοι, τὰ μὲν ἄλλα κατὰ ταύ-  
 τὰ τέρειν. ἀπέλιπεν δὲ καὶ φιλίαν ἐν βίῳ καὶ χά-  
 ριν, καὶ πρὸς τοῖας πνύων, καὶ ὑπὸ πατοῖσι τι  
 πράξειν. ὅθεν ὅλα ταῦτα καὶ ὀχλήσεις ἀναδέχονται  
 ὁ σοφὸς ὃ δὲ ἡπτόν ἐνδαιμονήσῃ, καὶ ὀλίγα ἡδέα  
 ποδὶ γνήσῃται αὐτοῦ. τίω τε τοῖς φίλοις ἐνδαιμονίαν  
 δι' αὐτῶν μὴ εἶν' αἰρετῶν. μηδὲ γὰρ αἰσθητῶν τοῦ  
 πέλας ὑπαρχειν. μὴ εἶναι τὴν αὐτάρκειαν ἢ λόγον  
 πρὸς ὃ διαρρῆσαι, καὶ τῇ τῶν πολλῶν δόξης ὑποβῶ-  
 νω γνέσθαι. δεῖν δὲ ἀνεδίξεσθαι ὅλα τίω ἐκ πολλοῦ  
 σωτρεφῆσαι ἡμῖν φαύλῳ διαβόσιν. τὸν τε φί-  
 λον μὴ ὅλα τὰς χρεῖας μόνον ἀρδεύεσθαι, ὧν ὑπο-  
 λειπόμενον μὴ ὑπὸ σφίφεισθαι. ἀλλὰ καὶ παρὰ τίω γ-  
 ρονίαν

γονύϊαν ἱεροῖαν, ἧς ἔνεχα ἔδ' ἥνυσ' ὑπομένειν, καὶ τρι-  
 πύλνον ἡδονὴν τέλει. καὶ ἀχθόμενον ὑπὸ τῆς  
 ρεῖθαι αὐτῆς, ὅμως ἐκουσίως ὑπομένειν ὅλα τὴν οἱ θεοδῶροι  
 πρὸς τὴν φίλον σοφίαν. Οἱ δὲ θεοδῶροι κληθέν-  
 τες, τὴν μὲν ὀνομασίαν ἱσπασαν ἀπὸ θεοδῶρα τοῦ  
 προγραμματίστου, καὶ δόγμασι ἐχρήσαντο τῆς αὐ-  
 τοῦ. ὧν δὲ ὁ θεοδῶρος πανταπάσι ἀναιρέων τὰς  
 πόδας θεῶν δόξας. καὶ αὐτὸ ποιετύχησεν βιβλίῳ  
 ὑπὲρ γραφομένην πόδας θεῶν, οὐκ ἐνηταφρονήτω. ὅς δ'  
 φασὶν ἐπὶ κούρεον τὰ πλεῖστα λαβόντα εἰπεῖν. ἡκού-  
 σε δὲ καὶ ἀνικόριδ' ὁ θεοδῶρος. καὶ διουυσίς τοι  
 δὲ λεκτικῶν. καὶ δὲ φησὶν ἀντιοδῆν ἐν φιλοσο-  
 φῶν δὲ δοχαῖς. τέλει δ' ὑπελαμβανε χάραν  
 καὶ λύπην. τὴν μὲν, ὑπὸ φρονήσει, τὴν δὲ ὑπὸ ἀφρο-  
 σιῶν. ἀγαθὰ δὲ φρόνησι καὶ δικαιοσύνην. κακὰ δὲ  
 τὰς ἑναντίας ἔξεις. μέσα δὲ ἡδονὴν καὶ πόνον. ἀ-  
 νήρει δὲ καὶ φιλίῳ διὰ τὸ μήτε ἐν ἀφροσιν αὐτῶν  
 εἶναι μήτ' ἐν σοφοῖς. τοῖς μὲν γὰρ τῆς χρείας ἀ-  
 ναιρεθείσης καὶ τὴν φιλίῳ ἐκποδῶν εἶναι. τὸν  
 δὲ σοφὸν αὐτάρκειας ὑπερχειντας μὴ δεῖσθαι  
 φίλων. ἔλεγε δὲ καὶ ἔνλογον εἶναι τὸν αὐτοδαι-  
 ον μὴ θάλαγα γεῖν ὑπὸ τῆς πατερίδος αὐτόν. οὐ  
 γὰρ ἀρβώλει τὴν φρόνησιν ἔνεχα πῆς τῶν ἀφρο-  
 σιῶν ὑπελείας. εἶναι τὴν πατερίδα τὸν νόμον. κλέ-  
 ψαι τὴν καὶ μοιχόσειν καὶ ἰδοσυλίσαι ἐν καίρῳ.  
 μηδὲν γὰρ εἶναι τὰ τῶν ἀσχετῶν φύσει, τὴν ἐπ' αὐτοῖς



δόξης αἰρουμένης, ἢ σύγκειται ἐν ἡμῶν. ὅτι τῶν ἀφρο-  
 νων συνοχῆς. φανερῶς δὲ τοῖς ἐρωμένοις ἀνδρῶν πά-  
 σης ὑφορώσεως χεῖσεσθαι ἢ σοφόν. διὸ καὶ τοῖς  
 τοῖς λόγους ἡρώτα. ἄρα γε γυνὴ γραμματικὴ χεῖσι-  
 μῶν αὖ εἴη παρ' ὅσον γραμματικὴ ὅστις; ναί. ἔ. πᾶς,  
 καὶ νεανίσκος χεῖσιμῶν αὖ εἴη παρ' ὅσον γραμμα-  
 τικὸς ὅστις; ναί. ὁ κοῦν καὶ γυνὴ καλὴ χεῖσιμῶν αὖ εἴη  
 παρ' ὅσον καλὴ ὅστις; καὶ πᾶς καὶ νεανίσκος χεῖσι-  
 μῶν αὖ εἴη παρ' ὅσον καλὸς ὅστις; ναί. καὶ πᾶς ἄρα  
 καὶ νεανίσκος καλός, πρὸς τοῦτ' αὖ εἴη χεῖσιμῶν,  
 πρὸς ὃ καλός ὅστις; ναί. ἐστὶ δὲ χεῖσιμῶν πρὸς τὴν  
 σιῶν. ὡς διδουμένην ἐπὶ γῆν, ὁ κοῦν εἰ τις πλησια-  
 σμῶν χεῖν τὴν παρ' ὅσον χεῖσιμῶν ὅστις, ὁ διαμαρτά-  
 νει. ὁ δ' εἰ ἄρα ἡμέτερος χεῖσιμῶν παρ' ὅσον χεῖσιμῶν  
 ὅστις διαμαρτῆται. τοιαῦτα ἅπαντα διδρωτῶν ἰσχυ-  
 ρῶ λόγῳ. δοκεῖ δὲ θεὸς κληθῆναι, σίλωπον αὐτὸν  
 ἐρωτήσαντες οὕτως. ἄρα γε θεόδωρε ὁ εἶναι φησὶ, ὅτι  
 καὶ εἰς ὑμῶν δύνανται δέ, φησὶ δ' εἶναι θεός; τοῖ δ' ὁμο-  
 λογῆσαντες, θεὸς εἰ ἄρα ἔφη. δεξαμένη δὲ ἀσμενῶς,  
 γαλασσας φησὶν. ἀλλ' ὡς μόχθησε τοῦ λόγου τῷ τῷ, ἔ.  
 πολλοῖος αὖ ὁμολογήσεας εἶναι, καὶ ἄλλα μυρία. ὁ δ' οὖν  
 θεόδωρος προσηγάδισας πρὶ ἐντυκλείδῃ τοῦ ἰδρύ-  
 φαίτη, λίγε μοι ἔφη ἐντυκλείδῃ, τίνας εἰσὶν οἱ ἀσε-  
 βουῦντες πρὸς τὰ μυθήματα. εἰπὺντες δ' ἐκείνῳ, οἱ  
 τοῖς ἀμύμητις αὐτὰ ἐκφύροντες. ἀσεβεῖς ἄρα ἔφη ἔ.  
 σὺν τοῖς ἀμύμητις διησούμενοι. καὶ μὲν τοῖς παρ' ὅλῳ

γον ἐκινδύνουσιν εἰς ἄρειον ἀναχθῆναι παλγόν, εἰ  
 μὴ δὴμῆται· αὐτὸν δὲ φαληρεὺς ἐρξύσατο. ἀμφι-  
 κροῦσθαι δὲ ἐν τῷ ποταμῷ ἐν δόξῳ ἀνδρῶν φησι κώνειον  
 αὐτὸν πιεῖν καὶ ταπεινῶσαι. δῖα τρεῖς βωὴν δὲ παρὰ  
 πρὸς μακρῷ ὡς λαῶν, ἀπεσώλην τὸν ἄνθρωπον πρὸς  
 λυσίμαχον πρὸς βούτης. ὅτε καὶ παρρησιαζομένη  
 φησὶν ὁ λυσίμαχος· λέγε μοι θεόδωρε, ὅτι σὺ ὁ ἐκπε-  
 σὼν ἀθλῶνθην; καὶ ὁ δὲ, ὁρθῶς ἀκήνοας. ἢ γὰρ ἄθλῳ αἰ-  
 ῶν πῆλιν ὅτι δωκαμήνη με φόβει, ὡς πόρ ἢ σεμίλη  
 τὸν δούλον, δὲ ἐξέβαλε. πάλιν δὲ εἰπὺν τὸν λυσι-  
 μάχου, βλέπε ὅπως μὴ παρίσῃ πρὸς ἡμᾶς ἔτι. ὅτι  
 αὐτὸς ἐφῆ, αὐτὸν μὴ πρὸς μακρῷ ἄρσειλῃ. μύθου δὲ τοῦ  
 διοικητοῦ λυσιμάχου παρεστῶτος καὶ εἰπὺν τὸν  
 ἰοῦσθαι σὺ μὴ μόνον θεῶν ἀγνοεῖν ἀλλὰ καὶ βασιλεί-  
 ας, πῶς εἶπεν ἀγνοῶ, ὅπως καὶ σὲ θεοῖς ἐχθρὸν ὄντα  
 νομίζω. φασὶ δὲ πρὸς τὸν κορίνθιον παρεδέρχεσθαι αὐτὸν  
 συχνὸν ἐπατόριον μαθητῶν. μητροκλῆα δὲ τὸν  
 κυριακὸν σιγῶν δεικνύοντα πλῆθοντα εἰπεῖν. \* ἢ σὺ εἰπὺν  
 ἀνθρώποις ἢ δαίμοσι, ὅτι τὸν λαχένοισι ἐ-  
 χθρῶν. τὸ ὅμοιον ἀναφύεται καὶ πᾶσι πόρ προείρηται  
 εἰς τὴν διογῆν καὶ ἀρίσιππον. τρεῖς δὲ μὲν ὁ θεόδω-  
 ρος καὶ τρεῖς. τελευτῶν δὲ εἰς κυριώτερον ἀπελ-  
 θὼν καὶ μακρῶ συμβιτὸν ἐν πάσῃ πῆλιν διετέλεσεν  
 χρόνῳ. ἐνθὲν τὸ πρῶτον ἐμβαλλόμενος λέγεται χεί-  
 ριν πῆλιν. ἐφῆ γὰρ, κακῶς τριεῖτε ἀνδρῶν κυρι-  
 καὶ οἱ ἐκ τῆς λιβύης εἰς τὴν ἐλπίδα με διορίζοντες.



θεόδωροι δὲ γένουσι εἰκοσι. πρῶτον σάμιον ἕως  
 ξοίκου. ἔτι δὲ ὁ συμβουλίσας ἀνθρώπου ἔπος  
 τεθεῖναι τις θεμελίους τοῦ ἐν ἐφίσω νεώ. καὶ ὑγρὸν  
 γὰρ ὄντων τοῦ τόπου τοῦ ἀνθρώπου ἐφίη ἡ ξυλῶδον  
 ἀφβαλόντας, αὐτὸν ὅσον ἀπαθὲς ἔχειν ὕδατι.  
 δούτορον κυρτωαῖον γωμέτρης. ἔδιδουσε πλω  
 τω. τριττον ὁ προγεγραμμένον φιλόσοφον. τε  
 ταρτον δὲ ὁ φωνασικὸν φόρεται βιβλίον πώμα  
 λον. πέμπτον ὁ ποῦ τῶν νομοτριῶν πεπραγματόν  
 μιν ἀφβαλόντων ἀπὸ τῶν πάντων ἐκτὸν σωῖνός.  
 ἑβδόμον ὁ τὰ ποῦ ἡωμαίων πεπραγματόν  
 νον. ὄγδον συρακούσιον, ποῦ τακτικῶν γεγρα  
 φῶς. ἑνάτον βυζαντινὸν ἀπὸ λόγων πρλιπτικῶν. δέ  
 κατον ὁμοίως, ἔδιδουσε μνημονεύει δὲ τῆς  
 ὡν τῶν τῶν ἡντῶν. ἑνδέκατον θηβαῖον ἀνδρῶν  
 αντηριός. δωδέκατον ζωγραφον, ἔδιδουσε πρ  
 λήμων. τρισκαίδέκατον ζωγραφον ἀθλωαῖον,  
 ἑπτάον γράφει μιν ὁδοτον. τεσσαρδκαίδέκα  
 τον ἐφίσιον ζωγραφον, ἔδιδουσε θεοφανῆς, ἑν  
 ὡς ποῦ γραφικῶς. πεντεκαίδέκατον πρλητῆς ὡν  
 γραμμῶν τῶν. ἑξακαίδέκατον γεγραφῶς ποῦ πρλη  
 τῶν. ἑπτακαίδέκατον ἱατρὸς ἀθλωαίου μαθητῆς.  
 ὀκτωκαίδέκατον χιόν φιλόσοφον σωῖνός. ἑννεα  
 καίδέκατον μιλῆσι καὶ αὐτὸς σωῖνός φιλόσο  
 φον. εἰκοστὸς πρλητῆς τραγωδίας.

Φαίδωρος

## ΦΑΙΔΩΝ

Φ Αἶδωρ ἤλθει τῶν ἐν πατρίδι σου σωφλῶ  
 τῇ πατρίδι, καὶ ἠναγνῆσθαι σκῶσαι ἐπὶ οἰκίμῃ  
 τῇ, ἀλλὰ τὸ θυεῖον προσεθεῖς μετῆχε σωφρα  
 τῶν, ἕως αὐτὸν λυτρώσασθαι εἶς ποῦ ἀλκιβιά  
 δῖον ἢ κείτωνα προύτρεφε. καὶ τὸ αὐτεῦθεν ἐλθὺν  
 εἰς φιλοσόφει. ἰδρῶν μὲν δ' ἐν τῷ ποῦ ἐπὶ χῆς  
 καὶ ἀπατόμῳ, δούλον αὐτὸν εἶρηκε. ὅθεν λόγῳ δὲ  
 σωφρατῇ γνησίῳ μὲν ζώπυρον, σίμωνα, καὶ δι  
 σάπας. καὶ ὅτῳ διασάφεται. σκυπικὸν λόγῳ.  
 καὶ τῷ τῷ πῶς αἰαχίνου φασί. διαδύχῳ δ' αὖ  
 τοῖ πλείστοι ἤλθει. καὶ τῷ ἅπ' αὐτοῖ οἱ ποῦ  
 μνησθῆναι ἔρετρία καὶ ἀσκληπιάδῳ ἔρ φλι  
 αῖον, μεταλγόντ' ἀπὸ σίλων. καὶ ἕως μὲν τῷ  
 τῷ ἡλείαοι προσηγορόντο. ἀπὸ δὲ μνησθῆναι ἔρε  
 τριαοί. ποῦ δὲ λῆξομεν ἐν ὑσώρῳ, ὅθεν ἔρ καὶ αὐτὸν κα  
 τὰ χερσὶ αἰετίσας.

## ΕΥΚΛΕΪΔΗΣ

ΕΥκλείδης ἀπὸ μεγάρων τῷ πρὸς ἰσθμῷ. ἢ γελῶς  
 κατ' ἐνίσας ὡς φησὶ ἀλέξανδρος ἐν διαδύχαῖς.  
 ὅτῳ καὶ τὰ πᾶσι μνησθῆναι μετεχρεῖσθαι, καὶ οἱ αὖ αὐτοῖ  
 μεγαλειοὶ προσηγορόντο. ὅτ' ἐρσινοί. ὑσώρῳ δὲ ὅθεν  
 λεκλῆοι. ὅς οὕτως ὠνόμασε πρῶτος διονύσιος ὁ καρχη  
 δόνιος, ὅθεν ἔρ πρὸς ἐρώτησιν καὶ ἀπὸ κείσιν εἶς λόγους  
 ὅθεν τίθεσθαι. πρὸς ὅθεν φησὶν ὁ ἐρμόδωρος ἀποκρίσθαι  
 πλάτωνα καὶ εἶς λαιπῶς φιλοσόφους καὶ τῷ σωκράτους  
 τελευ



τελευτῶν, δεισαντας τῶν ὁμοτήτα τῶν τυραννῶν.  
 ὅτι ἔμ' ἂν ἀγαθὸν ἀπεφαίνετο πολλοῖς ὀνόμασι καὶ  
 λούμνον. ὅτε μὲν γὰρ φρόνησιν. ὅτε δὲ θεόν, καὶ ἄλλο  
 τε νοῦν καὶ τὰ λοιπά. τὰ δ' ἀντικείμενα τῷ ἀγαθῷ  
 αἰνέει, μὴ εἶν' φασκῶν. ταῖς τε ἀπ' αἰετῶν ἐκείνων  
 δόξαι ἐν- κλέδου γ', ὅτι καὶ λήμματα, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ φορῶν. καὶ γὰρ οἱ  
 παραβολῆς λόγον αἰνέει. λέγων ἢ γὰρ ὅμοιον αἰ-  
 γῶν ἢ δὲ ἀνομοίον σωίσασθαι. καὶ εἰ μὲν δὲ ὁμοίον, πε-  
 ρὶ αὐτὰ δεῖν μᾶλλον ἢ οἷς ὅμοια ὅστις ἀναστρέφεται.  
 εἰ δ' ὅμοιον, παρέλκειν τῶν παραθεσίων. οἱ δὲ  
 ταῦτα δὲ καὶ πόλιν αὐτῶν ταῦτα φησὶ τίμων, προσ-  
 παρατρέγων καὶ οὗτοι λειπόμενοι σωκρατικούς. ἀλλ' ὅ-  
 μοι τὰ τῶν φιλοσόφων μέλει. ὅτι γὰρ ἄλλος ἄδελφός,  
 ὅς φαίδωνος ὅς τις γε, ὅς δ' ἐκείνῳ ἐκείνῳ, με-  
 γαρεῦσιν ὅς ἐμβαλε λύσαν ἐισμῶ. οἱ δὲ λόγου δὲ  
 συνέγραψεν ἐξ ἀμειβνῶν. αἰσχύνων. φοίνισσιν. κείτω-  
 να. ἀλκιβιάδων. ἐρωτικόν. οἱ δ' ἐκείνῳ οἱ δὲ  
 χῆς ὅτι καὶ ἐκ βουλίδης ὁ μιλῆσιος. ὅς καὶ πολλὸς  
 ἐν οἱς λεκτικῇ λόγου ἠρώτησε. τὸν τε τοῦ δόμνον  
 καὶ γὰρ οἱ δὲ λαοφάνωντα. καὶ ἡλέκτραν. καὶ ἐγκλη-  
 λυμμένον. καὶ σωρεῖτῳ. καὶ κερδάνων. καὶ βαλα-  
 κρόν. πόλιν τὰ τὰ φησὶ τίς τῶν κωμικῶν.  
 ὁ ὑβριστικὸς δ' ἐκ βουλίδης κερδάνων ἐρωτῶν,  
 καὶ τοῦ δ' ἀλαζόσι λόγοις οὗτοι ἡμέτεροι κυλίω  
 ἀπὸ τῶν ἑχῶν δημοσίου τῶν ἑβροσωμυλήθραν.  
 Εἰσὶν γὰρ αὐτοὶ καὶ δημοσίου ἀκνηογῶν, καὶ ἑβ-  
 ρωτικῶν

βικώτορ Θ' ὦν παύσασθαι. ὁ δὲ ἐν βαλίδης καὶ πρὸς  
 ἀριστοτέλειω διεφύετο. καὶ πάλιν αὐτὸν διαβέβλη  
 κε. μετὰ δὲ ἄλλων οὐ τῶν φη' ἐν βουλίδι διαδοχῶς  
 ἀλδξίνου ἐγύετο ἡλείου ἀνὴρ φιλοτιμότητος. διὸ  
 καὶ ἀλδξίνου ἐπεκλήθη. διεφύετο δὲ μάλιστα  
 πρὸς ζώωνα. φησὶ δ' ἐρμυππὸς πῶς αὐτὸν ὡς ἄρα  
 ἀπελθὼν ἐκ φη' ἡλιδ' εἰς Ὀλυμπίαν αὐτόν τι φιλο  
 σοφοίη. τῶν δὲ μαθητῶν αὐτοῦ πωδανόμενων δια τί  
 τῆς κατὰ κῆ, φαῖναι βούλεσθαι αἰεδοῖν συστήσασθαι  
 ὡς Ὀλυμπιακῶν κληθήσεσθαι. αὐτὸν δὲ καὶ τῶν ἐφοδίων  
 οἱς θλιβομένων καὶ τὸ χωρίον νοσῶν κατὰ γυμνα  
 σίας, ἀπελθεῖν, καὶ τοῖς λοιποῖς διατρέβειν ἔρημον τὸν  
 ἀλδξίνον (ὡς οἰκίτη μόνον). ἐπειτα μὲν γὰρ νηχόμενον  
 ἐν τῷ ἀλφειῷ νυχθῆναι καλῶς καὶ οὕτως τελού  
 πῆσαι. καὶ ἔτι εἰς αὐτὸν ἡμῶν οὕτως ἔχει.  
 ὅτι ἄρα μὴ θ' ὡς ἐκεῖνον εἰπαί.

ὡς ἀτυχὴς ἔστι ὁ τὸν πῶς καλυμβῶν πρὸς περὶ  
 ἡλ. καὶ γὰρ ὁ σεμνὸς ἀνὴρ περὶ ἀλφειόν.

πρὸς ἐκποδῶν, ἀλδξίνου ἐκ τῆς νυχθῆς καλῶς.  
 γέγραφε δὲ ὁ μόνον πρὸς ζώωνα ἀλλὰ καὶ ἄλλα βι  
 βλία, καὶ πρὸς ἑφορὸν τὸν ἰσορρογῶν. ἐν βουλίδι  
 δὲ καὶ ἔφαντο γέγονεν ὁ δὲ αὐτὸς, ἰσορίας γεγρα  
 φὼς τὰς καὶ αὐτὸν χεῖρας αὐτοῦ ἑαυτοῦ. ἐπείνεσε δὲ καὶ  
 τραγωδίας πλείους ἐν αἷς ἐνδοκίμει καὶ αὐτὸν ἀγῶ  
 νας. γέγονε δὲ καὶ ἀντιφόνου τοῦ βασιλέως διαδολογη  
 λ. πρὸς ὅν καὶ λόγον γέγραφε πῶς βασιλείας,



σφόδρα ἐνδοκιμουῦντα. ἤν βίον δὲ γῆρα κατέστρε-  
ψεν. εἰσὶ δὲ καὶ ἄλλοι σφακηροτόδε ἐνβολίδε. ἐν οἷς  
καὶ ἀρλῶνιΘ ὁ κρόνΘ.

## ΔΙΟΔΩΡΟΣ

ΔΙΟΔΩΡΘ ἁμεινίς ἰασεὺς καὶ αὐτὸς κρόνΘ  
ἐπίκλιω. ποῦ δ' φησὶ καλὶμαχΘ ἐν ὡν  
γραμμασι. αὐτὸς ὁ μῶμΘ ἔγραψεν ἐν ῥίχοις, ὁ  
κρόνΘ δ' ἐστὶ σφόδρ. ἦν δὲ καὶ ἐτΘ σφαλεκτικός πρῶ-  
τΘ δόξας εὐρεῖν καὶ ἤν ἐγκεκαλυμμένον ἔκδορα  
πύλω λόγον κατὰ πινας. ἐτΘ παρὰ πρλεμαίω ὅ-  
σωτῆι σφατεῖβωρ λόγος πινας σφαλεκτικούς ἦρω  
τήθη πρὸς σίλπωνΘ. καὶ παρὰ χεῖμα μὴ δυνάμε-  
νΘ σφαλύσασθαι, ὑπὸ τοῦ βασιλείως τὰ τε ἄλλα ἐπε-  
πλήθη. καὶ δὴ κρόνΘ ἤκουσεν ἐν σκιάματΘ μέ-  
ρει. θηελθὼν δὴ τοῦ συμπσίε, καὶ λόγον γραφας πε-  
ρὶ τοῦ προβλήματΘ, ἀθυμία ἤν βίον κατέστρεψε.  
καὶ ἔσιρ ἡμῶν εἰς αὐτόν. κρόνε διόδωρε τίς σε δαι-  
μόνων κακῇ ἀθυμῖα ξυείρυσεν. ἵνα αὐτὸς αὐτὴν ἐμ-  
βάλῃς εἰς τὰρταρον. σίλπωνΘ δ' λύσας ἔπη ἀνι-  
γματώδην. ῥι γὰρ εὐρέθης κρόνΘ ἔξωθεν τοῦ ῥῶ κατὰ  
πα τε. τῶν δ' ἀρ' ἐν κλείδε δ' ἐστὶ καὶ ἰχθύας μετὰ λ-  
λου ἀνῆρ γηνναῖΘ, πρὸς ὃν καὶ διογῆνης ὁ κυωικός  
διαλῶρον πεπρίνται. κλεινόμαχΘ τε ὁ θούειΘ. ὅς  
πρῶτΘ ποῦ ἀξιωματῶν καὶ κατηγόρηματῶν, καὶ  
τῶν ῥιούτων συνέγραψε, καὶ σίλπων ὁ μεγαρόν  
σφασημότατΘ φιλόσοφΘ, ποῦ δ' λεκτίον.

ΣΤΙΛ

## ΣΤΙΑΓΩΝ

**Σ** Τίλπωρ μεγαρέως τῆς ἑλκιδος δίκηουσε  
 μὲν τῶν ἐπ' ἐκλείδου πινῶν. οἱ δὲ καὶ αὐτοὶ ἐκ-  
 κλείδου ἀκούσαι φασὶν αὐτόν. ἀλλὰ καὶ θρασυμω-  
 χου τοῦ κρινδίου ὃς ἦν ἰχθύα γνώριμος, κατὰ φη-  
 σιν ἡρακλείδης. ῥοσῦρμ δ' ἐν εὐδοσιολογίᾳ προύγε-  
 τόν ἄλλου ὥς τε μικροῦ δεῦσαι πᾶσαι τῶν ἑλ-  
 κιδος ἀφορῶσαι εἰς αὐτὸν μεγαρίσαι. πόδι δὲ τὸ  
 φησὶ Φίλιππος ὁ μεγαρεὺς κατὰ λέξιν οὕτω. πα-  
 ρὰ μὲν γὰρ θεοφράστου μητρόδωρον τὸν θεωρηματι-  
 κόν καὶ τιμαγόραν τὸν γελῶν ἀπίσπασε. παρὰ ἄ-  
 ριστοτέλους δὲ τοῦ κυρίωαϊνοῦ κλείταρχον καὶ σιμ-  
 μίαν. ἀπὸ δὲ τῶν δολοκτικῶν, παίωνειον μὲν ἀπὸ ἄ-  
 ριστοτέλου, φίλον δὲ τὸν βοαστοριανόν ἐμφάνει, καὶ  
 μύρμηκα τὸν δεικνύει, παραγνομήνους ὡς ἐλέγξον-  
 τας, ἀμφοτέρους ζηλωτὰς ἔχει. χωεὶς τίνων τῶν  
 τῶν φρασίδημον μὲν τὸν πόδι πατηπικόν καὶ φυσι-  
 κόν ἔμπειρον ὄντα προσήγαγε. καὶ τὸν ῥητορικόν ἄλ-  
 κημον ἀπάντῃν πρῶτόν οὖν τῶν ἐν τῇ ἑλκιδι ῥητό-  
 ρων. κρῶτητά τε καὶ ἄλλου πλείους οὓς ἐθί-  
 ρασε. καὶ δὴ ζιζύωνα τὸν φοίνικα μὲν τὸ τῶν ἀφεί-  
 λει. ἦν δὲ καὶ πελιπκώτατος καὶ γυναικὶς ἡγάγε-  
 ρος. ἔταίρα (ωὐλῶ, νηαρέτη. ὡς φησὶ περὶ οὐκ ἔτι  
 καὶ θυγατὸρα ἀνέλασον ἐγρήγορον ἢ ἐγήμε γνώρι-  
 μός τις αὐτοῦ σιμμίας συρακεύσι. ταύτης δὲ καὶ  
 τῶν περὶ βιόσεως εἰπεῖς πρὸς τὸν σίλωνα, ὡς κατὰ



οχυροὶ αὐτῶν. ὁ δὲ, ὅ μᾶλλον εἶπεν ἢ ἐγὼ ταῦτ' αὖ  
 κροσῶ. ἀπεδέχθη δ' αὐτὸν φασὶ καὶ πρλεμεῖσθαι  
 ὁ σωτὴρ. καὶ ἐγκρατὴς μεγαφῶν γνόμενος, ἐδίδου  
 τὴν ἀργύριον αὐτῷ καὶ παρεσχάλα εἰς αἴγαν  
 συμπλεῖν. ὁ δὲ, μέτοιρ μὲν τὴν ἀργύριον προσήγα-  
 γ. ἀρνησάμενος δὲ τὴν ὁδὸν μετήλθεν εἰς αἴγαν  
 ἕως ἐκείνου ἀπέπλυσεν. ἀλλὰ καὶ διημήτει' ὁ  
 ἀντιπρόου καταλαβὼν τὰ μέγαρα τῷ τε οἰκίᾳ αὐ-  
 τῷ φυλαχθῆναι, καὶ πάντα τὰ ἀρπαδόντα πρου-  
 νόησεν ἀποδιδόναι. ὅτε καὶ βελομένη παρ' αὐτὸν τῶν  
 ἀκρωλότην ἀναγραφὴν λαβὲν, ἔφη, μηδὲν τῶν οἰ-  
 κείων ἀκρωλόναι. παιδείαν γὰρ μηδὲν ἔδεικνυσι  
 χεῖναι. τὸν τε λόγον ἔχει καὶ τὴν ὑπὸ σῆμιν. καὶ  
 αὐτῷ δαλεχθεὶς ποδὶ ἀνθρώπων ἐυδρυδίας, οὕ-  
 τως ἔχον ὥς τε προσέχειν αὐτῷ. ἔπειτα φασὶ ποδὶ  
 τῇ ἀβλυᾷ τῇ τοῦ φειδῖα ριθὸν πῖνα λόγον ἐρωτῆ-  
 σαι. ἄρα γὰρ ἡ τοῦ διὸς ἀβλυᾷ θεὸς ὄντι. φήσαντο δὲ  
 ναί. αὐτὴ δὲ γὰρ εἶπεν ὅτι ἐστὶ διὸς ἀλλὰ φειδῖα. συγ-  
 χωρουμένη δὲ, ὅτι ἄρα εἶπεν αὐτὴ θεὸς ὄντι. ἐφ' ᾧ  
 καὶ εἰς ἀρεῖον πάστον προσκληθέντα μὴ ἀρνησάσθαι,  
 φασκεῖν δ' ὁρθῶς διηλέγχεται. μὴ γὰρ εἶναι αὐτὴν  
 θεὸν ἀλλὰ θεάν. θεὸς δὲ εἶναι αὐτὴν ἀρξῆνας. καὶ μὴ γὰρ  
 αὐτὴν ἀρεοπαγίτας ἐνθὺς αὐτὴν κελεύει. τῇ πρὸς  
 θεῷ ἐλθεῖν. ὅτε καὶ θεόδωρον ἔρ' ἐπίκλιω θεὸν ὑπὸ σῆμιν  
 πρὸς ταῖς εἰπεῖν. πρὸς δὲ τὸν ἥδαι σίλῳν ἢ ἀνασύν-  
 ρας αὐτῇ ἔρ' κῆτρ' ἐθεώσατο. ὡς δ' ἀληθῶς, ὅτι

μὲν

μὴν θρασύνεται, σίλωωρ δὲ κομψότατος. κρώτη  
 τὸ Γουὺ αὐτὸν ἐρωτήσαντος εἰ οἱ θεοὶ χαίρουσι  
 ταῖς προσκυνώσεσι καὶ ἐν χαῖς φασὶν εἰπεῖν, ποῦ  
 τὸ τῶν μὴ ἐρώτα ἀνόητε ἐν ὁδῷ ἀλλὰ μόνον. ὃ δὲ αὐτὸν  
 καὶ βίωνα ἐρωτηθέντα εἰ θεοὶ εἰσιν εἰπεῖν.

ὅτι ἂν ἔμεθ' οὐκ ἐδωκεν ὅχλον ταλαπείρει πρὶς βυ;  
 ὡς δ' ὁ σίλωωρ καὶ ἀφελὴς καὶ ἀνεπίπλας. πρὸς  
 τε τὸν ἰδιώτην ἔνθετος. κρώτητος Γουὺ πρὶς τοῦ  
 κυνίου πρὸς μὴν ὃ ἐρωτηθεὶς ὅτι ἀρκηναμγῆς, ἀρ  
 παρδόντος δὲ, ἤδειν ἔφη ὡς πάντα μᾶλλον φθίγι  
 ξη ἢ ἂν δέη. ἀλλὰ καὶ ἰοχαλδὰ προτείναντος αὐτῷ  
 πρὶς καὶ ἐρώτημα, δεξάμενον καταφαγεῖν. τοῖς δὲ, ὡς  
 ἡρώκλης εἰπὺντος ἀρλώλητος τῷ ἰοχαλδᾷ, ὃ μόν  
 ον ἔφη, ἀλλὰ καὶ ὃ ἐρώτημα, ὃ ὡς ἀρξάβων ἢ ἰοχάς.  
 πάλιν δὲ ἰδὼν τὸν κρώτητα χειμῶντος συγκεκαυ  
 μένον, ὡς κρώτης εἶπε, δοκῆς μοι χρεῖαν ἔχειν ἱμα  
 τίου κακινού, ὃ πρὸς ὡς νοῦ καὶ ἱματίου. ὃ τὸν, αὐδεδγῆ  
 τα παρωδῶσαι εἰς αὐτὸν οὕτω.

καὶ μὴν καὶ σίλωων' ὁδεῖδον χαλεπὸν ἄλγε' ἔχοντα  
 ἐν μεγάροις ὅτι φασὶ τυφώως ἐμῆναι ἐμῶς.  
 ἐν δατ' ἐρίδουκε, πολλοὶ δ' ἀμφ' αὐτὸν ἱταῦροι.  
 τῷ δ' ἀφετῶν πρὸς γράμμα διώκοντος κατέτριβον.  
 Λέγεται δ' οὕτως ἀθλῶσις ὑπὲρ εἶσαι τοῦ ἀνθρώπου  
 πρὸς, ὡς τ' ἀρ' τῶν ἐργασθεῖων σωθεῖν ἵνα αὐτὸν  
 θεάσωνται. καὶ πρὸς εἰπὺντος, σίλωωρ δαυμαλζοῦ  
 σί σε ὡς θεῖον, ὃ μῆνοῦ εἰπεῖν, ἀλλ' ὡς ἀνθρώπου



ἀληθινόν. δεινὸς δὲ ἄγαν ὧρ ἐν τοῖς ἱεραικοῖς ἀνὴρ  
καὶ τὰ εἶδ' ἡ, καὶ ἔλεγε τὸν λέγοντα ἀνθρώπων εἶν' ἄν  
δυνά. ὅτε γὰρ τὸν δὲ λέγειν ὅτε τὸν δὲ. τί γὰρ μάλ  
λον τὸν δὲ ἢ τὸν δὲ. ὅτε ἄρα τὸν δὲ. καὶ πάλιν. τὸν λαὸν  
χαυον οὐκ ἔστι τὸ δεινὸν μὲν. λαὸν χαυον μὲν γὰρ ἦν  
πρὸ μυρίων ἐτῶν. ὅτε ἄρα ὅτι ἴδ' ἔχ' λαὸν χαυον. φασὶ  
δ' αὖ τὸν ὁμιλουῦντα κρῶνται μεταξὺ ἀπειλῶν ἰχ  
θὺς πείσασθαι. τοῖς δ' ὠπασσάμεν καὶ φασὶ κινεῖσθαι  
καταλείπειν τὸν λόγον, ὅτι ἔγωγε ἔφη. ἀλλὰ τὸν μὲν  
λόγον ἔχω, σὲ δὲ καταλείπω. ὁ μὲν γὰρ λόγῳ πῶς  
μῆναι. τοῖς δ' ὅσον πεπλάσεται. φόβονται δ' αὖ τὸν  
<sup>διαλογοῖ</sup>  
<sup>αὐτοῦ</sup> διαλογοῖ ἐννία ψυχροί. μόσχῳ. ἀρίσιππῳ. ἢ καλ  
λίας. πρὸς μαῖν. χαίρει κρῶνται. μητροκλῆς. ἀναξί  
μηνος. ὠπλῆς. πρὸς τὴν αὐτὴν θυγατέρα. ἀριστοτέ  
λης. τὰς καὶ ἡρακλείδης φησὶ τὸν ζῶονα ἀκροῦ  
σαι τὸν τῷ σοῦς κτίσιν. γηραιὸν δὲ τελευτῆσαι φη  
σὶν ἐρμύππῳ, οἶνον προσγεγεγῶμεν, ὅπως θάπτον  
ἀφ' ὧν. ὅτι δὲ καὶ εἰς ἴδ' ἔχ' ἡμῶν.  
τὸν μεγαρία τὸν σίλωνα γινώσκεις δ' ἴσως  
γῆρας ἔπειτα νόσῳ καθεῖλε δύσμαχον ζυγόν.  
ἀλλ' οἶνον ἔνυρε τῷ κακῷ συνωρίδῳ  
φόβῳ τὸν ἡνίοχον. πῶς γὰρ ἤλασε.  
προσεσκήφθη ὑπὸ φίλου τοῦ κωμικοῦ ἐν δρῶματι  
γαλμον.  
σίλωνῳ ὅτι βύσμαθ' ὁ χαλκὸς λόγῳ.

Κρίτωρ

## ΚΡΙΤΩΝ

**Κ**ΡΙΤῶν ἀθλιωαῖς, ἔτ' αὖ μάλισα φιλοσοφῶτα  
 τα διετέθη πρὸς σωκρατίω. καὶ οὕτως ἐπεμε-  
 λείψαυτο ὥς τε μηδέποτε λείπειν τί τῶν πρὸς  
 τῶν χρείαν. καὶ οἱ παῖδες δὲ αὐτοῖς διήκουσαν σω-  
 κρατίου. καὶ τόβουλα. ἐρμολόγους. ὑπὸ γῆρας. κτησιπ-  
 πῶ. ὁ δ' οὖν καὶ τῶν σχολῶν γέγραφε γὰρ ἐν ἐνὶ φι-  
 ρομῶν βιβλίῳ ἑωταηχίδεκα σὺν ἑποικηγραμμί-  
 νου. ὅπ' ἐκ τῶν μαθεῖν οἱ ἀγαθοί. πῶς τὸ πλεῖον  
 ἔχει. πῶς τὸ ὑπὸ τῆς εἰσῆς, ἢ πρὸς τὸν πλεον.  
 πῶς τοῦ μαθητοῦ. πῶς ἐνθυμοσύνης. πῶς νό-  
 μου. πῶς τοῦ θεοῦ. πῶς τεχνῶν. πῶς σωου-  
 σίας. πῶς σοφίας. πρῶτα φῶς ἢ πρὸς τὸν πλεον.  
 γραμμάτων. πῶς πρὸς τὸν πλεον. πῶς τὸν  
 μαθεῖν. πῶς τὸν γυνῶναι, ἢ πῶς τὸν ὑπὸ τῆς  
 σαφῆς.

## ΣΙΜΩΝ

**Σ**ΙΜΩΝ ἀθλιωαῖς συνυπόμῳ. ἔτ' αὖ ἐρχομῶ  
 νου σωκρατίου ὑπὸ τῶν ἐργασίμων, καὶ σχολῶν  
 γομῶν πινὰ, ὡς ἐμνημόνευε ἑποικημειώσεις ἐπὶ εἰς.  
 ὅθεν συνυπόμῳ αὐτοῖς σὺν σχολῶν μαθητοῖς. αἱ  
 σὶ δὲ τρεῖς καὶ τετακτοντα γὰρ ἐνὶ φερόμενοι βιβλίῳ.  
 περὶ θεῶν. πῶς τοῦ ἀγαθοῦ. πῶς τὸν μαθητοῦ, πῶς  
 μαθητοῦ. πῶς διηγήσιον πρῶτον διδύτῳ. πῶς ἀ-  
 ρετῆς ὅτι οὐ διδασκῶν. πῶς ἀνδρείας πρῶτον  
 διδύτῳ



διδύττορον, τείτρν. πόδι νόμσ. πόδι δημαγωγίας. πε  
 ει τρήσεως. πόδι ευπατίας. πόδι έρωτθ. πόδι φιλο  
 σοφίας. πόδι υψήμης. πόρι μσσηκής. πόρι τρήσει  
 ως. τί ρ ηαλόρ. πόρι διδασκαλίας. πόρι το δαλί  
 γαται. πόρι κείσεως. πόρι το οντθ. πόρι αριθμθ.  
 πόρι υψμελείας. πόρι το εργαζεσθαι. πόρι φιλο  
 κροδθς. πόρι αλαζονείας. πόρι το ηαλού. οι δέ, πόδι  
 τοι βουλδύεαθ. πόρι λόφου. ή πόρι υψηκλειότητθ.  
 πόρι ηακουεργίας. ετθ φασί. πρῶτθ διελέχθη  
 σθς λόγσθ σθς σωκρατικύς. έπαγγελιαμγνθ δέ  
 πόδι κλέσθ θρέψειρ αὐτῶν καὶ κελδύοντθ άπιρνάι  
 πρὸς αὐτῶν, εὐ αὐτῶν έφη τῶν παρῶνσίων άκροδύσθαι. γε  
 γονε δέ καὶ άλλθ σίμων, δηρειακὰς τέχνας γεγρα  
 φώς. καὶ έτθρθ ίατρός ήτλ σέλδουκωρ τῶν νηάνορα,  
 καὶ πς ανδρειανρηπίος.

## ΓΛΑΥΚΩΝ

Γλαύκωρ άθλωαίθ, καὶ τῶτθ φόρονται εν ενί  
 διαλσοι εννία. φειδυλθ. ενειπίδης. άμωπι  
 χθ. ενδίας. λυσιθειδης. αρισσοφάνης. κίφαλθ. ανια  
 ξίφημθ. μνίξενθ. φόρονται καὶ άλλοι δύο καὶ  
 τριώκοντα, οι νοθδύονται.

## ΣΙΜΜΙΑΣ

Σιμμίας ο θηβαίθ, καὶ τῶτθ φόρονται εν ενί  
 διαλσοι τρεῖς καὶ έικοσι. πόρι σοφίας. πόρι  
 αληθείας. πόρι γραμματῶν. πόρι διδασκαλίας.  
 πόρι τέχνης. πόρι το υψατεῖρ. πόρι πρέπυρς.  
 πόρι.

ποδὶ αἰρετοῦ, καὶ φονκτο. ποδὶ θίλυ. ποδὶ το εἰδέν  
 ναι. ποδὶ ψυχῆς. ποδὶ το ἐν ζῶν. ποδὶ δωατο. πε  
 εὶ χερματῆν. ποδὶ ζωῆς. πῖ ῥ ηγλόμε. ποδὶ ὑμμε  
 λείας. ποδὶ ἔρωτῳ.

## ΚΕΒΗΣ

**Κ**Εβης ὁ θηβαῖος, καὶ τὰ τὰ φέρουνται διὰ λόγον  
 τρεῖς. πῖναξ. ἐβδόμη. φρυγίχῳ.

## ΜΕΝΕΔΗΜΟΣ

**Μ**Ενέδημος ἔτῳ τῷ ἀπὸ φαίδωνος κλειδί.  
 νου τοῦ τῷ θεοπροπιδῶν ηγλαυμγῆς ὑὸς αὐ  
 τοῦ ἐν γένος μὲν. ἀρχιτέκνυτῳ δὲ καὶ πρῆντῳ.  
 οἱ δὲ καὶ σκυλοφύλακον αὐτὸν εἶν φασί. καὶ μαθεῖν  
 ἐκ τῶν ἄλλων μὲν ἐν δὲ μορ. ὅθεν γραφάντῳ αὐτοῦ φῆ  
 ρισμῶν ηγλῆτα τοῦ ἀλεξίνεῖς εἰσῶν. ὡς ἔτε  
 σκυλῶν ἔτε φῆρσιμα προσήκει τῷ σοφῷ γράφειν.  
 πεμφθεὶς δὲ φρουρὸς ὁ μὲν ἐν δὲ μορ. ἔπειτα τῷ ἱερεῖ  
 ἰωρ εἰς μέγαλα, ἀνῆλθεν εἰς ἀγαθὴν μίαν πρὸς πλο  
 τωνα, καὶ θηραθεὶς ηγτέλιπε τῶν στρατείαν. ἀσκλη  
 πιδῶν δὲ τοῦ φλιασίου ποδὶ ἀπώσαντῳ αὐτὸν ἐγ  
 νοῦ ἢ μεγαλοῖς παρὰ σίλπωνα. ἔπειτα ἀμφότεροι  
 δίκηκουσαν. καὶ τεῦθεν πλῆσαντῳ εἰς ἡλιν, ἀγχι  
 πύλῳ καὶ μόσχῳ ῥίς ἀπὸ φαίδωνος παρέβαλον.  
 καὶ μέχει μὲν τὰ τῶν ὡς προείρηται ἢ τῷ ποδὶ  
 φαίδωνος, ἡλειακῶν προσφορδύον. ἱερεῖοι δ'  
 ἐκλήθησαν ἀπὸ τῶν πατρίδῳ τοῦ ποδὶ ἔο λόγῳ.  
 φαίνεται δὲ ὁ μὲν ἐν δὲ μορ. σεμνὸς ἰσχυρῶς γῆ ἰσχυρῶς.





ἤρ' πυθόμηνον εἰ γῆμοι ὁ ἀπουδαῖο ἔφη. πρότερον  
 ἐγώ σοι ἀπουδαῖο δοκῶ ἢ ἔ; φήσαντο δὲ εἶν' ἐγὼ  
 γίνωμαι εἴπε γκαλμνηα. πρὸς δὲ ἤρ' εἰπὺντα πρὸς  
 τὰ ἀγαθὰ, ἐπύθετο πρὸς ἤρ' ἀριθμόν. καὶ εἰ νομίζει  
 πλείω τῷ ἡγατόν. μὴ δυνάμεν δὲ τῷ ἡγατού  
 τωρ ὡς δ' εἰπνορ τινὸς ποδελείρ τινὸς πολυτέλει  
 αρ, κληθεῖς ποτὶ ἔδερ μὲν εἴπε. σιωπῶν δ' αὐτὸν  
 ἐννοήθησε, μόνας ἐλαίας προσγεγκαλμνηο. δὲ  
 δὴ οὖν τὸ παρρησιασικὸν τοῦτο μικροῦ καὶ ἐκιν  
 δυνάμεν ἐν κύπερ, παρὰ νικηρέοντι σὺν ἀσκλη  
 πιαδῇ ἔφ' ὅλῳ. τοῦ γὰρ τοι βασιλείως ὡς μὴ  
 νιορ ἰορτῶν τελευτῶν καὶ ἡγλίσαντο καὶ τοῦ  
 τος ὡς πὺρ τὸν ἄλλος φιλοσόφους, τὸν με  
 νίδημον εἰπεῖν. ὡς εἰ καλὸν ἡν ἢ τῶν τοιούτων  
 ἀνδρῶν συναγωγὴ καὶ ἡμῶν εἴδει γίνεσθαι τῶν  
 ἰορτῶν. εἰ δ' οὐ, ποδελῆως καὶ νῦν. πρὸς δὲ τοῦ  
 το ἀπαντήσαντο τοῦ τυραννοῦ, καὶ εἰπόντο  
 ὡς ταύτῳ τῶν ἡμῶν ἔχει σχολάζουσιν πρὸς  
 τὸ διακρούειν φιλοσόφους, ἔτι καὶ μᾶλλον αὐστηρό  
 τερον ἐνέκειτο, δεικνύς ὡς τῆς θυσίας ὡς χεῖ  
 πάντα καὶ ἐν φιλοσόφους ἀκρούειν. ἔως εἰ μή τις  
 αὐλητὴς τὸν διεπέμψατο, καὶ ἀπώλοντο. ὁ  
 θεν χεμαρομγῶν ἐν ἔφ' πλοῖον τὸν ἀσκληπια  
 δῶν εἰπεῖν. ὡς ἡ μὲν τοῦ αὐλητοῦ ἐνμουσία σέ  
 σωκεν αὐτούς. ἡ δὲ τοῦ μενεδήμου παρρησία αὐ  
 πολώλεκεν. ἡν δ' εἴ φασι, καὶ ἐκκλίτης, καὶ τὰ



ὦν ὁλοῦς ἀδωφόρεθ· ἔτε γοῦν τάξιμ πινὰ λῶ παρ  
 αὐτῷ βλέπειμ ἔτε βαλθρα κύκλω δέκειρ· ἀλλ' οὐ  
 αὖ ἐγασθ' ἐτυχε ποδπατῆν ἢ καθήμενθ' ἤκουε.  
 καὶ αὐτὸ ῥῶσθ' ῥῃ τρόπῃ δακρυμένθ' ἀγωνιαίης  
 μὲν γιφασίμ λῶ ἄλλως καὶ φιλόδοξεθ· ὥς τε ῥ  
 πρότοδον τέκνῃ σιωοικροδομοῦντος αὐτῶς τὲ καὶ ὁ  
 ἀσκληπιαίδης, ὁ μὲν ἀσκληπιαίδης ἐφαίνετ' ἑγμ  
 νὸς ὡδ' τοι τέγυς ῥῃ πηλὸν παραφάρωμ· ὁ δέ, εἴ π  
 να ἴδῃ ἐρχόμενον παρεκρύπτει· ἐπειδὴ ἦταρ τῆς  
 κλιτείας οὕτως λῶ ἀγωνιαίης ὥς τε καὶ ῥῃ λιβα  
 νῶν τῇ πθεῖς δὴμαρτε καὶ τοι θυμὰ τηρίσ· καὶ πρτε  
 κρεάτηθ' ποδῖσαμμένου αὐτῶν, καὶ καδατρυμένης  
 εἰς ῥ' ὅπῃ κλιτύνεται, ἐκίλδουσε ποίμ εἰς ῥ' δόδμω  
 τηιορ ἐμβαλεῖν αὐτόν· ῥῃ δέ, μηδὲρ ἦτορ τηρεῖν  
 παρόντα καὶ ἐπὶ κύωνται, ἀγαμεμνόνειόν τε ῥ  
 ἠγασίπτελιν ἀκρηγλεῖν· λῶ δέ πως ἡρέμα καὶ δεισι  
 δαιμονέσδεθ· (λῶ γοῦν ἀσκληπιαίδῃ κατ' ἀγνοίαν  
 ἐν πανδοκείῳ κρεάτῃν ῥιπρυμένωμ φαγών, ἐπειδὴ  
 μάθοι ἐναυτία τὲ καὶ ὠχρία· ἔως ἀσκληπιαίδης ἐν  
 πέπμησεν αὐτῶν, ὥς ἔδεμ εἰπὼν ἠνώχλησεν αὐτῶν  
 τὰ κρέα, ἢ δέ ποδὶ τῶ τῶν ἐπὶ νόσια· τὰ δ' ἄλλα μεγα  
 λόφυχθ' ἀνὴρ λῶ καὶ ἐλδύθειθ· κατὰ τε τῶν ἐν  
 ξίμ τῶν σωματικῶν ἦδη καὶ πρὸς βύτης ἐπαφῶν  
 ἔδεμ ἦτορ ἀθλητὶς σφιδὸς τὲ καὶ ὡπλκεαυμένηθ· ῥ  
 εἶδθ'· πίων τὲ καὶ τετριμμένηθ· ῥ δέ μέγεθθ'  
 σύμμετρεθ, ὥς δὴλον ἐκ τοι εἰρηνίῃ τοι ἐν ἐρετρίῃ  
 ἐν τῷ

ἐν τῷ ἀρχαίῳ σαδίου. ἔστι γὰρ ὡς ἐπὶ τῆς δόξης παρὰ  
 γυμνοῖ, τὰ πλεῖστα μὲν φαῖνον τὸ σῶμα τῷ. ὡς δὲ  
 καὶ ἐκλυττόμενον. καὶ οὕτως ἡ νοσῶσα δὲ ἐρετρίας  
 πλείω σωματικῶν συμπτώσεων. ἐν οἷς καὶ πρητῶν καὶ  
 μεσσηνῶν. ἡσυχάζει δὲ καὶ ἀφάρτη καὶ λυγρόφρωννα  
 ἢ τῇ τραγωδίᾳ πρητῶν. καὶ ἢ ῥόδιον ἀντατό-  
 ραν. μάλιστα δὲ πάντων ὁμήρων προσείχων. εἴτα καὶ  
 τῆς μελιχρῆς. ἐπειτα σφοκλῆς, καὶ δὴ καὶ ἀχαιῶ.  
 ὡς πρὸς καὶ διδυμόρειον ἐν τῆς σατύροις, ἀσχυλῶ δὲ  
 ἢ πρῶτον ἀπεδίδο. ὅθεν καὶ πρὸς αὐτὸν ἀντιπρὸς  
 τῶν μὲν τῶν ταῦτα φασὶ προσεφύκει.  
 ἡλίσκετ' ἀφάρ καὶ πρὸς ἀστυνῶν ταχὺς,  
 καὶ πρὸς χελώνης ἀεὶ βραχέϊ χρόνῳ.  
 ταῦτα δὲ ὅστις ἀχαιῶς ἐκ τῇ σατυρικῆς ὁμοφύλης.  
 ὡς τε πᾶσι τοῖς οἱ λέγοντες μὲν αὐτὸν ἀνεγνωκέν-  
 ναι πλὴν τῇ μνηστῆρας τῇ ἐνυπιδίᾳ, ὡς ἐν τῆς νεό-  
 φρονος. εἴη τοῖς σικυωνίᾳ φασί. τῶν δὲ διασημάτων  
 τῶν πρὸς πλάτωνα καὶ ξυνοκράτῳ ἐπὶ τὴν παραιβά-  
 τῳ ἢ κυρίως αὐτὸν ἡσυχάζει. σίλῳνα δὲ ἐτεταυ-  
 μάκει. καὶ πρὸς ἐρωτηθεὶς πρὸς αὐτὸ, ἄλλο μὲν ἔδερ  
 εἶπε πλὴν ὅτι ἐκλυττόμενον. ὡς δὲ καὶ δυσσητάνων  
 ἢ ὁ μὲν δὴμος, καὶ ἐν τῷ σωματικῷ δυσσητάνων  
 εἶπε. ἐτρίφετό τε πρὸς πάντα καὶ ἐνυπιδίᾳ. εἰς  
 κώτατος τε ἡσυχάζει φησὶ ἀντιπρὸς ἐν τῇ σατυρικῇ  
 ὡς. καὶ δὴ καὶ τὸδε ἐρωτᾷ εἰώθει. ἢ ἔτορρον τοῖς ἐτε-  
 ροῖς ἔτορρον ὅστις; ναί. ἔτορρον δὲ ὅστις ἢ ὠφελεῖν τοῖς ἀ-



γαθοῖς ναί. ἔκ αὖρα ὃ ἀγαθὸν ὠφελῆν ὅστις. ἀνὴρ  
 δὲ φασὶ καὶ τὰ ἀρφατικά τῶν ἀξιωματῶν, κατὰ φα  
 πικά πθεῖς. καὶ τὸ τῶν τὰ ἀπλᾶ προσδεχόμεν  
 τὰ ἔχ ἀπλᾶ ἀνὴρ, λέγων συνημμένα καὶ συμπε  
 πλεγμένα. φησὶ δ' Ἡρακλείδης ἐν μὲν τοῖς λόγμοι  
 σι, πλατωνικὸν εἶν αὐτόν. διαπαίρει δὲ τὰ διαλει  
 κτηνᾶ. ὥς τε ἀλεξίνδρ πρὶ διδρωτῆσαντο εἰ πῆ  
 παντα ὅρ πατόρα τύπῳ, ἀλλ' ὅτ' ἐτυπῶν φαῖναι  
 ὅτε πέπαιμαι. πάλιν τ' ἐκείνδρ λείοντο, ἐχελῶ  
 εἰρήντα ναὶ ἢ ἐλύσαι τῶν ἀμφοβολίαν, γαστρίον εἶπε  
 τοῖς ὑμετέροισ νόμοις ἀκροβυθεῖν, ὅστις ἐν πύλαις αὐ  
 πβλῶναι. βίωνος τε ὑπὸ μελῶς κατὰ τρεῖς χυτο τῶ  
 μάντωρ, νεκρὸν αὐτὸν ὑποσφάττειν ἔλεγε. καὶ πρ  
 τὲ πιντο ἀκούσας ὥς μέγιστον ἀγαθὸν εἶν ὃ πάν  
 τῶν ὑπὸ τυγχάνειν ὅρ πρὸ ὑπὸ θυμῶν, εἰπεῖν. πρὸν δὲ  
 μέγιστον ὃ ὑπὸ θυμῶν ὅρ δ' εἶ. φησὶ δ' ἀντίστοντο ὁ κα  
 ρύσιτο γράφαι αὐτὸν μηδὲρ μηδὲ σωτάξαι. ὥς τε  
 μηδὲ σφαιρεῖν ἐπὶ πιντο λόγμοιτο. ἐν δὲ ταῖς ζη  
 τησεσι φησὶν ὥς μαλχιμῶν, ὥς θ' ὑπὸ πῶτα φέ  
 ρων ἀπῆει. ὅμως δ' ὅσω ριθτο ἐν τοῖς λόγοις ὑ  
 πάσχων, ἐν τοῖς ἔργοις πρῶτα τοῦ λῶ. ἀλεξίνδρ γὰρ  
 πρὸ κατὰ παίξων καὶ σκληρῶς ὑποκώπῳ τῶν ὅμως  
 αὐτὸν ἐν ἐπίνοσε, τῶν γυναικῶν παραπίμψας ἐκ δελ  
 φῶν ἔως χαλκίδο, ἐν λαβομένην κλωπείας τὴν  
 τὰς κατ' ὁδὸν ληθείας. οἶλτο τὴν λῶ μαλιστα, ὥς  
 δῆλον ἐκ τῆ πρὸς ἀσκληπιάδῳ συμπνοίας, ὅστις

πιδραφδούσης πυλάδου ελαιοργίας· ἀλλὰ πρὸς  
 βύτορ· ἀσκληπιάδης. ὡς λέγεται πρὶν τὴν αὐ-  
 τὸν μὲν εἶναι. ὑποκρίτῃ δὲ μενέδημον. καὶ πρὶν φα-  
 σιν ἀρχιπόλιδ· τριχίλια αὐτοῖς δαχρύλαιαν  
 τὸν, σφαιρομένην τοῦ πόδι τοῦ τίς δούτορ· ἀρῇ, μὴ  
 δέτορον λαβεῖν. λέγεται δὲ καὶ γυναικὸς ἀγα-  
 γίας αὐτῆς. ὡν τὴν μὲν θυγατέρα ἀσκληπιάδην,  
 τὴν δὲ μητέρα μενέδημον. καὶ περὶ ἐτελεύτησε  
 τοῦ ἀσκληπιάδου ἡ γυναικὶς, λαβεῖν ὃ τοῦ μενέ-  
 δήμου. ἐκείνου τὴν ἐπειδὴ πρὸς τῆς πολιτείας  
 πλουσίαν γῆμαι. οὐδὲν μὲν γὰρ ἦτορ μᾶς οὐσης δι-  
 κίας ὑπὸ τῆς τὸν μενέδημον τὴν διοίκησιν τῇ  
 προτέρα γυναικί. ὁ μὲν γὰρ ἀσκληπιάδης προη-  
 τέρεται ἐν ἐρετρίᾳ γυναικὸς ἦδη συζήσας τοῦ με-  
 νεδήμου σφόδρα ἐντελῶς ἀπὸ μεγάλων. ὡς τε καὶ  
 μετὰ χρόνον ἐλθόντ· ὑπὸ κῶμον ἐρωμένου τοῦ ἀ-  
 σκληπιάδου, καὶ τῇ νεανίσκῳ ἀρχιεῖον τῇ αὐ-  
 τῇ, ὁ μενέδημος ἐκείλυσεν εἰς δέξασθαι εἰπὼν. ὅ-  
 τι ἀσκληπιάδης αὐτοῦ καὶ κατὰ γῆς ὡν τὰς θύρας  
 ἀνοίγει. ἦσαν δὲ οἱ σωμαρτηρήσαντες αὐτῆς, ἵππων  
 νικῶν τὴν ὁ μακεδὼν καὶ ἀγῆτωρ ὁ λαμδύς. ὁ μὲν, ἐν  
 κατόρῳ δούτιν τεύκοντα μῆας, ὁ δὲ ἵππων νικῶν μὲν  
 δῆμῳ εἰς ἐκδοσιν τῇ θυγατέρῳ διαχίλιας δρα-  
 χμάς. ἦσαν ἡ τρεῖς κατὰ φησιν ἡρακλείδης δὲ ὠρωπί-  
 ας αὐτῶν γυναικὸς γένηται. τὰ ἡ συμπρία ἔδωκεν  
 ἐπὶ τῇ τῇ τρέπον. προηῖσα μὲν δούοις ἢ τεύκῳ ἕως  
 βραδείως



βραδείως ἡν ἡμῶρας. ἔπειτα τις ἐν ἡμέρᾳ αὐτῇ πα-  
 ραγνομένης καὶ αὐτῇ ἡδὴ δεδειπνηκότας, ὥς τε  
 εἰς τὸν ἔλθοι θάπτορ ἀναγκάσμεν τῶν ἐπωπείων τῶν θει-  
 ὄντων τίς ἢ παρακείμενον, καὶ πῶς ἔχει το ἡρόν.  
 εἰ μὲν ὅν λαχάνιον ἢ ταρίχιον, ἀνεχώρου. εἰ δὲ κρεά-  
 διορ, εἰσέδοσαν. ἡ δὲ το μὲν θόρυβος ἡίαθος ὡδὲ τῶν  
 κλινῶν. το δὲ χειμῶνος κώδιορ. προσκεφάλαιον αὐ-  
 τῶν φόρβον ἔδιδ. τὸ τε ποδιασόμνον πρῆτορ ἔμειζον  
 ἡν κοτυλιαῖς. τράχημα θόρυβος ἢ κύαμος. εἰσι δ' ὅτε  
 καὶ τῶν ὠρίων ἄπιος ἢ ῥόα ἢ ὠχεοι ἢ νηδὶ ἰοχάδου.  
 ἂ πάντα φησὶν ὁ λυκρόφρων ἐν τῇ πεπρημένῳις σα-  
 τύροις αὐτῶν, ὅς μιν ἔδιδον ἐπὶ γράψιν, ἐγκώμιον  
 το φιλοσόφου πρὸς τὸ δῶμα. ὦρ καὶ πνα δὲ  
 τριαυτί.

ὡς ἐν βραχείᾳς δαιτὸς ἢ βασιὰ κύλιξ  
 αὐτῇς κυκλῆται πρὸς μέτρον, τράχημα δὲ  
 ὁ σωφρονιστὴς τῇς φιληκρόις λόφος.

τὰ μὲν οὖν πρῶτα κατεφρονεῖν. κύων καὶ λῆρος  
 ἔσθ' ὅτ' ἐρετρίων ἀκρόων. ὕσθρον δ' ἔσθ' αὐμάθη,  
 ὥς τε καὶ τὴν πόλιν ἐγχειρίσασθαι. ἐπὶ σβού-  
 σε δὲ καὶ πρὸς πρλεμαῖον, καὶ λυσίμαχον, τιμῶ-  
 μιν πανταχοῦ. ὅν μὲν ἀλλὰ καὶ πρὸς δημή-  
 τειον. καὶ τῇς πόλεως διακρόσια τάλαντα τελοῦ-  
 σης πρὸς ἔτ' αὐτῶν, τὰ πρῆτῃοντα ἀφείλει.  
 πρὸς ὅν διαβληθεὶς ὡς τὴν πόλιν ἐγχειρίζων πρὸ  
 λεμαίῳ, ἀκρογῆται δι' ὡς σολῆς, ἢς ἢ ἀρχή.

Μενέλαος

Μηνίδην βασιλεὶ Δημητρίῳ χαίρειν.

Ακούω πρὸς σὲ ἀνατεθῆναι πόδι ἡμῶν.

Λόγῳ δὲ διαβλέπειν αὐτὸν τῷ ἀντιπρλιτονομί-  
νων πρὸς αὐχόλῳ. δοκεῖ δὲ ἰμβελθίσαιτα πρὸς βεῦ-  
σαι πρὸς δημήτριον ἑστῶν τοῖς ὤρωσιν, ὡς καὶ ἔνφαν-  
τος ἐν ἰσορίαις μνημονόει. ἡ γὰρ παρὰ αὐτὸν καὶ  
ἀντίφονος, καὶ μαθητῶν ἀνεκέρητῶν αὐτὸν, καὶ ἡνί-  
κα ἦν βαρβαρὸς πόδι λυσιμαχίαν γραφει-  
φῆσιμα αὐτῷ μνηδηνὸς ἀπολαῦν τε καὶ ἀνέλα-  
σον. ὅς ἡ ἀρχή. Οἱ στρατιῶται καὶ οἱ πρόβουλοι εἶπεν.  
ἐπειδὴ βασιλεὺς ἀντίφονος μάχῃ νικήσας αὐτὸν βαρ-  
βαρὸς παραγίνεται εἰς τὴν ἡλείαν. ἔταλλα πάν-  
τα πλάσσει καὶ γνώμην, ἔδωκε τῇ βουλῇ καὶ τῷ δὴ-  
μῳ. ὅρα ταῦτα δὴ καὶ τὴν ἄλλαν φιλίαν ἑσπῶν, ὡ-  
ς προσιδόναι τὴν πόλιν αὐτῷ διαβάλλοντος  
ἀριστοδῆμος, ἑστῶν ἡλθε. καὶ δέτεται ἐν ὤρωσιν, ἐν  
τῷ τοῦ ἀμφιάρου ἰδῶν. ἦν δὲ χρυσῶν ποτηρίων  
ἀρτομηνίων καὶ ἀφῆσι ἐρμηπῶ, δόγματι κοινῷ  
τῷ βοιωτῷ ἐκελευσθῆναι μετελθεῖν. ἦν τεύθειν ἀθυμῆ-  
σας λαθραίως παρεισδυεῖς εἰς τὴν πατρίδα, καὶ  
τὴν τε γυναικα καὶ τὰς θυγατέρας παραλαβὼν,  
πρὸς ἀντίφονον ἔλθων, ἀθυμῆα τὸν βίον κατέστρεψε.  
φησὶ δὲ αὐτὸν Ἡρακλείδης πᾶν τὸν ἀντίφονον πρόβου-  
λον γνόντων τῷ ἐρεταίῳ, πρὸς αὐτὸν ἔλθοντες  
τὴν πόλιν ἀπὸ τῶν τυραννῶν ἐπαγόμενον δημήτρι-  
ον. ὅς ἡ δὲ οὕτω προσιδόναι αὐτὸν ἀντίφονον τὴν πό-



λιμ. ἀλλὰ σφραβόλιω ἀναλαβείμ' ἰδοῦθ'. φοιταῦν τε  
 πρὸς ἑμ' ἀντίγονοι, καὶ βύλευσαι ἐλθὺνθ' ὥσπερ τῶν  
 πατερίδα. τοὶ δὲ μὴ εἰκοντο, ὥσπερ ἀθυμίας ἀσιτη-  
 σάντα ἑωτὰ ἡμῶν ἑμ' βίον μετὰ λαῖμα. τὰ ὅμοια  
 τὸ τῶ (ὃ) ἀντίγονοι ὁ καρύσιτο ἰσορεῖ. μόνω δὲ πόρ-  
 σαίω σφραβύσιοι εἶχε πρὸς πόλεμον. ἰδόνει γὰρ ἀντίγονοι  
 βυλόμενοι τῶν δημοκρατῶν ἀσφαλιστῶναι τοῖς ἐρε-  
 τεινῶσι χέρι μιν δήμεν, κωλύσαι. διὸ καὶ πρὶν πα-  
 ρὰ πόλεμον ὁ μιν δήμεν ἐλέγξας αὐτοὺς τοῖς λόγοις,  
 τὰ τε ἄλλα ἔφη, καὶ δὴ φιλόσοφοι μὲν τοῖς τοῖς,  
 ἀνὴρ δὲ καὶ τῶν ὄντων καὶ τῶν γνησιωμένων ἡγάμισος.  
 ἱελεύτα δὲ καὶ ἑμ' ἡρακλείδῳ τέταρτον καὶ ἑβδ  
 μνηστὸν ἔτ' ἐβίβας. καὶ εἰς αὐτοὺς ἡμῶν ὅστις ὄντως  
 ἔχρη. ἐκλυοι μιν δήμεν τοὺς μόρον ὡς ἐκὼν ἀπέσθης  
 τὴν ἡμῶν ἑωτὰ μιν δήμεν δὲ δίδωρ. κατ' ἐρετον ἔρετας ἐ-  
 ρετεινόν, ἀλλ' ὅμως ἀνάνδρον. ἀφύχην γὰρ ἡμῶν  
 ἐπειγ. καὶ ὅτι μὲν οἱ σωκρατικοί, καὶ οἱ ἀπ' αὐτῶν.  
 μεπτερον δὲ ὡς πλάτωνα τῶν τῶ ἀνδρῶν  
 μίας ἡγαρξάντα, ὃς ἀπ'  
 αὐτοὺς ὅσοι γέγονα  
 σιν ἐλλόγιμοι.

ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ ΛΑΕΡ-  
ΤΙΟΥ ΒΙΩΝ ΚΑΙ ΓΝΩΜΩΝ ΤΩΝ ΕΝ  
ΦΙΛΟΣΟΦΙΑ ΕΥΔΟΚΙΜΗΣΑΝ-  
ΤΩΝ ΤΩΝ ΕΙΣ ΔΕΚΑ  
ΤΟ ΤΡΙΤΟΝ

ΠΛΑΤΩΝ



Λάττωρ ἀείρων Θ καὶ ποδὶκτόνης  
ἢ πρῶτης ἀθλῶν Θ, ἢ πρὸ γένε-  
σιν ἀνέφθρεν εἰς σόλων. τὰς γὰρ  
ἀδελφὸς δρωπίδης, ὃς κριτίας, ὃς καὶ  
λαοχρεῖς, ὃς κριτίας ὁ τῶν τειάκων  
τα, καὶ γλαύκων, ὃς χαρμίδης, καὶ ποδὶκτόνης. ἦς  
ἀείρων Θ πλάτῳ, ἐκ τῶν ἀπὸ σόλων Θ. ὁ δὲ σόλων  
εἰς νηλῖα καὶ προσιδῶνα ἀνέφθρε τὸ γένος. φασὶ δὲ  
καὶ τὸν πατὴρα αὐτοῦ ἀναλγεῖν εἰς κρόνον τὸν με-  
λαίνον. οἱ πινὸν ἀπὸ προσιδῶν Θ ἰσοροῦνται καὶ θρα-  
συλον. ἀπὸ σιππος δ' ἐν ᾧ ὑπὸ γραφομένη πλάτῳ  
ποδιδείωνται, καὶ κλῆαρχος ἐν τῷ πλάτῳ ἐγκω-  
μῶν, καὶ ἀναξιλίδης ἐν τῷ δίδυμῳ ποδὶ φιλοσόφου,  
φασὶν, ἀθλῶνσι μὲν λόγῳ, ὡραίαν δ' ἔσται τῷ ποδὶ  
κτόνῳ βιάζεσθαι τὸν ἀείρωνα καὶ μὴ τυγχάνειν.  
παυρόμηνον τε τῆς βίας ἰδεῖν τὴν τοῦ ἀπὸ λωνος ὁ-  
τις, ὅθεν κατὰ τὴν γὰρ φυλάξαι ἕως τοῦ ἀρκύν-  
σεως



σεως. καὶ γίνεται πάλ᾽ τῶν ὡς φησιν ἀρχιλόδωρ  
ἐν χρονικοῖς ὀγδόῃ καὶ ὀγδοηκοστῇ ὀλυμπιαδὶ διατρι-  
γυλιδυῖν ἐβδόμῃ, καὶ ἡ δὲ δῆλιος ἄρ' ἀπὸ τῶν γε-  
νέσθαι φασί. τελευτᾷ δ' ὡς φησιν ἑρμιππὸς ἐν γυμ-  
μοῖς δειπνῶν, ἔθ' πρῶτῳ ἔτει τῇ ὀγδόῃ καὶ ἑκατο-  
στῇ ὀλυμπιαδὶ. βιτὺς ἔτ' ἐν πρὸς τοῖς ὀγδοῇ  
κοντα. νεανίης δὲ φησιν αὐτὸν τετάρτῳ καὶ ὀγδοῇ  
κοντα τελευτῆσαι ἐτῶν. ἔσιμ' οὖν ἰσοκράτους νεώτε-  
ρος ἔτεσιν ἔξ. ὁ μὲν, γὰρ ὡς λυσισμάχῳ. πάλ᾽ τῶν δὲ  
ὡς ἀμεινίσ γέγονεν, ἐφ' ᾧ ποσειδάων ἐτελεύτησεν. ἡ δὲ  
δὲ τῶν δῆμων κολυτῶν. ὡς φησιν ἀντιλέων ἐν δευ-  
τέρῳ ποσειδάωνος. καὶ ἐγέννηθη κατὰ πινυας ἐν αἰγί-  
νῃ, ἐν τῇ φειδιαδου οἰκίᾳ τοῦ δαλῆτος. ὡς φησι φα-  
βωρίων ἐν πανρδιαπῇ ἰσορίᾳ. τοῦ πατρὸς αὐτοῦ με-  
τὰ καὶ ἄλλων πεμφθέντος κληρῶν. καὶ ἐπανελ-  
θόντος εἰς ἀθλῶας ὁπρὶν ὑπὸ λακεδαιμονίων θξεν-  
βλήθησαν βοηθούτων αἰγινίταις. ἀλλὰ καὶ ἐχρή-  
γησαν ἀθλῶνσι δίωντος ἀναλίσκοντος, ὡς φησιν ἀ-  
θιωδόδωρ ἐν ποσειπάτῳ. ἔχε δ' ἀδελφὸν ἀδελ-  
μάνην καὶ γλαύκωνα, καὶ ἀδελφὸν πετῶνιν. θξ ἦν  
ἡ ἀποσίσιππος. καὶ ἐπαίδευσθαι μὲν γυμνασια κα-  
τὰ διονυσίῳ. ὃ καὶ μνημονεύει ἐν τοῖς ἀντοδρασίς.  
ἐγυμναστὰς δὲ παρὰ ἀρίστον ἔθ' ἀργεῖω παλαι-  
στῇ. ἀφ' ᾧ καὶ πάλ᾽ τῶν δὲ τῶν ἐνδίαυ μετωνομάσθη,  
πρότορον ἀριστοκλῆς ἀπὸ τοῦ πάππου καλούμενος ὁ  
νομα, καὶ δὲ φησιν ἀλέξανδρος ἐν δειδοχαῖς. ἐννοῖ  
δὲ

δὲ δὴ τὴν πλατύτητα τῇ ἐρμυνείας οὕτως ὀνομα-  
 δῶμαι. ἢ ὅπ' πλατὺς ἦν ὁ μέτωπος ὡς φησι νεανί-  
 θης. εἰσὶ δ' οἱ καὶ παλαιῶν φασὶν αὐτὸν ἰσθμοῖ, καὶ  
 θὰ καὶ διηγίαρχος ἐν πρώτῳ ποδὶ βίωρ. καὶ γραμ-  
 μῆς ὑπὸ μελὸς βῶναι καὶ πρὶν ἡμέματα γραμ-  
 μῆν δυνεῖσθαι βῶναι. ἔπειτα καὶ μέλη καὶ τραγωδί-  
 ας. ἰσχυρόφωνός τε φασὶν ἦν, ὡς καὶ πμόθεος φησὶν  
 ὁ ἀβλῶναι ἐν τῷ ποδὶ βίωρ. λέγεται δ' ὅτι σωκράτης  
 ὄναρ εἶδεν κύκλου νεοτῆρος ἐν τῇς γούασιν ἔχειν. ὄναρ σω-  
κράτης  
 ὁρ καὶ παραχεῖμα πτοροφυήσαντα ἀναπλήναι ἢ  
 δὴ κληγῆσαντα. καὶ μεθ' ἡμέραν πλοῦτων αὐτῷ  
 συσπῶναι. τὸν δὲ, ἑὸν εἶναι τὸν ὄντιν. ἐπιλοσόφει δὴ  
 τὴν ἀρχὴν ἐν ἀναδημῖα. εἶτα ἐν τῷ κήπῳ τῷ ποδὶ  
 τὸν κώλονον. ὡς φησὶν ἀλέξανδρος ἐν δὴ δολοχαῖς  
 καὶ ἡρώκλειον. ἔπειτα μὲν γὰρ μέλλων ἀγωνιῆσαι  
 τραγωδία πρὸ τοῦ δολυμπιακοῦ θεατρῶν, σωκράτης  
 ἀκούσας κατέφθινε τὰ πρὶν ἡμέματα εἰσῶν.  
 ἤφαισε πρόσμολ' ὧδε, πλοῦτ' ἢ νύρι σέιο χετίζει.  
 τὸν τε ὕβριν δὴ γέροντος φασὶν εἰρησιν εἶναι, δὴ κινου-  
 σωκράτης. ἐκείνου δ' ἀπελθόντος προσεῖχε κρα-  
 τὴν τὴν τῷ ἡρακλείτῳ καὶ ἐρμολύτῳ τῷ παρμε-  
 νίδου φιλοσοφοῦν. ἔπειτα γνόντων ὁκτώ καὶ εἰ-  
 κροσιν ἐτ' ἢ καὶ φησὶν ἐρμόδιωρος εἰς μέγαρον πρὸς  
 ἐν κλείδῳ (ὡν ἄλλοις ποσὶ σωκρατικοῖς ἔπειθ' ὡρ-  
 σεν). ἔπειτα εἰς κυρτῶν ἀπῆλθε πρὸς θεόδωρον τὸν  
 μαθηματικόν. καὶ κῆθον εἰς ἰταλίαν πρὸς τοῦ πύδα



σοεικούς φιλόλαον καὶ ἔννευρον. ἔνθεν τὶ εἰς αἶγυ  
 πόντον παρὰ τοῦ περφήτας. ὃ φασι καὶ ἐν ἐπίδω  
 αὐτοῖς ἀκρολουθῆσαι, καὶ αὐτὰ δι' νοσήσαντα πρὸς τῶν  
 ἰοδίων ἀκρολουθῶναι τῇ ὁδῷ θαλάττης θορύβει. ὅθεν  
 καὶ εἰπεῖν.

θάλασσα κλύζει πάντα τὰ ἀνθρώπων καὶ ἡμέ.

ἀλλὰ καὶ ἡ καὶ ὁ μῆτορ φαῖναι πάντας ἀνθρώπους αἶγυ  
 πῆλιν ἰατρὸς εἶναι. δειγνὼ δὲ ὁ πλάτων καὶ τὸς  
 μαλίστοις συμμῖξαι. ὁ δὲ τῷ ἀσίας πελῆμτος ἀπὲν  
 ση. ἐπανελθὼν δὲ εἰς ἀθλίως δέτριβεν ἐν ἀρχαῖς  
 αἰσθησίᾳ. τὸ δ' ὅστις γυμνασίον προῶσειον ἀλσὼς δὲ αἰ  
 πόντον ἡρώος ὀνομαδίην ἀρχαῖς μου, καὶ ἐν τῷ  
 λισ ἐν ἀστράτῳ τῷ φησί.

ἐν εὐσκήοις δρόμοισιν ἀρχαῖς μεθεῖ.

ἀλλὰ καὶ ὁ τῶν εἰς τὸν πλάτωνα λέγων φησί.

τῶν πάντων δ' ἡγεῖται πλατύνεται, ἀλλ' ἀφορητῆς  
 ἡδυνεπῆς, τέτιξιν ἰσογνώφῳ, οἱ θ' ἐκ ἀρχαῖς  
 διγῆσθαι ἐφεζόμενοι ὅσα λειοέσσαν ἰᾶσι.

πρότορον γὰρ ὁ δὲ εἰς ἀρχαῖς ἐκ ἀρχαῖς. ὁ δ' ἐν  
 φιλόσοφῳ καὶ ἰσοκρατεῖ φίλῳ. Ἐὰν αὐτῶν πρὸς  
 ξιφάνης σωίγραφε δέτριβῃ πῶς πρὸς τῶν γε  
 νομγνῶν ἐν ἀρχῇ παρὰ πλάτωνι ὑπὸ ξυνοχῇ τῷ  
 ἰσοκράτῳ. καὶ αὐτὸν φησὶν ἀειδέσθῃ τῶν ἐστὶν  
 τεύχεα. ἀπαξ μὲν εἰς ταύαρχαν. διότορον δὲ εἰς  
 κρύβον. τῶν μὲν δὲ δηλῶ. ἐνθα καὶ ἀεισεύει. μί  
 ξιν τὶ ἐπρήσκει τῶν τε ἡρακλειτέων λόγων καὶ  
 πύδα

πυθαγορικῶν, καὶ σωκρατικῶν. τὰ μὲν γὰρ αἰδοῦνται  
 καὶ ἡρώδης κλεινῶν. τὰ δὲ νοῦνται, καὶ τὰ πυθαγόρειαν. τὰ  
 δὲ πηλικῶν, καὶ τὰ σωκρατικῶν ἐπιλοφῶνται. λέγουσι  
 δὲ πύθων, ὡς ἔστι καὶ σάτυρος, ὅτι δίδωσι ἐπίσειλιν  
 εἰς σικελίαν ὠνήσασθαι τρία βιβλία πυθαγορικὰ  
 παρὰ φιλολάου μιν ἡρώδης. καὶ γὰρ ἐν ἐπιτομῇ  
 φασι μὲν, παρὰ Διονυσίου λαβὼν ὑπὸ τὰ ὀγδοήκοντα  
 τάλαντα. ὡς καὶ ὠνήτωρ φησὶ ἐν τῷ ὑπὸ  
 γραφομένῳ, εἰ χρηματίζεται ὁ σοφός. πολλὰ δὲ καὶ  
 παρ' ὑπὸ χάρμου τοῦ κομωδοκρίτου προσφέλλεται, τὰ  
 πλείστα μεταγραφεύσας. καὶ δὲ φησὶ ἄλκιμος ἐν τοῖς  
 πρὸς ἀμύντα, ὅτι τέτταρα. ἕνθα καὶ ἐν τῷ πρῶτῳ  
 τῷ φησὶ ταῦτα. φαίνεται δὲ καὶ πλάτῳ πολλὰ τῶν  
 ὑπὸ χάρμου λέγων. σκεπτικὸν δὲ ὁ πλάτων φησὶν, αἰδοῦν  
 ἢ μὲν εἶναι, ἢ μὴ εἶναι ἐν τῷ πρῶτῳ μὴ δὲ προσῶμεθα  
 μέτρον. ἀλλ' αἰεὶ ῥέον καὶ μεταβάλλον, ὡς δὲ ὡς αὐτὸς  
 ἀνέλεν ἢ ἀριθμὸν, τὸ τῶν ἔτε ἴσων ἔτε πινῶν ἔτε  
 προσῶν ἔτε πινῶν ὄντων. ταῦτα δ' ὅτι ὡς αἰεὶ γίνε-  
 σις, ὅσῳ δὲ μὴ εἶναι πεφύκεν. νοῦν δὲ, δὲ ὅ μὴ δὲ  
 ἀργίνεται μὴ δὲ προσγίνεται. ὅθεν δ' ὅτι ἢ τῶν αἰ-  
 δίων φύσις. μὲν ὁμοίαν τὴν αὐτὴν αἰεὶ συμβέβη-  
 κεν εἶναι. καὶ ὅγε μὲν ἐπίχαρμος ποῦ τῶν αἰδοῦντων  
 καὶ νοῦν ἐναργῶς εἰρηκέν. ἀλλ' αἰεὶ τοὶ θεοὶ παρῆν-  
 σάν, καὶ ὑπέλιπον ἐπώπρητα. τὰ δὲ αἰεὶ, πάρεσθαι  
 ὁμοία. ὅθεν δὲ τῶν αὐτῶν αἰεὶ. ἀλλὰ λέγεται μὲν  
 χαλκὸς πρῶτον γενέσθαι τῶν θεῶν. πῶς δὲ καὶ ἀμύν-  
 χανόν

ἐπίχαρμος



χανόν γ' ἀπὸ πινυτο μηδὲν ὅτι περὶ μολοί. ἐκ ἄφ' ἑμολε περὶ γ' ἔδερ, ἔδερ μὰ δία δούτορον, τῷ δ' ὦρ ἄμμοδ νῦν ὥδε λέγωρ μέλει τὰ δ' εἶν. πρὶ ἀριθ/ μόν πρὶ πόρισον, αἰδὲ λῆς τὸν ἀρτιον, πρὶ θέμιν λῆ/ φαφορ, ἢ καὶ τὰν ὑπαρχουσιν λαβεῖν. ἢ δοκεῖ ἀρτι καὶ ὁ αὐτὸς εἶμιν; ἐκ ἑμὶν τὰ λῆ. ἔδερ μὰν, ἔδερ πρὶ μέτρον παχὺ ἰόν πρὶ θέμιν λῆ/ λῆς ἑτόρον σεξρόν μα/ κῶ, ἢ τοῖ προδ' ἰόντῶ ἀρταμείν, ἐπὶ κ' ὑπαρχο/ κείνο τὸ μέτρον. ἔδερ ὥδε νῦν ὁρῇ καὶ τὸς ἀνθρώ/ πων. ὁ μὲν γὰρ αὖξιν ὁ δὲ γαμὰν φθίνει. ἐν μεγάλα/ γὰρ δὲ πάντῃς ἐντὶ, πάντα τὸν χρόνον. ὁ δὲ μετὰ λῆσ/ σιν καὶ φύσιν, καὶ ἔπειτ' ἐν ταῦτ' ἐμνεί, ἑτόρον εἶν κ' αὐτὸ δὴ τοῖ παρεξέσκηότῶ. καὶ τὸ δὴ καὶ γὰρ χθῆς ἄλλοι καὶ νῦν ἄλλοι τελίθομδ, καὶ ἄλλοι, καὶ ἔπειτ' αὐτὸ καὶ τὸν λόγον. ἐπὶ φησὶν ὁ ἄλλοι καὶ ταῦτ' ἐφασὶν οἱ σοφοὶ τὸν ψυχὴν τὰ μὲν, δὲ τὸ σώ/ ματῶ αἰδάνεσθαι. οἷον ἀκούσασιν, βλέψασιν. τὰ δ' αὐτὴν καὶ αὐτὴν ἐνθυμείσθαι. μηδὲν τὸ σώμα/ π χρωμένω. διὰ καὶ τῶν ὄντων τὰ μὲν, αἰδάντ' εἶν. τὰ δὲ, νοητὰ. ὦρ ἐνεκα καὶ πρὸ τῶν ἑλεγε ὅτι δὲ/ σὺ σιωδῆς τὰς τοῖ παντὸς ἀρχὰς ὑπὸ θυμοῦ τας, περὶ τὸν μὲν αὐτὰς καὶ αὐτὰς διελίσθαι τὰς ιδίους. οἷον ὁμοιότητα καὶ μοναδία καὶ πλῆθῶ καὶ μέγε/ θῶ καὶ σάσιν καὶ κίνησιν. δούτορον αὐτὸ καὶ αὐτὸ τὸ καλὸν καὶ ἀγαθὸν καὶ δίκαιον, καὶ τὰ τρία ὅντα ὅ/ σθῃσθαι. τρεῖς τῶν ἰδεῶν σιωδῆς ὅσῃ πρὸς ἀλλή/ λας

λας εἰσὶν οἱον ὑπὸ σήμερον ἢ μίγνῃς ἢ διδωρτεῖαν,  
 ἐνθυμουμένης τοῦ ὅτι τὰ παρ' ἡμῖν ὅσα ἔμετεχειν ἐν  
 κείνων ὁμῶνυμα ἐκείνοις ὑποφύχει. λέγω δὲ οἷον, δὴ  
 καὶ μὲν ὅσα τοῖς δικαίως. καὶ δὲ ὅσα τοῖς καλοῦ. ἐστὶ  
 δὲ τῶν εἰδῶν ἐν ἡμεῶν αἰσίορ τε καὶ νόημα καὶ πρὸς  
 τῶν ἀπαθείς. διὸ καὶ φησὶν ἐν τῇ φύσει τὰς ιδείας  
 ἵσταναι καὶ δὲ πρὸς παραδείγματα. τὰ δ' ἄλλα ταύ  
 τας ἰοικῆναι τῶν ὁμοιότητα καθεστῶτα. ὁ γίνωσκ  
 ἐπίχερμα πρὸς τε τοῖς ἀγαθοῦ καὶ πρὸς τῶν ἰδεῶν,  
 οὕτω λέγει. ἄρ' ὅστις αὐλησις πρᾶγμα; πάνυ μὲν  
 οὐκ. ἀνθρώπων οὐκ αὐλησις ὅστις; ἔδαμῶς. φόρε  
 ἴδω. τί δ' αὐλητὰς, τίς εἰμὲν γινώκει; ἀνθρώπων;  
 ἢ ἔγωγ; πάνυ μὲν οὐκ. ἐκ τοῦ δυνάμει οὕτως ἔχειν  
 πρὸς τοῖς ἀγαθοῖς καὶ μὲν ἀγαθόν. τὸ δὲ πρᾶγμα. εἰ μὲν  
 καὶ αὐτὸ ὅς τις δύναιτο εἰδῆναι μαθὼν τῶν ἀγαθῶν ἡδὴ  
 γίνεται. ὥς πρὸς γὰρ εἰ τῶν αὐλησις αὐλητὰς μα  
 θὼν ἢ τῶν ὀρχησις ὀρχηστὰς πρὸς ἢ πλοκεὺς πλοκαὺ  
 ἢ παῦ γὰρ ὁμοίως τῶν γινώσκων ὅτι γινώσκων, ἔχων αὐτὸς  
 εἰναι ἅ τὰ τέχνη. τεχνικός γὰρ καὶ. πλάττων ἐν τῇ πόλει  
 τῶν ἰδεῶν ὑπολήφει φησὶν. εἰ πρὸς ὅτι μνήμη τὰς ἰ  
 δείας ἐν τοῖς ὅσις ὑποφύχει, ὅσα ἔμετεχειν ὑπὸ  
 σήμερον καὶ μνήμῃς εἶναι. μνήμῃς δὲ ἔμετε  
 ἴδωρ ἢ τὰς ιδείας. τίνα γὰρ αὐτὸν τρόπον φησὶ διδῶν  
 ἴδω τὰ ζῶα μὴ τῇ ιδείας ἱφαπτόμενα, καὶ πρὸς  
 τῶν νοῦν φυσικῶς εἰληφότα. νῦν δὲ μνημονεύει  
 τῇ ὁμοιότητι τε καὶ τρυφῇς ὅτι τις ὅστις αὐτὸς,  
 S. ἴδω.



ἐνδλεικνύμενα διότι πᾶσι τοῖς ζώοις ἔμφυτός ἐστιν ἢ  
 ὅμοιότητος θεωρία. διὸ καὶ τῶν ὁμοφύλων αἰσθάνεται.  
 πῶς οὖν ὁ ἐπίχαρμος; ἔνμαιε τὸ σφόδρ' ἐστὶν  
 ὃ καὶ ἐν μόνον. ἀλλ' ὅσα πόρ' ἔχει πάντα καὶ γνώ-  
 μαν ἔχει. καὶ γὰρ τὸ θῆλυ τῶν ἀλεκτρίδων γνῶ-  
 αὶ λῆς καταμαθεῖν ἀτρενὲς, ὃ τέκεται τέκνα ζῶντα.  
 ἀλλ' ἐπωαλεῖ καὶ πρὶν ψυχλὴν ἔχει. τὸ δὲ σφόδρ' ἀ-  
 φύσις τόδ' οἶδεν ὡς ἔχει μόνα. πεπαίδεσθαι γὰρ  
 αὐτὰς οὕτως ἔστι. καὶ πάλιν. θανμασὸν ὃ δὲν ὅτι με-  
 ταῦθ' οὕτω λέγειν, καὶ ἀνδάνειν αὐτοῖσι αὐτῶν, ὅ-  
 δοκῆν καλῶς πεφυκέναι. καὶ γὰρ ἀκύνωρ κυνὶ καλῶ-  
 σον εἶμεν φαίνεσθαι, καὶ βῆς βοί. οὐδὲ δὲ οὐκ καλῶς,  
 ὅς δὲ οὐκ. καὶ ταῦτα μὲν καὶ τὰ γινώσκοντα δὲ τῶν τε-  
 σσάρων βιβλίων παραπήγνυσι ὁ ἀλκιμος, παρὰ  
 σημαίνων τῶν δὲ ὑπὸ χάριτος πλάττειν ποδὶ γινόμε-  
 νῶν ὠφέλειαν. ὅτι δ' ὅτι αὐτὸς ἐπίχαρμος ἡγνόει  
 τῶν αὐτῶν σοφίαν, μαθεῖν ὅτι καὶ τὰ τῶν, ἐν οἷς τὸν  
 ζηλώσαντα προμαντεύεται. ὡς δὲ ἐγὼ δοκῶ. δοκῶ  
 γὰρ σαφὲς ἂν τοῦ ὅτι τῶν ἐμῶν μῦθον πρὸς ἑσ-  
 ται λόγων τὰ τῶν ἐπὶ. καὶ λαβὼν τις αὐτὰ, ποδὶ δύν-  
 σαι τὸ μέτρον οὐκ ἔχει, εἶμα δ' οὐ καὶ προφυρᾶν  
 λόγοισι πρὸς ἑσέως καλῶς, δυνατά λαισθῶν, οὐδὲ ἀλ-  
 λους ἐν παλαίᾳ οὐκ ἀφρανεῖ. δοκεῖ δὲ πλάττειν καὶ τὰ  
 σώφρονος τοῦ μμογραφῆ βιβλία ἡμελημένα, πρῶ-  
 τος εἰς ἀθλῶας διακομίσαι, ὅτι ὑποπρὶν πρὸς αὐ-  
 τῶν. ἀλλ' ἐν εὐθελίᾳ ὑπὸ τῇ κεφαλῇ αὐτοῦ. τοῖς δὲ πέ-  
 πλοισιν

πλοῦκεν εἰς σκελίαν. πρῶτον μὲν ἤτις θείαν τῇ νόσῳ  
 καὶ τῇ κρατησῶν. ὅτε καὶ διονύσιος ὁ ἱρμονικῶς τος ὅπτερος εἰς  
 τύραννος ὡς ἠναγκάσθη ὥς τε συμμίξει αὐτῷ. ὁ σκελίαν πῶς  
 δὲ σκελετόν μιν πῶς τυραννίδος καὶ φασκῶν, ὥς πλευκε  
 ὅτι ἐστὶν ἑστὶν κρείττονος ὁ συμφόρος αὐτῷ μόνον, εἰμὴν ἢ  
 ἀρετῇ σκελετοί, προσέκρυσσεν αὐτῷ. ὁργισθεὶς γὰρ  
 οἱ λόγοι σου φησὶ γόρουντιώσι. καὶ ὅς, σὺ δὲ γε τυραν-  
 νιῶσιν. ἐν τεύθειν ἀγανακτήσας ὁ τύραννος, πρῶτον  
 μὲν ἀνελείν ὥρμησεν αὐτόν. εἴτα παρακληθεὶς ὑπὸ  
 δίωνος καὶ ἀριστομένηδος, ἑστὶν μὲν ὅτι ἐπρήστε. παρὲν  
 δῶκε δ' αὐτὸν πῆλιδος τῷ λακεδαιμονίῳ, ἤτις χαίρον  
 σκελετοῦ πρὸς βείαν ἀριγμῶν, ὥς τε ἀρδίοδοι. καὶ κεί-  
 νος ἀγαγὼν αὐτὸν εἰς αἴγιναν ἐπίπρασεν. ὅτε καὶ  
 χαρμαίνος καὶ χερμαίνος εἰς ἱερὰ αὐτῷ δὴ  
 κλυδαίνωτος, ἤτις ἔρ παρὲς αὐτοῖς τεθέντα νόμον, ἔρ  
 πρῶτον ὑπὸ βαῦτα ἀθλωαίῳ τῇ νόσῳ, ἀκρίτῳ ἀκρί-  
 θνήσκειν. ἡ δὲ αὐτὸς ὁ βεῖς ἔρ νόμον, ἡ δὲ φησι φα-  
 βωρὶν ὅτι παντοδαπῇ ἰσορίᾳ. εἰρήνῃ δὲ τι-  
 νος, ἀλλὰ ἡ δὲ παιδίαρ, φιλόσοφος εἶναι τὸν ὑπὸ  
 βαῦτα, ἀπέλυσεν. ἔνιοι δὲ φασὶ παραχθῆναι  
 αὐτὸν εἰς τὴν ἐκκλησίαν, καὶ τηρούμενον, μήδῃ  
 ὅτι ὁμοφθέγξασθαι. ἐτοίμως δὲ ἐκδέξασθαι τὸ  
 συμβαῖνον. οἱ δὲ ἀποκτείναν μὲν αὐτὸν ὅτι δέγνω-  
 σαρ. πωλεῖν δὲ ἐκείνῳ τῷ τρόπῳ τῇ ἀχμαλῶ-  
 τῇ. λυτρεῖται δὲ αὐτὸν ἡ δὲ τύχῃ παρὼν ἀνί-  
 κτος ὁ κυρτωαῖος εἰρησιμῶν. οἱ δὲ, τεινόντα.



ἀναπίμπει ἀθλιώαζε πρὸς αὐτὸς ἰταίρεσσι. οἱ δ' ἐνθὺς  
 τὰργύριον θξέπεμψαν, ὃ πόρ δ' προσήγαγε εἰσώμ.  
 μὴ μόνον ἐκείνους ἀξίους εἶναι πάλτῃ θ' κηδεσθαι.  
 ἑνίοι δὲ καὶ δίωνα ἀρξέειλαι φασὶ τὸ ἀργύριον. καὶ  
 γὰρ μὴ προσέδοται. ἀλλὰ κηπίδιον αὐτοῖς τὸ ἐν ἀρχαῖς  
 μίαν πείσασθαι. γὰρ μὲν γὰρ πῶς λόγῳ ἔστω τε χαυ  
 ρίου ἢ πηθλιῶναι, καὶ μὲν ταῦτα ἐν ἐλίκη κηπατηντω/  
 θλιῶναι, τοὶ δαιμονίαι μιλίσαντες αὐτοῖς ὅλα γὰρ οἱ  
 λόσοφοι. ὡς καὶ φαβωρίνθ' φησίμ ἐν πρώτῳ τῇ ἀ/  
 γνημονοῦμα τῇ. δ' μὲν δὲ ἡσύχαζεν ὁ Διόνυσος.  
 μαθὼν δὲ ἐπίσειλε πάλτωνι, μὴ κηκῶς ἀγορεύειν  
 αὐτόν. καὶ ὅς ἀντεπίσειλε, μὴ ῥοαῖ τῶν αὐτοῖς οἱ  
 λῶν εἶναι, ὥς τε Διονυσίαι μεμνησθαι. δούτοδον πρὸς  
 νεώτοδον ἦκε Διονύσιον, αὐτῇ γλῶ καὶ αἰθρώπους  
 αὐτὸς κηπαί τῶν κηλιτείαν αὐτοῖς κησομνέσθαι. ὁ δὲ, καὶ  
 πόρ ἔποσχομνέθ' ἐκ ἐπρίσθην. ἑνίοι δὲ φασὶ καὶ κη/  
 Διωνεύειν αὐτῇ ὡς ἀναπείθονται δίωνα καὶ θεῶνταρ  
 αὐτῇ πῇ τῇ νήσου ἐλδουθρία. ὅτε καὶ ἀρχύτας αὐτῇ  
 ὁ πωδαφορικὸς γράφας ὑπὸ λῶν πρὸς Διονύσιον πα/  
 ρητήσας, καὶ Δέσσωσθαι εἰς ἀθλιώας. ἔσι δὲ ἢ ὑπὸ λῶ/  
 λῇ ἡδε.

Ἀρχύτας Διονυσίῳ ὑγιαίνειν.

Ἀπείσληγμα πᾶντες οἱ πάλτῃ θ' οἱ τοῖς  
 πόρ λαμίσσοντες τῇ καὶ φωτίσαντες ἀκρλαφόμνοι γὰρ  
 αὐτοῖς, καὶ τὰν παρὰ τὴν γνημονίαν ὁμολογίαν. ὅς/  
 θῶς δὲ καὶ πρὸς μιννασχομνέθ' τῶας τὰς πωου  
 δ' αὖς

δ' ας, ἡνίκα πάντας ἄμμε παρενθάλεις πρὸ τῶν πλῶν,  
 τῶν ὁ ἀφίξιμ, ἀξιώμ προτρέπειοται τὴ αὐτῶν καὶ ἀ/  
 ναδέχεται τὰ τε ἄλλα καὶ τὰ πᾶσι τῶν ἀσφαλει/  
 αν, μνόντι τε καὶ ἀφορμῶν π. μίμνησο δὲ καὶ πῆ/  
 νο. ὅτι πᾶσι πρὸ τῶν ἐπρίσσω τὰν ἀφίξιμ αὐτῶν. καὶ ἀ/  
 γὰρ πᾶσι ἐν τῶν τῶ χρόνῳ, ὡς ὁ δὲ γὰρ τῶν παρὰ τῶν.  
 αὐ δὲ τις γέρονε τραχύτας, καὶ θεωπείζειν χρεὶ καὶ κρ/  
 διδόμην ἄμμε ἀβλαβῆ τῶν αὐτῶν. ταῦτα γὰρ πρὶν  
 τῶν δίκαια πρᾶξεις, καὶ ἄμμε χειρῶν.

Τεῖρ ἦλθε δὲ λαλῶν δὲ ἰὼνα δὲ οὐνοῖω. ὁ τυχὼν  
 δὲ ἀπλᾶν τῶν ἐπανήλθον εἰς τῶν πατρίδα. ἔνθα πρ  
 λιτείαι μὲν ὁ χ' ἦσαν. καὶ ἴρι πρὸς τῶν ὡν δὲ ὡν  
 γέγραφε. αὐτοὶ δὲ τῶν ἦσαν τῶν δὲ ἡμῶν ἄλλοις πρὸς  
 τῶν μασιμ ἔνθεν δὲ. φησὶ δὲ παμφίλη ἐν τῶν πέν/  
 μῶν καὶ εἰς τῶν τῶν ὑπομνημάτων τῶν, ὡς ἀρῆς δὲ  
 καὶ θηβᾶοι μεγάλῳ πρὸς οὐκίζοντες, παρενθά/  
 λῶν αὐτῶν νομοθέτῳ. ὁ δὲ μαθὼν ἴσον ἔχειν ὁ θέλον  
 τας, ὁ ἐπὶ τῶν λόγῳ ὅτι καὶ χαλεπὰ σωεῖται  
 τῶν στρατηγῶν φέρουντι θανάτῳ, μὴ δὲ τῶν πρὸς τῶν  
 ἔσθ' ἐπὶ βούλησιν τῶν. ὅτε καὶ ἀνιόντι αὐτῶν εἰς  
 τῶν ἀκρόπρην, (ὡν τῶν χαλεπὰ κρῶν βύλῳ ὁ συνη/  
 φάντης ἀπαντήσας φησὶν. ἄλλῳ (ὡν ἀφορμῶν ἦσαν;  
 ἀγνοῶν ὅτι καὶ σὲ τῶν σωκράτους κῶνιοι ἀναμνήσαι;  
 τῶν δὲ, φαῖται. καὶ ὅτε ἐπὶ τῶν πατρίδα τῶν στρατοῦ  
 μὲν ὑπὸ τῶν κινδύνῳ. καὶ νῦν ἐπὶ τῶν κα/  
 θήκοντ' ὅλα φίλον ὑπομνήτω. ὅτι τῶν πρῶτ' ἐν

ἴσθ' ἀφίξις  
 πλῶν τῶν



ἰσωτήσῃ λόγον περὶ ὧν γινώσκῃ, ὡς φασι φαβωρίνῃ· ἔν  
 ὧν εὐρετῆς ὁ γὰρ δὴ πανρ διαπῆς ἰσορίας. καὶ πρῶτῃ ἔν ἡ κατὰ  
 πλάτῃ τῷ ἀνάλυσιν τῇ ζητήσεως τρόπῳ εἰσηγήσατο λέω  
 διαμαντι τῷ βασίῳ. καὶ πρῶτῃ ἔν φιλοσοφία ἀνι  
 τίη δια νόμασε, καὶ σοιχείῳ, καὶ δὲ λεκτικῷ, καὶ  
 πρῆματα, καὶ τοῖς ἀειθμῶν ἔν προμήκη, καὶ τῇ πει  
 ρατῇ τῷ ἐπίπεδον ὑπὸ φάνειαν, καὶ θεῶν πρῶνοιαν.  
 καὶ πρῶτῃ τῇ φιλοσόφῳ ἀντίειπε πρὸς τὸν λό  
 γον τοῦ λυσίᾳ τοῦ κεφαλῶν, ἐκθέμεν αὐτῷ καὶ λέ  
 ξιν ἔν τῷ φαίδρω. καὶ πρῶτῃ ἐθεώρησε τῇ γραμ  
 ματικῇ τῷ δυνάμει. πρῶτῃ τὴν ἀντιερηκῶς σχε  
 δὸν ἅπασιν ἔς πρὸ αὐτοῦ, ζητεῖται δὲ τί μὴ ἐμνη  
 μόνουσε δημοκρίτου. τὰ τὰ φησὶν νεανῆς ὁ κυζικυ  
 νὸς εἰς ὀλύμπια ἀνιόντῃ· ὅς ἐκ λῶας ἅπαντας  
 ὑπὸ στραφύῳ πρὸς αὐτόν. ὅτε καὶ δύναι συνέμξε  
 μέλλου πειρατῶν ὑπὸ δυνύσιον. ἔν δὲ τῷ πρῶτῳ  
 τῇ ἀρχμνημονοματῇ φαβωρίνου φόρεται, ὅπ μ  
 θειδῶς ὁ πόρσης ἀνδραίατα πλάτῃ· ἀνέθετο  
 εἰς τῷ ἀρχδημίαν, καὶ ἐπὶ γράφε, μεθειδῶς ὁ γο  
 δὲ βάλτο πόρσης μούσαις εἰκὼνα ἀνέθετο πλάτω  
 νι, ὡς σιλανίῳ ἐπρίκσε. φησὶ δὲ ἡρακλείδης ὅπ  
 νι· ὡς οὕτως ὡς αἰδήμων καὶ κρῶμι, ὡς τε μνη  
 δέποτ' ὀφθλῶναι γλῶν ὑποράγαρ. τοιοῦτῃ δὲ  
 ὡς ὅμως ἀσκήθη καὶ αὐτὸς ὑπὸ τῶν κωμικῶν.  
 θεόπεμπτῃ γοῶν ἔν αὐτοχάρει φησὶν οὕτως.

ἐν γὰρ

ἔμ γὰρ ὄξιν ἔδε ἔμ.

τὰ δὲ δύο μόλις ἔμ ὄξιν, ὥς φησι πλάτῃν.

Ἀλλὰ καὶ ἀναξανδρίδης γνῖθις.

ὅτε τὰς μορίας ἔτρωγν ὥς πόρ πλάτῃν.

Ἀλλὰ ἔτι μωρ, οὐτωσὶ πῶς γραμματίζων αὐτόν.

ὥς ἀνέπλασε πλάτῃν πεπλασμένα θάυμα,  
τα εἰδώς.

Ἀλλὰ μὲν μοροπίδι.

εἰς καὶ ὅν ἤκει, ὥς ἔγω γ' ἀπρουμένη  
ἀνὼ κῆτω τὴ πόρ πλάτῃν ὥς πόρ πλάτῃν,  
σοφὸν ἔδε μ' εὐρηκ' ἀλλὰ κροπῶ τὰ σκέλη.

Καὶ γνῖθι ἀγκυλίῳ.

λέγεις πόρ ὡς ἔκ οἶδα συγγενῶς τρεῖς χωρ  
πλάτῃν, καὶ γνώση λίτρον καὶ κρόμμυον.

Ἀμφὶς ἀμφοκράτει.

ῥ' δ' ἀγαθὸν ὅπ' πρ' ὄξιν, ἔσ' σὺ τυγχάνειν  
μέμεις ὅλ' αὐτῷ, ἢ πόρ οἶδα τοῦτ' ἔγω  
ὡς δέωτοτ' ἢ ῥ' τοῦ πλάτῃν ἀγαθόν.  
πρόσεχε δ' ἡ. Ἐμ δὲ δεξιδήμειδ' ἡ.

ὡ πλάτῃν

ὥς ἔδε μ' ἤδα πλὴν σκυθροπάξει μόνον,  
ὥς πόρ κροχλίας σεμνῶς ἐπηγεῖν τὰς ὀφρεῖς.

Κρατὶν ὅλ' οὐδ' οὐροβόλιμαίω.

ἀνθροπ' ἔδ' οὐδ' οὐροβόλιμαίω, καὶ τυχλὴν ἔχεις.

ἔμ μὲν πλάτῃν ἔκ οἶδα, ἔμ οὐροβόλιμαίω δ' ἔχειν.

Ἀλλὰ μὲν οὐροβόλιμαίω.

σῶμα



σῶμα μὲν ἐμοῦ ὃ θνητὸν, αἶνον ἐγὼ ἔσο,  
 τόδ' ἀθάνατον διέηρε πρὸς τὸν ἄδρα.  
 ταῦτ' ὁ σχολὴ πλάτῃσθ; Καὶ γὰρ παρασίτω.  
 ἢ μὲν πλάτῃσθ' ἀδολοχῆν ἢ μόνως.  
 Χλοῦαζει δ' αὐτὸν καὶ ἀναξίλας γὰρ βοτρυλίῳνι  
 κίρκη καὶ πλουσίασις. ἀρίσιππ' δ' γὰρ τῷ τεταρτίῳ  
 τῷ πόδι τρυφῆς φησὶν αὐτὸν ἄσδ' μείρακιον τι  
 νὸς ἀσρολογεῖν σωμασχομεγνὸς ἐραδιῶναι. ἀλλὰ καὶ  
 δῖον' τοῖς προσημνῆσθ. γῆνοι καὶ φαίδ' οὐ φασί. δη  
 λοῦν δὲ τὸν ἔρωτα αὐτὸ τὰδε τὰ ὑπὲρ γράμματα ἄ  
 καὶ πρὸς αὐτὸ γνῶσθαι εἰς αὐτὸς.  
 ἄσδ' εἰσαθρεῖς ἀσὴρ ἐμὸς, εἴθε γηνοίμην  
 ἔρανος, ὡς πολλοῖς ὁμμασιν εἰς σὲ βλέπω.

Καὶ ἄλλο.

ἀσὴρ πείρ μὲν ἔλαμπες γὰρ ζωοῖσιν ἐῷσθ,  
 νῦν δὲ θανόντων λαμπεῖς ἐσθ' ὅσθ' γὰρ φθιμῆσι.  
 Εἰς δὲ τὸν δῖονα ὥδε.

δακρυα μὲν ἐγὰβη τὴν καὶ ἰλιαδισι γυναιξὶ  
 μοῖραι ἐπὶ κλωσάων δῆπρτε γεινομεγνῆσις.  
 σοὶ δὲ δῖον γέξασι καὶ ἁλῶν ὑπὸ νίκιον ἔργων,  
 δαίμονος ἐνείας ἐλπίδας διέχεαν.  
 κείσθαι δ' ἐνρυχέρω γὰρ πατρίδι τίμῃσθ' ἄσδ' οἰς,  
 ὡ ἐμὸν ἐκμύνας θυμὸν ἔρωτι δῖον.

εἴδω καὶ ὑπὲρ γράφθαι φησὶν γὰρ συρακούσας ὡδ'  
 τῷ τάλφω. ἀλλὰ καὶ ἀλέξιδ' οὐ φασίμ ἐραδ' εἰς καὶ  
 φαίδ' οὐ καὶ πρὸς ἔρηται, εἴδω γὰρ ἐπὶ ἴσησθ' τὸν τρόπον.  
 νῦν

νῦν ὅτε μηδὲν ἄλλοις ὅσον μόνον εἶφ' ὅπῃ κελός  
 ὤπασται, καὶ πέντη πᾶς τις ὠλισγίφεται.  
 θυμὲ, τί μινύεις κυσὶν ὀσίον; εἴτ' ἀνιήσεις  
 ὕσδορον, ἔχ' οὕτω φαῖδρον ἀπώλωδα μιν;  
 Ἐχειν τὶ ἀρχαιάσασαν, εἰς ἡν καὶ αὐτὴν οὕτω  
 πρῆσαι.

ἀρχαιάσασαν ἔχω τὴν ἐκ κολοφῶν ἑταίραν,  
 ἧς καὶ ὠδὶ ἐντίδωρ ἔξω δειμὺς ἔρως,  
 ἃ δειλοὶ νεότητι ἀπαντήσαντες ἐκείνης  
 πρὸς πλὸν, δι' ὅσας ἤλθετε πυρηναῖς.

Ἀλλὰ καὶ εἰς ἀγαθὴν α.

τὴν ψυχὴν ἀγαθὴν αὐτῶν ὠδὶ χεῖλδιν εἶχον.  
 ἤλθε γὰρ ἡ τλήμων ὥς σθεβησομένη.

Καὶ ἄλλο.

ὦδ' μήλω βάλλω σε, σὺ δ' εἰ μὴν ἐνοῦσε φιλεῖς με  
 δεξαμένη ᾧ σὴς παρθενίης μεταδίδω.

εἰ δ' ἄρ' ὃ μὴ γίνοιτο νοεῖς, τοῦτ' αὐτὴ λαβῶσα  
 σκέψαι τὴν ὥρην ὥς ὀλιγοχρόνιον.

μῆλον ἐγὼ, βάλλει με φιλῶν σέ τις. ἀλλ' ἐπὶ νύκτι  
 ξανδίππῃ, καὶ γὰρ σὺ μαραινόμεθα.

Φασὶ δὲ καὶ ᾧ εἰς σὺν ἐρετειᾶς σὺν σαγῶσι θνή-  
 τας αὐτοὶ εἶν.

ἐν βοίῃς γὰρ ἤμην ἐρετεικόν, ἀγχι δὲ σῶσωρ  
 καί μεθα, φεῦ γαῖης πόσον ἀφ' ἡμετέρης.

Καὶ κέينو.

ἃ κύπρις μέλαινα, κορυφαία τὰν ἀφροδίταρ

ε πμᾶ



πμάτ', ἢ τῶν ἔρωτ' ὕμιν ἐφοπλίσσεται.  
αἱ μὲν γὰρ τὸ κῦπερ, αἶψα τὰ σωμύλα ταῦτα.  
ἡμῖν δ' ἐπέταται ἴδωρ τὸ παιδαγωγόν.

Καὶ ἄλλος.

χευσὸν ἀνὴρ ἐν ῥῶν ἔλιπε βρόχον. αὐτὰρ ὁ χευσὸν  
ὄν λῖπεν δ' ἐν ῥῶν ἔλινεν ὄν ἐν βρόχον.

ἄλλω γὰρ μολῶν ἀπεχθῶς ἔχωρ πρὸς αὐτῶν, δ' ἴδωρ  
φασὶ δαυμασὸν εἰ διόνυσον ἐν κορινθῶ, ἀλλ' εἰ πλά  
τῶν ἐν σικελίᾳ. ἴοιεν δὲ καὶ ξυνοφῶν πρὸς αὐτῶν ἔ  
χειρ δ' ἐν ἐν μὲν ὡς. ὡς πόρ Γούῳ διαφειλονιουῶντος,

ὅτι ξυνοφῶν  
ἐκ ἐν μὲν ὡς  
πρὸς πλάτω  
να εἶχε

τὰ ὅμοια γράφασιν. συμπόσιον. σωκράτους ἀκρο  
γίαν. τὰ ἡθικά ἀκρυνημονόματα. εἰθ' ὁ μὲν, περὶ τῶν  
αν. ὁ δὲ, κύριον παιδείαν. καὶ ἐν τῶν νόμοις ὁ πλάτῶν,  
πλάσμα φασὶν εἶναι τῶν παιδείαν αὐτοῦ. μὴ γὰρ εἶναι  
κύριον, τῶν ἀμφοτέρων τε σωκράτους μνημονό  
οντος, ἀλλήλων δ' ἀμαδ, πλὴν ξυνοφῶν πλάτῶν  
ἐν τῶν τῶν ἀκρυνημονόματων. λέγεται δ' ὅτι  
ἀντιπατρὸς μέλων ἀναγινώσκων τὴν γράμμε  
νὴν αὐτῶν, παρενέχουσιν αὐτῶν παρατυχίαν. καὶ  
πυθόμην ὅτι μέλει ἀναγινώσκων, εἶπεν, ὅτι πόρ  
τὸ μὴ εἶναι ἀντιλέγειν. τοῖς δ' εἰπὺντος, πῶς οὐκ οὐ  
πόρ αὐτοῖς τὰς γράφεις; καὶ διδάσκοντες ὅτι  
πόρ τρέπεται, ἔγραφε διαλογὸν καὶ πλάτῶντος, σά  
θωνα ὑπὲρ γράφας. ὅς δ' ἐκτελεσῶν ἀλλοτρίως ἔχον  
τος πρὸς ἀλλήλους. φασὶ δὲ καὶ σωκράτῳ ἀκού  
σκοντα τῶν λύσιν ἀναγινώσκοντες πλάτῶντος, ἡρώ  
κλεις





ἀφθέρματα  
πλάτῃ

πρόβλημα. Δικαίᾳρχος δὲ καὶ ἄρ τὸν τρόπον τῇ γρα-  
φῇς ὅλον ὑπὸ μίμφετοι ὡς φορητόν. ὁ γοῦν πλάτῃ  
λέγεται θεασάμενός τε πνὰ κυβόοντα αὐτοπασαδοι.  
τοὶ δὲ εἰρήντο, ὡς ὑπὸ μικροῖς. ἀλλὰ τό γε ἔθός ἐστι  
πνὴν ὁ μικρόν. Ερωτηθεὶς εἰ ἀρμυνημόνδου μοι τι αὐ-  
τοῖς ἴσαι ὡς πόρ τῇ πρότορον, ἀπεκρίνατο. ὀνόματι  
τοῦ δὲ τυχεῖν πρῶτον, εἶτα πολλὰ ἴσαι. εἰσελθόντι  
τοῦ πρὶ ξυνοικιστοῦ εἰπε, μασίγωγα ἄρ πᾶσι  
δια, αὐτὸν γὰρ μὴ δυνάσασθαι δεῖν ὁργίζεσθαι. ἀλλὰ  
καὶ πρὸς τινα τῶν παίδων, μεμασίγωγο αὐτὸν εἰπὼν εἰ  
μὴ ὁργίζόμενος, ἐφ' ἵπποσιν καδίστας ἐνθάδε κατέβη, φη-  
σας ἐνλαβεῖσθαι μὴ ἵπποτυχία ληφθῆ. τῷ μεθύσει  
συμβούλου καὶ πείθεσθαι. ἀρσῆσεσθαι γὰρ τῇ τῇ  
αὐτῆς ἀσχημοσύνης. πίνειν δ' εἰς μέθην ὁ δαμοῦ  
πρὶ τῇ ἔλεγε, πλὴν ἐν ταῖς ἑορταῖς τοῖς καὶ ἄρ οἶνον  
πίνοντο θεοῖς. καὶ ἄρ πολλὰ δὲ καθεύδουσιν ἀπὸ πρὸς  
αὐτοῖς. ἐν γοῦν τῷ νόμοις φησί. κριμώματος δὲ ὁ δὲ  
ὁ δὲ γὰρ ἄξιός. εἴν τε ἡ δὲ τῇ ἀκροσμάτῃ τῷ  
ἀληθεύσαν. οἱ δὲ, ἄρ λέγειν τὰ ἀληθῆ. καὶ πόρ ἀληθείας  
δ' ἐν τῷ νόμοις φησί. οὕτως. καλὸν μὲν ἢ ἀλήθεια  
ὡς ξένε, καὶ μόνιμον. ἵσκει δὲ ὁ δὲ πείθει. ἀλλὰ  
καὶ ἡξίου μνημόσυμον αὐτοῖς λείπεσθαι, ἢ ἐν φίλοις, ἢ  
ἐν βίβλοις. δετόπιζε δὲ καὶ αὐτὸς τὰ πλείστα κατὰ  
πινδο φασί. καὶ ἐτελεύτα μὲν ὁρ εἰρημὴν τρόπον, φι-  
λίπποσιν βασιλεύοντο. ἔτ' τελοσκαίδησιν κατὰ  
καὶ φαβωρῖν φησί. ἀρμυνημόνδου μοι τῇ τρίτω.  
ὑφ' ὁ

ὕφ' εἰ καὶ ὑπὸ πικρῶναι φησὶν αὐτὸν θεόπεμπτον.  
 μυρουριανὸς δ' ἐν ὁμοίοις φησὶ φίλωνα παροιμίας  
 μνημονεύειν ποῦ τῶν πλωτῶν φθειρῶν, ὡς οὐ  
 πως αὐτοὶ τελευτήσαντες. καὶ ἐτάφη ἐν τῇ ἀρχαῇ  
 μία, ἣν δα ἔρμ πλείστον χρόνον διετέλεσε φιλοσοφῶν.  
 ὅθεν καὶ ἀρχαῖα μαῖκή προσήγορεύθη, ἡ ἀπ' αὐτοῦ αἰ-  
 ρεσις. καὶ παρεπέμφθη πανδημεὶ πρὸς τῶν αὐτόθεν  
 ἀσθεῖων. ἔσθον ἔρμ τρόπον. Τῷ δὲ κατέλιπε  
 πλωτῶν καὶ διέβη. ὃ ἐν ἡφαιστῶν χωρίον ὧ  
 γείτῳ βορρᾷθεν ἡ ὁδὸς ἡ ἐκ τοῦ κηλοισμῶν ἰδρᾷ. νό-  
 θον ὃ ἡρώκλειον ὃ ἐν ἡφαιστῶν. πρὸς ἡλίου δὲ  
 αἰνιόνη. ἀρχέισατος φρεσίν. πρὸς ἡλίου δὲ  
 δυομνίου, φίλιππος χολιδίου. καὶ μὴ θῆξω ἔσθον  
 μηδ' ἐνὶ, μήτε ἀρδύομαι, μήτε ἀλωξάομαι. ἀλ' ἔσω  
 ἀδισμαῖν τα παιδίου εἰς ὃ δυνάτορ. καὶ ὃ ἐν ἐλ-  
 σιδωρ χωρίον, ὃ παρὰ καλλιμάχου ἐπειώμεν. ὧ  
 γείτῳ βορρᾷθεν ἐνρυμῖδων μυρμινούσι. νό-  
 θον δὲ διημόσας ξυπετόρ, πρὸς ἡλίου αἰνιόνη.  
 ἐνρυμῖδων μυρμινούσι, πρὸς ἡλίου δυομνίου καὶ  
 φασός. ἀργυρεῖς μνᾶς τρεῖς. φιλῶν ἀργυρεῖς, ἔλ-  
 κυσσεν ρξέ. κυμβέιον ἄστρον μῆ. διακτύλιον  
 χρυσῶν καὶ ἡνώπιον χρυσῶν, ἄστρον (ὡς ἄμφω Δ  
 δραχμᾶς, ὁ βολοὺς τρεῖς. ἐκλείδης ὁ λιθοτόμος ὁ  
 φεῖλει μοι τρεῖς μνᾶς. ἄρτεμιρ ἀφῆκε ἐλδύθραν.  
 οἰκίτας καταλείπω, τύχωνα, βίκταρ, ἀρμωνιαί,  
 δῖω, διονύσιον. σκόνη τὰ γεγραμμένα, ὧν ἔχει τὰ

ἀκαδημαί-  
 κη ἀρεῶν

ἀσθενῶν  
 πλωτῶν



αὐτὴν γραφα δὴ μῆτιρ Θ. ὀφείλω δ' ὅδ' ἐνὶ ὅθρῳ. ἐπὶ  
 τροπῇ δὲ σωδ' ὅθρῳ, ἀνδύσι ππ Θ, δὴ μῆτιρ Θ, ἡ γὰρ  
 ας, ἐνρυμίδωρ, ἡ γὰρ μάχ Θ, θραύσι ππ Θ. καὶ δὴ  
 θραύ μὲν οὕτως. ἐπεγραφε δ' αὐτῷ ὑπὲρ γραμμάτων  
 τῶνδε. πρῶτον.

σωφροσύνη προφύων θυητῶν ἢ θεία τὴ δικαίω  
 ὡς δὲ δὴ κείτοι δι Θ ἀριστοκλῆς.

εἰδὲ πρὶν πάντῃ σοφίης μέγαν ἔχον ἔπαινον,  
 ὅθεν ἔχει πλείον, καὶ φθόν Θ ὅχ' ἔπεται.

Εὐτόρον.

γαῖα μὲν γὰρ κόλῳ κρύπτει τόδε σῶμα πλάτῃ Θ,  
 ψυχὴ δ' ἀθανάτῃ τάξις ἔχει μακάρων.  
 ὅς ἀρίστων Θ, τὸν πρὶν καὶ τηλόδι ναίων  
 τιμᾷ ἀνὴρ ἀγαθὸς θεῖον ἰδόντα βίον.

Καὶ ἄλλο νεώτορον.

αἰετὶ πίπτε βέβηκας ὑπὲρ τάφορ, ἢ πύ Θ, εἰπὶ,  
 ἀσδρόγντα θεῶν οἶον ἀρσικηπίες.

ψυχὴς εἰμὶ πλάτῃ Θ ἀκτῆα μῆτις εἰς ὄλυμπον  
 εἰκὼρ, σῶμα δὲ τοῖ γηγῆς ἀτθὶς ἔχει.

Εἰς καὶ ἡμέτορον οὕτως ἔχον.

καὶ πῶς εἰ μὴ φοῖβ Θ αὐτὴν ἑλλάδα φύσε πλάτωνα  
 ψυχὰς ἀνθρώπων γράμμασι ἡκίστα.

καὶ γὰρ ὁ τοῦδε γεγὼς ἀσκληπιδίος ὅστις ἰητὴρ  
 σώματ Θ, ὡς ψυχὴς ἀθανάτιο πλάτῃ.

Καὶ ἄλλο ὡς ἐτελεύτα.

φοῖβ Θ ἔφουσε βροτὶς ἀσκληπιδίον, ἡ δὲ πλάτωνα.

ἢ μὲν

ἔρ μὲν, ἵνα ψυχὴν τὸρδ' ἵνα σῶμα σάοι.  
 δαισάμενθ' δὲ γάμον ἥλιν ἤλυθεν, ὡς πρὶ αὐτῶ  
 ἔκτισε καὶ διαπέδω ζῶος ἐνιδρύσατο.

Καὶ τὰ μὲν ὑπὲρ γράμματα ταῦτα.

Μαθηταὶ δ' αὐτοῦ, ἀπὸ δύσι ππθ' ἀθλῶαίθ'. ξένοι  
 κράτης χαλκηδόνιθ'. ἀριστοτέλης σαγειρίτης. φί-  
 λιππθ' ὁ ὀποῦ ππθ'. ἡσίαῦθ' ποδρινδιθ'. δῖωρ  
 συρακούσιθ'. ἄμνκλθ' ἡρακλεώτης. ἔραςθ' καὶ  
 κορίσκθ' σκήφιοι. πμόλαθ' κυζικιώος. ἐναίμων  
 λαμψακλώος. πείθωρ καὶ ἡρακλείδης αἰνιοί. ἵπποι  
 θαλῆς καὶ ἡγάλιππθ' ἀθλῶαίθ'. δημήτειθ' ἄμορ  
 πελίτης. ἡρακλείδης πεντηκός. καὶ ἄλλοι πλείον.  
 ὡς οἷς καὶ γυναικὶς δύο, λαδγνεία μαντινική, καὶ  
 ἀξιοθία φλιασία, ἡ καὶ ἀνδρῆα ὑμπόχτρο, ὡς φησι  
 δικαίαρχθ'. ἔνιοι δὲ καὶ θεόφρασον ἀκούσαι φασίμ  
 αὐτοῖ, καὶ ἑσπρίδω ἔρ ῥήτρα χαμαιλίωρ φησί,  
 καὶ λυκοῦρφορ. ὁμοίως πελῆμων ἰσορεῖ καὶ δημοδῆ-  
 νλω. σαβῖνθ' λέγει ἐ μνησίτραρρ δάσιον, παραλι-  
 θέμενθ' ἐν Δ μελεπκῆς ὕλης. καὶ εἰκός ἐστι. φιλο-  
 πλάτωνι δέ σοι δικαίως ἑσπαρχύση ἐ παρ' οὐτινῶν  
 τὰ τ' φιλοσόφω δόγματα φιλοτίμως ζητήση, ἀναγ-  
 γαίον ἡγησάμεν ἑσπαγράφαι καὶ τὴν φύσιν τῶν λό-  
 γων καὶ τὴν τάξιν τῶν ἀσφαλόγων, ἐ τὴν ἑφοδορ τῶν  
 ἐπαγωγῶν, ὡς οἷον τε σοιχειωδῶς καὶ ὑπὸ κεφαλαι-  
 ων, πρὸς ῥ μὴ ἀμοιρεῖν αὐτοῖ τῶν δογμάτων τὴν πε-  
 ρὶ τοῦ βίου συναγωγὴν. γλαῦκα δ' εἰς ἀθλῶας φασίμ  
 ἐ δέη



εἰ δὲ ἴσῃ τοῖς κατ' εἰδὸς διηγέσθαι. ἀλλόλογον γὰρ ἴν  
 νω φασι πρῶτον γράψαι ζυῶνα ἢ ἐλεῶτιν. ἀρ  
 σοτέλης δὲ ἐν πρῶτῳ πόδι τριτῶν ἀλεξαμένον συ  
 ρία ἢ τῆσιν, ὡς καὶ φαβωρῖν. ἐν ἀκρυνμονόμασι.  
 δοκεῖ δὲ μοι πλὴν τῶν ἀκρυνόμασιν ὅτι εἰδὸς καὶ τὰ  
 πρῶτῃα δικαίως ἀν' ὡς πόρ τοι καλῶς οὕτω καὶ ὅτι  
 πὶ δῶλον ἐνρίσεως ἀκρυνόμασιν. ἔστι δὲ δῶλον, ὅτι ἐρωτήσε  
 ως καὶ ἀκρυνόμασιν συγκεῖμεν πόρτιν τῶν φ  
 λοσοφομένων καὶ τριτῶν, μὲν ὅτι περὶ τῆς ἡθ  
 ρίας τῶν παραλαμβανόμενων προσώπων καὶ ὅτι  
 τίς ἀλλήλων καὶ τῶν λέξιν κατὰ σκευῆς. ἀλλήλων δὲ ὅτι τῶ  
 χυμολόγων, δι' ἧς ἀνασκεινόμεν πὶ ἢ κατὰ σκευῆς  
 ζομεν δὲ ἐρωτήσεως καὶ ἀκρυνόμασιν τῶν προσφάτων  
 τὰ εἰδὸς πόρτιν. Τὸ δὲ λόγον τοῦ πλατωνικοῦ δύο εἰσὶν ἀνὰ  
 πλατωνικοῦ τὰ τὰ χαρὰ κτῆσιν. ὅτε ὑφηνεπικός καὶ ὁ ζητητικός.  
 λόγον ἀκρυνόμασιν δι' ὅ ὑφηνεπικός εἰς δύο ἀλλήλους χαρὰ  
 κτῆσιν, θεωρηματικός τε, καὶ πρακτικός. καὶ τῶν, ὁ  
 μὲν θεωρηματικός εἰς τὸ φυσικὸν καὶ λογικόν. ὁ δὲ  
 πρακτικός εἰς τὸ ἡθικόν καὶ πολιτικόν. τοῖς δὲ ζητη  
 κοῦ, καὶ αὐτοῖς δύο εἰσὶν οἱ πρῶτοι χαρὰ κτῆσιν. ὅτε  
 γυμνασικός, καὶ ἀγωνιστικός. καὶ τοῖς μὲν γυμνασικῶ  
 μασιτικός τε, καὶ πειραστικός. τοῖς δὲ ἀγωνιστικοῦ  
 ἐνδεικτικός, καὶ ἀνατρεπτικός. ὁ λαμβάνει δὲ ἡμᾶς  
 ὅτι πᾶσι ἄλλως ἀκρυνόμασιν ἀλλόλογον φασι. λέ  
 γουσι γὰρ αὐτῶν τῶν μὲν, ἀκρυνόμασιν. τῶν δὲ μι  
 κτός. ἀλλ' ἐκεῖνοι μὲν τραγικῶς μᾶλλον, ἢ φιλοσό  
 φως

φως τῶν διαφορῶν τῶν διαλόγων προσωδμασιν.  
 εἰσὶ δὲ τὰ μὲν φυσικῶν, οἷον ὁ τίμαιος. τὰ δὲ λογικῶν  
 ὅ, τε πολιτικὸς καὶ ὁ κρατύλος. καὶ παρμενίδης καὶ  
 σοφιστής. τὰ δ' ἡδικοῦ ἢ, τε ἀκρολογία καὶ ὁ κριτῶν  
 φαίδωρ. καὶ φαίδρος καὶ ὁ συμπίσιον. μνέξενος  
 τε καὶ κλειτῶν, καὶ ὑπὸ σολῶν, καὶ φίληβος, ἱπ-  
 παρχος, ἀντιόχου. τὰ δ' ἡδικοῦ, ἢ τε πολιτεία καὶ  
 οἰνόμοι καὶ ὁ μίνως καὶ ὑπὸ νομῆς καὶ ὁ ἀτλαντῆς. τὰ δ' ἡδικοῦ  
 δυτικοῦ ἀλκιβιάδης, θεάγης, λύσις, λαχῆς. τὰ δὲ  
 περσικῶν ἐνθύφρων, μνήμων, ἰών, χαρμῆδης, θεαίτη  
 τος. τὰ δὲ ἡνδερικῶν, ὡς ὁ πρωταγόρας. καὶ τὰ ἀ-  
 νατρεπτικῶν ἐνθύδημος, ἱππία δῦο, γοργίας. καὶ πε-  
 ς μὲν διαλόγους τίς ποτε ὅστις καὶ πέντε αὐτῶν διαφορῶν  
 ἀρχὴν λέγειν. ἐπεὶ δὲ πολλὰς αἰτίας ὅστις, καὶ οἱ μὲν  
 φασιρ αὐτῶν δυγματίζειν, οἱ δ' ὅ, φόρε καὶ πόδι τῶν  
 τῶν διαλόγων. αὐτῶν τίνων τὸ δυγματίζειν ὅστις  
 δόγμα πηγνῶν, ὡς τὸ νομοθετεῖν νόμους πηγνῶν. δό-  
 γμα δὲ ἡγετοῦ καλεῖται. τότε δεξαζόμηνον καὶ ἡ  
 δόξα αὐτῇ. τὰ τῶν δὲ τὸ μὲν δεξαζόμηνον, πρότασις  
 ὅστις, ἡ δὲ δόξα ὑπόληψις. ὁ τίνων πλὴν τῶν πόδι μὲν  
 ὡν κατεῖληφεν ἀρφαίνεται. τὰ δὲ ἴδιον διελέγ-  
 χει. πόδι δὲ τῶν ἀδύλων ἐπείχει. καὶ πόδι μὲν τῶν  
 αὐτῶν δοκῶν ἀρφαίνεται διατελέων προσω-  
 πῶν, σωκράτους, τιμαίος, τὸ ἀθλωαῖος ξένος, τὸ ἐλε-  
 ατῶς ξένος. εἰσὶ δ' οἱ ξένοι ὅ, ὡς πέντε ὑπόλαβον  
 πλὴν τῶν καὶ παρμενίδης. ἀλλὰ πλάσματα ὅστις ἀ-  
 νώνυμα

τί τὸ δυγμα-  
 τίζειν



νώνυμα. ἐπεὶ καὶ τὰ σωκράτους καὶ τὰ τιμαίους λυ-  
 γων πλάττειν δογματίζει. πόδι δὲ τῶν ἰσοδωρ ἐλεγ-  
 χμενός εἰσάγει, οἷον θρασύμαχον, χαλκικλῆα, καὶ  
 πῶλον, φοργίαν τε, καὶ πρῶτα φόρον. ἐπὶ δ' ἰππίαν ἔ-  
 νυθόδημον, καὶ δὴ καὶ τοὺς ὁμοίους. πρὶν μὲν δὴ  
 τὰς ἀκροδείξεις πλείω χεῖται τοῦ ὅτι ἐπαγωγῆς  
 τρώω. ὃ μὲν μονοτρόπῳ. ἀλλὰ διχῶν. ἔστι μὲν γὰρ ἐπα-  
 ἰπαγωγῆ γων γῆ λόγῳ διακρινόμεν ἄληθῶς ἢ ὁμοίον ἰσχυρῶς ἢ  
 ληθῆς οἰκείως ὑποφύωρ. δύο δὲ ὅτι ἐπαγωγῆς εἰσὶν  
 τρόποι. ὁ, τε κατ' ἐναντίωσιν καὶ ὁ ἐκ ὅτι ἀκρολουθίας.  
 ὁ μὲν ἐν κατ' ἐναντίωσιν ὅστις δὲ ἔστι τοῦ ἐρωτωμένου πε-  
 ρὶ πάντων ἀκροουθήσει ἢ ἐναντίον. οἷον ὁ ἐμὸς πατήρ  
 τοῦ σὺ πατεῖ, ἢ γὰρ ἔτορθ' ὅστις ἢ ὁ αὐτός. εἰ μὲν ἐν  
 ἔτορθ' ὅστις τῷ ἐμῷ πατρός ὁ σὺς πατήρ, πατρός ἔτε-  
 ρῳ ὡς ἐκ αὐτοῦ εἶναι πατήρ. εἰ δὲ ὁ αὐτός ὅστις τοῦ ἐμῷ  
 πατεῖ, ὁ αὐτὸς ὡς τοῦ ἐμῷ πατεῖ ὁ ἐμὸς αὐτοῦ εἶναι πα-  
 τήρ. καὶ πάλιν. εἰ μὴ ἔστι ζῶον ὁ ἀνθρώπῳ λίθῳ αὐ-  
 εἶναι ἢ ξύλῳ. ὃ καὶ ἔστι ἢ λίθῳ ἢ ξύλῳ. ἐμψυχον γὰρ ὅστις  
 ἔστι αὐτὸ κινεῖται. ζῶον ἀφ' αἰσίου. εἰ δὲ ζῶον ὅστις, ζῶον  
 δὲ καὶ ὁ κύων καὶ ὁ βῆς. εἶναι αὐτὸ καὶ ὁ ἀνθρώπῳ ζῶον  
 καὶ κύων, καὶ βῆς. ὅτι ὁ ὅτι ἐπαγωγῆς κατ' ἐναν-  
 τίωσιν καὶ μάχῃ τρώπῳ. ὃ ἐχέτω, ὃ πρὸς ἢ δο-  
 γματίζειν, ἀλλὰ πρὸς ἢ διελίγχειν. ὁ δὲ ὅτι ἀκρο-  
 λουθίας ἔστι διωλοῦς. ὁ μὲν, ἢ ὑπὸ μόρτου ζητῆμενον  
 ὅτι τοῦ μόρτου ἀκρολουθίας. ὁ δὲ, ἢ καθόλου ὅτι τοῦ  
 ὑπὸ μόρτου. καὶ ἔστι ὁ μὲν πρότορθ' ἡγερένης. ὁ δὲ

δοῦν

δούτορ Θ' ἀλεκπικρός. οἶον ἐν τῷ πρότορῳ ζητεῖται  
 ταῖς ὁδὲ ἀπέντευσιν. ἀπείδειξιν ὅτι ἐν ῥῷ αὐτῷ  
 κατ' ἐκείνον ὅν χρόνον ἡ μαγνήσιον. ὁ κεραικός δι' ἐν  
 σίρ ὁ τρόπος τῇ ἐπαγωγῇς ὅτι. ἐπειδὴ καὶ ἡ ῥῷ  
 ῥοικὴ ποῦ ταῖς μὲν τῷ δὲ τὰ καθόλου τῷ πραγμα  
 τείαν ἔχει. ζητεῖ γὰρ ὁ πόρι αὐτοῦ τοῦ διηγήσας, ἀλλὰ  
 τῷ ὡδὲ μὲν τῷ διηγήσας. ὁ δὲ ἐτόρ Θ' ὅτι ἀλεκπι  
 κός, προαπείδειχθῆναι τοῦ καθόλου ὅτι τῷ ὡδὲ μέ  
 ρου. οἶον ζητεῖται ἐν ἡ ψυχὴ ἀνάστα. ὅτι ἐν τῷ  
 τεθνεώτῃ οἱ ῥῷ τῷ. ὁ πόρι ἀπείδεικνυται ἐν τῷ πε  
 ρὶ ψυχῆς διαπινθῷ καθολικῷ. ὅτι ἐν τῷ ῥῷ τῷ  
 τὰ ῥῷ τῷ. καὶ αὐτὸ δὲ τῷ καθόλου κατὰ σκόδα ζετῷ,  
 ἐν τῷ τῷ μὲν τῷ. οἶον ὅτι τῷ καθόλου δὲ ἐν τῷ  
 ἐρηγορῆσαι. καὶ ἀναπαλιν. ὅτι τῷ μέζον ἐν τῷ μικρο  
 τῷ. καὶ ἀναπαλιν. τῷ δὲ ἐν τῷ εἰς τῷ τῷ ἐν  
 αὐτῷ δοκῶν τῷ κατὰ σκόδα. ὡς πόρι δὲ τῷ παλαι  
 ὅν ἐν τῷ τραγωδίᾳ, πρότορον μὲν ὁ χρόνος διεσφραμα  
 πρην, ὅσορον δὲ θέσπις ἐν τῷ ῥῷ τῷ τῷ τῷ τῷ  
 τοῦ ἀναπαύεσθαι ὅν χρόνον. καὶ δούτορον αἰσχύλος.  
 ὅν δὲ τῷ τῷ σφοκλῆς, καὶ συνεπλήρωσεν τῷ τρα  
 γωδίᾳ. οὕτως καὶ τῷ φιλοσοφίας ὁ λόγος, πρότερον  
 μὲν τῷ μονοειδῆς ὡς ὁ φυσικός. δούτορον δὲ σωκρά  
 τῃς προσέθηκε ὅν ἡδονῶν. τῷ δὲ πάλιν τῷ ἀλε  
 κπικόν, καὶ ἐτελειόργησε τῷ φιλοσοφίαν. θρασύ  
 λῳ δὲ φησὶ καὶ ἡ τῷ τραγικῷ τετραλογίαν ἐν  
 δοῦναι αὐτῷ τῷ ἀλελόγους. οἶον ἐκείνοι τέτρασι δὲ ἄ



μασι ηγωνίζοντο, διονυσίοις, λιωαίοις, παναθλιωαίοις, χύτριοις. ὧν ἡ τέταρτη ὡς ἀπαικρόν. τὰ δὲ τέτταρα φάσματα ἐκκαλεῖται τετραλογία. Εἰσὶ τίνες δὲ λόγοι οἱ πάντες αὐτοὶ γυνήσοι διαλογοὶ ἐξ καὶ περὶ αὐτοῦ γίνονται. Ὡς μὲν πολιτείας εἰς δέκα διακρινόμεναι, ὡς καὶ ἐνρίσκειται σχεδὸν ὅλως παρὰ πρωταγόρα ἐν τοῖς ἀντιλογικοῖς φησὶ φαβωρεῖν. ἐν παντὶ δὲ αὐτῆς ἰσορίας δυντόρων. τῶν δὲ νόμων εἰς δυοκαίδεκα. τετραλογίας δὲ ἐννέα. ἐνὸς βιβλίου χώραν ἐπεχόσης ὅτι πολιτείας, καὶ ἐνὸς τῶν νόμων. Πρώτῳ μὲν ἐν τετραλογίᾳ τίθησι τὴν κοινὴν ἀποδοξίαν ἢ χουσαν. παραδείξει γὰρ βέλεται ὅτι αὐτὴ εἴη ὁ τοῦ φιλοσόφου βίβλος. διπλαῖς τὲ χρῆται ταῖς ὡς γραφαῖς ἐκαστὸν τῶν βιβλίων. τῇ μὲν, ἀπὸ τοῦ ὀνόματος. τῇ δὲ, ἀπὸ τοῦ πράγματος. ταύτης ὅτι τετραλογίας ἢ τις ὅτι πρώτη ἡγείται ἐνθὺ φρων, ἢ πόδι ὁσίου. ὁ διαλογὸς δὲ ὅτι πειραστικός. δυντόρων αὖτε λογία σωκρατικός ἡδικός. τρίτος καὶ τῶν, ἢ πόδι πλακτέος ἡδικός. τέταρτος φαίδων, ἢ πόδι ψυχῆς ἡδικός. Δυντόρα τετραλογία ἢς ἡγείῃ κρατύλως, ἢ πόδι ὁρθότητος ὀνομαστικῶς λογικός. θεαίτητος, ἢ πόδι ὡς ἡμῶν πειραστικός. σοφιστής, ἢ πόδι τοῦ ὄντος λογικός. πολιτικός, ἢ πόδι βασιλείας λογικός. Τῆς τρίτης ἡγείται παρμενίδης, ἢ πόδι ἰδέων λογικός. φίληβος, ἢ πόδι ἡδονῆς ἡδικός. συμπόσιον, ἢ πόδι ἀγαθοῦ ἡδικός. φαίδρος, ἢ πόδι ἔρωτος ἡδικός. Τῆς

τέταρτι

τεταρτῆς ἡγείται ἀλκιβιάδης, ἢ ποῦ ἀνθρώπων φύ τεταρτῆ  
 σως μακεδονικός. ἀλκιβιάδης δούτορ, ἢ ποῦ ἐν πέντη  
 χῆς μακεδονικός. ἱππαρχ, ἢ ποῦ φιλοσοφικός ἢ πέντη  
 δικός. ἀντόραςαί, ἢ ποῦ φιλοσοφίας ἡθικός. Τῆς πέντη  
 πέμπτῃς ἡγείται θεαλγης, ἢ ποῦ φιλοσοφίας μακεδονικός. πέντη  
 χερμίδης, ἢ ποῦ σωφροσύνης πειρασικός. πέντη  
 λαχης, ἢ ποῦ ἀνδρείας μακεδονικός. λύσις, ἢ ποῦ πέντη  
 φιλίας μακεδονικός. Τῆς ἑκτῆς ἡγείται ἐνθύδημος, πέντη  
 ἢ εἰρηνικός ἀνατρεπτικός. πρωταγόρας, ἢ σοφισαί ἐν πέντη  
 δεικτικός. γοργίας, ἢ ποῦ ῥητορικῆς ἀνατρεπτικός. πέντη  
 μένων, ἢ ποῦ ἀρετῇ πειραστικός. Τῆς ἑβδόμης ἢ πέντη  
 γοῦται ἱππία δύν. πρῶτος ἢ ποῦ τοῦ καλοῦ, δύν πέντη  
 τορ, ἢ ποῦ τοῦ δούδου ἀνατρεπτικός. ἰώρ ἢ ποῦ πέντη  
 ἱλιάδου πειραστικός. μενέξενος, ἢ ὑπὸ τῶν πέντη  
 κός. Τῆς ὀγδόης ἡγείται κλειρφῶρ, ἢ προτρεπτικός πέντη  
 κός, ἡθικός. πελιτεία, ἢ ποῦ δικαίως πελιτικός. πέντη  
 μαί, ἢ ποῦ φύσεως, φυσικός. κελτίας, ἢ ἀτλαντικός πέντη  
 κός ἡθικός. Τῆς ἐνάτης ἡγείται μένων, ἢ ποῦ νόμος, πέντη  
 πελιτικός. νόμοι, ἢ ποῦ νομοθεσίας πελιτικός. ὑπὸ νο πέντη  
 μίς, ἢ νυκτορινός σύλλογος, ἢ φιλόσοφος πελιτικός. πέντη  
 κός. ὑπὸ σοφῶν τεισκαίδεσσα ἡθικά. ἐν αἷς ἐγραφε πέντη  
 ἐν πράξει. ἐπὶ κινουμένῳ δὲ ἐν διαγαί. κλέων χαί πέντη  
 ρειρ. πρὸς ἀριστόδημον μία. πρὸς ἀρχύταρ δύο. πέντη  
 πρὸς διονύσιον τέταρτος. πρὸς ἑρμείαν καὶ ἑρασμο πέντη  
 καὶ κορίσμον μία. πρὸς λεωδάμαντα μία. πρὸς πέντη  
 πόρδιναν μία. πρὸς σὺν δίωνος οἰκείσας δύο. καὶ πέντη



ἔτ' ὁ μὲν οὕτω διαίρει, καὶ πινύσκει. ἤνιοι δὲ ὧν ὅστις καὶ  
 ἀεισοφάνης ὁ γραμματικὸς εἰς τειρολογίας ἔλκονσι  
 τοῦ διαλόγου. καὶ πρῶτον μὲν πηθίασιρ ἧς ἡγείται  
 πολιτεία, τίμαι, κείρας. δούτορ' ἀν σοφίης, περι  
 λιτικός, κρατύλ. τρίτον νόμοι, μίνως, ὑπνομῖς.  
 τετάρτῳ θεαίτηρ, ἐνθύφρων, ἀκρολογία. πέμπτῳ  
 κείτῳ, φαίδων, ὑπνολαί. τὰ δ' ἄλλα καὶ ἕν καὶ ἀ  
 τάκτως. ἀρχονται δὲ, οἱ μὲν ὡς προείρηται ἀπὸ τῆς  
 πολιτείας. οἱ δ' ἀπὸ ἀλκιβιάδου τοῦ μείζοντος. οἱ δ'  
 ἀπὸ θεαίτητος. ἤνιοι δὲ ἐνθύφρων. ἄλλοι κλειρφῶν  
 τ. πινύσκειται. οἱ δ' ἀπὸ φαίδων. ἑτορὶ θεαίτητ'.  
 πολλοὶ δὲ ἀκρολογία τὴν ἀρχὴν προοῦνται. νοθεύον  
 ται δὲ τῶν διαλόγων ὁμοιοφρονέως μίδων, ἢ ἵπποι  
 σφόδρα. ἱερξίας, ἢ ἱρασίερασ. ἀλκύνων. ἀκίφαλοι  
 ἢ σίουφοι. ἀξίον. φαίαντος. δημόδουκος. χελιδῶν  
 ἐβδόμη. ὑπνολαί. ὧν ἢ ἀλκύνων, λείοντος πινύσκει  
 δυνεῖ, καὶ δάφνησι φαβρύν. ἐν τῷ πέμπτῳ τῶν ἀπὸ  
 μνημονεύματῶν. ὀνόμασι δὲ κίχρηται περικίλοις,  
 πρὸς τὴν μὴ ἐντυπώσασθαι εἶναι τῶν ἀμαθῶν τὴν πρᾶ  
 γματεῖαν. ἰδιαιτάτα μὲν σοφίαν ἡγείται ἐν τῷ τῷ  
 νοητῷ, καὶ ὅντως ὅν τῶν ὑπνολαί, ἢ φησι πόρι θεόν  
 καὶ ψυχὴν σώματ' ἀχωρισμένῳ. ἰδία δὲ σοφί  
 α καὶ τὴν φιλοσοφίαν καλεῖ, ὁρδιν ἔσται τῇ θείας  
 σοφίας. κρινῶς δὲ λέγεται παρ' αὐτῷ σοφία καὶ ἡ πᾶ  
 σα ἐμπειρία. οἷον ὅταν σοφὸν λέγῃ τὴν δημουρδόν.  
 χεῖται δὲ καὶ ὑπὸ διαφύρον τῶν σημαυνομένων τῶν  
 αὐτῶν

πινύσκει τῶν δια  
 λόγων νοθεύ  
 ονται

αὐτοῖς ὀνόμασι. ὁ γουὺ φαῦλον λέγεται παρ' αὐτοῦ  
καὶ τὸ ἀπλῶς καὶ παρὰ ἐν ἐπίδῃ ἐν λυκιμνίῳ  
φορεῖται τὸ ἡρακλῆος οὐτωσί. φαῦλον ἄκομφο  
τὰ μέγισ' ἀγαθόν, πᾶσαν ἐν ἔργῳ ποιεῖται μόνον  
σοφίαν, λίσχης ἀτρέβονα. χεῖται δὲ ὁ πλάτῃν ἐνίο  
τε αὐτοῦ καὶ πόρι τὸ καλόν. ἔστι δ' ὅτε καὶ ὡδὶ τὸ  
μικρὸν. πολλοὶ δὲ καὶ ὁμοφύλοισι ὀνόμασι ὡδὶ  
τὸ αὐτὸ σημαίνοντα χεῖται. τὴν ἐν ἰδέαν καὶ ἐν  
διῷ ὀνομαζομένη καὶ γῆν καὶ παραδείγμα καὶ ἀρ  
χὴν καὶ αἶνον. χεῖται δὲ καὶ ταῖς ἐναντίαις φω  
ναῖς ὡδὶ τὸ αὐτὸ. ὁ γουὺ αἰσθητὴν καὶ ὁρ καλῆν καὶ  
μὴ ὁρ. ὁρ μὲν ὁρ καὶ γῆν αὐτὸ εἶναι. μὴ ὁρ ἢ ὁρ τὴν  
συνεχὴ μεμβολίαν. καὶ τὴν ἰδέαν, ὅτε κινεῖται, ὅ  
τε μένον. καὶ ταυτὸ καὶ ἐρ καὶ πολλὰ. τόδ' αὖτ' καὶ  
τὸ πλειόνων εἶδισαι πρὸς. ἔστι δὲ ἡ ἐξήγησις τῇ λό  
γῳ αὐτὸ τειπλῇ. πρῶτον μὲν ἐκδιδαξαι χεῖ, ὅτι  
σιρ ἡμεῖς τῇ λεγομένη. ἔπειτα τὴν ἐνεχῆ λέ  
λεκ. πρῶτα καὶ προηγουμένον ἢ ἐν ἐκόντ' μόρε,  
καὶ εἰς δογματῇ κατὰ σκευὴν ἢ εἰς ἔλεγχον τὸ  
προσθελετόμενον. ὅτ' ἡ τεύρε, εἰ ὁρθῶς λέλεκ. ἔπει  
δὲ καὶ σημεία πινὰ τοῖς βιβλίοις αὐτὸ παρατίθενται,  
φορεῖ καὶ πρὸ τῶν τι εἰπωμένων. χὶ λαμβάνει πρὸς  
τὰς λέξεις καὶ τὰ σχήματα, καὶ ὅπως τὴν πλατωνί  
κῶν σωθήσεται. διπλῇ πρὸς τὰ δόγματα, ὅτ' τὰ ἀρ  
σικοντα πλάτωνι. χὶ πρὸς ἐκτετακτοῦ πρὸς τὰς ἐκλογὰς  
καλλιγραφίας. διπλῇ ποιεῖται γινώσκῃ πρὸς τὰς ἐνίων  
δογ

ποδὶ ἐξήγη  
σεως τῇ λό  
γῳ

ποδὶ τῇ σκ  
μείω



διορθώσεις. ὁβολὸς ποδισιγμῶν πρὸς τὰς εἰκάδι  
 ως ἀθετήσεις. ἀντίσιγμα ποδισιγμῶν πρὸς τὰς  
 διτὰς χρήσεις καὶ μεθέσεις τῶν γραφῶν. κούρασις  
 οὐ πρὸς τὴν ἀγωγὴν τῇ φιλοσοφίας. ἀσθρῖσις  
 πρὸς τὴν συμφωνίαν τῶν δυγμάτων. ὁβολὸς πρὸς  
 τὴν ἀθέτησιν. τὰ μὲν σημεῖα ταῦτα, καὶ τὰ βιβλία  
 γραφῶντα. ἃ πόρ ἀντίσιν φησὶν ὁ κερύσις ἐν τῷ  
 πόρι ζυγῶν νεωστὶ ἐκδοθέντα εἰς πρὸς ἡθέλε δαγνῶν  
 ναὶ μετὰ δὲ ἐτέλει τῆς κεκτημένων. τὰ δὲ ἀφίσκοντα  
 αὐτῶν ταῦτα λῶ. ἀδάναρρ ἔλεγε. τὴν ψυχὴν, καὶ  
 πρὸς μετὰ μεταμορφωσιν σώματα. ἀρχὴν τε ἔχον  
 χερσὶ ἀριθμητικῶν. ἥ δὲ σῶμα γεωμετρικῶν. ὡς  
 ζῶν δ' αὐτῶν ἰδίαν τοῖς πάντεσσι δυνάμει πινύμα  
 τῶν. αὐτῶν δὲ εἶναι καὶ τοιμοδῶν. ἥ μὲν γὰρ αὐτῶν  
 τῇ λογικῶν μὲν πόρι τῇ κεφαλῇ καὶ διδύοιτα. ἥ  
 δὲ θυμοειδὲς πόρι τῇ καρδίᾳ. ἥ δὲ ψυχοποιητικῶν  
 πόρι τῇ ὀμφαλῶν. καὶ ἡ παρσυνῶν. ποδὶ χερσὶ  
 δὲ ἐν τοῖς μέσοις δαπανῶν κύκλῳ ἥ σῶμα καὶ συνει  
 σαίνει ἐν τῶν σοιχείων. δαίρεθῆσαι τὴν ἡρμονίαν  
 καὶ δαίρεσμάτα δύο κύκλους πρὸς συνημῶν. ὅ  
 ἔστι μὲν ἡ δαίμετρον κείσθαι ἐπ' ἀρσενῶν ἔσω  
 θεν. ἥ δὲ ἡ πλυσταὶ, ὅ τὰ δεξιά. διὸ καὶ κρατεῖν  
 αὐτῶν εἶναι οὐκ ὄντα. ἥ γὰρ ἔστωρ ἔσθωθαι. καὶ  
 ἥ μὲν, εἶναι ταῦτα. σὺ δὲ δατόρ. λέγων ἥ μὲν, τῇ  
 ψυχῇ κίνησιν εἶναι. τὴν δὲ, τοῖς ὅλοις καὶ τὰς τῶν πλα  
 νομένων φορεῖς. οὕτω δ' ἐκρύψης τῇ ἐκ μέσου γμῶν  
 αὐτῇ

δεῖται ἀφ' ἐ-  
 σιν καὶ πλά  
 160

αὐτῇ προσερχομένης πρὸς τὰ ἴσχατα, γινώσκου-  
 ται τε οὐτα καὶ ἐναρμόζειν ὅλα ὅ ἔχειν ἐν αὐτῇ τὰ  
 σοιχῆα καὶ ἁρμονίαν. καὶ γίνεσθαι δόξαν μὲν κατὰ  
 τὸν δατόρδον κύκλον ὁρθομενῆς. ὡς δὲ μέντοι καὶ τὸν  
 ταῦτο. δύο δὲ τῶν πάντων ἀπέφηνεν ἀρχὰς, θεὸν ὃν  
 ὕλιν. ὃν καὶ νοῦν προσεφροδύει καὶ αἶποι. εἶναι δὲ  
 τῷ ὕλιν ἀσχηματιστον καὶ ἀπειρον, ὃς ἦς γίνεσθαι  
 τὰ συγκρίματα. ἀποκτικῶς δὲ πρὸς αὐτὸν κινουμέν-  
 νιν ὑπὸ τοῦ θεοῦ φησὶν εἰς ἓνα συναχθῆναι τόπων,  
 ταξίον ἀταξίας κρείττονα ἡγησάμεν. τραπείδαι δὲ  
 τῷ ὁσίαν ταύτῃ εἰς τέσσαρα σοιχῆα, πῦρ, ὕδωρ,  
 ἀέρα, γλῶ. ὃς ὡς αὐτὸν τὴν ἰσχυρίαν καὶ τὰ ἐν αὐ-  
 τῷ γινώσθαι. μόνον δὲ τῷ γλῶ ἀμεταβολον εἶναι  
 φησὶ, νομίζων αἰτίαν τῷ τῶν σχηματῶν διαφορᾶν  
 ὃς ὡς σύγκειται. τῶν μὲν ἄλλων ὁμογενῆ φησὶν εἶναι  
 τὰ σχήματα. ἀπαντα γὰρ ὃς ἐνὸς συγκρίσθαι τοῦ προ-  
 μέρους τειγών. ὅτι δὲ γῆς ἰδιον εἶναι τὸ σχῆμα. πυ-  
 ρὸς μὲν γὰρ εἶναι σοιχῆον πυραμίδα, ἀέρῳ τὸ ὀκτά-  
 εδρον. ὕδατι τὸ ἐκροσάεδρον. γῆς δὲ κύβον. ὅθεν  
 μήτε γλῶ εἰς ταῦτα μεταβάλλειν, μήτε ταῦτα εἰς  
 γλῶ. ὃς διακρίσθαι δὲ εἰς τοῦ ὀκταέδρου τόπου ἑκα-  
 τὸν. ὅτι ἡ πόδιφορὰ σφίγγασα καὶ πρὸς τὸ μίσην συ-  
 ναλφουσα συγκρίνει τὰ μικρά. τὰ δὲ, διακρίνει τὰ με-  
 γάλα. διό πορ τὰ εἶδη μεταβάλλονται καὶ τοῦ τοῦ  
 πορ μεταβάλλειν. ἰσχυρίαν τὴν εἶναι ἓνα γρηγὲρ, ἐπει-  
 δὴ καὶ αἰσθητός ὅστις ὑπὸ θεοῦ κατισχύειν αὐτῶν.



ἔμφυχον τε εἶναι, ὅθεν ὁ κρείττον ἐστὶν τοῦ ἀφύχου ὁ  
 ἔμφυχον. ὅθεν τὸ ἀποκείσθαι διημιούργημα τοῦ βελ-  
 τίσου αἰτίον. εἶνα τὸ αὐτὸν καὶ ἐκ ἀπειρον κατὰ σκό-  
 ωδαι, ὅτι καὶ ὁ ἀπόδειγμα ἐν ᾧ, ἀφ' ὃ αὐτὸν ἐδη-  
 μιούργησε. σφαιροειδὴ ὅθεν ὁ καὶ ὁ γινώσκοντα τρι-  
 ὅτρυν ἔχειν οὐχ ἡμα. ἐκείνον μὲν γὰρ ποιεῖται τὰ ἄλ-  
 λα ζῶα. ὅθεν δὲ τὰ οὐράνια πάντα τῶν. λείον δὲ καὶ  
 ὁ δὲ ὄργανον ἔχοντα κύκλω, ὅθεν ὁ μηδεμίαν εἶναι  
 χεῖρ αὐτῶν. ἀλλὰ μὲν καὶ ἀφθαρτὴν διαμύνειν τὸ  
 νόσμον, ὅθεν ὁ μὴ διαλύεσθαι εἰς τὸν θεόν. καὶ ὅτι μὲν  
 ὅλης γένεως αἶψον εἶναι τὸν θεόν, ὅτι πίφνην ἀγαθὸ  
 πρὶόν εἶναι ὁ ἀγαθόν. τοῦ δὲ οὐρανὸς ὅτι γένεως ὁ ἀει-  
 σον αἶψον. τοῦ γὰρ καλίστου τῶν γινώσκον ὁ ἀεισον εἶναι  
 τῶν νοητῶν αἶψον. ὡς τε ἐπεὶ τριῶν ὁ θεός, ὁμοιο-  
 δὲ τῶν ἀεισῶν ὁ οὐρανὸς καλίστος γὰρ ὡν, ὁ θεὸς αὐτὸν ὁμοιο-  
 ὅ εἶναι τῶν γινώσκον, ἀλλ' ἢ τῶν θεῶν. συνεσθάναι δὲ τὸν  
 νόσμον ἐκ πυρὸς, ὕδατος, ἀέρος, γῆς. ἐκ πυρὸς μὲν  
 ὅπως ὁρατὸς ἦ. ἐκ γῆς δὲ ὅπως σβέρτος. δὲ ὕδατος  
 δὲ καὶ ἀέρος ὅπως ἀνώλογος. αἱ γὰρ τῶν σβέρτων  
 δυνάμεις δύο μετέωρον ἀναλωσούσιν, ὡς ἐν γινώ-  
 σθαι ὁ παῖν. δὲ ἀπάντων δὲ εἶνα τελειῶν καὶ ἀφθαρ-  
 τῶν ἢ. χρόνον τε γινώσθαι εἰκόνα ἀίσιον. καὶ ἐκείνον  
 μὲν ἀειμύνειν. πᾶν δὲ τοῦ οὐρανοῦ φορεῖν χρόνον εἶναι.  
 διόπερ αἰδὼν ὅτι τοῦ νόσμου φύσεως ἐκ εἶναι χρόνον.  
 ἅμα γὰρ ἀπαφίχειν αὐτῶν καὶ χρόνον εἶναι. πρὸς  
 δὲ χρόνον γινώσκον ἥλιον καὶ σελήνην καὶ τὰ πλανή-  
 μιναι

μενα γνέσθαι. ὅπως δὲ διαδήληθῇ τῶν ὠρῶν ἢ ἀ-  
 εθμός, καὶ μετασχητὰ ζῶα ἀριθμοῦ, τὸ τοῦ ἡλίου  
 φῶς ἀναλφαι τὸν θεόν. εἶναι δὲ ἑσπέρ μὲν τὸν φῶς γῆς  
 κύκλον σελλυῖν. ἐν δὲ τῷ ἐχομένῳ ἡλίῳ. ἐν δὲ τῷ  
 ἐπὶ τῷ πλανήτας. ἐμφυχον δὲ πάντως  
 οὐδὲ τὸ ἐμφύχον φορᾶ δεδίδαι. ἵνα δὲ ὁ κῆρμ  
 τελειωθῇ γνόμενθῃ ὁμοίως τῷ νοητῷ ζῶν, τῷ  
 τῷ ἄλλῳ ζῶν γνέσθαι φύσιν. ἐπεὶ οὖν ἐκείνθῃ  
 εἶχε, καὶ τὸν οὐρανὸν δὲ ἔχει. θεοὶ μὲν οὖν ἐ-  
 χειρὶ τὸ πλὴν πυρὸν. εἶναι δὲ τρία γένη τῶν  
 λα, πτωχόν, ἐνυθόν, πεζόν. γὰρ δὲ πρὸς βυτῶν  
 τῶν μὲν εἶναι τῶν ἐν τῷ οὐρανῷ θεῶν. γνέσθαι δὲ  
 δημούργημα, ὡς νύκτα καὶ ἡμέραν ποιεῖν. οὐ-  
 σαρ δ' ὡδὶ τοῦ μέσου κινεῖσθαι πρὸς τὸ μέσον. ἐ-  
 πεί δ' αὐτίαι εἰσὶ δύο, τὰ μὲν διαμονῶν εἶναι, τὰ  
 δ' ἔξ ἀναγκαίας αὐτίας φησὶ λεκτέον. ταῦτα δ'  
 ἔξ ἡς, πῦρ, γῆ, ὕδωρ. καὶ οὐκ ὄντα μὲν σοιχῆα  
 κατ' ἀκρίβειαν, ἀλλὰ δεκτικῶν. ταῦτα δ' ἐν τῶν  
 τειγόνων εἶναι σωτιθεμένων, καὶ διαλύεσθαι εἰς  
 ταῦτα. σοιχῆα δ' αὐτῶν εἶναι τὸ, τε πρόμνηδ  
 τειγόνων καὶ τὸ ἰσοσκελές. ἀρχὰς μὲν οὖν εἶναι καὶ  
 αὐτίαι τὰ λεχθέντα δύο, ὡς παραδείγμα τὸν  
 θεόν καὶ τῷ ὕλῳ. ὁ πρὸ ἀναγκῆς ἀμορφον εἶναι,  
 ὡς πρὸ καὶ ὡδὶ τῶν ἄλλων δεκτικῶν. αὐτίον δὲ  
 τούτων ἔξ ἀναγκῆς εἶναι. Δεχόμενον γὰρ πῶς  
 τὰς ἰδίας γένων τὰς οὐσίας, καὶ δι' ἀνομοιότητα



δυνάμειος κινεῖσθαι, καὶ κινούμενον τὰ κινούμενα θῆ-  
 αὐτῇ αὐτὴν κινεῖν. ταῦτα δὲ πρὶν μὲν ἀλόγως κινεῖ-  
 σθαι καὶ ἀτακτως. ἐπεὶ δὲ ἤρξαντο σωισαίηναι ἥν  
 νόμον ἐκ τῆς ἐκδεχόμενων ὑπὸ τοῦ θεοῦ συμμει-  
 νῶς καὶ τεταγμένως γινώσκειν. τὰς μὲν γὰρ αἰτίας  
 καὶ πρὸ τῇ οὐρανοποιίας δύο εἶναι, καὶ τρίτῃ γινώ-  
 σκειν, ἅμ' ὁ σαρφείας. ἡ χυμὴ δὲ μόνον καὶ ἀτακτικῶς. ἐ-  
 πειδὴ δὲ ὁ νόμος ἐγγύς, λαβεῖν καὶ ταύτας ταύ-  
 ξιν. θῆ ἀπὸ τῆς δὲ τῆς ὑπαρχούσης σωματικῆς γινώ-  
 σθαι ἥν οὐρανόν. δοκεῖ δ' αὐτῷ ἥν θεόν, ὡς καὶ τὴν  
 ψυχὴν ἀσώματον εἶναι. οὕτω γὰρ μάλιστα φθορᾶς καὶ  
 πάθους ἀνεπίδεκτον ὑπαρχειν. τὰς δὲ ιδίαις ὑφί-  
 σαται καὶ καὶ πρὸς ἑαυτὴν, αἰτίας πινὰς ἐκ ἀρχῆς  
 τῇ τριαῦτ' εἶναι τὰ φύσει διεσῶτα, οἷα πρὸς ὅσον αὐτά.  
 Πρὸς δὲ ἀγαθῶν ἢ κακῶν τριαῦτα ἔλεγε. τέλει μὲν  
 εἶναι τὴν ὁμοίωσιν τοῦ θεοῦ. τὴν δ' ἀρετὴν αὐτὰρ κη-  
 μὲν εἶναι πρὸς ἐνδαιμονίαν. ὁργάνων δὲ προσδίδεσθαι  
 τῇ πρὸς σῶμα πλεονεκτημάτων, ἰσχύος, ὑγείας,  
 ἐναισθησίας, τῆς ὁμοίωσιν. καὶ τῆς ἐκείνης, οἷον πλούτου  
 καὶ ἐν γνείας καὶ δόξης. ὁ δὲ δὲ ἡτορ ἐνδαιμόνα ἐ-  
 σεοῦται ἥν σοφόν, καὶ ταῦτα μὴ παρῆ. πρὸς δὲ οὐδὲ  
 αὐ, καὶ γαμήσειν. καὶ οὗ καμνύουσιν νόμος ὁ παρ-  
 ραβήσεσθαι. ἐκ δὲ τῆς ἐκδεχόμενων καὶ νομοθετήσιν  
 τῇ ἑαυτοῦ πατρίδι ἐὰν μὴ τέλει ὑπαρχαίτητα ὁρᾷ  
 τὰ πράγματα ἥν ὑπὸ βαλάνουσι διαφορᾷ δέμει. οἷ-  
 του δὲ καὶ θεοῦ ἐφορᾷ τὰ ἀνθρώπων καὶ δαίμο-  
 νας





ἔχουσιν, καὶ οἱ συγγενεῖς πρὸς ἀλλήλους. ταύτῃ δὲ  
 κεκλήρωται καὶ τὰλλα ζῶα. ἱταρικὴ δὲ χαλκῷ  
 τῇ ἀπὸ σιωνθείας γινομένη, καὶ μηδὲν προσήκου  
 σαρ γένει, ἀλλ' οἷον ἢ πυλαδίδου πρὸς ὀρέϊσιν. ἢ δὲ ξει  
 νικὴ φιλία ἢ ἀπὸ συζώσεως καὶ δὲ γραμματῶν γι  
 νομένη πρὸς σὺν ξένου. ὅτι ἄρα φιλίας, ἢ μὲν ὅτι  
 φυσικὴ, ἢ δὲ ἱταρικὴ, ἢ δὲ ξενικὴ. πρὸς θείας δὲ π  
 ολιτείας εἶδ' ἔστιν τετάρτῃ ἐρωτικῇ. Τῆς πολιτείας ὅτι εἶδ' ἔστι  
 πέντε. ὅτι μὲν γὰρ αὐτῆς ὅτι δημοκρατικόν. ἄλλο δὲ  
 ἀριστοκρατικόν. τρίτον δὲ ὀλιγαρχικόν. τέταρτον  
 βασιλικόν. πέμπτον τυραννικόν. δημοκρατικόν μὲν  
 ὅταν ὅτι εἶναι αἱς πόλιν κρατεῖ ὅτι πᾶσι, καὶ τὰς  
 ἀρχὰς καὶ σὺν νόμῳ δὲ ἑαυτοῖς αἰρεῖται. ἀριστοκρα  
 τία δὲ ὅτι εἶναι ἢ μὲν οἱ πλούσιοι, μὲν οἱ πέντε, καὶ  
 μὲν οἱ ἐνδοξοὶ ἀρχοῦσιν, ἀλλ' οἱ ἀριστοὶ τῆς πόλεως  
 πρὸς αὐτοῖς. ὀλιγαρχία δ' ὅτι εἶναι ὅταν ἀπὸ τιμῆ  
 καὶ αἱ ἀρχαὶ αἰρῶνται. ἐλαττοῦ γὰρ εἶσιν οἱ  
 πλούσιοι τῶν πέντε. τῆς δὲ βασιλείας, ἢ μὲν κατὰ  
 τὰ νόμον, ἢ δὲ κατὰ γένος εἶσιν. ἢ μὲν ὅταν ἐν κα  
 χιδόνι κατὰ νόμον. πωλητὴ γὰρ ὅτι εἶναι. ἢ δὲ ἐν λακ  
 δαίμονι καὶ μακεδονία κατὰ γένος. ἀπὸ γὰρ π  
 ολιτείας ποιοῦνται τῇ βασιλείᾳ. τυραννὶς  
 δὲ ὅτι εἶναι ἢ παρακρουσθέντος, ἢ βιασθέντος ὅταν  
 πᾶσι ἀρχοῦνται. τῆς ἄρα πολιτείας, ἢ μὲν ὅτι δημο  
 κρατία, ἢ δὲ ἀριστοκρατία, ἢ δὲ ὀλιγαρχία, ἢ δὲ  
 βασιλεία, ἢ δὲ τυραννὶς. Τῆς δὲ διανοουμένης  
 ὅτι εἶναι

ὅστις εἶδεν τεῖα. ἢ μὲν γὰρ αὐτῆς ὅστις ποδὶ θεός. ἢ δὲ  
 ποδὶ ἀνθρώπου. ἢ δὲ ποδὶ τῶν ἀποικομνῶν. οἱ δὲ δικαιοσύ-  
 μιν, γὰρ θύοντες κατὰ νόμον καὶ τῶν ἰδῶν ὑπὸ μέ-  
 λους εἶδεν  
 λούμενοι δηλονότι ποδὶ θεοῦ ἐνσεβοῦσιν. οἱ δὲ δικαί-  
 νεια ἀποδιδόντες, καὶ παραθήκας δικαιοπραγού-  
 σιν ποδὶ ἀνθρώπου. οἱ δὲ τῶν μνημείων ὑπὸ μελού-  
 μενοι, δηλονότι ποδὶ τῶν ἀποικομνῶν. τῆς αἴρας  
 δικαιοσύνης, ἢ μὲν πρὸς θεούς ὅστις, ἢ δὲ πρὸς ἀν-  
 θρώπου, ἢ δὲ ποδὶ τῶν ἀποικομνῶν. Τῆς  
 ὑπὸ σῆμης εἶδεν ὅστις τεῖα. τὸ μὲν γὰρ ὅστις πρακτι-  
 κός. τὸ δὲ ποιητικός. τὸ δὲ θεωρητικός. ἢ μὲν γὰρ  
 οἰκονομική, καὶ ναυτική ποιητικά ἐσιν. ἐς γὰρ αὐ-  
 τῶν ἰδέειν ἔργον πεποιημένον. πολιτική δὲ, καὶ  
 αὐλητική, καὶ κιδαισική, καὶ αἱ τοιαῦται πρα-  
 κτικά. οὐ γὰρ ὅστις οὐδέμιν ἰδέειν θεατὸν αὐτῶν  
 πεποιημένον. ἀλλὰ πρᾶτρυσί τι. ὁ μὲν, γὰρ αὐ-  
 λᾷ, καὶ κιδαίρει. ὁ δὲ πολιτεύεται. ἢ δὲ γεω-  
 μετρική, καὶ ἀρμονική, καὶ ἀστρολογική, θεωρητικά.  
 οὔτε γὰρ πρᾶτρυσι, οὔτε ποιοῦσιν οὐθέν. ἀλλ'  
 ὁ μὲν γεωμέτρης θεωρεῖ πῶς πρὸς ἀλλήλας ἔχου-  
 σιν αἱ γραμμαί. ὁ δ' ἀρμονικός τοὺς φθόγγους.  
 ὁ δ' ἀστρολογικός τὰ ἀστρά καὶ τὸν κόσμον. Τῶν  
 ἀρα ἐπιστημῶν, αἱ μὲν εἰσι θεωρητικά, αἱ δὲ πρα-  
 κτικά, αἱ δὲ ποιητικά. Τῆς ἰατρικῆς ἰ-  
 σιν εἶδεν πέντε. ἢ μὲν φαρμακευτική. ἢ δὲ χει-  
 ρουργική. ἢ δὲ διαιτητική. ἢ δὲ νοσογνωμονική.  
 ἢ δὲ

ὑπὸ σῆμης  
 εἶδεν

ἢ ἰατρικῆς  
 εἶδεν



ἡ δὲ βοηθητική. ἡ μὲν φαρμακευτική ὅσα φαρμακῶν  
 ἰᾶται τὰς ἀρρώστιας. ἡ δὲ χειρουργική ὅσα τοῖς τέμ-  
 νειν καὶ καίειν ὑγιαίνει. ἡ δὲ σφαιρητική, ὅσα τοῖς σφαι-  
 ραῖν ἀπαλλάττει τὰς ἀρρώστιας. ἡ δὲ νοσογνωμονική  
 καὶ ὅσα τοῖς γινῶναι τὸ ἀρρώστημα. ἡ δὲ βοηθητική ὅσα τοῖς  
 βοηθεῖ εἰς τὸ παραχεῖν ἀπαλλάττει τὴν ἀλγὴν  
 δύνει. τὴν αἶψαν ἰατρικὴν, ἡ μὲν δὲ φαρμακευτική.  
 ἡ δὲ χειρουργική. ἡ δὲ σφαιρητική. ἡ δὲ βοηθητική. ἡ  
 δὲ νοσογνωμονική. Νόμος σφαιρικός δύο. ὁ μὲν γὰρ γε-  
 γραμμένον. ὁ δὲ ἀγραφόν. ὃ μὲν ἐν ταῖς πόλεσι πε-  
 λιτοδύμεδα γεγραμμένον εἰσὶν. ὁ δὲ ἐπὶ ἑσθῆτι γινόμε-  
 νον, ὅτι ἀγραφόν ηὐλίσσεται. οἷον τὸ μὴ γυμνὸν  
 προσέειναι εἰς τὴν ἀγοράν. μὴ δὲ γυμνακτεῖον ἰματι-  
 πορ ποδωβωλμιαδ. ταῦτα γὰρ ἐθεὶς νόμον κολύει.  
 ἀλλ' ὅμως ὁ πλάτων μὲν ὅσα τὸ ἀγραφόν νόμον κολύ-  
 εῖται. τοῖς αἶψαν νόμον δὲ τὸ μὲν γεγραμμένον, ὁ δὲ ἀ-  
 γραφόν. ὁ λόγος σφαιρικός εἰς πέντε. ὃν εἰς μὲν  
 δὲ τὸν ὅν οἱ πελιτοδύμενοι λίσουσιν ἐν ταῖς ἐκκλησί-  
 ασις, ὃς ηὐλίσσεται πελιτικός. ἐπὶ δὲ σφαιρικός λό-  
 γος ὅν οἱ ἑκτὸς γεγραμμένον. εἰς ἐπίδειξιν τε προφί-  
 ρουσιν, εἰς ἐγκώμα καὶ λόγον καὶ κατηγορίας. τὸ  
 δὲ τριτὸν εἶδον δὲ τὸ ἑκτὸν. τρίτη δὲ σφαιρικός  
 λόγος ὅν οἱ ἰδιῶται σφαιρικός πρὸς ἀλλήλους. εἶ-  
 δεῖται δὲ ὁ τέταρτος πρὸς ἀλλήλους. ἰδι-  
 ῶται δὲ σφαιρικός λόγος ὅν οἱ κατὰ βραχὺ ἐρωτῶντες  
 καὶ ἀκροατοὶ τὸν τριτὸν ἐρωτῶντες σφαιρικός. ὅτι

δὲ καὶ

εἶδ' ἡ τοῦ  
κάλλους:

γ ρία. ἄλ



θία. ἄλλο δὲ χρησικὸν. οἶον ὄργανον καὶ οἰκία, καὶ τὰ  
 τριαῦτα πρὸς χεῖσιν εἰσὶ χαλαρά. τὰ δὲ, πρὸς νό-  
 μῳ καὶ ὑπὸ τῆς δούμας, καὶ τὰ τριαῦτα πρὸς ὠφέ-  
 λειαν ὅστις χαλαρά. τοῖς ἄρα καλῶς, ὃ μὲν ὅστις πρὸς  
 ἔπαινον, ὃ δὲ πρὸς χεῖσιν, τὸ δὲ πρὸς ὠφέλειαν.  
 Ἡ ψυχὴ διαίρεται εἰς τρία. ὃ μὲν γὰρ αὐτῇ ὅστις  
 λογικόν, ὃ δὲ ὑπὸ θυμητικόν, ὃ δὲ θυμηκόν. τὸ τῶν δὲ  
 ὃ μὲν λογικόν ὅστις αἰτιον, τοῖς βουλομένοις καὶ λογί-  
 ζεσθαι καὶ διανοεῖσθαι καὶ πάντων τῶν τῶν τῶν. ὃ δὲ  
 ὑπὸ θυμητικόν μόρθῃ ὅστις τῇ ψυχῇ αἰτιον τοῖς ὑπὸ  
 θυμῷ φαγεῖν καὶ τοῖς πλησιάζειν, καὶ τῶν τῶν.  
 ὃ δὲ θυμηκόν μόρθῃ αἰτιον ὅστις τοῖς παρῆναι καὶ ἡδε-  
 ῖσθαι καὶ λυπεῖσθαι καὶ ὀργίζεσθαι. τῇ ἄρα ψυχῇ  
 ὅστις, ὃ μὲν λογικόν, ὃ δὲ ὑπὸ θυμητικόν, ὃ δὲ θυμηκόν.  
 Τῆς τελείας ἀρετῆς εἶδεν τέσσαρα. ἐν μὲν φρόνησις,  
 ἄλλο δικαιοσύνη. τρίτην ἀνδρεία. τέταρτην σωφρο-  
 σύνη. τὴν ἢ μὲν φρόνησις αἰτία τοῖς πράγμασι ὁρθῶς  
 τὰ πράγματα. ἢ δὲ δικαιοσύνη τοῖς ἐν ταῖς κοινωνί-  
 ας καὶ τῆς συναλλαγῆς δικαιοπραγεῖν. ἢ δὲ ἀν-  
 δρεία τοῖς ἐν τῆς κινδύνοις φοβητοῖς μὴ θίγασθαι  
 πρῆναι, ἀλλὰ μένειν. ἢ δὲ σωφροσύνη τοῖς κρατέειν τῶν  
 ὑπὸ θυμῷ, καὶ ἀπὸ μηδεμιᾶς ἡδονῆς δουλοῦσθαι. ἀλ-  
 λά ἡσυχίᾳ ζῆναι. τῇ ἄρα τῇ ἄρα, ὃ μὲν ὅστις φρόνησις.  
 ἄλλο δικαιοσύνη. τρίτον ἀνδρεία. τέταρτην σωφρο-  
 σύνη. ἢ ἄρα ἡ διαίρεται εἰς μόρην πέντε. ἐν μὲν  
 εἰς ὃ καὶ

εἰς τὸ ἡγατὰ νόμον. ἐν δὲ εἰς τὸ ἡγατὰ φύσιν. ἐν δὲ εἰς  
 τὸ ἡγατὰ ἔθῳ. τέταρτον εἰς τὸ ἡγῆ γνῶ. πέμπτου διαίρεσις  
 δὲ ἡγατὰ βίαν. οἱ μὲν ὅσω ἐν ταῖς πόλεσι ἀρχοντοῦσι. ὅτι ἀρχὴς  
 ἔσθ' ὅτι πρὸς τὴν πρὸς τὴν ἐπαὺν αἰρεθῶσι, ἡγατὰ νόμον ἀρχαί  
 σιν. οἱ δὲ ἡγατὰ φύσιν, οἱ ἀρρενες δὲ μόνον ἐν τῇς ἀνθρώ  
 πους ἀλλὰ καὶ ὡς τῇς ἄλλοις ζώοις. ἐπὶ πρὸς γὰρ τὰ  
 ἀρρενα τῶν θηλειῶν πανταχρὺ ἀρχαί. ἡ δὲ τὸ ἡγατὰ  
 ἔθῳ ἀρχὴ ριαύτη ὅστις, οἷον οἱ παιδαγωγοὶ τῶν  
 παίδων ἀρχαί. καὶ οἱ διδασκαλοὶ τῶν φοιτῶν,  
 τῶν ἡγατὰ γνῶ δὲ ἀρχὴ ριαύτη τις λέγεται, οἷον  
 οἱ λακεδαιμόνιοι βασιλεῖς ἀρχαί. ἀπὸ γὰρ γνῶ  
 πνός ἡ βασιλεία, καὶ ἐν μακεδονία δὲ τὸ αὐτὸν τρεῖς  
 πρὸς ἀρχαί. καὶ γὰρ ἐκεῖ ἀπὸ γνῶς ἡ βασιλεία κα  
 τίσεται. οἱ δὲ βιαστέμνοι ἀρχαί ἀκούειν τῶν πρ  
 ος τῶν. ἡ ριαύτη ἀρχὴ ἡγῆ βίαν λέγεται ἔτι. ὅτι ἀρ  
 χὴς ἀπὸ ὅτι, τὸ μὲν ἡγῆ νόμον, τὸ δὲ ἡγῆ φύσιν, τὸ δὲ  
 ἡγατὰ ἔθῳ, τὸ δὲ ἡγῆ γνῶ, τὸ δὲ ἡγατὰ βίαν. Τῆς εἰρη  
 ῖνης εἰδὴ ὅστις, ἔξ. ὅταν μὲν γὰρ κελύωσι πρὸς  
 μὲν ἢ συμμαχεῖν πρὸς τινα, καλεῖται τὸ ριθρὸν  
 εἶδῳ προτροπή. ὅταν δὲ ἀξιῶσι μὴ πρὸς μὲν  
 δὲ συμμαχεῖν, ἀλλ' ἡσυχίαν ἀγειν, τὸ ριθρὸν εἶ  
 δῳ ὅστις ἀπρὸς. τρεῖς εἶδῳ ὅτι ῥητρείας ὅ  
 ταν τις φάσκη ἀδικεῖσθαι ἔσθ' ὅτι καὶ πρὸς  
 ἡγατὰ αἰτιῶν ἀφ' αἰνῶν. τὸ δὲ ριθρὸν εἶδῳ ἡγατὰ  
 εἰς ὀνομαζέται. τέταρτον εἶδῳ ὅτι ῥητρείας ἀφ'



γία ηαλείται ὅταν ἀρφαίνῃ αὐτὴν μὴδὲν ἀδικοῦν-  
 τα, μήτε ἄλλο ἄρτην μὴδὲν πλεῖοντα. ὃ δὴ τριῶν  
 ἀρλογίων ηαλοῦσι. πέμπτῃ εἶδῃ ἡνερρείας ὅταν  
 ἐν λέγει καὶ ἀρφαίνῃ ηαλὸν καγαθόν. ὃ δὴ τριῶν  
 εἶδῃ ηαλείται ἐγκώμιον. ἕκτῃ εἶδῃ ὅταν τις ἀ-  
 ρφαίνῃ φαῦλον. ὃ δὴ τριῶν εἶδῃ ηαλείται φό-  
 γῃ. ὅτῃ ἄρα ἡνερρείας, ὃ μὲν ὅτι ἐγκώμιον, ὃ δὲ φό-  
 γῃ, ὃ δὲ προτροπή, ὃ δὲ ἀρτροπή. ὃ δὲ ηατῆς ο-  
 ρία, ὃ δὲ ἀρλογία. ὃ ὁρθῶς λέγειν διακρίνεται εἰς  
 τέτταρα. ἢ μὲν ἃ δεῖ λέγειν, ἢ δὲ ὅσα δεῖ λέγειν.  
 τρίτῃ πρὸς ὅς δεῖ λέγειν. τέταρτῃ δὲ πλῶντα λέ-  
 γειν δεῖ. ἃ μὲν ἐν δεῖ λέγειν, ἃ μέλει συμφόρειν  
 ὅθι λίσονται καὶ ἀκρούονται. ὃ δὲ ὅσα δεῖ λέγειν. μὴ  
 πλείω μὴδὲ ἐλαττωτέρῃ ἡκανῶν. ὃ δὲ πρὸς ὅς δεῖ  
 λέγειν, αὐτὴ πρὸς πρὸς βυτόρτου ἀμαρτάνοντας  
 ἀελέγειν, ἀρμότοντας δεῖ αὐτὸν λόγου ἀελέγειν  
 ὡς πρὸς βυτόροις. αὐτὴ πρὸς νεωτόρτου, ἀρμότον-  
 τα δεῖ λέγειν ὡς νεωτόροις. πλῶντα δὲ λέγειν  
 ὅτι, μήτε προτόρτω μήτε ὑσώρτω. εἰ δὲ μὴ, ἀμαρτη-  
 σέσθαι καὶ ηακῶς ἰεῖν. ἢ ἐνδρυγούσια διακρίνεται  
 εἰς τέτταρα. ἢ γὰρ χεῖμασι, ἢ σώμασι, ἢ ταῖς ψυ-  
 χήμασι, ἢ τοῖς λόγοις. τοῖς μὲν ἐν χεῖμασι ὅταν δεο-  
 μόνω παραβωθήσῃ τις εἰς χεῖμα τῇ λόγον ἐνπρε-  
 σαι. τοῖς δὲ σώμασι ἐν πρῶσι ἀλλήλους, ὅταν πα-  
 ραγνόμῃνοι τῶν μόνων παραβωθῶσι. οἱ δὲ πα-  
 ραγνόμῃνοι τῶν μόνων παραβωθῶσι. οἱ δὲ πα-  
 ραγνόμῃνοι τῶν μόνων παραβωθῶσι.

διακρίνεται  
 ὁρθῶς λέγειν

διακρίνεται  
 ἐνδρυγούσια

δόκοντος

δίδουντες καὶ ἰατρδόνουντες καὶ διδασκούντες ἀγα-  
 θόν τι, ἔτι ταῖς ὑψηλμαῖς ἐνδογχοῦσι. ὅταν δ' εἰ-  
 σέλθωσι εἰς διηκασίον ἄλλο ἑπὶ ἄλλο βοηθός,  
 καὶ λόγον πινὰ ὑπείκῃ εἶπῃ ἑπὶ αὐτοῖς, ἔτι δὲ λό-  
 γω ἐνδογχεῖ. ὅτι ἄρα ἐνδογχοῖας, ἢ μὲν ὅτι ὅλα χρε-  
 ματῶν, ἢ δὲ ὅλα σωματῶν, ἢ δὲ ὅλα ὑψημῶν, τε-  
 τάρτη ὅλα λόγων. διακρίνεται ὅτε τέλει τῶν πραγ-  
 ματῶν εἰς τέσσαρα εἶδη. ἢ μὲν καὶ νόμον τέλει  
 τὰ πλάγματα λαμβάνει ὅταν φήμισμα γήνηται,  
 καὶ τοῦτον νόμον τελίσῃ. κατὰ φύσιν δὲ τέλει τὰ  
 πλάγματα λαμβάνει ἢ, τε ἡμῶρα καὶ ὁ ἔνιαυτός καὶ  
 αἰῶρας. καὶ τέχνῳ δὲ τέλει τὰ πλάγματα λαμ-  
 βάνει, οἷον ἡ οἰκοδομική. οἰκίαν γὰρ πρὶν ὑπὲρ τελεῖ. καὶ  
 ἡ ναυπηγική, πλοῖα γὰρ. κατὰ τύχῳ δὲ γίνεται  
 τῶν πραγμάτων τέλει, ὅταν ἄλλως, καὶ μὴ ὡς ἔπος  
 λαμβάνει πρὶν, ἀρβαίνῃ. τοῦ τέλους ἄρα τῶν πραγ-  
 ματῶν, ὅτε μὲν κατὰ νόμον, ὅτε δὲ κατὰ φύσιν, ὅτε δὲ  
 κατὰ τέχνῳ, ὅτε δὲ κατὰ τύχῳ εἴσιν. ἡ δυνάμις  
 διακρίνεται εἰς τέσσαρα εἶδη. ἢ μὲν ὁ δυνάμεδα πᾶσι  
 διανοία λογίζεσθαι καὶ ὑπονοεῖν. ἢ τόσον δὲ τοῦ σώ-  
 ματι, οἷον προσέεσθαι καὶ δίδόναι καὶ λαμβάνειν  
 καὶ τὰ τριῶν. τριῶν ὁ δυνάμεδα πλήθει στραπω-  
 τῶν καὶ χρεματῶν. ὅθεν καλεῖται πολλῶν δυνάμει  
 ἔχωρ βασιλεύς. τετάρτη δὲ διακρίσθαι δυνάμει  
 πάσῃ. καὶ ἐν πρῶτῃ, καὶ κακῶς. οἷον ἀρξάμεν καὶ

τοῦ τέλους τῶν  
 πραγμάτων  
 εἴδη

διακρίσθαι τὰ  
 δυνάμει



ἡαίρεσις  
τῆς φιλίας

ἡαίρεσις τῆς  
ἐνδαιμονίας

παιδιδέσθαι δυνάμεθα, καὶ ὑγιεῖς γίνεσθαι, καὶ  
πάντα τὰ ραιῶτα. Ὡς αἶσα δυνάμεως, ἢ μὲν ὅστις ἐν  
δρανοῖα, ἢ δ' ἐν βελ σώματι, ἢ δ' ἐν βελ σφαρπίδι  
καὶ χερμασίμ, ἢ δ' ἐν βελ ποιῆν καὶ πασχειν.  
Τῆς φιλανθρωπίας ἔστιν εἶδη τρία. ἐν μὲν ὅσῃ τῆς  
προσηγορίας γινόμενον, οἷον ἐν οἷς πινδὸς ἤν ἐν τυχόν  
τα πάντα προσεγορεύσσι, καὶ τὴν δεξιὰν ἐμβάλλ  
λοντὸς χαιρετίζουσιν. ἄλλο εἶδ' ὅταν τις βοηθηπ  
κὸς ἢ παντὶ βελ ἀτυχῶντι. ἑτοῖον εἶδ' ὅτι φιλαν  
θρωπίας ἐν ᾧ ἄνθρωποι φιλοδφονισαί εἰσι. τ' αἶσα φιλαν  
θρωπίας, ἢ μὲν ὅστις ὅσῃ τῆς προσεγορεύσιν. ἢ ὅστις τοῖς  
ἐνδοχτεῖν, ἢ δὲ ὅσῃ τοῖς ἰσίων καὶ φιλοσωπασάξειν.  
Ἡ ἐνδαιμονία ὁρίζεται εἰς πέντε μέρη. ἢ μὲν γὰρ  
αὐτῆς ὅστις ἐν βουλία, ἢ δὲ ἐναιδησία καὶ ὑγεία τοῦ  
σώματος. τῆν ἐντυχία ἐν ταῖς πλάξδσι. τέταρ  
την ἐνδοξία παρὰ τοῖς ἀνθρώποις. πέμπτην ἐν πεί  
χεσμάτων καὶ τῶν εἰς τὸν βίον χερσίμων. ἢ μὲν ἐν  
βουλία γίνεται ἐν παιδείας καὶ ἐν τοῖς πολλῶν ἐμ  
πειρον γυγνέσθαι. ἢ δὲ ἐναιδησία ἐν τῶν τῶ σώμα  
τι μέρων, οἷον ἑλμ τις ὁφθαλμοῖς ὁρᾷ καὶ τοῖς  
ὤσιν ἀκούει, καὶ τῇ ῥινὶ καὶ βελ σώματι αἰσθάνηται.  
ὥν δὲ αἰσθάνεσθαι, τὸ δὲ τοιοῦτον ἐναιδησία.  
ἢ δὲ ἐντυχία ὅταν ἐφ' ἃ σκοπεῖ πρῶτον κατ' ὁρθόν  
ἢ δὲ πρῶτον τὸν σπουδαῖον. ἐνδοξία δ' ὅστις ὅ  
ταν τις ἐν ἀκούῃ. ἐν πείρα δ' ὅστις ὅταν τις πρὸς  
τὰς ῥ

τὰς οὖν τρεῖς βίῳ χρήσεις οὕτως ἔχῃ, ὥς τε φίλτου ἐν  
 πρῆσαι, καὶ φιλοτίμως καὶ ἐκπόρως ἀπολαττου-  
 γῆσαι. ὧ δὲ ἐπαρχει ταῦτα, ἐτὶ δὲ ὅστις ἐν δαί-  
 μων τελείως. τῆς ἄρα ἐνδαιμονίας ὅστις, τὸ μὲν ἐν  
 βουλία, τὸ δὲ ἐν αἰσθησία, τὸ δὲ ἐν υἰαία τοῦ σώματος  
 τὸ δὲ ἐν τυχεῖα, τὸ δὲ ἐν δοξία, τὸ δὲ ἐν πορείᾳ.  
 Αἱ τέχναι εἰς τρία διαίρεσθαι, ἢ μὲν πρώτη, ἢ δὲ <sup>διαίρεσις</sup>  
 δευτέρα, ἢ δὲ τρίτη. πρώτη μὲν οὕτω ἢ μεταλλο- <sup>τεχνῶν</sup>  
 τικὴ καὶ ὑλοτομικὴ. παρασκευαστικαὶ γὰρ εἰσιν.  
 ἢ δὲ χαλκοῦτικὴ, καὶ ἢ τεκτονικὴ μετασκευαστι-  
 καὶ εἰσιν. ἐκ μὲν γὰρ τοῦ σιδήρου ἢ χαλκοῦτικὴ ὁ-  
 πλᾶ ποιεῖ. ἢ δὲ τεκτονικὴ ἐκ τῆς ξύλων, αὐλῶν, καὶ  
 λύρας. ἢ δὲ χερσικὴ, οἷον ἵππικὴ τοῖς χαλκίνοις χρῆ-  
 ται, ἢ πολεμικὴ τοῖς ὀπλοῖς, ἢ μουσικὴ τοῖς αὐλοῖς καὶ  
 τῇ λύρᾳ. τέχνης ἄρα τρία εἶδη εἰσὶ. τὸ μὲν πρῶτον  
 εἰς τέταρτα γῆν διαίρεται. ὧ μὲν ἐν λείγομιν εἶναι <sup>διαίρεσις</sup>  
 τὸν τῶν ἀρετῶν ἔχοντα ἰδίᾳ ἀγαθόν. ἄλλο δὲ αὐτὸ <sup>ἀγαθῶν</sup>  
 τῶν ἀρετῶν καὶ τῶν δικαιοσύνην λείγομιν ἀγαθόν  
 εἶναι. τρίτον δὲ οἷον σιτία καὶ γυμνασία τὰ πρόσφο-  
 ρα καὶ φάρμακα. τέταρτον δὲ φάρμιν εἶναι ἀγαθόν  
 οἷον αὐλητικὴν καὶ ὑποκριτικὴν καὶ τὰ τοιαῦτα.  
 ἀγαθοῦ ἄρα τέταρτα εἶδη εἰσὶ. ὃ μὲν, τὸ τῶν ἀρετῶν  
 ἔχειν. ἑτὸρον δὲ, αὐτὴν ἢ ἀρετὴν. τρίτον δὲ, σιτία καὶ  
 γυμνασία τὰ ὠφέλιμα. τέταρτον δὲ, αὐλητι-  
 κὴν καὶ





λουβδρία· καὶ ὃ ἀδίκως σφραγισθῆναι ἔδει διηγάτως  
 σφραγισθῆναι, καὶ τὰ ριστὰ καὶ κακὰ κακοῖς ἐναντία  
 εἶσι. ὃ δὲ βαρὺ ἔδει κούφω, καὶ ὃ ταχὺ ἔδει βρα-  
 δεῖ, καὶ ὃ μέλαν ἔδει λευκῷ, ὡς ἔδει τόρα ἔδει τόροις  
 ἐναντία εἶσι. τῶν ἐναντίων ἄρα, τὰ μὲν ὡς ἀγαθὰ κα-  
 κοῖς ἐναντία ἔδει, τὰ δὲ ὡς κακὰ κακοῖς, τὰ δὲ ὡς ἔ-  
 δε τόροις ἔδει τόρα. Τῶν ἀγαθῶν γένη εἰσὶ τρία. τρία γένη τῶν  
ἀγαθῶν  
 τὰ μὲν γὰρ ἔστιν ἐκτὰ, τὰ δὲ μεθεκτὰ, τὰ δὲ ἑω-  
 κτὰ. τὰ μὲν οὖν ἐκτὰ ἔστιν ὅσα ἐνδέχεται ἔχειν,  
 οἷον ἡ δικαιοσύνη, καὶ ἡ ὑγίεια. μεθεκτὰ δὲ ὅσα ἔ-  
 χειρ μὲν μὴ ἐνδέχεται, μεταοχεῖρ δὲ αὐτῶν ἐνδέ-  
 χεται. οἷον αὐτὸ ὃ ἀγαθόν, ἔχειρ μὲν ἔκ ἐνδέχε-  
 ται, μεταοχεῖρ δὲ αὐτῷ ἐνδέχεται. ἑωκτὰ δὲ ὅ-  
 σα, μήτε μεταοχεῖρ, μήτε ἔχειρ ἐνδέχεται, ἑωκτὰ  
 χειρ δὲ δέει. οἷον ὃ ἀπορροιαῖον εἶναι καὶ δίκαιον εἶ-  
 ναι. τῶν ἀγαθῶν ἄρα, τὰ μὲν ἔστιν ἐκτὰ, τὰ δὲ μεθε-  
 κτὰ, τὰ δὲ ἑωκτὰ. ἡ συμβουλία διαίρεται διαίρεσις  
συμβουλίας  
 εἰς τρία. εἰς γὰρ αὐτῆς, ἐν μὲν ἐκ τῶν παροισχυμένων  
 χρόνων λαμβανόμενον, ἐν δὲ ἐκ τῶν μελλόντων, ἐν  
 δὲ ἐκ τῶν ἐνέστων. τὰ μὲν οὖν ἐκ τῶν παροισχυμέ-  
 νων παραδείγματα, οἷον πᾶσι ἔπαθον λακεδαίμονιοι  
 πισύσαντες. τὰ δὲ ἐκ τῶν παρόντων, οἷον ἀρφαί-  
 νειν τείχη ἀστυνῶν, δειλὸν ἀνθρώπων, σίτην ὀλί-  
 γον. τὰ δὲ ἐκ τῶν μελλόντων, οἷον ταῦς ἑωκτοῖς  
 μὴ ἀδικεῖν τὰς πρὸς βίαν, ὅπως μὴ ἀδύξῃ ἡ ἐλ-  
 λὰς γένῃ.



λὰς γίνονται. Ὡς ἀρα συμβουλίας, τὰ μὲν ὅστις ἐκ  
 τῶν παροικησάντων, τὰ δ' ἐκ τῶν παρόντων, τὰ δ'  
 ἐκ τῶν μελλόντων. Ἡ φωνὴ διαίρεται εἰς δύο. ἓν  
 μὲν αὐτῆς ὅστις ἐμφυχρ, ἓν δὲ ἀφυχρ. ἐμφυχρ  
 μὲν ἢ τῶν ζώων φωνή, ἀφυχρ δὲ φθογγοὶ καὶ ἦχοι. Ὡς  
 ἐμφύχσ φωνῆς, ἢ μὲν ὅστις ἐγγραμματῶν. ἢ δὲ ἀ-  
 γραμματῶν. ἐγγραμματῶν μὲν ἢ τῶν ἀνθρώπων.  
 ἀγγραμματῶν δὲ ἢ τῶν ζώων. Ὡς ἀρα φωνῆς, ἢ μὲν  
 ἐμφυχρ, ἢ δὲ ἀφυχρ. Τῶν οὖν τῶν, τὰ μὲν ὅστις  
 μδρῖς, τὰ δὲ ἀμείρις. τὰ τῶν δὲ τῶν μδρῖς, τὰ  
 μὲν ὁμοιομδρῖς, τὰ δὲ ἀνομοιομδρῖς. ἀμδρῖς μὲν ὅν ὅστις  
 ὅσα μὴ ἔχει διαίρεσιν, μηδὲ ἐκ τινος σύγκειται,  
 οἷον ἦτε μονὰς καὶ ἡ σιγμὴ καὶ ὁ φθόγγος. μδρῖς δὲ  
 ὅσα ἐκ τινος σύγκειται, οἷον αἶ, τε συλλαβαὶ καὶ  
 συμφωνίαι, καὶ ζῶα, καὶ ὕδωρ, καὶ χυσός. καὶ ὁμοιο-  
 μδρῖς μὲν ὅσα δι' ὁμοίωρ σύγκειται, καὶ μηδὲρ δια-  
 φορεῖ τ' ὅλον τοῦ μδρῖς εἰ μὴ ἴσθ' πλήθει, οἷον τ' ὕ-  
 δωρ καὶ τ' χυσίον καὶ πᾶν τ' ῥιζόν. ἀνομοιομδρῖς  
 δὲ ὅσα δι' ἀνομοίωρ μδρῶν σύγκειται, οἷον οἰκία καὶ  
 τὰ ῥαῦτα. τῶν οὖν τῶν ἀρα, τὰ μὲν ὅστις μδρῖς, τὰ δὲ  
 ἀμδρῖς. τῶν δὲ μδρῖς, τὰ μὲν ὁμοιομδρῖς, τὰ δὲ ἀνο-  
 μοιομδρῖς. τῶν οὖν τῶν, τὰ μὲν ὅστις καθ' ἑαυτὰ, τὰ δὲ  
 πρὸς τι λέγεται. τὰ μὲν οὖν καθ' ἑαυτὰ λεγόμενα  
 ὅστις ὅσα ἐν τῇ ἐρμηνείᾳ μηδ' ἑνὸς προσδίδεται. ταῦ-  
 τα δ' αὖ εἰν οἷον ἀνθρώπος ἵππος, καὶ τὰ ἄλλα  
 ζῶα. τὰ τῶν

διαίρεσις  
 φωνῆς

διαίρεσις  
 τῶν οὖν τῶν

ζῶα. τὰ τῶν γὰρ ἑδερ δι' ἐρμινείας χωρεῖ. τῶν δὲ  
 πρὸς πλεονασμῶν ὅσα προσδίδεται τινὸς ἐρμινεί-  
 ας. οἷον ὃ μείζον πίνθη, καὶ ὃ βάττον πίνθη, καὶ ὃ  
 κῆλμιον καὶ τὰ ριαῦτα. τό τε γὰρ μείζον ἐλαττο-  
 νός ἐστι μείζον, καὶ ὃ βάττον τινός ἐστι. τῶν οὐτῶν ἄρα,  
 τὰ μὲν αὐτὰ καὶ αὐτὰ λέγεται, τὰ δὲ πρὸς π. ὦ-  
 δε καὶ τὰ πρῶτα διήρει κατὰ τὸν ἀριστοτέλιον.  
 Γέγονε δὲ καὶ ἄλλο πάλιν φιλοσόφῳ ῥόδιῳ,  
 μαθητῆς παναιτίου, καὶ φησι σέλδουκῳ ὁ γραμ-  
 ματικός ἐν πρώτῳ πύλιν φιλοσοφίας. καὶ ἄλ-  
 λῳ πύλιν πατητικός μαθητῆς ἀριστο-  
 τέλους. καὶ ἐτόρθη παξιφαί-  
 νος. καὶ ὁ τῆς ἀρχαί-  
 ας κωμωδίας  
 ποιητής.





ΣΟΦΙΣΤΙΚΟΝ ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ ΛΑΕΡ-  
ΤΙΟΥ ΒΙΩΝ ΚΑΙ ΓΝΩΜΩΝ ΤΩΝ ΕΝ  
ΦΙΛΟΣΟΦΙΑ ΕΥΔΟΚΙΜΗΣΑΝ-  
ΤΩΝ ΤΩΝ ΕΙΣ ΔΕΚΑ  
ΤΟ ΤΕΤΑΡΤΟΝ

ΣΤΕΥΣΙΡΡΟΣ



Α μὲν ποῦ πλάτῃς ὁ ῥαυτα λῶ  
δὲ ῥ δῶα ῥμ ἡμῖν σῶα γα γείμ ὦ  
λοπύως, διελήφασι τὰ λεγόμενα  
ποῦ τὰνδρός. διεδίξατο δ' αὐτῶν  
σπύσι πω ὦ ἐνυμίδουτ ὦ ἄβη  
ναῖ ὦ. ἔθ' μὲν δ' ἡμῶ μυρξίνουσι ὦ. ὕος δὲ τῆς ἀδελ  
φῆς πωτώνης, καὶ ὅς χολάρχισεν ἐπὶ ὀκτώ. ἀρξά  
μιν ὦ ἀρ' ὦ γδός καὶ ἡγρσῆς ὀλυμπιαδ ὦ.  
χαρίτῃ τὲ ἀγαλματα ἀνέθηκεν ἐν ἔθ' μουσίῳ ἔθ'  
ἔθ' πλάτῃ ὦ ἐν ἀηαδημίᾳ ἰδρυθῆν. καὶ ἔμεινε  
μὲν ὡδ' ὦ αὐτῶ πλάτωνι δογματῇ. ὁ μὲν ῥ  
ἦθ' δέμεινε ριθτ ὦ. καὶ γρ' ὀργίλ ὦ καὶ ἡδῶ  
νῶν ἡπῶν λῶ. φασὶ δὲ αὐτῶ ἔθ' θυμοῦ ῥ κυνίστορ  
εἰς ῥ φρίαρ ξί-φαι. καὶ ὕφ' ἡδονῆς ἔλθειν εἰς μακεδν  
σίαν ὡδ' ῥμ ηγσάνδρ' γαλμορ. ἐλέγοντ δὲ αὐτῶ καὶ  
αἱ πλάτῃ ὦ

αὐτῶν τῶν ἀκούειν μαθήτῶν, λαοφροσύνη τὴν  
 μακρινήν, καὶ ἀξιοθῆναι ἢ φλιασῖα. ὅτε καὶ διονύσιος  
 πρὸς αὐτὸν γράφων πωδασικῶς φησὶ. καὶ ἐκ τῆς ἀφ'  
 ἡγεμονίας σου μαθητείας ἔστι τὴν φιλοσοφίαν ἡγάτα  
 μαθεῖν. καὶ πλάτῃν μὲν ἀτελεῖς φόρων ὅς παρ' αὐ  
 τὸν φοιτῶντας ἐπίει. σὺ δὲ δασμολογῆς, καὶ παρ'  
 ἐκόντων καὶ ἀκόντων λαμβάνεις. ἔτι πρῶτον  
 ἡγάτα φησι διόδωρον. ὃν ἀρχιμνημονοῦμεν τῶν πρῶ  
 τῶν, ὃν ῥίς μαθήματα ἐθεάσατο ὁ κοινὸν, καὶ συνω  
 κείωσε ἡγεμόνῳ τῶν δυνάμεων ἀλλήλων. καὶ πρῶτον  
 παρὰ ἰσοκράτους τὰ ἡγεμονικά ἀπὸ ῥήτων ἡλιμύει  
 καὶ ὡς φησι ἡγεμόν. καὶ πρῶτον ἔννε. ὃ τὰ φορμὰ  
 τῶν φεγγαίων ἐνοχη τριούσιν. ἡ δὲ ἐπὶ παρα  
 λύσεως καὶ ὁ σῶμα διέφθαρτο. καὶ πρὸς ἐξνοκροπῇ  
 διεπέμπτο παρακλήων αὐτὸν ἰλθεῖν καὶ τὴν οὐ  
 λὴν δεξιὰν δεῖξαι. φασὶ δὲ ἐπ' ἀμαξίου αὐτὸν φερό  
 μενον εἰς τὴν ἀρχιερεῖαν συναγῆναι διογῆναι, καὶ  
 χαῖρε εἰπεῖν. τὸν δὲ φαῖναι, ἀλλὰ μὴ σὺ γε ὅς τις ὕ  
 περ μὲν ἔστιν ἡγεμόν. καὶ τέλει ἐπὶ ἀθυμίας  
 ἐκὼν τὸν βίον μετήλλαξε γηραιὸς ὢν. καὶ ἔστιν ἡμῶν  
 εἰς αὐτόν. ἀλλ' εἰ μὴ ἀποδύσιππον ἐμάνθανον ὥδε δια  
 νείσθαι, ὅτι αὐτὸς ἐπεισέ με τις τόδε λέξαι. ὅς τινι  
 πλάτῃν πρὸς αἵματι. ὅς γὰρ ἀθυμῶν ἡγάτανεν  
 αὐτὸν ἀλλὰ διὰ πτοφόρα μικρόν. πλούταρχος δὲ φη  
 σιν ὃν ἔδωκε λυσάνδρου βίον καὶ σύλλα φθιστὴν ἐκεί  
 νου αὐτόν



ὅταν αὐτόν. ἡ δὲ καὶ ὁ σῶμα ὁρακὲς χυμῶν ὥς φη  
 σι πμόθεον ἢ ἡδὲ πόδι βίωρ. ὅτ' φησὶ πρὸς ἑρ  
 ἱρῶντα πλούσιον ἀμόρφον ἔφη. τί δέ σοι δέει ἑῶν; ἐγὼ  
 γάρ σοι δέηα ταλάντων ἐνμορφοτόξαν ἐνρήσω. καὶ  
 ταλάντοις δὲ πᾶμπλειςα ἑπομνήματα, καὶ ὁρᾷ  
 γυ πλείονας. ἢ οἷς καὶ ἀείσιππον ἑρ κυρνωαῖον.  
 πόδι πλούτ' α. πόδι ἡδονῆς α. πόδι διηρισσύλ  
 νης α. πόδι φιλοστορίας α. πόδι φιλίας α. περ  
 εἰ θεῶν α. φιλόσοφον α. πρὸς κίφαλον α. κί  
 φαλον α. κλεινόμαχον ἢ λυσίας πλότης α.  
 πόδι ψυχῆς α. πρὸς γρύλλον α. ἀείσιππον α.  
 τεχνῶν ἐλεγχον α. ἑπομνήματα καὶ διωλοισι.  
 τεχνικὸν α. διωλοισι τῶν πόδι τῶν πραγμάτων  
 ἀν' ὁμοίων α β γ δ ε ς ζ η θ ι. διακρί  
 σεις, καὶ πρὸς τὰ ὅμοια ἑποθέσεις. πόδι γνῶν καὶ ἐ  
 δῶν παραδειγματῶν. πρὸς ἑρ ἀμαρτυροῦ πλά  
 τῶν ἐγκώμιον. ὡς οὐαὶ πρὸς δίωνα, διονύσιον,  
 φίλιππον. πόδι νομοθεσίας. μαθηματικὸς. μανδρό  
 βυλον. λυσίας. ὄροι. τάξεις ἑπομνήματα τῶν. σίχρ  
 μ δ λ ο ε. πρὸς ἑῶν γράφει εἰσιμωνίδης  
 τὰς ἰσορίας ἢ αἷς κατὰ τετῶν τὰς πράξεις δίω  
 νον τε καὶ βίωον. ἢ διουτόξω ἀρμνημονομα  
 τῶν φαβωρίων φησὶν, ὡς ἀριστοτέλης αὐτὸ τὰ βι  
 βλία τειῶν ταλάντων ὠνήσας. γέγονε πούσιπ  
 πον εἰτόξω ἱατρὸς ἡροφίλιον ἀλδανφδύς.

Ξηνοκράτης

## ΞΕΝΟΚΡΑΤΗΣ

— Ενοκράτης ἀγαθλιώτης χαλκηδόνι, οὗ  
 — τῷ ἐκ νέου πλάτῃ ἤκουσε. καὶ εἰς σικε-  
 λίαν αὐτῷ συναπεδήμησεν. ὧν δὲ τῶν φύσιν νο-  
 θρὸς, ὥς τε φασὶ λέγειν ὅτι πλάτωνα συγκαίοντα  
 αὐτὸν ἀριστοτέλει. \* ὅς δὲ, χαλινού. καὶ ἐφ' οἷον ἴπ-  
 πον, οἷον ὄνον ἀλείφω. σεμνὸς δὲ τῶν τε ἄλλα ξένοι  
 κρῶτης καὶ σκυθρῶως ἀεί, ὥς τε αὐτῷ λέγειν συ-  
 νεχὺς τὸν πλάτωνα. ξενόκρατος βύε τοῖς χαλκισι.  
 διήγε τὴν ἀγαθὴν ταπλῆσα. καὶ εἶποτε μέλ-  
 λει δὲ ἄστυ ἀπικῆναι φασὶ τὸν βορυβώδεις καὶ πορ-  
 νικὸν ἔπος ἔλλειν αὐτοῦ τῇ παρόδῳ. καὶ ποτε  
 καὶ φρωίῳ τῶν ἱταῶν ἐβελῆσαι περὶ αὐτοῦ  
 τὸν, καὶ διήθην διωκομένην ἔπο τινων κηταφυ-  
 γῆν εἰς τὸ δικίδιον. τὸν δὲ, ἐνεχὰ τοῦ ἀνθρωπί-  
 νου εἰσδέξασθαι, καὶ ἐνὸς οὐτῷ κλινιδίου Δειο-  
 μένη μεταδοῦναι τῆς κητακλίσεως. καὶ τέλῳ  
 πολλὰ ἐκλιπαροῦσα ἄπρακτῷ ἀποσλῶναι. λέ-  
 γειν τὴν πρὸς τὸν πωδανομένην, ὥς οὐκ ἀπ'  
 ἀνδρὸς ἀνασάνη. γήιοι δὲ λαΐδα φασὶ παρακη-  
 τακλῖναι αὐτῷ τὸν μαθητὰς. τὸν δὲ, οὕτως  
 εἶναι ἐγκρατῇ, ὥς τε καὶ τομὰς καὶ καύσεις πολ-  
 λαῖς ὑπομένειν πρὶ τὸ αἰδοῖον. ὧν δὲ καὶ ἀ-  
 ξιόπιστῳ σφόδρα. ὥς τε μὴ δεῖον ἀνώμοτον μαρ-  
 τυρεῖν, τούτῳ μόνῳ συνεχώρουσιν ἀβλιῶται. καὶ δὴ  
 καὶ αὐτὰς,



Ὁ αὐταρκεῖσά τ' ὤ. ἀλλ' αἰδέσθαι τοῦ καὶ συχνοῦ  
 ἀργύριον ἀρσεύλαντ' αὐτῶν, τειροχίλιας ἀπικὰς  
 ἀφελὼν, ὃ λοιπὸν ἀπέπεμψεν εἰπὼν, ἐκείνῳ πλείον  
 νῶν δέ μιν πλείονας τρέφοντι. ἀλλὰ καὶ ὅτ' ἀντιπαύ  
 τρου πεμφθὲν μὴ προσέειπαι, ὥς φησι μυρωναίου  
 ἐν ὁμοίοις. καὶ χερσὶν σεφάνῳ τιμηθῆναι ἐπ' ἄλλῳ  
 πρὸς τοῦτο ὅτι καὶ παρὰ διονυσίῳ θύειον  
 ταθεῖναι πρὸς τὸν ἰδρυμένον ἐρμῶν, ὅντα πόρ τιθε  
 ναι καὶ τοῦ αἰδίνου εἰσθῆναι. λόγῳ δὲ αὐτῶν μὲν καὶ  
 ἄλλων πεμφθῆναι πρὸς βούτῳ πρὸς φίλιππον. Ὁ  
 τοῦ μὲν, δῶροισι μαλθακασομένην καὶ ὅτι τὰς κλή  
 σεις σωίσθαι καὶ τοῦ φίλιππου λαλεῖν. τὸν δὲ, μηδὲν  
 τόσον τὰ τῶν πρὸς αὐτὸν. ὅτι γὰρ ὁ φίλιππος αὐτὸν προ  
 σίειν ὅτι εἴδοι. ὅθεν ἐλθόντας τοῦ πρὸς βούτῳ εἰς τὰς  
 ἀθλῶν, φασκεῖν ὡς μάλιστα αὐτῶν ξυνοικῶντος συ  
 νελήλυθει. καὶ τοῦ, ἐρίμῳ εἶναι ζήμιον αὐτόν. μα  
 θόντας δὲ παρ' αὐτοῦ, ὡς νῦν καὶ μάλιστα φροντισίον  
 εἶναι τὸν πόλεως αὐτῶν, τοῦ μὲν γὰρ ἡδὴ ἐδωροδόκησε  
 ὁ φίλιππος, ἐμὲ δὲ μηδὲν λόγῳ ἐπαξόμην, φασί  
 διπλασίως αὐτὸν τιμῆσαι. καὶ τὸν φίλιππον δὲ λεί  
 γειν ὕδατον, ὡς μόνον εἶναι ξυνοικῶντος τῶν πρὸς αὐ  
 τὸν ἀφ' ἑμῶν ἀδωροδόκητ' ὅτι. ἀλλὰ καὶ πρὸς βού  
 τῳ πρὸς ἀντίπατρου πόλιν αἰχμαλώτῳ ἀθληαίων  
 καὶ τὸν λαμακὸν πόλεμον, καὶ κληθεῖς ὡς δέ πινον  
 πρὸς αὐτὸν προσωλέγηται ταῦτα.

ὦ κίε κη τις γὰρ κεν αὐτὸν ὅς γινώσκουσιν εἴη  
 πείρ τλαίη πάσκειν εἰδὴ τίς ἦδὲ πρῆτις  
 πείρ λύσκει ἰταρῶν, εἴ γινώσκουσιν ἰδίᾳ;  
 Καὶ ὅρ ἀποδεξάμενον τὴν ἐντυχίαν ἐνθὺς αὐεῖναι.  
 Σχολία δὲ πρὸς διωκομένον ὑπὸ ἰόρακτος εἰσπῆ  
 δέσσαντες εἰς αὐτὸν κήρυττον αὐτόν, κατὰ φήσας με-  
 θύμεν, εἰπὼν ὅτι ἰκέτω δέιν μὴ ἐκιδιδόναι. σκωπτό-  
 μεν ὑπὸ βίων, ὅτι ἐφῆ αὐτῷ ἀρκεῖν εἶναι. μὴ ἀρκεῖν ματῶ  
 δὲ γὰρ τὴν τραγωδίαν ὑπὸ τῇ κωμωδίας σκωπῶ  
 μέντω ἀρκουσίως ἀξιουῶ. πρὸς δὲ ὅτι μήτε μουσι-  
 κῶν μήτε γλωσσίων μήτε ἀστρονομίαν μεμαθηκό-  
 τα, βουλόμενον δὲ παρ' αὐτὸν φοιτᾶν, πρὸς ἑφῆ λα-  
 βὰς γὰρ ὅτι ἔχεις φιλοσοφίας. οἱ δὲ, εἴδοντες φασὶν εἰ-  
 πέειν. παρ' ἐμοὶ γὰρ ἥκτος ὁ κινώτεται. εἰπὼντες  
 δὲ διονυσίᾳ πρὸς πλάτωνα, ὡς ἀφαιρήσει τις αὐτὸν  
 ὅτι τραχὺν, παρὼν ὅτι καὶ δείξας ὅτι ἰδίον,  
 ὅτι αὐτὸν γὰρ ἐφῆ τις πρὸς τὸν τῶν. φασὶ καὶ ἀντιπᾶ-  
 ρεσ πρὸς ἐλθόντες εἰς ἀθλίας καὶ ἀπασαμένους  
 αὐτὸν, μὴ πρὸς τὸν ἀντιπρὸς τοῦ εἶναι, πείρ ἢ ὅτι  
 λόγον ὅτι ἔλεγε δὲ ἀποράναι. ἀτυφότης δὲ ὅτι  
 πρὸς αὐτὸν τῆς ἡμέρας διμελῆτα. καὶ ὥρα  
 μῆτις φασὶν ἀπένεμε σιωπῇ. καὶ πλείστα ὅσα κατὰ  
 λέγει περὶ συγγραμμάτων καὶ ἔπειτα, καὶ παραίνεσις,  
 ἃ εἴτι ταῦτα. πρὸς φύσεως ᾱ β̄ γ̄ δ̄ ε̄ ζ̄. πρὸς  
 σοφίας ζ̄. πρὸς πολύτῳ ᾱ. ἀρκῶς ᾱ. πρὸς τοῖς  
 ἀορίστοις ᾱ. πρὸς τοῖς παιδίοις ᾱ. πρὸς ἐγγραφείας ᾱ.

A πρὸς

συγγραμ-  
ματα



πρὸ τοῦ ὠφελίμου ᾠ. πρὸ τοῦ ἐλευθέρου ᾠ. πρὸ  
 θανάτου ᾠ. πρὸ ἐχουσίᾳ ᾠ. πρὸ φιλίας ᾠ β.  
 πρὸ ὑπείκειας ᾠ. πρὸ τοῦ ἡναντίου ᾠ β. πρὸ  
 ἐνδαιμονίας ᾠ β. πρὸ τοῦ γραφειῶν ᾠ. πρὸ μνή-  
 μης ᾠ. πρὸ τοῦ φεύδους ᾠ. καὶ Μικλῆς ᾠ. πρὸ  
 φρονήσεως ᾠ β. οἰκονομικὸς ᾠ. πρὸ σωφροσύνης  
 ᾠ. πρὸ δυνάμεως νόμου ᾠ. πρὸ πολιτείας ᾠ.  
 πρὸ ὁσιότητος ᾠ. ὅτι παραδοτὴ ἡ ἀρετὴ ᾠ. πε-  
 ρὶ ἐμαρμύνης ᾠ. περὶ τῶν παθῶν ᾠ. πρὸ βίῳ ᾠ.  
 πρὸ ὁμοιότητος ᾠ. πρὸ μαθητῶν ᾠ β. πρὸ διηχιο-  
 συῆς ᾠ. πρὸ ἀρετῆς ᾠ β. πρὸ εἰδῶν ᾠ. περὶ ἡδονῆς  
 ᾠ β. περὶ βίᾳ ᾠ. περὶ ἀνδρείας ᾠ. περὶ τοῦ ἐνός  
 ᾠ. πρὸ ἰδῶν ᾠ. πρὸ τέχνης ᾠ. περὶ θεῶν ᾠ β.  
 πρὸ ψυχῆς ᾠ β. περὶ ὑπὸ σήμερος ᾠ. πολιτικὸς ᾠ.  
 περὶ ὑπὸ σήμερος ᾠ. περὶ φιλοσοφίας ᾠ. πρὸ τῶν  
 παρεμυλίδου ᾠ. ἀρχιδήμῳ ἢ περὶ διηχιοσύνης. περὶ  
 ἀγαθῶν ᾠ. τῶν πρὸ τῶν διαίσεων ᾠ β γ δ ε ς  
 ζ η. λύσις τῶν πρὸ τοῦ λόγου ᾠ ι. φυσικῆς ἀ-  
 κροασιος ᾠ β γ δ ε ς. κεφαλαιον ᾠ. περὶ γε-  
 νῶν καὶ εἰδῶν ᾠ. πυθαγορεία ᾠ. λύσις ᾠ β. δόξαι  
 εἰσεις η. θέσεων βιβλία η μ γ. τῶν περὶ τῶν ἀγαθῶν  
 γὰρ πραγμάτων βιβλία ιε. μ. α. β. γ. δ. μ.  
 μὲν εἰς βιβλία ιε. καὶ ἄλλα βιβλία ις. περὶ μα-  
 θηματικῶν τῶν περὶ τῶν λέξεων λογικῶν βιβλία θ. τῶν  
 πρὸ τῶν διαίσεων ἄλλα βιβλία δύο. πρὸ γεωμε-  
 τρῶν βιβλία ε. ὑπομνηματικῶν ᾠ. ἡναντίων ᾠ.  
 πρὸ

πρὸς ἀριθμῶν α̅. ἀριθμῶν θεωρία α̅. ὁλκσημα  
 τῶν α̅. τῶν πρὸς ἀστρολογίαν ε̅. σοιχεῖα πρὸς  
 ἀλέξανδρον πρὸς βασιλείας Δ. πρὸς ἀρύβαν.  
 πρὸς ἡφαισίωνα. πρὸς γεωμετείας α̅ β̅. σίχοι  
 μ. η̅. β̅. Δ. σ̅. λθ. ἀθλωαῖοι δ' ὅμως αὐτῶν  
 ὄντα τριούρην, ὡς πρὸς κορυφὴν τῆς ἡμετέρας ἀρνούου  
 τα θέναι. καὶ αὐτῶν ὡνείτοι Δημήτριον ὁ φαλιν  
 ρός. καὶ ἡγήτορον ἀρχηγέτην, ξηνοκρατεῖ μὲν  
 τὴν ἰλίουθρίαν, ἀθλωαῖοις δὲ ἡμετέροις. ἔστι φη  
 σὶ μυρωνιανὸς ὁ ἀμασειανὸς, ἐν τῷ πρώτῳ τῶν ἰσοκ  
 κῶν ὁμοίων κεφαλαίων. διεδέξατο δὲ ἀποδύσιππον  
 καὶ ἀφηγήσατο τῆς σχολῆς πρῶτον καὶ εἰκοσι ἔτη  
 ὡς λυσιμαλχου ἀρεσάμενον κατὰ τὸ Δούτορον ἐ  
 τῷ τῆς δεκάτης καὶ ἡγεμένης ὀλυμπιάδῃ. ἔτε  
 λούτα δὲ νυκτὸς ληγάνῃ προσωταίσας, ἔτῃ ἡδη  
 γεγονὼς Δούτορον καὶ ὀγδοηκοσόν. φάμεν δὲ καὶ  
 εἰς αὐτῶν ὀντωσί.

χαλκῇ προσπλάσας ληγάνῃ καὶ τὸ μέτωπον  
 πλῆξας ἰαχὴν ὡς σῶντορ εἶτ' ἴδαντο,  
 ὅπαντα πάντῃ ξηνοκρατὸς ἀνὴρ γελούως.  
 γελῶναι δὲ καὶ ἄλλοι ξηνοκρατεῖς ε̅. ὅτε τακτι  
 κὸς ἀρχαῖον σφόδρα. καὶ ὁ συγγενὴς ἄμα καὶ πλί  
 της τῷ προσημνίῳ φιλοσόφῳ. φόρεται δὲ αὐτῷ  
 λόγῳ ἀρσινόητικὸς γεγραμμένῳ πρὸς ἀρσινόης  
 ἀποθανούσης. τέταρτον φιλόσοφον ἐλέγχει γε  
 γραφὴς οὐκ ἐπιτυχῶς. ἴδιον μὲν. ποιηταὶ μὲν



γὰρ ὑπὸ βαλλόμενοι περὶ γραφεῖν ὑπὸ τυγχάνουσι. πε-  
 ρὶ γραφοὶ δὲ ὑπὸ πηλίοις τριητικῇ παύσονται. Δὴλον,  
 ὅτι μὲν φύσεως εἶναι, ὅτι δὲ τέχνης ἔσονται. πῶς ἂν  
 διακρινθῶσι. ἐκ τούτων ἄσματα γεγραφὼς ὡς φησὶν  
 ἀριστότερον.

## ΠΟΛΕΜΩΝ

**Π**Ολέμων φιλοσοφῶν μὲν ὑπὸ τῶν Διόνων  
 οἰκιστῶν. νέον δ' ὅν ἀνέλαστος τε καὶ ἰσχυρ-  
 ούμενος ὡς οὕτως, ὡς τε καὶ περὶ πόλεως ἀργύριον  
 πρὸς τὰς ἐρίμου λύσεις τῶν ὑπὸ θυμῶν. ἀλλὰ καὶ  
 ἐν τοῖς σπουδαῖς διέκρινε. ἀλλὰ καὶ ἐν ἀκροα-  
 σίᾳ πρὸς κίονι πρὶν τριόβολον εὐρέθη προσηπτα-  
 σμένην αὐτῷ, ὅτι τὴν ὁμοίαν τῇ προσηπτημένη  
 φασιν. καὶ πρὶν σωθῆναι τῶν νέων καὶ ἐσεφανω-  
 μένων μεθύων εἰς τὴν ξυνοικίαν τῶν ἡρώων. ὁ  
 δὲ, ὅτι δὲ μὲν ἰσχυροὶς ἦεν ὅτι λόγον ὁμοίως. ὡς δὲ πρὸς  
 σωφροσύνης. ἀκροῦν δὲ ὅτι μείζονος καὶ ὀλίγον ἐθ-  
 ρώθη. καὶ οὕτως ἐγένετο φιλόπονος, ὡς ἐπὶ βολῇ  
 οὐδὲν ἄλλος καὶ αὐτὸν ἰσχυρὸν εἶναι τὴν ἀχολίαν,  
 ἀργύριον ἀπὸ τῆς δεκάτης καὶ ἑκατῆς ὀλυμπια-  
 δος. Φησὶ δὲ ἀντίγονος ὁ ἡγεύς. ἐν τοῖς βίοις ὅτι  
 πατόρα αὐτῷ πρὸς τὴν εἶναι τῶν πολιτῶν καὶ ἄρ-  
 μοι προφῆσαι. φυγεῖν δὲ ὅτι πλεῖον καὶ δίκην κακῶ-  
 σεως ἐπὶ τῇ γυναικὶ, ὡς μετὰ κίονι σωόντα. ὅτι  
 ὅτι δὲ ὑπὸ τῆναι ὅτι ἦν ἀργύριον φιλοσοφῶν, ὡς  
 τὸ πρὸς τῶν ἀχολίαν τῇ μορφῇ πάντες μένουν.  
 ἀλλὰ

ἀλλὰ καὶ τὴν φωνὴν ἀναλλοιώτω. ὡς. διὸ καὶ θηρα-  
 θῆναι κραύρρα ὑπὸ αὐτοῦ. κυνὸς σοῦ λυττῶντο,  
 καὶ τὴν ἰγνύαν διασώσεντο, μόνον μὴ ὠχεῖ-  
 σαι. καὶ ταραχῆς γηνομένης ὑπὸ τῇ πόλει πυνθόμε-  
 νοι ὅ γε γονὸς ἀτρεπῶν μείναι. ἐν τε τοῖς θεατρῶσι  
 ἀσυμπαθῆσαι. ὡς. νικησάτω τοῦ πρὸς τοῦ  
 κελουμένου κλυταμνήσρα ἀναγινώσκοντός τι τοῦ  
 τριητοῦ αὐτοῦ. τε καὶ κραύτητι, ὅτι μὴ συνδρατίθῃ,  
 ὅτι δ' ἴσα καὶ μὴ ἀκούσαι. καὶ ὅπως ὡς τοῦ  
 οἴου φησὶ μελαίνῃ. ὁ ζωγραφῶν ἐν τοῖς ποδῶν ζω-  
 γραφικῆς. φησὶ γὰρ δεῖν αὐτὰ δεῖν πῶς καὶ σκλη-  
 ρότητα τοῖς ἔργοις ὑπὲρ τῆς. ὁμοίως δὲ καὶ τοῖς ἡ-  
 θύσι. ἔφασκε δὲ ὁ κλέμεν δεῖν ἐν τοῖς πράγμασι  
 γυμναζεσθαι, καὶ μὴ ἐν τοῖς διαλεκτικῶσι θεωρήμα-  
 σι κατὰ πόρ ἀρμονικῶν τι τέχνην καταπύοντα καὶ  
 μελετήσαντα. ὡς κατὰ μὴ τὴν ἐρώτησιν διαμαρ-  
 τῶναι, κατὰ δὲ τὴν διαδοχὴν ἑαυτοῖς μάχεσθαι. ὡς  
 ὁ αὐτὸς περὶ καὶ γυμνασίου, παρητημένῳ ἂν φη-  
 σιν ἀριστοφάνης ποδὶ ἐνελπίδῃ, ὁξώτης καὶ σιλω-  
 πης, ἂν πόρ ὡς αὐτὸς φησὶ κατὰ πυνθοσύνην ταῦτα  
 εἶναι πρὸς κρείας μέγα. ἀλλὰ μὴ εἰ καὶ ἡδίστων ἔλει-  
 γε πρὸς τὰς θέσεις φασί. ποδὶ πατῶν δὲ ἐπιχειρεῖ,  
 ὅτι δὲ ὁ αὐτὸς ὅτι οὐλοῦντο ἐπὶ μάτῳ ἐν τῇ πόλει, ὅ-  
 μων ἀλλὰ καὶ ἐκπεπατηκῶς ὡς διατρέβων ἐν τοῖς  
 κήποι, παρ' ὅν οἱ μαθηταὶ μικρὰ καλύβια πρὸς  
 μένοι κατὰ κρητὸν πλησίον τοῦ ποταμοῦ καὶ τῆς θάλασ-



δρας. ὡς ἴσκει δὴ ὁ πλέμων κατὰ πάντα ἐξηλώκει  
 ἔρ ξηνοκρατίω. καὶ ἐραδιῶναι αὐτὸ φησὶν ἀρίστως  
 πῶ ἐν τεταρτῷ πόρῃ παλαιᾶς τρυφῆς. αἰ γούῳ  
 ἐμίμνηται ὁ πλέμων αὐτὸ, τὴν τε ἀγκυρίαν καὶ ἔρ  
 αὐχμόν ἐνεδίδυρ τ' αὐδός. ἔ' ἔ βαρῶ, οἶον εἰ δ' ὡ  
 ριός τις οἰκονομία. ὡ δὲ καὶ φιλοσοφικῆς, καὶ μολ  
 λισα ἐν ἐκείνοις ὅπου καὶ τῶν κωμικῶν τὰ πρῆματα  
 αὐτῶν κύων τις ἐδόνει συμπτῆιν μολοπικῆς. καὶ ἐν  
 θα ὡ καὶ ἔρ φευγίχον ἔ γαῦσις ἔ δ' ἔποχυντῶ  
 ἀλλὰ πλάμνιθ'. ἔλεγον ἐν ἔρ μὲν ὁμηροῦ ὡνικὸν εἶν  
 σοφοκλία. ὁμηροῦ δὲ σοφοκλία τραγική. ἐτελεύτη  
 σε δὲ γηραιὸς ἦδ' ἔπο φθίσεως, ἰσχυρὰ συγγραμμά  
 τα καταλιπὼν. καὶ ἔσιν ἡμῶν εἰς αὐτόν.

ἔ καί τις, πλέμωνα κεκδύδαμν ὅρ θέρ τῆς  
 ἀρξωσία ἔ δεινὸν ἀνθρώπων πάθῶ.

ἔ μάλλον πλέμωνα, ἔ σῶμα δὲ. ἔ δ' αὖ γὰρ αὐτῶ  
 μέλων δὲ ἄσφα δ' αὖ βαίνειν θῆκε χέμαι.

## ΚΡΑΤΗΣ

**Κ**ΡΑΤΗΣ πατὴρ μὲν ὡν ἀντιγνήσκ. θειασίθ δὲ  
 τῶν δῆμων καὶ ἀκροατῆς ἅμα, καὶ ἐρώμνιθ πρ  
 λέμωνθ'. ἀλλὰ καὶ δεδέξατο τὴν σχολὴν αὐτό. καὶ  
 οὕτως ἀλλήλ' αὐτῶν ὠφελείτω, ὡς τε καὶ ζῶντε ἔ μό  
 νοι τῶν αὐτῶν ἦσαν ὡντηδουμάτῶν, ἀλλὰ καὶ μέν  
 χει σχεδὸν ἀναπνοῆς ἑξομοιούδτω ἀλλήλοις, καὶ  
 δανόντ' αὐτῶν ταφῆς ἐκρινωνεῖτω. ὅθεν ἀνταγῶ  
 ρας εἰς ἄμφω ἔδ' αὖ ἐπείνε ἔρ τρέπμ.

μνήματι τῷ δὲ κρέατι τὰ θεοῦ δία καὶ κλέμωνα  
 ἔνεπε κρύπτεσθαι ξεῖνε παρὲρ χρόνῳ  
 ἀνδρας ὁμοφροσύνη μεγαλήτρεας, ὥρ ἄπρ μῦθῳ  
 ἰδρὸς ἦεσιν δαιμονίῃς σώματῳ.  
 καὶ βίῳ τῳ καὶ παρὸς σοφίας ὡδὶ θεῖον ἐνδύμα  
 αἰῶνα σρεπρὸς δόγμασι παθόμενῳ.  
 ἔνθεν καὶ ἀρκυδίλαον μετελθόντα παρὰ θεοφράσου  
 πρὸς αὐτοῦ λέγειν, ὡς εἶν θεοὶ πινδὸς ἢ λείψανα τὰ  
 χερσὶ γένεσθαι. καὶ γὰρ ἦεν ὁ φιλοδημῶδες, ἀλλ'  
 οἷον διονυσώδωρον πρὶ φασὶ ἔρ αὐλητῶν εἰπεῖν.  
 σεμνόμενον ὡδὶ τῷ μνηστῆρῳ κρουμάτῃ αὐτοῦ,  
 μήτ' ὡδὶ κελύκῃς ἀκηκονάει καὶ πρὸ ἰσμελίου.  
 σπασίπῳ δὲ φησιν αὐτῷ ὁ ἀντίφονος εἶν πρὸς κρῶν  
 τρεῖς ὁμονόως συμβιούτῃν τὰ τῇν τὴν ἀρκυδίλας.  
 τῷ δὲ οἰκιστῇ ἀρκυδίλαον μὲν ἔχειν μετὰ κρῶν  
 ρῳ. κλέμωνα δὲ (ὡς κρέατι μὲν λυσικλῆτος πινδὸς  
 τῶν κλιτῶν. ὡς δὲ φησιν ἐρώμενῳ, κρῶν μὲν  
 ὡς πρὸς ῥηται κλέμωνῳ. ἀρκυδίλας δὲ κρῶν  
 τορῳ. τελευτῶν δὲ ὁ κρῶν καὶ φησιν ἀκλ  
 λόδωρῳ ὅν τρεῖς τῶν χρονικῶν, ἀπέλιπε βι  
 βλία. τὰ μὲν φιλοσοφούμενα, τὰ δὲ πρὸς κωμω  
 δίας, τὰ δὲ λόγῳ Δημηγορικῶν καὶ πρὸς βου  
 τικῶν. ἀλλὰ καὶ μαθητὰς ἐλλογίμεν, ὥρ ἀρε  
 σίλας, περὶ οὗ λέγομεν. διήκουσε γὰρ καὶ τού  
 του. καὶ βίωνα τὸν βορυδηνίτῳ. ὕσδωρ δὲ θεο  
 δώροισι ἀπὸ τῆς αἰρέσεως ἐπιχαλούμενον, πρὸς οὗ  
 αὐτοῖ



αὐτὸ λῆξομιν ἐχρυσέως ἀρκουσίλαου. γυγόνασι δὲ  
κρωλῆτες δῖηα. πρῶτ' ὁ τῆς ἀρχαίας κωμωδί-  
ας πρηνῆς. Δεύτερ' ὁ ῥήτωρ τραλλιανὸς ἰσοκρά-  
τει. τρίτ' ταφρωρύχ', ἀλδραῖσ' ὡς συνών.  
τέταρτ' ὁ κύων πόδι δ' λῆξομιν. πέμπτ' φιλό-  
σοφ' πόδι πατηκῆς. ἕκτ' ἀηχολημαῖκός ὁ προ-  
ειρημνῆς. ἑβδόμ' μαλώτης γραμματικῆς. ὄγ-  
δ' γωμετεῖνὰ γηγραφῶς. ἔνατ' ὡπληγμαῖ-  
των πρηνῆς. δέκατ' ταρσεὺς φιλόσοφ' ἀηχ-  
ολημαῖκός.

## ΚΡΑΝΤΩΡ

**Κ**ραίντωρ σολεὺς δαυμαζόμεν' ὃν τῇ ἰσότητι  
πατεῖται ἀπὴρ ἐν εἰς ἀθλίωας, καὶ ξηνοκράτους  
δῖηκουσε πρὸς ἡμίονοι συαχολαζωμ. καὶ κατέλιπεν ὑ-  
πομνήματα εἰς μυελῶδας σίχων τρεῖς. ὧν πινὼ  
πινὼ ἀρκουσίλαω πρὸς ὅσων σι. φασὶ δὲ αὐτῶν ἱρω-  
τηθέντα τῶν θηραθείη ὑπὸ πρὸς ἡμίον' εἰπεῖν, ὅτι  
μήτε δξύτονον μήτε βαρύτονον ἀκούσαι φεγγομῆ-  
νου. ἔτ' νοσήσας εἰς τὸ ἀσκησιπῆϊον αἰεχωρήσει,  
καὶ εἰ ποδὲς πέπειται. οἱ δὲ, πάντα χρόνον πρὸς ἡμίον' αὐ-  
τῶν, νομίζοντες δ' ὅτι νόσον, ἀλλὰ βούλεσθαι αὐτόν τι  
οχολῶν συσίστασθαι, ὧν ἡ καὶ ἀρκουσίλα' ἐβλάμ-  
ῃ αὐτὸ συσίστασθαι πρὸς ἡμίονοι, καὶ πρὸς ἱρῶν' ὡς  
ἐν τῶν πόδι ἀρκουσίλαου λῆξομιν. ἀλλὰ καὶ αὐτῶν ὑ-  
γιαίνοντα δῖηκούειν πρὸς ἡμίον' εἰπεῖν. ἐφ' ᾧ καὶ μάλιστα  
δαυμαδῶναι. λέγεται δὲ καὶ τῶν ὁσίων κατελι-  
πεῖν

πῆρ ἀφ' ἡδύλαω, ταλαίνῃν ἔσαρ Διὸς καὶ δέηα. καὶ  
ἔρωτηθέντα πρὸς αὐτοῦ ποῦ βούλεται ταφῆναι  
εἰπῆρ.

ἐν γῆς φίλοις μυχρίσι κρυφθῆναι χαλόν.  
λέγεται δὲ καὶ πικρήματα γράψαι καὶ ἐν τῇ πατρὶ  
δι' ὡδ' ἱερῆς τῆς ἀθλιωῆς ἰδρῶ σφραγισάμενθ' αὐ  
τὰ θῆναι. καὶ φησὶ θεαίτητ' ὁ ποιητὴς οὕτως ἰ  
πθεῖ αὐτῶ.

ἦν δ' αὖτε ἀνθρώποις, ὅδ' ἐπὶ πλεον ἦν δ' αὖτε μέλαινα  
κράντωρ, καὶ γῆρας ἦλυθεν ἔτι πρόσσω.

γῆ σὺ δὲ τεθνεῶτα ἔρ' ἰδρὸν αὐδ' ἔποδ' ἔξῃ,

ἦ ῥ' ὄγε καὶ ζῶει κείδι ἐν ἐνθυμῇ.

ἰθαύμαζε δὲ ὁ κράντωρ πάντῃν δὴ μᾶλλον ὄμηρον  
καὶ ἐν ἐπιδίῳ, λέγων ἐργῶ δ' ὅδ' ἐν ἱερῇ κυρίῳ τραγί  
κῶς ἅμα καὶ συμπαθῶς γράψαι. καὶ προειφόμεν  
ἔρ' σίχρ' ἔρ' ἐκ τοῦ βελδοφόνου.

οἱμοι, τί δ' οἱμοι, θυητάρι πεπνυδαμένο.

λέγεται δὲ καὶ ἀνταφόραν ἔρ' πικρῶν, ὡς κράντω  
ρ' εἰς ἔρωτα πεπνυμένα φόρεσθαι ταυτί.

ἐν δ' οἱμοι θυμὸς ὅρι γῆν' ἀμφοβόηρ

ἦσε θεῶν, ἔρ' πρῶτ' ἀειγῆν' ἔρ' εἴπω,

τῇν' ὅσ' οὐ ξεβός τε πάλαι βασίλειαι τε παῖδας

γείναρ νύξ πελαγασίρ' ἔω' ἐν ῥέως ὠκεανοῖο,

ἦ σέ γε κύπριδ' ὕια πόριφρον' ἦ σε γαίης

ἦ αἰέτωρ ἦ αἰσα, κακὰ φρονέων ἀλάλησαι

ἀνθρώπων ἦ δ' ὀδύλα, ἔρ' καὶ σέω σῶμα διφνόν.

B ὡ δέ



ὧν δὲ καὶ δεινὸς ὀνομαρπιῦσαι. τραγῶδῶν σοῦν αἰ  
 πελίκυρρ ἔπην ἔχειρ φωνῶν καὶ φλοιῶν μεσλῶ.  
 καὶ τινῶν πικτοῦ σκίφθης μεσθῶ εἶναι τῶν σῖν  
 χους. καὶ τὰς θεοφρασίου θέσεις ὁσρῶ γηγραφθαί.  
 θαυμάζεται δὲ αὐτὰ μάλιστα βιβλίον ὃ πῶν πῶν  
 θου. καὶ κατέσρεψε πρὸ πλείμων ὦ καὶ κρατῆν  
 τῶ, ὑδρωπικῇ δὲ θέσει νοσήσας. καὶ ἔσιρ εἰς αὐ  
 τὸν ἡμῶν.

ἐπέκλυσε καὶ σὲ κρανῶν ἡ νόσων κακίστη  
 χ' οὕτω κατῆλθε εἰς μέλαιναν πλουτίως ἄβυσσον.  
 καὶ σὺ μὲν ἐκείνῳ νῦν χαίρεις, σὺν λόγων δὲ  
 χήρῃ ἔσηκν ἁκαδημία καὶ σὺλοι πατεῖς σεῦ.

## ΑΡΚΕΣΙΛΑΟΣ

**Α**Ρκιδίλα ὁ σούβη ἢ σκύβη, ὡς ἀρχιλόδωρ ὦ  
 ὦν τείτω χρονικῶν, πιτανῶν ὦ αἰολίδῶ.  
 ὅτῳ ἔστιν ὁ ὦ μίσης ἁκαδημίας κατὰρξας πρῶ  
 τῶ, ὡλοχῶν τὰς ἀρχάσεις δὲ τὰς ἐναντιότητας  
 τῶν λόγων. πρῶτῳ δὲ καὶ ὅτῳ ἐκτόρον ἐπεχείρη  
 σε, καὶ πρῶτῳ ὅτῳ λόγον ἐκίνησε ὅτῳ πλάτω  
 νῶ παραδεδομένον, καὶ ἐπῆρσε Δίῳ ἐρωτήσεως καὶ  
 ἀρκείσεως ἐριστικῶτον. παρέβαλε δὲ κρανῶν  
 ὅτῳ ὅτῳ τῶν τῶν. τέταρτῳ ἀδελφὸς ὧν. ὧν ἔχει  
 δύο μὲν ὁμοπατεῖς. δύο δὲ ὁμομητεῖς. καὶ τῶν  
 μὲν ὁμομητείων πρῶτον βύτον πυλάδην. τῶν δὲ ὁ  
 μοπατείων μοίριαν. ὅς ὧν αὐτῶν ἐπίτροπῶ. ἦκου  
 σεδὲ, κατὰρχας μὲν αὐτῶν τοῦ μαθηματικῶ,  
 πλείονα

πλείτε τυγχάνοντο· πείρ ἀπαίρειν εἰς ἀθλίωας.  
 μεθ' οὗ καὶ εἰς σαρδέεις ἀπεδήμησεν. ἔπειτα ξανί-  
 θου τοῦ ἀθλιωαῖς μουσικοῦ. μεθ' οὗ θεοφράσου δίκηρου  
 σην. ἔπειτα μετῆλθεν εἰς ἀκροδημίαν πρὸς κραι-  
 τορα. μοιρίας μὲν γὰρ ὁ προειρημένῳ ἀδελφός,  
 ἦγεν αὐτὸν ὡδ' ἡγετορικῶς. ὁ δὲ, φιλοσοφίας ἦρα.  
 καὶ αὐτοῦ κραιντωρ ἐρωτικῶς Διατεθείς ἐπειθε-  
 το, τὰ δὲ ἀνδρομέιδας ἐνελπίδου προσνεγκά-  
 μηντο.

ὦ παρθένε, εἰ σώσαιμί σε, εἶσθαι μοι χάριν;

καὶ δὲ τὰ ἐχρόμνα.

ἀροῦ με ὡς ξένε εἴτε διμῶτ' ἐθέλεις εἴτ' ἄλοχον.

ἐκ τούτου σωθήσω ἀλλήλοισιν. ἵνα καὶ τὴν θεόφρασον  
 κνιζόμηνον φασίην εἰπεῖν. ὡς ἐνφυῆς καὶ ἐνεπιχεί-  
 ρητο· ἀπεληλυθὼς τῆς στρατευθῆς εἰς νεανίσκῳ.  
 καὶ γὰρ ἦν τῆς λόγους ἐμβελήσατο καὶ φιλοφρά-  
 ματο· ἱκανῶς γινόμενον ἥπατο καὶ ποιητικῆς.  
 καὶ αὐτοῦ φόρεται ὑπὸ γράμματα εἰς ἄτλατον οὐκ  
 πως ἔχοντα.

πόργαμος δ' ἔχ' ὅπως κλείνη μόνον, ἀλλὰ ἔ' ἵπποις  
 πηλαγίς αὐδᾶται πίαςαν ἀνὰ ζαβίλιν.

εἰ δὲ τὴν ἐκ δρόβου θεμιτὴν θνατὸν νόον εἰπεῖν

ἴσεται εἰσαὐδὶς πηλὸν ἀοιδότηρ.

ἀλλὰ καὶ εἰς μελωδίωρον τὴν ἐνδαίμου ὡς τῶν συ-  
 σχολαστῶν ἐρώμηνον.

τηλεῦ μὲν φρυγίη, τηλεῦ δ' ἰδρὴ θυώτεραι,

B 2

ὦ μελω





πρόδε πλάτῃ, ὅπι δε ἢ πύργω, μίση δόδωρ.

Καὶ ὁ τίμων ἐπ' αὐτοὺς φησὶν οὕτως.

τῇ γὰρ ἔχω μνίδην ἀπὸ σόρνοισι μόλυβδον  
θήσεται, ἢ πύργον καὶ πᾶν κρείας, ἢ δόδωρον.

ὣν δὲ ἀξιοματικώτατος καὶ σωηγμύνος, καὶ ἐν  
τῇ λαλιᾷ διασαπνὸς τῷ ὀνομασίῃ. ὡς ἡρώτης θ'  
ἰηανῶς καὶ παρρησιασῆς. Διὸ καὶ πάλιν ὁ τίμων οὕ-  
τως ἰπὸς αὐτοῦ.

καὶ νῆον μὴ λύσης ὡς πληξέσθην ἐγχεταμεγνύς.

ὅθεν καὶ πρὸς τὴν θρασύτητον διαλεξιμῶς νεανί-  
σκορ, ὃ λήψεται τις ἔφη ἔδωκεν ἀσφαλῶ; πρὸς δὲ  
τὴν ἀπίαν ἔχοντα πορναίνεσθαι, ὡς ἀνὴρ γενὴν αὐτοῦ  
ὅτι ὃ δοκεῖ ἐτόρρον ἐτόρρος μείζον ἐῖν, ἡρώτης γὰρ εἰ ὃ δὲ

τὸ δεησάμενος τοῦ ἐξαδικτύλου. ἡμῶν δὲ τι ἀφθέρματα

ἔχοντος χίος ἀειδὲς οὐτος καὶ ὑπολαμβάνοντες εἶναι  
καλῶ καὶ ἐν χλαίσις αἰ ἀναστροφῶν, εἰπὺς  
ὃ ὃ δοκεῖ αὐτοῦ σφοδρὸς ἐραδῆσθαι; ἔφη, πότορον  
εἰάν ὃ δὲ οὕτω καλὸς ἢ τις ὡς πορσὺν, ὃ δὲ αὖ οὕτω  
καλὰ ἰμάτια ἔχει; ἐπεὶ δὲ καὶ παρὰ κίναιδος ὡρ  
ὡς εἰς βαρὺν τὴν ἀρκυίλαον ἔφη.

ἔξισιν ἐρωτᾷν πρότυπα σε, ἢ σιγῶν ἔχει;

ἔφη ὑπολαβῶν.

γυνῶν τί μοι τραχέια καὶ ὅτι εἰδισμένως λαλεῖς;  
Στωμύλου δὲ ἀγνῶς πράγματα αὐτοῦ παρέχον-  
τες, ἔφη.

ἀνέλασα ὁμιλεῖν γίνεται δούλων τέκνα.



Λαλεῖν δὲ πρὸς φλυαροῦντα, ὃ δὲ τίτῃς αὐτῷ  
χαλεπὸς τετυχηκέναι ἔφη. ποῖ δὲ ὃ δὲ ἀπεκρίνετο.  
πρὸς δὲ τῷ Δανεισικῷ καὶ φιλόλογοι ἐπύοντα τὴν  
ἀγνοεῖν ἔφη.

λήθουσι γὰρ καὶ ἀνέμων δόξουσι

θήλειαν ὄρνιν, πλὴν ὅταν τὸν παρῇ.

ἴσι δὲ ταῦτα ἐν τοῖς δινομένοις τοῖς σοφοῦσι. πρὸς ἀλ-  
λαξίνου τινὰ διαλεκτικόν, μὴ δυνάμενον κατ' ἀξίαν  
τῷ ἀλεξίνῳ τὴν διηγέσασθαι, ὃ φιλοξένῳ πρὸς αὐτὸν  
πλινδιακούς περὶ τῶν ἐπὶ. ἐκείνῳ γὰρ τὰ αὐτὰ  
κακῶς ἄδοντας τὸ τῷ καταλαβόν, αὐτὸς τοὺς  
πλινθῶν αὐτῷ συνεπάπτετο ἑωὶ, ὡς ὑμεῖς τὰ  
ἐμὰ διαφθείρετε, καὶ γὰρ τὰ ὑμέτερά. ἤχθετο οὖν Δ.  
ῥίς μὴ κατ' ὥραν τὰ μαθήματα ἀνελήφοσι. φησὶ  
καὶ Δ. ὡς ἐν τῷ διαλέγεσθαι ἐχέτω, τῷ φημὶ ἐ-  
γώ. καὶ ὃ συγκαταθήσεται τῷ ὁδῶν, ἑωὶ  
τόσσονα. ὃ καὶ πολλοὶ τῶν μαθητῶν ἐρήλουν, καὶ  
τὴν ἡγεσίαν καὶ πᾶν ὃ χεῖμα. καὶ δὲ καὶ ἐνδοξοῖ  
γώτατα ἀπαντήσαι ἐνδοχῶς. καὶ αὐτὸ ὃ περὶ  
μενον ἀνεγκέτω τὴν πόρῳ τῷ λόγῳ. καὶ αὐ-  
παντι συναρμόσασθαι καὶ ὡ. πισινὸς τε ἑωὶ πᾶν  
θ' οὐ πινού, παρὸ καὶ πλείον πρὸς αὐτῷ ἀπὸ τῶν  
εἰς τὴν σχολῴν, καὶ πᾶν ὡς οὐκ ἐπὶ αὐτῷ  
πλητόμενοι. ἀλλ' ἐφῶν ἡδύως. ἔγωγε ἀγαθὸς σφό-  
δρα, ἔγωγε ἐπὶ πᾶσι ὡς οὐκ ἐπὶ πᾶσι ἀκούοντας. ἐντε  
τῷ βίῳ ἡγεμονικώτατα ἐγὼ. καὶ ἐνδοξοῖται

πρὸ





πρὸς πρὸς ὄντων, καὶ ὑπὸς ὅλῃα παρὰ κλητικὰ  
 γράφοντ' ἄν' ὅς θύω πῶς. ἀλλ' ὅμως ἔσθ' ὅτι  
 πατρίδ' εἰς δὴμητριάδα ἐπισβόλῃ πρὸς ἀν-  
 τίγονορ. καὶ ἐν ἐπέτυχ' ὅτι πᾶν δὴ δέτεβ' ἐν τῇ  
 ἀνὰ δὴμῖα ὅτι πρὸς πρὸς ὄντων. καὶ πρὸς καὶ  
 δὴ καὶ ἀθλῶσις ἐν τῇ πειρεῖ πρὸς τὰς θέσεις λί-  
 γων ἐχρόνισεν οὐκ εἰς ἴσῃ πρὸς ἰδρυκλῖα. ἐφ' ὃ καὶ  
 πρὸς πρὸς δὴ βολῶ. πρὸς τελετῆς δὲ ἄγαν ὡς, καὶ  
 τί γὰρ ἄλλο ἢ ἐπὶ τῷ ἀείσι πρὸς, ὡς τὰ δέει πρὸς  
 πρὸς τῷ ὁμοιοτρόπῳ μὲν πρὸς ἀλλ' ἀπὸ πρὸς. καὶ  
 θεοδότῃ τῇ ἐφ' ὅτι πρὸς ἰδέαις ἰταίραις σωῶναι φα-  
 νερῶς. καὶ πρὸς τὸν δὴ σφύροντας πρὸς ἐφ' ὅτι  
 τὰς ἀείσι πρὸς χρεῖας. πρὸς πρὸς πρὸς τῷ καὶ κα-  
 ταφθῆς. ὅθεν οἱ πρὸς ἀείσι πρὸς ὅτι χῖον σωῖναι ἐπὶ  
 καὶ πρὸς αὐτὸν φθορία τῷ νύκτωρ, καὶ κιναιδολόγοι, καὶ  
 θρασὺν ἀκρηγῶν τῷ. καὶ γὰρ καὶ δὴμητριάς τῷ  
 πρὸς πρὸς πρὸς εἰς κυρτῶν, ὡς πρὸς πρὸς ἰραδῶναι λί-  
 γηται, καὶ λεωχάρῳ τῷ μνηστῶν. ἐφ' ὃ καὶ πρὸς  
 τῷ κωμῶσαντας ἐπὶ πρὸς. αὐτὸς μὲν θέλει ἀντίξαι,  
 ἐκείνοι δὲ δὴ κωλύει. τὸ δὲ δὴ ἦν καὶ δὴμητριάς  
 εἰς ὁ λαχῆται καὶ πρὸς πρὸς ὁ τῷ βουγῶν, ὅς  
 παρὰ λαβῶν ὅτι ἀνδριανῶν παρὰ χωρεῖν ἴφθι. δὴ  
 ταῦτα δὴ ὅτι δὴμητριάς τῷ αὐτὸν οἱ πρὸς πρὸς καὶ  
 ἐπὶ σκωπῶν ὡς ὅτι λαχῶν καὶ πρὸς πρὸς. μάλιστα  
 δὲ ἐπὶ πρὸς αὐτὸν παρὰ ἰδρυκλῖα τῷ πρὸς πρὸς  
 καὶ ὅτι πρὸς πρὸς ὅτι πρὸς πρὸς τῷ ἀλκυνῶν τῷ  
 αὐτῷ

ἀντίφονδ ὕδ' ἡμόθαν, εἰς ὧν ἰσθμὰ χεῖματα ἀπίσει  
 λην ἀντίφονδ πρὸς ἀπ' λαυσίμ. ἔνθα καὶ παραιτ' ἰ-  
 μνὸν ἐκίσσεται τὰς ὑπὸ κλυκίας δ' ἐκ γήσεις μὴ πρὸς  
 ἀρίδ' ἡλὸν π' θεώρημα, καὶ ἀξιοῦντα εἰς αὐτὸν λήγειν,  
 εἰπεῖν. ἀλλ' αὐτὸν ἔδωκε μάλιστα φιλοσοφίας ἴδιον ὃ  
 καὶ ῥὸν ἐκίσσων ἐπίσασθαι. εἰς δὲ ὃ δ' ἐκ βαλόμενον  
 αὐτὸν φίλον χλὸν καὶ τίμων τὰ τε ἄλλα φύσιν, ἀτὰρ  
 δὴ ἔδωκεν ὃν τρόπον.

ὥς εἰπὼν ὃ χλὸν πορίσασιν εἰσηγατέδωκεν.  
 οἱ δὲ μὲν ἢ γλαῦκα πῶδε σπίζεῦ τὸρα γυῖν  
 ἡλέματ' ἐκινῶν τ' ὅθ' ὅσων ἐκινῶν ὃ χλὸν ἐκίσσων  
 ὃ μέγα πρὸ γυῖν τὰς πλάτωσαι ἡλίδι ὥς.  
 Οὐ μὲν ἀλλ' οὕτως ἀπυφθ' ὧν ὥς τε τὸς μαθηταῖς  
 παρήνει καὶ ἄλλων ἀκούειν. καὶ πνθ' χί' νεανί-  
 σκον μὴ ἐναφισσεύμεν τῇ τειβῇ αὐτῷ, ἀλλ' ἰδρῶν  
 μου τὸν πρὸς ἐκινῶν, αὐτὸς ἀπαγαγὼν σωίσσων  
 τὸν φιλοσόφῳ παραιτίσας ἐντακτεῖν. χαλεπὸν δ'  
 αὐτὸν φόρεται κακῆν. πρὸς ὃν πυθόμνον δι' ὅτι ἐν  
 μὲν τ' ἄλλων μεταβαίνουσιν εἰς τὸν ὑπὸ κλυκίας, ἐν  
 δὲ τῷ ὑπὸ κλυκίας ἐκίσσων; ἔφη, ἐν μὲν γὰρ ἀνδρὸς  
 γὰρ γίνονται. ἐν δὲ γὰρ ἀνδρὸς ἐκίσσων γίνονται.  
 λοιπὸν δὲ πρὸς τὸν τέλει γινόμεν ἅπαντα κατὰ  
 λιπε πυλάδ' ἐκ ἐκινῶν αὐτῷ. αἰθ' ὅρ δ' ὅς χί' οἱ  
 αὐτὸν πρὸς γαγε. ὃν μοιρίαν λαυδάνων. κακῆν  
 εἰς ἀθλῶας ἀπὸ γαγε. πῶδε δὲ ὅτε γυῖν ἐκινῶν  
 γαγε, ὅτε ἐκινῶν πρὸς γαγε. τρεῖς τε δ' ἐκινῶν πρὸ  
 C ἡστέ μιν



ἡσάμεν ἔθρο. τῶν μὲν, ὧν ἱερεΐα πρὸς ἀμφικύρ-  
 ρον. τῶν δὲ, ἀθλιώκοι παρὰ πύλας τῶν ὀλῶν. τῶν δὲ  
 τρίτῳ ἀπέστειλον εἰς οἶκον πρὸς θαυμασίαν ἵνα  
 πύλα τῶν ἀναγκάων ἀξιῶσας διατηρεῖται, πρὸς δὲ  
 καὶ γράφει ταυτί.

Αρκεσίλαος ᾠδὴν χαίρει.

Δίδωκε διόγῃ διαθήκας ἑαυτοῦ κομίσαι  
 πρὸς σέ. δια γὰρ ὅτι πρὸς αἰσῶσιν καὶ ὅτι σῶμα  
 ἀσθενῶς ἔχει, ἰδοὺ μοι διαθήσεται. ἵν' εἴπῃ γῆνοιτ' ἀλ-  
 λήϊον, μή τι σε ἡδονικῶς ἀπὶ τῶν εἰς ἐμὴ ἐκτενῶς ὄν-  
 τω περὶ ληπτημηνόρ. ἀξιοπιστότατος δ' αἰεὶ τῶν  
 ἐνθάδε σύ μοι τηρῶν αἰνὰς, δια τὴν ἡλικίαν καὶ  
 τῶν πρὸς ἡμᾶς οἰκειότητα. πειρῶ δὲ με μνησθῆναι  
 διότι σοὶ πίστις τῶν ἀναγκαιοτάτων παρακαλεῖται  
 μοι δίκαιος ἡμῖν εἶναι. ὅπως ὅσον ὡδ' σοὶ τὰ κατὰ  
 ἐμὴ ἐνοχημόνως ἢ μοι δωκεμηνότα. κέννεται δὲ ἀθλιώκοι  
 σὺν αὐτοῖς παρὰ πύλῃ γινώσκων καὶ ὧν ἱερεΐα  
 παρ' ἀμφικύρῳ.

Ετελεύτησε δὲ ὡς φησὶν ἐρμῆς πρὸς ἄκρατον ἐμπορε-  
 θεὶς πρὸς καὶ παρακλήσας, ἡδὴ γέροντος ἔτι πύ-  
 λῳ καὶ ἐβδουμηνόρ, ἀπεδεχθεὶς παρ' ἀθλιω-  
 ῶν ὡς ὁδὸς. ἔτι καὶ εἰς ἑστῶν ἡμῶν.

ἀρκεσίλαος τί μοι, τί προσῶν ἀκρητὴ ἀφειδῶς  
 ἱσπασας ὡς τε φρονῶν ἐκ τῶν ὀλῶν ὡς;  
 οἰκτεῖρ' ὅτι πᾶσι δάνδ' ἀλλ' ὅτι μέσας  
 ὑβρισας ὁ μετεῖν χερσάμεν κύλικι.

γῆνοισι

γρόνοι δὲ καὶ ἄλλοι τρεῖς ἀρκυδίλαοι. τριητὴς ἀρ-  
 χείας κωμωδίας. ἄλλος ἐλεγείας. ἔτορθε ἀγαλ-  
 μαρτυρίος. εἰς δὲ καὶ σιμωνίδης ἐπρίησεν ἐπίγραμμα  
 μα τουτί.

ἀφ' ἑμὸς τόδ' ἀγαλμα. δεικνύσαι γὰρ ὁ μὲν ὅς  
 δραχμαὶ, ταὶ πάσαι, τῶν ἐπίσημ' ἀφ' αὐτοῦ.

ἄσκητος δ' ἐπρίησεν ἀθλωαίης παλαιμῆσιρ

ἄξιθε ἀρκυδίλαθε ὑὸς ἀριστοδίνου.

ὁ δὲ προειρημένῃθε φιλόσοφθε καὶ θά φησιρ ἀκρό-  
 δωρεθ' ὅν χρονοκοῖς ἡμαρτε πρὸς τῶν εἰρησῶν καὶ  
 ἡμαρσῶν ὀλυμπιαδῶν.

## ΒΙΩΝ

**Β**ίωρ τὸ μὲν γνῶθε ἴω βορυδενίτης, ὥρ τι-  
 νωρ Δὲ γονέωρ καὶ ἀφ' οἷωρ πραγματῶν ἡ-  
 ξεν ὡδ' ἐπισοφία, αὐτὸς ἀντιγόνω δρασαφεί. ἐρω-  
 μένου γὰρ αὐτόν.

τῆς πρὸς ἐς ἀνδρῶν; τῶνδε τῶν πόλιν ἡδὲ ρηῶν;  
 αἰδομένῃθε ὅτι προσβέβληται, φησὶ πρὸς αὐτόν.  
 ἐμοῦ ὁ πατήρ μιν ἴω ἀπελδύθηθε τῶν ἀγνῶνι ἀρ-  
 μνασόμενῃθε. διεδήλου δὲ τὴν ταειχέμπερον. γνῶθε  
 βορυδενίτης, ἔχωρ οὐ πρόσωπον, ἀλλὰ συγγρα-  
 φῶν ὡδ' τὰ προσώπων, τῆς τῶν Δουπῆτος πικρίας  
 σύμβολον. μήτηρ δὲ οἶαμ' ὁ τοιοῦτῃθε αὖ γῆμαι,  
 ἀπ' οἰκίματῃθε. ἔπειτα ὁ πατήρ παρατελωνισά-  
 μένος τι πανοίκιθε ἐπράθη μεθ' ἡμῶν. καὶ με ἀφο-



ραλξα τις ῥήτωρ νεώτοτον ὄντα καὶ ἔνχαλμ. ὃς ἀπὶ  
θυήσκων κατέλιπέ μοι πάντα. καὶ γὰρ κατακαύσας  
αὐτὸ τὰ συγγράμματα καὶ πάντα συγξύσας, ἀθή-  
ναζε ἤλθοι καὶ ἐφιλοσόφησα.

ταύτης γι γνῆς τε καὶ αἵματ' ἔνχαλμ εἶν.

ταῦτα ὅτι τὰ κατ' ἐμέ. ὥς τε παυσάδωσεν  
πόρσαῖ τε καὶ φιλονίδης ἰσοροῦντος αὐτῶ. σὺ  
παι δέ με ῥε αὐτοῦ. καὶ ἡ ὥς ἀληθῶς ὁ βίωρ, τὰ  
μὲν ἄλλα πλύτροπ' καὶ σοφιστὴς πικίλ', καὶ  
πλείσας ἀφορμὰς δέδωκώς τις βουλομένοισι καὶ  
διππάζεσθαι φιλοσοφίας. ἥτοι δὲ καὶ ἥτιμ'.  
καὶ ἀρλαῦσαι τύφου δυνάμειν. πλείσα τὲ καὶ  
ταλίστοιπεν ὑπομνήματα, ἀλλὰ καὶ ἀρφθίγματα

ἀρφθίγματα

χειρώδην πραγματεῖαν ἔχοντα. οἷον ὀνειδιζόμεν' ὡς  
ὡδ' ἴδ' μὴ θηράσαι μερῶν, ὅχι οἷον τε εἰπεῖν ἀ-  
παλόν τυρόν ἀγκύρω ὑπὸ ἀσάδαι. Ερωτηθεὶς πε-  
τε, τίς μᾶλλον ἀγωνιᾷ, ἔφη. ὁ τὰ μέγιστα βουλόμε-  
ν' ἰσημοδῶν. Ερωτηθεὶς εἰ γῆμαι, ἀναφύεται  
γὰρ καὶ εἰς ῥῶν, ἔφη. εἰ μὲν γῆμης αἰσχρὰν ἔξεις  
πινυῖ. αὐτὸ δὲ καλῶν, ἔξεις κρινυῖ. ἥ γῆρας, ἔλεγεν ὁ  
μοι εἶν' ἥ κακῶν. εἰς αὐτὸ γούν πάντα καταφύ-  
γειν. τίς δόξαν ἐπ' ἡ μνητόρα εἶν'. ἥ καλ' ἄλλοι  
τειοι ἀγαθόν. ἥ πολλοῦν, νεῦρα πραγματῶν. πρὸς  
ἥ τὰ χρεῖα κατεδιδυκῶτα. ἥ μὲν ἀμειψάσθαι ἔ-  
φη ἡ γῆ κατέπε. σὺ δὲ τίς γινῶ. μέγα κακόν, ἥ μὴ  
δυνάσθαι φέρειν κακόν. κατεγίνωσκε δὲ καὶ τῶν  
τοῦ

τοῦ ἀνθρώπου κατακλόντῃ μὲν ὡς ἀναιδὴ τούτου,  
 παρακλόντῃ δὲ ὡς αἰδανομένης. ἔλεγε δὲ συνε-  
 χῆς ὅτι αἰρετώτερόν ἐστι τὴν \* ἄλλω χαρίζεσθαι, ἢ  
 ἀλλοτρίας ἀποδίδεσθαι. καὶ γὰρ εἰς σῶμα βλά-  
 πτεσθαι καὶ ψυχῇ. δίδεσθαι δὲ καὶ τὸ σωκρά-  
 τει λέγων, ὡς εἰ μὲν ἔχῃ ἀλκιβιάδου χρεῖαν καὶ  
 ἀπείχῃ, μολταὶ τῷ. εἰ δὲ μὴ ἔχῃ, ἔσθ' ἐν  
 πρίνι παραδουξοῖ. ἐν κολοῖ ἔφασκε τὴν εἰς ἄδου ὁ-  
 δόν. καταμύοντας γοῶν ἀπικνῆναι. τὸν ἀλκιβιά-  
 δην μεμφομένη ἔλεγε, ὡς νῦν μὲν ὡς τοῦ ἀνδρὸς  
 ἀπάγοι τῇ γυναικὶ νεανίσκῃ δὲ γυνόμηναι τὰς  
 γυναικὰς τῇ ἀνδρῶν. ἐν ῥόδῳ τὰ ῥητρικὰ δια-  
 σκουῦν τὴν ἀθλησίαν, τὰ φιλοσοφούμενα ἐδίδασκε.  
 πρὸς οὗτον τὸν ἀπαόμνον ἔφη, πυρρὸν ἐκόνισμα καὶ  
 κελθὰς πωλῶν, ἔλεγε τοῦ ἐν ἄδου μᾶλλον ἂν κολλά-  
 σθαι, εἰ ὁλοκλήροις καὶ μὴ τετρυμένοις ἀγγείοις ὑδρο-  
 φόρουσι. πρὸς τὸν ἀδελφίον λιπαροῦντα συλλαβέ-  
 σθαι αὐτῷ, ὃ ἰκανόν σοι πρὸς φησὶν ἐὰν παρακλή-  
 τος πέμψῃς, καὶ αὐτὸς μὴ ἔλθῃς. πλείων μὲν πρυ-  
 γῶν, λησταῖς πορεύεσθαι. τῇ δὲ ἀκλόλαμν εἰπὼν  
 τῇ ἐὰν γνωστῶν, ἐγὼ φησὶν ἐὰν μὴ γνωστῶν, τὴν  
 οἴησιν ἔλεγε προκοπῆς ἐγκοπῇ. πρὸς πλούσιον με-  
 κρολόγον, ὃς ἔτῃ ἔφη τὴν ἐσὶ ἀνέκτικτον, ἀλλ' ἢ  
 ἐσὶα εἶδεν. ἔλεγε τοῦ μικρολόγου τῇ μὲν ἔπαρ-  
 χύντῃ ὡς ἰδίῳ ὑπὸ μελεῖσθαι. ὡς δὲ ἢ ἀλλοτρίων  
 μηδὲν ὠφελείσθαι. τῇ μὲν ἀνδρείᾳ νῦν ἔφη χρεῖ-



ᾧται. τῇ δὲ φρονήσει γηρασκοντας ἀκμωζειν. τῇ  
 σου τῇ διαφέρειν τῷ φρόνησι τῷ ἄλλω ἀρετῶν  
 ὅσοι τῷ ὅρασι τῷ ἄλλω αἰσθησεω. μὴ δὲ ἴφαι  
 σκην ὀνειδίξειν τὸ γῆρας. εἰς δ' ἴφαι πάντ' ἐν χύμῳ  
 θα ἰλθεῖν. πρὸς τῇ βασιλειᾳ ἀσκυθροπακότη,  
 ἐκ οἷδα ἴφαι πτότ' ὅσονσι κακὸν γέγονεν ἢ ἄλλω ἀγα  
 θόν. τῷ δυνασέβειαν πρηνὸν ἔλεγον εἶναι σωφρονισμὸν τῇ  
 παρρησίᾳ.

δουλοῖ γὰρ ἀνδρα καὶν θρασύσομος πρὸς ἡ.  
 εἰς φίλ' οὗ ὁποῖοι αὖ ὥσι σωτηρεῖν. ἵνα μὴ δο  
 κείνην πονηροῖς κεχεῖσθαι, ἢ χρηστὸν παρη  
 τεῖσθαι. οὐτ' οὐ τῷ καρχιν μὲν παρητέτο τὰ ἀ  
 καδημαῖκα, καὶ ὅρ χρόνον ἤκουε κρατητ'. εἰ  
 τ' ἀνείλετο τῷ κυρικῷ ἀγωγῷ, λαβὼν τρέβω  
 να καὶ πῆρα. καὶ τί γὰρ ἄλλο μετ' ἐκδύσασιν  
 αὐτὸν πρὸς ἀπωθείαν. ὡδ' τὰ θεοδώρεα μετ' ἡλ  
 θε διακρύσας θεοδώρου τοῦ ἀθίου, κατὰ πᾶρ εἶδ' οὐ  
 λόγου σοφισδύνοντ'. μετ' ὅρ θεοφραστοῦ δίκην  
 σε τοῦ περὶ πατητικῶ. ὡδ' καὶ θεατικὸς καὶ  
 πολὺς ἐν ἴφαι γελοῖω διαφορῇσαι, φορτικῶς ὀνόμα  
 σι κατὰ τῶν πραγμάτων χρώμεντ'. Διὰ δὲ  
 οὐ τὸ παντὶ εἶδει λόγου κεχεῖσθαι, φασὶ λέγειν  
 ἐπ' αὐτοῦ τὸν ἐρατοδγῆν, ὡς πρῶτ' οὐ βίωμ' ἀν  
 δυνά ἐνέδυσιν. ἐμφυῖς γὰρ ἡ καὶ παρωδῆσαι. οἷα  
 εἶναι αὐτοῦ καὶ ταῦτα.

ὡ πῆρα ἀρχύτα. ταμνηγνὲς ὀλβιότυφε

ἡ ἡρώδης ἔριδ' ὅτι πάντ' ἔμπροσθεν αὐτῶν.  
 Καὶ ὅπως καὶ μουσικῶν καὶ γυμνασίων διέπαιζεν.  
 ἡ δὲ πλουτελής. καὶ ὅτι ἔδωκεν ἄλλοις ἐν πόλει ἡμῶν  
 βίον, ὅτι καὶ φαντασίαν ὑπὸ τεχνόματον. ἐν γούρῳ  
 ὁ δὲ αὐτὸς ναύτας ἔπεισε σχολαστικὰς ἀσθενεῖας ἀνα-  
 λαβεῖν, καὶ ἀπολυθῆναι αὐτοῖς. (ὡς οἱ εἰσβολῶν  
 εἰς τὸ γυμνασιον πόριβλεπῆν ἡμῶν. εἰώθει τε νεανί-  
 σκων ἡνῶν ὑποδύας πρῆσθαι, καὶ εἰς τὸ ἀρχιεῖν  
 αὐτοῖς ἐς τε τὰς ἡδονὰς, καὶ ὡς τε φυλάττειν ἐννοί-  
 ας ὑπὸ αὐτῶν. ἀλλὰ καὶ ἐλάττω ἡμῶν ἰσχυρῶς καὶ  
 πλὺς ἐγκρίμην ἔδωκεν καὶ τὰ ἐλάττω. παρὸ καὶ τῶν  
 δαίμων μαθητῶν αὐτοῦ ὑπὸ γράφεται, τοσούτῳ αὐτοῖς  
 σχολαστῶν. καὶ γὰρ πῶς εἰς ἀνασχωτίας προῆλ-  
 θην. ὁ γούρῳ βητίων εἰς τῶν σωμάτων αὐτοῖς πρὸς μνῆ-  
 δημον καὶ λέγεται εἰπεῖν. ἐγὼ γὰρ ὡς μνῆδῃ με νύ-  
 κτωρ συνδιδέωμαι βίον καὶ ἔδωκεν ἄλλοις δοκῶν πε-  
 πνυγῆναι. πρὸς δὲ καὶ ἀθεώτοτον προσεφάρξατο τοῖς  
 ὁμιλοῦσι, ὅτι θεοδώρειον ἀρχαῖας. καὶ ὑσδοκῶν καὶ  
 τὸ ἐμπροσθεν εἰς νότον, ὡς ἔφασκον οἱ ἐν χαλκίδι, αὐ-  
 τόδι γὰρ καὶ ἡ τέσσαρς, πόριβλεπῆν λαβεῖν ἐπεῖδη,  
 καὶ μεταγινώσκειν ἐφ' οἷς ἐπλημμέλησεν ὅτι τὸ θεῖον  
 ὁ. ἀρχαῖα δὲ καὶ τῶν νοσοκομῶν τῶν δεινῶς διεπεί-  
 ρεως ἀντίφοντο αὐτοῖς δύο θεοδωκῶντας ἀπέσειλε.  
 καὶ ἡκολούθει γὰρ αὐτοῖς ἐν φορείῳ, καὶ δάφνησι φαβω-  
 εῖντο ἐν παντὶ ἀπὸ ἰσορίας. ἀλλὰ καὶ ὡς ἡ τέσσαρς  
 τε. καὶ ἡμεῖς αὐτὸν οὕτως ἡττιάσαμεθα.

· βίωνα



βίωνα τ' βορυδογνίτλω δ' ἰφυσον ἡ σκυθίς αἶα, λέγῃ  
 ἀκούομεν θεοῦ ὡς ἔδιδόν εἰσιν ὄντως. καὶ μὲν τ' δό-  
 γμα τοτ' ἔχωρ' ἔμμεν, ἡ δ' αὖ εἰς κός λέγῃ, φρονεῖν  
 ὅπως δοκῇ. καὶ κῶς μὲν ἀλλ' ἔδιδε. νῦν δ' ἔσθ' νόσον  
 πδωρ μακρὰν, καὶ μὴ θάνη δεδουκῶς, ὁ μὴ θεοῦ εἰ-  
 ναι λέγων, ὁ νόσον ἔδιδε βλέψας, ὁ πρὸς χλιδάσας  
 βροσθῶν, οἱ θεοὶς ἔθουρ, ἔ μόνον ἔσθ' χάρις ὑπὸρ βωμῶν  
 τε καὶ τραπέζης, κνίση, λίπει, θυήμασι, θεῶν ἔδαι-  
 σε ἔθινας. ἔ δ' εἶπε μοῦνον ἡλίον, σύγνωτε τῆς πρῆ-  
 ῖς, ἀλλὰ καὶ γὰρ δ' ὦκον ἐμδρῶς τράχηλον εἰς ἔπω-  
 δῶν, καὶ σκυτῆσι βραχίονας πεπεισμένους ἔδιδε.  
 ἔθιμον τε κλάδον δάφνης ὑπὸρ θήλειον ἔθικον. ἂ μάλ-  
 λον ἢ θανεῖν ἔριμ' ὦρ' ὑποεργεῖν, μωρὸς δ' ὅς ἢ  
 θελε πινὸς μωδ' ἔθ' ἔθιον. ὡς τῶν θεῶν ὄντων ὅταν  
 βίον θέλη νομίζεῖν. τῇ γὰρ μάτλω φρονῶν, ὅτ' ἡ δ' αὖ  
 πας ὁ λῆμβ' ἀνθεῖ. τῷ δὲ χεῖρα τείνας, ὡδὲ  
 πως χαῖρ' εἶπε χαῖρε πλουτεῦ. γέγονας δὲ βίονδε  
 δέη. πρῶτον δ' ὁ φερένδαι ἔθ' στείω σωμακμά-  
 σας, ἔ φέρεται βιβλία δύο. ἔσι δὲ προκοννῆσι.  
 δούτορ' σαρακούσι τέχνας ἡνερικὰς γεγρα-  
 φῶς. τρίτον δ' αὐτὸς ἔτ'. τέταρτον δὲ δημοκρί-  
 τει μαθηματικὸς αὐτοκρίτης, ἂτ' ἰδί γεγραφῶς  
 καὶ ἰάδι. ἔτ' πρῶτον εἶπεν ἔθ' πινὰς οἰκίσεις ἔν-  
 θα γίνεσθαι ἐξ μιλῶν τῶν νύκτα, καὶ ἐξ τῶν ἡμέραν.  
 πέμπτον δὲ σολεύς, αἰδιοπικὰ γεγραφῶς. ἔκτον δὲ ἡν-  
 ρικός. ἔ φέρεται ἔθ' βιβλία μουσῶν ὑπὸρ γεγραφέ-  
 να. ἔθ' ἔθ'

να. ἔβδουμΘ μελικὸς πικτῆς. ὄγδοΘ μιλήσιΘ  
 ἀνδριαντρίος, οὗ μέμνηται καὶ πρλίμων. ἤνατΘ  
 ποιητῆς τραγωδίας τῶν ταρσικῶν λεγομένων. δ' ἐ  
 ηατΘ ἀγαλματοποιὸς κλαρομένηΘ, ἢ χίΘ, οὗ  
 μέμνηται καὶ ἱππῶναξ.

## ΛΑΚΥΔΗΣ

Λακύνδης ἀλδζανδρσ κυρλωαῖΘ, ἐτΘ δ' ἔτιρ  
 ὁ τῆς νέας ἀηαδ' ημίας ηαταρξας ἀρκοβίλαου  
 δ' ἐδεξαμηνΘ. αὐτῆς σεμνότατΘ καὶ ἐκ ὀλίγου  
 ὄψ' ἡκνῶς ζηλωτῆς. φιλόπρυνός τε ἐκ νέας. καὶ πρῆν  
 μὲν, ἐν χερσὶ δ' ἄλλως καὶ ἐνόμηνΘ. ἔδωκεν φασὶ καὶ  
 πόρ' ἰδιονομίαν γλυκύτατα ὄψ' ἡκνῶν. ἐπειδὴ  
 γὰρ τὶ πρόλοι τοι ταμείσ, σφραγιστέμηνΘ πάλιν  
 εἰσω τὸν διακτύλιον δ' ἐτΘ ὅπως ἐρρίπτει, ὡς μηδ' ἐ  
 πρτε αὐτὸ πῶλαιρεθῆν καὶ π' βασαχθεῖν τῶν ἄρ  
 κειμένων. μαθόντα δ' ἡ ἔδωκεν τὰ θοδ' ἀπ' ἑντα  
 φραγίξε καὶ ὅσα ἐβάλον ἐβασαζεν. ἔπειτα τὸν  
 διακτύλιον δ' ἐτΘ ὅπως ἤνιαι εἰς τὴν σοάν, καὶ ἔδωκε  
 πριουῦτα ὁ δ' ἐπώπρτε ἐφωροθῆν. ὁ γοῦν λακύνδης ὄψ'  
 χόλαζεν ἐν ἀηαδ' ημίας ἐν τῷ ηατασκοδ' ἀπ' ἡ  
 πω ἔπ' ἀπ' ὅλου τοι βασιλῆως. καὶ λακύνδ' ἐορ ἀπ'  
 αὐτὸ προσήγορδ' ἐτΘ. καὶ μόνΘ τῶν ἀπ' αὐτῶνΘ  
 ζῶν παρ' ἐδωκε τὴν σχολὴν τηλεκλῆι, καὶ ἐναύδ' ὡ  
 ρὶς φωνεῦσι. παρὰ δ' ἐναύδ' ὡς δεδ' ἐξαρ ἡ γησίνου  
 πόρ' γαμινός, ἀφ' ὃ ηαρνεαδ' ης. χέρην δ' εἰς τὸν

D λακύν



λακύδιον ἀναφύεται. ἀπάλου γὰρ αὐτὸν μὲν περὶ  
πομῆν φασὶν εἰπεῖν, τὰς εἰκόνας πρὸς ὧν Δεῖν  
θεωρεῖσθαι. ὅτε δὲ αὐτὸς γεωμετροῦν τι λέγει τις, εἴ-  
τα νῦν ηγερός; εἴτα μὴ δὲ νῦν; ἐτελεύτησε δὲ σχολὰς  
χεῖρ ἀφ᾽ ἑαυτοῦ. ἔπειτα τετάρτῳ ἔπειτα ᾧ τετάρτης  
καὶ τριακοστῆς καὶ ἑκατοστῆς ὀλυμπιάδῃ ᾧ ᾧ ᾧ  
λῆς ἀφηγησάμενος καὶ ἐξ πρὸς τῆς εἰκοστῆς ἔτη. ἡ  
τελευτὴ δὲ αὐτοῦ παρὰ λυσις ἐκ πηλοπονήσεως, καὶ  
αὐτοῦ προσεπέξαμεν ἡμεῖς οὕτως.

καὶ σέο λακύδιον φαίνεται ἐκλυοῖ, ὡς ἄρα καὶ σὺ  
βαλὼν χερσὶν ἰλὼν αἰδῶν πρὸς ἡμῶν ἔσυνεδον ἄνθρωποις.  
ἡ σαρπὶς δὲ διόκουσθαι ὅταν πρὸς δὲ δέμας ἔλθοι  
λῦσε μέλη, διὸ δὲ μή τι λυαῖσθαι ἔφην.

## ΚΑΡΝΕΑΔΗΣ

**Κ**ΑΡΝΕΑΔΗΣ ὑπὸ κώμῃ ἢ φιλοκώμῃ, ὡς ἀλέξαν-  
δρος ἐν διαδοχαῖς, ὁ κυριώτατος, οὗτος τὰ  
τῶν σωίκων βιβλία ἀναγνόντων ὑπὸ μελῶς τὰ χερσὶ  
πρὸς, ὑπὸ κώμῃ αὐτῶν ἀντέλεγε. καὶ ἐν κώμῃ τῶν  
τῶν ὡς τε ἐκείνο ὑπὸ λέγειν. εἰ μὴ γὰρ ἡ χερσὶ πρὸς  
ἐκ αὐτῶν ἐγώ. φιλόπρηνος δὲ ἀνθρώπων γέγονεν εἰ  
καὶ τις ἄλλος. ἐν μὲν τῶν φυσικῶν ὑπὸ φθορῶν  
πρὸς, ἐν δὲ τῶν ὑδατικῶν μάλλον. ὅθεν καὶ ἐνόμα καὶ  
ἐτρεφον οὐνοχας, ἀσχολία τῇ πόδι. σὺ λόγος. τῶν  
τῶν δὲ ἰσχυρῶν ἐν φιλοσοφίᾳ ὡς τε καὶ σὺ γέγονας  
ἀκλύστευτας ἐκ τῶν σχολῶν παρὰ αὐτῶν ἰγναι καὶ ἀ-  
κούειν. ἡ δὲ καὶ μεγαλοφρονότατος ὡς τε τῶν γυ-  
μνασίων

μνασίᾳ ἄρχον προσιμῆσαι αὐτῷ μὴ οὕτω βοᾶν. ἔρ-  
 δε, εἰπεῖν καὶ δὺς μέτρον φωνῆς. ὅθεν ἐν σόχῳ ἐλόν-  
 τα ἀμείψασθαι. φαῖναι γὰρ μέτρον ἔχεις αὐτῷ ἀκρο-  
 οντας. δεινῶς τὲν ὡν πλὴν κηπὸς ἐν ταῖς ζητήσε-  
 σι Δύσμαχῳ. τὰ τε δείπνα λοιπὸν παρεττίτο  
 ὁ δὲ τὰς προσημεσίας αὐτίας. ἐτῶ πρὶτὲ μὲν ῥι-  
 ρῶ το βιβλῶδ μαθητῶν οὐτῶ καὶ παρ' αὐτῷ ἐλθόν-  
 τῶ εἰς τὴν δατριβὴν, ὡς ἐπεῖρα αὐτῷ τὴν πα-  
 λακίῳ ὁ μὲν τρε, καὶ δὲ φησι φαβωρεῖν ὅτι παυροδ-  
 πῆ ἰσορία, μετὰ δὲ λέγων παρῶδῃσιν εἰς αὐτόν.  
 πωλείται τις δεῦρο γόρων ἄλιῳ, νημερῆς  
 μὲν ῥοι εἰδόμην, ἡμὴν δὲ μάς, ἡδὲ καὶ αὐδῶ.  
 ὅδε γὰρ χολῆς τῷ δ' ἐκ κεκρυχθαι λέγω.

Καὶ ὁ δὲ ἀναστὰς ἔφη.

οἱ μὲν, ἐκ κρυπτοῦ, ῥίδι' ἡγείροντο μάλ' ὤκη.  
 δεινότητον δὲ πως δοκεῖ ποδὶ τὴν τελευτῇ ἀνερ-  
 φθαι. ὅτε συνεχὴς ἔλεγε. ἡ συστήσασα φύσις ἐλ-  
 λύσει. μαθὼν τε ἀντίπατρον φάρμακον πιόντα ἀρ-  
 θανεῖν, παρῶρ μήθη πρὸς τὸ ἐνδασὶς τῷ ἀπαλα-  
 γῆς. καὶ φησι, δότε οὐ καμοί. τῷ δὲ εἰπὺν τῷ τί, οἱ  
 νόμελι εἰπεῖν. τελευτῇ τῶ δ' αὐτῷ φασὶν ἐκλει-  
 ψιν γνῶσθαι σελλῶς, συμπάθειαν ὡς αὐτῷ εἰρι-  
 ἀνιπομένης το μεθ' ἡλίου καλίστ τῷ ἄστρον. φη-  
 σὶ δὲ ἀπολλόδωρ ὅτι χρονικοῖς ἀπελθεῖν αὐ-  
 τῷ δὲ ἀνθρώπων, ἔτι τεταρτῷ τῆς διουτόρας καὶ  
 ἐξηκοσῆς καὶ ἑκατοσῆς ὀλυμπιάδῳ, βιώσαντα



ἔτι πρῶτε πρὸς τοὺς ὀγδὴκοντα φέρονται δὲ αὐτὰ  
 ὡς οὖτοι πρὸς ἀειπαύθλιον ἢ ἡγεμνασθίας βασι-  
 λεία. τὰ δὲ λοιπὰ αὐτὰ οἱ μαθηταὶ ξυνέγραψαν. αὐ-  
 τὸς δὲ ἡγάγετο μετ' αὐτοῦ. ἔτι καὶ εἰς ἑξῆς ἡμῶν ἔφθ  
 λογαοιστικῶ καὶ ἀρεβουλείῳ μέτρῳ.  
 τί με ἡγεμνασθίῳ τί με μοῦσα θέλεις ἐλέγχειν.  
 ἀμαθὴς ὅς ἐστι ἡγάρ τιδ' ὅπως δεδούκει  
 ἢ θανέειν. ὅτε καὶ φθισικῶ πρὶν ἔχωρ ἡγεμνασθίῳ  
 νόστον, ἐν ἔθελε λύσειν ἰσχυρῶν, ἀλλ' ἀκούσας  
 ὅτι φάρμακον ἀντίπατρεθ' πικρὸν ἀπίσβη,  
 δότ' ἐνὶ οὐνοῖσι καὶ καὶ μοι πικρὸν, τί μὲν ἔτι; τίς;  
 δότ' οἰνόμελι. σφόδρα τ' ἔχει πρόχειρα ταυτί.  
 φύσις ἢ σὺν ἔχου με καὶ ἀλγύσεται δὴ.  
 καὶ ὁ μὲν, ὃ δὲ ἔλαστον ἔβη καὶ γῆς. ἐνὶ δὲ  
 τὰ πλεία ἡγεμνασθίῳ ἔχοντα, μολεῖν εἰς ἀδύνατον.  
 Λέγεται καὶ τὰς ὁφείδεις νυκτὸς ἀποχυνθῆναι καὶ  
 ἀγνοεῖν. κελεύσασθαι τε ἢ πᾶσι λύχον ἀφαι. εἰς  
 κομίσαντο δὲ καὶ ἐπὶ πύλῳ κεκρόμεθα, ὅπου εἰ  
 πῆρ σὺ ἀναγίνωσκε. τὸ τε πρῶτον καὶ ἄλλοι γε,  
 γούνασι μαθηταί. ἐλλογιμώτατ' δὲ κλειτόμαχος.  
 πρὸς δὲ καὶ λεκτέον. γέγονε μὲν ἔτι καὶ ἄλλ' ἡγεμνασθίῳ  
 διὰς ἐλεγχίας πικρῆς ψυχρῆς.

ΚΛΕΙΤΟΜΑΧΟΣ

Κλειτόμαχος ἡγεμνασθίῳ. ὅτε ἐπαλεῖ  
 ἢ μὲν ἀσφούβας, καὶ τῇ ἰδίᾳ φωνῇ ἡγεμνασθίῳ  
 πατέρῳ

πατέρι δα φιλοσόφει. ἔλθωρ δ' εἰς ἀβελίας ἦδ' ἡ τε τ  
 ταρακκοντα ἔτη γεγονώς ἤκουσε χαρνεαδου. καὶ κεί  
 νθ' ἀρδεξάμενθ' αὐτοὶ τ' φιλόπρονος γραμματὰς  
 τε ἐπρίησε μαθεῖν, καὶ συνήσκει τ' ἂν αὐτὰ. ὁ δέ, εἰς  
 ῥοσὺν ἤλασεν ὠνιμελείας, ὥς τε ἔωδ' τὰ τετρα  
 κήσια βιβλία συνέγραφε. καὶ διεδέξατο τ' ἂν χαρνεα  
 διν. καὶ τὰ αὐτοὶ μάλιστα δὲ τ' ἂν συγγραμμάτων  
 ἐφώτισεν. αὐτὸς γὰρ ταῖς τρισὶν αἰρίσδσι Διατεί  
 φας. ἦν τε τῇ ἀρχαὶ μαϊκῇ καὶ πόριπατητικῇ καὶ  
 σωϊκῇ. χαθόλου δέ τ' ὅς ἀρχαὶ μαϊκούς ὁ τίμων ὄν  
 τω δὲ σούρει. οὐ δ' ἀρχαὶ μαϊκῶν πλατυρημοσύ  
 νης ἀναλύσου. ἡμεῖς δέ τ' ὅς ἀρχαὶ μαϊκούς

τ' ὅς ἀρ' πλάτ' ἂν θ' διεληλυθότ' ὅς,

ἔλθωμεν ὡς τ' ὅς ἀρ' πλάτ' ὡς.

νθ' πόριπατητικούς,

ὡς ἡρξεν ἀριστο

τέλ' ὅς.

D ;





ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ ΛΑΕΡ-  
ΤΙΟΥ ΒΙΩΝ ΚΑΙ ΓΝΩΜΩΝ ΤΩΝ ΕΝ  
ΦΙΛΟΣΟΦΙΑ ΕΥΔΟΚΙΜΗΣΑΝ.  
ΤΩΝ ΤΩΝ ΕΙΣ ΔΕΚΑ  
ΤΟ ΠΕΜΠΤΟΝ

ΑΡΙΣΤΟΤΕΛΗΣ



Αριστέλης νικομάχου καὶ φασιολ-  
δοῦ, σαγειρίτης. ὁ δὲ νικόμαχος  
ὡς ἀπὸ νικομάχου τοῦ μαχάου  
τοῦ ἀσκληπιῶ. καὶ δὲ φησὶν ἔρμπε-  
πτος ἐν τοῦ ποταμοῦ ἀριστοτέλους, καὶ  
συνεβίω ἀμύματα τοῦ μακεδόνων βασιλεῖ, ἱατροῦ  
καὶ φίλου χρεῖα. ὅτε γνησιώτατος τῷ πλάτωνα  
καὶ μαθητῇ. τραυλὸς τὴν φωνὴν ὥς φησι τιμόθεος  
ἀθλιωτὴς ἐν τοῦ ποταμοῦ βίω. ἀλλὰ καὶ ἰαχυροσκελὴς  
φασὶν ὡς καὶ μικρόματος. δευθῆναι τὴν ὑψηλὴν  
χρῶμιν, καὶ δακτυλίοις καὶ κουρᾷ. ἔαχε δὲ ὕψος,  
νικόμαχος δὲ ἐρωτυλίδος τοῦ παλακῆος ὥς φησι τι-  
μόθεος. ἀπίσθη δὲ πλάτων ἐπὶ ποταμῶν, ὥς το  
φασὶν ἐκείνοισι εἰπεῖν. ἀριστοτέλης ἡμᾶς ἀπελαλκτι-  
σε καὶ ἀποδρεῖ τὰ πωλάσια γνησθέντα, τὴν μὲν  
ρα. φησὶ δὲ ἔρμπεπτος ἐν τοῖς βίοις, ὅτι περὶ βόον  
τοῦ

τῷ αὐτῷ πρὸς φίλιππον ἐπὶ ἀθλωαίῳ, ἀχολαί-  
 χης ἐγγύς τῃ ἐν ἀναδημείᾳ ἀχολῆς ξυνοικεῖσθαι.\*  
 πόριπα γὰρ ἔμην λυκείῳ. καὶ μέλει μὲν ἀλείμμα-  
 τῷ ἀναγέμψοντα, ῥίς μαθητοῖς συμπλοκοφῆν,  
 ὅθεν ποδῖπα τηκὸν προσεφορβυῖται. οἱ δ' ὅτι ἐν  
 νόστῳ ποδῖπα γὰρ ἀλδραίνδρω, συμπαζὼν διελέ-  
 γω πᾶσι. ἐπειδὴ δὲ πλείους ἐγίνοντο ἡδὴ, καὶ ἐ-  
 κάθησαν. εἰπὼν,

αἰσχρὸν σιωπᾶν ξυνοικεῖσθαι δ' ἰαὺ λέγειν.  
 καὶ πρὸς τοῖς συνεγύμναζε τοῖς μαθητάς, ἅμα καὶ  
 ἡθρυνόμενος ἐπασκῶν. ἐπειτα μὲν γὰρ ἀπῆρε πρὸς ἐρ-  
 μείαν γὰρ ἱεροῦχοι, ἀπαρνήσθαι τὸν τύραννον. ὁ δὲ  
 μὲν, φασὶ παρὶνὰ γνέσθαι αὐτόν. οἱ δὲ, καὶ κηδεύει  
 αὐτὸν, δόντα τὴν θυγατέρα ἢ ἀδελφὸν, ὥς φησι  
 δημήτριος ὁ μάγνης ἐν τοῖς ποδῖ ὁμωνύμων τρι-  
 τῷ τε καὶ συγγραφίῳ. ὅς καὶ δοῦλον ἐν βούλῳ φη-  
 σὶ γνέσθαι γὰρ ἐρμείαν, γνέει βιβιωὺς ὄντα, καὶ γὰρ  
 διδοῦν αἰνέοντα. αἰεσίππῳ δ' ἐν τῷ πρώτῳ  
 ποδῖ παλαιᾷς τευφῆς φησὶν, ἐραδῖναι γὰρ αἰετο-  
 τέλει παλακίδος τοῖς ἐρμείδ. τοῖς δὲ συγχωρήσαν-  
 τῷ, ἐγὼ μὲν τε αὐτῷ, καὶ ἔθυσεν ἐπὶ χαίρων τῷ  
 γυναικί, ὥς ἀθλωαῖοι τῇ ἐλδουινίδι δημήτρι, τῷ τε  
 ἐρμείᾳ, παίαναν ἔγραψεν, ὅς ἐν δὲ γέγραπτο. ἐν τε ὅθεν  
 τὴν γνέσθαι ἐν μακεδονίᾳ παρὰ φίλιππῳ. Ἐλαβεῖν μα-  
 θετῶν παρ' αὐτοῦ γὰρ ὅν ἀλέξανδρον. καὶ αὐτῷ αἰ-  
 νασθῆναι αὐτὸν τὴν πατρίδα κατασημαφῆσαν ἐπὶ  
 φίλιππῷ



φιλίππῳ, καὶ τυχεῖρ. οἷς καὶ νόμου θείναι. ἀλλὰ ἐν τῇ σχολῇ νομοθετεῖν μεμύνητορ ξυνοικεῖτω. ὥς τε κατὰ δέησιν ἡμόρους, ἀρχόντα πρίειν. ἐπειδὴ δὲ ἐι δόκει ὑπὲρ κῶς αὐτοῦ, συγγεγνηῶτα ἀλδραίνεσθαι, αὐτῶν πῆρην εἰς ἀθλῶας συστήσας αὐτοῦ τὴν συγγνήην καὶ λιαδρῆν τὴν ὀλυμπιον. ὅρῳ παρῆρσι σικώτορ λα λουῶτα τοῦ βασιλῆος, καὶ μὴ πειθόμενον αὐτοῦ, φαίσιρ, ὑπὸ πλῆξαντα εἰπεῖν.

ὠκύμωρος δὲ μοι τέκῃ ἔσεται, οἱ ἀγορεύεις. καὶ δὴ καὶ ἐγὼ. δόξας γὰρ ἱερολαῶ συμμετεῖν, οὐκ ἐγὼ τῆς εἰς ἀλῆξαντορ ὑπὸ βουλῆς, ἐν σιδηρᾷ ποδὶ κῆρ γαλεοῦ γρά, φθειρῶν καὶ ἀκρόμῃς. καὶ τέλῃ λῖον τι παρὰ βληθεῖς, ὅτω κατῆρξε. ὁ δὲ ὅσω ἀριστοτέλης ἐλθὼν εἰς τὰς ἀθλῶας, καὶ τρία πρὸς τοῖς δέησιν σχολῆς ἀφηνεσάμεν ἔπη, ὥς ἐξῆλθεν εἰς χαλκίδα, ἐντυμίδου τῷ αὐτῷ τοῖς ἰδοῖν φαίντο δίκην ἀσεβείας γραψάμεν ἢ δημοφίλου, ὥς φησι φαβερῖν ἐν πανρ διαπῇ ἰσορίᾳ, ἐπειδὴ πόρ τὴν ὕμνον ἐπρίνησεν εἰς τὴν προειρημενῶν ἱρμείαν. ἀλλὰ καὶ ἐπιγράμμα ὑπὸ τοῦ δελφοῖς ἀνδραῖν τῷ, τριῶν.

τόνδε πρὶ ὅσῳ πᾶβας μακρότερων θέμις ἀγῶν, ἔκτεινεν πόρσῳ ρξοφόρῳ βασιλεύς.

ὁ φανερῶς λόγῃ φονίοις ἐν ἀγῶσι κρατίσας, ἀλλ' αὐτῶν πίσει χροσάμεν δολίῳ.

ἐν ταῦτα δὲ πῶρ ἀκρόνιρ ἐτελεύτησεν, ὥς φησιρ  
ἔμνη

ἔμνησθ' ἐν τῇ πέμπτῃ τῶν ἰσοριῶν, βίβον ἔτι βόθ  
 μήνοντα. ὁ δ' αὐτὸς φησιν αὐτῶν καὶ πλάττωνι τρια  
 κοντέτῳ συσλῶσαι, καὶ διαπίπτῳ. βεβίωκε γὰρ  
 τεῖα μὲν πρὸς τῆς ἐξήκοντα. πλάττωνι δὲ ἑπτακταί  
 δεκα ἔτη σωίσῃ. ὁ δὲ ὕμνος ἔχει ἑῶν τὴν τέττατον.  
 Αρετὰ πολύμοχθε γῆς βροτείῳ, θήραμα ἡγάμισον  
 βίω. σᾶς πόρι παρθένε μορφᾶς, καὶ θανείμ' ἡλωτῆς  
 ἐν ἱμαδί' ἡρώδῃ, καὶ πέντε τλῶσαι μαλδρὸν  
 ἀνέμω. τῶν ὡδ' ἑρῶα βάλλεις καρπὸν εἰς  
 ἀθάνατον, χρυσὸν τε κρέιασιν καὶ γούρῳ μαλακῶν  
 γηρῶν ὕπνου. σοῦ δ' ἔνεκ' ἐκ δῖος ἡρακλῆος, λήδας  
 τὴν κοῦροι πᾶσι ἀνέτλασαν, ἔρσοις ἀναφορεῖν οὐδὲ  
 δύναμιν. σοῖς τὴν πᾶσι ἀχιλῆος αἶας τ' αἰδαο δό  
 μων ἡλθον. σᾶς δ' ἔνεκεν ὀλίγῃ μορφᾶς ἀταρῆως ἐν  
 τροφῇ ἀελίῳ χήρωσιν αὐγᾶς. πρὶ γὰρ ἀοιδίμῳ ἔρ  
 σοις; ἀθάνατ' ἴτε μιν αὐξήσουσι μετὰ, μναμοσύνας  
 θύγατρες, δῖος ξενίῳ σέβας αἰέσσει, ὀλίγας τὴν γέ  
 ρας βεβαύει. ἔσι δ' ὅω καὶ εἰς ἑῶν ἡμῶν, οὐ  
 πως ἔχον.

ἱερὸν μῦθον πρὶ μέλῳ ἀριστοτέλει ἀσεβείας

γραφῆσθαι διὰ μύθῳ ὡς πρότερον.

ἀλλὰ πῶς ἀκόνειν, ἑπτακταί τοι' ἀκονίτι.

ὡς ἀφ' ἑκῆς συνηφασίαις ἀδίκους.

ἑῶν πρῶτον φασίαν ἐν παντ' ἀπὸ ἰσορίας, λό  
 γον φασὶ διηγουμένῳ ὑποδῶν τοι συγγραφῆαι, ἐπ' αὐ  
 τῇ ταύτῃ τῇ δίκῃ. καὶ λίγαν ὡς ἀβλύσιον

E. ὅχον.



ὄχνη ἐπ' ὄχνη γηρασκει, σῦνον δ' ὠδ' οὐκ αἶ.  
 φησὶ δ' ἀπὸ λούσεσθαι ἐν χρονοῖς γήνηθαι μὴ  
 τῷ πρώτῳ ἔτι γνῶσις καὶ γήνησις οὐκ αἶ.  
 διό. παραβαλεῖν δὲ πλάτωνι καὶ δεῖται παρ'  
 αὐτ' εἰσορῆσαι ἐπὶ τῇ ἰσχυρίσει καὶ συνησάντων, καὶ εἰς  
 τε μυθολογίᾳ ἰλθεῖν ὠδ' ἀφ' ἑνὸς ἐμβόλου, τῷ  
 τετάρτῳ ἔτι τῇ ὀγδόῃ καὶ ἑκατῇ οὐκ αἶ.  
 διό. πλάτων δὲ τελευτήσαντος τῷ πρώτῳ  
 ἔτι ὠδ' θεοφίλου, εἰς ἑρμείαν ἀπάσαι καὶ μέναι ἐν  
 τῇ τρία. ὠδ' πυθοδότῃ δ' ἰλθεῖν εἰς ὀλίππου τῷ  
 δευτέρῳ ἔτι τῇ γνῶσις καὶ ἑκατῇ οὐκ αἶ.  
 διό. καὶ ἐν λυκείῳ σχολάζει ἐπὶ τρία πρὸς τὴν δὲ  
 καὶ εἰς ἀπάσαι εἰς χαλκίδ' αἶ τῷ τρίτῳ ἔτι τῇ τε  
 τάρτῃ καὶ δεκάτῃ καὶ ἑκατῇ οὐκ αἶ.  
 διό. τελευτήσαντος ἐπὶ τῷ τριτῷ καὶ ἑκτοντα, νόσῳ. ὅτε  
 καὶ δημοσθένει καὶ ταρτίῳ ἐν καλαυρίᾳ ὠδ' ὀλι  
 γοκλίτου. λέγεται δὲ δεῖται τὴν καλλιόγῃ πρὸς  
 ἀλέξανδρον σύνασι, προσκρούσαι τῷ βασιλεῖ. καὶ  
 κείνον ὠδ' τῷ ἑκτῷ λυγρῶσαι. ἀναξιμένη μὴ αὐξή  
 σαι. πέμψαι δὲ καὶ ξηνοκράτῃ δῶρα. ἀπίστωται δ'  
 εἰς αὐτὴν ἐπίγραμμα καὶ θεοκρίτου ὁ χίθ', οὕτω  
 σὶ τρεῖς ὥς φησὶ ἀμβρόσιον ἐν ᾧ ποδὶ θεοκρίτου.  
 ἑρμείου ἐμμούχου, ἢ δ' ἐμβόλου ἅμα δούλου,  
 σῦμα κενὸν κενόφρων τεύξιν ἀεισοτέλης.

Αλλὰ καὶ τῶν αὐτῶν καὶ τῶν ἑτέρων εἰσώρων.  
 εἰ δ' ἀφ' ἀεισοτέλους εἰς καλοσύνης ἀλεγενῆς.

Καὶ

Καὶ οὗτο μὲν ὁ βίβλος τοῦ φιλοσόφου. ἡμεῖς δὲ καὶ  
 θεολογικαὶ αὐτοὶ ἐν τῷ χερσὶν, οὕτω πως ἐχούμεν. ἡμεῖς δὲ καὶ  
 σαι μὲν ἐν. ἐὰν δὲ τι συμβαίνει, τὰ δὲ διέβητο ἀριστοὶ αὐτοὶ  
 τέλης. ἐπίτροποι μὲν εἶναι πάντων καὶ ὁλοκληρῶς  
 ἀντίπατρον. ἕως δ' ἂν νικῶντες καὶ ταλαβῇ ὑπὸ  
 λείας, ἀριστομένη, τίμαρχον, διοτέλην, θεόφραστον, ἐὰν  
 βούλεται καὶ ἐν δέχεται αὐτῶν, τῶν τε παιδίων  
 ἐρπυλίδος καὶ τῶν καὶ ταλελειμένων. καὶ ὅταν  
 ὥρα ἢ τῇ παιδί, ἐκ δὲ δόσθαι αὐτῶν νικῶντες. ἐὰν δὲ τῇ  
 παιδί συμβῇ τί, ὃ μὴ γήνοιν, ὅ δὲ ἔσαι, πρὸ τοῦ γήμα  
 οὔσαι, ἢ ἐπειδὴν γήμῃται μήτε παιδίον οὐτάρ, νι  
 κῶντες κύριος ἔσω καὶ πόδι τοῦ παιδὸς καὶ πόδι τῶν  
 ἄλλων, διοικῆναι ἀξίως καὶ αὐτοὶ καὶ ἡμῶν. ὑπὸ μελεῖ  
 οὔτω δὲ νικῶντες καὶ τῇ παιδὸς καὶ τοῦ παιδὸς νικῶ  
 μαλ' αὖ, ὅπως αὖ ἀξιοῖ τὰ πόδι αὐτῶν, ὥς καὶ πατὴρ  
 ὦν καὶ ἀδελφός. ἐὰν δὲ τι πρότερον συμβαίνει νικῶ  
 νοι, ὃ μὴ γήνοιν, ἢ πρὸ τοῦ λαβεῖν τὴν παιδίαν, ἢ ἐπει  
 δὴν λαβεῖν μήπω παιδίον οὐτῶν, ἐὰν μὲν γὰρ ἐκεί  
 νος τῶν ταῦτα, κύρια ἔσω. ἐὰν δὲ βούληται θεός  
 φραςθ' εἶναι μετὰ τῆς παιδὸς, καὶ δὲ πόρ πρὸς  
 νικῶντας. ἔσθ' δὲ μὴ, τὸν ὑπὸ τῶν βουλομένων  
 μετὰ ἀντιπάλου, καὶ πόδι τῆς παιδὸς, καὶ πόδι  
 τοῦ παιδὸς, διοικῆναι ὅπως αὖ αὐτοῖς Διοκῇ ἀρι  
 στα εἶναι. ὑπὸ μελεῖσθαι δὲ τοὺς ὑπὸ τῶν, καὶ  
 νικῶντας, μνησθέντας ἐμοῦ καὶ ἐρπυλίδος, ὅτι  
 ἀποιδάα πόρ ἐμὲ ἐγούσας, τῶν τε ἄλλων, καὶ ἐὰν  
ἡμεῖς δὲ καὶ



βέλῃται ἀνδρα λαμβάνειν, ὅπως μὴ ἀναξίῃ ἢ  
 μῶν δοθῇ. δοῦναι δ' αὐτῇ πρὸς τῆς πρόδορον δεδω-  
 μένοις, καὶ ἀργυρεῖς τολανρρ, ἐκ τῶν ἡραταλελειμι-  
 μένων, καὶ θοδραπαίνας τρεῖς, ἐὰν βούληται, ἔτι τῶν  
 παιδίσκων ἧς ἔχει, καὶ παῖδα ἅμ' πυρρῶαορ. ἔτι ἐὰν  
 μὲν ἐν χαλκίδι βούληται οἰκῆν, ἅμ' ξενῶνα ἅμ' πρὸς  
 τοῦ κήτωρ, ἐὰν δὲ ἐν σαγείροις, τῶν πατρῶων οἰκίαν.  
 ὅπερ τόδρα δ' αὖν τὸ τῶν βούληται, ἡρατασκυδύσσει  
 τὸν ὑπὲρ τῶν σκυδύσσει οἷς αὖν Δοκῇ κακείνοις  
 ἡγαλῶς ἔχειν, καὶ ἐρπυλίδι ἡγαλῶς. ὑπὲρ μελείσθαι δὲ  
 νηγῶν καὶ μύρμηκας τὰ παιδίσκας ὅπως αὖν ἀξίως  
 ἡμῶν τῆς ἰδίῃς ὑπὲρ μελείσθαι, (ὡς τῆς ὑποαχῆσις ἢ  
 εἰλήφαρ μὲν αὐτῶν. εἶν δὲ καὶ ἀβρακίδας ἐλδύθδρα. ἔτι  
 δοῦναι αὐτῇ ὅταν ἢ πᾶς ἐκδοθῇ, πρὸς τακτοσίαν δρα-  
 χμὰς, καὶ τῶν παιδίσκων ἧς ἔχει. δοῦναι καὶ θαλῇ  
 πρὸς τῇ παιδίσκῃ ἧς ἔχει τῇ ὠνηθείσῃ, χιλίας δρα-  
 χμὰς καὶ παιδίσκων. καὶ σίμωνι χωρεῖς τὰ πρότε-  
 ρον ἀργυρεῖς αὐτῶν εἰς παῖδας ἄλλων, ἢ παῖδας πρὸς  
 οὗτοι, ἢ ἀργυρεῖς δοῦναι. τίχωνας δὲ ἐλδύθδρα εἶ-  
 ναι ὅταν ἢ πᾶς ἐκδοθῇ, καὶ φίλωνας, καὶ ὀλύμπι-  
 ον, καὶ τὸ παιδίον αὐτοῦ. μὴ πωλεῖν δὲ τῶν  
 παιδίων μηδὲν τῶν ἐμὲ θοδραποδούντων. ἀλλὰ χρῆ-  
 σθαι αὐτῆς. ὅταν δ' ἐν ἡλικίᾳ γήνωνται, ἐλδύθδρα  
 ἀφῆναι ἡγὰρ ἀξίαν. ὑπὲρ μελείσθαι δὲ καὶ τῶν ἐκδοθῆ-  
 μένων εἰσὶν ἡμῶν παρὰ γρηλῶνα, ὅπως ὑπὲρ τελεσθῆ-  
 σαι ἀνατεθῶσι, ἢ τε νικαῖορ καὶ ἢ προξένου, ἧς  
 διγνοῖ,

θειροσύμῳ ἐκδυῖναι, καὶ τῆς μητρὸς τῆς νιγάνοι  
 ρΘ. καὶ τῷ ἀρμυνῆς τῷ πεπρημένῳ ἀναθῆναι.  
 ὅπως μνημείον αὐτοῦ ἦ, ἐπεδὴ ἅπαις ἐτελεύτησε.  
 καὶ τῇ μητρὸς τῇ ἡμετέρᾳς τῷ δῆμῳ, ἀναθῆναι  
 εἰς νέμεαν ἢ ὅπου αὐτὴ δυνῇ. ὅπου δ' αὖ πρῶτονται  
 τῷ ταφῇ, ἐν ταῦτα καὶ τὰ πυθιάδ' ὅσα ἀνελόν,  
 τὰς θῆναι, ὡς πόρ αὐτῇ προσέταξεν. ἀναθῆναι δὲ  
 καὶ νιγάνορα σωθῆναι, ἵν' ἐν χλῷ ἑσθὺ αὐτοῦ ἡνυαλί-  
 μῳ, ζῶα λίθινα τετραπῆχη δὲ σωτῆρι καὶ ἀθλῳ ἁ-  
 σωτείῃ ἐν σαγείῃ. ὅθεν ἰσχυρὸν αὐτῷ εἰς ἀρετὴν  
 καὶ ἔν τῷ τρόπῳ. λέγεται δὲ καὶ λοπάδας αὐτοῦ πλεί-  
 στας ἐνυῆσθαι. καὶ λύκωνα λέγειν ὡς ἐν πυλῶ θορ-  
 μοῦ ἐλαίᾳ λούοι, καὶ τῷ λαῷ δὲ λατρεύειν. ἐνίοι δὲ  
 καὶ ἀσκήσιον θορμοῦ ἐλαίᾳ ὑπὸ τῷ αὐτῷ εἰς τομά-  
 χω φασί. καὶ ὅπου τε κρημῶν, σφαῖραν χαλκίῳ βούλ-  
 λεσθαι αὐτῷ εἰς τῷ χεῖρα λεηάνης ὑποκειμένης,  
 ἵν' ἐκπύδῃς τῇ σφαίρας εἰς τῷ λεηάνῳ, ὑπὸ τοῦ  
 φόβου θείῳ. Αἱ φθέγματα καὶ ἁλίσσα, ταυτί. ἐρω-  
 τηθεὶς τί ποιεῖν γίνεται κούδ' ὅτις ἐκ δυνάμεσιν, ὅ  
 ταρ ἔφη λέγωσι μὴ ἀλήθειαν μὴ πιστεύεσθαι. ὁνειδίζ-  
 ούμεν, ὅτι πρὶν ὅτι πρὶν ἄνθρωπῳ ἐλεημοσύνην δέ-  
 δωκεν, ὅτι τῷ τρόπῳ ἔπιν, ἀλλὰ τῷ ἀνθρώπῳ ἡλέη-  
 σα. σιωπῇ εἰσὶν λέγειν πρὸς τε τοὺς φίλους καὶ  
 τοὺς φοιτῶντας αὐτῷ, ἐνταῦθα αὖ καὶ ὅπου δὲ αὐτῷ  
 ἔτυχεν, ὡς ἡ μὲν ὁρασις, ἀπὸ τοῦ πᾶσι χυτῷ ἀδύ-  
 λαμβάνει ὅ φῶς. ἡ δὲ ψυχὴ, ἀπὸ τῷ μαθηματῷ.



ηρμάκους δὲ καὶ ἀρτεινόμους, οὗς ἀθλωαί-  
 σκον ἐνεγκέναι πυροὺς καὶ νόμους. ἀλλὰ πυροὺς  
 μὲν, χρεῖσθαι νόμοις δὲ, μή. ὅτι παιδείας ἔφη, τὰς μὲν  
 οἷας εἶναι πικράς. γλυκὺν δὲ ἔρμηνειν. ἔρωτη-  
 θείς τί γηρασκει ταχὺ. χάρις, ἔφη. ἔρωτηθεὶς τί ἐ-  
 σιρὶ λπίς. ἐρηγορότῳ εἶπεν ἐνύπνιον. διογῆν οὖς  
 ἰοχάδῃ αὐτῷ διδόντῳ νοήσας ὅτι εἰ μὴ λαβὼν  
 χρεῖαν εἶναι μεμελετηκώς, λαβὼν ἔφη, διογῆν μετὰ  
 ὅτι χρεῖας καὶ τὴν ἰοχάδῃ ἀκρωλεγκέναι. πάλιν  
 διδόντῳ, λαβὼν καὶ μετεωρήσας ὡς τὰ παιδία,  
 εἰπὼν τε μέγας διογῆν, ἀπὲδωκεν αὐτῷ. τειῶν  
 ἔφη δὲ ἰσχυρὰ, φύσεως, μαθήσεως, ἀσκήσεως. ἀν-  
 κούσας ὑπὸ πνέουσι διδρύνειν, ἀπέντα με ἔφη καὶ  
 μασιγούτω. ὃ καὶ πάντες ἔλεγον ὑπὸ σολίᾳ συν-  
 σαπινότορον. οἱ δὲ, ὅσοι μὲν διογῆν φασὶν ὀρίσκει-  
 σθαι. αὐτὸν δὲ δῶρον εἶπεν ἐν μορφῇ. σωκράτη  
 δὲ, ὀλίγο χρόνιον τυραννίδα. πλάτωνα, πρὸ τέρμα  
 φύσεως. θεόφραστον, σιωπῶσαν ἀπάτην. θεόκριτον, ἐλ-  
 λεφαντίνην ζήμειαν. κερκελίδην, ἀδρυφόρητον βα-  
 σιλείαν. ἔρωτηθεὶς τίς σφαιρόσσις οἱ πεπαιδευμέ-  
 νοι τῶν ἀπαιδούτων, ὅσω εἶπεν οἱ ζῶντες τῶν τεθνη-  
 κούτων. τὴν παιδείαν ἔλεγον ἐν μὲν ταῖς ἐντυχίαις  
 εἶναι νόσμον. ἐν δὲ ταῖς ἀτυχίαις, καταφυγνῶν.  
 τῶν γονέων οὖς παιδύσαντας ἐν τιμωτότῳ εἶναι  
 τῶν μόνον γηνησάντων. οὗς μὲν γὰρ, ὃ ζῶν. οὗς δὲ, ὃ  
 καλῶς ζῶν παραχίεσθαι, πρὸς ἔρμηνειν ὡς  
 ἀπὸ

ἀπὸ μεγάλης πόλεως εἶν, οὐ τοῦτο ἔφη σκηπτεῖν.  
 ἀλλ' ὅς τις μεγάλης πατρίδος ἄξιός τις. ἐρω-  
 τηθεὶς τί ὅστι φιλόσοφος, ἔφη. μία ψυχὴ δύο σώ-  
 μασιρ ἡνοικουῖται. τῇ ἄνθρώπων ἔλεγε, σὺ μὲν οὐ-  
 τω φείδεσθαι, ὡς ἀεὶ χρησιμοποιῇς. σὺ δὲ οὕτως ἀ-  
 ναλίσκειν, ὡς αὐτίκα τεθνηξομένης. πρὸς τὸν πυ-  
 θάγωγον ὅτε τί τις ἡρώδης πολὺν χρόνον ὁμιλοῦ-  
 μεν, τυφλοῦ ἔφη τὸ ἱρώτημα. ἐρωτηθεὶς τί ποτ' αὐ-  
 τὸν ποδὶ γέγονεν ἐκ φιλοσοφίας, ἔφη. τὸ ἀνεπιταλ-  
 κτως ποιεῖν, ἃ τινὲς ὅτε τὸν ἀπὸ τῶν νόμων φό-  
 βον προῦσιν. ἐρωτηθεὶς πῶς αὖ προκώπτειν οἱ μα-  
 θηταί, ἔφη. εἰς τοὺς πρέχοντας διώκοντες, τοὺς  
 ὑποδουλοῦντας μὴ ἀναμνήσωσι. πρὸς τὸν εἰπόντα ἀ-  
 δολέχην ἐπειδὴ πολλὰ αὐτοῦ ἡγνύτλησε, μή-  
 τι σου ἡγετφλυομένης; μὰ δὲ ἔπην. οὐ γάρ σοι προ-  
 σείχοι. πρὸς τὸν αὐτιωσαμένον ὡς εἴη μὴ ἀγαθῶ  
 ἔρανον δεδωκώς, φέρεται γὰρ καὶ οὕτω, οὐ τὸν ἀν-  
 θρώπων φησὶν ἰδωκεν, ἀλλὰ τὸν ἀνθρωπίνω. ἐρωτηθεὶς  
 πῶς αὖ τοῖς φίλοις προσφοροίμεθα, ἔφη. ὡς αὖ ἐν-  
 ξαίμεθα αὐτοὺς ἡμῖν προσφέρειν. τὴν Δικαιο-  
 συνὴν ἔφη ἀρετὴν ψυχῆς διανεμητικὴν τοῦ ἡγ-  
 τ' ἀξίαν. ἡγλίσον ἐφόδιον τὸ γῆρα, τὴν παιδεί-  
 ας ἔλεγε. φησὶ δὲ φαβωρίνους ὃν τὸν δαυτόν τῇ  
 ἀπομνημονουμάτων, ὡς ἐκάλει λέγοι, ὃ φίλοι, εἰ-  
 δεὶς φίλος. ἀλλὰ καὶ ὃν τὸν ἡδικῶ ἐβδόμω ἐσί.  
 καὶ ταῦτα μὲν εἰς αὐτὸν ἀναφέρεται. Σωίγραφε  
 δε



δε πάμπαν βιβλία. ἃ ἀκόλουθον ἡγεσάμεθα  
 συγγραμ- ἀπὸ γὰρ τῶν ποδὶ πάντας λόγους τ' ἀνδρῶν  
 ματα ἀει- ἀρετῶν. ποδὶ δὲ δικαιοσύνης ᾱ β̄ γ̄ Δ. ποδὶ πρὶ  
 σοτήλους κτλ̄ ᾱ β̄ γ̄. ποδὶ φιλοσοφίας ᾱ β̄ γ̄. πρὶ  
 πικρῶ ᾱ β̄. ποδὶ ἡγεμονίας γούλθ ᾱ. νήρι  
 θθ̄ ᾱ. σοφίας ᾱ. μινέξθ ᾱ. ἱρωτικὸς ᾱ.  
 συμπόσιον ᾱ. ποδὶ πλούτου ᾱ. πρὸ τρεπτικὸς  
 ᾱ. ποδὶ ψυχῆς ᾱ. ποδὶ εὐχῆς ᾱ. ποδὶ εὐγούρει  
 ας ᾱ. ποδὶ ἡδονῆς ᾱ. ἀλέξανθ, ἢ ἑσθ̄ ᾱ.  
 ποίικω ᾱ. πρὶ βασιλείας ᾱ. ποδὶ παιδεί  
 ας ᾱ. ποδὶ τὰ γαθοῦ ᾱ β̄ γ̄. τὰ ἐν τῶν νό  
 μων πλάτθθ ᾱ β̄ γ̄. τὰ ἐν τῆς πολιτείας  
 ᾱ β̄. οἰκονομικὸς ᾱ. ποδὶ φιλίας ᾱ. ποδὶ τοῦ πά  
 οχειρ, ἢ πεπρωθῆναι ᾱ. ποδὶ ὠλσημῶν ᾱ. ποδὶ  
 ἱερικῶν ᾱ β̄. λύσεις ἱερικαὶ Δ. δὲ ῥίσεις σο  
 φικαὶ Δ. ποδὶ ἡγαντίων ᾱ. πρὶ εἰδῶν καὶ  
 γνῶν ᾱ. πρὶ ἰδίω ᾱ. ὑπομνήματα ὠλχηρηπ  
 κού γ̄. πρὸ τῶν πρὶ ἀρετῇ ᾱ β̄ γ̄. ἡγαν  
 σις ᾱ. πρὶ τῶν πρὸς ἡσυχίαν λεγομένων, ἢ κτλ̄ πρὸ  
 θόσι ᾱ. πρὶ παθῶν ὀργῆς ᾱ. ἡδικῶν ᾱ β̄  
 γ̄ Δ. πρὶ σοικείων ᾱ β̄ γ̄. ἑσθ̄ ὠλση  
 μης ᾱ. πρὶ ἀρχῆς ᾱ. διαίσεις ἑσθ̄ καὶ δει  
 κα δὲ ῥίσεων ᾱ. ἱρωτικῶν καὶ ἀρετικῶν ᾱ  
 β̄. πρὶ κινήσεως ᾱ. πρὸ τῶν ᾱ. πρὸ τῶν  
 σις ἱερικαὶ Δ. συλλογισμοὶ ᾱ. πρὸ τῶν ᾱ  
 ναλυτικῶν ᾱ β̄ γ̄ Δ ε̄ ς̄ η̄ θ̄. ἀναλυτι  
 κῶν

κῶν ὑσδῶν μεγαλῶν  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$ . πῶν προβλημα/  
 τῶν  $\bar{\alpha}$ . μεθοδικὰ  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$   $\bar{\gamma}$   $\bar{\Delta}$   $\bar{\epsilon}$   $\bar{\varsigma}$   $\bar{\zeta}$   $\bar{\eta}$ . πε/  
 εἰ το βελτίων  $\Theta$   $\bar{\alpha}$ . πῶν φιλιδίας  $\bar{\alpha}$ . ὅροι πρὸ  
 τῶν ῥπικῶν  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$   $\bar{\gamma}$   $\bar{\Delta}$   $\bar{\epsilon}$   $\bar{\varsigma}$   $\bar{\zeta}$ . συλλογισ/  
 μῶν  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$ . συλλογισικὸν καὶ ὅροι  $\bar{\alpha}$ . πῶν το αἰ/  
 ρεῶν καὶ το συμβεβηκότ  $\Theta$   $\bar{\alpha}$ . τὰ πρὸ τῶν τό/  
 πων  $\bar{\alpha}$ . ῥπικὸν πρὸς αὐτῶν  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$ . πάθη  $\bar{\alpha}$ .  
 διακριτικὸν  $\bar{\alpha}$ . μαθηματικὸν  $\alpha$ . ὁρισμοὶ τεισ/  
 καίδηα. ὑπὸ χειρηματῶν  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$ . πῶν ἡδονῆς  $\bar{\alpha}$ .  
 προτάσεις  $\bar{\alpha}$ . πῶν ἐκουσίῳ  $\bar{\alpha}$ . πῶν καλῶν  $\bar{\alpha}$ .  
 θέσεις ὑπὸ χειρητικῶν πᾶντε καὶ εἰρησι. θέσεις φιλι/  
 καὶ  $\bar{\beta}$ . θέσεις πῶν  $\tau\chi\eta\varsigma$   $\bar{\alpha}$ . πρὸς πικῆς ἀκροα/  
 σεις ὡς ἡ θεοφραστ  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$   $\bar{\gamma}$   $\bar{\Delta}$   $\bar{\epsilon}$   $\bar{\varsigma}$   $\bar{\zeta}$   $\bar{\eta}$ . πε/  
 εἰ διηγίῳ  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$ . τεχνῶν συναγωγὴ  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$ . τέ/  
 χνης ἐντριπικῆς  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$ . τέχνη  $\bar{\alpha}$ . ἄλλη τέχνη  $\bar{\alpha}$   
 $\bar{\beta}$ . μεθοδικὸν  $\bar{\alpha}$ . τέχνης τῆς θεοδίκτου εἰσαγω/  
 γῆς  $\bar{\alpha}$ . πραγμάτων τέχνης πρὸς πικῆς  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$ . ἐν/  
 θυμήματα ἐντριπικῆς. πῶν μεγέθους  $\bar{\alpha}$ . ἐνθυμημα/  
 τῶν διαρίσεις  $\bar{\alpha}$ . πῶν λίξεως  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$ . πῶν συμ/  
 βουλίας  $\bar{\alpha}$ . συναγωγῆς  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$   $\bar{\gamma}$ . πῶν φύσε/  
 ως  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$   $\bar{\gamma}$ . φυσικὸν  $\bar{\alpha}$ . πῶν φιλῶν αἰσθητικῶν  
 λουσιῶν  $\bar{\alpha}$   $\bar{\beta}$   $\bar{\gamma}$ . πῶν φιλῶν αἰσθητικῶν καὶ ξυνο/  
 κρωτῶν  $\bar{\alpha}$ . τὰ ἐν το πρῶτῳ καὶ τῶν αἰσθητικῶν  
 ὡν  $\bar{\alpha}$ . πρὸς τὰ μελίσου  $\bar{\alpha}$ . πρὸς τὰ ἀλχημαίω/  
 ν  $\Theta$   $\bar{\alpha}$ . πρὸς αὐτῶν πυθαγορείου  $\bar{\alpha}$ . πρὸς τὰ σοφ/  
 γεία  $\bar{\alpha}$ . πρὸς τὰ ξυνοκρωτῶν  $\bar{\alpha}$ . πρὸς τὰ ζή/



νων Θ. α. πρὸς τῇ πυθαγορείῳ α. πρὸς ζώων  
 α β γ Δ ε ς ζ η θ. ἀναρμῶν α β γ  
 Δ ε ς ζ. ἐκλογὴ ἀναρμῶν α. ἑπορ τῇ σω  
 θέτῃ ζώων α. ἑπορ τῇ μυθολογουμένην ζώων  
 α. ἑπορ τοῖς μὴ γινῶν α. πρὸς φυτῶν α β. φυ  
 σιογνωμονικὸν α. τακτικὰ β. πρὸς μονάδου  
 α. σημεῖα χειμόνων α. ἀστρονομικὸν α. ὁπτι  
 κὸν α. πρὸς κινήσεως α. πρὸς μουσικῆς α. μνη  
 μονικὸν α. ἀρρημολτῇ ὁμηρικῶν α β γ Δ  
 ε ς. ποιητικὰ α. φυσικῶν κατὰ σοιχείου, ὁκτὼ  
 πρὸς τοὺς τελευτῶντα. ὑπὲρ θεαμένων προβλημά  
 των α β. ἐγκυκλίων α β. μηχανικὸν α.  
 προβλήματα ἐκ τῇ δημοκρίτου α β. πρὸς πῆς  
 λίθου α. παραβολαὶ α. προτακτὰ Δευχιδύο.  
 διηγεμένη κατὰ γῆν, τέτταρα καὶ δέκα. διηγιώ  
 ματα α. ὀλυμπιονίκαι α. πυθιονίκαι μουσικῆς  
 α. πυθικός α. πυθιονικῶν ἑλεγχῆ α. νῆκαι διο  
 νυσιακαὶ α. πρὸς τραγωδιῶν α. διδασκα  
 λῆαι α. παροιμίαι α. νόμου συστατικὸς α. νό  
 μων α β γ Δ. κατηφοριῶν α. πρὸς ἑρμη  
 νείας α. πελιτῆαι πόλεων δυοῖν δεύουσαι, ἐξήκον  
 τα καὶ ἑκατὸν, καὶ ἰδίαι δημοκρατικαὶ, ὀλιγαρχι  
 καὶ, ἀριστοκρατικαὶ, καὶ τυραννικαί. ὑπὲρ αὐτῶν πρὸς  
 φίλιππον. σκληρυμένων ὑπὲρ αὐτῶν. πρὸς ἀλέξανδρον,  
 τέτταρες ὑπὲρ αὐτῶν. πρὸς αὐτίπατρον, ὅντινα. πρὸς  
 μέγαν

ἐν ἑνὶ τῷ ᾱ. πρὸς ἀρίσωνα ᾱ. πρὸς Ὀλυμπία  
 δια ᾱ. πρὸς ἠφαισίωνα ᾱ. πρὸς θεμιστογόνα  
 μία. πρὸς φιλόξενον ᾱ. πρὸς δημόκριτον ἑπὶ πη, ὡρ  
 ἀρχὴ ἁγνὴ θεῶν πρὸς βούθ' ἡγετῆ βόλε. ἐλεγεῖα, ὡρ  
 ἀρχὴ, καὶ λιτέκων μητρὸς θυγατρός. γίνονται αἱ πᾶ  
 σαι, μυριαδικὰς σίχων τέτταρες καὶ τετρακοινοῦται,  
 πρὸς τῆς πεντακισχιλίοις, καὶ δεκάκισις ἐβδμή  
 κροντα. καὶ τοσαῦτα μὲν αὐτῶν πεπραγμένων δύσαι ἀει-  
 ται βιβλία. βούλεται δὲ ἐν αὐτοῖς ταῦδε. σοτέλους  
 τὸν εἶναι τὸν κατὰ φιλοσοφίαν λόγον. τὸν μὲν  
 πρακτικόν. τὸν δὲ θεωρητικόν. καὶ τοῦ πρακτι  
 κοῦ, τὸν τε ἡθικόν, καὶ πολιτικόν. οὗ τὰ τε πε  
 ρὶ πόλιν, καὶ τὰ περὶ οἶκον ὑπογεγραμμένα. τοῦ  
 δὲ θεωρητικοῦ, τὸν τε φυσικόν, καὶ λογικόν. οὗ  
 τὸ λογικόν, οὐχ ὁλομδρῶς. ἀλλ' ὡς ὄργανον πρὸς  
 σκηπτικόν. καὶ τούτου διττὸς ὑποθέμενος  
 σκηπούς, τό τε πιθανόν, καὶ τὸ ἀληθὲς διδόναι  
 φησε. Δύο δὲ πρὸς ἑκάτερον διωκόμενα ἐχρή  
 σατο. Διαλεκτικῇ μὲν καὶ ῥητορικῇ πρὸς τὸ πι  
 θανόν. ἀναλυτικῇ δὲ καὶ φιλοσοφίᾳ πρὸς τὸ ἀλη  
 θές, οὐδὲν ὑπολείποντος, οὔτε τῶν πρὸς εὐρε  
 σιν, οὔτε τῶν πρὸς κρίσιν, οὔτε μὲν τῶν πρὸς  
 χρῆσιν. πρὸς μὲν οὗτω τῶν εὐρεσιν, τὰ τε ὅτι  
 καὶ καὶ μεθοδικὰ παρέδωκε προτάσεων πλήθος,  
 ὅς ὡρ πρὸς τὰ προβλήματα πιθανῶν ἐπιχρῆν  
ματῶν



μολτῶν οἰόν τε εὐπορεῖν. πρὸς δὲ τῶν κρείσιν τὰ  
 ἀναλυτικὰ πρότορα καὶ ὑσδρα. ὅλα μὲν ἐν τῶν προ-  
 τόρων τὰ λήμματα κρύνεται. ὅλα δὲ τῶν ὑσδρῶν ἡ  
 σωμαγωγὴ διετάσσεται. πρὸς δὲ τῶν χρεῶν, τὰ τε  
 ἀγωνιστικά, καὶ τὰ ποδὶ ἐρωτησεως, ἐρσισηά τε, καὶ σφ-  
 ισιτικῶν ἐλέγχων, τὴ καὶ συλλογισμῶν, καὶ τῶν ὁ-  
 μοίων τῶν κειπείων τῇ ἀληθείας, τῶν μὲν κατὰ  
 φαντασίαν ἐνδρυνημολτῶν, τῶν αἰσθησιν ἀπεφύλα-  
 ρ. τῶν δὲ ἡδικῶν, τὰ ποδὶ πόλιν καὶ ποδὶ οἶκον καὶ  
 ποδὶ νόμου, ἢ νομῶν. τέλει δὲ ἐν διεξέρῳ, χρεῶν ἀ-  
 ρετῇ, ἢ βίῳ τελείῳ. ἔφη δὲ ὅτι τῶν ἐνδαιμονίαν, συμ-  
 πλήρωμα ἐκ τριῶν ἀγαθῶν εἶναι. τῶν ποδὶ ψυχῇ,  
 ἀδῆ, καὶ πρῶτα τῇ δυνάμει καλῇ. ἐκ δυνάτορων  
 δὲ, τῶν ποδὶ σῶμα, ὑγείας, καὶ ἰσχύος, καὶ καλῆς,  
 καὶ τῶν παρὰ πλησίον. τῶν δὲ ἐκτὸς, πλούτου, καὶ ἐν-  
 γυνείας καὶ δόξης, καὶ τῶν ὁμοίων. τῶν τε ἀρετῶν, μὴ  
 εἶναι αὐτὰρ ἐκ πρὸς ἐνδαιμονίαν. προσδεῖσθαι γὰρ  
 τῶν ποδὶ σῶμα καὶ τῶν ἐκτὸς ἀγαθῶν, καὶ ἐνδαιμονίαν  
 συντελεῖται τοῖς σοφοῖς, καὶ ἐν ἡρώοις ἢ, καὶ ἐν πτωχῶν καὶ  
 ῥίσι ὁμοίοις. τῶν μὲν γὰρ κακίαν, καὶ ὅτι μάστις πρὸς  
 αὐτῇ τὰ ἐκτὸς ἀγαθὰ, καὶ τὰ πρὸ σῶμα. τὰς τε ἀρετὰς  
 ἔφη μὴ ἀκολουθεῖν. ἐν δὲ χεῖρ γὰρ φρόνιμόν πιναι, ὅτι  
 ὁμοίως δίκαιον ὄντα, ἀνέλαστον καὶ ἀκρατῇ εἶναι. ἔ-  
 φη δὲ ὅτι σοφόν, μὴ εἶναι μὲν ἀπαθῆ, μετριοπαθῆ δὲ.  
 πὶ τελείᾳ τῶν τε τελείαν ὠρίζῃ ἰσότητά ἐκείνης ἀντίστροφον.  
 ταύτης δὲ τῶν μὲν, εἶναι συγγενικῶν. τῶν δὲ ἐρωπι-  
 κῶν

κλή. εἶναι δὲ καὶ τὸν ἔρωτα μὴ μόνον συνουσίας ἀλλὰ καὶ φιλοσοφίας. καὶ ἐξαδικήσεσθαι τὸν σοφόν, καὶ πελιτδύεσθαι, γαμήσειν τὴν μὴ καὶ βασιλεῖ συμβιῶναι. βίωρ τὴν τριῶν ὄντων, θεωρητικοῦ, πρακτικοῦ, ἡδονικοῦ, τὸν θεωρητικὸν προέκρινεν. ἔχουσα δὲ καὶ τὰ ἐγκύκλια μαθήματα πρὸς ἀρετῇ ἀνάλληται. ὅν τε τῆς φυσικῆς ἀπολογώταται πάντων ἐγγύς, ὥς τε καὶ ποῦ τῶν ἐλαχίστων τὰς αἰτίας ἀκροθιόουαι. διό πορ καὶ ἐκ ὀλίγα βιβλία συνήγαγε φυσικῶν ἀκροθιμονομῶν τῶν. τὸν δὲ θεὸν ἀσώματον ἀπὲ φάνει καθὰ καὶ ὁ πλάτῳ. διατείνει δὲ αὐτῷ τῶν πρὸννοιαν μέχρι τῶν οὐρανίων, καὶ εἶναι ἀκίνητον αὐτόν. τὰ δὲ ἐπίγεια καὶ τῶν πρὸς ταῦτα συμπάθειαι διοικονομεῖσθαι. εἶναι δὲ παρὰ τὰ τέσσαρα σοιχέια καὶ ἄλλο πέμπτον, δι' ὃ τὰ αἰθέρια συνεσῶναι. ἀλλ' ἐπὶ αὐτῶν τῶν κινήσειν εἶναι. κυκλοφορικῶν γὰρ. καὶ τῶν ψυχικῶν δὲ ἀσώματων, ὅν τελέχειαι ὅσα τῶν πρῶτων σώματος γὰρ φυσικοῦ καὶ ὁργανικοῦ, δυνάμει ζωὴν ἔχοντες. διττὴ δ' αὐτῇ ὅτι κατ' αὐτόν. λέγει δ' ὅν τελέχειαι, ἥς ὅτι ἐπὶ τῶν ἀσώματων. ἢ μὲν, καὶ δυνάμει, ὥς ὅν τῶν κηρῶ ὁ ἐρμῆς ὑπὸ τῆς δειότητος ἔχωρ ὑπὸ δέξασθαι χαρακτῆρας. καὶ ὁ ὅν τῶν χαλκῶ ἀνδρείας. καθ' ἑξίς δὲ λέγεται ὅν τελέχειαι ἢ τῶ σωτελεσμένου ἐρμού ἢ ἀνδραγύτῳ. σώματι δὲ φυσικοῦ, ἐπεὶ τῶν σωμάτων τὰ μὲν ὅτι χειρόνητα, ὥς τὰ ἑσὸ τεχνιτῶν γινόμενα. οἷον πύρι



γ. πλοῖον. τὰ δὲ, ὑπὸ φύσεως. ὡς φυτὰ καὶ τὰ  
 τῶν ζώων. ὁργανισικοῦ δὲ εἶπε, τὰ τέσι πρὸς πηγάς  
 σκιδνασμένον, ὡς ἡ ὄρασις πρὸς τὴν ὄραν, καὶ ἀκοή  
 πρὸς τὴν ἀκούειν. δισσώμει δὲ ζῶον ἔχον τ. οἶον ἐν  
 ἰαυτῷ. τὸ δισσώμει δὲ ἡ τὴν ἡ γὰρ ἐνδύγειαν. κατ'  
 ἐνδύγειαν μὲν, ὡς ὁ ἐρηφορὸς λέγεται τυχλὺν ἐν  
 χερσιν. κατὰ εἶπεν δ' ὡς ὁ καθεύδων. ἴν' οὖν καὶ οὐ  
 τ. ὑποπίπτει, τὸ δισσώμει προσέθηκε. πρὸς δὲ  
 καὶ ἄλλα πρὸς πολλῶν ἀπεφλέαται, ἃ πρὸ μακρόν  
 αὐτὸν εἶναι κατὰριθμῆσθαι. τοῖς γὰρ ὅλοις ἐπισπνύται  
 τ. ἐγγύς καὶ ἐνδοτικώτατα. ὡς δὲ ὅλον ἐκ τῶν  
 περὶ γεγραμμένων συγγραμμάτων. ἃ τὴν ἀριθμὸν  
 ἐγγύς ἡκεῖ τετρακισίων, τὰ ὅσα γὰρ ἀντιπλέκται.  
 πρὸς γὰρ καὶ ἄλλα εἰς αὐτὴν ἀναφέρεται συγ-  
 γραμματα αὐτοῦ, καὶ ἀκροβύγια ἀκροφου φων-  
 ῆς ἐνδοχήματα. γέγονασι δὲ ἀριστοτέλεις οὐκ ὡς  
 πρὸς αὐτὸς εἶπεν. Διδύμοι δὲ ὁ πρὸς δισσώμει  
 ἡ ἀθλῶσις, ἡ καὶ διηγεῖται φέρονται λόγοι κατ'  
 εἰρητοῦ. τρίτ. περὶ ἰλιαδίου περὶ λαγμάτων  
 μὲν. τέταρτ. σικελιώτης ἡ τὴν πρὸς τὴν ἰσο-  
 κρῶν τὴν πανηγυρικὸν ἀντιγεγραφώς. πέμπτ.  
 ὁ ὑπὸ κληθεὶς μὲν, αἰσχίνου τοῦ σωκρατικοῦ γνώ-  
 ριμ. ἕκτ. κερωνίου γεγραφώς περὶ πρὸς  
 καὶ. ἑβδόμ. παιδοτείας, ἡ μέμνηται ἀριστότε-  
 ρον ἐν τῷ πλάτῳ βίῳ. ὀγδό. γραμματικὸς  
 ἀσκημ. οὗ φέρεται τέχνη περὶ πλεονασμοῦ. τοῦ

Δὴ σαγχεῖται γένουσι μὲν πολλοὶ γνώριμοι. ὁ δὲ φέρων  
 δὲ μάλιστα θεόφραστον περὶ ἑλκείων.

## ΘΕΟΦΡΑΣΤΟΣ

Θεόφραστον ἐρεῖσι μελάντα κυαφίως υἱός,  
 ὥς φησιν ἀθλιώδως ἐν ὀγδόῃ περὶ πάθων,  
 ὅτι πρότορον μὲν ἤκουσε λουκίππυ τοῦ πλείτου ἐν  
 τῇ πατρίδι. εἴτ' ἀκούσας πλείων μετέστη πρὸς  
 ἀριστοτέλην. καὶ κείνους εἰς χαλκίδα ὑποχωρήσαντες  
 αὐτὸς διεδέξατο τῷ σχολίῳ ὀλυμπιάδι τεταρτῇ  
 καὶ δεκάτῃ καὶ ἑκαρτῇ. φέρεται δ' αὐτὸ καὶ δοῦ-  
 λῳ φιλόσοφῳ ὄνομα πεμπύλῳ. καὶ δὲ φησι μυ-  
 ρωνιανὸς ἀμασειανὸς ἐν βιβλίῳ πρώτῳ τῷ ὁμοίῳ ἰσο-  
 εικῶν κεφαλαίῳ. ὁ δὲ θεόφραστον γένοντι ἀνὴρ συ-  
 νετώτατος καὶ φιλοπνώτατος. καὶ καὶ δὲ φησι  
 παμφίλῳ ἐν βιβλίῳ τριακοντῷ Διδύμῳ τῷ ὑπομνη-  
 ματῇ, διδάσκειν μὲν αὐτὸς τοῦ κωμικοῦ. ἄλ-  
 λως τε καὶ ἐν ζῳογραφίᾳ καὶ φιλόλογῳ. καὶ σκενδρῳ  
 σοῦ αὐτὸν ἀπεδέχθη. καὶ περὶ μετὰ ἑπεμψεν  
 ἐπ' αὐτὸν. τοσοῦτον δ' ἀρετῆς ἡξιοῦν παρὰ ἄλλοις  
 ναίοις, ὥς τε ἀγνωσίᾳς γλῆσσας ἀσεβείας αὐτὸν  
 γράψασθαι, μικροῦ καὶ προσώφλου. ἀπὸ τῶν τε εἰς  
 τὴν δεικνύμεν αὐτὸ μαθητὰς πρὸς διαχίλις. ὅτι  
 τὰ τε ἄλλα καὶ πόδι διηγεῖται τὰ αὐτὰ δειλεκτὰ  
 ἐν τῇ πρὸς φανίαν τῇ περὶ περὶ τῆς αὐτοῦ ὑπόθεσης.  
 ὅτι πανήγυρις, ἀλλ' ὅδε σωείδιον ῥαδίον οἶον πρὸς  
 βούλε



βούλεται λαβεῖν. αἱ δὲ ἀναγνώσεις τριοῦσιν ἐπανόρ-  
 θώσεις. ὃ δὲ ἀναβάλλεσθαι πάντα καὶ ἀμελεῖν ἐκεί-  
 νι φόρῳσιν αἱ ἡλικίαι. ἐν ταύτῃ τῇ ὑπὸ σολῆ σχολαστι-  
 κῶν ὠνόμακε. τριῶν δὲ ὡς ὁμοῦς ἀπεδήμησε πρὸς  
 ὀλίγον καὶ ἔτι καὶ πάντες οἱ λοιποὶ φιλόσοφοι. σο-  
 φικλήσας τοὶ ἀμικυλείδου νόμον εἰσνευγόντων  
 μηδὲν ἄ τῷ φιλοσόφῳ σχολῆς ἀφηγείσθαι αὐτὸ μὴ  
 τῇ βουλῇ καὶ ἔρῃ δὴ μὴ δόξῃ. εἰ δὲ μὴ, δάναρμ εἶναι  
 τὴν ζημίαν. ἀλλὰ αὐτοὺς ἐπανύλθον εἰς νέωτα φιλι-  
 ῶν. ὃν σοφικῆα γραψάμεν παρὰ νόμον, ὅτε ἔ-  
 ρον νόμον μὴν ἄκυσον ἐπίησαν ἀθλωαῖοι. ὃν δὲ σοφοί  
 κλήα πρὸς ταλάνους ἐζημίωσαν, καὶ βοδόν τε ρῖς  
 φιλοσόφοις ἐψηφίσαντες, ἵνα καὶ θεόφραστος κατέλθῃ  
 καὶ ἐν ρῖς ὁμοίοις ᾖ. Τῶν τῶν τῶν λεγόμενον, θεο-  
 φραστος δὲ ὃν φράσεως θόρυβος ἀριστοτέλους  
 μετωνόμασεν. ὃ καὶ τοὺς ἡγεμονίχους φησὶν ἐρω-  
 πικῶς διατεθῆναι, καὶ πόρ ὄντα διδάσκειν αὐτοὺς, ἀρί-  
 σιπτος ἐν τεταρτῷ πόρ ἡ παλαιὰς τευφῆς. λέγε-  
 ται δ' ἐπ' αὐτοὺς τε, καὶ καλλιόγῃς ὃ ὁμοιον εἶ-  
 περ ἀριστοτέλει, ὃ πόρ πλάτων καὶ πρὸς εἰρηται  
 φασὶν ἐπεὶ ἐπὶ τε ξυνορθώσας καὶ αὐτοὺς τῶν.  
 φαῖναι γὰρ τοὺς μὴ θεωφράστῃ καὶ ὑποβολῇ ὁξύτη-  
 τος πάντες ὃ νοθεῖν διδρμωδούντων, τοὺς δὲ νοθεῖν  
 τὴν φύσιν ὑποαφέντων, ὡς ἔρ μὴ, χαλινού δέοι.  
 ἔρ δὲ, κέντρε. λέγεται δ' αὐτὸν καὶ ἴδιον κῆπον  
 οὐκ εἶναι μὴ τὴν ἀριστοτέλους τελευτῇ, διημετερίου  
 τοῦ

το φαληρείως, ὅς καὶ γνώριμος αὐτῷ, ὅς τε συμπρά  
 ξαντος. φέρεται δ' αὐτοὶ ἀκροθέγματα τωτὶ χειρὶ ἀκροθέματα  
 ὡς δ' η. θᾶπτον ἔφη πισδύειν διερὶ ἵππῳ ἀχαλίνῳ, ἢ λό  
 γῳ ἀσωτακτικῷ. πρὸς δὲ τὸν ἐν τῷ συμπροσίῳ σιω  
 πῶντα τὸ ὅλον ἔφη. εἰ μὲν ἀμαθὴς εἶ, φρονίμως πρὶς.  
 εἰ δὲ πεπαίδευται, ἀφρόνως. σιωχέεις τε ἔλεγε, πρὶ  
 λυτελὴς ἀνάλωμα εἶναι, τὸν χρόνον. ἐτελεύτα δ' ἡ  
 γηραιὸς βιτὸς ἔτη πέντε καὶ ὀγδοήκοντα. ἐπειδὴ  
 πρὸ λίσσον ἀνῆκε τῷ πένωρ. Ἐἴσι ἡμῶν εἰς αὐτόν.  
 ἐκ αἴφα ὅσον μάλιστα ἔπ' ὁ μὲν ὡς πρὶ λίσσον,  
 ἢ γινώσκει σοφίης τόξον ἀνεμνήσθαι.

δὴ γὰρ καὶ θεόφραστος ἔως ἔφηναι μὲν ἄπειρος  
 ἦν δ' ἡμῶν, ἔτ' ἀνεθεῖς καὶ τὸ πρὶς πρὸς μελῆς.  
 Φασὶ δ' αὖ τὸν ἐρωτηθέντα ὑπὸ τῷ μαθητῷ εἶτι  
 ὠλοσκήπτει εἰπεῖν, ὠλοσκήπτει μὲν ἔχειν ἔδεον,  
 πλὴν ὅτι πρὸς τῷ ἡδύωρ ὁ βίος ὅσον τῷ δόξαν κα  
 ταλαζονεύεται. ἡμεῖς γὰρ ὅπου ἦρχόμεθα ζῶν, τὸ  
 ἀκροθνήσκον μὲν. ἔδεον ἀλυσίτελεις ὅσον ἔστι φιλοδοξί  
 ας. ἀλλ' ἐντυχέειτε, καὶ ἡ γὰρ τὸν λόγον ἀφετε. πρὸς  
 γὰρ ὁ πένος. ἢ καλῶς αὐτῷ πρόσητε. μεγάλη γὰρ  
 ἡ δόξα. τὸ δὲ κενὸν τοῦ βίου πλείον τοῦ συμφέροντος.  
 ἀλλ' ἐμοὶ μὲν ἐκείτ' ἐκπρὶς βουλομένοισι τί πρὸς κτε  
 ρον. ὑμεῖς δ' ὠλοσκήπτειτε τί πρὸς κτερον. ταῦτα φασὶ  
 εἰπὼν ἀπέπαισσε, καὶ αὐτὸν ὡς ὁ λόγος ἀβλυαῖοι  
 πανδῆμεν παρὲς ἐμψαν πρὸς τὸν αἴφα πρὸς κτε  
 ρον. φαβωρῖν δὲ φησι γηραιότεντα αὐτὸν ἐν φο  
 ρεῖω.



βιβλία  
αὐτῶ

ρεῖω ποδιφορέσθαι. καὶ ἄλλοι λίγειν ἔρμιμπον, παρὰ  
πρόμηνον ἰσορεῖν ἀγκυδίλαον ἢ πιτανάιον, ἐν οἷς  
ἴφασκε πρὸς λακύνδιον ἢ κυρτανάιον. κατέλιπε δὲ  
βιβλία καὶ αὐτὸς ὅτι μάλιστ' ἀμύπλεις. ἃ καὶ αὐ-  
τὸς ἀξιοῖ ἠγαστέμειον ὑπογράφαι, ὅθεν ἡ πάσης ἀρε-  
τῆς πληρῶσθαι. ἔστι δὲ ταῦτα ἀναλυτικῶν προτί-  
ρων ἁ β γ. ἀναλυτικῶν ὑσώρων ἁ β γ Δ  
ε ς ζ. ποδὶ ἀναλύσεως συλλογισμῶν ἁ. ἀνα-  
λυτικῶν ὑπὸ τῆς ἀ. ἀνηγμένων τῶων ἁ β.  
ἀγωνιστικῶν τῆ ποδὶ αὐτῶν ἐριστικὸν λόγον θεωρίας.  
ποδὶ αἰσθησεως ἁ. πρὸς ἀναξαγόραν ἁ. ποδὶ  
τῆς ἀναξαγόρου ἁ. ποδὶ τῆς ἀναξιμένης α. πε-  
ρὶ τῆς ἀρχέλαου α. ποδὶ ἀλῶν νίτρου συνθερίας  
α. ποδὶ τῆς λιθουμένης α β. ποδὶ τῆς ἀτόμων  
γραμμῶν α. ἀκροάσεως α β. ποδὶ ἀνέμων  
α. ἀρετῆς διαφορᾶ α. ποδὶ βασιλείας α. πε-  
ρὶ παιδείας βασιλείας α. ποδὶ βίωσιν α β γ.  
ποδὶ γήρεως α. ποδὶ τῆς Δημοκρίτου ἀερολογίας  
α. τῆς μετεωρολογίας α. ποδὶ τῆς εἰδωλῶν α.  
ποδὶ χυμῶν χροῶν σαρκῶν α. ποδὶ τοῦ διακρίσματος  
α. ποδὶ τοῦ ἀνθρώπου α. τῆς διοργάνου συναγωγῆς  
α. διορισμῶν α β γ. ἱρωτικός α. ἄλλο  
ποδὶ ἱρωτῶ α. ποδὶ ἐνδαιμονίας α. περὶ εἰδῶν  
α β. ποδὶ ὑπὸ τῆς α. ποδὶ ἐνθουσιασμοῦ α.  
ποδὶ ἐμπειροκλήσεως α. ὑπὸ χειρὸς τῆς α β γ  
Δ ε ς ζ η θ ι ια ιβ ιγ ιδ ιε ις ιζ ιη.

ἐν τῇ

ἡνσαλσεωρ  $\alpha$   $\beta$   $\gamma$ . ποδὶ ἐκουσίου  $\alpha$ . ὑπὸ τομῇ  
 φῖ πλωτῆν  $\Theta$  κελτείας  $\alpha$   $\beta$ . ποδὶ ἐτόροφωνί  
 ας ζώωρ τῆν ὁμογνῶν  $\alpha$ . ποδὶ τῆν ἀβρόωρ φαυνο  
 μνῶν  $\alpha$ . ποδὶ δακετῆν καὶ βληπκῶν  $\alpha$ . ποδὶ  
 τῆν ζώωρ ὅσα λέγεται φρονεῖν  $\alpha$ . ποδὶ τῆν ἐν ξη  
 ρῷ ὡς αμνόν τῆν  $\alpha$ . ποδὶ τῆν τὰς χρείας μετα  
 βαλλόντων  $\alpha$ . ποδὶ τῆν φωλόνωντων  $\alpha$ . ποδὶ  
 ζώωρ  $\alpha$   $\beta$   $\gamma$   $\Delta$   $\epsilon$   $\varsigma$   $\zeta$ . πρὶ ἡδονῆς ὡς ἀριστοτέ  
 λης  $\alpha$ . περὶ ἡδονῆς ἄλλας  $\alpha$ . θέσεις  $\eta$   $\alpha$ . περὶ  
 θορύμου καὶ ψυχροῦ  $\alpha$ . περὶ ἰλίγγων καὶ σινοτώσε  
 ων  $\alpha$ . περὶ ἰδρωτῶν  $\Theta$   $\alpha$ . περὶ καταφάσεως καὶ  
 ἀκροφάσεως  $\alpha$ . κατὰ τὴν γῆν ἢ περὶ πύθου  $\alpha$ .  
 περὶ ἡρώων  $\alpha$ . περὶ κινήσεως  $\alpha$   $\beta$   $\gamma$ . περὶ λί  
 θων  $\alpha$ . περὶ λοιμῶν  $\alpha$ . περὶ λειπτυχίας  $\alpha$ .  
 μεγαλειῶν  $\alpha$ . περὶ μελαγχολίας  $\alpha$ . μετρησιολο  
 γικῶν  $\alpha$   $\beta$ . περὶ μέλιτος  $\alpha$ . περὶ τῆν μητρο  
 δώρεσ συναγωγῶν  $\alpha$ . μετρησιλογικῶς  $\alpha$   $\beta$ . πρὶ  
 μέθης  $\alpha$ . νόμων καὶ σοιχείων  $\eta$   $\delta$ . νόμων ὑπὲρ  
 μῆς  $\alpha$   $\beta$   $\gamma$   $\Delta$   $\epsilon$   $\varsigma$   $\zeta$   $\eta$   $\theta$   $\iota$ . πρὸς αὐτοὺς  
 συμτῶν  $\alpha$ . περὶ δυνάμεως ἐλαίας. πρὸ τῶν προτάσεων  
 $\alpha$   $\beta$   $\gamma$   $\Delta$   $\epsilon$   $\varsigma$   $\zeta$   $\eta$   $\theta$   $\iota$   $\iota\alpha$   $\iota\beta$   $\iota\gamma$   $\iota\delta$   $\iota\epsilon$   
 $\iota\varsigma$   $\iota\zeta$   $\iota\eta$ . νομοθετῶν  $\alpha$   $\beta$   $\gamma$ . κελιπκῶν  $\alpha$   $\beta$   
 $\gamma$   $\Delta$   $\epsilon$   $\varsigma$ . κελιπκῶν πρὸς αὐτοὺς καὶ ἄλλας  $\alpha$   $\beta$   $\gamma$   
 $\Delta$ . κελιπκῶν ἐνθῶν  $\alpha$   $\beta$   $\gamma$   $\Delta$ . ποδὶ φῖ ἀείσης  
 κελτείας  $\alpha$ . προβλημωτῆν συναγωγῆς  $\alpha$   $\beta$   
 $\gamma$   $\Delta$   $\epsilon$ . πρὶ παρομιμῶν  $\alpha$ . περὶ πῆξεωρ καὶ τῆν



ξειωρ  $\bar{\alpha}$ . πόρι πυρός  $\bar{\alpha}$   $\beta$ . πρί πυδύματῶν  $\bar{\alpha}$ .  
 πόρι παραλύσεως  $\bar{\alpha}$ . πόρι πνιγμοῦ  $\bar{\alpha}$ . πόρι  
 παραφροσύνης  $\bar{\alpha}$ . πόρι παθῶν  $\bar{\alpha}$ . πόρι σημεί-  
 ων  $\bar{\alpha}$ . σοφισματῶν  $\bar{\alpha}$   $\beta$ . συλλογισμῶν λύσε-  
 ως  $\bar{\alpha}$ . ρπικῶν  $\bar{\alpha}$   $\beta$ . πόρι πμωρίας  $\bar{\alpha}$   $\beta$ .  
 πόρι τειχῶν  $\bar{\alpha}$ . πόρι τυραννίδ $\Theta$   $\bar{\alpha}$ . πόρι ὕ-  
 δατ $\Theta$   $\bar{\alpha}$   $\beta$   $\gamma$ . πόρι ὕπνου καὶ ὕπνωσι $\omega$ ν  $\bar{\alpha}$ .  
 πόρι φιλίας  $\bar{\alpha}$   $\beta$   $\gamma$ . πόρι φιλοπμίας  $\bar{\alpha}$   $\beta$ .  
 πόρι φύσεως  $\bar{\alpha}$   $\beta$   $\gamma$ . πόρι φυσικῶν  $\bar{\alpha}$   $\beta$   $\gamma$   
 $\Delta$   $\bar{\epsilon}$   $\bar{\varsigma}$   $\bar{\zeta}$   $\bar{\eta}$   $\bar{\theta}$   $\bar{\iota}$   $\bar{\iota}\alpha$   $\bar{\iota}\beta$   $\bar{\iota}\gamma$   $\bar{\iota}\delta$   $\bar{\iota}\epsilon$   $\bar{\iota}\varsigma$   $\bar{\iota}\zeta$   
 $\bar{\iota}\eta$ . πόρι φυσικῶν ὠληρμῆς  $\bar{\alpha}$   $\beta$ . φυσικῶν  $\bar{\alpha}$   
 $\beta$   $\gamma$   $\Delta$   $\bar{\epsilon}$   $\bar{\varsigma}$   $\bar{\zeta}$   $\bar{\eta}$ . πρὸς τοῦ φυσικόν $\varsigma$   $\bar{\alpha}$ .  
 πρί φυσικῶν ἰσοειῶν  $\bar{\alpha}$   $\beta$   $\gamma$   $\Delta$   $\bar{\epsilon}$   $\bar{\varsigma}$   $\bar{\zeta}$   $\bar{\eta}$   $\bar{\theta}$   $\bar{\iota}$ .  
 φυσικῶν αἰπῶν  $\bar{\alpha}$   $\beta$   $\gamma$   $\Delta$   $\bar{\epsilon}$   $\bar{\varsigma}$   $\bar{\zeta}$   $\bar{\eta}$ . πόρι  
 χυλῶν  $\bar{\alpha}$   $\beta$   $\gamma$   $\Delta$   $\bar{\epsilon}$   $\bar{\varsigma}$   $\bar{\zeta}$   $\bar{\eta}$ . πόρι φύδους  
 ἡδονῆς  $\bar{\alpha}$ . πόρι ψυχῆς θέσις μία. πόρι τῶν ἀτέ-  
 λων πίσεων  $\bar{\alpha}$ . πόρι τῶν ἀπλῶν σχεπρηματῶν  
 $\bar{\alpha}$ . ἀρμονικῶν  $\bar{\alpha}$ . πόρι ἀρετῶν  $\bar{\alpha}$ . πόρι γνώμης  
 $\bar{\alpha}$ . πόρι γλοίου  $\bar{\alpha}$ . Δειλιῶν  $\bar{\alpha}$   $\beta$ . σχερῆ-  
 σεις  $\bar{\alpha}$   $\beta$ . πόρι σχεφορῶν  $\bar{\alpha}$ . πόρι ἀστικημα-  
 τῶν  $\bar{\alpha}$ . πόρι σχεβολῆς  $\bar{\alpha}$ . πόρι ἐπαίνου  $\bar{\alpha}$ . πε-  
 εἰμπερίας  $\bar{\alpha}$ . ὠλισσῶν  $\bar{\alpha}$   $\beta$   $\gamma$ . πόρι τῶν  
 αὐτρηματῶν ζώων  $\bar{\alpha}$ . πόρι ἐκκρίσεως  $\bar{\alpha}$ . ἐγκώ-  
 μαθεῶν  $\bar{\alpha}$ . πόρι ἰορτῶν  $\bar{\alpha}$ . πόρι ἐντυχίας  $\bar{\alpha}$ .  
 πρί ἐνθυμημάτων. πρί ἐνρημάτων  $\bar{\alpha}$   $\beta$ . ἡδικῶν οχο-  
 λῶν  $\bar{\alpha}$ . ἡδικῶν χαρακτηρῶν  $\bar{\alpha}$ . πρί βορέως. πρί ἰσο-  
 ρίας

ρίας α. πρὶ κρίσεως συλλογισμῶν α. πρὶ κολα  
 κείας α. πρὶ θαλάττης α. πρὸς ἡσσανδρον  
 πρὶ βασιλείας α. πρὶ κωμωδίας α. μετεώ  
 ρων α. πρὶ λέξεως α. λόγων συναγωγὴ α.  
 λύσεις α. πρὶ μουσικῆς α β γ. πρὶ μέ  
 τρων α. μεγακλῆς α. πρὶ νόμων α. πρὶ  
 παραινόμων α. τῶν ξηνοκρατῶν συναγωγῆς α.  
 ὁμητικὸς α. πρὶ ὄρκου α. παραγγέλματα  
 ῥηρικῆς α. πρὶ πλούτου α. πρὶ πρητικῆς  
 α. προβλήματα πελτικὰ, ἡδικὰ, φυσικὰ, ἱερικὰ  
 α. προομιῶν α. προβλημάτων συναγωγῆς  
 α. πρὶ τῶν προβλημάτων φυσικῶν α. πρὶ  
 παραδείγματ' α. πρὶ προτίσεως καὶ διηγή  
 ματ' α. πρὶ πρητικῆς ἄλλο α. πρὶ τῶν σο  
 φῶν α. πρὶ συμβουλῆς α. πρὶ σοφισμῶν  
 α. πρὶ τέχνης ῥηρικῆς α. πρὶ τεχνῶν ῥη  
 ρικῶν εἶδη ιζ. πρὶ ὑποκρίσεως α. ὑπομνη  
 ματῶν ἀριστοτελικῶν ἢ θεοφρασίων α β γ Δ  
 ε ς. φυσικῶν δοξῶν α β γ Δ ε ς ζ η  
 θ ι ια ιβ ιγ ιδ ιε ις. φυσικῶν ὑπὸ γμῆς  
 α. πρὶ χερίτ' α. χαρακτηριστὶς ἡδικοί. πρὶ  
 ἰσότητος καὶ ἀληθοῦς α. τῶν πρὶ ῥ' θείου ἰσορ  
 ας α β γ Δ ε ς. πρὶ θεῶν α β γ, ἰσο  
 ρικῶν γεωμετρικῶν α β γ Δ. ὑπὸ γμῶν ἀρι  
 στοτέλους πρὶ ζώων φρονήσεως καὶ ἡθ' α. πε  
 ρὶ μείζοντ' καὶ ἐλάττοντ' α. πρὶ τῶν μουσι



διαβήκα  
θεοφράστου

κῶν ᾱ. περὶ τῆς θείας ἐνδουμονίας πρὸς τοῦ  
 θι ἀναδνημίας ᾱ. προτρεπτικὸς ᾱ. πῶς ἀρεῖς  
 αὐτὸν πρὸς οἰκίαν ὑπομνήματα ᾱ. πόρτι ῥύακθ  
 τοῖς ἐν σικελίᾳ ᾱ. περὶ τῶν ὁμολογούντων ᾱ. πε  
 ρὶ τῶν προβλημάτων φυσικῶν ᾱ. πίνοντες οἱ τρόφι  
 τοῖς ἐπίσασθαι ᾱ. περὶ τοῖς ἰσχυροῦς ᾱ β γ.  
 τὰ πρὸ τῶν τόπων ᾱ. πρὸς αἰαχύλοισιν ᾱ. ἀστρο  
 γικῆς ἰσορείας ᾱ β γ Δ ε ζ. ἀεθμητικῶν ἰ  
 σοειῶν περὶ αὐξήσεως ᾱ. ἀκίχαρθ ᾱ. περὶ δι  
 ημιτικῶν λόγων ᾱ. περὶ διαβολῆς ᾱ. ὑπὸ σολαι  
 αὐτῶν ἱερὸν ἀστυκρίον πφανία νηάνοισι. περὶ ἐνσεβεί  
 ας ᾱ. ἐνὶ αὐτῷ ᾱ. περὶ ημετέρων ᾱ β. περὶ οἰ  
 κείων λόγων ᾱ. περὶ παιδείων ἀγωγῆς ᾱ. ἄλλο  
 διαφορῶν ᾱ. περὶ παιδείας, ἢ περὶ ἀρετῶν, ἢ περὶ  
 σωφροσύνης ᾱ. προτρεπτικὸς ᾱ. περὶ ἀριθμῶν  
 ᾱ. ὁριστικὰ περὶ λέξεως συλλογισμῶν ᾱ. περὶ οὐ  
 ρανῶν ᾱ. πολιτικῶν ᾱ β. περὶ φύσεως. περὶ  
 ημετέρων. περὶ ζώων. ἀ γίνονται σίχων. ῥοαῦτα μ  
 ὅσοι καὶ ἱερὸν δὲ τὰ βιβλία. ἔντορον δ' αὐτῶν καὶ διαβή  
 κας ἔχουσιν ἐχέουσιν ἢ τῶν τρόπων. ἔσαι μὲν ἐν. ἐαὐ  
 δέ τι συμβῆ ταῦτα διατίθεμαι. τὰ μὲν οἰκίαν ὑπομ  
 νήματα πάντα μέλαινα καὶ παγκυκρίοντι τῆς ὑφ' οὗς λεί  
 οντθ. ἀπὸ δὲ τῶν παρ' ἱππαρχοῦ συμβεβλημένων  
 ταῦτά μοι βούλομαι γνέσθαι. τὰ περὶ τὸ μυστικόν  
 καὶ τὰς θεὰς συντελεσθῆναι. καὶ εἴ τι ἄλλο δύναι  
 ται περὶ αὐτὰς ὑπὸ χρησμῶν πρὸς τὸ ἡγήλιον.  
 ἔπειτα

ἔπειτα τῶν ἀεισοτέλων εἰκόνα τεθῆναι εἰς τὸν  
 ἱερὸν καὶ τὰ λοιπὰ ἀναθήματα, ὅσα πρότερον ἔπαυ-  
 χορ ἐν τῷ ἱερῷ. ἔτα τὸ σωΐδιον οἰκοδομηθῆναι τὸ  
 πρὸς τῷ μουσεῖῳ μὴ χεῖρον ἢ πρότερον. ἀναθε-  
 ναι δὲ καὶ αὐτὸ πίνακας ἐν οἷς αἱ τῆς γῆς περιόδοι  
 εἰσὶν εἰς τὴν χάριν σοῦ. ὑποκορυφῆναι δὲ καὶ  
 τὸν βωμὸν ὅπως ἔχει τὸ τέλειον καὶ τὸ ἑνοχημον.  
 βούλομαι δὲ καὶ τὴν νικημαχίαν εἰκόνα σωτελε-  
 θῆναι ἱστωρ. τὸ μὲν τῆς πλάσεως ἔχει πραξιτέλης.  
 τίδ' ἄλλο ἀνάλωμα ἀπὸ τούτου γινώσκω. σταθῆναι  
 δὲ ὅπου αὐτὸ Δοκῇ καὶ τοῖς τῶν ἄλλων ὑπὸ μελόντων  
 τῶν ἐν τῇ θλαθῇ γεγραμμένων. καὶ τὰ μὲν περὶ τὸ  
 ἱερὸν καὶ τὰ ἀναθήματα, ὅσα ἔχει τὸν τρόπον. τὸ  
 δὲ χωρίον τὸ ἐν σαγείοις ἡμῖν ὑπαρχόν, δίδωμι  
 καὶ χαλκῶν. τὰ δὲ βιβλία πάντα, νηλεῖ. τὸν δὲ κῆ-  
 πον καὶ τὸν περίπατον καὶ τὰς οἰκίας τὰς πρὸς  
 τῷ κήπῳ πάσας, δίδωμι τῶν γεγραμμένων φίλων  
 αἰ τοῖς βουλευμένοις συχολαζέειν καὶ συμπλοσ-  
 φεῖν ἐν αὐτῷ. ἐπειδὴ περὶ ὅδωκα τὸν αἰὶ πᾶσιν ἀν-  
 θρώποις ἐπιδοκῆν μὴτε θλαστροῦσι μὴτε θλα-  
 στρομένοις μηδ' ἑνός. ἀλλ' ὥς αὐτὸν ἱερὸν κοινὴν κεκτη-  
 μένοις, καὶ τὰ πρὸς ἀλλήλους οἰκείως καὶ φιλικῶς χρο-  
 μένοις ὥς περὶ προσῆγον καὶ δίδωμι. ἔσονται δὲ οἱ  
 κοινωνοῦντες, ἵππαρχος, νηλεὺς, στρατῶν, χαλκῶν,  
 δημόσιμος, δημαγὰς, χαλκοδότης, μέλανος, παν-  
 κρείων, νίκιππος. θλαστροὶ δὲ βουλευμένοι φιλοσοφῆν  
 αἰσο



ἀριστοτέλει τῷ μείδιου καὶ πυθαγόρει ὧν. καὶ με-  
 τέχειν τῷ τῷ. καὶ αὐτοὶ πᾶσιν ὑπὸ μέλειαν πρὶν  
 οὐαὶ αὐτῷ πρὸς βυτά τῷ, ὅπως ὅτι μάλισα πρὸς  
 χθὲ κατὰ φιλοσοφίαν. δάξαι δὲ καὶ ἡμᾶς ὅπως αὐ-  
 δοκῇ μάλισα ἀρμότιον εἶναι τοὺς κήρυ, μηδὲν περὶ  
 δογῶν πρὸς τὴν ταφὴν μήτε περὶ τὸ μνημῆιον πρὶ  
 οὐώτας. ὅπως δὲ σωεῖρηται μετὰ τὰ περὶ ἡμᾶς  
 συμβαίνοντα περὶ τὸ ἰδοῖον καὶ τὸ μνημῆιον καὶ τὸν κῆ-  
 ρον καὶ τὸν περίπατον θόρον πρὸς μὲν σωεπιδεῖ  
 οὐαὶ καὶ τὸν πρὸς πύλον εἶναι ἐπικουρῶντα αὐτῶν καὶ τὴν  
 τῷ ἄλλων ὑπὸ μέλειαν πρὸς μὲν τὸν καὶ πρὸς τὸν.  
 ὅτι δὲ λυσιτελείας ὑπὸ μελεῖσθαι αὐτῶν αὐτῶν ἔχοντας  
 ταῦτα. τὸν πρὸς πύλον δὲ καὶ θείωται πάλαι ἐλδύθροισ  
 οὐσι καὶ ἡμῖν πρὸς τὴν χρεῖαν παρδύχνησιν, εἰπ  
 πρὸς τὸν ἔχουσι παρδύ ἡμῶν καὶ εἰπ αὐτῶν ἐκτῶν,  
 καὶ ἂν νῦν παρδύ ἡμῶν αὐτῶν συντέταχτα διαχι-  
 λίας δραχμὰς, ἀσφαλῶς οἶμαι εἶναι αὐτῶν ἔπαφ-  
 χερν ταῦτα, καὶ δὲ πρὸς καὶ αὐτῶν διελέχθην με-  
 λαίπιν καὶ πανκρίοντι πλεοναίους, καὶ πάντα μοι  
 συγχετὴ τῶν. δίδωμι δ' αὐτῶν καὶ σωματάλλων  
 τῶν παιδίσκων. τῶν δὲ παίδων, μόλωνα μὲν,  
 κίμωνα, καὶ παρμυγόντα ἡδὲ ἐλδύθρου ἀφίη-  
 μι. μαίλω δὲ καὶ ἡγλῖαν παρμυγόντας ἔτη τέτ-  
 ταρα γὰρ τῷ κῆρῳ καὶ σωδογασαμὲν τῷ καὶ ἀνα-  
 μαρτητῷ γνομῇ τῷ, ἀφίημι ἐλδύθρου. τῷ δ'  
 ἐκκηματίων σκεδῶν ἀφιδύοντας τὸν πύλον ὅσα αὐ-  
 δοκῇ.

δουκὴ τοῖς ὠπλιμητοῦς καλῶς ἔχειν, τὰ λοιπὰ δὲ χρ  
 γυρίσαι. δίδωμι δὲ καὶ καρίωνα δημοσίῳ. δόνακα  
 δὲ νηλεῖ. ἑβριον δ' ἀποδόσθαι. δότω δ' ἵππαρχος  
 καλῶς τοιχοιλίας δραχμας. μέλαντα δὲ καὶ  
 παγκρέιοντα, εἰ μὴν μὴ ἰωρῶνιν ἵππαρχον καὶ ἡμῖν  
 πρόδορον χρεῖαν παρδοχίμνον, καὶ νῦν ἐν τοῖς ἰ  
 δίοις μάλα νουναγνητότα, προσεταξάμεν αὐτὸν μὲν  
 μελάντης καὶ παγκρέιοντης, δζαλγερ αὐτοῦ. ὡν  
 δὲ δὲ ὅτε ἐκείνοις ἰωρῶν ῥάδορον ὄντα (σωοικονομεῖν,  
 λυσιτελίσδορον τὲ αὐτοῖς ἑωρῶν μβανον εἶναι τε  
 ταγμένον τί λαβεῖν παρὰ ἵππαρχου, δότω ἵππαρ  
 χος μέλαντι καὶ παγκρέιοντι ἑκατόβω τάλαντον.  
 δίδοναι δ' ἵππαρχον καὶ τοῖς ὠπλιμητοῦς εἰς τὰ  
 ἀναλώματα τὰ ἐν τῇ θάλασσῃ γεγραμμένα καὶ εἰς  
 ἐκείνου καὶ τῶν τῶν διαπανημεῶν. διοικονομήσαντα  
 δὲ ταῦτα ἵππαρχον ἀπὸ πηλοῦ χθαι τῶν συμβολαί  
 ων τῶν πρὸς ἐμὲ πάντων. καὶ εἴπῃ ὡς τοῖς ἐμοῦ ὀνό  
 ματος συμβέβηκεν ἵππαρχος ἐν χαλκίδι, ἵππαρχ  
 ου ῥόδοις. ὠπλιμηταὶ δὲ ἔσωσαν τῶν ἐν τῇ θά  
 λασσῃ γεγραμμένων, ἵππαρχος, νηλεὺς, στρατῶν,  
 καλῶν, δημοσίμων, καλῶν δόξης, κτισταρχος.  
 αἱ θάλασσαι κένονται ἀντίγραφα τοῦ θεοφράστου δια  
 κτυλίω σεσημασμένα. μία μὲν παρὰ ἡγεσίᾳ ἵππαρχ  
 ου. μαρτυροῦν καλῶν πελαγεὺς, φιλόμηλος  
 ἰωνομενὺς, λύσανδρος ὑβαίης, φιλίωρ ἀλωπεκῆ  
 θεν. τῶν δ' ἐτόραν ἔχει Ὀλυμπιόδωρος. μαρτυροῦν

Η δ' οἱ



δι' οὐ αὐτοί. τὴν δ' ἐπόρην ἔλαβον ἀδείμαντο. ἀν-  
 πλώεγκε δὲ ἀνδροδρόμης ὁ ἰός. μαρτυροῦν ἀείμνη-  
 σθαι, κλεόβουλῳ, λυσίστρατῳ φίλων θάσι.  
 στρατὸν ἀνδροδρόμου λαμψακλῶς, θήσιππῳ θη-  
 σίππῳ ἐκ κερδαμίων. διοσηνοειδὴς διοनुσίῳ ὑπὸ κη-  
 φίσι. ὡς δὲ ἔχουσιν αὐτοὶ καὶ αἱ στρατῶναι. ἀκροῦσαι  
 δι' αὐτοὺς καὶ ἐρασίστρατον τὸν ἰατρόν. εἰσὶ δὲ οὐ λί-  
 γουσι καὶ αἱ ἑσ.

## ΣΤΡΑΤΩΝ

**Δ**ιδέξατο δ' αὐτοὺς τὴν σχολὴν, στρατὸν ἀνδρο-  
 δρόμου λαμψακλῶς. ὃ καὶ ἐν ταῖς στρατῶναις  
 ἐμνημόνευσεν. ἀνὴρ ἐλλογιμώτατος καὶ φυσικός  
 ὑπὸ κηθεὶς ἀπὸ τοῦ ὡς τὴν θεωρίαν ταύτην παρ' ὅντι  
 νοῦν ὑπὸ μελέσας στρατῶναις. ἀλλὰ καὶ καθε-  
 γήσας πρὸς μελέσας τοῦ φιλαδελφίου. καὶ ἔλαβε φη-  
 σὶ παρ' αὐτοὺς τὰ λαντα ὁ γδοκῶντα. σχολαρχεῖν  
 δὲ κατὰ φησιν ἀνδροδρόμῳ ἐν χρονοῖς ἡμέρας τῇ  
 τρίτῃ καὶ εἰκοστῇ καὶ ἡμέρας ὁλυμπιάδι, τῆς σχολ-  
 λῆς ἀφηγησάμενος ἐπὶ ὀκτωκαίδεκα. φέρεται δὲ  
 αὐτοὺς τὰ πρὸς ἀνδροδρόμου βιβλία. περὶ ἀγαθοῦ  
 γ. πρὸς θεῶν γ. πρὸς ἀρχῶν γ ἢ Δύο. πρὸς  
 βίωσιν. πρὸς ἐνδοξασίας. πρὸς βασιλείας φιλοσοφί-  
 ας. πρὸς ἀνδρείας. πρὸς τοῦ κενού. πρὸς τοῦ πνέον-  
 ματος. πρὸς φύσεως ἀνθρώπων. πρὸς ζωογονίας.  
 πρὸς μίξεως. πρὸς ὕπνου. πρὸς ἐν τῶν ἰσχυρίων. πρὸς ὅτι

ως. περὶ αἰσθήσεως. περὶ ἡδονῆς. περὶ χρωμάτων.  
 περὶ νόσων. περὶ κρείσεων. περὶ δυνάμεων. περὶ  
 τῶν μεταλλικῶν μηχανικῶν. περὶ λιμοῦ καὶ σφο-  
 τώσεων. περὶ κούφου καὶ βαρέθ. περὶ ἔνθουσιασ-  
 μού. περὶ χρόνου. περὶ τροφῆς καὶ αὐξήσεως. περὶ  
 τῶν ἀκρουσμένων ζώων. περὶ τῶν μυθολογουμένων  
 ζώων. περὶ αἰπῶν λύσις ἀκρουσμένων. τῶν πρὸ  
 οἴμα. περὶ τοῦ συμβεβηκότ. περὶ τοῦ ὄρου. περὶ  
 τοῦ μᾶλλον καὶ ἥττω. περὶ ἀδίκου. περὶ τοῦ πρὸ  
 τόρου καὶ ὑσόρου. ἐν ῥημάτων ἔλεγχος δύο. ὑπομνή-  
 ματα διαλέγεται. ὑπὸ σοφίας ἀρχή. Στρατῶν Ἀρ-  
 σινόη. ἐν πράξει. Τῶν φασίμ ὅτι γινώσκει λεωτέρῳ  
 ὡς ἀναισθήτως τελούται. καὶ ἔστιν ἡμῶν εἰς αὐ-  
 τῶν ὅπως ἔχον.

Λεωτέρως ἀνὴρ δὲ προσεχρήσατο χρησμοῖς  
 στρατῶνα εἶδεν φημί σοι λαμψανῶν.  
 λαμψανῶν ὅρ πρὶ ἔφυσεν, αἰ δὲ νόστοι παλαίω  
 θυήσκει λαθῶν, εἰ δὲ ἡδὲ θάνατος.

Γεγονάσι δὲ στρατῶν δὲ οὐκ ἔτι. πρῶτ. ἰσοκράτους  
 ἀκροατῆς. δὲ τῶν αὐτῶν εἶδος. τρίτ. ἰατρὸς  
 μαθητῆς ἐρασις. ὡς δὲ πινδὸς τρέφει. τέταρ-  
 τ. ἰσοκράτης, φιλόπαιδος ὁ πόρσεως τῶν ῥωμαίοις πρὸ  
 λεμησάντων γεγραφὸς πράξις. ἔκτ. πρὸς τῶν  
 γραμμάτων. ἑβδόμ. ἰατρὸς ἀρχαῖ. ὡς ἀριστοτέ-  
 λης φησὶν. ὀγδό. πρὸς παπτικὸς βιβλικῶς ἐν ἀλε-  
 ξανδρείᾳ. τοῦ δὲ ἐν φυσικῷ φόρον. ὁ δὲ ἀβήκαυ εἶδεν



ἔχουσαι ἄν τρώων. ταῦδε δὲ δὴ πᾶσι. καὶ πᾶσι  
 ὅσων τὰ μὲν οἰοῖται καταλείπειν πάντα λαμπυρίωνι,  
 καὶ ἀρκούσι λαῶ. ἀπὸ τοῦ ἀθλῶσιν μοι ἔσονται  
 ἀργυρίαι, πρῶτον μὲν οἱ ὑπὸ μεληταὶ τὰ πόδια τῶν ἐκ  
 φορᾶν ὑπὸ μεληθήτωσαν, καὶ ὅσας μὲν τῶν ἐκφορᾶν  
 μὲν μήτε πόριδος ποιοῦντος μήτ' ἀνελδύβε  
 ρον. ὑπὸ μεληταὶ δὲ ἔσονται τῶν κατὰ τῶν δὴ θήκων  
 οἰδε, ὀλυμπιακός, ἀρκεσίδης, μνησιγῆνης, ἱπποκρά  
 της, ὑπὸ κρατῆς, Γοργύλῳ, Διοκλῆς, Λύκων, Ἀδάνης.  
 καταλείπειν δὲ, τῶν μὲν δὴ τελευτῶν Λύκωνι. ἐπειδὴ  
 τῶν ἄλλων, οἱ μὲν εἰσι πρὸς βύττοισι. οἱ δὲ ἀσχοιοῖ. καὶ  
 λῶς δ' αὖ ποιοῖν καὶ οἱ λοιποὶ συγκατασκευάζου  
 τος ἔσονται. καταλείπειν δ' αὖτε καὶ τὰ βιβλία πάν  
 τα πλὴν ὧν αὐτὸ γράφαμεν, καὶ τὰ σκεύη πάν  
 τα κατὰ τὸ σπασίον, καὶ τὰ σφόδρα, καὶ τὰ πρὸς  
 εἰα. δότωσαν δὲ οἱ ὑπὸ μεληταὶ ὑπὸ κρατῆς πέντα  
 κροσίας δραχμάς. καὶ τῶν παιδῶν ἕνα ὃν αὖ δοκῇ.  
 ἀρκούσι λαῶ δὲ πρῶτον μὲν λαμπυρίων καὶ ἀρκού  
 λαῶ, ἀρκούτωσαν τὰς σωθῆκας ἅς ἔστι Δαδῖπ  
 πῶ ἔσονται ἱεραῖς. καὶ μὲν δὲ φελέτω μήτε λαμπυ  
 ρίωνι μήτε τῶν λαμπυρίων ὑπὸ κληρονόμοις. ἀλλ' αἱ  
 πηλὰ χθὼ πάντες τοὺς συμβολαῖς. δότωσαν δ' αὖ  
 τε καὶ οἱ ὑπὸ μεληταὶ ἀργυρίαι πέντακροσίας δρα  
 χμάς. καὶ τῶν παιδῶν ἕνα, ὃν αὖ δοκῇ ἀρκού  
 λαῶ, ὅπως αὖ πηλὰ συμπεπνηκὼς ἡμῖν καὶ πα  
 ρὸς χημῖν χρεῖας ἔχῃ βίον ἰσχυρὸν καὶ ἐνοχλήμων  
 ἢ ἀφίη

ἦ. ἀφίημι δὲ καὶ Διόφαντον ἐλδύβορον, καὶ Δουκλίαν,  
καὶ ἄβουον. σιμίαν δὲ ἀφ' οὗ δίδωμι ἀρνυδύιλα. ἀφίημι  
δὲ καὶ Δρόμωνα ἐλδύβορον. ἐπειδὴ δὲ παραγῆνι  
ται ἀρνυδύιλα. λογισάτω ἱεραὶ μετ' Ὀλυμπί-  
χου καὶ ἐπικράτους καὶ τῶν ἄλλων ἐπιμελητῶν τὸ  
γεγονός ἀνάλωμα εἰς τὴν ἐκφορὰν, καὶ τὰ ἄλλα τὰ  
νομιζόμενα. τὸ δὲ περὶ τὸν ἀργύριον νομισάτω ἀρνε-  
σίλα. παρὰ Ὀλυμπίχου, μηδὲρ ἐνοχλῶν αὐτῶν  
κατὰ τοῦ καιροῦ καὶ τοῦ χρόνου. ἀράτω δὲ καὶ  
τὰς σωθῆντας ἀρνυδύιλα, ὥς ἔθετο στρατῶν πρὸς  
Ὀλυμπίχου καὶ ἀμεινίαν τὰς κειμένας παρὰ φιλο-  
κράτει πταμένους. τὰ δὲ πόρι τὸ μνημεῖον τρησάτω  
σαρὺς αὐτῶν δυνὴ ἀρνυδύιλα καὶ Ὀλυμπίχου καὶ λύ-  
κων. καὶ αἰδέμενοι εἰσὶν αἱ φερόμεναι αὐτῶν δυνεῖς  
καὶ κατὰ πρὸς σωθῆντας καὶ ἀρίστους ὁ κείτω. αὐτὸς  
δὲ ὁ στρατῶν αὐτῶν γέγονε κατὰ πόρ καὶ αὐτὸς δὲ δύνει  
ται πολλὴς τῇ ἀφ' οὗ χύς ἀξιῶ, δυνεῖς τας ἐν παν-  
τὶ λόγων εἶδει. καὶ μάλιστα γὰρ ἐν τῷ καλουμένῳ  
φυσικῷ, ὁ πόρ εἶδω ἀρχαιότοτον τε καὶ σπου-  
δαίότοτον.

## ΛΥΚΩΝ

Τοῦτον διεδέξατο λύνων ἀσυναίαντ. τρωα-  
δεὺς φρασικός αὐτῶν, καὶ πόρι παίδων ἀγωγῆς  
ἄκρως σωτεταγμέν. ἔφασκε γὰρ δὴ, παρερεῖν  
χθαι τοῖς παισὶ τὴν αἰδῶ καὶ φιλοτιμίαν, ὥς τοῖς  
ἵπποις μύωπα καὶ χαλινόρ. τὸ δ' ἐκφραστικὸν αὐτῶν  
Η 3 καὶ



καὶ ποδὶ γέγονός ἐν τῇ ἐρμινείᾳ φαίνεται καὶ δαδὲ.  
 φησὶ γὰρ εἶδεν ἔμ τρέπον ὡδὶ παρθένος πνιχρᾶς.  
 βαρὺ γὰρ φορτίον πατεῖ κέρη δὲ παύειν προικὸς  
 ἐκτρέχουσα ἔμ ἀκμαῖον ᾧ ἡλικίας καιρόν. διὸ Δὴ  
 καὶ φασὶν ἀντίφονον ἐπ' αὐτὸ εἰπεῖν, ὥς ἐκ λῦ ὥς  
 πόρ μήλου τλῶ ἐνωδίαν καὶ χέριμ ἄλλοθι πρ μετε  
 νεγχεῖν. ἀλλ' ἐπ' αὐτὸ τοῦ ἀνθρώπου, καὶ δα πόρ ὡδὶ  
 τοῦ δινύδου, τῶν λεγομένων ἐκαστον ἴδιαι θεωρεῖσθαι.  
 εἶδεν δὲ, ὅτι ἐν μὲν τῷ λέγειν γλυκύτατ' ὡ. παρὸ  
 καὶ πνις ἢ γάμμα αὐτὸ τῷ ὀνόματι προσετίθει  
 σαρ. ἐν δὲ τῷ γράφειν ἀνόμοι' αὐτῷ. ἀμίλει γὰρ  
 καὶ ὡδὶ τῶν μαγινωσκού τῶν, ἐπειδὴ μὴ ἔμαθον ὅτε  
 καιρὸς, καὶ ἐν χερσίνων εἶδεν ἐκκαλιέκτει ἔμ τρέ-  
 πον. ἔλεγον αὐτῷ κατηφορεῖν, ἀδωαίτω μινύοντας  
 ἐν χῆ μετανοίαν ἀργίας ἀδιόρθωτον. τὸς τε βουλο-  
 ομένους ὀρθῶς, δὲ πίπτειν ἔφασκε τῷ λογισμῷ,  
 οἰοῦναι σρεβλῶ κακόνι βασανίζοντας ἐνθεῖαν φύσιν, ἢ  
 πρόσωπον ὕδατι κλυδατρυμνίῳ ἢ κατόπτρῳ δει-  
 σραμμένῳ. καὶ ὡδὶ μὲν ἔμ ἐν τῆς ἀγορᾶς σίφανον  
 πολλοὺς ἀπικνῆαι. ὡδὶ δὲ ἔμ ὀλυμπιασιν ἢ εἰδέναι.  
 πολλὰς τε πολλὰ συμβουλίδους ἀθληταῖοις τὰ  
 μέγιστα αὐτοῦ ὠφέλησεν. λῦ δὲ καὶ καδαρώτατ'  
 τλῶ πολλῶν, ὥς ἀν' αὐτοῖς βλήτω χεῖρσιν μαλακότητι  
 ἱματίων, καὶ δα πόρ φησὶν ἐρμινεῖ. ἀλλὰ καὶ γυ-  
 μνασικώτατ' ἐγίνετο καὶ ἐνέκτης ἢ σῶμα, τλῶ  
 τε πᾶσαν χάσιν ἀθλητικῶν ὑπὸ φαίνων, ὠρθλαδί,

ας ἐμπιπὼς ὦρ, καὶ δάφνησιν αὐτῶν ὁ καρύσιος.  
 ὅτε δ' αὖτε καὶ παλαῖσαι λέγεται τὰ τε ἐν τῇ πα-  
 τριδὶ ἱλεια, ἐσφαιρίζου. ὡς δ' ἐκ ἄλλου τίς μὲν φίλος  
 τοῦ ποδῶν ἐνυμνῇ καὶ ἀταλῶν. οἱ καὶ πλείους ἐπεχρη-  
 σάμενοι αὐτῶν. ἐπειράθη δ' αὐτῶν οὐκ εἶναι καὶ ἀντιόχους,  
 ἀλλ' ἐκ ἐτυχῶν. οὕτω δὲ μὲν ἐχθρὸς ἰδρυμένω ἔδει πε-  
 ριπατητικῶν, ὡς μόνον μὴ ἀπανταῖν πρὸς αὐτῶν εἰς  
 τὴν ἐπιστολὴν ἡμῶν, ποδῶν ἢς ἐν τῷ ἀριστοκράτει βίῳ  
 διαλέγμεθα. ἀφηγήσατο δὲ τῷ σχολῆς ἐπὶ τέτταρα  
 πρὸς τοὺς τετταράκοντα, στρατῶν αὐτῶν ἐν ταῖς  
 διαθήκαις κατελιπόντων καὶ τὴν ἐβδόμην καὶ εἰ-  
 κησὶν καὶ ἐκαστὴν Ὀλυμπιαδῶν. ὅ μὲν ἀλλὰ καὶ  
 πανθοῖδον δέκονσε τῷ διαλεκτικῷ. ἐτελεύτησε δὲ  
 γεγονὼς ἔτι τέταρτον καὶ ἐβδόμηκεν, νόσῳ ποι-  
 διαγικῇ κατετρημένος. καὶ ἔτι ἡμῶν εἰς αὐτόν.  
 ὅ μὲν αὖτε, ὅ δὲ λυκῶνα παρήσομεν, ὅτι προδιαλγῆς  
 κατὰ τὸν. δαυμάζω δ' αὖτε μάλιστα δ' ἐγώ.  
 τὴν οὕτως αἰδέομαι μακρὴν ὁδὸν, ἀνὰ πῆλιν ὁ πρῶτος  
 ἀλλοτρίοις βαδίσεις, ἴδραμε νυκτὶ μὴ.  
 γόνουσι δὲ καὶ ἄλλοι λυκῶνδ. πρῶτον πυθαγορί-  
 κος. δεύτερον αὐτὸς ἔτι. τρίτον ἐπὶ πρὶν πρὶν.  
 τέταρτον ὑπὸ γραμμᾶν πρὶν. τὸ δὲ φιλοσόφου  
 καὶ διαθήκαις ἐνετύχοντα ταῖς δὲ. Τὰ δὲ διατί-  
 θεμαι ποδῶν τῶν κατ' ἐμαυτῶν, ἐὰν μὴ δυνάμει τὴν διαθήκην  
 ἀρξώμεθα ταύτην ἐπεγεγνῆναι. τὰ μὲν ἐν οἴκῳ πάντων αὐτῶν  
 τα Δίδωμι τοῖς ἀδελφοῖς ἀσυναίκετι, καὶ λυ-



κωνι. καὶ οἱ μὲν δέειν ἄρ' ὅτι τῶν ὅσα κῆρα κίχρημα  
 ἀθλῶνσι παρὰ πύθ' ἔχωρ ἢ ἐκπεπραχώς. καὶ ἂν  
 εἰς τὴν ἐκφορὰν ἀναλωθῇ, καὶ εἰς τὰλλα τὰ νομιζό-  
 μιν. τὰ δὲ ἐν ἅσει καὶ ἐν αἰγίνῃ δίδωμι λύκωνι, δῖα  
 καὶ τὸ κυομα φέρειν ἡμῶν καὶ σωδρατε τειφέναι  
 πλείω χρόνον ἀφ' ἑσῶς πάνυ, καὶ δὲ πόρ δίκαιον ἴν  
 ἔρ' ἡοῦ τάξι' ὅσ' ἡκνέτα. ἔρ' δὲ πόρι πατρὶ κῆρα  
 λείπω τῶν γνωρίμων ῥίς βούλων, βούλωνι, καλ-  
 λίνω, ἀρίσωνι, ἀμφίωνι, λύκωνι, πύθωνι, ἀριστομάχῳ,  
 ἡρακλείῳ, λύκωνι τῷ ἀδελφῷ. προσήκαδωσαρ  
 δι' αὐτῇ δ' ἂν ἔπολαμβανέωσι δαμνέειν ὡδ' τὰ  
 πᾶν γματ', καὶ σωίξειν μάλιστα δωκήσατ'. συγ-  
 κῆρα σκῶναζέτωσαρ δὲ καὶ οἱ λοιπὲν γνώριμοι καί  
 μου καὶ τὰ τόπου χάρι. πόρι δὲ τῆς ἐκφορᾶς καὶ  
 κῆρα σῶς ἐπιμεληθήτωσαρ βούλων καὶ καλλίν'  
 μὲν τῶν σκῶν ὅπως μήτ' ἀνελούθῃ γήνηται  
 μήτε πόρι δ' ὅγ'. τῶν δὲ ἐν αἰγίνῃ μοι γνομένων  
 μὲν μὲν τὴν ἐμὴν ἀπ' ἡλυσιν κῆρα χωρησάτω λύ-  
 κων ῥίς νεοσίσοις εἰς ἐλαιοχερσίαν, ὅπως καί μου  
 καὶ τὰ πᾶν σῶντ' ἐμὲ μνήμη γήνηται, δῖα τ' ἡρε-  
 ας αὐτῇ ἢ προσήκουσα. καὶ ἀνδραγῆτα ἡμῶν ἀναθέ-  
 τω. ἔρ' δὲ τότ' ὅπως ἀρμότῃ ἢ τὰ σάσεως ἐπιβλε-  
 ψάτω καὶ συμπραγματῶσθ' ὁφάντ' καὶ ἡρα-  
 κλείδης δημητρίδ. ἄρ' δὲ τῶν ἐν ἅσει, λύκων ἀρ-  
 δότω πᾶσι παρ' ὧν ἂν προείληφα μὲν τὴν ἀρδὴ μὲν  
 ἐν τὴν ἐκείνου, περακτολυθοῦσι δὲ βούλων καὶ καλ-  
 λίν'

λῦθ, καὶ ἃ ἂν εἰς τῶν ἐκφορᾶν ἀναλωθῇ, καὶ τὰ ἄλ  
 λα τὰ νομιζόμενα. νομισάτω δὲ ταῦτα ἅρ' τῷ ᾧ  
 δοκῶ κρινῆναι κατὰ λειπόμενων ἀμφοτέρους ἑω' ἐμοῦ.  
 τιμησάτω δὲ καὶ σὺ ἰατρὸς πασίθεμις καὶ μεδί-  
 αν, ἀξίους ὄντας, καὶ δὲ τῶν ὑπὲρ μέλειαν τῶν ποδῶν  
 ἐμῶν, καὶ τῶν τέχνων, καὶ μείζονθ' ἐπὶ τιμῆς. δίδωμι  
 μὲ δὲ τοῦ καλίνου παιδίου θεικλείων ρεῦγθ, καὶ  
 τῇ γυναικὶ αὐτοῦ ῥοισκῶν ρεῦγθ, φιλοτάπεινα, ἀμ-  
 φότερον, πόρισμα, προσκεφαλαια δύο τὰ βέλ-  
 πια τῷ κατὰ λειπόμενων. ὥς ἂν ἐφ' ὅσον ἂν ἦκει  
 πρὸς τιμὴν καὶ τῶν φανῶμεν μὴ ἀμνημονεύον-  
 τας. ποδὶ δὲ τῷ θόρακός σου τῷ ἐμαυτὸν οὕτως ἀξί-  
 ω. διημετριῶ μὲν ἐλδύθωρ πάλαι ὅντι ἀφίημι τὰ  
 λύτρα. καὶ δίδωμι πέντε μνᾶς, καὶ ἱματισμὸν καὶ χι-  
 τῶνα. ἵνα πρὸς πεπωνηκὸς μετ' ἐμοῦ βίον ἐνοχί-  
 μονα ἔχη. κείτωνι δὲ χαλκηδονίῳ καὶ τῶν τὰ λύ-  
 τρα ἀφίημι. καὶ δίδωμι τέσσαρας μνᾶς. καὶ τὸν μι-  
 κρόν ἀφίημι ἐλδύθωρ. καὶ θρεψάτω λύκων αὐτόν.  
 καὶ παιδίσκᾶν αὐτὸν τοῦ νῦν χρόνου ἐξ' ἐτὶ. καὶ χάρι-  
 τα ἀφίημι ἐλδύθωρ, καὶ θρεψάτω λύκων αὐτόν.  
 καὶ δύο μνᾶς αὐτῷ δίδωμι. καὶ τὰ ἐμὰ βιβλία τὰ  
 ἀνεγνωσμένα. τὰ δ' ἀνέκδοτα καλίνου. ὅπως ὑπὲρ  
 λῶς αὐτὰ ἐκδῶ. δίδωμι δὲ καὶ σύρω ἐλδύθωρ ὅντι  
 τέσσαρας μνᾶς. καὶ τῶν μίλων δώσαν δίδωμι. καὶ εἰ-  
 πι μοι ὀφείλει ἀφίημι αὐτόν. καὶ ἱλαρὰ πέντε μνᾶς  
 καὶ ἀμφότερον, καὶ δύο προσκεφαλαια καὶ πόρι-  
 σμα



σρωμα καὶ κλίνῳ λίω ἂν βούληται. ἀφίημι δὲ ἔλδν  
 θόραν καὶ τίω τοι μικροῦ μητόρα, καὶ νοήμονα καὶ  
 δίωνα, καὶ θέωνα, καὶ εὐφρανόρα, καὶ ἱρμείαν. καὶ ἀ-  
 γαλθωνα Δύο ἔτη παραμείναντα ἀφείδαι ἑλδύθει-  
 ρον, καὶ σῶ φορεαφόρτσ, ὠφελίωνα καὶ πρσιδώνιον  
 τε Παρα ἔτη παραμείναντας. δίδωμι δὲ Δημητρίω  
 καὶ κείτῳ καὶ σύρω κλίνῳ ἱγῶσ. καὶ σρώματα  
 τῶν ἡσταλειπρμγῶν, ἃ ἂν φαίνηται λύκῳ καὶ  
 λῶς ἔχει. ταῦτα ἔσω αὐτῷς ἀκρδεῖξασιν ὁρθῶς ἐφ'  
 ὧν ἱγῶσοι τεταγμγῶι εἰσί. πόρι δὲ τῇ ταφῆς ἐάν-  
 τε αὐτοῖς βούληται λύκῳ δάπτειν ἐάν τε ἔν' οἶκῳ,  
 οὕτω πρίπτω. Πέπεισμαι γὰρ αὐτῶν ἔδερ ἥτορ ἐμοῦ  
 σωραῦν ἢ ἔνοχημον. ταῦτα δὲ πάντα διονομήσαν  
 πκυρία ἔσω ἢ δόσις τῶν ἐν ταῦτα. μαῖτυρδ, καλῶν  
 νῦν ἱρμιονεύς. ἀρίσω καὶ εὐφρόνι παλαιούς.  
 οὕτω μγῶρι αὐτοῖς σωετῶς τὰ πάντα πλάτρυτι,  
 τὰ τε πόρι παιδείαν καὶ πάντας λόγους, οὐδὲν  
 ἥττον καὶ τὰ τῶν θλαθνητῶν τρόπον πνὰ καὶ σφόδρα  
 διονομητῶς τε καὶ ὑπὸ μελῶς ἴοχει, ὥς τε καὶ ταῦτα  
 δα ζηλωτοῦ.

## ΔΗΜΗΤΡΙΟΣ

ΔΗΜΗΤΡΙΟΣ φαροσρωτου φαληρεὺς, ἔτῳ ἦν  
 κρουσε μὲν θεοφραστει. Δημησφῶν δὲ παρὰ ἀθη-  
 ναίοις τῆς πόλεως ἐξηγήσατο ἔτη δέκα, καὶ εἰκόνων  
 ὑξιώθη χαλκῶν, ἐξήκοντα πρὸς ταῖς τετρακοσίαις.  
 ὧν

ὧρ αὖ πλείους ἐφ' ἵππων ἦσαν καὶ ἀρμαλὶν καὶ συ-  
 νωρίδιον, συντελεσθεῖσαι ἣν ἔδε τριακοσίαις ἡμέ-  
 ραις. τοῦτο γὰρ ἐπὶ πρὸς δαδὴν ἀφ' ἑαυτῶν δι' αὐτὸν τῇ πε-  
 λιτείας φησὶ Δημήτριον ὁ μάγνης ἣν τοῖς ὁμο-  
 νύμοις, ὅπως φυγὼν ἀλέξανδρον εἰς ἀθλίας ἦεν  
 ἀρπαλόν. πρὸς δὲ καὶ ἡμίση τῇ πατρὶδι ἰσο-  
 λιτοῦσα. καὶ γὰρ προσόδοις καὶ ἡτασκούαις  
 ἠύξησε τὴν πόλιν καὶ πόρ οὐκ ἐν γένει ὦρ. ὡς γὰρ ἐκ  
 τῆς κόνωνος οἰκίας, ὡς φαβωρίον ἣν πρῶτον τῶν  
 ἀρχμνημονοματῶν φησὶν. ἀλλὰ ἄσῃ καὶ ἐν γένει  
 σωώκει λαμεία τῇ ἐρωμένη, ἡ δὲ πόρ ὁ αὐτὸς ἣν  
 πρῶτον φασὶν. ἀλλὰ καὶ ἔπειτα κλίωνος πεπονηθῆναι  
 ἣν ἔδε Δουτόριον ἰσορεῖ. Δίδυμον δὲ ἣν συμποσια-  
 κος, καὶ χαλκὸν βλέφαρον, καὶ λαμπετὸν χαλκόν  
 οὐκ αὐτὸν φησὶν ἀπὸ πινυταίρας. λέγεται δὲ  
 ἀποβαλόντα αὐτὸν τὰς ὀφθαλμοὺς ἣν ἀλεξανδρεῖα κρι-  
 μίσαται ἀνδρὶ παρὰ τοῦ σαρωπιδίου. ὅθεν καὶ  
 οὗτοι παιᾶνας ποιῆσαι οὗτοι μέχρι νῦν ἀδομένοντες.  
 σφόδρα δὲ λαμπρὸς ὦρ παρὰ τοῖς ἀθληταῖς, ὅ-  
 μως ἐπὶ δευτέρῳ καὶ αὐτὸς ἔπειτα τὰ πάντα διε-  
 δίουτο φθόνου. ἐπιβουλεύσεις γὰρ ἔπειτα τινῶν δι-  
 κίων θανάτου οὐ παρὼν ὥφλιν. οὐ μὲν ἐκνεύσαντες  
 τοῦ σώματος αὐτοῦ. ἀλλὰ τὸν ἴον ἀπήνυγον εἰς  
 τὸν χαλκόν, ἡτασάσαντες αὐτὸν τὰς εἰκονάς.  
 καὶ τὰς μὲν, ἀκρόμαχοι. τὰς δὲ, βυθίσαντες. τὰς  
 δὲ, ἡτακτόντες εἰς ἀμίδας. λέγεται γὰρ καὶ





δὲ ἄλλο ἢ ὅπ' φίλῳ ἢ αὐτῷ. ἀλλ' αὐτῶν παρρησί-  
 ας τελευτῶν ὁ ἀνελπίος δὴμητρεῖς. πλήθει δὲ βι-  
 βλίω καὶ ἀριθμῷ σίχων σχεδὸν ἅπαντας παρελ-  
 λακε σὺ καὶ αὐτῶν πομπητικῶν, ἐπαίδου,  
 τῶν καὶ πλούτειας παρ' οὐτινοῦ. ὧν ὅστις τὰ  
 μὲν ἰσοειχῶ. τὰ δὲ, πλιτικῶ. τὰ δὲ, πομπητικῶ. τὰ  
 δὲ, ξηρητικῶ. δὴμητρεῖς τὲ πρὸς βεῶν. ἀλλὰ μὲν  
 καὶ λόγων αἰσωπείων συναγωγὰς ἔ' ἄλλα πλείω. βιβλία  
 ἔστι δὲ τὰ πομπητικῶ ἀθλῶσι νομοθεσίας  $\alpha \beta \gamma \Delta$  αὐτῶ  
 ε. πομπητικῶ ἀθλῶσι πλιτικῶ  $\alpha \beta$ . πομπητικῶ  
 γίας  $\alpha \beta$ . πομπητικῶ πλιτικῶ  $\alpha \beta$ . πομπητικῶ  
 νόμων  $\alpha$ . πομπητικῶ ξηρητικῶ  $\alpha \beta$ . στρατηγικῶν  $\alpha \beta$ . πε-  
 ρὶ ἰλιωδῶν  $\alpha \beta$ . πομπητικῶ νομοθεσίας  $\alpha \beta \gamma \Delta$ .  
 πομπητικῶ  $\alpha$ . ἰρωτικῶ  $\alpha$ . φαίδωνδας  $\alpha$ .  
 μαίδων  $\alpha$ . κλίων  $\alpha$ . σωκρατικῶ  $\alpha$ . ἀριστόμα-  
 χῶ  $\alpha$ . ἀρταξόρξης  $\alpha$ . ὁμηρικῶ  $\alpha$ . ἀρτεσί-  
 δης  $\alpha$ . προτρεπτικῶ  $\alpha$ . ἑωδῶ τῆς πλιτικῶ  
 $\alpha$ . πομπητικῶ Δειχετίας  $\alpha$ . πομπητικῶ τῶν ἰωνῶν  $\alpha$ .  
 πρὸς βουτικῶ  $\alpha$ . πομπητικῶ πίσεως  $\alpha$ . πομπητικῶ  
 τῶν  $\alpha$ . πομπητικῶ τύχης  $\alpha$ . πομπητικῶ μεγαλο-  
 τυχίας  $\alpha$ . πομπητικῶ γαμου  $\alpha$ . πομπητικῶ τοῦ δοκού  $\alpha$ . πομπητικῶ  
 νῆς  $\alpha$ . πομπητικῶ νόμων  $\alpha$ . πομπητικῶ ὑπὸ τοῦ δολοφῶντος  $\alpha$ .  
 πομπητικῶ χειρῶ  $\alpha$ . δονούσι  $\alpha$ . χαλκιδικῶ  $\alpha$ .  
 ἀθλῶσι καὶ κατὰ δόμην  $\alpha$ . πομπητικῶ ἀντιφάνους  $\alpha$ .  
 προοίμιον ἰσοειχῶν  $\alpha$ . ὑπὸ τοῦ αἰ  $\alpha$ . ἐκκλησιᾶς  
 νορῶ  $\alpha$ . πομπητικῶ γήρας  $\alpha$ . δίκαια  $\alpha$ . αἰσωπεί



ωρ ἁ. χρεῖωρ ἁ. χαρακτηρ δὲ φιλόσοφος, ἐν  
 γνῶν ἡγεμονικῇ καὶ δυνάμει κεκραμμένον. οὗτο δὲ ἀν-  
 κούσας ὅτι τὰς εἰκόνας αὐτοῦ κατέστρεψαν ἀβλυαῖ  
 ἀκροθιγμάται, ἀλλ' ὅτι τὴν ἀρετὴν ἔφη Διὶ ὡς ἐκείνας ἀνέστησαν.  
 ἔλεγε μικρόν ἐναι μόρον τὰς ὁφρῦς. ὅλω γοῦν ὡς  
 σκηπῆσαι δυνάσθαι ἴσθ' βίω. ὅ μόνον ἔρ' πλοῦτον  
 ἔφη τυφλόν, ἀλλὰ καὶ τὴν ὁδὴν γούσσειν αὐτὸν τύχῃ.  
 ὅσοι γὰρ πλείω δυνάσθαι σίδηρον, ῥοσῦτον γὰρ πρὸς  
 τείαις ἰσχύει λόγον. ἰδὼν ποτε νεανίσκον ἄσωτον,  
 ἰδὼν ἔφη τετραγώνον ἱερμῆς ἔχωρ σύμα, κηλίν-  
 αν, αἰδοῖον, πώγωνα. τῶν τε τυφωμένων ἀνδρῶν ἔφη,  
 ἢ μὲν ὕψος δειρὸν ποταμῶν, ἢ δὲ φρόνημα κατὰ λι-  
 πείν. σὺ νῦν ἔφη δειρὸν ὡς μὲν τῇ δικίᾳ σὺ γο-  
 νεῖς αἰδεῖσθαι. γὰρ δὲ ταῖς ὁδοῖς σὺ ἀπαντῶντας. γὰρ  
 δὲ ταῖς ἱερμῆαις ἑαυτὸς. σὺ φίλους ὡς μὲν τὰ ἀ-  
 γαθὰ παρακαλουμένους ἀπικνεῖς. ὡς δὲ τὰς συμ-  
 φορὰς αὐτῶν τῶν. ῥοσῦτα καὶ εἰς ἑῶν ἀναφορέ-  
 οντα δοκεῖ. γέγονασι δὲ Δημήτριοι ἀξιόλογοι εἴησι.  
 πρῶτον καρχηδόνιον ἔκτισε, καὶ θρασυμάχου  
 πρὸς βύτον. δούτον αὐτὸς ἔκτισε. τρίτον  
 βυζάντιον πόλεως πατρίδος. τέταρτον καλούμε-  
 νον γραμικὸς καὶ σαφὲς διηγήσασθαι. ὡς δὲ καὶ ὁ  
 αὐτὸς ζωγράφος. πέμπτον ἀσπινθίον, μαθη-  
 τὴς ἀκκλωνίου τοῦ σολέως. ἕκτον κελανπανὸς ὁ  
 γεγραφὼς πρὸς ἀσίας καὶ ἐνρώπης εἴησι βίβλους.  
 ἑβδόμην βυζάντιον, γὰρ τεισκαίδεκα βιβλίους γε-  
 γραφὼς

γραφὸς τῷ γαλατῶ διαβασίῃ δι' ἐνρώπης εἰς ἀ-  
 σίαν. καὶ ἐν ἄλλοις οὕτως τὰ πόδι αὐτόχρον καὶ ὡρ-  
 λεμαῖον καὶ τῷ λιβύης ἐπ' αὐτῶν διοίκησιμ. ὅγ-  
 δου ὁ Διατείλας ἐν ἀλδξανδρείᾳ σοφιστής, τέ-  
 χνας γεγραφὸς ἐντριμῶς. γνάτῳ ἀδραμυτινὸς  
 γραμματικὸς ὑπὸ κληθεὶς ἱξίωρ δὲ ἄδικοῦσαι π-  
 δουεῖν πόρι τῷ ἡσαν. δέχεατῳ κυρτωαῖῳ γραμ-  
 ματικὸς. ὁ ὑπὸ κληθεὶς σωμνῳ αὐτῆς ἀξιόλογῳ.  
 ἐνδύεατῳ σκήψιῳ, πλούσιῳ, καὶ ἐν γῆνις αὐ-  
 θρωπῳ καὶ φιλόλογῳ ἀκρως. ἐτῳ καὶ μητρο-  
 δωρον προεβίβασε τῷ κελίτῳ. δωδέκατος γραμ-  
 ματικὸς ἐρυθραῖῳ, κελιγγραφεθεὶς ἐν τῇ μινῳ.  
 τρισκαιδέκατῳ βιβιωὸς διφύλου τοῦ σωῖνοῦ ἡός.  
 μαθητῆς δὲ παναιτίῃ τοῦ ῥοδίῃ. τεσσαρδκαιδέ-  
 κατῳ ῥήτωρ σμυρναῖῳ. καὶ ἑνὶ μὲν λογικῷ. κελ-  
 ηταὶ δὲ πρῶτῳ ἀρχαίαν κωμωδίαν πεπρηνῶς.  
 Δούτορῳ ἐπὶ ὡρ κρητῆς. ἡ μόνῃ σώζεται πρὸς  
 τοῦ φθονοῦ τοῦ ἐρημεγῆ τῷδε.  
 ῥωὸν ἀπμήσαντῳ ἀκροδύμνον κρητῆσι.  
 καὶ κρητῳ ἐπὶ τῷ μβοιο καὶ ἀπνόου εἰδιώλοιο  
 ἄσφα νῆκῳ ἐπὶ ἡλθῶν, ἔειμ δ' ἐξήσαρ λαός.  
 τρίτῳ παρσικὸς σατυρογραφῳ. τέταρτῳ ἰωμ-  
 βου γεγραφὸς, πικρὸς αὐτῆς. πέμπτῳ ἀνδριανῶν  
 κρητῆς, ἡ μέμνηται κρητῆς. ἑκτῳ ἐρυθραῖῳ, κρη-  
 λογραφῳ αὐθρωπῳ, καὶ ἰσορικῶ καὶ ἐντριμῶ πε-  
 κρητῆς βιβλία.

Ἡρα,



συγγράμμα-  
τα αὐτοῦ

ΗΡΑΚΛΕΪΔΗΣ ἐνθύφρου, ἡρακλείωτις τῷ γένει  
 τῷ, ἀνὴρ πολύσι. ἀθλῶνσι δὲ παρέβαλε πρῶ-  
 τῳ μὲν ἀποδύσει. ἀλλὰ καὶ τῷ πυθαγορείῳ διή-  
 κρουσε καὶ τὰ πλεονάζοντα ἐξηλώκει. καὶ ὑπόδοξον ἦεν  
 σὺν ἀριστοτέλει. ὡς φησι σωτίωμ ἐν διαδοχαῖς. ἔ-  
 τῃ δὲ θῆτι τὴν μαλακὴν ἐχεῖν. καὶ ὑπόδοξον ἦεν  
 ὁ σῶμα. ὡς τε αὐτὸν ὑπὸ τῷ ἀπικῶν μὴ πρηνικὸν  
 ἀλλὰ πρηνικὸν καλεῖσθαι. πρῶτον τὴν βολή-  
 σμα καὶ σεμνός. φέρεται δ' αὐτῷ συγγράμματα  
 ἡράκλειος τε καὶ ἑνείσα. διαλογοί. ὧν ἡδυνά μὲν πρὸς  
 δικαιοσύνης γ. ἐν δὲ πρὸς σωφροσύνης. πρὸς τε  
 εὐσεβείας α. καὶ πρὸς ἀνδρείας α. κοινῶς τε  
 πρὸς ἀρετῆς α. πρὸς ἐνδοξασίας α. πρὸς ἀν-  
 χύς α. καὶ νόμων α. καὶ τῷ συγγενῶν τέρας.  
 πρὸς ὀνομασίῃ α. σωθῆναι α. ἀκούσι. ἐρω-  
 πικός, καὶ κλεινίας α. φυσικὰ δὲ πρὸς νοῦ. πρὸς  
 ψυχῆς, καὶ πρὸς φύσεως. πρὸς εἰδώλων. πρὸς δι-  
 μόκειν πρὸς τῷ οὐρανῶν α. πρὸς τῷ ἐν ἅδην.  
 πρὸς βίῳ α. β. αἰτίαι πρὸς νόσων α. πρὸς  
 τοῖς ἀγαθοῖς α. πρὸς ὁρμῶν α. πρὸς ὁρμῶν  
 τῶν. γραμματικὰ δὲ πρὸς τῷ ὁμήρῳ καὶ ἡσιόδῳ  
 ἡλικίας α. β. καὶ μουσικὰ δὲ πρὸς τῷ παρ' ἐν-  
 πίδη καὶ σφοκλῆι α. β. γ. πρὸς μουσικῆς α.  
 β. λύσεων ὁμηρικῶν α. β. θεωρηματικὸν α. πε-  
 ρὶ τῷ τριῶν τετραγώνων α. χειρακτῆρος α.  
 περὶ πρηντικῆς καὶ τῷ πρηντικῶν α. πρὸς σοφί-  
 σμου

σμοῦ ᾱ. προσηκῶν ᾱ. ἡρακλείτῃ θηγησείς  
 Δ. πρὸς τὴν δημόκριτον θηγησείς ᾱ. λύσεωρ ἐν  
 οἰσιῶν ᾱ β. ἀξίωμα ᾱ. πόδι εἰδῶν ᾱ. λύ  
 σεις ᾱ. ἑποθῆκαι ᾱ. πρὸς διονύσιον ᾱ. ἡνρη  
 καὶ δὲ πόρι τοῖς ἡνρησέειν ἢ πρωταγόρας. ἰσορική πε  
 ρὶ πυθαγόρειων, καὶ πόρι ἐνρημολτῶν. τὰ τῶν τὰ μὲν  
 κωμικῶς πέπλακυν. ὡς τὸ περὶ ἡδονῆς, καὶ περὶ σω  
 φροσύνης. τὰ δὲ, τραγικῶς, ὡς τὸ περὶ τῶν κατ' ἀ  
 θλῶν, καὶ τὸ περὶ ἐνσεβείας. καὶ τὸ περὶ θύσσας. ἐστ  
 ι' αὐτὸ καὶ μυσότης τις ὁμητικὴ, φιλοσόφων τὲ  
 καὶ στρατηγικῶν καὶ πολιτικῶν ἀνδρῶν πρὸς ἀλλή  
 λους διαλεγόμενων. ἀλλὰ καὶ γεωμετρικὰ ὅσιν αὐ  
 τοῖς καὶ διαλεκτικὰ. ἄλλως τε ἐν ἅπασιν περικύβη  
 καὶ διηρημγῶ τῶν λέξεων ἐστὶ. καὶ ψυχολογίαν ἰ  
 κανῶς διακρίνει. δοκεῖ δὲ καὶ τῶν πατέρων τυ  
 ραννομνήων ἐλθόντων τὴν μοναρχίαν κτείναν, ὡς  
 φησι Δημήτριος ὁ μάγνης ἐν ὁμωνύμοις. ὅς καὶ  
 γιόρδης ἰσορεῖ πόρι αὐτοῖς. θείει αὐτὸν δακνόντα ἐκ  
 νίου, καὶ αὐξήσεντα ἐπὶ τελευτῶν ἐμελλε κελεύει  
 πινὶ τῶν πιστῶν αὐτοῖς τὸ σῶμα κατακρύβει, τὸν δὲ  
 δακνόντα ὡς τῇ κλίνῃς θείναι, ἵνα δόξειεν εἰς θεὸν  
 μεταβεβηκέναι. ἐγγὺς δὲ πάντα, καὶ μεταξὺ παλαι  
 πεμπόν τῶν ἡρακλείδων τῶν πολιτῶν καὶ ἐνφημου  
 τῶν ὁ δακνόντων ἀκούσας τῇ ὑπὸ βούῃς, θείει τῶν ἱμα  
 τίων καὶ διατάξαξε τοῦ πλείστου. ὕσδρον μὲν γι  
 Κ θηγησέναι



ἔξευχά λυφθη πάντα καὶ ὤφθη Ἡρακλείδης οὐχ οἷον  
 ἐδόνκει, ἀλλ' οἷον ἦν. καὶ ἔσιρ ἡμῶν εἰς αὐτὸν οὕ-  
 τως ἔχον.

ἦβελος ἀνθρώποισι λιπὲρ φαίτηρ Ἡρακλείδης.

ὥς ἴα θανῶν ἐγγύς ζωὸς ἅπασι δακνων.

ἀλλὰ Διελύδης σεσοφισμένη. δὴ γὰρ ὁ μὲν θύρ

ἦε δακνων. σὺ δὲ θῆρ ὁ σοφὸς ὦν ἰαλως.

ταῦτα Δί φησι καὶ ἰωπόβοτος. ἔρμυππος δὲ  
 λιμοῦ καταχόντος τῷ χώρην φησὶν αὐτὲρ οὗ  
 Ἡρακλεώτας τῷ πυδῖαν λύσιρ. γὰρ δὲ Ἡρακλείδῳ  
 διαφθεῖραι χεῖμασι τὸς τε θεωρὸν καὶ τῷ πε-  
 ρηνμύλῳ. ὥς τ' αὖειπὲρ ἀπαμαγῆσεσθαι τῶν  
 κακῶν, εἰ ζῶν μὲν Ἡρακλείδης ὁ ἐνθύφρουτος χε-  
 σῶ σεφανωθείη πρὸς αὐτῶν. ἀποθανὼν δὲ ὥς ἦ  
 ρως τιμῶτο. ἐνομίσθη χρησμός. καὶ οὐδὲρ ὦναντο  
 οἱ πλάσαντες αὐτόν. αὐτίκα γὰρ ἐν τῷ θεάτρῳ σε-  
 φανούμενος ὁ Ἡρακλείδης ἀπόπληκτος ἐγγύς  
 γ. οἱ τε θεωροὶ καταλιθύνοντες διεφθάρησαν. ἀλ-  
 λά καὶ ἡ πυδία τῷ αὐτῷ ὥραρ κατιούσα ὅς τὸ  
 ἄδυτον, καὶ ἐπισᾶσα ἐνὶ τῶν Δρακόντων Δη-  
 χθείσα παραχεῖμα ἀπέπνυσε. καὶ τὰ μὲν πε-  
 ρὶ τὸν θάνατον αὐτοῦ τοσαῦτα. φησὶ δ' ἄριστος  
 ξένος ὁ μουσικὸς, καὶ τραγωδίας αὐτὸν ποιῆν,  
 καὶ θέσπειδ' αὐτὰς ἐπιγεῖναι. χαμαιῶν  
 τὰ τὰ παρ' ἰαυτῷ φησὶ κλέψαντα αὐτὸν τὰ πε-  
 ρὶ ἡσιόδου

εἰ ἡσιόδου καὶ ὁμήρου γράψαι. ἀλλὰ καὶ αὐτόδω-  
 ρος ἐπικρούει ἐπιτιμᾶ αὐτῷ τοῖς πόρι Διχαί-  
 οσαύης ἀντιλέγων. ἔτι καὶ Διονύσιος ὁ μεταβί-  
 μνος ἢ πώινδαρος, ὡς ἦνιοι, γράψας τὸν παρθεν-  
 νοπαῖον ἐπέγραψε σοφοκλέους. ὁ δὲ, πισδύσας  
 εἰς τι τῶν ιδίων συγγραμμάτων ἐχεῖτο μαρτυ-  
 ρίῳ ὡς σοφοκλέους. αἰσθόμενος δ' ὁ Διονύσιος  
 ἐμλύνσεν αὐτῷ τὸ γεγονός. τοῦ δ' ἀρνούμενου καὶ  
 ἀπισοῦντος ἐπέσειλεν ἰδέειν τὴν παρασιχίδα.  
 καὶ εἶπε παῦν ἡγλὸν. οὗτος δ' ὡς ἐρώμενος διο-  
 νυσίου. ὡς δ' ἔτι ἀπιστῶν ἔλεγε, ἡγάτα τὴν τύχην  
 ἑνδέχεσθαι οὕτως ἔχειν, πάλιν ἀντεπέσειλεν ὁ  
 Διονύσιος, ὅτι καὶ τὰυτα ἐνέησεις. γόρῳρ πίθην  
 καὶ οὐχ ἀλίσκεται πάλῃ. ἀλίσκεται μὲν μετὰ  
 χρόνον δ' ἀλίσκεται. καὶ πρὸς τούτοις, ἡρακλεί-  
 δης γράμματα οὐκ ἐπίσεται, οὐδ' ἠσχυύθη. γε-  
 γόνασι δ' ἡρακλείδαι τεσσερὶς καὶ ἑξήκοντα. πρῶτος  
 αὐτὸς ἑστῶς. Δεύτερος περὶ τῆς αὐτοῦ πυρρίχας  
 καὶ φλυαρίας σωτεταγμένης. τρίτος κυμαῖος  
 γεγραφὼς πόρσι καὶ ἐν πέντε βιβλίοις. τέταρτος  
 κυμαῖος ἑξήκοντα τέχνας γεγραφὼς. πέμπτος  
 ἡαλιτιανός, ἢ ἀλεξανδρεὺς, γεγραφὼς τὴν Δια-  
 δοχὴν ἐν ἑξ βιβλίοις, καὶ λεμβούτικὸν λόγον, ὅ-  
 θεν καὶ λήμβῃ ἡγαλῆτο. ἕκτος ἀλεξανδρεὺς,  
 γεγραφὼς τὰ πόρσι καὶ ἰδιώματα. ἑβδόμος



δ' ἀλεκτικός βαρυλήτης κατ' ὠπλούρου γγραφῶς.  
 ὄγδον ἱατρός τῷ ἀπ' ἰκθίου. ἐννατ' ἱατρός  
 ταραντίν' ἱμπερικός. Δίκατ' πρηνὴς  
 παραινίσεις γγραφῶς. ἐνδέκατ' ἀνδρα-  
 ντοπρὸς φωχεύς. Δωδέκατ' ὠπλῶν  
 μάτῳ ποιητής, λιγυρός. τρισηχιδέ/  
 κατ' μάγνης, μυθολογικά  
 γγραφῶς. τεσσαρδ' ἱατρός/  
 κατ' ἀστρολογού/  
 μενα συγγε/  
 γραφῶς.



ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ ΛΑΕΡ-  
ΤΙΟΥ ΒΙΩΝ ΚΑΙ ΓΝΩΜΩΝ ΤΩΝ ΕΝ  
ΦΙΛΟΣΟΦΙΑ ΕΥΔΟΚΙΜΗΣΑΝ-  
ΤΩΝ ΤΩΝ ΕΙΣ ΔΕΚΑ  
ΤΟ ΕΚΤΟΝ

ΑΝΤΙΣΘΕΝΗΣ



Νηπιόνης ἀντιόχου ἀθλωαῖο.  
ἐλέγχο δ' ὅτι εἶναι ἰθαγενής. ὅθεν  
πρὸς τὸν οὐνειδίζοντα εἶπε. καὶ ἡ  
μήτηρ τῷ θεῷ, φρυγία ἐσίμ. ἐδόκει  
γὰρ εἶναι θρακτῆς μητρός. ὅθεν καὶ  
ἐν πανελγᾷ κατὰ τὴν μάχην εὐδοκιμήσας ἰδὼκε  
λίγην σωκρατεῖ, ὥς ὅτι αὐτὸν ἐν δυνούρι ἀθλωαίοις οὐ  
τω γόνον γένναῖτο. καὶ αὐτὸς δὲ τοῦ ἀθλωαίου τοῦ αὐτοῦ  
τοῦ γνησίου εἶναι σεμνωμένον ἐκφασκίζων, ἔλε-  
γε μηδὲν εἶναι ποχλιῶν καὶ ἀτελείβων ἐγγενεσί-  
ς. ὅθεν κατὰ τὰς μὲν ἡγεύσετο σοργίου τοῦ ῥήτο-  
ρος. ὅθεν καὶ ῥητορικὸν εἶδεν ἐν τοῖς διαλόγοις ὑπάρ-  
ξει. καὶ μάλιστα ἐν τῇ ἀληθείᾳ καὶ τοῖς προτερωπι-  
κοῖς. φησὶ δ' ἐρμιπποῦ ὅτι προείλετο ἐν τῇ τῷ ἰο-  
μῶν πανηγύρεϊ τίξαι τι καὶ ἐπαινέσαι ἀθλωαίον,

Κ 3 θηβαίον



θηβαίῳ, λακεδαιμονίῳ. ἔτα μὲν γὰρ περαιτήσα-  
 σθαι, ἰδόντα πλείῳ ἐκ τῆς πλείως ἀφιγμένῳ. ὅ-  
 ρον δὲ παρέβαλε σωκρατεῖ, καὶ τοσούτῳ ὥναρ αὐ-  
 τοῦ ὡς τε παρήναι τις μαθηταῖς γυγνῆσθαι αὐτῷ  
 πρὸς σωκρατικῷ συμμαθητῶς. οἰκῶν τὲ ἐν πει-  
 ρεῖ καὶ ἐν ἡμέρᾳ ἡμέραν αὐτῷ τε παρακινῶντα σαδεί-  
 ναι αὐτῶν ἡκονσε σωκρατῆρος. παρ' οὗ καὶ ὁ καρτε-  
 ρικὸν λαβὼν καὶ ὁ ἀπαθὲς ζηλώσας κατῆρξε πρῶ-  
 τῷ τοῦ κυνισμοῦ. καὶ ὅτι ὁ πρῶτος ἀγαθὸν σωῖσιν  
 οὐκ ἔστι τοῦ μεγάλου ἡρακλείου καὶ τοῦ θούρη. ὁ μὲν, ἀπὸ  
 τῆς ἐλλύωρ. ὁ δὲ, ἀπὸ τῆς βαρβαρόν ἐκλύσας. πρῶ-  
 τῷ τὲ ὠρίσας λόγον, εἰπὼν λόγῳ ὅτι ὁ πρῶτος  
 ἀφθίγματος ἢ ὅτι διηλῶν. ἔλεγε τε σωεχὲς, μανείω ἢ ἡδίστω.  
 καὶ χεῖρ ῥαυταῖς πλησιάζειν γυναιξὶν αἱ χεῖρ  
 εἰσόνται. πρὸς τε ὁ πρῶτος μείζονος μέλλον φοι-  
 τῶν αὐτῷ καὶ πυνθόμενον τίνων αὐτῷ δέει, φησὶ βί-  
 βλιαρίου καὶ νοῦ. καὶ γραφείου καὶ νοῦ. καὶ πινακι-  
 οῦ καὶ νοῦ. τὸν νοῦ παρεμφαίνων. πρὸς δὲ τὸν  
 ἐρώμενον πρὸς ἀπλὴν γῆμιν, ἔφη. αὐτὸν μὲν καλῶν, ἔξεις  
 κοινῶν. αὐτὸν δὲ αἰσχρῶν, ἔξεις κοινῶν. ἀκούσας πρὸς  
 ὅτι πλάττων αὐτὸν κακῶς λέγει, βασιλικὸν ἔφη,  
 καλῶς ποιοῦντα κακῶς ἀκούειν. μνούμενθ' ὅτι  
 τὰ ὀρεκτὰ, τοῦ ἰδρύως εἰπὼντ' ὅτι οἱ ταῦτα μν-  
 ούμενοι πολλῶν ἀγαθῶν ἐν ἅδῳ μετίσχουσι, τί οὐκ  
 ἔφη αὐτὸν ἀποθυήσκει; οὐκ ἐδιδόμηνθ' ὅτι ὡς οὐκ  
 εἴη ἐκ

εἴη ἐν Δύο ἰλδοθόρω. οὐ δὲ γὰρ ἐν Δύο ἔφη παλαι-  
 σικῶν, ἀλλὰ παλαισικὸς εἰμι. ἐρωτώμεν. Θ. ὅρα τί  
 ὀλίγου ἔχει μαθητὰς ἔφη, ὅτι ἀργυρία αὐτοῦ ἐν-  
 βάλλω ὡς βδω. ἐρωτηθεὶς ὅρα τί πικρῶς ᾤσιν μαθη-  
 ταῖς ὡς πλῆθι, καὶ οἱ ἰατροὶ φησὶ ᾤσιν ἡμῶν. ἰδὼν  
 πρὸς μοιχὸν φεύγοντα, ὃ δὲ συχρὴς ἔπε πηλί-  
 κον κίνδυνον ὁβολοῦ ὅρα φυγεῖν ἰδύασθαι. κρεῖττον  
 λέγει ἡσθὰ φησὶν ἡσθὰ ἐν ταῖς χρεῖαις εἰς ἡσθὰ  
 ἡσθὰ ἢ εἰς ἡσθὰς ἐμπόσει. οἱ μὲν γὰρ νεκροί. οἱ δὲ,  
 ζῶντας ὅς τις φησὶν. ἐρωτηθεὶς τί μαχερώτορον ἐν ἀν-  
 θρώποις; ἔφη, ἐντυχεῖν ἀκροατῆρι. γνωρίζω πρὸς  
 πρὸς αὐτὸν ἀκροατῆρα, ὡς εἴη τὰ ἡσθὰ ἡσθὰ  
 ἀκροατῆρα. ἰδὼν γὰρ ἔφη, ἐν τῇ ψυχῇ αὐτὰ καὶ μὴ  
 ἐν ταῖς χερσὶν γραφεῖν. ὡς πρὸς ἡσθὰ τὸ ἰσθὺν σί-  
 δηρον, οὕτως ἔλεγε σὺ φθονοῦς ἡσθὰ τὸ ἰσθὺν ἡσθὰ  
 ἡσθὰ ἰσθὰ. σὺ βουλομένη σὺ ἀδανάλτῃς εἴη ἔφη  
 δὲ μὲν ζῶν ἐσεβῶς καὶ δικαίως. τότε ἔφη τὰς ἡλεις  
 ἀπὸ μὲν ὅταν μὴ δύνωνται σὺ φαύλους ἀπὸ τῶν  
 σπυδαίων ὅρα κρεῖν. ἐπαυνοῦ μὲν. πρὸς ἡσθὰ πρὸς  
 ἡσθὰ ἔφη, ἀγωνισθὲ μὴ πρὸς ἡσθὰ ἐργασμα. ὁμοιοῦν τῶν  
 ἀδελφῶν συμβίωσιν παντὶς ἔφη τείχεος ἰσχυροτέ-  
 ραν εἴη. ἡσθὰ δὲ μὲν ἔφη ὅρα κρεῖν. ἡσθὰ ἡσθὰ καὶ  
 ἡσθὰ ἡσθὰ πρὸς ἡσθὰ. ὁμοιοῦν πρὸς ἡσθὰ  
 τῶν πρὸς ἡσθὰ συγγενίδαι. καὶ οἱ ἰατροὶ μὲν τὸ ἀσθενεῖν  
 τῶν εἰσὶν, ἀλλ' ὅς τις φησὶν. ἀπὸ τῶν ἔφη τὸ μὲν σίτη-  
 αῖας



αἶρας ἐκλείγῃ, καὶ ἦν ἔδ' ἐπὶ πλείω σὺν ἄχρ' ἐστ' ἦν  
 δὲ πλεῖστα σὺν φθονὸς σὺν μὴ παραιτεῖσθαι. ἐρω-  
 τηθεὶς τί αὐτὸς ποιεῖσθον ἐκ φιλοσοφίας, ἔφη, ὅ  
 δυνάσθαι ἐκαστὸν ὁμιλεῖν. εἰπὺν τ' αὐτὸς πινὸς πα-  
 ρὰ πύργῳ, ἄσπον. σὺ μοι φησὶν αὐλησόν. διογῆναι χιτῶ-  
 να ἀνρύπτει, πτύξαι πρὸς ἐταξέ θοιμάτιον. ἐρωτηθεὶς  
 τί τῶν μαθημάτων ἀναγκαιότατον, ἔφη, ὅ ἡσυχὰς ἀκ-  
 μαθεῖν. παρεκελεύετο τὲ ἡσυχῶς ἀκούοντας ἡσυχί-  
 ρειν μᾶλλον ἢ εἰ λίθοις τίς βάλλοιτο, ἔσκωπτε πλο-  
 τωνα ὡς τετυφωμένον. πρὸς μὲν δὲ γινομένης ἵππον  
 θεασάμενος φρυακτῶν φησι πρὸς τὸν πλοτωνα ὡς  
 τετυφωμένον, ἰδούκεις μοι καὶ σὺ ἵππον αὐτὸν εἶναι  
 λαμπρῶς. ἔπειτα δὲ ἐπεὶ συνεχίς ὁ πλάτῳ ἵππον  
 ἐπὶ ἡνέει. καὶ πρὶς ἐλθὼν πρὸς αὐτὸν νοσοῦντα καὶ θεα-  
 σάμενος λεηλάνω εἰς τὸν ἡμέμικει, χελῶν μὲν ὁρῶ ἦν  
 παῦδα. τῦφον δὲ ἔχ' ὁρῶ. συνεβούλευσεν ἀθληταῖς  
 σὺν ὅντων ἵππου τὴν φησὶν ἀλῆσθαι. ἀλῆστον δὲ ἤσθον μὲν  
 ἀλλὰ μὴ καὶ στρατηγὸς φησι γίνονται παρ' ἡμῶν μὴ  
 δὲ μαθόντες. μόνον δὲ χειροκνηθέντες. πρὸς τὸν  
 εἰπὺν τα, πολλοὶ σε ἐπαινοῦσι. τί γὰρ ἔφη ἡσυχὸν περὶ  
 ἡσυχίας; εἰρήνην αὐτὸν ὅτι διεξέωγος τοῦ τριβωνος  
 εἰς τὸν προφανῆς, σωκρατῆς ἰδὼν, φησὶν. ὁρῶσιν δὲ  
 τοῦ τριβωνος τὴν φιλοδοξίαν. ἐρωτηθεὶς ὑπὸ τῶν ἡσ-  
 δά φησι φανίας ἦν ἔδ' ἐπὶ τῶν σωκρατικῶν, τί πει-  
 ῶν ἡσυχὸς καὶ γαβὸς ἴσθιτο, ἔφη. εἰ τὰ ἡσυχὰς ἄχρ' ἐστ'

ὅτι φησι

ὅπ φθικτω δ' ἔτι μολθοις παρὰ τῶν εἰδότην. πρὸς  
 ἤμ ἐπαινοῦντα τρυφῶν, ἐχθρῶν παῖδός ἐφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ'  
 σειαν. πρὸς ὃ παρασχηματίζον αὐτὸ ἱδ' πλῶση  
 μειρακιον, εἰπὶ μοι φησὶν, εἰ φωνῶν λαβοὶ ὁ χαλ-  
 κὸς ὡδ' ἵνι αὖν σεμνωθῶναι. τοι δ' εἰπὺν τὸ ὡδ'  
 ἡγάλει. ὅκ αἰοχυνῶν ὡδ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ'  
 κοῦ νεανίσκου πλυνωρῆσαι αὐτὸν ἐπαγγελισμένου  
 εἰ ὃ πλοῖον ἀφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ'  
 καὶ θύλακον κερὸν πρὸς ἀλμυρῶν ἡκε. καὶ σα-  
 ξάμεν τὸ ἀπῆει. ὦ δέ, αὐτόσεσ ὃ διαφοροῦ, ὁ νεα-  
 νίσκος ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ'  
 ἀφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ'  
 ὡδ' καὶ μελίτω τοι θανῶν τὸ πρηνήσας γὰρ νεανίσ-  
 κος ἡγατὰ κλῆσ το σωκράτους ἀφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ'  
 τυχῶν, ἀπῆγαγεν αὐτὸν πρὸς ἤμ αὐτὸν. εἰπὺν ἑφ'  
 ἡβ' ὁσφώτορον εἶναι το σωκράτους. ἐφ' ὃ δ' ἑφ' ἑφ' ἑφ'  
 κτήσαντας τὸν πόδισσας ἐκδιῶξαι αὐτόν. εἰ δέ  
 πρὸς θεῶν το γυνάκον κερσμημένον ἀπῆει ὡδ'  
 τὴν οἰκίαν αὐτῇ, καὶ ἐκείλθεν ὃν ἀνδρα διαγαγεῖν  
 ἵππον καὶ ὅπλα. ὡς τε εἰ μὴ ἔχει ταῦτα ἑφ' ἑφ'  
 φαῖν. ἀμύνεσθαι γὰρ τῶν. εἰ δέ μὴ, πόδισσας ὃν  
 κέρσμον. ἡρδύκην αὐτῇ καὶ τὰ δέ. διδακτὴν ἀπε-  
 δείκνυε τὴν ἀρετὴν. τὸν αὐτὸν ἐν γυνεὶς τὸν καὶ ἑφ'  
 ἀρετῶν. αὐτὰρ κη γὰρ τὴν ἀρετὴν πρὸς ἐνδαιμονί-  
 αν, μηδ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ' ἑφ'  
 χύσθ. τὴν τε ἀρετὴν τῶν ἑργῶν εἶναι, μήτε λόγων  
 L πλείων

τὰ ἀρετῶν  
 καὶ αὐτῇ



πλείω δ' ομοίω μήτε μαθημάτων. αὐτάρη τε  
 εἶναι τὸν σοφόν. πάντα γὰρ αὐτοῖ ἐναι τὰ τῷ ἄλ-  
 λω. τίω τε ἀδελφίαν ἀγαθόν, καὶ ἴσον ἔσθ' ἥνω. καὶ  
 τὸν σοφόν, ὃ κατὰ τοῦ καμνίου νόμου πολιτεύει-  
 οῦται, ἀλλὰ κατὰ τὸν ἀρετῆς. γαμήσειν τε τεκνοποι-  
 ῖας χαλκῶν τοῖς ἐμφυεσάτους συνιόντα γυναιξί.  
 καὶ ἐραδῆσθαι δέ, μόνον γὰρ εἰδέναι τὸν σοφόν πῶ-  
 νων χρεῖα. ἀναγράφει δέ καὶ Διοκλῆς, ἔσθ' γὰρ σο-  
 φῶ ξένον ὅδε, ὅδε ἄπρ. ἀξιόδρας ὁ ἀγαθός, οἱ  
 σπουδαῖοι φίλοι. συμμάχου ποιεῖται τοῦ ἐν-  
 χου ἅμα καὶ δικαίου. ἀναφαίρειν ὅπλων ἀρε-  
 τή. κρεῖττον ὅδε μετ' ὀλίγων ἀγαθῶν πρὸς ἅπαν-  
 τας τοῦ κακοῦ, ἢ μετὰ πολλῶν κακῶν πρὸς ὀλί-  
 γου μάχεσθαι. προσέχειν τοῖς ἐχθροῖς. πρῶτον  
 γὰρ τῷ ἀμαρτηματώτῳ αἰσθάνονται. τὸν Δίκαιο  
 πόρῃ πλείον' ποιεῖται τοῖς συγγενούσι. ἀνδρὸς καὶ  
 γυναικὸς ἢ αὐτῇ ἀρετῇ. τὰ γὰρ καλὰ, τὰ κακὰ αἰ-  
 σθῶν, τὰ πονηρὰ πάντα νόμιζε ξενισθῶ. τείχε' ἀ-  
 σφαλίσαι φρόνησιν. μήτε γὰρ κατὰρξέιν, μήτε  
 προδίδου. τείχη κατὰ σπουδασίον ἐν τοῖς αὐτῷ  
 ἀναλώρις λογισμοῖς. διελέγχο δ' ἐν ἔσθ' κυροσάρι-  
 γει γυμνασίῳ μικρόν ἄποθην τῷ πυλῶν. ὅθεν πνίς  
 καὶ τίω κυροκλῶν ἐν τεύθει ὀνομασθῆναι. αὐτὸς τε  
 ἐπεμμελὲς ἀπλοκύνων. καὶ πρῶτον ἐδίπλωσε τὸν  
 τριβωνα, κατὰ φησι Διοκλῆς. καὶ μόνον αὐτῷ ἐχρή-  
 το. βαλκτρον τὸ ἀνέλαβε καὶ πῆραν. πρῶτον δέ καὶ  
 νεαύθης

καὶ αὐτὸς φησὶν ἀπλῶσαι βοιμολοίαν. σωσιμεναι της δι-  
 ᾧ τρεῖτη Διαδοχῶν, διόδωρον ᾧ ἀσπενδιον. καὶ  
 πώγωνα καθεῖναι. καὶ βαλντρω καὶ πῆρα χρῆσθαι.  
 ἔδωκεν μόνον ἐν πάντῃ σωκρατικῶν θεόπομπης ἐπι-  
 νει. καὶ φησι δεινόν τε εἶναι, καὶ δι' ὁμιλίας ἐμμελούς  
 ὑποαγαγῆναι πάνθ' ὅντινου. δῆλον δ' ἐν τῷ συγ-  
 γραμμάτῃ καὶ τῷ ξηνοφῶντι συμπερίεχ. δοκεῖ δὲ  
 καὶ τῷ ἀνδρόδεσπότης σωικῆς κατὰ ξαί. ὅθεν καὶ ἀ-  
 θλώαι. ὁ ὑπὸ γραμματῆρος φησιν οὕτω περὶ αὐτῶν.  
 ὁ σωικῶν μύθων εἰδήμονες, ὡς παναλεια

δόγματα ταῖς ἰδραῖς ἐνθέρμνοι σελίσι,  
 τὰν ἀρετὰν ψυχῆς ἀγαθὸν μόνον. ἀλλὰ γὰρ ἀνδρῶν  
 μοῦσα καὶ βιοτὰν εὖσερ καὶ πόλις  
 ἀρετὸς δ' ἡδυνάθημα φίλον τέλος ἀνδράσι καὶ ἄλλοις  
 ἢ μία τῶν μνημῆς ἤνυσε θυγατὸρων.

ἔστι καὶ ἡγήσερ καὶ τῷ διογῆντι ἀπαθείας, καὶ τῆς  
 κερότητος ἐγκρατείας, καὶ τῷ ζώνων καρτείας,  
 αὐτὸς ὑποθέμενος τῇ πόλει τὰ θεμέλια. ὁ δὲ ξηνοφῶν  
 ἡδιστον μὲν εἶναι πόλιν τὰς ὁμιλίας φησὶν αὐτόν. ἐγκρα-  
 τεῖαν δὲ πόλιν τὰ ἄλλα. φέρονται δ' αὐτὸ συγγράμ-  
 ματα τόμοι δέκα. πρῶτον ἐν ᾧ περὶ λέξεως, ἢ περὶ  
 χαρακτήρων. αἰας ἢ αἰαντὸς λόφος. ὁδυσσεὺς ἢ πε-  
 ρὶ ὁδυσσεύς. ὀρίεσθ' ἀφλογία περὶ τῶν διογραφῶν.  
 ἰστογραφὴ ἢ δασίας ἢ ἰσοκρατίας. πρὸς ᾧ ἰσοκρα-  
 τῶν ἀμαρτυροῦ. τόμος δὲ δεύτερος ἐν ᾧ περὶ ζώ-  
 ων φύσεως. περὶ παιδοπείας, ἢ περὶ γαμμου ἐρωτι-

συγγράμμα-  
 τα αὐτὰ



ἡός. ποῦ τῶν σοφιστῶν φυσιογνωμονικός. ποῦ δὲ καὶ  
 οσωύης καὶ ἀνδρίας προτρεπτικός, πρῶτον, Δόν  
 τόν, τρίτον. ποῦ θεόγνιδον Δ. ε. τόμος γ  
 ἐν ᾧ ποῦ ἀγαθοῦ. ποῦ ἀνδρίας. ποῦ νόμου, ἢ ποῦ π  
 λιτείας. ποῦ νόμου, ἢ ποῦ ἡγελοῦ καὶ διηγήσιον. ποῦ  
 ἐλδουδορίας καὶ δουλείας. ποῦ πίσεως. ποῦ ὑπὸ τῶν  
 πρῶτον, ἢ ποῦ τοῦ πείθεσθαι. ποῦ νίκης ὀικονομικός. τό  
 μος Δ. ἐν ᾧ κῦρος, ἡρακλῆς ὁ μείζων, ἢ ποῦ  
 ἰσχύος. τόμος ε. ἐν ᾧ κύρος, ἢ ποῦ βασιλείας.  
 ἀσπασία. τόμος σ. ἐν ᾧ ἀλήθεια ποῦ τοῦ ἀλλέγε  
 οῦται ἀντιλογικός. σάθων ποῦ τοῦ ἀντιλέγειν α. β  
 γ. ποῦ ἀλλέκτος. τόμος ς. ἐν ᾧ ποῦ παιδείας  
 ἢ ὀνομολογῶν α. β. γ. Δ. ε. ποῦ τοῦ ἀκρδανείμ.  
 ποῦ ζωῆς καὶ θανάτου. ποῦ ὀνομολογῶν χρήσεως ἢ  
 ἐλσιτικός. ποῦ ἐρωτήσεως καὶ ἀκροΐσεως. ποῦ δόξης  
 καὶ ὑπὸ σήμης α. β. γ. Δ. ποῦ τοῦ ἀκρδανείμ.  
 ποῦ ζωῆς καὶ θανάτου. ποῦ τῶν ἐν ἄδην. ποῦ φύ  
 σεως α. β. ἐρώτημα ποῦ φύσεως α. ἐρώτημα  
 ποῦ φύσεως β. δόξαι ἢ ἐλσιτικός. ποῦ τοῦ μανθάν  
 νειν προβλήματα. τόμος η. ἐν ᾧ ποῦ μουσι  
 κῆς. ποῦ ἐξηγητῶν. ποῦ ὁμήρου. ποῦ ἀδικίας,  
 καὶ ἀσεβείας. ποῦ ἡλχαντῶν. ποῦ ἡτασῶν  
 πον. ποῦ ἡδονῆς. τόμος θ. ἐν ᾧ ποῦ ὀδυσσεύ  
 ας. ποῦ τῆς ῥωβδου. ἀθλῶα, ἢ ποῦ τηλεμολχου.  
 ποῦ ἐλγῆς καὶ πλεωλόπης. ποῦ πρῶτης. κύ  
 κλω, ἢ ποῦ ὀδυσσεύς. ποῦ οἶνου χρήσεως, ἢ ποῦ  
 μέθης

μείβης, ἢ πόρι το κύκλωσθ. πόρι κίρκης, πόρι ἀμ-  
 μαρᾶλου, πόρι το ὀδυασίως καὶ πλυνελόπης, καὶ πε-  
 ρὶ το κυῶς, τόμθ. ἰ. ἐν ᾧ Ἡρακλῆς ἢ μῆδης. Ἡρα-  
 κλῆς, ἢ ποῦ φρονήσεως, ἢ ἰσχύθ. κύριθ ἢ ἐρώμεν-  
 υθ. κύριοι ἢ ηγαπόσησθ. μνέξενθ, ἢ πόρι το ἀρι-  
 χειρ. ἀλκιβιάδης. ἀρχέλαθ, ἢ πόρι βασιλείας.  
 καὶ ταῦτα μὲν ὅστις ἀσυνέγραψεν. ὁ τίμων δὲ δὴ τὸ  
 πληθθ ὡπλιμῶν αὐτῷ παντρυῇ φλίδονα φησὶν  
 αὐτόν. ἐτελεύτησε δὲ ἀρξῶσις. ὅτε καὶ διογῆνης εἰσι-  
 ῶν πρὸς αὐτὸν ἔφη. μή τι χρεῖα εἶλου. καὶ ἦρτε παρ  
 αὐτὸν ξιφίδιον ἔχωμ εἰσῆλθε. τοι δ' εἰπύνθ. τίς  
 αὖ ἀρλύσει τῷ πόνωμ, δειξάς τὸ ξιφίδιον ἔφη, ὅδε.  
 καὶ ὅς, τῷ πόνωμ ἔπεμ δὲ το ξιῶν. ἐδόνει γὰρ πως μα-  
 λακώτορον φόρειν τῷ νόσῳ ὑπὸ φιλοζωίας. καὶ ἔ-  
 σιν ἡμῶν εἰς αὐτὸν οὕτως ἔχωμ.

τὸν βίον οἶδα κύων ἀντίδενδς, ὥδε πεφυκώς,  
 ὥς τε δακείν κραιδίλῳ ῥήμασι δὲ σόμασι.

ἀλλ' ἴδανδς φθισικός. τὰ χ' ἐρεῖ πρὶς ἴσως, τί ὅδε;

πάντως εἰς αἰδίλῳ δ' εἰ πν' ὀδηγὸν ἔχωμ.

γίγονασι δὲ καὶ ἄλλοι ἀντιδένεις τρεῖς. Ἡρακλεί-  
 ταιθ εἰς. ἔτορθ ἐφέσιθ, καὶ ῥόδιός τις ἴσοει-  
 κός. ἐπεδὴ δὲ εἶς ἀπ' ἀρισίππου διεληλύδαμιν καὶ  
 φαίδωνθ, νῦν ἐλκύσωμιν εἶς ἀπ' ἀντιδένους κυ-  
 νηκούς τε καὶ σωϊκούς. καὶ ἔχίτω ὥδε.

L 3

Διογῆνης



**Δ**ιογένης ἰκιδίου τραπεζίτῃ συνωπδύς. φησὶ δὲ  
 Διοκλῆς δημοσίαν αὐτῷ τραπεζαν ἔχοντα  
 τοὺς πατέρας καὶ παραχαράξαντα ὃ νόμισμα φυ-  
 γεῖν. ἐμβουλευδὴς δ' ἐν τῷ πόρῳ Διογένης αὐτὸν Διο-  
 γένῃ φησὶ εἶδεν πρᾶξαι καὶ σωμαλαῶσαι τῷ πατρί. ὃ  
 μὴ ἀλλὰ καὶ αὐτὸς περὶ αὐτοῦ φησιν ἐν τῷ προδω-  
 λῷ, ὡς παραχαράξαι ὃ νόμισμα. ἔνιοι δ' ὑπὸ μελιν-  
 τῷ γηρόμνῳ ἀναπειδιῶναι ὑπὸ τῷ τεχνιτῷ, καὶ  
 ἰλθόντα εἰς δελφούς, ἢ εἰς ὃ δῆλιον ἐν τῇ πατρίδι  
 ἀπρόμῳ πωδάνεσθαι, εἰ ταῦτα πρᾶξαι ἃ πρὸς ἀνα-  
 πείθεται. τοὶ δὲ συγχωρήσαντες, ὃ ἡλιπικὸν νόμι-  
 σμα ὃ σωεῖς ὃ τόγμα κιβδηλόσας εἰ φωραθεῖς,  
 ὡς μὲν πινδὸς ἐφυγαδύθη. ὡς δὲ πινδὸς ἐκὼν ὑποδύ-  
 θε φοβηθείς. ἔνιοι δὲ φασὶ παρὰ τοὺς πατέρας αὐτὸν λα-  
 βόντα ὃ νόμισμα σφραγίσαι. καὶ ὃ μὴ, δεθγόντα ἀπο-  
 δανεῖν. ὃ δὲ, φυγεῖν ἰλθεῖν τε εἰς δελφούς, εἰ πω-  
 δανόμνῳ ὃ καὶ παραχαράξαι, ἀλλὰ τί πρὸς ἑσθ-  
 ξότατα εἶσαι, ὅντω λαβεῖν ὃν χρυσὸν εἶδεν. γηρό-  
 μνῳ δὲ ἀθλῶκοι ἀπὸ τῆς παρὲς βαλε. τοὶ δὲ Διο-  
 θουμγίου σφραγίσαντα προσέειπεν, ὃ βεβιασμένον τῇ  
 προσεδεία. καὶ πρὸς τῷ βακτηρίῳ ἐπανατρεψαμέ-  
 νον αὐτῷ τῷ κεφαλῷ ὑποσώων, πᾶσι εἰπὼν. ὃ γὰρ  
 ἰνρήσεις ὅντω σκληρὸν ξύλον ὃ με ἀπείρσεις, ἕως αὐ-  
 τὸ φαίνη λέγω. γυμνασθέντα δὲ κούσεν αὐτὸ, καὶ ὃ  
 τε φυγὰς ὃν ὡρμησεν ὑπὸ ὃν ἐντελὴ βίον. μᾶλλον θεο-  
 σάμῳ σφραγίσαντα καὶ φησὶ θεόφραστον ἐν τῷ  
 μεγάλῳ





πάλιν ονειροκρίτας καὶ μαύταις καὶ σὺ προσέχον  
 τας τέρας ἢ σὺ ὡδὶ δόξη καὶ πλούτῳ πεφυσημέ-  
 νου, ὃ δὲρ ματαιότοτον νομίζειν ἀνθρώπων. συνετέ-  
 σθον νομίζειν ἔλεγον, εἰς ἣν βίον παρασκευάσθαι  
 δεῖν λόγον ἢ βρόχον. καὶ πρὶς πλουτωνι εἰς δειπνῶν  
 πλυτελεῖ κατανόησας ἀφαιρῶν ἑλαῶν, τί φησιν  
 ὁ σοφὸς εἰς σικελίαν πλούσας τῶν τεραπεζῶν τὰ τῶν  
 χάριν νῦν παρακειμένην ὅτι ἀκλαύεις; καὶ ὅς, ἀλλ  
 λὰ νῦν σὺ θεός φησι διόγηνος καὶ κεί τὰ πρὸς  
 ἑλάδας καὶ τὰ τριαῦτα ἐγγυόμην. ὁ δὲ, τί ὅμως εἶδεις  
 πλεῖν εἰς συρακούσας. ἢ τότε ἡ ἀπικνὴ ὅτι ἐφοδῶν ἐν  
 λαῶν. φαβωρῖνθ' δὲ φησιν εἰς παντὶ διαπῆ ἰσορίαν  
 ἀρίσιππον εἰπεῖν ῥῶν. καὶ ἄλλοτε ἰοχάδας δὲ δι-  
 ων ἀπλώττω αὐτῶν. φησὶ τί ἔξισι σοι μεταοχῆν.  
 τοῖ δὲ λαβόντ' καὶ φαγόντ', ἔφη, μεταοχῆν εἰ-  
 πρὶν ὅτι καταφαγῆν. πατὴρ αὐτοῖς πρὶς σρώματα κε-  
 κληρότ' ὅλ' οὗ παρὰ διονυσίου ἔφη. πατὴρ τῶν  
 πλουτῶν καὶ κρηνοπονδίαν. πρὸς ὅν ὁ πλουτῶν. ὅσον  
 ὡς διόγηνος τοῖς τύφου διαφαίνεις δοκῶν μὴ τετυφῶ-  
 ῖν. οἱ δὲ, φασὶ ἣν διόγηνος εἰπεῖν, πατὴρ ἣν πλου-  
 τῶν τῶν τύφον. ἣν δὲ, φαίει. ἐτόλμα γὰρ τύφω διόγηνος.  
 σωτίων δ' εἰς τῶν τεταρτῶ φησὶ ῥῶν πρὸς αὐτὸν εἰ-  
 πεῖν ἣν πλουτῶν ἣν κυρία. διόγηνος οἶνον πρὶς ἡπ-  
 σον αὐτόν. τότε δὲ καὶ ἰοχάδας. ὁ δὲ, κερδάνομαι ὅλον  
 ἐπεμψῶν αὐτῶν. καὶ ὅς, σύ φησιν ἐὰν ἐρωτηθῆς Δύο  
 καὶ δύο πρὸς ὅσον εἴησι ἀκκηνῆ. οὕτως ὅτε πρὸς  
 τὰ

τὰ αἰγύμνια δίδως ἔτε πρὸς τὰ ἐρωτώμνια ἀκρι-  
 νη. ἔσκηφε δὲ ὡς ἀπορυνγλός. ἐρωτηθεὶς τῷ τῆς  
 ἐλπίδος ἴδου ἀγαθὸν αὐδρας· αὐδρας μὲν ἔπην  
 ἔδαμοῦ, παῖδας δὲ ἐν λακεδαίμονι. πονδαιολογου  
 μένω πρὶ ὥς ἔδεις προσήει ἐπέβαλε τόρε πίζειν.  
 ἀθροιστὶ γὰρ δὲ ὠνείδισεν, ὡς ὡδὶ σὺ φλινωφτος  
 ἀθροιστὶ γὰρ δὲ πονδαιοῦ, <sup>ἔ</sup> δὲ τὰ πονδαιοῦ βρα-  
 δυνόντων ὀλιγώρως. ἔλεγε πόρῃ μὲν τοῖ παρορύττειν  
 καὶ λακτίζειν ἀγωνίζεσθαι σὺ ἀνθρώπων. πόρῃ δὲ  
 χαλκὸν γαθίας ἔδιδας. τὸς τε γραμματικούς ἐδαύ-  
 μασε, τὰ μὲν τοῖ ὀδυσεύς καὶ αἰαζηρύωντας, τὰ  
 δὲ ἴδου ἀγνοοῦντας. καὶ μὲν καὶ σὺ μουσικούς, τὰς  
 μὲν γὰρ τῇ λύρα χορδὰς ἀρμόττειας, αἰαφμόσα δὲ ἔχων  
 τῆς ψυχῆς τὰ ἦθη. σὺ μαθηματικούς ἀκρβλίπειν  
 μὲν πρὸς τὸν ἥλιον καὶ τὴν σελήνῃ, τὰ δ' ἐν πρὸς  
 πλάγματα παρορῶν. σὺ ἔνθρας τὰ δίκαια μὲν ἔσ-  
 πυνδακνῶναι λέγειν, πλάττειν δὲ ἔδαμῶς. ἀλλὰ μὲν  
 καὶ σὺ φιλαργύρος ψέγειν μὲν τὸ ἀργύριον, ἔσπ-  
 αγαπᾶν δέ. κατεγίνωσκε δὲ καὶ τῶν ἐπαινουμένων  
 μὲν σὺ δικάεις ὅτι χρηματῶν ἐπάνω εἶναι, ζηλου-  
 τῶν δὲ σὺ πλουχηματίας. ἐκίνει δ' αὐτὸν καὶ τὸ  
 θύειν μὲν τοῖς θεοῖς ἔσπ- ὑγείας. ἐν αὐτῇ δὲ τῇ θυ-  
 σία κατὰ τῆς ὑγείας διειπνείν. ἀγαθὸν δὲ καὶ τῶν  
 δούλων οἱ λαβροφαγούωντας ὀρεῶντες σὺ δόσπ-  
 μηδὲν ἀρπάξαι τῶν ἑσθιομένων. ἐπίνει σὺ μέλ-  
 λοντας γαμῆν καὶ μὴ γαμῆν. καὶ σὺ μέλλοντας

M πλείν



πλείν καὶ μὴ ἡσυχάζειν. οὗτος μέλλοντας περὶ τού-  
 τῳ εἶναι, καὶ μὴ περὶ τούτου. καὶ οὗτος παιδευτὸς οὐκ ἔστι  
 παιδευτὸς. καὶ οὗτος παρὰ τὸν νόμον οὐκ ἔστι νόμος.  
 οὗτος γὰρ δυνάσταις καὶ μὴ προσκυνέουσιν. ἔλεγε δὲ καὶ  
 δεινὰς χεῖρας ἐκτείνειν μὴ συγκεκραμένους οὗτος  
 διακτύλους. φησὶ δὲ μὲν ἰππῶν ἐν τῇ διοχίῳ τοῦ πλά-  
 σαι, ὡς ἀλόνος καὶ πωλούμενος ἡρώτησεν πῶς οἱ δεῖν  
 ἀπεκρίνατο ἀνδρῶν ἀρχαί. καὶ πρὸς τὸν κήρυκα κή-  
 ρυσε ἔφη εἰ τις ἐθέλοι Διὸς ἱερὸν αὐτῷ πείσασθαι.  
 κωλυθεὶς ἡσυχάζειν, ὃ δὲ ἔφη σφαιροῦται. καὶ γὰρ οὗτος  
 ἰχθύς ὅπως αὐτὸν κτείνειν περὶ τὸν νόμον. δαυμάζειν τὸ  
 ἔφη, εἰ χύτραν μὲν καὶ λαπάδα ὠνούμενοι σφαιροῦται.  
 ἀνθρώπων δὲ μόνη τῇ ὁφείλει ἀφνειοῦται. ἔλεγε τῷ ξενιά-  
 δῃ τῷ περὶ τὸν νόμον αὐτῷ, δεινὰ πείσασθαι αὐτῷ εἰ καὶ  
 δοῦλον εἴη. καὶ γὰρ ἰατρός ἢ κυβερνήτης εἰ δοῦλος  
 εἴη πείσασθαι αὐτῷ αὐτῷ. ἐβουλόμην δὲ φησὶ ἐν τῷ  
 ὑπογραφομένῳ διοχίῳ τοῦ περὶ τὸν νόμον, οὕτως ἄγειν οὗτος  
 παῖδας τοῦ ξενιάδου. μετὰ τὰ λοιπὰ μαθήματα ἵπ-  
 πους, ῥξοῦς, σφαιροῦς, ἀκοντίζειν. ἔπειτα ἐν  
 τῇ παλαιᾷ οὐκ ἐπέτρεπε τῷ παιδευτῇ ἀθλητι-  
 κῶς ἄγειν. ἀλλ' αὐτὸς ἐρυθήματ' ἔχει καὶ ἐνδεί-  
 ας. ἡσυχάζει δὲ οἱ παῖδες περὶ τὸν νόμον καὶ συγ-  
 γραφίῳ, καὶ τῷ αὐτῷ διοχίῳ. πάντες τὸ ἐφοδοῦν  
 σώφρονα πρὸς τὸν ἐν μνημόνῳ ἐπὶ νόμον. ἐν οἷον τὸ  
 εἰδίδασκε σφαιροῦται λιτῇ τροφῇ χρωμένους, καὶ  
 ὕδωρ πίνοντας. ἐν χερσὶ κενείας τὸ καὶ ἀκροατοῦ

ἔστυ εἰργαζέσθω. καὶ ἀχίτωνας καὶ ἀνταποδῆτ' αὐτοῦ  
 καὶ σιωπηρὰς, καὶ θ' αὐτοῦ βλέποντας ἐν ταῖς ὁδοῖς.  
 ἔβη γὰρ δ' αὐτοῦ καὶ <sup>κ</sup> κυνηγεία. οἱ δὲ, καὶ αὐτοὶ διο  
 γνόντες ὑπὸ μέλειαν ἐπιοῦντες, καὶ πρὸς αὐτὸν γονίας αὐ  
 τηπικῶς ἔχοντες. ὁ δ' αὐτὸς φησι παρὰ τοῦ ξενιστοῦ ἐ  
 γνησάμενος αὐτὸν καὶ θανόντα ταφῆναι πρὸς τῶν ὑμῶν  
 αὐτοῦ. ὅντα καὶ πωθάνομεν τὸ ξενιστοῦ, πῶς αὐ  
 τὸν δάφειν ἔφη. ὡς πρὸς σωτοῦ. τὸ δ' ἐρομένης ὅρα  
 τί. ὅτι μετ' ὀλίγον ἔπει μέλει τὰ κατὰ ἀναστροφῆς  
 οὐκ αὐτοῦ. ὅρα δὲ ὅρα τὸν ὑπὸ κρατὶν ἔδωκεν αὐτὸν μακροδύ  
 ναν, ἢ ἐκ ταπεινῶν ὑψήλ' αὐτὸν γίνεσθαι. εἰσαγαγόν  
 τ' αὐτὸν πρὸς αὐτὸν εἰς οἶκον πολυτελῆ, καὶ κωλύον  
 τ' αὐτὸν πύσαι ἐπιδὼν ἐχέμεντα, εἰς τὴν οἴκον αὐτοῦ  
 ἔωπυσεν, εἰπὼν χεῖρνα τόπον μὴ ἐνρηκναι. οἱ δὲ,  
 ὅρα ἀεισώπων φασί. φωνήσας πρὶν ἰὼ ἀνθρώποι  
 σκελθόντων καὶ δύνανται τῇ βακτηρίᾳ, εἰπὼν, ἀνθρώ  
 π' αὐτοῦ ἐν ἁλόδα ὅ καὶ δάματα, φησὶν ἐν ἁλὶ τῶν ἐν  
 πρῶτῳ τῶν χειρῶν. φασὶ δὲ καὶ ἀλέξανδρον εἰ  
 πέμψας εἰς πόλιν ἀλέξανδρον μὴ γένοιτο, ἐβελῆσαι  
 αὐτὸν Διογένης γινώσκει. ἀναπύσας ἔλεγεν οὐ αὐτὸν  
 κωφὸν καὶ τυφλόν, ἀλλὰ τοὺς μὴ ἔχοντας πῆ  
 ραν. εἰσελθὼν ποτὶ ἡμετέρῃ τ' εἰς νῆα συμπό  
 σιον, καὶ θὰ φησι μητροκλῆς ἐν ταῖς χεῖρας, πλη  
 γὰς ἔλαβε. μετὰ δὲ ἐγγράψας τὰ ὀνόματα εἰς  
 λούκωνα τῶν πληγόντων, πόρῃς ἐξημερέθη,  
 ὡς αὐτοὺς ὕβρις πόρῃς ἐβηκε καὶ ταγινωσόμενός τ'



καὶ ὑπὸ πληττρυμένων. ἔλεγεν ἑαυτὸν κυρία εἶναι τῶν  
 ἐπαινουμένων, ἀλλὰ μηδὲν ἄνθρωπον τῶν ἐπαινουμένων  
 τῶν σωφρονούντων ὡς τὴν θήραν. πρὸς τὸν εἰρηνικὸν πύ-  
 δια νικῶ ἀνδρας. ἐγὼ μὲν οὖν ἐπὶ τῶν σὺ δὲ ἀνδραγα-  
 θία. πρὸς τοῦ εἰρηνικοῦ γόργου εἶ, καὶ λοιπὸν ἀνδρ. τί  
 δὲ ἔφη, εἰ δολιχὸν ἔδραμον πρὸς τῶν τέλει εἰσε-  
 λθεῖν καὶ μὴ μᾶλλον ὑπὸ τῶν κληθείς ὡς δὲ  
 πνοὴν ὅτι ἔφη παρὶσεῖσθαι. μηδὲ γὰρ πρὸς αὐτὸν χά-  
 ειρ ἐγνωσκέναι. γυμνοῖς πρὸς χιόνα ἐπάτει. καὶ τὰ  
 ἄλλα ὅσα ἄνθρωπος προείρηται. καὶ ὡμὰ δὲ κρία ἐπεχεί-  
 ρησε φαγεῖν. ἀλλ' ὅτι διώκησε. καὶ τέλαβε πρὸς τὴν δημο-  
 δαίμων τὸν ῥήτορα ἐν πανδοκείῳ ἀεισῶντα. τοῖς δ' ὕ-  
 περ ὡροῦντο, ὅσους ἔφη μᾶλλον ἔσθαι ἐν τῶν παν-  
 δοκείῳ. ξένων δὲ πρὸς τὴν θεώσεσθαι θελόντων δημοδαι-  
 νίῳ τὸν μέσον δολιχὸν ἐκτείνας, ὅτι ὅτι ὕμῃν ἔφη  
 ὅτι ὁ ἀθληαίων δημαγωγός. ἐκβαλλόντων δὲ ἀφ' ἑ-  
 αυτῶν καὶ αἰσχυρομένους ἀνελίξαι, βουλόμενον αὐτὸν  
 νοθεύειν καὶ καὶ αὐτὸν τρεῖς χιλοὺς δέσας, ἔσειρε δὲ  
 τοῖς καὶ αὐτοῦ. μεμείσθαι ἔλεγε τοῦ χρονοδιασχε-  
 λους. καὶ γὰρ ἐκείνου ἐπὶ τὸν νόμον ἐνδιδόναι, οὐκ ἔφη  
 τοῖς τοῦ λοιποῦ ἀφαισθαι τοῖς προσήκοντες τὸν νόμον. τοῖς  
 πλείους τοῦ ἔλεγε παρὰ δολιχὸν μαίνεισθαι. ἐὰν ἐν-  
 τις τὸν μέσον προτείνας προδύηται, διόξην μαίνεισθαι.  
 ἐὰν δὲ τὸν λιχανὸν ὁκίπῃ. τὰ πολλὰ ἄξια τοῖς μηδὲν  
 νὸς ἔλεγε πιπράσκεισθαι. καὶ ἔμπαλιν. ἀνδραγὰς  
 τοῦ τειχοιλίῳ πιπράσκεισθαι. κρίνῃ δὲ ἀλλοι-  
 τῶν

τῶν δύο χαλκῶν. ἔθ' πειραμένω αὐτῶν ξυνοῦδ' η, φη-  
 σί. ἀγε ὅπως ἢ προσεπτόμενον κρίσης. τοῖ δ' εἰ-  
 πόντ' ο, αἰὼν πταμῶν χωροῦσι παγαί, εἰ δὲ ἰα-  
 τρὸν ἐπείω νοσῶν, ἔκ' αὖν αὐτῶν ἐπείθου; ἀλλ' εἴπ' οὖ  
 αἰὼν ὡς αἰὼν πταμῶν χωροῦσι παγαί; ἤθελε τις παρ'  
 αὐτῶν φιλοσοφεῖν. ὁ δ' εἰ οἱ σαπὸρδ' ἰω δδὺς ἐπρίνοσεν  
 ἀκροθυθεῖν. ὡς δ' ἔω αἰδδὺς εἰ-  
 φας ἀπῆλθε, μετὰ  
 χρόνον ἔπαυσας αὐτῶν καὶ γαλασσας λέγει, τῶν  
 σῆρ καὶ ἐμὴν φιλίαν σαπὸρδ' ἰω δδὺς ἐπρίνοσεν. διοκλῆς  
 δ' οὕτως ἀναγράφει. εἰπόντ' ο πινὸς αὐτῶν, ἐπίτατ-  
 τε ἡμῖν διόγῃν οὖ, ἀπαγαγὼν αὐτῶν \* ἡμωβολίου  
 τυρίον σφάλλειν ο. θεασάμεντ' ο πρὶ παιδίον τοῦς  
 χδρσί πινον, ἐξείρι-  
 φε τῆς πῆρας τῶν κοτύλλω, εἰ-  
 πὼν παιδίον με νεγρίκησεν ἐντελεία. ἐξέβαλε δὲ καὶ  
 ἢ τριβλίον, ὁμοίως παιδίον θεασάμεντ' ο ὑπὸ δὴ κα-  
 τέαξε ἢ σκεῦτ' ο, ἔθ' κρύλλω ἀφ' ἔθ' τοῖς τωμίον τῶν  
 φακίῶν ἔποδε χέρμνον. σωμαλογί-  
 ζετο δὲ καὶ οὕτως. τῶν θεῶν ὅστις πάντα. φίλοι δὲ οἱ σοφοὶ ἦν  
 θεοῖς. κρινὰ δὲ τῶν φίλων πάντα. ἀφ' ὅστις τῶν σοφῶν. θεασάμε-  
 ντ' ο πρὶ γυναικῶν ἀοχημονέσδον ἦν θεοῖς προσπί-  
 πτυσαν, βουλόμεντ' ο αὐτῆς ποδελεῖν τῶν δεισι-  
 δαιμονίαν ἡσθὰ φησι ζωίλτ' ο ὁ πόργαῖτ' ο, προσελ-  
 θὼν εἴπῃ. ἔκ' ἐνλαβῇ ὡ γυναι μή πρτε θεοῦ ὀπιδεν  
 ἐσῶτ' ο, πάντα γὰρ ὅστις αὐτοὶ πλήρη, ἀοχημονή-  
 σεις; ἔθ' ἀσκληπιῶ ἀνέθηκε πλήκτεν, ὅς ἐσ' οὖ ὑπὸ  
 σόμα πίπτωντας ὑπὸ τρέχωρ σωίτριβγν. εἰώθει δὲ

M 3 λίγειν



λέγειν τὰς τραγικὰς ἀρὰς αὐτῷ σωλυπικῆναι. εἶ-  
 ναι γοῦν ἄπλιν, ἄοικτον, πατρίδ' ἐσθρημνῆν.  
 πτωχὸς πλανήτης. βίον ἔχωρ τυφνημόραν. ἔφασκε  
 δὲ αὐπτιθῆναι τύχη μὲν δάρεσθ'. νόμῳ δὲ φύσιν. πά-  
 θει δὲ λόγον. ἦν τῷ κραινείῳ ἡλιουμνῶ αὐτῷ ἀλίξαν-  
 δ' ὡπλίσας φησιν. αὐτὸς μὲν οὐ θέλεις. καὶ ὅς, ἀρ-  
 σιότης μου φησί. μακρὰν τιν' αἰαγινώσονται  
 καὶ πρὸς τῷ τέλει τοῦ βιβλίου ἀγραφον παραδεί-  
 ξαντες. θαρσύνετε ἴφην αὐτῶν. γλῶ ὁρῶ. πρὸς ἧν  
 συλλογισάμενον ὅτι κόρατα ἔχει, ἀφαιμένῳ τοῦ με-  
 τώπ' ἐγὼ μὲν ἴφην ἔχ' ὁρῶ. ὁμοίως καὶ πρὸς ἧν εἰ-  
 πόντα ὅτι κίνησις ἐκ ἑσιν, αἰσας ποδὶ πατάει. πρὸς  
 ἧν λέγοντα ποδὶ τῷ μετεώρῳ, πρὸς αὐτῷ ἴφην πάρε-  
 ἄρ' τοῦ ἔρανδ' ; ἐμὸς χ' ὁμοθυμῶν ὡπληρῶντες  
 ὡδ' τὴν οἰκίαν, μηδὲρ εἰσίστω κακόν. ὁ οὖν κύριος  
 ἴφην τῆς οἰκίας, πρὸ εἰσέλθοι; τῷ μύρῳ αὐτῷ πρὸς αὐ-  
 λειφαιμένῳ ἴφην. ἀρ' μὲν τῷ κεφαλῇ εἰς ἧν ἀδρα-  
 ἀπιγναι ἧ μύρον. ἀρ' δὲ τῷ πρὸς αὐτῷ εἰς τὴν ὁσφρη-  
 σιν. ἀξιουῶντων ἀθλιωαίων μνησθῆναι αὐτῶν, καὶ λεγόν-  
 των ὡς ἦν αὐτῶν προεδρίας οἱ μεμνημένοι τυγχάνου-  
 σι γλοῖον ἴφην εἰ ἀγνοίλας μὲν καὶ ἐπαμεινώνδας  
 ἦν τῷ βορβόρῳ διαλέξω, ἐντελῆς δὲ τινος μεμνη-  
 μένοι ἦν ταῖς μακρότερον νόσιν ἔσονται. πρὸς αὐτῷ ἐρ-  
 πίσαντας ὡδ' τὴν τραπέζαν μὲν, ἰδὲ φησι καὶ  
 διογῆνης παρὰ σίτου τρέφεται. πλὴν τῷ εἰπόν-  
 τ' αὐτῶν κυῖα, καὶ ἴφην. ἐγὼ γὰρ ἐπανήλθοι ὡδ'  
 αὐτῷ

τὸς πεπρακτοῦς. ἐν τῷ βαλανεῖοις θειῶν τῷ μὲν πυ-  
 νομηνῶν εἰ πολλοὶ ἀνθρώποι λαοῦντες, ἤρηνόσαντο. τῷ δ' εἰ  
 πλὺς ὄχλος, ὠμολόγησε. πάλιν τῷ θεῷ οἰσαμένης ἀν-  
 θρώπων ὅτι ζῶον δέπασιν ἀπὸ τοῦ καὶ ἐνδοκίμου ὡς,  
 πλάσας ἀλεκτερόνα εἰσένεγκον εἰς τὴν σχολὴν αὐτῶν.  
 καὶ φησιν, ὅτι ὁ πλάτωνος ἀνθρώπων. ὅθεν τῷ  
 ὄρω προσετίθη ὁ πλατυύνου χερ. πρὸς ἧν πυθόμηνον  
 πρία ὥρα δ' εἰ ἀριστῶν. εἰ μὲν πλῆσι θεῷ ἔφη ὅταν θέλη.  
 εἰ δὲ πρὸς ὅταν ἔχη. ἦν μεγαρεῦσιν ἰδῶν τὰς μὲν πρό-  
 βατα τῆς δόξασιν ὅτι πεπασμένα, τὸς δὲ παῖδας  
 αὐτοῦ γυμνῶν, ἔφη. λυσίτελεις ἐροῦ ὅτι μεγαρίως εἶναι  
 κείον ἢ ὅμοι. πρὸς ἧν ἦν πινάξαντα αὐτῷ τὴν δοκὸν,  
 εἶτα εἰπὺντα φυλάξαι. πάλιν γὰρ με ἔφη παῖς; ἢ  
 λεγέτω μὲν διημαγωγὸς ὄχλου διακόνος. τὸς δὲ  
 σεφάνους δόξης θειανθήματα. λύχνον μεθ' ἡμῶν ἀ-  
 φας ἀνθρώπων φησὶ ζητῶ. εἰσῆκει πρὶν κατὰ κερυνίζο  
 μιν. τῷ δὲ πορευώτῃ ἐλεσύντῃ παρῶν πάλιν  
 ἔφη, ὅτι βόλεοι αὐτῶν ἐλεῦσαι ἀπέρσητε, ἦν δὲ κινύμε-  
 νον. οὐλοδξίαν αὐτοῦ. ἦν τρεῖς αὐτῷ κύνδου-  
 λον πνός, ἡρώκλεις ἔφη, οἷον με χεῖμα ἐλαύναντε, ὅ  
 μετὰ ποδὶ κεφαλαίας ποδὶ πατεῖν. ἀλλὰ καὶ μεδί-  
 ου κύνδου λίσαντο αὐτῶν καὶ εἰπὺντο τριχοίλιαί  
 σοι κείνται ὡδὶ τῇ τραπέζῃ, τῇ ἑξῆς πυκπνός λα-  
 βὼν ἱμαῖντας καὶ κατὰ λήσας αὐτῶν ἔφη, τριχοίλι-  
 αί σοι κείνται ὡδὶ τῇ τραπέζῃ. λυσίου τοῦ φαρμα-  
 κωπώλου πυθομηνίου εἰ θεὸς νομίζει. πῶς δὲ εἶπεν  
 ὁ νομῖ



ἔνομιζω ὅπου καὶ σὲ θεοῖς ἐχθρὸν ἑπολαμβάνω. οἱ  
 δὲ, θεόδωρον εἰπεῖν ἔδωκεν. ἰδίῳ τινα ποδὶ ῥῥανόμλιον  
 εἰπεῖν. ὡς καὶ δαίμον, ἔκ ἐπίσταται ὅτι ὡς πόρ  
 τῇ ἐν γραμματικῇ ἀμαρτημάτων ποδὶ ῥῥανόμλιον  
 ἔκ ἀν' ἀπαλλαγείης, οὕτως ἔδε τῇ ἐν βίῳ. ἐν  
 ἡλὲι ρῖς ἀνθρώποις πόρῃ τῆς τύχης, αὐτεῖοις λέ  
 γων αὐτοῦ ἀγαθὰ τὰ αὐτοῖς δοκούντα καὶ ἔτα κα  
 τὰ ἀλήθειαν. πρὸς δὲ τοῦ πόρῃ τὰ ὀνείρατα ἑωρῆ  
 μέντου ἔλεγον, ὡς ἑπὶ ὧν μὲν πρῶτον ὑπάρχει  
 ὑπερέφονται. ἑπὶ ὧν δὲ καὶ δόδοντες φαντασι  
 οῦνται πλὴν πρῶτον οὐσίμ. ὀλυμπιῶσι τοῖς κήρυκας  
 αὐτεῖντες, νικᾷ δὲ ὁ ξίππας. ἔτ' μὲν δὴ  
 αὐτῶν περὶ αὐτοῦ. αὐτοῦ δὲ ἐγώ. ἡ γὰρ ἀντὶ καὶ πρὸς  
 ἀθλῶν αἰών. μετὰ τοῦ τοῦ πῖθον αὐτοῦ σωτρί  
 ταντ', ἑπὶ μὲν, πληγὰς ἔδωκεν. ἐκείνῳ δὲ ἄλλῳ  
 παρὲς τοῦ. φησὶ δὲ δινύσιον ὁ σωτὴρ, ὡς μετὰ χερσὶ  
 νειαν συληφθεὶς ἀπὸ χερσὶ πρὸς ὀλίγον. καὶ ἐρω  
 τηθεὶς τίς εἴη, κατὰ σκοπὸν ἔφη τῆς σῆς ἀπλησί  
 ας. ὅθεν δαυμασθεὶς ἀφείβη. ἀλεξάνδρου πρὶν ἐμ  
 ταντ' ὑποσώλῳ πρὸς ἀντίπατρον εἰς ἀθλῶν  
 διατίναν ἀθλία, παρὲν ἔφη. ἀθλίας παρ' ἀθλίου δι  
 ἀθλίου πρὸς ἀθλίον. πόρδινον ἀπειλήσαντες εἰ  
 μὴ ἔλθοι πρὸς αὐτὸν ἀκκτενέιν, ἔφη, ἔδε μίγα.  
 καὶ γὰρ ἡνδραῖον καὶ φαλαγγίον τοῦτ' ἀν' ἐξοίον.  
 ἐκείνῳ δὲ μᾶλλον ἀπειλῆν ἡξίου, ὡς εἰ καὶ χεῖς  
 ἐμοῦ ῥῥα, ἐν δαίμονως ῥῥοισιν. ἐβόα πρὸς τοὺς λέ  
 γων

γωρ ὅρ τῶν ἀνθρώπων βίον ῥαδίον ὑπὸ τῶν θεῶν δε  
 δόσθαι. ἀρκυερέφθαι δὲ αὐτὸν ζήρῳ τῶν μελίπηνι  
 κτα καὶ μύρα καὶ τὰ παραπλήσια. ὅθεν πρὸς τὸν ὕ  
 ποδικέτῃ ὑποδύμνον ὅπω εἴπω μαχάριΘ εἰ, αὐ  
 μή σε καὶ ἀρκυέξῃ. ἔδω δὲ ἔσαι πηρωθῆναι σοι τὰς  
 χεῖρας. θεασάμενΘ ἥτις σὺ ἰδομένημονας τῶν  
 παμίων τινὰ φιλῶν ὑφηρημένον ἄγοντας, ἔφη οἱ με  
 γάλῃ κλέπτει τὸν μικρὸν ἄγουσι. θεασάμενΘ ἥ  
 τι μερῶν λίθου βαλλορ ὑπὸ σαρῶν, ἔνυκ εἶπε,  
 τούξῃ γὰρ τοιοῦτῃ. πρὸς τὰ πόδισάντα μερῶν  
 καὶ εἰπόντα βλέπερ μὴ δαλῆς ἡμᾶς, θάρσῃτε ἔφη  
 παιδία. κύωρ τούτλῃα ἔκ ὁδοίει. πρὸς τὸν ὑπὸ τῇ  
 λεοντῇ θρωτόμνον παῦσαι ἔφη τὰ τῷ ἀρετῇ σρώ  
 ματα κατὰ χυῶν. πρὸς τὸν μαχάριζόμενον καλ  
 λιοτῆν καὶ λείοντα ὡς πλυτελῶν παρὰ ἀλδζάν  
 ὁρῶ μετέχει, κακοδαίμων μὲν ὅσω ὅστις ἔπην ὅς  
 καὶ ἀρετῇ καὶ δειπνῇ ὅταν ἀλεξάνδρῳ δόξῃ. χερ  
 μάτῃν δέομενΘ ἀπαιτῇ ἔλεγε σὺ φίλους ἔκ αὐ  
 τῇ. ἐπὶ ἀγορᾷ ἥτις χειρουργῶν, εἴθε ἔφη καὶ τῷ  
 κοιλίαν ὑπὸ παρατείλαντα μὴ πεινῶ. μερῶν  
 θεασάμενΘ μὲν σατραπῶν ὑπὸ δειπνον ἀπὸν, ἀρ  
 πώσας ἀπὸ γαλῆς πρὸς σὺν οἰκίῃ, καὶ ἐκείλῃ  
 πηρῇ. πρὸς τὸν κερσόμενον μερῶν πυνθόμε  
 νον τί, ἔφη, ὅ πρότορον λείξῃ αὐτῷ, εἰ μὴ ἀνασυνε  
 μενΘ δείξει πρότορον γυνή ὅστις ἢ ἀνὴρ. πρὸς τὸ  
 κατὰ βίον ὃν τῷ βαλάνειῳ μερῶν φησι, ὅσω

N

βίλπορ



βέλπορ ρούτω χείρορ. ἦν Δείπων προσεξίωρ  
 αὐτῷ πινὺς ὁσαύτα ὡς κυνί, καὶ ὅς ἀπαλαττόμεν  
 ἱθὺς προσύρησεν αὐτῷ ὡς κύων. σὺ δὲ ῥήτρας καὶ  
 πάντας σὺ ἠδὲ ξολοῦντας τρισηνθρώπου ἀπει  
 ηῖλε. ἀντὶ τοῦ τοὺς ἀθλίους. ἦρ πλούσιον ἀμαθῶς,  
 πρόβατον εἶπε χρυσόμαλον. θεασάμενος ὡδὶ ἄσῳ  
 τὸ οἰκία ὡν γὰρ γραμμῶν, πλάσιμος, ἦδ' εἰς εἶπε  
 ὅτι οὕτω κραυπαλῶσα ῥαδίως διεμέσεις ἦρ κεντη  
 μῶν. πρὸς ἧς ἡσυχαστῶν μισθολογῶν ἦρ πλῆθος  
 τῶν ἠνοχλουῦν, παύσαι γὰρ ἔφη καὶ σὺ τὰ δει  
 γματα τοῦ παρὰ κηπῶν τοῦ ποδιδόρων. πρὸς ἧς  
 παρὰ βαλανείον. οἱ ἦν δ' αὖτε ἔφη λουόμενοι, περὶ λούον  
 ται; παχέος κιδαρωδῶ πρὸς πάντων μεμφομέ  
 νου, αὐτὸς μόνος ἐπὶ ἡμῶν. ἐρωτηθεὶς δὲ ὅτι τί, ἔφη, ὅτι  
 πληροῦς ὡρ κιδαρωδῆ καὶ ἔλκεσθαι. ἦρ κιδα  
 ρωδῆ ἀεὶ ἡσυχαστῶν πρὸς τῶν ἀκροατῶν ἡσυχά  
 σατ' ἡσυχῆ ἀλκίως. τοῖς δὲ, εἰπόντες ὅτι τί, ὅτι ἔφη  
 ἄδωρ πάντας ἐγείρεις. μερακίου ὁραδὲ κενυμένον  
 πληρώσας ἦρ προκύπτειον ἀντικρυς θόρυβον ἡσυχῆ  
 πῆ. τοῖς δὲ πλῆθος εἰς αὐτὸν ἀφορῶντες θανυμολογῶν  
 ἔφη πῶς ἐκείνον ἀφάντες αὐτὸν ὁρῶσι. λίσσονται δὲ  
 αὐτῷ πινὺς ἰσχυρῶς διψιδάιμονος, μιᾷ πληγῇ τῷ  
 κεφαλῇ σου ὁραδῆξω. ἐγὼ δὲ γὰρ εἶπε παρὰ δὲ ἡσυχῆ  
 σόρων, τρέμειν σε πρὸς ἡσυχῆ παρὰ κηπῶν τοῦ  
 χεῖρος πῶς τῶν συγγραμμάτων, μάταιος ἔφη  
 τυγχάνεις ὡς ἡσυχῆ, ὅς ἰσχυρῶς μὲν γραπτός ἔχ  
 αἶμα

αἰρή, ἀλλὰ τὰς ἀληθινὰς. ἀσκήσιμ δὲ παειδῶν τῶν  
ἀληθινῶν ὡδ' τῶν γεγραμμένων ὁρμᾶς. πρὸς τε τῶν  
ὀνειδίσαντα αὐτῷ τῶν φυγῶν, ἀλλὰ τὸ τὸ γε ἐνε-  
κην εἶπεν ὡς καὶ ὁ δαίμων ἐφελσούφησα. Ἐπάλιν, εἰ  
πρὶν τῷ πνὸς σινωπῆς σὺ φυγῶν κατέγνωσας, ἐγὼ  
δὲ γε εἶπεν ἐκείνων μολῶ. ἰδῶν πρὶν ὀλυμπιονίκῳ  
πρόβατα νέμοντα, ταχέως εἶπεν ὡς βέλπτε μετέβης  
ἀφ' τῶν ὀλυμπίων ὡδ' τὰ νέμει. ἐρωτηθεὶς δὲ τί  
οἱ ἀθληταὶ ἀναίδηρ' εἰσιν, ἔφη. ὅτι κρίασιν ὑείοις  
καὶ βοείοις ἀνθρωπίνῳ. ἦτοι ποτὶ ἀνδραγα-  
τα. ἐρωτηθεὶς δὲ τί εἴδω πρὶν, μελετῶ εἶπεν  
ἀποτυγχάνειν. αὐτῶν τινὰ, καὶ γὰρ ῥῦτο πρῶ-  
τον ἐποίησε διὰ τῶν ἀπορίας, ἔφη. εἰ μὲν καὶ ἄλλω  
δίδωκας δὸς καὶ μοί. εἰ δὲ μὴδ' ἐνὶ ἀπὸ ἐμοῦ ἄρ-  
ξαι. ἐρωτηθεὶς πρὶν ὑπὸ τοῦ τυραννοῦ ποιεῖν αὐ-  
τῷ ἀμείνων χαλκὸς εἰς ἀνδραγατα, ἔφη. ἀφ' οὗ  
ἀρμόδιον καὶ ἀριστογείτων ἐχαλκώθησας. ἐρω-  
τηθεὶς πῶς χρῆται δ' οὐνύσι τοῖς φίλοις. ἔφη,  
ὡς θυλάκοις. τὸ μὲν πλήρεις κρημνῶν, τὸ δὲ  
δὲ κενὸν δὲ ξίπτων. νεογὰ μου ἐπιγρᾶψαντ' ὡδ'  
τῶν οἰκίαν, ὃ τοῦ Διὸς παῖς Ἡρακλῆς καλῶνιεν  
ἐνθάδε κατοικεῖ μὴδ' ἐν εἰσίτω κακῶν, ἐπὶ γρᾶ-  
ψε μετὰ τὸν πόλεμον ἢ συμμαχία. τῶν φιλαρ-  
γυρίαν εἶπε μητρόπολιν πάντων τῶν κακῶν. ἀν-  
σωτον θεασάμεν ὅν πανδοκείω ἰλῶας θυδίου-  
τα, ἔφη. εἰ οὕτως ἡέσας οὐκ αὖ οὕτως ἰδεῖταις.





ὠκύμορθε δῆμοι τέκθε' ἴσσεαι, οἱ ἀγορεύσεις;  
 πλωτῆρθε ποδὶ ἰδεῶρ δὴ ἀλεξόμενον καὶ ὀνομαζοντι  
 τθε' τραπεζότητα καὶ κυαθότητα, ἐγὼ εἶπην ὦ πλά  
 τῆρ τραπέζαν μὲν καὶ κύαθον ὄρεῶ. τραπεζότητα δὲ  
 καὶ κυαθότητα ὁ δαμῶς. καὶ ὁς ἤγαγε λόγον ἔφη. οἷς  
 μὲν γὰρ κύαθε καὶ τραπέζα θεωρεῖται ὀφθαλμοῖς  
 ἔχεις. ὦ δὲ τραπεζότης ὁ κυαθότης βλέπεται, νῦν  
 ὁκ' ἔχεις. ἐρωτηθεὶς πρῶτον καιρῷ δεῖ γαμεῖν ἔφη. σὺ  
 μὲν νῦν μὴ δέητε. σὺ δὲ πρὸς βυτόν σου μὴ δὲ πῶ  
 ρητε. ἐρωτηθεὶς τί θέλεις κρονίου λαβῆναι, ποδὶ κεφα  
 λαίαν ἔφη. μείρακιον ἰδὼν ἡρακλεωπιζόμενον ἔφη. εἰ  
 μὲν πρὸς ἀνδρας, ἀτυχέεις. εἰ δὲ πρὸς γυναικας, ἀ  
 δικεῖς. ἰδὼν ῥητε μείρακιον ἐρυθριῶν, θάρσσει ἔφη,  
 τριούρῳ ὅστις τῆς ἀρετῆς ῥ' ἔχῃ μα. Δυοῖν ῥητε νομι  
 μοῖν ἀκούσας, σὺ δύο ἡγάγε κρητὸν εἰπῶν. ῥη μὲν, κε  
 κλεφτόναι. ῥη δὲ, μὴ ἀκρωλεκτόναι. ἐρωτηθεὶς πρῶτον  
 οἶνον ἠδύως πίνει, ἔφη ῥη ἀλλότριον. πρὸς ῥη εἶπεν  
 τα ἡγάγον εἶναι ῥ' ἑλῶ, ὁ ῥ' ἑλῶ εἶπεν ἀλλὰ ῥ' ἡγάγῃς  
 ἑλῶ. πρὸς σὺ συμβουλεύοντάς ῥη ἀκρωλεκτόναι αὐ  
 τοῖς δουλοῖν ζητεῖν. γελῶν ἔφη, εἰ μάστιγος μὲν χεῖς  
 διογνόντος ῥη, διογνόντος δὲ χεῖς μάστιγος ὁ δύναιται.  
 ἀειδῶν ἑλῶας πληροῦν τθε' εἰσνεύχθην τθε' εἰ  
 ςας φησίμ.

ὦ ξένε, τυραννοῖς ἐκπρὸς μεδίσατο. καὶ ἄλλοτε,  
 μάστιγος δ' ἑλῶαν.

ἐρωτηθεὶς ῥητα πρὸς εἶν κύων, ἔφη, πρὸς μελιταῖος,



χρυσάδια δὲ μολοπικὸς, τέτωρ δ' ἐπαυνοῦν τὰ  
 οἱ πολλοὶ ἐρλμῶσι δὲ ἄρ' ἤννορ συνδίζναι αὐτοῖς  
 ὡδ' τὴν θήραν, οὕτως δ' ἐμοὶ δυνάδει συμβιοῦν  
 δὲ ἄρ' φόβον τῇ ἄλγυθόνωρ. ἐρωτηθεὶς εἰ σφοδρὸν  
 πλανοῦντα ἐσθίουσι, πάντ' ἔπην ὡς καὶ οἱ λοιποὶ  
 ἀνθρώποι. ἐρωτηθεὶς δὲ τί προσάττας μὲν ὑπὸ δὲ δό  
 ασι, φιλοσόφοις δὲ οὐ, ἔφη. ὅτι χωλοὶ μὲν καὶ τυφλοὶ  
 γυγνέσθαι ἐλπίζουσι. φιλοσοφῆσαι δὲ οὐδ' αὖτως. φι  
 λαφύγουσιν ἤτοι. τοὶ δὲ βραδύνοντο, ἀνθρώπων εἰ  
 πην, εἰς τροφὴν σε αὐτῶ οὐκ εἰς ταφὴν. οὐκ εἰδὲζόμε  
 ντο πρὶν ὡδ' ἔφ' παραχαράξαι τὸ νόμισμα ἔφη.  
 ὡς πρὶν χερόντο ἐκείντο ὅτ' ἤμιν ἐγὼ τριούτο οἱ  
 πρὶν σὺ νῦν. ὅπρὶν δ' ἐγὼ νῦν, σὺ δ' εἰπότε. καὶ  
 πρὸς ἄλλων ὡδ' τοὶ αὐτοὶ οὐκ εἰδίσαντα. καὶ γὰρ ἐν  
 οὐροῖς θάττην. ἀλλὰ νῦν δ' εἰς μύνδον ἐλθὼν καὶ θεα  
 σάμεντο μεγαλὰς τὰς πύλας, μικρὰν δὲ τὴν πό  
 λιν, ἀνδρὸς μωδοὶ ἔφη, κλείσατε τὰς πύλας μὴ ἡ  
 πόλις ὑμῶν ἐξέλθῃ. θεασάμεντο πρὶν πρὸ φουροκλή  
 πτω πεφωραμένων ἔφη.  
 ἔλαβε πρὸ φύρετο θάνατο καὶ μοῖρα κραταιή.  
 Κρατοῦρου ἀξιοῦντο πρὸς αὐτὸν ἀπικναι, ἀλλὰ  
 βούλομαι ἔφη ἐν ἀθλίωσι ἀλλὰ λείχειν, ἢ παρὰ κρα  
 τούρῳ τῆς πολυτελεῦς τραπέζης ἀκρῶναι. ἀναξί  
 μνηντο ἔφ' ἔφη παχέι ὄντι προσελθὼν, ἐπίδο  
 καὶ ἡμῖν ἔφη τῆς πτωχείας τῆς γαστρός. καὶ γὰρ αὐ  
 τὸς κοινωδῆσεν, καὶ ἡμᾶς ὠφελήσεις. δὲ λεγομένου  
 πρὶν

πρὶ αὐτῷ τῷ χειρὶ προτείνας ποδίσσασε αὐτὸν αἰ  
 κροταλῶς. ἀγανακτῶν δὲ, τὴν ἀναξιμνήσας ἔφη  
 διαλεξίμῳ βολοῦ τάριχον ἀχλίλυνον. οὐκ ἐδιδόκει  
 νῦν πρὶ ὅτι ἐν ἁφόρῳ ἔφαγῃ, ἐν ἁφόρῳ ἔφη ἢ ἐπεί  
 κησα. ἤνιοι δὲ τὰς φασίμ εἶναι κακῆναι. ὅτι πλάτῃ  
 θεασάμενον αὐτὸν λαλῶντα πλυνόντα προσελθὼν  
 ἥσυχῇ εἴπει αὐτῷ. εἰ δινύσιον ἐθροῦ πόδου, ἐκ αὐ  
 λαλῶντα ἔπλωδε. ἦν δὲ, ἀκροκρίνασθαι ὁμοίως ἥσυχ  
 ῇ. καὶ σὺ εἰ λαλῶντα ἔπλωδε, ἐκ αὐτῶν δινύσιον ἐθε  
 ρώποδου. πρὸς ἦν εἰρήντα οἱ πλείους σου καταγε  
 λῶσι. κακῆναι τυχὸν εἴπῃ οἱ ὄντοι. ἀλλ' ἔτ' ἐκῆναι  
 τῷ ὄντι ὑπὲρ ἔφοντα, ὅτε ἐγὼ ἐκῆναι. θεασάμε  
 νον μετὰ κριον φιλοσοφῶν ἐν γὰρ εἴπῃ, ὅτι αὐτὸ  
 σώματ' ἐρασὰς ὡς ἡ τῆς ψυχῆς καὶ με  
 τὰ γαίης. θαυμάζοντ' ἰνὸς τὰ ἐν σαμβροῦ καὶ ἀνα  
 θήματα, ἔφη. πρὸ αὐτῶν εἴη πλείω, εἰ καὶ οἱ μὴ σωθῇ  
 τὸ ἀντίθετον. οἱ δὲ, ἔδοξε ἀφ' ὧν φασὶ τὸ μηλίς.  
 ἐν μὲν φῶ μετὰ κριῶ ἀπιδόντι εἰς συμπόσιον ἔφη. χεί  
 ρων ἐπαυήσεις. τὸ δὲ ἐπαυελθόντ' καὶ τῇ ἐξῆς εἰ  
 πόντ', καὶ ἀπὸ λθοῖ καὶ χείρων ἐκ ἐγνόμην ἔφη.  
 χείρων μὲν ἔ, ἐν ρυτίων δὲ. δύσκολον ἦται. τὸ δ' εἰ  
 πόντ' ἐκὼν με πείσης. εἰ σε ἰδὼν μὲν πείσαι ἔπῃ  
 σὰ σε αὐτὸν ἀπαμειβασθαι. ἐπαυήσῃ ἐκ λακεδαί  
 μον' εἰς ἀθλῶας. πρὸς ὅντι ἦν πυθόμην ποῖ καὶ  
 πρὸν, ἐκ τῇ ἀνδρῶν ἰπιδ' εἴπῃ εἰς τὴν γυναικῶν  
 πρὸν. ἐπαυήει ἀπὸ ὀλυμπίων. πρὸς ὅντι ἦν πυθόμην  
 εἰ ὅχλος



εἰ ὄχλῳ ἢ πλὺς. πλὺς μὲν εἶπεν ὁ ὄχλος. ὀλίγοι  
 δὲ ἄνθρωποι. σὺ ἄσώτως εἶπε παραπλησίως εἶναι  
 συκαῖς ὡδὶ κρημνῶ πεφυκυῖαις. ὡς τοὶ κρημνοὶ μὲν  
 ἀνθρώπων ἐκ ἀργούσεται. κόρακος δὲ καὶ γύπαε  
 θυσίουσι. φρυγὴς ἀφροδίτῃ χερσὶν ἀναθείσης ἐν  
 δελφοῖς, ὅθεν ὑπὸ γαλῆται, τῆς ἀπὸ τῆς ἐλλυώρ ἀ-  
 κρασίας. ἀλεξάνδρου πρὶ ὑπὸ αὐτῷ αὐτῷ καὶ εἰ  
 πρὸς ἐγὼ εἰμι ἀλεξάνδρου, ὁ μέγας βασιλεύς.  
 καὶ γὰρ φησι διογένης ὁ κύων. ἐρωτηθεὶς τί πρὶν κύων  
 ηὐλίσσεται, ἔφη. σὺ μὲν διδόντας σαίνων. σὺ δὲ μὴ  
 διδόντας ὑλακτῶ. σὺ δὲ πρηνεὺς διακνῶν. ἀπὸ συ-  
 κῆς ὡπώρει. τοὶ δὲ φυλάττουντ', αὐτόθεν πρὸς  
 ἀνθρώπων ἀπήγξατο, ἐγὼ ὅμως φησιν αὐτῷ ηὐδά-  
 ρω. ἰδὼν ὀλυμπιονίκῃ εἰς ἱταίραν πικρότονον ἀρ-  
 νίζοντα, ἰδὲ ἔφη κερὶν ἀειμαίνον ὡς ὑπὸ τοῦ τυχόν-  
 τ' ἡορασίου τραχηλίζεται. τὰς ἑταίρας ἱταί-  
 ρας ἔλεγε θανασίμῳ μελιγράτῳ παραπλησίως εἶ-  
 ναι. ἀριστῶντι αὐτῷ ἐν ἀγορᾷ οἱ πόδες ὥστε συνε-  
 χεῖς ἔλεγον κύον. ὁ δὲ, ὑμεῖς εἶπεν ἐς κινῶν οἱ με-  
 ριστῶντα πόδες ἔμελλον. δύο μαλακῶν πόδεσσιν ἄν-  
 τῳ αὐτῷ ἔφη. μὴ ὑλαβείσεις. κύων τε ὑπὸ τῆς  
 γαίης. πόδι παιδὸς πεπρυσυκότης ἐρωτηθεὶς πρὶν  
 εἶναι, τε γὰρ τῆς ἔφη. ἀφ' οὗ παλαιὸν θεασάμενος ἰα-  
 τρὸν ὄντα ἔφη. τί ὅσον, ἢ ἵνα σὺ πρὶ σε νικήσαντας  
 νῦν ηὐταβαλῆς. θεασάμενος ὅσον ἱταίρας λίθον  
 εἰς ὄχλον βάλλοντα, πρόσεχε ἔφη μὴ γὰρ πατόρα  
 πλήξης

πλήξης. Δείξαντες αὐτῷ παιδαρίου μάχαιραν  
ὡς εἰλήφει παρὰ ἱερατοῦ, ἡ μὲν μάχαιρα ἔφη καλή.  
ἡ δὲ λαβὴ αἰσχερά. ἐπαινουμένη τῶν πυνῶν τὴν ὑπὸ λόντα  
αὐτῷ ἔφη. εἰ μὲν ἐχαρίσω ἔχω. εἰ δὲ ἔχουσας χερσὶ  
μαι. ὑποβολιμαίου πυνὸς εἰρήνεται αὐτῷ ὅτι χερσὶ  
σὸν ἔχει ἐν τῷ ἱματίῳ, καὶ ἔφη. ὅρα εἴδω αὐτὸν ὑποβε  
βλημένον κοιμῶμαι. ἐρωτηθεὶς τί αὐτῷ ποδὶ γένοι  
το ἐν φιλοσοφίᾳ ἔφη. καὶ εἰ μηδὲν ἄλλο τὸ γούῳ  
πρὸς πᾶσαν τύχην παρδοκιδωτά. ἐρωτηθεὶς πό  
θεν εἴη, κοσμοπλίτης ἔφη. θυόντων πυνῶν τῆς θεοῖς  
ὡς τῷ ὑμῶν γινώσκει, ἔφη. ποῦ δὲ τοῦ προδωκῶς ἐμβῆ,  
ἐθύετο; ἱερατὸν ποτε αὐτὸν μὲν πρὸς τὴν ἱερατὴν  
χρῆται.

αὐτὸς μὲν ἄλλους ἐνάειξ', ἀπὸ δὲ ἐκτρέφει ἰσχυροχέρας.  
Τὰς ἱταίρας βασιλῆων εἶναι βασιλίσσας. αὐτὴν  
γὰρ ὅτι αὐτὴ διόξῃ αὐτοῖς. φησὶ σαμῆων ἀβλυαίῳ ἀ  
λέξανδρον διονύσιον, καὶ μὲν ἔφη σάραπιν πρὸς αὐτόν.  
πρὸς τὴν οὐνεδζόμνον ὡς εἰς τὸ πᾶν ἀναδέρσῃ  
εἰσίοι, καὶ γὰρ ἡλίου ἔφη εἰς αὐτὸν ἀκράτῃ, ἀλλ' ὅ  
μαίνεται. ἐν ἰδρῶ Δείπνων μεταξὺ ῥωπαίων ἀφ'  
τῶν παρατεθέντων, ἄρας αὐτὸν ἐξῆλθεν εἰσὶν, εἰς ἱε  
ρόν μηδ' ἄνδρα δὲ μὲν ῥωπαίον εἰσιέναι. πρὸς τὴν εἰρήν  
τα ὅδε μὲν εἰδὼς φιλοσοφεῖς, ἔφη. εἰ καὶ προαποιοῦ  
μαι σοφίαν καὶ εἴδω φιλοσοφεῖν ὅστις. πρὸς τὴν σωι  
σάντα τὴν παῖδα καὶ λείοντα ὡς ἐνφύσας τὸν ὅστις  
καὶ τὰ ἡθὴ κρῶνται, τί οὖν εἴπῃ ἐμοῦ χεῖρ. αὐτὸς  
λίσσον.



λίγοντας μὲν τὰ ἀπουδῶν μὴ προῦντας δὲ, ἔλε-  
 γε μηδὲρ διαφύρειν κιδάρας. καὶ γὰρ ταύτῃ μὴ  
 τε ἀκούειν μήτε αἰδανέσθαι. εἰς θιατρον εἰσῆει  
 ναντίῳ· ᾧ δὲ θύοισιν. ἐρωτηθεὶς δὲ ὅτι τί, τοῦτο ἔ-  
 φη παντὶ τοῦ βίου ὑπὸ τῆς δούλης περιεῖν. ἰδὼν γὰρ νε-  
 ανίσκον θηλυδόμενον, ὃν αἰσχυνὴ ἔφη χείρωνα τῆς  
 φύσεως ποδὶ σεαυτῶ βουλομένην; ἢ μὲν, γὰρ σε  
 ἀνδρῶς ἐποίησε. σὺ δὲ σεαυτὸν βιάζῃ γυναικῶς εἶ-  
 ναι. ἰδὼν ἄφρονα ψαλτήριον ἀρμοττόμενον, οὐκ  
 αἰσχυνὴ ἔφη ὅτι μὲν φθόγγου τοῦ ξύλου προσπε-  
 μόττῃ, τὴν δὲ ψυχὴν εἰς τὴν βίον μὴ ἀρμόττῃ;  
 πρὸς τὴν εἰπόντα ἀνεπιτήδειον εἰμὶ πρὸς φιλο-  
 σοφίαν, τί ὅμως ἔφη ὅτι τοῦ καλῶς ζῆν μὴ μέλει  
 σοι. πρὸς τὴν καταφρονουῦντα τοῦ πατρὸς, οὐκ αἰ-  
 σχυνὴ ἔφη, καταφρονῶν τούτου Διὸς ὅρ μὲγα φρο-  
 νεῖς; ἰδὼν ἐπὶ νεανίσκον ἀπρεπῶς λαλοῦν-  
 τα, οὐκ αἰσχυνὴ ἔφη ὅτι ἐλεφαντίνου κολοῦ μολι-  
 βδίνῳ ἑλκῶν μοχλαίαν; ὁπερὶ ζόμενον ὅτι ἐν  
 καπηλείῳ πίνῃ, καὶ ἐν κρυφαῖῳ φησι κέρομαι. ὁ  
 περὶ ζόμενον ὅτι παρὰ ἀντιπάτρου τειβώνιον ἔ-  
 λαβον ἔφη.

ὅτι ἀπὸ βλητῶν δὲ θεῶν ἐκινυδία δῶρα.

Πρὸς τὴν ἐνσεύσαντα αὐτὸν δούλῳ, εἶτα εἰπόντα φυ-  
 λαῖσαι, πλῆξαι αὐτὸν τῇ βακτηρίᾳ εἶπε φυλαῖσαι.  
 πρὸς τὴν λιπαροῦντα τῇ ἑταίρᾳ, τί θέλεις ἔφη τυ-  
 χεῖν ὡς ταλαίπωρε οὐ τὸ ἀποτυχεῖν ἀμεινοῖς ἐστί.

πρὸς

πρὸς ὅν μιν αἰσχρονομία, βλέπε εἶπε μὴ ἡ τῆς κεφαλῆς σου ἐν ὠδία διωδίαρ σου ἵδῃ βίω παρὰ ὅχῃ. σὺ μὲν οὐκ ἐπὶ Δουλοῦταις, σὺ δὲ φαύλους ἐν πιθυμίας δουλοῦταις. ἐρωτηθεὶς δὲ τί ἀνδραγαθία ἐκλήθη, ὅτι φησὶ σὺ πόδας ἀνδρῶν εἶχον, τὴν δὲ ψυχὴν ὁποῖαν σὺ νῦν ὁ ζεταζῶν. ἄσωτον ἦτε μιν. πυθομένην δὲ εἶπε τί σὺ μὲν ἄλλου ὁβολὸν ζητεῖς αὐτὸν δὲ μιν, ὅτι εἶπε παρὰ μὲν τῶν ἄλλων πάλιν ἐλπίζω λαβεῖν. παρὰ δὲ σοῦ θεῶν ἐν γουῶσι κείται, εἰ πάλιν λήψομαι. οὐκ αἰσχρονομία ὅτι αὐτὸς αὐτῇ πλάτῃ μὴ αὐτοῦ τῇ, κἀκεῖν

ἄγχι ὅχῳ κεφαλῇ ἵνα μὴ πρὸς τοῖς ἄλλοις. ἵδῃ τοξότῳ ἀφύῃ, παρὰ τὸν σκοπὸν ἐκάλισεν εἰσὶν, ἵνα μὴ πληγῶ. σὺ ἐρωτῶντας ἴφη πρὸς ἡ δουλὴν ἀτυχῆν. ἐρωτηθεὶς εἰ κακὸς ὁ θάνατος, πῶς εἶπε κακὸς ὃν παρόντος οὐκ αἰσχρονομία; πρὸς ἀλέξανδρον ὡς αὐτὰ καὶ ἐπόντα οὐ φοβῆ με; τί γὰρ εἶπεν εἰ ἀγαθόν, ἢ κακόν; τοῦ δὲ ἐπόντος ἀγαθόν, τίς ὅμως εἶπε τὸ ἀγαθόν φοβεῖται; τὴν παιδείαν εἶπε τοῖς μὲν νέοις σωφροσύνην, τῶν δὲ πρεσβυτέρους παραμυθία, τοῖς δὲ πένησι πλοῦτον, τοῖς δὲ πλουσίοις κῆσμον εἶναι. πρὸς Διδύμωνα τὸν μοιχὸν ἰατροῦνται ποτε κῆρης ὁ φθαλμὸς, ὅρα φησὶ μὴ τὸν ὀφθαλμὸν τῆς παρὰ θένου ἰατροῦ, τὴν κῆρην φθείρης. ἐπόντος



πινὸς ὅτι ὑπὸ τῶν φίλων ὑπὸ βουλόμεται, καὶ τί Δεῖ  
 πράττειν ἔφη, εἰ δέήσει τις φίλοις καὶ τοῖς ἐχθροῖς ὁ-  
 μοίως χρῆσθαι. ἐρωτηθεὶς τί χάμιον ἐν ἀνθρώποις,  
 ἔφη παρρησία. εἰσελθὼν εἰς διδασχάλειον, καὶ μοῦ-  
 σας μὲν ἰδὼν πολλὰς, μαθητὰς δὲ ὀλίγους, (ὡς θεοῖς  
 ἔφη διδασχάλει πολλοὺς μαθητὰς ἔχεις. εἰώθει δὲ  
 πάντα πρὶν ἐν ὧδ' εἰσὼ καὶ τὰ δῆμντρον καὶ τὰ  
 ἀφροδίτης. καὶ τριούτσου πινὰς ἡρώτα λόγους. εἰ ῥ'  
 ἀριστῶν μὴδὲρ εἴη ἀρτηρ. ὅδ' ἐν ἀγορᾷ ὅστις ἀρ-  
 τηρ. ὅκ' ἐστὶ δὲ ἀρτηρ ῥ' ἀριστῶν. ὅδ' ἐν ἀγορᾷ ὅστις  
 ἀρτηρ. χερσὺν γὰρ τε ἐν ὧδ' εἰσὼ συνεχὲς εἶθε ὡς  
 ἔλεγε καὶ τὴν κοιλίαν παρατεταμένην τοῖς τοῖμοι  
 παύσασθαι. ἀναφύρεται δὲ καὶ ἄλλα εἰς αὐτὸν, ἃ  
 μακρόν αὖν εἴη καταλείπειν πολλὰ ὄντα. διπλὴν δὲ  
 ἔλεγε εἶναι τὴν ἀσκησιν. τὴν μὲν, ψυχικὴν. τὴν δὲ,  
 σωματικὴν. ταύτην καὶ ὡς ἐν γυμνασίᾳ συνεχεῖς  
 γινόμεναι φαντασίαι, ἐν λυσιᾷ πρὸς τὰ τῆς ἀρετῆς  
 ἔργα παρέχονται. εἶναι δὲ ἀτελὴ τὴν ἐτόρην χω-  
 εἰς τῆς ἐτόρας, ὅδ' ἐν ἡττῶν ἐνδύας καὶ ἰσχύος ἐν  
 τοῖς προσήκουσι γυμνασίοις ὡς ποδὶ τὴν ψυχὴν καὶ  
 ῥ' σῶμα. παρετίθητο δὲ τεκμήρια τοῖς ῥαδίως ἀπὸ τῆς  
 γυμνασίας ἐν τῇ ἀρετῇ καταγίνεσθαι. ὅς ἑστιν τε γὰρ  
 ἐν τε ταῖς τεχναῖς ταῖς βαναύσοις καὶ ταῖς ἀλ-  
 λαις ὅτι τὴν τυχεύσαν ὀξυχειρίαν οὐ τεχνίτας ἀπὸ  
 τῆς μελέτης πεπνημένους. τὰς τε αὐλητὰς καὶ  
 οὐς ἀθλητὰς, ὅσον ἐπὶ φέρουσι ἐν ἡμέτεροις τῇ ἰδιᾷ  
 τῇ

εἶναι δι-  
 γήρους

ηρνήσει τῇ συνεχεί. καὶ ὡς ἔρι εἰ μετ' αὐτῆς τῶν  
 ἀσκησιμ καὶ ὑπὸ τῶν ψυχῶν, ἐν αὐτῇ ἀνωφελῶς καὶ  
 ἀτελῶς ἐμὸς χθου. ἔδιδε γὰρ μὲν ἔλεγε ἡ παρὰ παρ  
 ἐν ἑαυτῷ βίω χωρὶς ἀσκήσεως ηγαρεθοῦσαι. διωατῶν  
 δὲ ταύτῃ παῖν ἐκινῆσαι. διὸν ὁ αὐτὶ τῶν ἀχρή-  
 σων πόνων οὗς ηγατὰ φύσιν ἐλομὲν τὸν ζῆν ἐνδαιμό-  
 νως, πόδ' αὖ τῶν ἀνοιῶν ηγατὰ δαιμονοῦσι. καὶ γὰρ αὐτῶν  
 ὅτι ἡδονῆς ἢ ηγατὰ φρόνησις ἡδονατῇ προμελετηθεῖ-  
 σα. καὶ ὡς πόρ οἱ συνεδιδοῦντες ἡδῶς ζῆν, ἀνδῶς  
 ὑπὸ τῶν ῥωαντίων μετῆσιμ. οὕτω οἱ ῥωαντίων ἀσκη-  
 θήντες, ἡδονατῇ τῶν ἡδονῶν ηγατὰ φρονούσι. τῶν  
 αὐτὰ διελέγχο καὶ πρῶτον ἐφαίνω, οὕτως νόμισμα  
 παρὰ χαρὰ τῶν, μηδὲρ οὕτω τῶν ηγατὰ νόμων ὡς  
 τῶν ηγατὰ φύσιν διδύς. ἔρ' αὐτῶν χαρακτηρεῖται  
 βίου λέγων διεξάγειν ὅρ' πόρ καὶ ἡρακλῆς. μηδὲρ  
 ἐλδουθρίας περὶ κινῶν. πάντα τῶν σοφῶν εἶναι λέ-  
 γων. καὶ ριούτ' αὐτῶν λόγ' αὐτῶν οἷ' αὐτῶν πρῶτον  
 ἐξηγεῖται. πάντα τῶν θεῶν ἔστι. φίλοι δὲ τῶν σοφοῖς οἱ  
 θεοί. κρινὰ δὲ τὰ τῶν φίλων. πάντα ἀφ' αὐτῶν σοφῶν.  
 πόρ' αὖτε τοῦ νόμου ὅτι χωρὶς αὐτοῦ ἔχ' οἷον τὴν πρῶτον  
 τούτου. ἔγ' αὖτε φησὶν ἀνδρὶ πρῶτος ὁφελός τι εἶναι  
 ἀσείου. ἀσείον δὲ ἢ πρῶτος. νόμου δὲ ἀνδρὶ πρῶτος ἔ-  
 δειν ὁφελῶ, ἀσείον ἀφ' αὐτοῦ νόμου. ἐν γῆρας δὲ καὶ  
 δόξας καὶ τὰ ῥιούτα πάντα διέπαιξε, προηροσμή-  
 ματα ηγατίας εἶναι λέγων, μόνον τὴν ὁρθὴν πρῶτον  
 αὐτῶν εἶναι, τῶν ἐν νόμῳ. ἔλεγε δὲ καὶ κρινὰς εἶναι δειν



πὰς γυναικας, γάμον μηδὲρ ὀνομαζωρ, ἀλλὰ ῥῃ  
 πείσαντα τῇ πάσῃ σωεῖναι. κριντοὺς δὲ ὄρεϊ ἰδοῦ  
 καὶ τοῦ ὑέας. μηδ' ἐν τε ἄρτηρ εἶναι θ' ἰδοῦ τὶ λα-  
 βεῖν, ἢ τῶν ζώων πνὸς γούσκασαι. μὴ δ' αἰόσιον εἶ-  
 ναι ῥ καὶ τῶν ἀνθρωπείων κρείων ἀφαισάσαι, ὡς Δῆ-  
 λωρ ἐν τῶν ἀλλοτρίων ἐθῶν. καὶ ἱερὸν δὲ ὁρθῶ λόγῳ  
 πάντα ἐν πᾶσι καὶ ὄρεϊ πάντῳ εἶναι λέγων. καὶ γὰρ  
 ἐν ἱερῷ ἄρτῳ κρείων εἶναι, καὶ ἐν ἱερῷ λαχάνῳ ἄρτου.  
 καὶ τῶν σωματῶν τῶν λιτῶν ἐν πᾶσι διαπνυωρ ἀ-  
 δήλωρ ῥέων καὶ ὄγκων εἰσκηνομεγῶν καὶ σιωατ  
 μιζομεγῶν, ὡς Δῆλωρ ἐν ἱερῷ θυίση πρίει. εἴ γε αὐτοὶ  
 τραγωδία καὶ μὴ φιλίσκου τοὶ ἀγινίτῃ ἐκείνου  
 γνωρίμῃ ἢ πασιφῶντ' τοὶ λουκιανῶν ὅρ φησι φαβω-  
 ρίν' ἐν παντ' ἀπὴν ἰσορία μὲν τῶν τελευτῶν αὐ-  
 τοὶ συγγράφαι. μουσικῆς τε καὶ γεωμετρικῆς καὶ ἀ-  
 στρολογίας καὶ τῶν ριούτῳ ἀμελείν ὡς ἀχρήστων ἐ-  
 ἴη ἀναγκαίωρ. ἐνδοχῶτα τ' δὲ ἐγρήγορ ἐν ταῖς ἀ-  
 παντήσεσι τ' λόγων, ὡς Δῆλωρ θ' ὡρ προειρήναμιν.  
 καὶ πρᾶσιρ ἦνεγκε γήναιότατα. πλείων γὰρ εἰς αἴγι-  
 ναι ἐπεραταῖς ἀλούς ὡρ ἦρξε σκίρπαλος εἰς κρή-  
 νην ἀπαχθεῖς ὑπὸ πλάσκει. ἐπὶ τὴν κήρυκ' ἐρωτῶν  
 τ' τί οἶδε πρίειρ, ἔφη ἀνθρώπων ἀρχαί. ὅτε καὶ δει-  
 ξας πινὰ κορίνδιον ἐν πάρευφορ ῥῃ προειρημένον ξε-  
 νιαδίω, ἔφη τότῳ με πώλει. εἴ τ' Δουπτότ' χερί-  
 ρει. ὠνεῖται δὲ αὐτὸν ὁ ξενιαδίνης. ἐπὶ ἀπαγαγὼν εἰς  
 τὴν κρήνην, ἐπίστησε ῥίς ἑαυτοὶ παιδίον, καὶ πᾶσαν  
 ἐνεχεί-

ἐν χειρίσει τῷ δικίαν. ὁ δὲ, οὕτως αὐτὸν ἐν πᾶσι διει-  
 τίθει, ὥς τε ἐκείνου ποδῶν ἀγαθὸς ἔλεγε δαίμων  
 εἰς τῷ δικίαν μου εἰσελήλυθε. φησὶ δὲ κλεομένης ἐν  
 τῷ ὑπὲρ γραφομένη παιδαγωγικῷ αὐτὸ γνωρίζου  
 λυτρώσασθαι αὐτὸν θελήσει. ἄρ' οὖν δὲ, ἐν ἡμέραις αὐτῶν εἰ  
 πέμψῃ. ὁ δὲ γὰρ αὐτὸν λέοντας δούλους εἶναι τῶν τρέφον  
 τῶν. ἀλλὰ αὐτὸν τρέφοντας τῶν λεόντων. δούλου γὰρ ὁ  
 φοβέσθαι. τὰ δὲ θηρία φοβέσθαι τοῖς ἀνθρώποις εἶναι. θαν-  
 μαστὴ δὲ πῶς τῷ ποδὶ ἄνδρα πειθῶ, ὥς τε πάνθ' ὅν  
 πινοῦν ὁμοίως αἰρεῖν τοῖς λόγοις. λέγεται τοῦ οὐνοῦ  
 κελτὸν πῶς αἰγινῆτι πῆμα εἰς ἀθλίαν διδοῖν ὅν  
 τινι ὑοῖν ἄρ' ἐτόρον ἀνδροδύτου. ὁρ' ἀκούσαντα τοῦ  
 διογῆνους αὐτόν τι προσμεῖναι. ἄρ' οὖν δ' ἐπ' αὐτὸν καὶ  
 ἄρ' ἐτόρον ἀκρεῖλαι ἄρ' περὶ βύτορον, φιλίσκον τὸ  
 προσημνόν. ὁμοίως δὲ ἐπ' ἄρ' φιλίσκον καὶ ταχε-  
 θῶναι. ἄρ' οὖν αὐτὸ ἀφελόνον, μηδὲν ἡτορ σωεῖ-  
 ναι τοῖς παισὶ φιλοφροντα. γιαντὴ πῶς προσλῶ ἵν' ἐξ  
 διογῆνους τοῖς λόγοις. ἡκουσε δὲ αὐτοῦ καὶ φωνίαν ὁ  
 ἐπὶ κλῶ χερσός. καὶ σίλωων ὁ μεγαρσός. καὶ ἄλλοι  
 πλείους ἀνδρὸς περὶ πηροί. λέγεται δὲ πρὸς τὰ ἐννε-  
 νήκοντα ἔτη βίος τελευτῆσαι. ποδὶ δὲ τοῦ θανάτου δὲ  
 αἰφοροὶ λέγονται λόγοι. οἱ μὲν γὰρ βοὸς πρόβα φαγόντα  
 ὡμὸν χολοδρῶς ληφθῆναι, καὶ ὡς τελευτῆσαι. οἱ  
 δὲ, ὁ πνεῦμα συγκερατῆσαντα ὡρ' ὅτι καὶ κερκί-  
 δας ὁ μεγαλοπλῆτης ἢ κερκὴς λέγων ἐν τοῖς μελισσῶ-  
 βοις οὕτως.

ἔμαθ'



ἔμην ὁ πᾶς γ' ἵα σινωπὲς τλήθ  
 ὁ βακρυφόρος διπλοῖματ' αὐθριβόσσης,  
 ἀλλ' αὐτὴ βαχὺλ' ὡς τ' ὀδόντας ἱρείσας  
 καὶ τ' πνεῦμα σινωδικῶν, εἰς γὰρ ἀλαθίως  
 διόγνης ζανὸς γόν' ἔραυιός τε κύων.  
 ἄλλοι φασὶ πολύποιοι κυσὶ συμμυδρίσεντα βουλό-  
 μνον ὄντω δὴ χθλῶναι τοῦ ποδὸς τὸν τένοντα καὶ η-  
 ταστέλει. οἱ μὲν γὰρ γινώσκουσι αὐτὸν κατὰ φησὶν αὐ-  
 τοδόνος ἐν δὴ δὸς χαῖς εἰσάγει τὴν τοῦ πνέματος  
 ἐγκρατῆσιν. ἐτύγχανε μὲν οὖν διαγωγὴν ἐν τῷ κρα-  
 νείῳ τῷ πρὸ τῆς κορυφῆς γυμνασίῳ. κατὰ δὲ τὸ ἐ-  
 θ' ἦσαν οἱ γινώσκουσι καὶ αὐτὸν κατὰ λαμβάνουσιν  
 ἐγκρατῆσιν. ἔδ' εἰσάγει αὐτὸν κορυμνόν.  
 ἔδ' γὰρ ὡς τις νυκταλὸς καὶ ἑσπέρης. ὅθεν ἀκρπεί-  
 τασκεν τὸν τρέβονα ἐκπνοῦν αὐτὸν κατὰ λαμ-  
 βάνουσι. καὶ ἑσπέρης πρὸς βουλόμνον λοι-  
 πὸν ἑσπέρης τὸ βίου. ἔνθα καὶ σῶσις ὡς φασὶν  
 ἐγὼ τὴν γινώσκων, τίνος αὐτὸν δάψωσιν. ἀλλὰ  
 καὶ μέλει χειρῶν ἦλθον. ἀφροσύνης δὲ τὴν πα-  
 τέρων καὶ τὴν ἑσπέρης τὴν, ἑσπέρης ταφύων  
 τὸν αὐτὸν, παρὰ τῇ πύλῃ τῇ ἐρούσῃ εἰς ἰσθμόν. ἐπεί-  
 σησε τὴν αὐτὸν κίονα, καὶ ἐπ' αὐτὸν λίθου παρίου  
 κτύπα. ὅσους δὲ καὶ οἱ πολῖται αὐτὸν χαλκῶς εἰκό-  
 σιν ἐτίμησαν αὐτὸν, καὶ ἐπὶ γράφον ὄντω.  
 γηρασκει καὶ χαλκὸς ἑσπέρης χρόνου. ἀλλὰ σὸν ἔπ  
 καὶ δ' ὁ πᾶς αὐτὸν διόγνης καθελεῖ,

μουῦ

μουῶν ἐπεὶ βιοτᾶς αὐτὰρ κέα δόξαν ἰδείξας

θυηρῖς, καὶ ζωῆς οἶμον ἱλαφροτάταν.

Εἴσι καὶ ἡμῶν ἐν ἔσθ' προκελευματικῶ μίτρω.

Διογῆνός ἄγε, λίγε, τίς ἱλαβέ σε μόρῳ

εἰς αἰδῶν; ἱλαβέ με κινὸς ἀγχιον ὁδῶξ.

Εὐιοι Δέ φασι τελευτῶντα αὐτῶν καὶ ἔντεϊλασθαι

ἄταφοι ὄναι, ὡς πᾶν θνητὸν αὐτῷ μεταλχοι. ἢ εἰς

γε βόθρον συωῶσαι, καὶ ὀλίγῳ κύνει ἐπαμύσαι. οἱ

δὲ, εἰς ἔμῃ λιασὸν ἐμβαλεῖν, ἵνα τῖς ἀδελφοῖς χρεῖ

σιμῳ γήνηται. δημήτριῳ δ' ἐν τῖς ὁμωνύμοις φη

σὶ τῆς αὐτῆς ἡμόρας ἀλέξανδρον μὲν ἐν βαβυλῶνι,

Διογῆνι δ' ἐν κρεῖνθῳ τελευτῆσαι. καὶ δὲ γόρῳ καὶ

τὰ πλὴν τρίτῳ καὶ δευτέρῳ καὶ ἡγερεῖν ὀλυμπιά

δα. φέρεται δ' αὐτῷ βιβλία τὰδε. Διῶλσοι κεφα

λαίων. ἰχθύας. κολοῖος. πάριδαλις. δῆμῳ ἀθλωαί

ων. πρλιτεία. τέχνη ἡδική. πόδι πλούτῳ. ἱρωπικός.

θεόδωρ. ὑφίας. ἀείσαρχῳ. πόδι θανώτῳ. ὠλσοι

λαί. τραγωδία. ἐπῶν. ἐλγῆ. θυίσης. ἡρακλῆς. ἀχιλ

λούς. μήδεια. χρύσιππῳ. οἰδίππῳ. σωκράτης δ'

ἐν ἔσθ' πρῶτῳ τῆς θλαδουχῆς, καὶ σάτυρῳ ἐν ἔσθ' τε

ταφῶν τῶν βίων, ὅδε μ' εἶν' Διογῆν' οὐ φασί. τά τε τρα

γωδία φησὶν ὁ σάτυρῳ φιλίσκου εἶναι τὸ αἶγι

νήτῳ, γνωρίμου τῷ Διογῆν' οὐ. σωτίῳ δ' ἐν ἔσθ' ἐβδό

μῳ ταῦτα μόνον φησὶ Διογῆν' οὐ εἶναι. πόδι ἀρετῆς.

πόδι ἀγαθοῦ. ἱρωπικός. πτωχόν. γλμαῖον. πάριδα

λιρ. ἡγερεῖον. κεφαλίων. φιλίσκου. ἀείσαρχον.

P σίσυ

συγγραμμά-  
τα αὐτῶ



σίσυφορ. γανυμήδην. χρείας. ὑπὸ σοφῶς. γέγονασι  
 δὲ διογένης πῦντε. πρῶτον ἀπρωϊάτης φυσι-  
 κός. ἀρχὴ δ' αὐτῷ τοῦ συγγραμματος ἦδε. λόφου  
 παντὸς ἀρχηγὸς δοκίμοι χρεῶν εἶναι τῷ ἀρχίῳ  
 ἀναμνησθήτην παρέχεσθαι. διούτορος σικυώνιον  
 ὁ γράψας τὰ πᾶσι πελοπόννησον. τρίτον αὐτὸς εἰ-  
 τῷ. τέταρτον σωϊκός, γῆν σελούκευς, καλού-  
 μιν δὲ βαβυλώνιον ὅσα τῷ γεινῖαν. πέμπτον  
 τασεύς, γρηφῶς πᾶσι πικτικῶν ζητημάτων, ἀλύ-  
 ειρ ὑπὸ χρεῖ. ἔν δὲ φιλόσοφον ἀβλυσώδωρον φησὶν  
 ἐν ὀγδόῃ πᾶσι ἀεὶ σιληπνὸν φαίνεσθαι ὅσα τὸ  
 ἀλείφεται.

## ΜΟΝΙΜΟΣ

**Μ**Ονιμὸς συρακούσιον μαθητὴς μὲν Διογέ-  
 νου. δικέτης δὲ τινὸς τραπεζίτου κορινθίου  
 καὶ δάφνοιο σωκρατῆος. πρὸς ἑαυτὸν συνεχὺς ἀφικνού-  
 μιν ὁ ξενιάδης ὁ ἔν δὲ διογενίῳ ἐωνιμῶν τῷ ἀ-  
 ρετῷ αὐτοῦ καὶ τῷ ἔργῳ καὶ τῷ λόγῳ διηγού-  
 μιν, εἰς ἑρωτα τὰνδρὸς ἐνέβαλε ἔν δὲ μόνιμον. αὐ-  
 τήν γὰρ ἐκείνῳ μακίαν προαποικθεὶς τὸ τε κόρι-  
 μα διεξίππει, καὶ πᾶν ἔν δὲ τραπεζῆος ἀργύριον,  
 ἕως αὐτὸν ὁ δίδωρ πῆς παρετήσατο. καὶ ὅς ἐνθάδε διο-  
 γένῃσι. παρεκλογέθησε δὲ καὶ κρητῆτι τῷ κυ-  
 κῶ συχνά, καὶ τῷ ὁμοίῳ εἶχον, ὅτε καὶ μάλλον ὁ-  
 ρῶν αὐτὸν ὁ δίδωρ πῆς ἐδόκει μαίνεισθαι. ἐλέγχετο δὲ  
 αὐτὸς







θόρυβον τὴν χοῖνιν, καὶ τὸ μνηστῆρος μίλην.

Φόρεται δ' αὐτὸ κακῆναι.

ἔρωτα παύει λιμός. εἰ δὲ μὴ, χρόνῳ.

αὐτὸν δὲ τέτρισι μὴ δύνῃ χεῖσθαι, βρόχῳ.

ἦν μαρξὶ δὲ ἡτὶ τῶν τριτῶν καὶ δευτέρῳ ἐκ τῶν  
ὀλυμπιάδων. ὅτε φησὶν αὐτοῖς τῆς ἐν ὁδοῦ χάρις  
θεασάμενον ἐν τῇ τραγωδίᾳ τῆλε φωνήσας  
χοῖντα καὶ τὰλλα λυγρόν, αἰεταὶ ὑπὸ τῶν κυνῶν  
φιλοσοφίαν. ἔξαργυρῶν σάμενον τε τῶν ἑσίων, καὶ γὰρ  
ἡ τῶν ὑποφανῶν, ἀθροίσαντα πρὸς τὰ ἐκ τῶν ὁδοῦ  
σας τὰ λανθάνοντα, ὅτις πλείους ἀνέιναι ταῦτα. αὐτὸν  
δὲ καὶ τὸν ὄντως οὕτω φιλοσοφῆν ὥς καὶ φιλήμονα τὸν  
κωμικὸν αὐτὸν μεμνῆσθαι. φησὶ γοῶν.

καὶ τὸ θόρυβον μὲν ἔχον ἰσχυρὸν δακτύλῳ

ἢ ἐκ τῆς ἡ, τὸ δὲ χεῖρ ἔχον ἔχον.

φησὶ δὲ διοκλῆς πεῖσαι αὐτὸν διογῆν τῶν ἑσίων μὴ  
λόγον ἀνέιναι, καὶ εἰπὶ ἀργύριον εἰς εἰς θάλατταν  
βαλεῖν. καὶ κρατήσῃ μὲν φησὶν ὁ οἶκος ὑπὸ ἀλε-  
ξάνδρου. ἰππαρχίας δὲ ὑπὸ φιλιππου. πηλείδης τὴν  
πῆ βακτηρίαν τῶν συγγενῶν πνῆς προσιόντας καὶ  
ἀκρετέπνους ἰδίῳ. καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ. φησὶ δὲ Δη-  
μήτριος ὁ μάγνης τραπέζι τῇ πνὶ πᾶσι κατατίθεας  
τὸ ἀργύριον, σιωθῆμενον εἰ μὲν οἱ παῖδες ἰδίῳται γε-  
νηθεῖν αὐτοῖς ἀκρετέπνους. εἰ δὲ φιλόσοφοι ὅσοι δὴ μὴ  
ὁδοῦ εἰμαι. μνηστῆρος γὰρ ἐκείνου δεῖσθαι φιλοσο-  
φούτας. ἐξαργυρῆς δὲ φησὶν ἰππαρχίας πόλιν



ἦς λείποντο γυμνασίου παιδὺς αὐτῷ ὄνομα πασι κλέ-  
 οντος, ὅτ' ἐξ ἐφ' ἑβωρ ἐγγύς ἀγαγεῖν αὐτὸν ἐπ' οἰκημα-  
 παιδίσκες. καὶ φαῖναι ἔδει αὐτῷ πατρῷον εἶναι  
 τὸν γαμόν. αὐτὸν τὴν μοιχοδούντων τραγικούς φυ-  
 γὰς καὶ φόνου ἔχειν ἐπαθλον, τὰς τε ἰταίρας  
 προσιόντων κωμικούς. καὶ ἐξ ἀσωτίας γὰρ καὶ μέ-  
 θης μακίαν ἀποργαζέσθαι. τὰς τε γέγονε πασι κλέ-  
 ἀδελφὸς μαθητὴς ἐν κλείδου. χάριν δ' αὐτῷ φαβω-  
 ρῖνον ἐν Δουτόρῳ τὴν ἀρμυνημονομακίαν φόρει.  
 φησὶ γὰρ παραηλῶν πόρι τὸ τὸν γυμνασιάρχου  
 τὴν ἰσχύων αὐτῷ ἠπείρω. ἀγανακτῶν δ' ἐφ' ἡ. τί  
 γὰρ ἔχει καὶ ταῦτα σά δ' ἐστι κατὰ πόρ καὶ τὰ γόναι-  
 τα; ἔλεγε τε ἀδύνατον εἶναι ἀδωπώτων ἐν εἶναι.  
 ἀλλ' ὥς πόρ ἐν ῥοιᾷ καὶ σαπρόν πινει κήκορ εἶναι.  
 νικηφόρον ἐξ ὁρμίστας τὸν κιδαρῶν ἑωπωπιδῶν,  
 προδῆς ὅσω πιπλωκίον τῷ μετώπῳ, ἐπὶ γράφει, νει-  
 κήκορ ἐπὶ εἶ. τὰς πέντας ἐπίτηδον ἐλιδόρει,  
 συγγυμνάζων ἑαυτὸν πρὸς τὰς βλασφημίας. δημὴ  
 τριον τὸν φαληρέα πέμψαντα αὐτῷ ἀφ' ἑαυτοῦ οἶνον  
 ὠνείδιστον εἰπῶν. εἴθε γὰρ αἱ κρήναι καὶ ἀφ' ἑαυτοῦ  
 ῥορ. δὴλον ἐν ὥς ὕδωρ ἐπινεν. ἑπὶ τὸ ἀβλύσιον ἀσυ-  
 νόμων ὑπὸ πικρῶν ὅτι σινδύνα ἡμῶν ἐσο, ἔφη καὶ θεό-  
 φρασον ὑμῖν δειξω σινδύνα ποδὶ βιβλημενόν. ἀπι-  
 στωὺς τὴν δὲ ἀπὸ γαλῶν ὑπὸ κρυφίον καὶ ἔδειξε κειρό-  
 μινον. ἐν θήβαις ἑπὶ τοῦ γυμνασιάρχου μασιγῶν,  
 οἱ δὲ, ἐν κρήνῳ ἑπὶ ἐνθυκρῶν καὶ ἐλκόμενον τοῖς  
 ποδῶν

πρὸς, ἐπέλεγε ἀφροντισῶν.

ἔλκε πρὸς τεταγῶν ὁρᾷ βήλου θόρυβον οἰοιο.

Δουκῆς δὲ φησὶν ἐλθῆναι αὐτὸν ὑπὸ μινεδήμω  
τοῖ ἐρετρινοῦ. ἐπειδὴ γὰρ ἔπαρεπὴς ἦν καὶ ἰδοὺ  
χρησιμότερον ἀσκληπιάδην ἢ φλιασίω, ἀφάμε-  
ντο αὐτοὶ τῷ μητρὶ ὁ κράτης ἔφη. ἔνδον ἀσκληπιά-  
δης. ἐφ' ᾧ δυοῦς ὁρᾶντα τὸν μινεδήμω ἔλκειν αὐ-  
τόν. τὸν δὲ εἶδε ὑπὸ λείγειν. ζῶντα δ' αὐτὸν ὁ κιπριεὺς  
ἐν ταῖς χεῖρας καὶ κώδιον αὐτὸν φησὶν πρὸς προ-  
ράται ἢ τριβῶνι ἀνεπιτρεπῶντα. ἡ δὲ καὶ τῶν  
ἄλλων ἀσχερός. καὶ γυμναζόμενον ἐγχεῖν. εἰώθει δὲ  
λείγειν ἐπαίρων τὰς χεῖρας. δάξῃ κράτης ὑπὸ  
ὀφθαλμῶν καὶ τοῖ λοιποῦ σώματι. τὸ τούτου δὲ ὁ-  
φείδει ἡγεταγλῶντας ἦδη καὶ σωδυσπασμένην  
ὑπὸ νόστου. καὶ σὲ μακαρίζοντας, αὐτὸν δὲ ἡγεταμέ-  
μενον ὑπὸ τῇ ἀργίᾳ. ἔλεγε δὲ μέχει τὸ τούτου δὲ  
φιλοσοφεῖν, μέχεις αὖ δόξωσι τοῖ στρατηγοῖ ἐν ὄν-  
λάτοι. ἐρήμῳ ἔλεγε δὲ μὲν ἡρώων ὄντας, ὡς πρὸ  
αὐτὸν μόχθου ἐπειδὴ μὲν λύνων ὄντων. ὅτε γὰρ ἐκεί-  
νοισι αὐτὸν προσήκουσας ὅτε τούτοις (ὑμῖν) εἶναι, ἀλλὰ αὐτὸν  
ὑπὸ βουλομένου. συναιδανόμενον ὅτι ἀρεθνήσκει,  
ἐπὶ δὲ πρὸς αὐτὸν λέγων.

σεῖχαις δὲ φίλε κύριον,

βαίνεις εἰς αἰδαιο δόμους, κυφὸς ὥρην ὁρᾷ γῆρας.

ἡ δὲ γὰρ κυφὸς ὑπὸ χρόνου. πρὸς ἀλέξανδρον πυθόμε-  
νον εἰ βέλεται αὐτοῖ τῶν πατέρων ἀνορθωθῆναι ἔφη.

καὶ



καὶ τί δέῃ. πάλιν γὰρ ἴσως ἀλέξανδρ' ἄλλ' αὖ  
 τίω κατὰ σῆμα. ἔχειν δὲ πατρίδα ἀδελφίαν, πνί-  
 αν, ἀνάλωτα τῇ τύχῃ. καὶ διογῆντος εἶναι πλότης  
 ἀνεπιβουλότ' εὖ φθόνω. μέμνηται αὐτοὶ καὶ μέγα  
 δρ' ἐν διδύμοις οὕτως.

συμπόμπησι γὰρ τείβων ἔχουσ' ἱμοί,  
 ὥς πόρ κρῶτην τῷ κυνικῷ πρὸ ἡγῶν.  
 καὶ θυγατέρ' ἐξέδωκε κείνοισ ὥς αὐτὸς ἔφη, ὡδὲ πεί-  
 ρα δούς τελευτῶν ἡμόρας.

## ΜΗΤΡΟΚΛΗΣ

**Μ**Αθητὴς αὐτοῦ μητροκλῆς ἀδελφὸς ἱππαρχί-  
 ας, δὲ πρότορον ἀκούων θεοφράστῃ τοῦ πομπη-  
 πητικῶν ῥητοῦν διέφθαρ, ὥς τε πρὶ μελετῇ καὶ  
 μεταξύτως ἀκπαρδῶν, ἔω ἀθυμίας οἱ κατὰ  
 κλεις' ἴω, ἀκπαρδῶν βουλόμην. μαθὼν δὲ  
 ὁ κρῶτης εἰσῆλθε πρὸς αὐτὸν παρακληθεὶς, ἔθ' ὁρ-  
 μῶν ἐπίτηδον βεβρωκός. ἔπειθε μὲν αὐτὸν καὶ δὲ  
 τῇ λόγων μηδὲρ φαῦλον πεπρωκέναι. τῶν γὰρ  
 αὐτὸν γινώσκειν εἶμὴ καὶ τὰ πνύματα κατὰ φύσιν ἀ-  
 πεκύνει. τέλ' δὲ καὶ ἀκπαρδῶν αὐτὸν ἀνέρεω-  
 σεν, ἀφ' ὁμοιότητ' ἔργων παραμυθησάμε-  
 ν'. τὸ πρῶτον ἤκουσεν αὐτοῦ, καὶ ἐγνήει αὐτὸς ἰ-  
 κανὸς ἐν φιλοσοφίᾳ. οὗτ' αὖ τὰ ἑαυτοῦ συγγράμ-  
 ματα κατὰ καὶ, ὥς φησὶν ἐκείνων ἐν πρώτῳ  
 χειρῶν, ἐπέλεγε.

τάδ' ἐς οὐρίων νοῦτόν φαντάσματα.

οἶον λῆρῳ. οἱ δ' ὅτι τὰς θεοφράσου ἀκροάσεις καὶ  
ταφλίγων ἐπέλεγε.

ἤφαισε πρόμολ' ὥδε, θέπς νύ π σέιο χατίζει.

Οὗτ' ἔλεγε τῷ πραγματώ τὰ μὲν, ἀργυρίου  
ὠνητὰ εἶναι, οἶον οἰκίαν. τὰ δὲ, χρόνου καὶ ὑπὸ  
λείας ὡς παιδείαν. τὸν πλουτοῦ βλαβδὸν εἰ μὴ  
πρὸς ἀξίως αὐτῷ χεῖτο. ἐτελεύτα δὲ ὑπὸ γήρας  
ἑαυτὸν πνίξας. μαθηταὶ δ' αὐτοῦ θεόμβροτ' καὶ  
κλειομένης. θεομβρότ' Δημήτρι' ὁ ἀλεξανδρεὺς,  
κλειομένης τῆμαρχ' ἀλεξανδρεὺς καὶ ἑκεκλῆς  
ἐφίσι. ὃ μὲν ἀλλὰ καὶ ἑκεκλῆς θεομβρότ' δὴ  
κονοσν. ὃ μὲν δὲ καὶ πῶς δὲ λέγομεν. ἐγὼ καὶ μέ  
νιππ' σωωπὲς ἐν αὐτῇς ὑπὸ φανῆς.

#### ΙΓΓΑΡΧΙΑ

ΕΘηράθη δὲ τῇς λόγοις καὶ ἡ ἀδελφὴ τῇ μητρὶ  
κλήσιν ἰσπαρχία. μαρωνίται δ' ἦσαν ἀμφό  
τῶροι. καὶ ἦσαν τῇ κρῶτητ' καὶ τῷ λόγῳ καὶ τῷ  
βίῳ, οὐδὲν τῶν μνησθόμενων ὑπὸ σφρομένη, οὐ  
πλούτ', οὐκ ἐν γήρας, ὃ καλῶς. ἀλλὰ πάντα ὑπὸ  
κρῶτης αὐτῇ. καὶ δὴ καὶ ὑπεῖλε τῇς γονεῦσι ἀνέ  
ρήσειν αὐτῶν εἰ μὴ τὸ τῷ δόθει. κρῶτης μὲν οὖν  
παρὰ καλῶς καὶ ὑπὸ τῷ γονεῖ αὐτῆς, ἀρτρεῖ  
τας τῶν παῖδ' ἀπάντα ἐπεί. καὶ τέλ' μὴ πεί  
θω ἀνάσας καὶ ἀρτρεῖ τῶν ἑαυτῷ σκῶν ἀνέ

Q

πικρὺς



πικρὺς αὐτῆς, ἔφη. ὁ μὲν νυμφίος ἔτθ'. ἡ δὲ κτῆσις  
αὐτῇ. πρὸς ταῦτα βουλόβου. ἔδὲ γὰρ ἴσεται κρι-  
νωτός ἐι μὴ καὶ τῷ αὐτῷ ὑπὸ τῆς δούμας τῶν γυναι-  
κείας. ἔπειτα ἡ παῖς. καὶ ταυτὴν ἀναλαβοῦσα οὐκ  
μα συμποδίζει τὰν δέ. καὶ ὅν τῳ φανερῶ συνεγί-  
νεται. καὶ ὡς τὰ Δείπνα ἀπῆκε. ὅτε καὶ πρὸς λυσί-  
μαχον εἰς τὸ συμπόσιον ἦλθεν. ὅντα θεόδωρον τὸν  
ἐπὶ κλῆν ἀθεορ ἐπὶ ἡλεγε, σόφισμα προτείνασα τρι-  
ούτορ. ὁ ποιῶν θεόδωρος οὐκ ἂν ἀδικεῖν λέγοιτο,  
οὐ δ' ἰσπαρχία ποιοῦσα τοῦτο, ἀδικεῖν λέγοιτ'  
αὐτῇ. θεόδωρος δὲ τύπτων ἑαυτὸν οὐκ ἀδικεῖ. οὐ δ'  
αἴα ἰσπαρχία θεόδωρον τύπτουσα ἀδικεῖ. ὁ δὲ,  
πρὸς μὲν τὸ λεχθῆν οὐδὲν ἀπλῶς τῆς, αὐτίσιν  
δ' αὐτῆς βοιωτικῶν. ἀλλ' οὔτε κατεπλάγῃ ἰσπαρ-  
χία, οὔτε διεταράχθη ὡς γυνή. ἀλλὰ καὶ ἐπὶ οὐ-  
τῷ αὐτὸ αὐτῇ.

τίς τὰς παρ' ἰσοῖς ἐκλιπύσσει κορυφίδας.  
ἐγὼ φησὶν εἰ μὴ θεόδωρε. ἀλλὰ μὴ κακῶς σοι δοκῶ βε-  
βουλεύσθαι ποῦ αὐτῇ, εἰ τὸν χρόνον ὃν ἔμελλον ἰσοῖς  
προσκαλώσασιν ἔσθαι εἰς παιδείαν κατεχρησά-  
μην; καὶ ταῦτα μὲν καὶ ἄλλα μυρία τῆς φιλοσο-  
φου. φόρεται δὲ τοῦ κρατῆτος βιβλίον ἐπισο-  
λαί. ἐν αἷς ἄρῃσα φιλοσοφεί, τῶν λέξιν ἔστιν ὅτε πα-  
ραπλησίως πλάττωνι. γέγραφε καὶ τραγωδίας, ὑ-  
ψηλότερον ἐχούσας φιλοσοφίας χαρακτῆρα. οἷον  
ὅστις κακῆνο.

ὅχ εἰς πάτρας μοι πύργῳ, ὅ μίᾳ μοι σίγῃ,  
 πάσης δὲ χόρστου καὶ πῆλισμα καὶ δόμῳ  
 ἔριμῳ ἡμῖν ἔνδραυτᾶσθαι πάρα.  
 Ἐτελεύτησε δὲ γηραιὸς, καὶ ἔταφην ἐν βοιωτίᾳ.

## ΜΕΝΙΠΡΟΣ

**Μ**ΕΝΙΠΡῳ καὶ οὗτῳ κυνικός, τὸ ἀνέχθην  
 ὡς φοῖνιξ, Δούλῳ ὡς φησὶν ἀχαϊκὸς ἐν ἡ/  
 δικῇ. Διοκλῆς δὲ καὶ τὸν Δεσπότην αὐτοῦ πονι/  
 τικὸν εἶναι, καὶ βαλτῶνα καλεῖσθαι. αὐσηρότῳ  
 δὲ αὐτῶν ὑπὸ φιλαργυρίας ἴσχυσε θηβαῖῳ γενέ/  
 σθαι. φόρει μὲν ὅσω πονηροῦ οὐδέν. τὰ δὲ βιβλία  
 αὐτοῦ πολλοῦ καταγέλωτῳ γέμει. καὶ τί ἴσορ/  
 ρῆς μελεώγρου τοῦ κατ' αὐτὸν γενομένου. φησὶ δ'  
 ἔριμῳ ἡμῶν δανείσων αὐτὸν γεγενῆσθαι καὶ κα/  
 λείσθαι. καὶ γὰρ νουτικῶ τὸν δανείζειν καὶ δεξι/  
 χειράζειν ὡς τε πάλμπεισα χρήματα ἀθεοίζειν.  
 τέλῳ δὲ ὑπὸ βουλομένητα πάντων σδρηθῆναι. καὶ  
 ὑπὸ ἀθυμίας βρόχῳ τὸν βίον μεταλλάξαι. Ἐμῆς  
 ἐπαίξαμεν εἰς αὐτόν.

Φοῖνιχα ἢ γῆρας ἀλλὰ κρητικὸν κυῖα ἡμῶν δανείσων,  
 ὅσα γὰρ ἐπεκλήζου οἶδα μένιπρον ἴσως θήβησιν,  
 ὅτῳ ὡς διωρύχει πρὶ καὶ πάντ' ἀπέβαλιν,  
 εἰ δ' ἐνόει φύσιν κυῖος αὐτὸν ἀν' ἐκρέμασθιν.  
 ἔνιοι δὲ τὰ βιβλία αὐτοῦ ὅτι αὐτοῦ εἶναι ἀλλὰ δίου/  
 σίου καὶ ζωπύρου τῶν κολοφωνίων. οἱ τοῦ παύζειν



ἔνευα συγγράφοντος, ἐδίδουσαν αὐτῷ ὥς ἐν δυνάμει  
 μὲν ὁφείδεται. γέγονασι δὲ μὲν ἰσχυροὶ ἔξ. πρῶτον  
 ὁ γράφας τὰ πόρι λυσιῶν καὶ ξάνθοι ὑπὲρ νόμοι  
 νῦν. Δύτον δὲ αὐτὸς ἔτῳ. τρίτον δὲ στρατον  
 κεύς σοφιστής, καὶ ἂν ἀνέχθην. τέταρτον δὲ ἀνδρ  
 ανηριός. πέμπτον δὲ καὶ ἕκτον δὲ ζωγράφοι. μίμνη  
 ται δὲ ἀμφοτέρων ἀκρόδωρος. τῶν δὲ ὅσων τοι κν  
 βιβλία νικῶν βιβλία ἔστι δεκάτριά. νεκυνία. ὁφείδεται. ὑπὲρ  
 αὐτῶν λαὶ κεκομμένον μὲν αὐτὸ τῷ θεῷ προσώπου. πρὸς  
 τοῦ φυσικοῦ καὶ μαθηματικοῦ ἔστι γραμματικούς.  
 καὶ ἰονὰς ὑπὲρ νόμων. καὶ τὰς θεοσκοπομένας ὑπὲρ αὐ  
 τῷ εἰσάδαι. καὶ τὰ ἄλλα.

## ΜΕΝΕΛΗΜΟΣ

**Μ**ΕΝΕΛΗΜΟΣ κωλύει τὴν λαμπακίου μαθη  
 τῆς. οὗτον δὲ φησὶ ἰσχυρότερον εἰς τὴν  
 οὐτόν τὸν τῶν τῶν ἡλίας, ὥς τε εἰνύον ἀναλα  
 βὼν οὐκ ἔστι ποδὶν, λέγων ἐπίσημον ἀφίχθαι δὲ  
 αὐτὸν τῶν ἀμαρτανόμων, ὅπως πολλὴν ἡγετιῶν  
 ταῦτα ἀπαγγέλοι τῶν ἐκείνῳ δαίμονι. ἡ δὲ αὐτῷ ἡ  
 δὲ θῆς αὐτῇ. χιτῶν φαῖος τῶν δὲ θῆς. ποδὶ αὐτῷ ῥώνη  
 φοινικῇ. πῖλῳ ἀφῆκεν ὡς τῆς κεφαλῆς, ἔχων  
 ἡνυφασμένα τὰ δώδεκα σοιχεῖα. ἐμβαλεται τραγί  
 νη. πῶγων ὑπὲρ μεγέθους, ῥαβδῶν ἢ τῇ χειρὶ μεί  
 λινη. καὶ οὗτοι μὲν οἱ βίοι τῷ κωινῶν ἐκείνου. προ  
 στωγράφου δὲ καὶ τὰ κωινῶν ἀφίστηντα αὐτῶν,  
 αἰετῶν

αἰρεσιν καὶ ταύτῃς εἶναι ἐγκρίνοντες τὴν φιλοσο-  
φίαν, ὃ καὶ φασὶ πῶς ἔγνασιν βίου. ἀρίσκει οὖν <sup>τὰ ἀρετῶν</sup>  
αὐτοῖς ἢ λογικὸν καὶ ἢ φυσικὸν τὸ πρὸς πόριαι <sup>τὰ τοῖς λυ-</sup>  
ρεῖν, ἐμφερῶς ἀρίστων. ἔθ' χίω. μόνω δὲ προσέχειν <sup>νικῶς</sup>  
ἔθ' ἡδυνῶ. καὶ ὁ πόρ πῶς ὡδ' σωκρατὸς εἶδε διο-  
κλῆς ὡδ' διογένης ἀναγράφει εἶδεν φαίσκων λέν-  
γειν, δέει ζητεῖν

ὅτι τὸ ἐν μεγάροισι κακὸν τ' ἀγαθὸν τε τέτυκται.  
Παραίτουται δὲ καὶ τὰ ἐγκύκλια μαθήματα.  
γραμματα γούμ μὴ μαθηθῆναι ἔφασκεν ὁ ἀντιοδῆ-  
νης εἰς σῶφρονας γενομένης, ἵνα μὴ διαστρέφου-  
ν τῆς ἀλλοτρίοις. πόριαίρουσι δὲ καὶ γεωμετρία  
καὶ μουσικὴ καὶ πάντα τὰ τοιαῦτα. ὁ γούμ διογέ-  
νης πρὸς ἢ ὡδ' εὐκυνύτα αὐτῷ ὡροσκηπίον, χρέ-  
σιμον ἔφη ἢ ἔργον πρὸς ἢ μὴ ὑποδύσαι Δείπνου.  
πρὸς ἢ ὡδ' εὐκυνύτα αὐτῷ μουσικὴν ἔφη.

Γνώμεις γὰρ ἀνδρῶν ἐν μὲν οἰκουμένῃ πῶς,  
ἐν δ' οἴκῳ, ὃ καὶ λαμοῖς καὶ τρεπίσμασι.

Αρίσκει δ' αὐτοῖς καὶ τέλῳ εἶναι ἢ κατ' ἀρετὴν  
ζῆν. ὡς ἀντιοδῆνης φησὶν ἐν ἔθ' ἡρακλεῖ, ὁμοίως τῆς  
σωίκοις. ἐπεὶ καὶ κοινωνία τις ταῖς ἀρεταῖς δίδει,  
ὅθεν καὶ τὸν κυρισμὸν εἰρήνησι σωτήριον ἐπ' ἀρε-  
τὰς ὁδόν. καὶ οὕτως ἐβίω καὶ ζῶων ὁ κίπιδος. ἀρε-  
σκε δ' αὐτοῖς καὶ λιτῶς βιοῦν αὐτὰρ κῶσι χρωμέ-  
νοισι σιτίοις καὶ τρέβωσι μόνοις. πλούτῳ καὶ δόξης  
καὶ ἐν γυνείας καταφρονούσιν. ἔνιοί τε γούμ καὶ βο-



ταίαις καὶ πανταπασιν ὕδαπ χεῶνται ψυχῶ.  
 σκίπαις τὲ ταῖς τυχεύουσιν καὶ πίβοις καὶ δά ποδ  
 διογῆνης. ὃς ἔφασκε θεῶν μὲν ἴδιον εἶναι μηδενὸς δεῖ  
 σθαι. τῶν δὲ θεοῖς ὁμοίων ὁλίγων χεῖζειν. ἀρετὴ καὶ  
 δὲ αὐτοῖς καὶ τῶν ἀρετῶν διδασκτῶν εἶναι. καὶ δά φη  
 σιν αὐτοδυνῆς ἐν τοῖς Ἡρακλεῖ. καὶ ἀναπύβλητον ὑ  
 πάσχειν ἀξιοβράσιον τε καὶ σφόδρον. καὶ ἀναμάχητον  
 καὶ φίλον τοῖς ὁμοίω. τύχη τε μηδὲν ὑπὲρ τρέπειν. τὰ  
 δὲ μετὰ ἀρετῆς καὶ ηλικίας ἀδιείφορα λέγουσιν  
 ὁμοίως ἀρίστων τοῖς χίω. καὶ ἔρι μὲν οἱ κωον

καὶ. μετῴον δὲ ὑπὲρ αὐτῶν σωῖκους.

ὡν ἦρξε Ζήνων μαθητὴς

γενόμενος καὶ

τητ.



ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ ΛΑΕΡ-  
ΤΙΟΥ ΒΙΩΝ ΚΑΙ ΓΝΩΜΩΝ ΤΩΝ ΕΝ  
ΦΙΛΟΣΟΦΙΑ ΕΥΔΟΚΙΜΗΣΑΝ-  
ΤΩΝ ΤΩΝ ΕΙΣ ΔΕΚΑ  
ΤΟ ΕΒΔΟΜΟΝ

ΖΗΝΩΝ



Ηνωρ μνασίου ἢ Δημίου κηπίενος ἀρ-  
κύπρου πολίσματ' ἐλλωινοῦ, φοίνι-  
κας ἐποίκου δόχνητό, ῥῃ τεράχην  
λομ ὠδ' ἀέτορα νενοκῶς ἡν ὥς φησι  
τιμόθεο ὁ ἀβλωαῖο ἐν ἱερὶ πόρι βί-  
ωρ. καὶ ἀρμῶνιο Δέ φησι ὁ τύριος, ὁ πῖ ἰοχὺς  
ἡν, ὑπομήκης, μελαγχρεως. ὅθεν τις αὐτὸν εἶπεν  
αἰγυπία κληματίδα, καὶ φησι χεύσιππο ἐν  
πρώτῳ παροιμῶν. παχύκνημός τε καὶ ἀπαγής,  
καὶ ἀδυνής. διὸ καὶ φησι πόρσαῖο ἐν ὑπομνήμα-  
σι συμπεπληγῆς, τὰ πλείστα αὐτὸν δειπνα παραιτε-  
ῖσθαι. ἔχει δέ φησι σύκοις χλωροῖς, καὶ ἡλιοκαί-  
αις. διήκουσε δὲ καὶ πόρ προείρηται κρωπτή-  
ῃτα καὶ σίλωων ἀκροῦσαι φασὶν αὐτὸν καὶ ξυνο-  
κρωπτεῖν ἐπὶ δειπνῇ, ὡς τιμοκράτης ἐν ἱερὶ δίωνι, ἀλλὰ  
ἐπὶ πλείμων. ἐν γὰρ τῇ δέ φησι καὶ ἀρμῶνιο ὁ τύ-  
ριος



ειος ἐν πρώτῳ ποδὶ ζῴωντο, χρεσημαζομένης αὐτοῖς  
 τῇ πλάττῃ αἰετα βιώσεται, ἀρκείνασθαι ἔρ θεόν,  
 εἰ συγχρωτίζοιτο τοῖς νεκροῖς. ὅθεν ξυνόντα τὰ τῶν  
 ἀρχαίων ἀναγινώσκειν. Ἰδὲ γούνη κρατῆτι παρὲν  
 βαλε ἔδωκεν ἔρ τρέπῃ. περφύραν ἑμπεπερδύμεντο  
 ἀπὸ τῆς φοινίκης πρὸς Ἰδὲ πειρεῖ ἐναυαλῆσιν. ἀν-  
 νελθὼν δὲ εἰς τὰς ἀθλῶν ἦδη τελειοῦσθαι ἐνθά-  
 δισε παρὰ πινυ βιβλιοπώλῳ. ἀναγινώσκοντο δὲ  
 ἐκείνου ἔρ δούτορον τῶν ξηροφῶντο ἀρμυνημονδι-  
 μάτῃν ἡδὲ εἰς ἐπύθετο πᾶσιν ἀστροβόλοις οἱ τριούρι ἀν-  
 δρῶν. ἐνθαίρωσ δὲ παριόντο κρατῆτι ὁ βιβλιο-  
 πώλης δειξάς αὐτοῖς φησι. τῷ τῷ παρακρούσθαι.  
 ἐντεῦθεν ἦκουε τοῖς κρατῆτι, ἄλλως μὲν ἐυτόνως  
 πρὸς φιλοσοφίαν, ἀλδήμων δὲ ὡς πρὸς τὴν κυρι-  
 κὴν ἀνατοχὴν. ὅθεν ὁ κρατῆς βουλόμεντο αὐτοῖς  
 καὶ ἔδωκεν βδραπεῦσαι, δίδωσι χύτραν φακῆς ὅσῃ τοῖς  
 κορμαιοῦ φορέειν. ἐπεὶ δὲ εἶδεν αὐτὸν ἀιδύμενον  
 καὶ ποδὶ ἀλῶντα, παίσας τῇ βακτηρίᾳ κρα-  
 τῆτι τὴν χύτραν. φεύγοντο δὲ αὐτοῖς, καὶ τῆς  
 φακῆς κρατῆτι σκελῶν γεούσης, φησὶν ὁ κρατῆς. τί  
 φεύγεις φοινικίδιον. εἰ δὲ μὲν δεινὸν πέπνυδας. ἔως μὲν  
 ὅσω πινὸς ἦκουε τοῖς κρατῆτι. ὅτε καὶ τὴν πλιτεί-  
 αν αὐτοῖς κρατῆτι, πινὸς ἔλεγον παίζοντες ὡδὲ  
 τῆς τοῖς κυνὸς οὐραῖς αὐτῶν γεγραφεῖναι. γεγραφε  
 δὲ πρὸς τῇ πλιτείᾳ καὶ τῷ δὲ ποδὶ τοῖς κρατῆτι φύσιμ  
 βίου. ποδὶ ὁρμῆς ἢ ἀνθρώπου φύσεως. ποδὶ παθῶν. πε-  
 ς τοῖς

συγγραμμά-  
 τα αὐτοῖς

εἰ τοι καθήκοντ' ὅ. ποῦ νόμου. ποῦ τῆς ἑλλωρικῆς  
 παιδείας. ποῦ ὁφείω. ποῦ τοι ὄλεσ. ποῦ σημείων.  
 πιδαγορικῶ. καθολικῶ. ποῦ λέξεων. προβλημάτων  
 ὁμηρικῶν πέντε. ποῦ πρηντικῆς ἀκροάσεως. ἔσι δ'  
 αὐτοὶ καὶ τεχνικαὶ λύσεις. καὶ ἔλεγχοι δύο. ἀφ' ἑμὴν  
 μονόματα. κρατήτ' ἡδ' ἡγ. καὶ τὰ δὲ μὲν τὰ βι  
 βλία. τελευταῖον δὲ ἀπίσιν. καὶ τῶν προειρημένων  
 ἤκουσεν ἕως ἐτῶν εἰκοσιμ, ἵνα καὶ φασὶν αὐτὸν εἰ  
 πέμ. ἄλλοι δὲ σφαιρεῖντα ἐν ταῖς ἀθλήταις ἀκρο  
 σαι τὴν ναυαγίαν ἔειπεν. εὐγε πρὶς ἡ τύχη προ  
 σελαυῶνσα ἡμᾶς φιλοσοφία. γένιοι σφαιρεῖντα ἀθή  
 νησι τὰ φορτία, οὕτω τραπῶμαι πρὸς φιλοσοφίαν.  
 ἀναγκάμω τῶν δὲ ἐν τῇ περικίλῃ σοῦ τῇ καὶ πεισιαννα  
 κτῆ καλυμμένη, ἀφ' ἧς τῆς γραφῆς τοι πελυγῶντα  
 περικίλῃ, δέξομαι σου λόγους, βουλόμην ὅ καὶ ἔχω  
 εἶον ἀπορίσασθαι πρὸς αὐτὸν. ὡς γὰρ τῶν τελευτῶντα,  
 τῶν πελυγῶν πρὸς αὐτὸν χιλίους τετρακοσίους ἀνὴρ  
 ρίον ἐν αὐτῷ. προσήδσαν δὲ λαιπὸν ἀκούοντες αὐτῶν  
 τοι, καὶ σφαιρεῖντα σωῖνοι ἐκλήθησαν καὶ οἱ ἀπ' αὐτοῦ  
 μοίως, πρότερον γλυῶνιοι καλούμενοι καὶ δά φησι καὶ  
 ἐπίκουροι ἐν αὐτοῖς. καὶ πρότερον γε σωῖνοί ἐ  
 καλούμενοι σφαιρεῖντα ἐν αὐτῇ πρηνταί, καὶ δά φη  
 σι καὶ ἐρατοφῆνης ἐν ὁγδόῃ ποῦ τῆς ἀρχαίας κω  
 μωδίας. οἱ καὶ ἔρ λόγον ὡς πλείον ἤνυσσαν. ἐπὶ μὲν  
 δὲ οὕτω ἀθληταῖοι σφόδρα ἔρ γλυῶνα οὕτως, ὡς καὶ  
 τῶν τειχῶν αὐτῶν τὰς κλῆεις παρακαταβίβειν,

R χρυσῶ

διετίθετο συνδιν  
 συνδιν

συνδιν πρὸς τοὺς χιλίους  
 συνδιν



χευσὼ σεφάνῳ πμῦσαι, καὶ χαλκῇ εἰκόνι. ἔδωκε δὲ  
καὶ αὖτε πλίτας αὐτῷ πρῆσαι, κῶσμορ ἡγουμένους  
τῷ τ' ἀνδρὸς εἰκόνι. αὐτεπριουῦρ δι' αὐτὸ καὶ οἱ σὺν σι  
δῶνι κιθιῖς. ἀπεδέχθη αὐτὸν καὶ ἀντίγονος. καὶ  
εἰπετε ἀβλώαζε ἡχοι, ἡκουσεν αὐτὸ. πολλοὶ τε παρεν  
ήλκει ἀφικέσθαι ὡς αὐτόν. ὁ δὲ, ἔδωκε μὲν παρητήσαι,  
τ. πόρσαϊορ δὲ ἵνα τῷ γνωρίμων ἀπίσειλιν. ὅς μιν  
δημητεῖς μὲν ὑὸς, κιθιεύς δὲ τὸ γῆν, καὶ ἡμαζε  
ηγατὰ τῷ τελακοςλῷ καὶ ἐχαρσλῷ ὀλυμπιασλῶ.  
ἡδὴ γόρουντ' ὄντ' ἑλῶν. ἡ δὲ ὑπὸ σολῇ ποδὶ  
ἑλῶν φησί.

Βασιλεὺς Αντίγονος Ζηῶνι φιλοσόφῳ χαίρειν.

Εγὼ τύχη μὲν καὶ Δόξῃ νομίζω προτόρῃν τοῖς  
σοῦ βίου. λόγῳ δὲ καὶ παιδείας καθευδῶν, καὶ  
πῆς τελείας ἐνδαιμονίας μὲν σὺ κέκτησαι. διό πορ  
ἔκονα προσφωνῆσαι σοι παραγνῆσθαι πρὸς ἐμὲ,  
πεπεισμένῳ σε μὴ ἀντόρῃν πρὸς τὸ ἀξιούμηνον.  
σὺ δὲ πειραθῇ ἐκ παντὸς τρόπῳ συμμίξαιμοι,  
διδιληφῶς ἔδωκε, διό τι ἔχῃς ἐμοῦ παιδούτης ἔση.  
πάντων δὲ μακεδόνων συλλήβδην. ὁ γὰρ τὸν πῆς  
μακεδονίας ἀρχοντα καὶ παιδούων καὶ ἄγων ὑπὸ  
τὰ ηγατὰ ἀρετῶν, φανερῶς ὅτι καὶ αὖτε ὑποτεταγί  
μηνὺς παρασκοδάλων πρὸς ἐνανδρίαν. οἱ γὰρ  
αὐτὸ ἡγούμην ἢ, ριούτῃ εἰκὸς ὡς ὑπὲρ πρὸν γί  
γνέσθαι αὖτε ὑποτεταγμένους.

Καὶ ὁ ἑλῶν ἀντιγραφῇ ὥδε.

Βασί

Βασιλεῖ Αντιφώνω Ζωών Χαίρειν.

Απεδέχμαί σου τὴν φιλομαθειαν, καὶ θόσον τῆς ἀληθινῆς καὶ εἰς ὄνησιν τεινούσης, ἀλλ' ἔχ' Δημόδους καὶ εἰς διαστροφὴν ἡθῶν ἀντέχῃ παιδείας ὁ φιλοσοφίας ὁρεγόμενῳ. ἐκκλίνω δὲ τὴν πλυθρύνῃ γὰρ ἡδονῇ ἢ πνῶν θηλυώσει νέων ψυχὰς, φανερὸς εἶ οὐ μόνον φύσει πρὸς ἐνγυῖαν κλίνω, ἀλλὰ καὶ προαιρέσει. φύσις δὲ ἐν γυνῆς μετρίαν ἀσκησιν προσλαβοῦσα ὑπὸ τῆς ἀφθόνως διδασκούντα ῥα δίως ἔρχεται πρὸς τὴν τελείαν ἀνάληψιν ᾧ ἀρετῆς. ἐγὼ δὲ σωέχομαι σώματι ἀδυνεῖ δια γῆρας. ἔτῳ γὰρ εἰμὶ ὀγδοήκοντα. διό πορ' ἔδωκα μαί σοι συμμίξει. ἀρξίμω δέ σοι πινας τῶν ἐμαυτοῦ συχοιλασῶν. οἱ γὰρ μὲν κατὰ ψυχὴν ἔκ ἀρλείπνεται ἐμοῦ. γὰρ δὲ κατὰ σῶμα προτορροῦσιν. οἷς σωὼν ἔιδενος καθευδρήσεις τῶν πρὸς τὴν τελείαν ἐνδοιμονίαν ἡκόντων. ἀπίσειλα δὲ πόρσαϊον καὶ φιλονεικίαν γὰρ θηβαῖον.

ὦν ἀμφοτέρω ἐπίκουρε μνημονεύει ὡς σωόν τῶν ἀντιφώνω ἐν τῇ πρὸς ἀεισόβουλον γὰρ ἀδελφὸν ὑπὸ λαῖ. ἔδωξέ μοι καὶ τὸ ψήφισμα τὸ ποῦ αὐτοῦ τῶν ἀθηναιέων ὑπογράψαι. καὶ ἔχει ὥδε.

Υἱοῦμα.

Ἐπ' ἀρξενίδου ἀρχοντῶν ὡδ' τῆς ἀγαμαντίδου πέμπτῃς πρυτανείας μαμακτικῶν Διηγῆτι ὑσὸρ' αὐτῇ καὶ εἰρησῇ τῆς πρυτανείας ἐκκλησίᾳ

R 2 κυρία



κυρία τῶν προέδρων ἐπεφύκειον, ἵππων κραπσοτέ-  
λους ξυπέτεων καὶ οἱ συμπερόεσθαι. θρωσων θρωσων  
νῦθ ἀνακαίενς ἔπεν. ἐπειδὴ ζῶων μνασαίς κιτῆ-  
ένς ἔτη πρὸς κατὰ φιλοσοφίαν ἐν τῇ πρὸς γνόμε-  
νῦθ, ἐν τε τῆς λοιπῆς αἰνῆς ἀγαθὸς ὡς διετέλεσε καὶ  
κοῦ εἰς σύσασιν αὐτῶν τῶν νῦν προνομενῶν τοῦ πα-  
ρακαλῶν, ἐπ' ἀρετῶν καὶ σωφροσύνῳ παρῶρμα,  
πρὸς τὰ βέλπιστα παρὰ δειγματὰ ἔρ' ἴδιον βίον ἐκ-  
θεῖς ἀπασιν ἀκρόλουθον ὄντα τῆς λόγοις οἷς διελέγε-  
το, τύχη τῇ ἀγαθῇ δεδόχθαι τῶν δῆμῳ ἐπαινέσαι  
μὲν ζῶωνα μνασαίου κιτῆα, καὶ σεφανῶσαι χρε-  
σὼ σεφανῶ κατὰ νόμον, ἀρετῆς ἐνεχε καὶ σωφροσύ-  
νης. διορθοῦν δὲ αὐτῶν καὶ τάλφον ὡδὶ τοῦ κοῦρα-  
μεινοῦ Δημοσίου. τῆς δὲ πρὸς τοῦ σεφανίου καὶ  
τῆς διορθοῦν τοῦ τάλφου χειροτυῆσαι ἔρ' ἴδιον  
κοῦ ὡδὲ μελῆστομενῶν τοῦ πρὸς ἀνδρας ἐξ ἀθλῶν.  
ἐγγραφῆαι δὲ τὸ φέμισμα, τὸ γραμματεῖα τοῦ δήμου,  
ἐν σήλαις δύο. καὶ ἐξεῖναι αὐτῶν θεῖναι τῶν μὲν, ἐν ἀ-  
καδημίᾳ. τῶν δὲ, ἐν λυκείῳ. τὸ δ' αἰσλῶμα τὸ εἰς  
τὰς σήλας γινόμενον μερίσαι ἔρ' ὡδὶ τῆς διοικήσε-  
ως. ὅπως ἀπαντὸς ἴδωται ὅτι ὁ δῆμος ὁ τῶν ἀθλῶν  
ὡς κοῦ ἀγαθὸς καὶ ζῶντας τιμᾶ καὶ τελοῦνται  
τας. ὡδὶ δὲ τῶν διορθοῦν καὶ χειροτόνηται θρωσων  
ἀνακαίενς. φιλοκλῆς πειρεδός, φαῖδρῳ ἀναφλύ-  
σιθ. μέλων ἀχαρδός. μῆκυθος συμπαλητδός.

Καὶ τὸ φέμισμα μὲν ὡδὲ ἔχει.

Φησὶ

Φησὶ δ' ἀντίγονος ὁ κερύσιος ὅτι ἀρνεῖσθαι αὐτὸν  
 εἶναι κητεία. τῷ γὰρ εἰς τὴν ὑποκρίνῃ τοι λουτρῶν  
 νῦν συμβαλλομένων εἰς ὧν, καὶ ἀναγραφόμενος ἐν  
 τῇ σήλῃ ζώνων τοι φιλοσόφου, ἠξίωσε καὶ τὸ κητεῖν  
 εἰς προδέναι. πρὸς δὲ πρὶν κοῖλον ἐπίθημα τῇ  
 ληκύθῳ ποδὶ φορῶ νόμισμα, λύσις ἐρίμῳ τῷ ἀναγ  
 καίῳ ἢ ἔχει κερῆς ὁ διδασκαλός. φασὶ δ' αὖ  
 τὸν ἑωρὶ χίλια ταλάντα ἔχοντα ἐλθεῖν εἰς τὴν ἐλ  
 λαδίαν, καὶ ταῦτα δανείζειν ναυπηγῶς. ἡ δὲ δὲ ἀρτί  
 σθα, καὶ μέλι, καὶ ὀλίγου ἐνώδ' οὐδ' ἀναρίου ἐπινε. παι  
 δαρίοις τὲ ἔχειρ ἀπαιῶς, ἀπαξ ἢ δὲ πρὸ παιδισ  
 κερῶν πνί, ἵνα μὴ δοκῇ μιτογυῖν εἶναι. σὺν τε πρὶ  
 σαίῳ τὴν αὐτὴν οἰκίαν ὤκει. καὶ αὐτὸς αὐλητρίδιον  
 εἰσαγαγόντος, πρὸς αὐτὸν ἀπύσας πρὸς τὸν πρὶ  
 σαῖον αὐτὸν ἀπήγαγεν. ὡς τε φασὶν ἐνσυμπόριφο  
 ρος, ὡς πολλὰ κίς ἀντίγονον τὸν βασιλέα ὑπὸ κωμῶ  
 σαι αὐτῶν, καὶ ἀεισονκία τὸν κιδαρῶδον ἅμα αὐτῶν  
 ἐλθεῖν ὑπὸ κῶμορ. ἔτα μὲν γὰρ ἑωροῦναι. ἔξελινε  
 δὲ φησὶ καὶ τὸν περὶ δὴ μῶδ' οὗ, ὡς ἐπ' ἄκρον κερῆς  
 οὗ τοι βούβρον, κερῆς αἰνόντα τὸ γοῦν ἐτόρον μέ  
 ρος τῆς ἐνοχλήσεως. ὁ μὲν δὲ μετὰ πλειόνων δύο  
 ἢ τριῶν ποδὶ ἐπώτει. ἐνί τῳ δὲ καὶ χαλκὸν εἰσέν  
 πρῶτε σὺ ποδὶ ἔξαμνόν τὸν διδόναι μὴ ἐνοχλεῖν,  
 κερῆς φησὶ κλεάνθης ἐν τῶν ποδὶ χαλκοῦ. πλειόνων  
 τὲ ποδὶ σάντῳ αὐτὸν, δείξας ἐν τῇ σοῦ κερῆς ἄκρον  
 ξύλινον ποδὶ φορῶς τοι βωμοῦ ἔφη. ἔδωκε πρὶν ἐν μέσῳ



ἔκειτο. ὅτε δὲ τὸ ἐμπροδίζειν ἰδίᾳ ἐτέθη. καὶ ὑμεῖς  
 μὲν ἐκ τοῦ μίσου βασιλεύσαντες αὐτῶν ἡττῆρ ἡμῖν  
 ἐνοχλήσεται. Δημοχάρους δὲ τοῦ λαλῆντος ἅ-  
 παρομνίου αὐτῶν καὶ φασκόντων λέγειν καὶ γρά-  
 φειν ὡς ἂν χρεῖαν ἔχῃ πρὸς ἀντίστονον ὡς ἐκείνου  
 πάντα παρίξοντες, ἀκούσας δὲ κίτ' αὐτῶν σωδὲν  
 τριψέ. λέγεται δὲ καὶ μετὰ τῷ τελευτῶντι τοῖς ζῶν-  
 ῶσι εἰπεῖν τῶν ἀντίστονον, οἷον εἶναι θίατρον ἀκρωλε-  
 κῶς. ὅθεν καὶ ὅτε θρασυῶντες πρὸς βόλῃ παρὰ τῶν  
 ἀβλήων ἡττοῦν αὐτῶν τῶν ἐν κορυμνικῶ ταφῶν.  
 ἐρωτηθεὶς δὲ ὅτε τί θανυμάλει αὐτῶν, ὅτι ἔφη πολλῶν  
 καὶ μεγάλων αὐτῶν διδουμένων ἕως ἡμῶν δὲ ἔπειτα  
 ἔχαιωσθαι, δὲ ταπεινὸς ὤφθη. ὡς δὲ καὶ ζητητικὸς  
 καὶ ποδὶ πάντων ἀκρεβόλου μὲν. ὅθεν καὶ ὁ τίμων  
 ἐν τοῖς σίλλοις φησὶν οὕτω.

καὶ φοίνισαν ἰδοὺ λιχνόγραυ σκιδρῶ ἐνὶ τύφῳ  
 πάντων ἡμείρισται, ὅτι ἔρρει γύεγαθῶ αὐτῶν  
 μικρὸς ἰὼν, νοῦν δὲ ἔχον ἐλαστονα σκινδαφοῖο.  
 ὡς μελῶς δὲ καὶ πρὸς φίλων τῶν ὁφειλετικῶν διε-  
 κύνει. καὶ σωδὲν χόλαζον αὐτῶν. ὅθεν καὶ θανυμα-  
 δὲ λῦσαι ἕως ζῶντων τοῖς νεωτέρῳ, ὅτι ἡττῆρ διοδῶ-  
 ρου τοῖς διδασκῶν αὐτοῖς. ἦσαν δὲ ποδὶ αὐτῶν ἑ-  
 μνορῶν παροῖ πνίς, ὡς φησι καὶ ὁ τίμων.

ὅφρα πνευσάων σωάγει νίφῳ, οἱ ποδὶ πάντων  
 πῶχόταρι τ' ἦσαν καὶ κουφόταρι ἄσῳ.

αὐτῶν δὲ συγνόμ τε εἶναι καὶ πικρόν, καὶ τὸ πρόσσω  
 πρ

ἡν συνδρασμένην. ὡς ἐντελής τε σφόδρα, καὶ  
 βαρβαρικῆς ἐχόμενῃ μικρολογίας προχήματι  
 διοικουμένης. εἰ δὲ πῶς ὡς κῶνι, πόδισα λμῶνως  
 καὶ οὐχ ἄδῳ ἀλλὰ πρῶτον. λέγω δὲ οἷον ὡς τοῖ  
 ἡλλωπιζομένην πρὶ ἐφ. ὅχετον γὰρ πῶς κῶνι  
 αὐτὸ ἐπὶ βαίνοντῃ, δικαίως ἐπὶ ὑφορᾷ ἡν πῶν  
 λόγ. ὅ γὰρ ὅτι ἐν αὐτῷ ἡν πῶν ἡν πῶν  
 νικὸς τις ὅ φῶς ἡλαιοι ἐχειν ἐν τῇ ληκύθῳ προ  
 σήτησιν αὐτῇ, οὐκ ἐφ. δῶσειν. ἀπελθόντα μὲν γὰρ  
 ἐκίλυνε σκέψασθαι, ὅπῃ τῷ εἶναι αὐαδῆς δῶσειν.  
 ἐρωτικῶς δὲ δῶσειν ἡν χρεμωίδου, παραηχῶν  
 ζόντων αὐτῷ τε καὶ κλεαίνου αὐτῇ. θανμαζον  
 τῷ δὲ τοῖ κλεαίνου ἐφ. καὶ τῷ ἰατρῶν ἀκούω  
 τῷ ἀγαθῶν κρᾶτισον εἶναι φῶς μακρῶν πρὸς τὰ  
 φλεγμαίνοντα ἡσυχία. Δυοῖν δὲ ἐπὶ ἀνακειμέ  
 νοι ἐν πρῶτῳ, καὶ τοῖ ὑφ' αὐτῇ σκιμαλίζοντῃ ἡν  
 πρῶτῃ, αὐτῇ ἐκείνου ἡν γόνῃ. ὡς ἡν πρῶτῃ δὲ,  
 πῶς οἶε ἡν ἐπὶ ἡν πρῶτῃ σου πᾶσαι ἡν πρῶτῃ.  
 δὲ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ  
 νᾶς ἐχειν ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ  
 κείνου. ἡν πρῶτῃ δὲ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ  
 καὶ ἀπῆρτησιν ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ  
 ἀλδῶν δῶσειν ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ  
 ἡν πρῶτῃ καὶ ἡν πρῶτῃ, οὐδὲν δὲ ἡν πρῶτῃ ἡν πρῶτῃ  
 πῶν. τῶν δὲ τῶν πρῶτῃ, ἀφῶμοιου πρὸς ἡν πρῶτῃ  
 κῶνι τετραδῶν χμοις, εἶναι μὲν κῶνι μὲν, καὶ  
 σολῶν



σολοικῶς. κατέλκειν μὲν γὰρ πηλίκαις τὰς κηχαλι-  
 γραφημῶν λέξεις. ἀρίστων θ' δὲ τοῖς μαθητοῖς πηλὰ  
 διαλεγομένου ἐκ ἐμφυῶς, ἥντι δὲ καὶ προπετῶς καὶ  
 θρασύως, ἀδυνάτῃ ἐπεὶ εἰ μὴ σὺ πατρὸς μεθύων  
 ἐγίννησεν. ὅθεν αὐτῇ καὶ λαλῶν ἀπειχάται, βραχυ-  
 λόγῳ ὦν. πρὸς δὲ τῇ ὀλοφάγῳ μηδὲν ῥῖς συμ-  
 βιωτῶς καταλιπύτα, παρατεθέντ' ἄρτι μεγά-  
 λου ἰχθύος ἄρας οἷον τ' ὡς κατὰ δίδει. ἐμβλέψαν-  
 τι δὲ τῷ ὄντι ἔφη σὺ συμβιωτὰς οἶσι πάχειν καὶ ἡ-  
 μόραν, εἰ μὴ δυνάσθαι σὺ ἐνεγκεῖν τῷ ἐμῷ ὀλοφά-  
 γῳ. μερακίου δὲ ποδιδυγότορον παρὰ τῷ ἡλικί-  
 αν ἐρωτῶντ' ἔφη ζήτημα τι, προσήγαγε πρὸς ἡγάρ-  
 πτρον, καὶ ἐκείνου ἐμβλέψαι. ἔπειτ' ἡρώτησεν,  
 εἰ δοκεῖ αὐτῷ ἀρμότῃ εἶναι ὅττι ριαυτῇ ζητήμα-  
 τα. πρὸς δὲ τῇ φασκοντα ὡς ταπεινὰ αὐτῷ ἀντι-  
 δόξῃς ἐκ ἀφίσκει, χρεῖαν σοφικλῆος προνεγκά-  
 μιν θ' ἡρώτησεν εἰ πῶς καὶ καλὰ ἔχει αὐτῷ δο-  
 κεῖ. τοῖς δ' ἐκ εἰδέναι φήσαντ' ἔτι ἐκ αἰσχυνῆ  
 φη, εἰ μὲν τι κακὸν ὡς ἐρημνίον ἔω ἀντιδοξῇ τοῖς  
 τ' ἐκλεγόμενῳ καὶ μνημονεύωρ. εἰ δὲ τι καλὸν ἐδ-  
 ὶ βαλλόμενῳ κατέχει; ἐπὶ τῷ δὲ πινῶ ὅτι  
 μικρὰ αὐτῷ δοκεῖ τὰ λογάδια τῶν φιλοσόφων, λέ-  
 γεις ἔπειτα τὰ ληθῆ. δίδει μὲν γὰρ καὶ τὰς συλλαβάς αὐ-  
 τῷ βραχείας εἶναι εἰς διωκτόν. λέγουσθ' δὲ τίνος  
 αὐτῷ ποῦ πλέμων, ὡς ἄλλα προθέμιν, ἄλλα  
 λέγει, σκυθρωπάσας ἔφη. πόσον γὰρ ἡγάπα τὰ δι-  
 δόμενα

δόμνα. Δείρ δὲ ἔφη ᾗν διαλεγόμενον ὡς πόρ σὺ  
 ἔποκειτὰς τῶν μὲν φωνῶν καὶ τῶν δυνάμιν μεγα-  
 λῶν ἔχειν. ᾗ μὲν τριτόμα μὴ δέλκειν, ὃ πριεῖν σὺ  
 πρὸς μὲν λαλοῦντας, ἀδύνατα δὲ. ᾗς ἔν λεγομέ-  
 νοις ἔκ ἔφη δειρ ἡγαταλείπεσθαι τόπρ, ὡς πόρ ᾗς  
 ἀγαθοῖς τεχνίτους εἰς ᾗ θεώσασθαι. τὸν ἀντίον δὲ  
 ᾗ ἀκούοντα οὕτω πρὸς ᾗς λεγόμενοις γίνεσθαι, ὡς  
 τε μὴ λαμβάνειν χρόνον εἰς τῶν ὑψηλῶν μείσιν. νεα  
 νίσκου πρὸς λαλοῦντ' ἔφη, τὰ ὅτα σου εἰς τῶν  
 γλῶτταν συνερξύνει. πρὸς ᾗ εἰπύντα ὅτι ἔδνη  
 αὐτῷ ἔραδίσσεσθαι ὁ σοφός, ἔδερ ἔφη ὑμῶν ἀθλιώτε-  
 ρον ἔσεσθαι τῶν ἡγαλῶν. ἔλεγε δὲ καὶ τῶν φιλοσόφων  
 σὺ πλείς σὺ, τὰ μὲν πρὸς ἀσφύς εἶναι. τὰ δὲ με-  
 κρὰ καὶ τυχερὰ ἀμαθείς. καὶ προσφύρο τὰ τοῖς ἡ-  
 φνοῖς. ὅς ὑπὸ βαλλομένης πινός τῶν μαθητῶν μεγα-  
 λα φουσαῖ, παταξας ἔπην, ὡς ἔκ ἔν τῷ μεγάλῳ  
 ᾗ ἔν, κείμενον εἶν. ἀλλ' ἔν τῷ ἔν, ᾗ μέγα. νεανίσκου  
 διέπνυθ' θρασύτοτον διαλεγόμενός, ἔκ εἴπριμι ἔφη  
 μερῶνιορ ἀεπὸρ χεταί μοι. ῥοδίς διέπνυθ' ἡγαλῶ  
 καὶ πλουσίς, ἄλλως δὲ μηδὲρ προσκειμένης αὐτῷ,  
 μὴ βουλόμην αὐτῷ χεσθαι, πρὸς μὲν ἔν τὰ κεκονι-  
 μένα τῶν βολθῶν ἐγείριζεν αὐτῶν ἵνα μολύνῃ τῶν  
 χλανίδι. ἔπειτα εἰς ᾗ τῶν πτωχῶν τόπρ, ὡς τε  
 σωματρίβεσθαι ᾗς ῥοδίς αὐτῶν. καὶ τέλθ' ἀ-  
 πύλθην ὁ νεανίσκος. πάντῶν ἔλεγον ἀπρεπίσδοτον  
 εἶναι ᾗ τῷ τῶν, καὶ μολίσα ὑπὸ τῶν νέων. μὴ τὰς  
 S φωνὰς



φωνὰς καὶ τὰς λέξεις ἀπομνημονεύειν, ἀλλὰ ποῦ  
τὴν διαβάσειν τῆς χρείας ὅρ νοῦν ἀσχολεῖσθαι, μὴ  
ὥς ποῦ ἔφησιν πνὰ ἢ σκιδνασίαν ἀναλαμβάνοντας.  
δεῖν τε ἔλεγε εἶναι νέου πάσης κρομότητι κεχεῖν  
οὔτα, καὶ πρεῖα, καὶ ὀχλήματα, καὶ ποδολογῆ. σιωχέει  
τε προεφάρτε τοῦ ὡδὶ τοῦ ἡπατιέως ἐνελπίδου  
σίχτου. ὅτι

βίβλιν μὲν αὐτῶν, ἡκιστα δὲ ὀλβον γαῦρον μὲν,  
φρόνημα δ' ἔτι μείζον ἔχον ἢ πένης ἀνὴρ.  
ἔλεγε δὲ μηδὲν εἶναι τῆς πρὸς τὴν ἀλλοτριώτορον  
πρὸς ἡαταλῆτιν τῶν ὡδισμῶν. μηδισμὸς τε ἡμᾶς  
οὕτως εἶναι ὅνδεῖς ὡς χρόνου. ἐρωτηθεὶς τίς ἔστι οἷ  
λῶ, ἀλλῶ ἐγώ. δούλων ὡδὶ κλοπῇ φασιν ἐμασί  
λου. τοῖ δ' εἰπὺντῶ ἐμαρτό μοι κλέψαι, καὶ δαρή  
ναι ἔφη. ὃ ἡαλλῶ ἔπερ φωνῆς αὐτῶ εἶναι. οἱ δὲ,  
τοῖ ἡαλλῶ τὴν φωνὴν. τῶν γνωρίμων πνὸς πάλ  
δαλειον μεμωλωπιισμῶν θεασάμεντῶ, πρὸς αὐτὸν  
ὄρωσιν ἔφη τοῖ θυμῶ τὰ ἔχον. πρὸς ὅν κεχερισμῶν  
τῶν μύρω τίς ἔστιν ἔφη ὁ γυναικὸς ὄρων. διουσις δὲ  
τῶ μεταθεμῶντῶ εἰπὺντῶ αὐτῶν δὲ τί αὐτὸν μόνον  
ἔστι διορθοῖ, ἔφη. ἔτι γὰρ σοι πιστεύω. πρὸς ὃ φλυαροῦν  
μαρτυροῖ, δὲ εἶπε δύο ὥτα ἔχοντῶ νόμα δὲ  
ἐν, ἵνα πλείω μὲν ἀκούωμιν, ἢ τῶνα δὲ λέγωμιν. ὅν  
συμπροῖω ἡατακείμιντῶ σιγῇ, τὴν αἰτίαν ἡρωτή  
θη. ἔφη τῶ ἐγχελέσαντι ἀπαγγεῖλαι πρὸς ὅν βασι  
λέα ὅπ πτερῶν πρὸ σιωπῶν ὡδισμῶντῶ. ἥσπερ δὲ οἱ  
ἐρεαι

ἔρωτησαν τὸν παρὰ ὠρλεμαίαν πρῖσβεις, καὶ βου-  
 λόμενοι μαθεῖν τί εἴπριν πόδι αὐτοῖς πρὸς τὸν βασι-  
 λέα. ἔρωτηθεὶς ὡς ἔχει πρὸς λοιδορίαν, καὶ δὲ πόρ-  
 ῃ ἐπὶ πρὸς βούτης ἀναπνεύει τὸ ἀρσίλλοιγ. φη-  
 σὶ δ' ἀρχλῶνι τὸ ὅτι τὸ ἐλκον τὸ αὐτὸν κρῶπι-  
 τὸ τοῖματις ἀρσίλλων τὸ εἰπεῖν. ὡς κρῶτης, λα-  
 βὴ φιλοσόφων δὲ τὴν ὑπὸ δέξι τὴν ὁδὸν τῶν ὠτῶν. πεί-  
 σας ὡς ἔλκε τὸ δέξι. εἰ δέ με βιάζῃ τὸ μὲν σῶμα πα-  
 ρῶ σοι ἔσαι. ἡ δὲ ψυχὴ παρὰ σίλλωνι. σωδείτρι. φε-  
 δε καὶ διοδώρω καὶ δὲ φησὶν ἰππόβοτ. παρ' ὧ καὶ  
 τὰ σιλλεκτικὰ θετέρονον. ἡ δὲ πρὸς κρῶ τῶν εἰσῆ-  
 ει καὶ πρὸς κρῶ μὲν αὐτῶν. ὡς τε φασὶν λέ-  
 γειν ἐκείνον, ὃ λαοδάνεις ὡς ζῶν τῶν κηπαίαις  
 παρῶ σίλλωνι θύρας, τὰ δὲ λόγματα κλῶ τῶν φοινι-  
 κηκῶς κατὰ μολγνύς. καὶ πρὸς τὸν δείξαντα δὲ αὐ-  
 τῶν σιλλεκτικῶν ἐν τῶν θορίζοντι λόγῳ ἔω τὰ σιλλε-  
 κτικὰς ἰδέας, πυθίδαι πρὸς εἰσπράττειται μιδοῦ.  
 ἀκούσαντα δὲ ἐκ τῶν σιλλεκτικῶν αὐτῶν δουῶναι. τῶν  
 γὰρ ἡσκει φιλομάθειαν. φασὶ δὲ καὶ πρὸς τὸν καθῆκον  
 ὠνομακῆναι. καὶ λόγον πόδι αὐτοῖς πετρηκῆναι. τὸς  
 τε ἡσιόδοις σίχτου μετὰ γράφειν ὅτι.

κῆν τὸ μὲν παναλεις τὸ ὅς ἐν εἰπντι πίθηται.

δουθλὸς δὲ κακῆν τὸ αὐτὸς αὐτὸς πάντα νοήσει.

κρείττενα γὰρ εἶναι τὸν ἀκούσαι καλῶς διωολμνον

καὶ χρεῖας αὐτῶν, τοῖς δὲ αὐτοῖς τὸ πᾶν συνοήσαντες.

τῶν μὲν γὰρ εἶναι μόνον τὸ συνεῖναι. τῶν δ' ἐν πειδογῆτι

S. 2 πρὸς εἰ



πρᾶξιν καὶ τὴν πρᾶξιν ἐρωτῶντες φησὶ δὲ τί αὐ-  
 σήρως ὡν ἐν τῷ πρώτῳ δὲ χεῖται, ἔφη. καὶ οἱ θόρυμοι  
 πικροὶ οὐτὸς βρεχόμενοι γλυκαίνονται. φησὶ δὲ καὶ  
 ἐν τῷ Δουτέρῳ τῷ χειρὶ ἀνέσθαι αὐτὸν  
 ἐν ταῖς τριαύταις κρινωσίαις. ἔλεγε τε κρεῖττον εἶ-  
 ναι τις πρὸς ὀλιθίῳ ἢ τῇ γλώτῃ. ὅτι ἐν γίνεσθαι  
 μὲν παρὰ μικρόν, ὃ μὲν μικρόν εἶναι. οἱ δὲ, σωκρά-  
 τος. ὡς δὲ κρεττοτέρως καὶ λιτότατος ἀπύ-  
 ρω τροφῇ χρώμενος καὶ τρέβωνι λεπτῷ. ὡς τε λέγε-  
 σθαι ἐπ' αὐτῷ.

ὅτι δ' ὅτι ἄρ' χειμῶν κρυόεις ἐκ ὁμβροῦ ἀπείρω,  
 ὃ φλόξ ἡελίοιο δαμάσεται, ὃ νόσος αἰνῇ,  
 ὃ χῶς τις δῆμῳ ἐναλίβητος, ἀλλ' ὅ γ' ἀτειρὴς  
 ἀμφὶ διδασκαλίῃ τέταται νύκτας τε καὶ ἡμέρας.  
 οἱ γὰρ μὲν κωμικοὶ ἐλαύναντο ἐπαινοῦντες αὐτὸν  
 δὲ τῷ σκωμμάτῳ, ἵνα καὶ φιλήμων φασὶν οὕτως  
 ἐν δρωματι φιλοσόφοις.

εἰς αὐτὸν ὄψον, ἰσχῶς, ὑπὸ πεινῇ ὕδωρ.

φιλοσοφίαν καὶ νῦν γὰρ ὅτι φιλοσοφῇ,  
 πεινῶν διδάσκει καὶ μαθητὰς λαμβάνει.

οἱ δὲ, προσείπιπες. ἤδη δὲ καὶ εἰς παροιμίαν σχεδὸν  
 ἐχώρησεν. ἐλέγχοιτο ὡς ἐπ' αὐτῷ, τὸ φιλοσοφῶν  
 νῦν ἐγκρατὲς εἶναι. ἀλλὰ καὶ προσείπιπες μὲν  
 φθορομύθοις. ὡς τ' ἐν ἡμέραις δέχεσθαι εἶναι δοκεῖν  
 νῦν ἐγκρατὲς εἶναι. τῷ γὰρ οὐκ ἔστι πάντας ὑποδρε-  
 βάμενος τῷ τε εἰδέναι τὸ καὶ τῇ σεμνότητι. καὶ

Δὴ νῦν Δία καὶ μαχηαίῳτητι. οὐκ τὼ γὰρ πρὸς ῥίς  
 ἐνέκηκοντα βιτὺς ἔτη κατέστρεψεν, αἰόσθ' καὶ ὕ/  
 γιης διατελείσας. πόρσα αἶθ' Δε φησιν ἐν ταῖς ἡδι/  
 καῖς οχολαῖς, δύο καὶ ἐβδμήκοντα ἐτῶν τελευτῇ/  
 σαι αὐτόν. ἐλθεῖν δὲ ἀθλίωζε δύο καὶ εἴκοσι ἐτῶν.  
 ὁ δ' ἀρχμῶνιθ' φησὶν ἀφηνήσασθαι τῆς οχολῆς  
 αὐτὸν ἔτι διούρμ' δέοντα ἐξήκοντα. ἐτελεύτα δὴ οὐ/  
 τως. ἐκ γ' οχολῆς ἀπὼν προσέτωταισε, καὶ ῥ'μ' δ' α/  
 κτυλιν ποδὶ ῥῥῆξε. παίσας δὲ τῶν γλῶττῃ χειρὶ, φη/  
 σὶ ῥ' ἐκ τῆς νιόβης. ἔρχμαι τί μ' αὔεις;

καὶ παραχρῆμα ἐτελεύτησεν ἀρπνίξας ἑαυτόν.  
 ἀθλίωσι δ' ἔδαξαν αὐτὸν ἐν τῷ κδραμεικῷ. καὶ φη/  
 θίσμασι ῥίς προειρημένους ἐτίμησεν, τῶν ἀρετῶν  
 αὐτῷ προσμαρτυροῦντος. καὶ ἀντίπατρ' ὁ σιδῶ  
 νιθ' ἐπρήσεν οὕτως.

τίωθ' ὅδε ζῶων κητῶν θίλθ', ὅς περ' ὀλυμπρῳ  
 ἔδραμν, ἐκ δ' αὖτ' ἀπὸ πῆλιν ἀνθίμνθ'.

ἐ δὲ τὰ γ' ἡρακλῆθ' ἀέθλια. τίω δ' ἐπερ' ἄσρα  
 ἀτραπὸν μοῦνθ' εὐρε σφοδρῶς.

Καὶ ἄλλο ζῶον δότθ' ὁ ζωϊκὸς διογῆσιν μαθητῆς.  
 ἐκπας αὐταρκειαν, ἀφείς κενεαυχία πλοῦτῳ  
 ζῶων (ὡν περὶ σέμνους ὡλσκησῶν).

ἀφ' οὗ γὰρ λόγῳ εὐρόν. ἀνεθλῆσω δὲ προνοία  
 αἰρόνιμ' ἀτρέστ' ματέρ' ἐλδουθρίας.

εἰ δὲ πάτρα φοίνισα, τίς ὁ φθόνθ', ὡς δ' ὁ κῆδ' αἰμῶ  
 κῆνθ', ἀφ' ὃ γράψαν ἐλὰς ἔχει σελίδα.



καὶ κοινὴ δὲ καὶ πόδι πάντῃ τῷ σωτῶν ἀβλώαι  
ὁ ὡλ γράμμα τριῶς φησιν οὕτως.

ὡ σωτῶν μυθῶν εἰδήμων δὲ, ὡ παναλῆσαι

δύγματα ταῖς ἰδραῖς ἐνθέρμιοι σελίσι  
τὰν ἀρετῶν ψυχᾶς ἀγαθὸν μόνον. ἀδὲ γὰρ ἀνδρῶν  
μουσῶν, καὶ βιωτῶν γύσταρ καὶ γέλιας.

Γερνὸς δ' ἡδοναπέθημα φίλον τέλεος ἀνδράσιρ ἄλλοις  
ἢ μία τῷ μνήμης ἦνυσε θυγατὸρ.

εἶπρην ὡς ἐτελεύτα ὁ ζῶων, καὶ ἡμεῖς ἐν τῇ παμ  
μέτρῳ εἶδερν ἔρ τρόπῳ.

ἔρ κιτῖα ζῶωνα θανεῖν λόγῳ ὡς ὑπὸ γήρως,  
πρὸς ἡμῶν ἐλύθη. οἱ δὲ, μέγῳ ἀσιτῳ.

δι δ' ὅπ πρὸς κόπας πρὶ φῶ, χερσὶ γαῖαν ἀλίστας,  
ἔρχμαι αὐτόματῳ δὴ, τί με, τί με χαλῆς;

ἐνιοὶ γὰρ καὶ εἶδερν ἔρ τρόπῳ τελευτῆσαι φασίρ αὐ  
τόν. καὶ πόδι μὲν γὰρ τελευτῆς ταῦτα. φησὶ δὲ διη

μήτρῳ ὁ μολγυκὸς ἐν τῷ ὁμωνύμοις ἔρ πατὸρ  
αὐτὸ μνασίαν πρὸς αἰς ἀτε ἔμπερον ἀβλώαζε πα

ραγίνεσθαι. καὶ πρὸς τῷ σωκρατικῶν βιβλίων ἀ  
πρὸς εἰρ ἐπ παιδὶ ὅντι τῷ ζῶωνι. ὅθεν καὶ ἐν τῇ πα

τείδι συγκεκοτῆσθαι. καὶ οὕτως ἐλθόντα εἰς ἀθή  
νας κρῶτητι παραβαλεῖν. δοκεῖ δὲ φησὶ καὶ ἔρ τέ

λῳ αὐτὸς οὐδεὶς τῷ πλανωμένῳ πόδι τὰς ἀρφά  
σεις. ὡμνε δὲ φασι καὶ ἡγάπαειν, ἡγάδα πόρ σῶ

κρῶτης ἔρ κινῶ. ἐνιοὶ μὲν γὰρ εἰσὶν οἱ πόδι ἡγά  
σιον ἔρ κλεπτικόν, ἐν πολλοῖς ἡγάτης ρουῦ τὸ το ζή

νων

νων Θ. πρῶτον μὲν τῷ ἐγκύκλιον παιδείᾳ ἀρχή-  
 σορ ἀρφαίνεμεν, λίσσονται ἐν ἀρχῇ τῇ πολιτείας. δὲ οὐ-  
 πόρορ, ἐχθροὺς καὶ πλεμικροὺς καὶ δούλους καὶ ἀλ-  
 λοτεῖς λέγειν αὐτῶν ἀλλήλων εἶναι, πάντας αὖ-  
 τουσδε αὐτοὺς, καὶ γονεῖς τέκνων. καὶ ἀδελφοὺς ἀδελ-  
 φῶν, οἰκείους οἰκείων. πάλιν ἐν τῇ πολιτεῖᾳ παρ-  
 σάντα πλίτας καὶ φίλους καὶ οἰκείους καὶ ἐλευθέρ-  
 οὺς αὖ τουσδε αὐτοὺς μόνον. ὥς τε τοῖς σωῖτοῖς οἱ τοῖ-  
 νεῖς καὶ τέκνα ἐχθροί. ὁ γὰρ εἰσι σοφοί. κρινάς τε  
 τὰς γυναικας δογματίζειν ὁμοίως ἐν τῇ πολιτεῖᾳ.  
 καὶ κατὰ αὐτοὺς διακροσίους μήτε ἰδῶν μήτε διηγεσθῆ-  
 ρια μήτε γυμνασία ὡδὲ ταῖς πόλεσιν διορθοῦναι.  
 πόρι τε νομίσματα Θ. οὕτως γράφειν. νόμοι-  
 μα δ' οὐτ' ἀλλαγῆς ἐνεκὴν οἶεσθαι δεῖν κατὰ σκῆ-  
 ολζειν, οὐτ' ἀποδημίας ἐνεκὴν. καὶ δεῖν τι δὲ τῇ αὐ-  
 τῇ κελύβει χεῖν αὐτῶν καὶ γυναικας. καὶ μη-  
 θερ μόνον ἀφαινεῖσθαι. ὅτι δ' αὐτοὶ δεῖν ἢ πολι-  
 τεῖα καὶ χρύσιον Θ. ἐν τῇ πόλει πολιτείας φησί.  
 πόρι τε ἐρωτικῶν διήλεκται κατὰ τῷ ἀρχῇ τῆς  
 ὑπὲρ γραφομένης ἐρωτικῆς τέχνης. ἀλλὰ καὶ ἐν ταῖς  
 διατριβαῖς τὰ παραπλήσια γράφει. τριουτότροπα  
 τινα δεῖν παρὰ τῇ κασίῳ. ἀλλὰ καὶ ἰσιδιώσω τῇ  
 πόργαμνῷ ξήτορ. δε καὶ ἐκτμηθῆναι φησὶν ἐκ  
 τῶν βιβλίων τὰ κακῶς λεγόμενα παρὰ τοῖς σωῖτοῖς  
 ὡς ἀθλωδοδῶρον τοῦ σωῖτου πισυθῆναι τῷ ἐν  
 πόργαμνῷ βιβλιοθήκῃ. εἶτα ἀντιτεθῆναι αὐτὰ φω-  
 ραθῆναι



ραβνίτθ το ἀθλωδῶρε καὶ κινδωδύσαντθ. καὶ  
 ῥσαῦτα ποδὶ τῷ ἀθλουμένηων αὐτοῖ. γελόναι δὲ  
 ζώνωνδὸ οὐκτώ. πρῶτθ ὁ ἐλεαλῆς ποδὶ ἔλξομν.  
 Δούτορθ αὐτὸς ἔτθ. τρίτθ ῥόδιθ ἔντο  
 πιορ γηγραφῶς ἰσορίαν ἔνιαίαν. τέταρτθ ἰσορι  
 κὸς τὴν πύρρῳ γηγραφῶς ἰσορίαν εἰς ἰταλίαν καὶ  
 σικελίαν. ἀλλὰ καὶ ὑπὲρ μὲν τῷ πεπλεγμένων ῥω  
 μαίοις τὲ καὶ κερχεδονίοις. πέμπτθ χερσίπι  
 πρὺ μαθητῆς. βιβλία μὲν ὀλίγα γηγραφῶς. μαθητὰς  
 δὲ πλείους καταλειπῶς. ἕκτθ ἰατρὸς ἡροφί  
 λιθ. νοῆσαι μὲν ἰσχυρός. γράψαι δὲ ἄρνθ. ἑβδ  
 μθ γραμματικὸς, ἔπρὸς τοῖς ἄλλοις καὶ ὑπὲρ γράμ  
 ματα φόρεται. ὄγδοθ σιδῶνιθ ἢ γῆθ φιλόσο  
 φθ ὑπὲρ οὐρεῖθ, καὶ νοῆσαι καὶ ἐρμηνεύσαι σα  
 φῆς. μαθητὰ δὲ ζώνωνθ πολλοὶ μὲν. ἔνδοξοι δὲ,  
 πόρσαῖθ Δημητρίου κιθισίς. ὅρ οἱ μὲν, γνῶριμορ  
 αὐτοῖ. οἱ δὲ οὐκ ἐπὶ ἕνα τῷ εἰς βιβλιογραφίαν πεμ  
 νόμενων αὐτῶ παρὰ ἀντίστονον, ἔ καὶ τροφοὺς αὐτῶ  
 παιδὸς ἀλκυονέως. διατίθειαν δὲ καὶ τε βεληθεὶς λα  
 βείν αὐτοῖ ὁ ἀντίστονθ ἐπὶ ἡσυχίᾳ αὐτῶ πλάσῃς ἀγγε  
 λιῶναι, ὡς εἶη τὰ χωρία αὐτοῖ πρὸς τῷ πλεμίων  
 ἀφῆρημένα. καὶ συνθεωπάσαντθ, ὁρᾷς ὅτι ἔκτισιν  
 ὁ πλοῦτθ ἀδιστάφορον. βιβλία δὲ αὐτοῖ φόρεται  
 τὰ δε. ποδὶ βασιλείας. πολιτεία λακωνική. ποδὶ γὰρ  
 αὐτοῖ μον. ποδὶ ἀσεβείας. θυεσῆς. ποδὶ ἐρώτων. προτρεπῆ  
 κῆ. διατρεβῶν. χρεῖων Δ. ἀπομνημονόματα.  
 πρὸς

βιβλία  
 αὐτοῖ

πρὸς τοῦ πλάτωνος νόμου ζ. ἀρίστων μιλιτῶν  
 δυνε χιθ, ὁ τῶν ἀσφαφορίαν εἰσηγησάμενος. ἤει-  
 λθ' ἡγερχηδόνιθ ὁ τῶν ὑπὸ σήμερον τέλθ' εἰπώρ.  
 διονύσιθ ὁ μεταβίβλνθ' εἰς τῶν ἡδονῶν. σὺ γὰρ  
 σφοδρὰν ὀφθαλμίων ὥκνησεν ἐπὶ λείγειν ὅρ πόνον  
 ἀσφαφορον. εἴθ' ὡς ἡρακλεώτης. σφαῖρεθ' βοῶσι  
 εἰανός. κλεαάνθης φανίτ' ἀσιθ, ὁ σὺ δεξαμένηθ' τῶν  
 σχολῶν. ὅρ καὶ ἀφωμοίου ταῖς σκληροκλήροις Δέλι-  
 ρις. αἱ μόλις μὲν γράφονται. σὺ τηροῦσι δὲ τὰ γρα-  
 φήτα. δέηκονσε δ' ὁ σφαῖρεθ' καὶ κλεαάνθ' μετὰ  
 τῶν ζῴωνθ' τελευτῶν. καὶ λέξομεν πόδι αὐτοῦ ἐν  
 τῷ πόδι κλεαάνθ' ἡσσε δὲ ζῴωνθ' μαθηταί, καὶ  
 οἶδε κατὰ φησιν ἰππόβοτθ'. φιλωνίδης θηβαῖθ'.  
 ἡγάμιππθ' ἡορίνθ'. προσιδῶνθ' ἀλδανδρός.  
 ἀβλῶδωρθ' σολός. ζῴωνθ' σιδῶνθ'. κοινὴ δὲ πε-  
 ρὶ πάντων τῶν σῶικῶς δογματῶν ἔδξε μοι ἐν τῷ  
 ζῴωνθ' εἰπεῖν βίω, σὺ γὰρ εἴδον κτίσιν γνέσθαι  
 τῆς αἰρίσεως. ἐσι μὲν οὖν αὐτοὶ καὶ τὰ γεγραμμένα  
 βιβλία πηλὰ, ἐν οἷς ἐλάλησεν ὡς εἰδείς τῶν σῶι-  
 κῶν. τὰ δὲ δόγματα κοινῶς ὅστις τὰδε. λελέχθω δύσαι τῶν  
 δ' ὑπὸ κεφαλαίων ὡς πόρ καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων πρι σῶικῶν  
 εἰρ εἰώδαμεν. τριμδρὴ φασι εἶναι ὅρ κατὰ φιλοσο-  
 φίαν λόγον. εἶναι γὰρ αὐτοὶ ὅρ μὲν π φυσικόν. ὅρ δὲ, διαίρεσις  
 ἡθικόν. ὅρ δὲ, λογικόν. οὕτω δὲ πρῶτθ' διείλετο ζῴων φιλοσοφίας  
 ὁ κίτιενς ἐν τῷ πόδι λόγου. καὶ χεύσιππθ' ἐν τῷ  
 α' πόδι λόγου. καὶ ἐν τῇ α'. τῶν φυσικῶν. καὶ ἀφελ-

T

λόδων



ὅτι ἡ φιλο-  
σοφία ζῶν  
ἐοικε

ὅτι ἐξ μὲν  
φιλοσοφίας

λόδωρεθ' ὁ ἔοιλλεθ' ἐν τῷ πρώτῳ τῷ εἰς τὰ Δόγ-  
ματα εἰσαγωγῶν, καὶ ἔνδομ' ἐν τῇ ἡδικῇ σοιχει-  
ώσεται, καὶ διογῆνης ὁ βαβυλώνι' ἐστι, καὶ προσιδῶνι' ἐστι.  
ταῦτα δὲ τὰ μὲν ὁ μὲν ἀκρλόδωρεθ' τόπος χαλεπὸς.  
ὁ δὲ χρύσιππ' ἐστι, καὶ ἔνδομ' ἐστὶν. ἄλλοι γὰρ ἐν ἡ-  
ρσι δὲ ζῶν τῷ φιλοσοφίαν. ὅσοις μὲν καὶ νόμοις ἔ-  
λογικὸν προσδομοιοῦντες. οἷς δὲ σαρκῶδες ἔ-  
κον. τῇ δὲ ψυχῇ φυσικόν. ἢ ἀγρῷ παμόφορον. ἔ-  
κον μὲν ποδὶ βεβλημένον φραγμένον ἔ-  
λογικόν. ἔ-  
κον δὲ κερῶν ἔ-  
κον ἡδικόν. τῷ δὲ γλῶττῃ τὰ δένδρα ἔ-  
κον φυσικόν. ἢ πρὶ  
λει χαλῶς τετειχισμένη, καὶ ἔ-  
κον λόγον διοικουμένη.  
καὶ ἔ-  
κον μὲν τὸ ἐτόρ' ἐπικεκρίσθαι κατὰ πρὶ  
νὸς αὐτῷ φασίμ. ἀλλὰ μεμῆχθαι αὐτά. καὶ τῷ πα-  
ραδοσμῷ μὲν ἐπρίον. ἄλλοι δὲ πρὶ μὲν ἔ-  
λογικόν τὰ τρυσι. δένδρα δὲ ἔ-  
κον φυσικόν. καὶ τέρ' ἔ-  
κον ἡδικόν. ὡν ἔ-  
κον ζῶν ἐν τῷ ποδὶ λόγου, καὶ χρύ-  
σιππ', καὶ ἀρχιδιμ', καὶ ἔ-  
κον. ὁ γὰρ πολε-  
μαὲν διογῆνης ἀπὸ τῷ ἡδικῷ ἀρχεται. ὁ δ' ἀκρλό-  
δωρεθ' δένδρα τὰ ἡδικά. παναίπ' δὲ καὶ προσι-  
δῶνι' ἀπὸ τῷ φυσικῷ ἀρχεται. κατὰ φησι φανίας  
ὁ προσιδωνί' γνῶνιμος, ἐν τῷ πρώτῳ τῷ προσιδωνεί-  
ωρ οὐχολῶν. ὁ δὲ κλεαῖθης ἐξ μὲν φησί. δλεκλόν.  
ἐκον. ἡδικόν. κληπκόν. φυσικόν. θεολογικόν. ἄλ-  
λοι δὲ ἔ-  
κον τὸ λόγ' ταῦτα μὲν φασίμ, ἀλλ' αὐτῇ τῇ  
φιλοσοφίας, ὡς ζῶν ὁ ταρσός. ἔ-  
κον δὲ λογικόν μὲν  
φασίμ ἐνίοι εἰς δύο δλεκλόντα ὑλῆμας. εἰς ἐκ-  
κον

ῥηρικῶν, καὶ εἰς δισλεκτικῶν. πῦες δὲ καὶ εἰς τὸ ὀρι-  
 κὸν τὸ ποῦν καὶ κρινόντων καὶ κριτηρίων. ὅτι οἱ δὲ τὸ ὀρικὸν  
 ποῦναι ῥῶσι. τὸ μὲν ἐν ποῦν καὶ κρινόντων καὶ κριτηρίων πα-  
 ραλαμβαίνουσι πρὸς τὸ τῶν ἀληθείαν ἐνδεῖν. ὅτι αὐ-  
 τῶν γὰρ τὰς τῶν φαντασιῶν διαφορὰς ἀποδιδόνουσι.  
 καὶ τὸ ὀρικὸν δὲ ὁμοίως πρὸς διακρίσειν τῶν ἀληθεί-  
 ας. ὅτι γὰρ τῶν ἐννοιῶν τὰ πλάγματα λαμβάνετ'·  
 τῶν τε ῥηρικῶν ὑπὸ σήμετι ὅσαρ' ἢ ἐν λέγειν πρὶ τῶν  
 ἐν διδασκάλῳ λόγων. καὶ τῶν δισλεκτικῶν τοῖς ὀρθῶς  
 διαλέγεσθαι ποῦν τῶν ἐν ἐρωτήσει καὶ ἀκριβεῖσι λό-  
 γων. ὅθεν καὶ οὕτως αὐτῶν ὀρίζονται. ὑπὸ σήμετι ἀ-  
 ληθῶν καὶ ψευδῶν καὶ ὁμοειδῶν. καὶ τῶν μὲν ῥη-  
 ρικῶν αὐτῶν εἶναι λείπονται τριμῶν. τὸ μὲν, γὰρ αὐτῶν  
 εἶναι συμβουλευτικόν. τὸ δὲ, διηγητικόν. τὸ δὲ, ἐγκω-  
 μαστικόν. εἶναι δ' αὐτῶν τῶν διαίρεσιν καὶ εἰς τῶν  
 φρασιν, καὶ εἰς τῶν τῶν καὶ εἰς τῶν ὑποκεισιν.  
 ὅτι δὲ ῥηρικὸν λόγον τῶν δισλεκτικῶν διακρίεσθαι  
 εἰς τε τῶν ποῦν τῶν σημασιῶν εἰς τε τὸν ποῦν τῶν  
 φαντασιῶν τόπων. καὶ τῶν ἐκ τῶν ὑποκειμένων  
 λεκτικῶν ἀξιωματικῶν καὶ αὐτελεῶν καὶ κατηφορημα-  
 τῶν, καὶ τῶν ὁμοίων ὀρθῶν καὶ ὑποτίων, καὶ γῆνων  
 εἰδῶν. ὁμοίως δὲ ἔστι λόγων ἔστι τρώων ἔστι συλλογισ-  
 μῶν, ἔστι παρὰ τῶν φωνῶν καὶ τὰ πλάγματα σοφισμά-  
 τῶν. ὡς εἶναι ψευδομενέας λόγους καὶ ἀληθεύοντας καὶ  
 ἀφάσκειντας, σωρείτας τε καὶ οὐκ ὁμοίους τῶν ἐν  
 λιπῶν καὶ ἀπέρους, καὶ πρᾶνόντας, καὶ ἐκτεταχυμένους.

Τ 2 κῶσα

ἢ ῥηρικῶν  
τριμῶν

διαίρεσις  
λόγους

διαλεκτικῶν  
διαίρεσις



κδρατίδας τὴ καὶ ἔτιδας καὶ θορίζοντας. εἶναι δὲ  
 τῇ δαλεκτικῇ ἰδιον τόπον αὐτῶν προειρημένον πε-  
 ρὶ αὐτῇ τῇ φωνῇ. ἐν ᾧ δεικνύται ἡ ἡγεμονία  
 φωνῆ. καὶ τίνα τὰ τοῦ λόγου μόρῃ καὶ ποῦ συλλογισ-  
 μῶν καὶ βαρβαρισμῶν καὶ πρηνειῶν, καὶ ἀμφοβολ-  
 λιῶν. καὶ ποῦ ἐμμελῶς φωνῆς. καὶ ποῦ μουσικῆς.  
 ποῦ ὅρων καὶ τινας καὶ διαίρεσιν καὶ λίξεων.  
 ἐν χρεστοτάτῳ δὲ φασὶν εἶναι τῷ ποῦ τῇ συλλο-  
 γισμῶν θεωρίαν. ὅ γὰρ ἀφαιρετικὸν ἐμφαίνει ὅ  
 πόρ συμβαλλεῖται πρὸς διόρθωσιν τῇ δα-  
 γμάλῃ, καὶ τάξι καὶ μνήμῃ ὅ ὑψιστικὸν κα-  
 τὰλημμα ἐμφαίνει. εἶναι δὲ ὅρμ λόγον αὐτῶν συ-  
 ποῦ συλ-  
 λογισμῶ  
 σημάτῃ καὶ ὑποφορᾷ. ὅρμ δὲ συλλογισμὸν λόγον  
 συλλογιστικὸν ἐκ τῶν. τῷ δὲ ἀπὸ δειξιμῶ λόγον  
 δὲ τῇ μᾶλλον καταλαμβανομένων, καὶ ἡτῶν  
 φαντασία καταλαμβανόμενον ποῦ πάντῃ. τῷ δὲ φαντα-  
 σίαν εἶναι τύπωσιν ἐν ψυχῇ. τοῖς οὐνόματῃ οἰκείως  
 μετενέμεται ἀπὸ τῇ τύπων ἐν τοῖς κηρῷ ὑπὸ  
 τοῖς δακτυλίσ γινόμενων. τῇ δὲ φαντασίας, τῷ μὲν  
 καταληπτικῷ. τῷ δὲ ἀκαταληπτικῷ. καταληπτικῷ  
 κῶ μὲν ὡς κειμένη εἶναι τῇ πραγματῇ φασί.  
 τῷ γινόμενῳ ἀπὸ ὑπαρχοντῇ κατ' αὐτὸ ὅ ὑπαρ-  
 χον ἐναποφραγισμένῳ καὶ ἐναπρεμαγμένῳ.  
 ἀκαταληπτικῷ δὲ τῷ μὴ ἀπὸ ὑπαρχοντῇ, ἢ ἀπὸ  
 ὑπαρχοντῇ μὲν μὴ κατ' αὐτὸ Δι' ὅ ὑπαρχοντῇ  
 τῷ μήτερον, ἢ μὴδὲ ἐκ τῶν. αὐτῷ δὲ τῷ δαλε-  
 κτικῷ

κτλὺν, ἀναγκαίαν εἶναι καὶ ἀρετῶν ἐν εἶδει ποδὶ  
 ἔχουσαν ἀρετὰς. τῷ τε ἀπρωτωσίᾳ ἐπισκή-  
 μῳ τοῦ ἥτε Δεῖ συνηταπείθεσθαι καὶ μὴ. τῷ δὲ ποδὶ δα-  
λεκτικῆς  
 ἀναικαϊότητα ἰσχυρὸν λόγον πρὸς τὸ εἶκος, ὥς τε  
 μὴ ἐνδεδόναι αὐτῷ. τῷ δὲ ἀνελεγχίαν ἰσχυρὸν ἐν λό-  
 γῳ, ὥς τε μὴ ἀπάγεται ὑπὸ αὐτοῦ εἰς τὸ ἀντικείμε-  
 νομ. τῷ δὲ ἀματαιότητα, ἔξιμ ἀναφορῶν τὰς  
 φαντασίας ὑπὸ τὸν ὀρθὸν λόγον. αὐτῷ τε τῷ ὑπὸ  
 σήμῳ φασίμ ἢ ηγατλη-τὴν ἀσφαλῆ, ἢ ἔξιμ ἐν φαν-  
 τασίῳ προσδέξει ἀμεταωτῶν ὑπὸ λόγου. οὐκ  
 αὖδὲ πῆς δαλεκτικῆς θεωρίας τὸ σφόδρ ἀωτῶν  
 ἴσεσθαι ἐν λόγῳ. τὸ τε γὰρ ἀληθὲς καὶ τὸ ψευδὲς  
 δαγινώσκεισθαι ὑπὸ αὐτῷ. καὶ τὸ πιδανὸν, τὸ τε ἀμ-  
 οιβόλως λεγόμενον διδουκινεῖσθαι. χωρὶς τε αὐτῷ  
 οὐκ εἶναι ὁδῶ ἱρωταῦν καὶ ἀρκινεῖσθαι. δατείνειμ  
 δὲ τῷ ἐν ταῖς ἀρφαλοῖς. προπέτειαν καὶ ὑπὸ τὰ  
 γινόμενα, ὥς τε εἰς ἀκρομῖαν καὶ εἰκαϊότητα τρέπε-  
 σθαι οὗ ἀγνυμῶς οὐ ἔχοντας τὰς φαντασίας. ἐκ  
 ἄλλως τὸ ὅξυ καὶ ἀγχίνου καὶ τὸ ὅλον δεινὸν ἐν λό-  
 γοις φανήσεσθαι τὸν σφόδρ. τοῦ γὰρ αὐτοῦ εἶναι ὀρθῶς  
 δαλέγεται καὶ δαλογίξεσθαι. καὶ τοῦ αὐτοῦ πρὸς τε  
 τὰ προκείμενα δαλεχθῆναι, καὶ πρὸς τὸ ἱρωτῶμε-  
 νομ ἀρκινεῖσθαι. ἃ πόρ ἱμπεῖρου δαλεκτικῆς ἀν-  
 δρὸς εἶναι ἐννοῦν τῆς λογικῆς. ταῦτα τὴν αὐτῆς δὲ  
 κείμ κεφαλαιωδῶς, καὶ ἵνα καὶ ηγατὰ μόρῳ εἴποι-  
 μιν, καὶ τὰ δὲ ἃ πόρ αὐτῶν εἰς τὸν εἰσαγωγικὸν



τείνει τέχνῳ. καὶ αὐτὰ ὑπὸ λέξεως πῆθησι διοκλῆς  
 ὁ μαλγυνης ἐν τῇ ὑπὸ μορῇ τῷ φιλοσόφῳ λέγων οὕ-  
 τως. ἀφίσκει τις σωῆσις ἢ ποῦ φαντασίας καὶ  
 αἰσθήσεως προτάλει λόγον, καὶ ὅτι ἢ κειτῆλορ,  
 ὃ ἡ ἀλήθεια τῷ πραγματῷ γινώσκειται, κατὰ γν-  
 οφ φαντασία δ᾽ ἐστὶ, καὶ καὶ ὅτι ὁ πόρι συνηγαθῆ-  
 σεως καὶ ὁ πόρι καταλήψεως καὶ νοήσεως λόγῳ  
 προάγων τῷ ἄλλῳ ἐκ αὐτοῦ φαντασίας συγίσα-  
 ται. προηγείται γὰρ ἡ φαντασία. εἴθ' ἡ διανοία ἐγ-  
 κλητική ὑπαρχουσα ὁ πᾶχει ὑπὸ τῆς φαντασίας  
 εἴθ' ἐκφορεῖ λόγῳ. διαφορεῖ δὲ φαντασία καὶ φάν-  
 τασμα. φάντασμα μὲν, γὰρ δ᾽ ἐστὶ Δόκησις διανοίας  
 οἷα γίνεται κατὰ τοῦ ὑπνους. φαντασία δὲ δ᾽ ἐστὶ τῇ  
 φαντασία πωσις ἐν ψυχῇ, τῶν τετέσιρ ἀλλοίωσις, ὡς ὁ χεύσις  
 ποτὶ ἐν τῇ δυοδεκάτῃ πόρι ψυχῆς ὑφίσταται. ὃ δὲ  
 γὰρ δεκτικὸν τῷ τύπωσιρ οἶονεῖ τύπῳ σφραγισθῆ-  
 ρθ'. ἐπεὶ αὐτὸν δεκτικὸν δ᾽ ἐστὶ πᾶσι τῷ τύπωσι κατὰ τὸ  
 αὐτὸ πόρι ἢ αὐτὸ γίνεσθαι. νοεῖται δὲ ἡ φαντασία ἡ  
 ἀπὸ ὑπαρχόντων κατὰ τὸ ὑπαρχόντων ἐναπρεμαγ-  
 μένη, καὶ ἐναπρετετυπωμένη, καὶ ἐναπρεσφραγισμέ-  
 νη. οἷα ἐκ αὐτῶν γνῶντο ἀπὸ μὴ ὑπαρχόντων. τῷ δὲ  
 διαίρεσις τῶν φαντασιῶν κατὰ αὐτῶν, αἱ μὲν εἰσιρ αἰσθητικά. αἱ  
 φαντασιῶν δ' εἰ. αἰσθητικά μὲν αἱ δι' αἰσθητικῶν ἢ αἰσθητικῶν  
 ὡς λαμβανόμεναι. ἐκ αἰσθητικῶν δὲ αἱ διὰ τῶν δι-  
 νοίας, καὶ δὲ πόρι τῷ ἀσωματῷ καὶ τῷ ἄλλῳ τῷ  
 λόγῳ λαμβανόμεναι. τῷ δὲ αἰσθητικῶν ἀπὸ ὑπαρχ-  
 ῶν τῷ

χόντῃ μετὰ εἴξεως καὶ συγκαταθείσεως γίνονται.  
 εἰσὶ δὲ τῇ φαντασίῳ αἱ μὲν λογικά. αἱ δὲ ἄλογοι.  
 λογικαὶ μὲν αἱ τῇ λογικῶν ζώων. ἄλογοι δὲ αἱ τῇ  
 ἀλόγων. αἱ μὲν οὖν λογικαὶ νοήσεις εἰσὶν. αἱ δ' ἄλο-  
 γοι ἔτετυχῆσαν ὀνόματι. καὶ αἱ μὲν εἰσι τεχνί-  
 νικαί. αἱ δὲ ἀτεχνοί. ἄλλως γοῦν θεωρεῖται ὑπὸ τε-  
 χνίταις εἰκῶν, καὶ ἄλλως ὑπὸ ἀτεχνου. αἰσθήσεις δὲ αἰσθήσε  
 λέγεται κατὰ τοὺς σῶηκούς, τὸ τε ἀφ' ἡγεμονικῶν  
 πνεῦμα, καὶ ὑπὸ τὰς αἰσθήσεις διήκον, καὶ ἡ δὲ αὐ-  
 τῇ κατὰληψις. καὶ ἡ πόρι τὰ αἰσθητήρια κατὰ-  
 σκευή. καὶ ἡ πνέου πνέου γίνονται. καὶ ἡ ἐνέργεια  
 δὲ αἰσθήσεως καλεῖται. ἡ δὲ κατὰληψις γίνεται  
 κατ' αὐτὴν αἰσθῆσι μὲν λευκῶν καὶ μελανῶν, καὶ  
 τραχιῶν καὶ λείων. λόγῳ δὲ τῇ δι' ἀποδείξεως  
 συναγομῶν. ὡς πόρι τοὺς θεοὺς εἶναι καὶ προνοεῖν  
 τὰ τῶν. τῇ γὰρ νοουμένων, τὰ μὲν κατὰ πόριπτω-  
 σιν ἐννοήθη. τὰ δὲ κατ' ὁμοιότητα. τὰ δὲ κατ' ἀνα-  
 λογίαν. τὰ δὲ κατὰ σωθῆσιν. τὰ δὲ κατ' ἐναντίω-  
 σιν. κατὰ πόριπτωσιν μὲν οὖν ἐννοήθη τὰ αἰσθητά.  
 κατ' ὁμοιότητα δὲ τὰ ἀπὸ πνέου παρακειμένων.  
 ὡς σωκράτης ἀπὸ τῆς εἰκόνος. κατὰ ἀναλογίαν  
 δὲ αὐξητικῶς μὲν ὁ τιτύος, καὶ κύκλω. μειωτι-  
 κῶς δὲ ὡς ὁ πυγμαῖος. καὶ τὸ κέντρον δὲ τῆς γῆς  
 κατ' ἀναλογίαν ἐννοήθη ἀπὸ τῶν μικροτόμων σφαι-  
 ρῶν. κατὰ σωθῆσιν δὲ οἷον ὁφθαλμοὶ ὑπὸ τοῦ  
 σῆτος. κατὰ σωθῆσιν δὲ ἐννοήθη ἰσχυρότητα,  
 ρ.



ρθ, καὶ κατ' ἐναντίωσιν θάνατθ. νοεῖται δὲ κατὰ  
 μετάβασιν πινὰ ὡς τὰ λεκτὰ καὶ ὁ τόπθ. φυσικῶς  
 δὲ νοεῖται δίκαιόν τι καὶ ἀγαθόν. καὶ κατὰ σόρησιν  
 οἶον ἄχειρ. γινώσκουσι δὲ πινὰ καὶ πόδι φαντασίας καὶ αἰ-  
 σθησεως καὶ νοήσεως δογματίζουσι. κριτικὸν δὲ τῷ  
 ἀληθείας φασὶ τυγχάνειν τῷ κατὰληπτικῷ φαν-  
 τασίαν. τούτῳ τῷ ἀπ' ἐπαρχυτθ, κατὰ φησι  
 χεύσιππθ ἐν τῇ διανοητικῇ τῇ φυσικῇ, καὶ αὐτὴ  
 πατρθ καὶ ἀκρολόδωρθ. ὁ μὲν γὰρ βοηθὸς κριτικῆς  
 πλείονα ἀκρολείπει, νοῦν καὶ αἰσθησιν, καὶ ὁρθεῖν  
 καὶ ὑπὸ τῇ μὲν. ὁ δὲ χεύσιππθ διαφύσκει τὸν πρὸς  
 αὐτὸν ἐν τῷ πρῶτῳ πόδι λόγου κριτικῆς φησὶν εἶναι,  
 αἰσθησιν καὶ πρόληψιν. ἔστι δ' ἡ πρόληψις ἐννοια φη-  
 σικὴ τῇ καθόλου. ἄλλοι δὲ πινὺς τῇ ἀρχαιοτέρῳ  
 σωτικῇ ἢ ὁρθῇ λόγον κριτικὸν ἀκρολείπουσιν, ὡς  
 ὁ πρὸς δῶνιθ ἐν τῷ πόδι κριτικῆς φησὶ. τῷ δὲ δια-  
 λεκτικῇ θεωρίας συμφώνως δοκεῖ τῷ πλείστοις ἀπὸ  
 τοῦ πόδι φωνῆς ἐναρξέσθαι τόπον. ἔστι δὲ φωνὴ  
 ἀπὸ πεπληγμένηθ. ἢ ἢ ἰδιὸν αἰσθητὸν ἀκροῦς, ὡς φη-  
 σι διογένης ὁ βαβυλωνίθ ἐν τῇ πόδι φωνῆς τέχνη.  
 ζῶν μὲν ὅτι φωνὴ ἀπὸ ὁρμῆς πεπληγμένηθ.  
 ἀνθρώπου δὲ ὅτι ἐναρξέσθαι καὶ ἀπὸ διανοίας ἐκπεμ-  
 πμένη, ὡς ὁ διογένης φησὶ. ἢ πᾶσι σώμα ὅτι ὡς φη-  
 σιν ἀρχιδημός τις ἐν τῇ πόδι φωνῆς, καὶ διογένης ὁ  
 αὐτίπατρθ καὶ χεύσιππθ ἐν τῇ Διόδορῳ τῇ  
 φυσικῇ. πᾶν γὰρ ἢ πρὸς σώμα ἔστι. πρὸς δὲ ἡ φωνή  
 νη πρὸ

φωνή

νῆ προσιοῦσα τῆς ἀκούουσιρ ἀπ' τῆς φωνουώτῆς. λέ-  
 ξις δὲ ὅτι κατὰ τὸν σωῖνον, ὡς φησι διογῆνης, φωνὴ λέξις  
 ἔγγραμματο. οἷον ἡ μόρ' αἰσί. λόγ' δὲ ὅτι φωνὴ λόγ' ὅ  
 σημαντικὴ ἀπ' ὁμοείας ἐκπεμπμένη. διαλεκτ' ὅ  
 δὲ ὅτι λέξις κεχαραγμένη ἐθνικῶς τε καὶ ἐκκλησι-  
 κῶς. ἢ λέξις πταπὴ. τὸ τέστι πρὶ κατὰ διαλεκτῆρ.  
 οἷον κατὰ μὲν τὴν ἀττίδα δάλαττα. κατὰ δὲ τὴν  
 ἰαδία ἡ μόρ'. τῆς δὲ λέξεως σοιχεῖα ὅτι τὰ εἰρησι-  
 τήσασα γράμματα. τειχῶς δὲ λέγεται ὁ γράμ-  
 μα. ὅτε χαρακτὴρ τῷ σοιχεῖ καὶ ὁ ὄνομα. οἷον α.  
 φωνηγῆτα δὲ ὅτι τῆς σοιχείων ἰστω, α ε η ι  
 ο υ ω. ἄφωνα δὲ ἐξ, β γ δ κ π τ. ὁμο-  
 φόρει δὲ φωνὴ καὶ λέξις, ὅτι φωνὴ μὲν καὶ ὁ ἦχ' αἰσί.  
 λέξις μὲν γὰρ ἄσημ' γίνεται ὡς ἡ βλίτει. λόγ' ὅ  
 δὲ ὁ δαμῶς. ὁμοφόρει δὲ καὶ ὁ λέγειν τὸ προφόρει-  
 θαι. προφύρονται μὲν γὰρ αἱ φωναί. λέγεται δὲ τὰ  
 πλάγματα. ἃ δὴ καὶ λεκτὰ τυγχάνει. τὰ δὲ λόγου  
 αἰσί μόρ' πέντε, ὡς φησι διογῆνης τὴν ἐν τῷ ποδὶ φω-  
 νῆς καὶ χεύσιτω. ὄνομα. προσσηγορία. ῥῆμα. σὺν-  
 δόμ'. ἄρθρον. ὃ δὲ ἀντίπατρ' καὶ τὴν μόσότη-  
 τα τίθησιν ἐν τῆς ποδὶ λέξεων καὶ τῆς λεγομένων.  
 αἰσί δὲ προσσηγορία μὲν, κατὰ τὸν διογῆνη μὲν λό-  
 γ' σημαντικὸν καὶ τὴν πρὸς τὴν ἀνθρώπου ἵππ'.  
 ὄνομα δὲ ὅτι μόρ' λόγ' δηλοῦν ἰδίαν πρὸς τὴν.  
 οἷον διογῆνης, σωκράτης. ῥῆμα δὲ ὅτι μόρ' λόγου  
 σημαντικὸν ἀσυνέστη κατὰ τὴν γόρημα, ὡς ὁ διογῆνης. ἢ  
 ὡς τινὲς

πέντε μόρ'  
 τῷ λόγῳ

προσηγορία

ὄνομα  
 ῥῆμα



ὡς πινθε σοιχῆιον λόγου ἄπτωτῳ, σημαῖνον τί συν-  
 σῶδεσθαι τακτῳ, πόρι πινθε ἢ πινῶν. οἶον γραφῶ, λέγω. συν-  
 δδεσθαι Δέ δῖσι μόρῳ λόγου ἄπτωτῳ συνδδεσθαι  
 ἀρθεον τὰ μόρη τοῦ λόγου. ἀρθεον Δέ δῖσι σοιχῆιον λόγου  
 πτωπικόν, διορίζον τὰ γῆν τῶν ὀνομαστικῶν καὶ οὗτοι ἀν-  
 ειθμούς. οἶον ὁ, τοῦ, τοῦ, οἱ, αἱ, αἱ. ἀρεταί δὲ λόγου εἰσὶ  
 ἀρεταί τοῦ λόγου πᾶν τε πᾶν τε, ἐλλωισμός, σαφιλῶεια, σωτηρία, πρίστην, κα-  
 τασκευή. ἐλλωισμός μὲν ὅτι φρασις ἀδιδῶτω  
 τῷ ἐν τῇ τεχνικῇ καὶ μὴ εἰκαῖα συνηθεία. σαφί-  
 λῶεια Δέ δῖσι λέξεις γνωρίμως παρὶσῶσα ἢ νοούμε-  
 νον. σωτηρία δὲ δῖσι λέξεις αὐτὰ τὰ ἀναγκαῖα ποιεῖ  
 χουσα πρὸς δήλωσιν τοῦ πράγματῳ. πρίστην Δέ  
 δῖσι λέξεις οἰκία τοῦ πράγματι. κατασκευή Δέ δῖσι  
 λέξεις ἐκπεφθυγυῖα ἢ ἰδιωτισμός. ὁ δὲ βαρβαρισ-  
 μός ἐκ τῶν ἡλικιῶν λέξεις δῖσι ποιεῖ ἢ ἔθῳ τῶν ἐν δαι-  
 μονουῶν ἐλλωῶν. σολωκισμός δὲ δῖσι λόγῳ ἀνα-  
 ταλλήλως σωτεταγμένῳ. πρίσμα Δέ δῖσι ὡς ὁ  
 προσειδῶνι φησὶν ἐν τῇ ποιεῖ λέξεως εἰσπεγωγῇ, λέ-  
 ξεις ἑμμετῶν ἢ ἑυρεθμῶν μετασκευῶν ἢ λογοει-  
 δεῖς ἐκβεβηκυῖα. ἢ ἑυρεθμοι δὲ εἶναι ἢ γὰρ μεγί-  
 πρίσιν καὶ διὸς αἰθέρ. πρίσιν Δέ δῖσι σημαντικὸν πρί-  
 σμα μῆμῳ ποιεῖ χον θείων καὶ ἀνθρωπείων. ὅρῳ  
 δῖσι δῖσι ὡς φησὶν ἀντίπατῳ ἐν τοῦ πρώτῳ ποιεῖ ὁ-  
 ρων, λόγῳ καὶ τὰ ἀναλυσιν ἀπαρτιζόντως ἐκφρά-  
 σιν, ἢ ἀπόδοσις. ὑπογραφή δὲ δῖσι λόγῳ τυπω-  
 δῶς εἰσάγων εἰς τὰ πράγματα, ἢ ὅρῳ ἀπλῶς

ρον τῶν τοῦ ὄρου δυνάμει προσελευγμένη. γῆ. γῆ  
 δὲ ὅτι πλείονων καὶ ἀναφαίρετῶν ἐννοημάτων τῶν σὺλ. γῆ  
 ληψις. οἷον ζῶον. ὅθεν γὰρ ποδεύετο τὰ κτλ. γῆ  
 ζῶα. ἐννόημα δὲ ὅτι φαντάσμα θλαυοίας, ὅτε τί ὁρ. ἐννόημα  
 ὅτε πρὶν. ὥσπερ εἶδε τί ὁρ καὶ ὥσπερ πρὶν. οἷον γίνε- ἐννόημα  
 ται ἀνατύπωμα ἵππου καὶ μὴ παρόντος. εἶδ. εἶδ  
 ὅτι ὁ ὑπὸ γῆς ποδεύετο. ὡς ὑπὸ τοῦ ζῶος ὁ ἀν- εἶδ  
 θρωπός ποδεύεται. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. διαίρεσις  
 γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ. γῆ  
 ὅτε ἔχει. ὡς πόρ. ὁ σωκράτης. διαίρεσις δὲ ὅτι γῆ. γῆ  
 ἢ εἰς τὰ προσεχῆ εἶδη γῆ. οἷον τῶν ζῶων τὰ μὲν γῆ  
 ὅτι λογικά. τὰ δὲ ἄλογα. ἀντιδιαίρεσις δὲ ὅτι γῆ. ἀντιδιαί-  
 εἰς εἶδος γῆ. τῶν τοῦ αὐτοῦ, ὡς αὐτὸς ἀπὸ φασί. ρεσις  
 οἷον τῶν ὄντων τὰ μὲν ὅτι ἀγαθὰ. τὰ δὲ ὅτι ἀγαθὰ. γῆ  
 ὑποδιαίρεσις δὲ ὅτι διαίρεσις. οἷον τῶν ὑποδιαί-  
 ὄντων, τὰ μὲν ὅτι ἀγαθὰ, τὰ δὲ ὅτι ἀγαθὰ. καὶ τῶν ρεσις  
 ὅτι ἀγαθῶν, τὰ μὲν ὅτι κακά, τὰ δὲ ἀδιδόξα. με- γῆ  
 τισμός δὲ ὅτι γῆ. εἰς τὸν ἑαυτοῦ κατὰ ταξίς, ὡς ὁ μετρισμός  
 κρινις. οἷον τῶν ἀγαθῶν τὰ μὲν ὅτι πόρ. ψυχῶν. τὰ γῆ  
 δὲ πόρ. σώμα. ἀμβολία δὲ ὅτι λέξις δύο ἢ καὶ ἀμβολία  
 πλείονα πρᾶγματα σημαίνουσα λεκτικῶς καὶ κυρί- γῆ  
 ως, καὶ κατὰ τὸ αὐτὸ ἔθ. ὡς θ' ἅμα τὰ πλείονα ἐκ γῆ  
 λέξεσσι κατὰ ταύτην τῶν λέξεων. οἷον αὐλητεῖς γῆ  
 πέπτωκε. δηλωῦται γὰρ δι' αὐτῆς, ὅτι μὲν, ριούρ. γῆ  
 οἰκία τρεῖς πέπτωκε. ὅτι δὲ, ριούρ. αὐλήτρια πέ- γῆ  
 πτωκε. ὁ λεκτικὸς δὲ ὅτι ὡς φησι προσειδέν. γῆ



ὡς ἡμῶν ἀληθῶν καὶ ψευδῶν καὶ οὐδετέρων. τυγ-  
 χαίνει δ' αὖτις, ὡς ὁ χεύσις φησὶ, ποῦ σημαίνου-  
 τα καὶ σημαίνόμενα. ἐν μὲν οὖν τῇ ποῦ φωνῇ θεω-  
 ρία ραῦτα λέγεται ῥίς σωῆσις. ἐν δὲ τῇ ποῦ τῷ  
 πλεγματῶν καὶ τῷ σημαίνοντων τῶν τετα-  
 κται ὁ ποῦ λεκτῶν καὶ αὐρτελῶν καὶ ἀξιωματῶν  
 καὶ συλλογισμῶν λόγῳ. καὶ ὁ ποῦ ἐπιπῶν τε καὶ  
 κατηγορηματῶν καὶ ὁρθῶν ὑπὸ πῶν. φασὶ δὲ ὅτι λε-  
 κτικὸν εἶναι ὃ κατὰ φαντασίαν λογικῶν ὑποσταμέ-  
 νοι. τῷ δὲ λεκτῶν τὰ μὲν, λέγουσιν εἶναι αὐρτελῶ  
 οἱ σωῆσις. τὰ δ' ἐπιπῶν. ἐπιπῶν μὲν οὖν ὅτι τὰ αἰα-  
 πάριςον ἔχοντα τῶν ἐκφοραῖ. οἷον γραφει σωκρα-  
 τῆς. ἐν μὲν οὖν ῥίς ἐπιπῶν λεκτῶν τετακται τὰ  
 κατηγορηματά. ἐν δὲ ῥίς αὐρτελῶν τὰ ἀξιώματα  
 καὶ οἱ συλλογισμοί. καὶ τὰ ἐρωτήματα. καὶ τὰ πύ-  
 σματα. ἔστι δὲ ὃ κατὰ τὸν ὁρθῶν καὶ κατὰ τὸν ἀγο-  
 ρισμῶν, ἢ πᾶν σωματικὸν ποῦ πῶν ἢ πῶν  
 ὡς οἱ ποῦ ἀκλόδιον φασὶν, ἢ λεκτῶν ἐπιπῶν  
 σωματικὸν ὁρθῶν πῶν πῶν ἀξιωματῶν γῶν.  
 τῷ δὲ κατὰ τὸν ὁρθῶν τὰ μὲν ὅτι συμβατά,  
 οἷον ὃ ὅτι πέτρας πλεῖν. καὶ τὰ μὲν ὅτι τῷ κατὰ  
 τὸν ὁρθῶν ὁρθῶν. ἃ δ' ὑπὸ πῶν. ἃ δ' ὁρθῶν. ὁρθῶν  
 μὲν οὖν ὅτι τὰ σωματικὰ μὲν τῷ πλεγματῶν  
 πῶν, πῶν κατὰ τὸν ὁρθῶν γῶν. οἷον ἃ  
 κούει, ὁρθῶν. ὁρθῶν. ὑπὸ πῶν δὲ ὅτι \* τὰ μὲν δ' ἔτε-  
 ρως ἔχοντα. οἷον φρονεῖν. ποῦ πατῆρ. ἀντιπεπνυθῶ-  
 τα δὲ

τα δὲ ὅτις τῆς ὑποτίσεως, ἀνύπτια ὄντα. ἐνδογυμνα-  
 τα δὲ ὅτις οἷον κείρεται. ἐμποδίζει γὰρ αὐτὸν ὁ  
 κειρόμενος. πάλαι δὲ πτώσεις εἰσὶ, γυμνὴ καὶ  
 δουπική, καὶ ἀπαπτική. ἀξίωμα δὲ ὅτις ὁ ὅτις ἀληθὲς  
 ἢ ψεύδεται, ἢ πᾶγμα αὐτελὲς, ἀκφαντὸν ὅσον ἀξίωμα  
 ἐφ' ἑαυτοῦ, ὡς ὁ χεύσις πᾶσι φησὶν ἐν τῆς διαλεκτικῆς  
 καὶ ὅροις. ἀξίωμα δὲ ὅτις ἀκφαντὸν ἢ μεταφαντὸν  
 ὅσον ἐφ' ἑαυτοῦ. οἷον ἡμῶρα δὲ. δῖον πομπάτει. ὡ/  
 νόμασαι δὲ ὅτις ἀξίωμα ἀπὸ τοῦ ἀξιούσθαι ἢ ἀθετεῖ-  
 σθαι. ὁ γὰρ λέγων ἡμῶρα δὲ ἀξιούσθαι δοκεῖ ὅτις ἡμῶ-  
 ραν εἶναι. ὅσης μὲν οὖν ἡμῶρας, ἀληθὲς γίνεται ὅτις  
 προκείμενον ἀξίωμα. μὴ ὅσης δὲ ψεύδεται. διαφέρει  
 δὲ ἀξίωμα καὶ ἐρώτημα καὶ πύσμα, προσακτικὸν  
 καὶ ὁρμηκὸν καὶ ἀραπτικὸν καὶ ὑποθετικὸν καὶ προ-  
 σαγορευτικὸν καὶ πᾶγμα ὁμοίον ἀξίωματι. ἀξίω-  
 μα μὲν γὰρ ὅτις ὁ λέγοντος ἀκφανόμενα, ὁ πόρ ἢ  
 ἀληθὲς ὅτις ἢ ψεύδεται. ἐρώτημα δὲ ὅτις πᾶγμα ἐρώτημα  
 αὐτελὲς μὲν, ὡς ὁ ἀξίωμα. αἰτητικὸν δὲ ἀκκρί-  
 σιως. οἷον ἄρα γε ἡμῶρα δὲ. ἔστω δὲ ὅτις ἀληθὲς  
 ὅτις ὅτις ψεύδεται. ὡς τε ὁ μὲν ἡμῶρα δὲ ἀξίω-  
 μα δὲ. ὁ δὲ ἄρα γε ἡμῶρα δὲ ἐρώτημα. πύσμα  
 δὲ ὅτις πᾶγμα πρὸς ὁ συμβολικῶς ἐκείνῃς ἀκκρί- πύσμα  
 νεῖται, ὡς ὡδὲ τοῦ ἐρωτήματος, καί. ἄλλα εἰπεῖν, οἷ-  
 κει ἐν τοῦ δὲ τόπω. προσακτικὸν δὲ ὅτις πᾶγμα ὁ  
 λέγοντος προσαλομένη. οἷον σὺ μὲν βολίζει τὰς  
 ἐπ' ἑαυτοῦ ῥαί. προσαγορευτικὸν δὲ ὅτις πᾶγμα



ὁ εἰς λίγοις πρὸς τεγορδοῖς αὐτοῖς ἀτρεῖς δὲ μέγιστε  
 αὐτῶν ἀνδρῶν ἀγαμέμνονι ὁμοίον Διὶ ὅστις ἀξιώματι  
 ὁ τῶν εἰσφορῶν ἔχει ἀξιώματι κλυτὰ τελευτῶν μοι  
 οἶον πλεονασμὸν ἢ πάθος ἔξω τίπτε τοῦ γένους τῶν  
 ἀξιωμάτων. οἶον καλὸς γὰρ ὁ παρθένος. ὡς περὶ αὐτῶν  
 δὴ σὺν ἐμφόρῃς ὁ βουκόλος. ἔστι δὲ καὶ ἐπαπρηπτι  
 κὸν πρὸς ἄγμα διηνεχὸς ἀξιώματι, ὁ εἰς λίγοις  
 πρὸς ἀφροῖν αὐτῶν. αὐτῶν ἔστι συγγενὲς τὴν λύπη καὶ βίῳ.  
 ὅτε δὲ ἀληθῆς ὅστις ὅτε φουδῆ ταῖς ἐρωτήματι καὶ  
 τὰ πύσματα καὶ τὰ τέρας παραπλήσια, τῶν ἀξιο  
 μῶν ἢ ἀληθικῶν ἢ φουδῶν αὐτῶν. τῶν ἀξιωμῶν  
 τῶν τὰ μὲν ὅστις ἀπλᾶ. τὰ δὲ ὅχι ἀπλᾶ ὡς φασὶν οἱ  
 πόδες χρύσιππον ἢ ἀργυρίδιον, καὶ ἀβλυδῶρον καὶ  
 ἀντίπατρον, καὶ κρινίρ. ἀπλᾶ μὲν οὕτως ὅτι τὰ σῶν  
 σῶτα δὲ ἀξιώματι μὴ ἀφροδουμένη, ἢ δὲ ἀξιώμα  
 τῶν. οἶον ὅτι ἡμῶρα ἔστιν. ὅχι ἀπλᾶ δὲ ὅτι τὰ σῶν  
 τα δὲ ἀξιώματι ἀφροδουμένη, ἢ δὲ ἀξιωμῶν.  
 δὲ ἀξιώματι μὲν ἀφροδουμένη οἶον εἰ ἡμῶρα ἔστιν.  
 δὲ ἀξιωμῶν δὲ οἶον εἰ ἡμῶρα ὅτι φῶς ὅστις. ἐν δὲ  
 τῶν ἀπλοῖς ἀξιώμασι ἔστι ὅτι ἀφροδουμένη καὶ ὅτι  
 νηπικὸν καὶ ὅτι σβηπικὸν καὶ ὅτι κατηγορδοῦν καὶ ὅτι  
 κατηγορδοῦν καὶ ὅτι ἀόριστον. ἐν δὲ τῶν ὅχι ἀπλοῖς  
 ὅτι συνημμένη καὶ ὅτι παρασυνημμένη καὶ ὅτι συμ  
 πεπλεγμένη καὶ ὅτι διεργυμένη καὶ ὅτι αὐτῶν  
 καὶ ὅτι ἀφροδουμένη ὅτι μᾶλλον καὶ ἀφροδουμένη ὅτι ἦτι  
 ρρ, καὶ ἀξιώματι \* οἶον ὅχι ἡμῶρα ἔστιν. εἰδὼς  
 δὲ τὸ

αἰσίου τῶν  
 ἀξιωμῶν

Δέ τῶν τῶν ὅτι ὑποφαντικόν. ὑποφαντικόν  
 κόν Δέ ὅτι ἀφαντικόν ἀφαντικόν. οἷον ὅτι ἡ  
 μόρα ὅτι. τίθησι δέ ὅτι ἡ μόρα ἰσίμ. ἀφαντικόν Δέ  
 ὅτι τὸ σωεσός δέ ἀφαντικόν μορίου καὶ κατηγο  
 ρήματῶ. οἷον οὐδέις πόριπατῆι. σφρητικόν Δέ  
 ὅτι τὸ σωεσός ἐκ σφρητικόν μορίου καὶ ἀξιώμα  
 τῶ κατὰ Διῶαμ. οἷον ἀφιλάνθρωπῶ ὅτι οὐ  
 τῶ. κατηγορικόν Δέ ὅτι τὸ σωεσός ἐκ πτώσει  
 ως ὀρθῆς καὶ κατηγορήματῶ. οἷον Δίωρ πόριπα  
 τῆι. καταγορευτικόν Δέ ὅτι τὸ σωεσός ἐκ πτώ  
 σεως ὀρθῆς Δεκτικῆς καὶ κατηγορήματῶ. οἷον  
 οὐτῶ πόριπατῆι. ἀόριστον Δέ ὅτι τὸ σωεσός δέ  
 ἀόριστον μορίου ἢ ἀόριστον μορίων. οἷον τίς πόριπα  
 τῆι. ἐκείνῶ κινεῖται. τῶ δ' οὐχ ἀπλῶν ἀξιώμα  
 των σωημμῶν μὲν ὅτι, ὡς ὁ χρύσιωπῶ ἐν  
 τοῖς σφραλεκτικαῖς φησι, καὶ Διογνήης ἐν τῇ σφρα  
 κτικῇ τέχνῃ, ὅτι σωεσός σφρα τοῦ ἐκ σωαπῆκον σω  
 δέσμον. ἐπαγγέλλεται δέ ὁ σωδδδμῶ οὐτῶ ἀ  
 κολουθεῖν ὅτι Δούτορον ἴδῃ πρώτῳ. οἷον ἐκ ἡ μόρα  
 ὅτι φῶς ὅτι. παρασωημμῶν δέ ὅτι ὡς ὁ κένις  
 φησὶν ἐν τῇ σφραλεκτικῇ τέχνῃ ἀξίωμα ὁ ὑπὸ τοῦ  
 ἐπεὶ σωδδδδμου παρασωηῶται, ἀρχόμενον ἀπ'  
 ἀξιώματῶ καὶ λῆγον εἰς ἀξίωμα. οἷον ἐπεὶ ἡμέ  
 ρα ὅτι, φῶς ὅτι. ἐπαγγέλλεται Δέ ὁ σωδδδδ  
 μῶ ἀκολουθεῖν τε τὸ Δούτορον ἴδῃ πρώτῳ, καὶ  
 τὸ πρῶτον ὑφισταῖν. συμπεπλεγμένον Δέ ὅτι  
 ἀξίωμα



ἀξίωμα δ' ὑπὸ τινωρ συμπλεκτικῶρ σωδίσμων  
 συμπιπλεκται. οἷον καὶ ἡμόρα δ' ἔστι καὶ φῶς δ' ἔστι.  
 διεργυμνόν Δι' ἔστι δ' ὑπὸ τοῦ ἡρι δ' ἡμερικῶ  
 σωδίσμου διεργυμνεται. οἷον ἡρι ἡμόρα δ' ἔστι ἡ νύξ  
 δ' ἔστι. ἐπαγγέλλεται δὲ ὁ σωδίσμος ἔστι ἔτε-  
 ρον τῶν ἀξιωματῶν λευδίον εἶναι. αὐτῶν δὲ δι' ἔστι  
 ἀξίωμα τὸ σωτασόμενον δ' ἔστι τοῦ διότι. οἷον διότι ἡ-  
 μόρα δ' ἔστι φῶς δ' ἔστι. οἷον γὰρ αἵτιον δ' ἔστι τὸ πρῶτον  
 τοῦ δευτέρου. δ' ἔστι τοῦ μᾶλλον ἀξίωμα δ' ἔστι  
 τὸ σωτασόμενον ὑπὸ τοῦ δ' ἔστι τοῦ μᾶλ-  
 λον σωδίσμου καὶ μεταξὺ τῶν ἀξιωματῶν τασσο-  
 μένου. οἷον μᾶλλον ἡμόρα δ' ἔστι ἡ νύξ δ' ἔστι. δ' ἔστι  
 τοῦ ἡττον ἀξίωμα δ' ἔστι τὸ ἡντιον τοῦ πρῶτον  
 μένου. οἷον ἡττον νύξ δ' ἔστι ἡ μόρα ἔστι. ἐπὶ τῶν ἀξιο-  
 ματῶν κατὰ τε ἀλήθειαν καὶ λευδίον ἀντικείμε-  
 να ἀλήθεις δ' ἔστι, ὡς τὸ ἔτερον τοῦ ἐτέρου δ' ἔστι ἀρ-  
 φαπνόν. οἷον τὸ ἡμόρα ἔστι. καὶ τὸ ἔχ ἡμόρα ἔστι. συ-  
 νημνόν ὅσω ἀληθής δ' ἔστι δ' ἡ ἀντικείμενον τοῦ λεί-  
 γοντος μάλχεται τοῦ ἡγουμενῶ. οἷον εἰ ἡμόρα δ' ἔστι  
 φῶς δ' ἔστι, ἔστι ἀληθής. τὸ γὰρ ἔχ φῶς ἀντικείμενον  
 τοῦ λήγοντι μάλχεται τοῦ ἡμόρα δ' ἔστι. συνημνόν  
 δὲ λευδίον δ' ἔστι δ' ἡ ἀντικείμενον τοῦ λήγοντος δ'  
 μάλχεται τοῦ ἡγουμενῶ. οἷον εἰ ἡμόρα δ' ἔστι δ' ἡ πε-  
 ριπατῆ. τὸ γὰρ ἔχ δ' ἡ περὶ πατῆ δ' μάλχεται  
 τοῦ ἡμόρα ἔστι. παρασυνημνόν δὲ ἀληθής μὲν δ' ἔστι  
 ὁ ἀρχόμενος ἀπὸ ἀληθοῦς εἰς ἀκρότουθον λήγει. οἷον  
 ἐπεί.

ἐπεὶ ἡμόρρα ὅστις ἤλιθ' ὅστις ἑωρὶ γῆς. τεύδ' οὖν δὲ  
 ἢ ἄρ' ἐπὶ τοῦ ἀρχεται, ἢ μὴ εἰς ἀκόλουθον λήγει.  
 οἷον ἐπεὶ νύξ' ὅστις, δῖωρ ποδὶ πατῆι, αὖ ἡμόρρας ὅστις  
 λήγεται. αὖ πῶδ' οὖν δὲ ἀληθὲς μὲν ὅστις ὁ ἀρχόμενος  
 ἀρ' ἀληθοῦς εἰς ἀκόλουθον λήγει. ὁ μὲν ἔχει τοῦ λή  
 γοντι ὁ ἀρχόμενος ἀκόλουθον. οἷον διότι ἡμόρρα ὅστις  
 φῶς ὅστις. τοῦ μὲν γὰρ ἡμόρρα ὅστις ἀκολουθεῖ ὁ φῶς  
 ὅστις. τοῦ δὲ φῶς ὅστις ὁ ἔχειται ὁ ἡμόρρα ἐστίν. αὖ  
 πῶδ' οὖν δὲ τεύδ' οὖν δὲ ἢ ἄρ' ἐπὶ τοῦ ἀρχεται, ἢ μὴ  
 εἰς ἀκόλουθον λήγει, ἢ ἔχει τοῦ λήγοντι ὁ  
 ἀρχόμενος ἀνακόλουθον. οἷον διότι νύξ' ὅστις δῖωρ ποδὶ  
 πατῆι. πιθανὸν δὲ ὅστις ἀξίωμα ὁ ἄγον εἰς συγκα  
 τὰσθαι. οἷον εἰ τις π' ἔτεκεν ἐκείνη ἐκείνου μήτηρ  
 ὅστις. τεύδ' οὖν δὲ ὅστις ὁ γὰρ ὅστις ὡς ὅστις μήτηρ. ἐπ  
 τὲ τὰ μὲν ὅστις δῖωρ, τὰ δὲ ἀδῖωρ. καὶ τὰ μὲν  
 ἀναγκαῖα, τὰ δὲ ὅχι ἀναγκαῖα. δῖωρ μὲν ὁ πῶ  
 δεκτικὸς τοῦ ἀληθὲς εἶναι, τῶν ἐκ τῶν μὴ ἐναντιουμένων  
 εἰς ὁ ἀληθὲς εἶναι. οἷον ὅχι δῖωρ. ἀδῖωρ δὲ ὁ  
 μὴ ὅστις πῶδεκτικὸς τοῦ ἀληθὲς εἶναι. οἷον ἢ γῆ ἵπτα  
 ται. ἀναγκαῖον δὲ ὅστις ὁ πῶρ ἀληθὲς ὅχι ὅχι πῶ  
 δεκτικὸς τοῦ τεύδ' οὖν δὲ εἶναι, ἢ πῶδεκτικὸς μὲν ὅστις, τὰ  
 δὲ ἐκ τῶν αὐτῶν ἐναντιοῦται πῶρ ὁ τεύδ' οὖν δὲ εἶναι. οἷον  
 ἢ ἀρετὴ ὡφελῆι. ὅχι ἀναγκαῖον δὲ ὅστις ὁ καὶ ἀληθὲς  
 ὅστις καὶ τεύδ' οὖν δὲ οἷον τε εἶναι τῶν ἐκ τῶν μὴ ἐναν  
 τιουμένων. οἷον ὁ πῶδεκτικὸς δῖωρ. ἔσθ' οὖν δὲ ὅστις  
 ἀξίωμα ὁ πλείονας ἀφορμὰς ἔχει εἰς ὁ ἀληθὲς εἶναι.

X οἷον





γοντοδ μὴ συλλογισικῶς. οἶον οἱ ριθῖρι.  $\text{φευδ}\Theta$   $\delta\zeta\iota$   
 $\gamma$  ἡμόρα  $\delta\zeta\iota$ ,  $\epsilon$  νύξ  $\delta\zeta\iota$ ρ. ἡμόρα δὲ  $\delta\zeta\iota$ ρ,  $\delta\kappa$  ἀφα νύξ  
 $\delta\zeta\iota$ ρ. ἀσυλλογισοι δ' εἰσὶν οἱ παρακείμενοι μὲν πίδα  
 νῶς βίς συλλογισικοῖς,  $\delta$  συνάσονται δὲ. οἶον εἰ ἵππος  
 $\delta\zeta\iota$  δῖωρ,  $\zeta\omega$ ρ  $\delta\zeta\iota$  δῖωρ.  $\delta\kappa$  ἀφα  $\zeta\omega$ ρ  $\delta\zeta\iota$  δῖωρ. ἐπ  
 $\tau$  λόγων, οἱ μὲν ἀληθεῖς εἰσιν, οἱ δὲ  $\text{φουδ}\epsilon\iota\varsigma$ . ἀληθεῖς  
 μὲν  $\delta\kappa$  εἰσι λόγοι οἱ δι' ἀληθῶν συνάσονται. οἶον εἰ ἡ ἀρε  
 τὴ ὠφελεί, ἡ χρημία βλάβη.  $\text{φουδ}\epsilon\iota\varsigma$  δὲ εἰσιν οἱ τῶν  
 λημμάτων ἔχοντες  $\text{ε}$   $\text{φευδ}\delta\varsigma$ , ἡ ἀπόρροοντες. οἶον  
 εἰ ἡμόρα  $\delta\zeta\iota$  φῶς  $\delta\zeta\iota$ ρ. ἡμόρα δὲ  $\delta\zeta\iota$ .  $\zeta\eta$  ἀφα δῖωρ.  
 $\epsilon$   $\text{δωαρι}$  δ' εἰσὶ λόγοι  $\epsilon$  ἀδύαρι, καὶ ἀναγκάσιοι.  
 καὶ  $\delta\kappa$  ἀναγκάσιοι. εἰσὶ δὲ καὶ ἀναπρόδικοι τινὲς  $\text{φωδ}$  μὴ  
 χεῖρ  $\alpha$ ρθεῖξως. ἄλλοι μὲν παρ' ἄλλοις, παρὰ δὲ  
 $\text{φωδ}$  χευσίπῳ πέντε. δι' ὧν πᾶς λόγος πλέκεται.  
 οἱ πινδ λαμβάνονται  $\text{ε}$  τῶν ποραιτικῶν  $\epsilon$   $\text{ε}$  τῶν  
 συλλογισμῶν, καὶ ὡς τῶν τροπικῶν. πρῶτος δὲ εἰ  
 σιν ἀναπρόδεικτος  $\gamma$   $\omega$  πᾶς λόγος συντάσσεται  
 ἐν συνημμένῳ καὶ τῷ ἡγουμενῷ. ἀφ'  $\delta$  ἀρχεται π  
 ρωτημμένον, καὶ  $\gamma$  λῆγον. οἶον εἰ  $\gamma$   $\alpha$   $\gamma$   $\beta$ . ἀλλὰ  
 μὲν  $\gamma$   $\alpha$   $\gamma$  ἀφα  $\beta$ . δότωρ  $\delta$   $\delta\zeta\iota$ ρ ἀναπρόδει  
 κτος  $\delta$   $\text{δ}\alpha$  ρωτημμένον καὶ τὸ ἀντικείμενον τὸ λήγον  
 $\text{ε}$   $\gamma$  ἀντικείμενον  $\tau$  ἡγουμένον ἔχωρ συμπόρασμα.  
 οἶον εἰ ἡμίρα εἰς φῶς εἰσιν. ἀλλὰ μὲν νύξ εἰσιν,  $\delta\kappa$  ἀφα  
 ἡμόρα εἰσιν. ἡ  $\text{δ}$  πρόσληψις γίνετο ἐν τῷ ἀντικείμενον  
 $\text{φωδ}$  λήγοντι.  $\epsilon$  ἡ ὑποφορά ἐν τῷ ἀντικείμενον  $\delta$  ἡγουμέν  
 νω. τρίτος δ' εἰσιν ἀναπρόδεικτος  $\delta$  δι' ἀρφαλῆς συμ

διαίρεσις  
 τῶν λόγων



πλακῆς καὶ ἐνός τῶ ἐν τῇ συμπλοκῇ ὑπὸ φόρῳ ὅτι  
 πικρίμνον τοῖς λοιπῷ. οἷον ὅχι τέθυκε πλατῆν καὶ  
 ῥῆ πλατῆν. ἀλλὰ μὲν τέθυκε πλατῆν. ἐκ ἄρα ῥῆ  
 πλατῆν. τέταρτος δὲ ἀναγράφειν ὁ δὲ διε-  
 ρεγυμένον καὶ ἐνός τῶ ἐν τῷ διερεγυμένῳ ὅτι ἀντι-  
 κείμνον τοῖς λοιπῷ ἔχωρ συμπόρασμα. οἷον ἥρι ὅ  
 πρῶτον ἢ ὅ Δούτορον, ἀλλὰ μὲν ὅ πρῶτον ἐκ ἄρα  
 ὅ Δούτορον. πέμπτος δὲ ὅτι ἀναγράφειν ὁ δὲ διε-  
 ρῆ πᾶς λόγος σωτασεται ἐκ διερεγυμένου ὅ  
 ἐνός τῶ ἐν τῷ διερεγυμένῳ ἀντικειμένου, καὶ ὑπὸ  
 φόρῳ ὅτι λοιπῷ. οἷον ἥρι ἡμόρα ὅτι ἢ νύξ ὅτι. ὅχι  
 δὲ νύξ ὅτι. ἡμόρα ἄρα ἐσίμ. ἐπὶ ἀληθείᾳ δὲ ἀληθὲς ἐν-  
 πεται κατὰ τὸν σωϊκούς. ὡς τῷ ἡμόρα ὅτι ὅ φῶς  
 ὅτι. καὶ φούδει φεύδῳ. ὡς τῷ νύξ ὅτι φούδει, ὅ  
 σκότος ἐσίμ. καὶ φούδει ἀληθὲς. ὡς τῷ ἱππασί τῶν  
 γλῶ ὅτι εἶναι τῶν γλῶ. ἀληθὲς μὲν ῥι φεύδῳ ἐκ ἀ-  
 κολουθεῖ. τῷ γὰρ εἶναι τῶν γλῶ ὅτι πέτεται τῶν γλῶ  
 ἐκ ἀκολουθεῖ. καὶ ἄλλοι δὲ πῶς εἰσὶ λόγοι ἐγκει-  
 λυμένοι καὶ ὁραλὲς ἀληθότος καὶ σωρεῖται καὶ ὁρα-  
 τῶς καὶ ὅτι πῶς. ἐπὶ δὲ ἐγκειλυνμένοι οἷον ὅρι  
 οὗτος. ὅχι τὰ μὲν δύο ὀλίγα ἐσίμ. ὅχι δὲ καὶ τὰ  
 τρία. ὅχι δὲ καὶ τὰ τέσσαρα. καὶ οὕτω μέλει τῶν  
 δέκα. τὰ δὲ δύο ὀλίγα ὅτι, καὶ τὰ δέκα ἄρα. ὅτις δὲ  
 ὅτι λόγος σωταστικός καὶ δὲ ἀορίστον καὶ ὠρισμέ-  
 νον σωεσῶς, πρόσληψις δὲ καὶ ὑποφορὰν ἔχωρ. οἷον  
 εἰς ὅτι ὅτι τῶντα ἐκ ἐσίμ ἐκείνῳ ἐν ὅδῳ. καὶ ῥι  
 οὗρι

ὅτι μὲν ἐν τοῖς λογικοῖς οἱ σωῖτες, ἵνα μάλιστα κρα-  
 τυώσι διαλεκτικὸν αἰεὶ εἶναι τὸν σοφόν. πάντα γὰρ  
 τὰ πλάγματα δὲ τῇ ἐν λόγοις θεωρίας ὁρᾶσθαι, ὅσα  
 τὸ τοῦ φυσικοῦ τύπου τυγχάνει. καὶ αὖ πάλιν ὅσα  
 τοῦ ἡθικοῦ. εἰς μὲν γὰρ τὸ λογικὸν τί διείλεται πόρι-  
 τε οὐνομασίῃ ὁρθότητι ὅπως δέταξαν οἱ νόμοι ὑπὲρ  
 τοῖς ἔργοις ἐκ αὐτῶν ἔχειν εἰπεῖν. διούσης δὲ ἔχειν σω-  
 θεῖαν τοῦ ἡθικοῦ τῆς ἀρετῆς. ἢ μὲν, τί ἔχει  
 σοφὸν δὲ τῇ ὀντῇ σκοπεῖν. ἢ δὲ, τί καλεῖται. καὶ ὡς  
 μὲν αὐτοῖς ἔχει τὸ λογικόν. τὸ δὲ ἡθικόν μόρον τῆς  
 φιλοσοφίας διαίρουσι εἰς τε τὸν πόρον ὁρμῆς καὶ εἰς  
 τὸν πόρον ἀγαθῶν καὶ κακῶν τούτων, καὶ εἰς τὸν πόρον  
 παθῶν καὶ πόρον ἀρετῆς καὶ πόρον τέλους. πόρι τε τῇ  
 πρώτης ἀξίας καὶ τῇ πλεονεξίᾳ. καὶ πόρον τῇ κακῇ  
 κόντῃ. προτροπῶν τε καὶ ἀποτροπῶν. καὶ οὕτω δι-  
 αποδιαίρουσι οἱ πόροι χεῦσιππον καὶ ἀρχιδήμερον,  
 καὶ ζώνωνα τὸν τασέα, καὶ ἀρχιλόδοτον καὶ διογέ-  
 νην καὶ ἀντίπατρον καὶ προκλῶνιον. ὁ μὲν γὰρ κίπ-  
 πος ζώνων καὶ ὁ κλεάνθης ὡς αὐτῶν ἀρχαιοτόμοι ἀφελέ-  
 σθον πόρον τῇ πλεονεξίᾳ δέλαβον. οὗτοι δὲ διεί-  
 λον καὶ τὸν λογικόν καὶ τὸν φυσικόν. τῶν δὲ πρώτων  
 ὁρμῶν φασὶν ὅτι ζώνων ἔχει ὑπὲρ τῆς ἐμῆς ἰατρικῆς  
 οὐσίας αὐτῶν τῆς φύσεως ἀπ' ἀρχῆς. καὶ δὲ φησὶν ὁ  
 χεῦσιππος ἐν τῇ πρώτῃ πόρον τέλων, πρώτων δὲ οἰ-  
 κῶν λέγων εἶναι παντὶ ζῶον τῶν αὐτῶν σύσασιν καὶ  
 τῶν ταύτης σωείδῃσι. ὅτι γὰρ ἀλλοτριῶσαι εἰ-

διαίρουσι  
 τοὺς ἡθικοῦ



κὸς ὡς αὐτὸ ὃ ζῶον ἔτε πρὶν ἔσθαι αὐτό. μήτε ἄλλο  
 τειῶσαι μήτε ἐκ οἰκείῳ. ἀκλείπεται γίνωσι λεί-  
 γειρ συσκευαζόμενον αὐτὸ οἰκείως πρὸς ἑαυτό. οὕτω  
 γὰρ τὰ βλαπτικὰ διωθῆται, καὶ τὰ οἰκεία προσέ-  
 ται. ὁ δὲ λέγεισι πῶς πρὸς ἡδονὴν γίνεσθαι τὴν  
 πρῶτον ὁρμὴν πρὸς ζῶοις, φεῦδε ἀκφαίνουσιν. οὐκ  
 γίνεσθαι γὰρ φασιν εἰ ἄρα ὅστις ἡδονὴν εἶν' ὅταν αὐ-  
 τὴν ἡσθ' αὐτὴν ἢ φύσις οὐκ ἐπιτήσασα τὰ ἐναρμόζον-  
 τα τῇ συσώσει ἀκλάβη. ὁμ' ἑτέρωθεν ἀφ' ἑαυτῆς τὰ  
 ζῶα, καὶ δάμει τὰ φυτὰ. ὁ δ' ἐν τῇ φασὶ δὴ λαξέειν  
 ἢ φύσις οὐκ ἐπὶ τῇ φύτῃ καὶ οὐκ ἐπὶ τῇ ζῶον. ὅτι χωρὶς  
 ὁρμῆς καὶ αἰσθήσεως καὶ κίνησεως οὐκ ἐκείνη ἀκκίναται, ἐφ' ἡμῶν  
 πῶς φερεσθῶς γίνεται. ἐκ πόδων δὲ τῇ ὁρμῇ πρὸς  
 ζῶοις οὐκ ἐκκίναται ἢ συγχρώμενα πορεύεται πρὸς  
 τὰ οἰκεία, τὸ πρὸς μὲν ὃ κατὰ φύσιν ὃ κατὰ τὴν ὁρ-  
 μὴν διοικεῖσθαι. τὸ δὲ λόγος πρὸς λογικοῖς κατὰ τε-  
 λειοτόραν προσασίαν δεδωμένον, ὃ καὶ λόγος ζῶον  
 ὁρθῶς γίνεσθαι πρὸς κατὰ φύσιν. τεχνίτης γὰρ ἔστι  
 οὐκ ἐκκίναται πρὸς ὁρμῆς. διό πορ' πρῶτον ὁ ζῶον ἐν  
 τῷ πόδι ἀνθρώπου φύσεως, τέλει ἔπειτα ὃ ὁμολογεῖ-  
 μένως τῇ φύσει ζῶον, ὃ πορ' ὅστις κατ' ἀρετὴν ζῶον. αἰ-  
 γει γὰρ πρὸς ταύτῃ ἡμᾶς ἢ φύσις. ὁμοίως δὲ καὶ  
 κλεαῖνης ἐν τῷ πόδι ἡδονῆς, καὶ προσειδόντι καὶ ἐν  
 κατ' ἐν πρὸς πόδι τελεῶν. πάλιν δ' ἴσον ὅστις ὃ κα-  
 τ' ἀρετὴν ζῶον κατ' ἐμπειρίαν τῇ φύσει συμ-  
 βαίνοντι ζῶον, ὡς φησι χρύσιππος ἐν τῷ πρῶτῳ  
 πόδι

ποδὶ τελῶν. μόρῃ γὰρ εἰσιν αἱ ἡμέτεραι φύσεις τῆς  
 τοῦ ὅλου. διό ποδὶ τέλει γίνεται ἡ ἀκολουθὼς τῇ  
 φύσει. ὁ ποδὶ δὲ κατὰ γὰρ τὴν αὐτὴν καὶ κατὰ τὴν  
 τῶν ὅλων, ὅθεν ἐνδοξοῦντας ὡς ἀπαγορεύειν εἶναι  
 θέν ὁ νόμος ὁ κοινὸς δὲ πάντων ἐρχόμενος, ὁ αὐτὸς  
 ἐν τῷ δὲ κατὰ γὰρ τῆς τῶν ὅλων διοικήσει  
 ως ὅν π. εἶναι δὲ αὐτὸν εἶναι τὴν τοῦ ἐνδαίμονος ἀρε-  
 τὴν. καὶ ἐνδοξοῦν βίου, ὅταν πάντα πλεῖνται κατὰ  
 τὴν συμφωνίαν τοῦ παρ' ἐχέτω διαίμονος, πρὸς τὴν  
 τοῦ ὅλου διοικητὴ θέλησιν. ὁ μὲν οὖν διοχῆς τέλει  
 φησὶ δὴ τῶς ἡ ἐνδοξοῦν ἐν τῇ τῶν κατὰ φύσιν ἐκδο-  
 γῇ. ἀρχὴ δὲ καὶ δὲ πάντα τὰ κατὰ φύσιν ὑπὸ  
 λαῶντα ζῶν. φύσιν δὲ χρύσιον μὲν διακρίνει  
 ἀκολουθὼς δὲ ζῶν, τὴν τε κοινὴν καὶ ἰδίως τὴν αὐ-  
 θρωπίνην. ὁ δὲ κλεινὸς τὴν κοινὴν μόνον ἐκδέχεται  
 φύσιν, ἡ ἀκολουθεῖν δὲ. οὐκ ἐπὶ δὲ καὶ τὴν ὑπὸ  
 μόρῃ. τὴν τε ἀρετὴν διακρίνει εἶναι ὁμολογουμέν-  
 νην, καὶ αὐτὴν δὲ αὐτὴν εἶναι ἀρετὴν, οὐ διακρί-  
 να φόβον ἢ ἐλπίδα, ἢ τὴν ἑξωθεν. ἐν αὐτῇ τὴν  
 εἶναι τὴν ἐνδαίμονίαν, ἢ τε οὐση ψυχῇ πεποιη-  
 μένη πρὸς τὴν ὁμολογίαν παντὸς τοῦ βίου. δι-  
 ακρίφεται δὲ τὸ λογικὸν ζῶον, ποτὶ μὲν διὰ  
 τὰς τῶν ἑξωθεν πραγματειῶν πιθανότητας. πο-  
 τὶ δὲ διὰ τὴν κατὰ φύσιν τῶν σωόντων. ἐπεὶ  
 ἡ φύσις ἀφορμὰς δίδωσιν ἀδιασφόρῃ. ἀρετὴ  
 δὲ ἡ μὲν τις κοινὴς παντὶ τελείωσις, ὡς ποδὶ  
 ἀνδρείῃ

διὰ τὴν ἀρετὴν  
 ὅτι τὴν  
 καὶ οὐχ οὐδὲν  
 τὴν αὐτὴν εἶναι



ὑγίαι

ἀνδρείῳ

| εὐ

ὑγίαι  
| γὰρ

ἔνδοξοι τῶ

ὑγίαι

in ἔνδοξοι τῶ  
ἔνδοξοι.

| τι

ἐκ προσηγορίας

| 18

πρωτόν

πρῶτον

αἰδραύτῃ. καὶ ἡ ἀθεώρητῃ ὡς πόρ ὑγίαια, καὶ ἡ  
 θεωρηματικὴ ὡς φρόνησις. φησὶ γὰρ ὁ ἐκείνῃ ἐν ἑφ  
 πρώτῳ ποδὶ ἀρετῇ, ὑψημονικὰς μὲν εἶναι καὶ θεω  
 ρηματικὰς τὰς ἐχούσας τὴν σύστασιν ἐκ θεωρημα  
 τῇ, ὡς φρόνησις καὶ δικαιοσύνη. ἀθεωρήτῃ δὲ  
 τὰς κατὰ παρῆκτασις θεωρουμένης, ταῖς ἐκ τῇ  
 θεωρηματῇ συνεσκηναίαις, καὶ δὲ πόρ ὑγίαιαν καὶ  
 ἰσχυρῇ. τῇ ἀφροσύνη θεωρημένη ὑπαρχούσῃ συμ  
 βαίνει ἀκροβυθίῃ καὶ παρεκτείνεσθαι τὴν ὑγίαιαν.  
 καὶ δὲ πόρ τῇ φαλίδῃ οικονομίᾳ τὴν ἰσχυρῇ ὑπὸ γί  
 νεσθαι. καὶ λαμβάνεται δὲ ἀθεώρητῃ ὅτι μὴ ἐχρυσισυγ  
 καταθέσεις, ἀλλ' ὑπὸ γίνονται, καὶ ποδὶ φαύλους γί  
 γνούνται, ὡς ὑγίαια, αἰδραύ. τεκμήριον δὲ τὸ ὑπαρ  
 κτῆν εἶναι τὴν ἀρετῇ φησὶν ὁ προσδιδόντι ἐν ἑφ  
 πρώτῳ τοῦ ἡδικεῦ λόγῳ, τὸ γνέσθαι ἐν προσηγορίᾳ οὗ  
 ποδὶ σωκρατῇ, διοχίλῳ καὶ ἀντιπατρίῳ. εἶναι δὲ  
 καὶ τὴν κακίαν ὑπαρῆναι τὴν δὲ τὸ ἀντικεῖσθαι τῇ ἀ  
 ρετῇ. διδασκτικῇ τε εἶναι αὐτῇ, λέγω δὲ τὴν ἀρετῇ  
 καὶ χρύσιππῃ ἐν ἑφ πρώτῳ ποδὶ τέλει φησὶ, ὅ  
 κλειανθὸς καὶ προσδιδόντι ἐν τῇ προσηγορίᾳ,  
 καὶ ἐκείνῃ. ὅτι δὲ διδασκτικῇ ὅτι, Δῆλον ἐκ τοῦ γίνε  
 σθαι ἀγαθὸν ἐκ φαύλων. παναίπῃ μὲν οὖν δύο  
 φησὶν ἀρετὰς, θεωρητικὴν καὶ πρακτικὴν. ἄλλοι δὲ  
 λογικὴν καὶ φυσικὴν καὶ ἡθικὴν. τέτταρας δὲ οἱ πε  
 ρὶ προσδιδόντος καὶ πλείονας οἱ ποδὶ κλειανθίου καὶ  
 χρύσιππου καὶ ἀντιπατρός. ὁ μὲν γὰρ ἀκροβυθίᾳ  
 μίαν

μίαν λέγει τῷ φρόνησι. τῷ δὲ ἀρετῶν, τὰς μὲν  
 πρώτας, τὰς δὲ ταύτας ὑποταγμένας. πρώτας *πρὸς τῷ γὰρ*  
 μὲν τὰς δὲ, φρόνησι, ἀνδρείαν, δικαιοσύνην, σωφρο- *κἀν καὶ εἰδ-*  
 σύνην. ἣν εἶδ' ἡμεῖς τὴν μεγαλοφυχίαν, ἐγκράτειαν, *κἀν ἀρετῶν*  
 καὶ τοῦ ἄλλου, ἀγχινοίαν, ἐμβουλίαν. καὶ τῷ μὲν φρόνη-  
 σι εἶναι ὑπὸ τῇ μὲν κακῶν καὶ ἀγαθῶν καὶ ὁ δὲ τί-  
 ρων. τῷ δὲ δικαιοσύνην ὑπὸ τῇ μὲν ὡς ἀρετῶν καὶ  
 ἐυλαβητικῶν καὶ ὁ δὲ τόρῳ. τῷ δὲ μεγαλοφυχίαν  
 ὑπὸ τῇ μὲν ἔξιρ ὑποδράνῳ προῦσαν τῷ συμβαινόντι  
 τῇ κρινῇ φαύλων τε καὶ ἀποδιδόντων. τῷ δὲ ἐγκρά-  
 τειαν διαδοῦναι ἀντιπρόθετον τῷ κατ' ὀρθὸν λό-  
 γον, ἢ ἔξιρ ἀντήνῃ ἡδονῶν. τῷ δὲ καὶ τοῦ ἄλλου ὑπὸ τῇ  
 μὲν, ἢ ἔξιρ ὡς ἐμμενέτω καὶ μὴ, καὶ ὁ δὲ τόρῳ. τῷ  
 δὲ ἀγχινοίαν ἔξιρ ἐνρεπικὴν τοῦ καὶ θήκοντος ἐν πα-  
 ραχρῷ. τῷ δὲ ἐμβουλίαν ὑπὸ τῇ μὲν τοῦ σκοπεῖ-  
 ναι πρὶα καὶ πῶς πρὸς τὸν τὸ πρὸς μὲν συμφερόν-  
 τως. ἀλλ' ὅτι καὶ τῷ κακῶν, τὰς μὲν εἶναι πρώ-  
 τας. τὰς δὲ ὑπὸ ταύτας. οἷον ἀφροσύνην μὲν καὶ δει-  
 λίαν καὶ ἀδίκιαν καὶ ἀκολασίαν καὶ ἀκρασίαν καὶ  
 βραδυνοίαν καὶ κακοβουλίαν ἣν ταῖς ὑπὸ ταύτας.  
 εἶναι δὲ ἀνοίας τὰς κακίας. ὡς αἱ ἀρεταὶ ὑπὸ τῇ μὲν.  
 ἀγαθὸν δὲ κρινῶν μὲν ὅτι τὸ ὄφελος. ἰδίως δὲ ἡρι-  
 τῶν ἢ ὅτι τὸ ὄφελος. ὅθεν αὐτῶν τε τῶν ἀρε-  
 τῶν καὶ ὅτι μετέχον αὐτῆς ἀγαθὸν τριχῶς οὕτω λέ-  
 γεται. οἷον ὅτι ἀγαθὸν ἀφ' ὃ συμβαίνει εἰς τὴν πρῶ-  
 ξιν τῶν κατ' ἀρετῶν. ὅτι δὲ ὡς ὅτι ἀποδιδόντων ὅτι

Υ μετε



διαίρεσις  
τῶν ἀγαθῶν

μετέχοντα τῆς ἀρετῆς. ἄλλως δὲ οὕτως ἰδίως ορίζου-  
ται ὁ ἀγαθὸς. ὁ τέλειον κατὰ φύσιν λογικῶν. τοιοῦ-  
τον δ' εἶναι τὸν ἀρετῶν, ὡς μετέχοντα, τὰς τε πρῶ-  
ξαις τὰς κατ' ἀρετῶν καὶ οὗτοι ἀπονδύαται εἶναι. ὡς  
χρησμάτα δὲ τῶν τε διανοητικῶν καὶ τῶν δυσφρο-  
σιῶν καὶ τὰ ὅμοια. ἐπὶ τῶν ἀγαθῶν, τὰ μὲν εἶναι  
κατὰ ψυχῶν, τὰ δὲ ἐκτός, τὰ δ' ὅτε πᾶσι ψυχῶν  
ὅτε ἐκτός. τὰ μὲν πᾶσι ψυχῶν, ἀρετὰς, καὶ τὰς κατὰ  
ταύτας πρῶξαις. τὰ δ' ἐκτός, τὰ τε ἀποδύαται ἔχειν  
πατρίδα καὶ ἀπονδύαται φίλον, καὶ τὸν τὸ τῶν ἐν-  
δαιμονίων. τὰ δὲ ὅτε ἐκτός ὅτε πᾶσι ψυχῶν, ὁ αὖ-  
τον ἰαυτὸς εἶναι φαῦλον καὶ κακοδαίμονα. ἐπὶ τῶν  
ἀγαθῶν, τὰ μὲν εἶναι τελικὰ, τὰ δὲ πρῶξαις, τὰ δὲ  
τελικὰ καὶ πρῶξαις. ὁ μὲν δὲ φίλον καὶ τὰς ἀπὸ  
αὐτοῦ γινομένης ὠφελείας ποιητικὰ εἶναι ἀγαθὰ.  
θάλασσα δὲ καὶ φρόνημα καὶ ἰλδοθυρία, καὶ τὸν φί-  
λον καὶ ἐνφροσύνην καὶ ἀληθείαν πᾶσαι τῶν κατ' ἀρε-  
τῶν πρῶξαις τελικὰ. πρῶξαις δὲ καὶ τελικὰ εἶναι ἀ-  
γαθὰ. καὶ μὲν γὰρ ἀρετῶν τῶν ἐνδαιμονίων πρῶ-  
ξαις ὅτι ἀγαθὰ. καὶ δὲ συμπληροῦσι αὐτῶν ὡς  
τε μόνη αὐτῶν γίνεσθαι, τελικὰ. ἐπὶ τῶν πᾶσι ψυχῶν  
ἀγαθῶν, τὰ μὲν εἶσι ἐξ ἑσ, τὰ δὲ ὁμοίαις, τὰ δ' ὅτε  
ἐξ ἑσ ὅτε ὁμοίαις. ὁμοίαις μὲν αἱ ἀρεταί, ἐξ ἑσ δὲ τὰ  
ὡν τῶν δόματα. ὅτε δὲ ἐξ ἑσ ὅτε ὁμοίαις αἱ ἐνδύει  
αι. κοινῶς δὲ τῶν ἀγαθῶν μικτὰ μὲν ὅτι ἐντεχνία  
καὶ ἐν γένει. ἀπολαύει δ' ὅτι ἀγαθὸν ὡν δὲ καὶ  
ἀει

αἰ μὲν παρόντα αἱ ἀρεταί. οὐ αἰεὶ δὲ, οἷον χερά, πε-  
 ριπάτησις. πάν δὲ ἀγαθὸν συμφόρον εἶναι Ἐδῆον,  
 καὶ λυσitteλῆς καὶ χερίσμορ καὶ ἔνχρησμορ Ἐκχλὸρ  
 καὶ ὠφέλιμορ Ἐἀρετῆρ καὶ δίκαιορ. συμφόρον μὲν  
 ὅτι φόρει τριαῦτα ὦρ συμβαινόντων ὠφελεύμεθα. δῆ-  
 ορ δὲ ὅτι σπῶνχει ἐν οἷς χερί. λυσitteλῆς δὲ ὅτι λύει  
 τὰ τελούμενα εἰς αὐτῶ, ὥς τε τὴν ἀντηαταλάξιμ.  
 τὴν ἐκ τῆς πρυγματείας ὑποβαίνειν τῇ ὠφελείᾳ.  
 χερίσμορ δὲ ὅτι χρεῖαν ὠφελείας παρέχει. ἔνχρη-  
 σμορ δὲ ὅτι τὴν χρεῖαν ἐπαινετὴν ἀποργάζεται. κα-  
 λὸρ δὲ ὅτι συμμέτρως ἔχει πρὸς τὴν ἑαυτοῦ χρεῖαν.  
 ὠφέλιμορ δὲ ὅτι τριούρῃ δῶν ὥς τε ὠφελῆιρ. ἀρετῆρ  
 δὲ ὅτι τριούρῃ δῶν ὥς τε ἐν λόγῳ αὐτῶ ἀρεταῖς. δῆ-  
 καιορ δὲ ὅτι νόμῳ δῶν σύμφωνορ, καὶ κοινωνίας τῆς  
 πικρόρ. καλὸρ δὲ λέγουσι τὸ τελείως ἀγαθὸν παρὰ  
 πάντας ἀπέχειν οὐ ὑψηλὴν μὲν οὐδ' αὖθις ὑπὸ  
 τῇ φύσει, ἢ τὸ τελείως σύμμετρον. εἶδ' ἡ δὲ εἶν' τοῖς  
 καλῶ, τέπαρα, Δίκαιορ, ἀνδρείορ, κῆρσμορ, ὑψηλῆ  
 μονιόρ. ἐν γὰρ τῆς δὲ τὰς καλὰς πράξεις σιωτελεῖ-  
 οται. ἀνολογῶρ δὲ καὶ τὸ αἰσχερὸς εἶν' εἶδ' ἡ τέπαρα. τὸ  
 τε ἀδικορ καὶ τὸ δειλὸρ καὶ ἄκροσμορ καὶ ἄφρορ. λέ-  
 γεται δὲ τὸ καλὸρ μοναχῶς μὲν τὸ ἐπαινετὸν παρὰ  
 χόμνορ οὐδ' ἔχοντες ἀγαθὸν ἐπαινοῦ ἀξιορ. ἐτόρως  
 Δὲ τὸ ἐν πεφυκέναι πρὸς τὸ ἴδιον ἔργον. ἄλλως  
 δὲ τὸ ὑψηλοσμοῦ. ὅταν λέγωμεν μόνον τὸν σοφὸν  
 ἀγαθὸν καλὸν εἶναι. λέγουσι Δὲ μόνον τὸ καλὸν  
 ἄγαθον

εἶδ' ἡ τοῖς  
καλῶ

εἶδ' ἡ τοῖς  
αἰσχερῶ



ἀγαθὸν εἶναι καὶ δὲ φησὶν ἐν ἑαυτῷ ὅτι τὸ τρίτον ποῦ  
 ἀγαθῶν, καὶ χεῦσι ππθ' ἐν τοῖς ποῦ τοῦ καλοῦ. εἶναι  
 δὲ ἑστὶν ἀρετῶν. καὶ ὅτι μετέχον ἀρετῆς, ὡς εἰς ἴσον  
 ὅτι πᾶν ἀγαθόν, καλόν εἶναι. καὶ ὅτι ἴσοι διαμετρὶς  
 καλῶ ὅτι ἀγαθόν. ὅτι πρὸ ἴσον ὅτι τῷ. ἐπεὶ γὰρ ὅτι  
 ἀγαθόν καλόν ὅτι. εἰς δὲ καλόν, ἀγαθόν ἄρα ὅτι.  
 δοκεῖ δὲ πάντα τὰ ἀγαθὰ ἴσα εἶναι, καὶ πᾶν ἀγαθόν  
 ἐπὶ ἄκρον εἶναι ἀρετόν. καὶ μήτε αὐδὲ μὴτε ἐν  
 πίτασι διέχεσθαι. τῷ δὲ οὐτῷ φασὶ, τὰ μὲν ἀγαθὰ  
 εἶναι, τὰ δὲ κακὰ, τὰ δὲ ἐδέτορα. ἀγαθὰ μὲν οὐ  
 τὰς τε ἀρετὰς, φρόνησιν, δικαιοσύνην, ἀνδρείαν, σω  
 φροσύνην, καὶ τὰ λοιπὰ. κακὰ δὲ τὰ ἐναντία, ἀφρο  
 σύνην, ἀδικίαν, καὶ τὰ λοιπὰ. ἐδέτορα δὲ ὅσα μήτε  
 ὠφελὲι μήτε βλάπτει. οἷον ζωὴ, ὑγεία, ἡδονή, καλ  
 λῶ, ἰσχυρὸς, πλούτῳ, ἐνδοξία, ἐν γένει. καὶ τὰ τῶν  
 τοῖς ἐναντία, θάνατῳ, νόσῳ, πένθῳ, αἰσχῳ, ἀδύ  
 νεια, πνία, ἀδύξια, δυσγένεια. καὶ τὰ τῶν παρὰ  
 πλῆσια, καὶ δὲ φησὶν ἐν ἑαυτῷ ὅτι ἐβδόμῳ ποῦ τέλους.  
 καὶ ἀρμόδιον ἐν τῇ ἡδικῇ, καὶ χεῦσι ππθ'. μὴ  
 γὰρ εἶναι ταῦτα ἀγαθὰ, ἀλλ' ἀδιαφορὰ, κατ' εἶδῳ  
 πλοηγμῆνα. ὡς γὰρ ἴδιον θόρυμῳ ὅτι θόρυμῳ ἐν ὅτι  
 ψυχῇ, οὐτῳ καὶ ἀγαθῷ ὅτι ὠφελὲι ὅτι βλάπτει.  
 ἐμᾶλλον δὲ ὠφελὲι ἢ βλάπτει ὁ πλούτῳ, καὶ ἢ ὑ  
 γεία. ἐν ἄρα ἀγαθόν ὅτι πλούτῳ ὅτι ὑγεία. ἐπ  
 τέ φασὶν ὡς ὅτι ἐν καὶ κακῶς χεῖσθαι, ἑστὶν ἐν  
 σιν ἀγαθόν. πλούτῳ δὲ καὶ ὑγείᾳ εἰς ἐν καὶ κα  
 κῶς

διαίρεσις  
 τῶν οὐτῶν

ὡς χρῆσθαι, ὅκ' ἄρα ἀγαθὸν πλοῦτος καὶ ὑγίεια.  
 προσιδῶνι μὲν γὰρ καὶ ταῦτα φησὶ τῷ ἀγαθῷ  
 εἶναι. ἀλλ' ὅδε τὴν ἡδονὴν ἀγαθὸν φασιν. ἐν δὲ τῇ  
 ἐν ᾧ ἐννεακαιδεκάτῳ ποδὶ ἀγαθῷ, καὶ χρύσιππῳ  
 ἐν ᾧ τῷ ποδὶ ἡδονῆς. εἶναι γὰρ καὶ αἰσχροὺς ἡδοναίς. μη  
 δὲρ δὲ αἰσχροὺς εἶναι ἀγαθόν. ὠφελὲρ δὲ ὅστις κινεῖ  
 ἢ ἰσχεῖρ κατ' ἀρετῇ. βλάπτειν τι κινεῖν ἢ ἰσχεῖρ  
 καὶ ἡσυχίαν. διχῶς δὲ λέγεται ἀδιαφορεῖν. ἀπαξ μὲν  
 τὰ μήτε πρὸς ἐνδαιμονίαν μήτε ἡσυχονδαιμονίαν  
 σωδργοῦντα, ὡς ἔχει, πλοῦτος, δόξα, ὑγίεια, ἰσ  
 χυς, καὶ τὰ ὅμοια. ἐν δὲ χεῖρ γὰρ χωρεῖ τὸ τῷ ἐν  
 δαιμονεῖν, τῆς πρὸς αὐτῷ χρῆσεως ἐνδαιμονικῆς  
 ὅσης, ἢ ἡσυχονδαιμονικῆς. ἄλλως δὲ λέγεται ἀδιαφο  
 ρεῖν, τὰ μήτε ἀφορμῆς κινητὰ, ὡς ἔχει τὸ ἀρτίας ἔ  
 χειρ ὡς τῆς κεφαλῆς τείχεος ἢ ποδὶ τῆς, ἢ ἐκτεῖ  
 ναι τὸν δακτυλὸν ἢ συσείλαι, τῷ προτόρῳ ἀσφα  
 φόρῳ ἐκείνῳ ὅττω λεγομένων. ὁρμῆς γὰρ ὅστις ἐκεί  
 νη καὶ ἀφορμῆς κινητικῆς. διὸ τὰ μὲν, αὐτῷ ἐκλέγε  
 ται. τῷ ὅδε τόρῳ ἐπίσης ἔχοντ' ἢ πρὸς αἰσδοῖν  
 φυγῇ. τῷ ἀσφαφόρῳ τὰ μὲν λέγεται προηγμένα,  
 τὰ δὲ ἀπροηγμένα. προηγμένα μὲν τὰ ἔχοντα ἀξί  
 αν. ἀπροηγμένα δὲ τὰ ἀναξίαν ἔχοντα. ἀξίαν δὲ  
 τὴν μὲν τινα λέγεται σύμβλησιν πρὸς τὸν ὁμολογῶ  
 μένον βίον. ἢ πρὸς ὅστις ποδὶ πᾶν ἀγαθόν. τὴν δὲ εἶναι  
 μέστω τινὰ διῶαμιν ἢ χρεῖαν συμβαλλομένην  
 πρὸς τὸν κατὰ φύσιν βίον. ὅμοιον εἰπεῖν ἢ τινα



προφύρεται πρὸς τὴν κατὰ φύσιν βίον, πλούτῳ ἢ  
 ὑγίεια. τῶν δ' εἶναι ἀξίαν ἀμοιβὴν δοκιμασοῦ, ἡ  
 αὖ οὐκ ἐμπροσθεν τῇ πραγμάτῃ τῶν ὁμοίων εἰπεῖν  
 ἀμειβεσθαι πυρρὸν πρὸς τὰς (ὡς) ἡμῶν κριτάς.  
 προηγμένα μὲν ἐν εἶναι καὶ ἀξίαν ἔχει. οἷον ὑπὸ μὲν  
 τῇ ψυχικῶν ἐνφυΐαν, τέχνῃ, προκοπῇ, καὶ τὰ  
 ὅμοια. ὑπὸ δὲ τῇ σωματικῶν ζωῇ, ὑγίειαν, δῶμῳ,  
 ἐνδύειαν, ἀρτιότητα, καὶ ἄλλῃ. ὑπὸ δὲ τῇ ἐκτὸς πλου-  
 ρῇ, δόξαν, ἐνυγνείαν, καὶ τὰ ὅμοια. \* ὑπὸ δὲ τῇ σω-  
 ματικῶν δάναρ, νόσον, ἀδύνησιν, καὶ χεῖραν, πῆρω-  
 σιν, αἰσχρῇ, καὶ τὰ ὅμοια. ὑπὸ δὲ τῇ ἐκτὸς, πνίαν,  
 ἀδύνησιν, δυσγνείαν, καὶ τὰ παραπλήσια. ὅτε δὲ  
 προήχθη, ὅτε ἀπροήχθη τὰ ἐκτερόως ἔχοντα. ἐ-  
 τι τῶν προηγμένων, τὰ μὲν Δι' αὐτὰ προήκονται,  
 τὰ δὲ Δι' ἑτέρω, τὰ δὲ Δι' αὐτὰ καὶ Δι' ἑτέρω. Δι'  
 αὐτὰ μὲν ἐνφυΐα, προκοπή, καὶ τὰ ὅμοια. Δι' ἑτέρω  
 Δι' πλούτῳ, ἐνυγνεία, καὶ τὰ ὅμοια. Δι' αὐτὰ δὲ  
 καὶ Δι' ἑτέρω ἰσχύς, ἐναισθησία, ἀρτιότης. Δι' αὐτὰ  
 μὲν ὅτι κατὰ φύσιν ὅσι. Δι' ἑτέρω Δι' ὅτι πᾶσι  
 χρείας ἐκ ὀλίγας. ὁμοίως δὲ ἔχει καὶ τὸ ἀπρο-  
 γηγόνον, κατὰ τὴν ἐναντίον λόγον. ἐπὶ δὲ καθήκον  
 φασὶν εἶναι ὁ προαχθεὶς ἐν λόγῳ τε ἴσχει ἀπλογι-  
 σμόν. οἷον τὸ ἀκρόαυτον ἐν τῇ ζωῇ. ὁ πόρ καὶ ὑπὸ τὰ  
 φυτὰ καὶ ζῶα διατείνει. ὁρᾶσθαι γὰρ καὶ πῶς τῶν  
 καθήκοντα. κατωνομασθαι δὲ οὕτως ὑπὸ πρώτου  
 ζῶων τὸ καθήκον ἀπὸ τοῦ κατὰ τινος ἡκίμ  
 τῆς

τῆς προσονομασίας ἐλημμένης. ἡ δὲ ῥήμα Δι' αὐτὴν  
 τὸ εἶναι ταύτης κατὰ φύσιν κατασκευαῖς οὐκ εἶναι.  
 τῇ γὰρ καθ' ὅσον ἡ δὲ ῥήμα γινώσκω, τὰ μὲν καθήκοντα  
 εἶναι. τὰ δὲ, παρὰ τὸ καθήκον. καθήκοντα μὲν  
 οὕτως εἶναι, ὅσα λόγῳ αἰρεῖ ποιεῖν, ὡς ἔχει γονεῖς  
 τιμαῖν, ἀδελφοῦ, πατρὶδα. συμπροσφύεσθαι φί-  
 λους. παρὰ τὸ καθήκον Δὲ ὅσα μὴ αἰρεῖ λόγῳ, ὡς  
 ἔχει τὰ τοιαῦτα, γονεῖν ἀμελεῖν, συγγενῶν ἀφρο-  
 νισεῖν, φίλους μὴ συνομιλεῖν, πατρὶδα ὑποβο-  
 ρεῖν, καὶ τὰ παραπλήσια. ὅτε Δὲ καθήκοντα ὅτε  
 παρὰ τὸ καθήκον ὅσα ὅτε αἰρεῖ λόγῳ πλάττειν,  
 ὅτε ἀπαγορεύει. οἶον ἡ ἀρετὴ ἀνελίεσθαι, γραφεῖν  
 κρατεῖν, σλεγγύδα, καὶ τὰ ὅμοια τέρας. καὶ τὰ μὲν  
 καθήκοντα αὐτὸν πόρισασι, τὰ δὲ πόριστατιχά.  
 καὶ αὐτὸν μὲν πόρισασι, τὰ δὲ, ὑγείας ὑπὲρ μελε-  
 εσθαι, καὶ αἰσθητικῶν, καὶ τὰ ὅμοια. κατὰ πόρι-  
 σασι Δὲ τὸ πηροῦν ἑαυτὸν, καὶ τῶν κτησίων ἀφ-  
 ῥιπτεῖν. ἀνολογῶ Δὲ καὶ τῶν παρὰ τὸ καθήκον.  
 ἔτι τῶν καθήκοντων τὰ μὲν, αἰεὶ καθήκει. τὰ δὲ, οὐκ  
 αἰεὶ. καὶ αἰεὶ μὲν καθήκει τὸ ἐρωταῖν, τὸ ἀποκρίνε-  
 σθαι, καὶ πόριπατεῖν, καὶ τὰ ὅμοια. ὁ δ' αὐτὸς λό-  
 γῳ καὶ ὑπὲρ τῶν παρὰ τὸ καθήκον. ἔστι Δὲ καὶ ἡ  
 τοῖς μέσοις τί καθήκον. ὡς τὸ πείθεσθαι τοῦ πα-  
 τὸς τοῖς παιδαγωγοῖς. φασὶ Δὲ τῶν ψυχῶν εἶναι ὁ  
 καταμδρῶ. μδρῶ γὰρ αὐτῇ τὰ τε πρῶτα αἰσθητικὰ, μέρη τῆς  
ψυχῆς  
 καὶ τὸ φωνητικὸν ὄργανον, καὶ τὸ ἀκουστικὸν ὁ πόρ-  
 οῦσι



ὅστις αὐτὴν ἡ δαίνοια, καὶ τὸ γήνητην ἔκ δὲ τῷ ἴδι  
 δῶρ ὑπὸ γίγνεσθαι τῷ δαίνοφι ὡς τῷ δαίνοια  
 ἀφ' ἧς πρὸς πάθῃ βλασάνειν καὶ ἀκαταστασίας  
 αἰτία. ἔστι δὲ αὐτὸ τὸ πάθος κατὰ ζῴων, ἡ ἀλογ  
 καὶ παρὰ φύσιν ψυχῆς κίνησις, ἢ ὁρμὴ πλεονάζου  
 σα. τῷ δὲ παθῶν τὰ ἀνωτάτω κατὰ φύσιν ἐκ τῶν  
 ἐν τῷ δαίνοφι πρὸς πάθῶν, εἶναι γῆνη τέταρτα, λύ  
 πῳ, φόβῳ, ὑπθυμίαν, ἡδονῇ. δοκεῖ δὲ αὐτοῖς τὰ  
 πάθῃ κρείσσειν εἶναι κατὰ φύσιν χεῦσιππος ἐν τῷ πε  
 ρὶ πάθῶν. ἢ τε γὰρ φιλαργυρία ἐπὶ ὁλνῆσις ὅστις τοῦ  
 ἀργύριον καλὸν εἶναι. καὶ ἡ μίση δὲ, καὶ ἡ ἀκαταστασία  
 ὁμοίως, καὶ τὰ ἄλλα. καὶ τῷ μὲν λύπῳ εἶναι συστο  
 λῶν ἀλογον. εἶδη δὲ αὐτῆς ἔλεον, φθόνον, ζῆλον, ζηλο  
 τῶν, ἀχθος, ἐνόχλησις, αἰσῶν, ὁδῶν, σύγχυ  
 σις. ἔλεον μὲν ὅτι εἶναι λύπῳ, ὡς ὡς ἀναξίως κακο  
 παθοῦντι. φθόνον δὲ λύπῳ ἐπὶ ἀλλοτρίοις ἀγαθοῖς.  
 ζῆλον δὲ λύπῳ ὡς τῷ ἄλλῳ παρῆναι ὡς αὐτοῦ ἐ  
 χει. ἀχθος δὲ λύπῳ βαρυῦσασιν. ἐνόχλησις λύ  
 πῳ σφοδρωδὲς καὶ δυσχωρίαν παρὰ σφοδρὰ  
 σα. αἰσῶν λύπῳ ἐκ δαλλογισμῶν μὲν σασιν, ἢ ὑπὸ  
 τεινομένην. ὁδῶν, λύπῳ ἐπίπνον. σύγχυσις  
 λύπῳ ἀλογον, ἀκαταστασία καὶ κωλύσασιν τὰ πα  
 ρόντα συστολῶν. ὁ δὲ φόβος ὅστις προσδοκία κακοῦ. εἰς  
 δὲ τὸν φόβον ἀναγίνεται καὶ ταῦτα, δαίμα, ὄντος, αἰ  
 σχύνῃ, ἐκπληξίς, θόρυβος, ἀγωνία. δαίμα μὲν ὅτι  
 ὅστις φόβος δαίμα ἐμπιῶν. αἰσχύνῃ δὲ φόβος ἀδύ  
 ξίας

ξίας· δυν· θ· δὲ φόβ·θ· μελλούσης ἡνδρυείας· ἐκ πλη-  
 ξίς δὲ φόβ·θ· ἐκ φαντασίας ἀσωμήτου πλάγματος·  
 τ·θ· θόρυβ·θ· δὲ μετὰ κατεπίξεως φωνῆς· ὡνθυ·  
 μία Δὲ ὅστις ἀλογ·θ· ὁρδής· ὑφ' ἧν τὰ πτεταί· καὶ  
 ταῦτα, σπαλνίς, μίσ·θ·, φιλονεικία, ὀργή, ἔρως,  
 μίῳις, θυμός· ἔστι δὲ ἡ μὲν πᾶσις ὡνθυμία τις ἐν  
 ἀρτοδύξει, καὶ οἷον κεχωρισμένη ἐκ τοῦ πλάγματος·  
 τ·θ· τεταμένη δὲ δίσκηνός ἐπ' αὐτὴν καὶ πωμένη·  
 μίσ·θ· Δὲ ὅστις ὡνθυμία τις τοῦ κακῶς εἶναι πνί,  
 καὶ παρατάσεως· φιλονεικία δὲ ὡνθυμία τις πᾶσι  
 αἰρέσεως· ὀργή δὲ ὡνθυμία τιμωρίας, τοῦ δουῶν·  
 τ·θ· ἡδονικῆς δὲ προσηκόντως· ἔρως δὲ ὅστις ὡν-  
 θυμία τις ὅχ· ἡ πᾶσι πᾶσι δαί· τ·θ· ἔστι γὰρ ὡν·βο-  
 λή φιλοπνίας δὲ καὶ ἡμ·θ· ἐμφαινόμενον· μίῳις δὲ  
 ὅστις ὀργήν πεπαλαιωμένην καὶ ἐπίκοτ·θ· ὡνθυρη-  
 πική δὲ ὁ πόρ· ἐμφαίνεται δὲ τῶν δὲ·  
 εἰ πόρ· γὰρ τε χόλον γ· καὶ αὐτῆμαρ καταπί·θ·,  
 ἀλλὰ γ· εἰ μετόπιον ἔχει κόρον ὅφρα τελείωσ·  
 ὁ δὲ θυμός· ὅστις ὀργήν ἀρχομένη· ἡδονή δὲ ὅστις ἀλο-  
 γ·θ· ἔπαρσις, ἐφ' αἰρε·θ· δουῶν π· ὑπαρ·χειρ, ἐφ'  
 ἧν τὰ πτεταί· κήλησις, ὡνθυχαίρεκακία, τῶν·θ·, δια-  
 χυσις· κήλησις μὲν οὖν ὅστις ἡδονή δι' ὧν κατα-  
 κλῶσα· ὡνθυχαίρεκακία δὲ ἡδονή ἐπ' ἀλλοτείοις κα-  
 κίαις· τῶν·θ· δὲ οἷον τρέ·θ·, πρ·τροπή τῆς τυχῆς  
 ὡν·θ· ἢ αἰε·μένη· δια·χυσις δὲ αἰα·λυσις ἀρε·τῆς· ὡς  
 δὲ λέγεται πνὰ ὡν·θ· τοῦ σώματος· ἀρ·ξωσήματα οἷον  
 Z π·δ·αί·

ὡνθυμία

πᾶσις

μίσ·θ·

φιλονεικία

ὀργή

ἔρως

μίῳις

θυμός

ἡδονή

κήλησις

ὡνθυχαίρε-

κακία

τῶν·θ·

δια·χυσις



ἀρρώστημα  
 νόσημα  
 πρὸς αὐτὰ, καὶ ἀρρώστια, οὕτω καὶ πρὸς τὴν ψυχὴν, φι-  
 λωδξία καὶ φιλοδοξία καὶ τὰ παραπλήσια. ὁ γὰρ  
 ἀρρώστημα ὅστις νόσημα μὴ ἀδυνάτεια. ὁ δὲ νόσημα  
 οἷσις σφόδρα δυνάμει αἰσθάνεται. καὶ ὡς ὡς τὰ  
 σώματα ἐν ἐμπτωσίαι τινὲς λέγονται, οἷον κατὰ  
 ἔστυ καὶ διαρροία, οὕτω καὶ πρὸς τῆς ψυχῆς εἰσιρ ἐν  
 κατὰφορία. οἷον φθόνοι, ἰεῖδες, καὶ τὰ παραπλήσια.  
 εἶναι δὲ καὶ ἐν παθείας φασὶ τρεῖς, χαρὰν, ἐνδοξίαν,  
 ἀν, βούλησιν. καὶ τὴν μὲν χαρὰν ἐναντίαν φασὶν εἶ-  
 ναι τῇ ἡδονῇ, ὅσαρ ἐνδοξίαν ἐπαρσιν. τὴν δὲ ἐν-  
 δοξίαν ἡδονῇ, ὅσαρ ἐνδοξίαν ἐκκλίσιν. φοβή-  
 θησθεοτα μὲν γὰρ ὅσαρ σφόδρα ἐλαβήσθεοτα  
 δὲ. τῇ δὲ ὑπερβολῇ ἐναντίαν φασὶν εἶναι τὴν βούλη-  
 σιν, ὅσαρ ἐνδοξίαν ὀρεξίαν. κατὰ τὸν οὖν ὡς ὑπὸ τὰς  
 πρῶτας ἐν παθείας. καὶ ὑπὸ μὲν τὴν βούλησιν ἐν-  
 νοίαν, ἐν μόνειαν, ἀσπασμόν, ἀγαπῆσιν. ὑπὸ δὲ τὴν  
 ἐνδοξίαν αἰδῶ, ἀγνείαν. ὑπὸ δὲ τὴν χαρὰν πόρ-  
 τιν, ἐν φροσύνῃ, ἐν θυμῷ. φασὶ δὲ καὶ ἀπαθὴ εἶναι  
 ὅσαρ σφόδρα, ὅσαρ ὅσαρ ἀνέμπτωτον εἶναι. εἶναι δὲ καὶ ἄλ-  
 λον ἀπαθὴ ὅσαρ φαῖλον, ὅσαρ ἰσὺ λεγόμενον ἡδονῇ σκλη-  
 ρῶ, καὶ ἀτρίπτω. ἀτυφόν τε εἶναι ὅσαρ σφόδρα. ἴσιν γὰρ  
 ἔχειν πρὸς τε ὅσαρ ἡδονῇ, καὶ ὅσαρ ἀδονῇ. εἶναι δὲ καὶ  
 ἄλλον ἀτυφόν, κατὰ ὅσαρ εἰκαῖον τεταγμένον ὅσαρ  
 φαῖλον. καὶ αὐστηροῦς δὲ φασιν εἶναι πάντας τοὺς  
 ἀνδράσιν, ἡδονῇ μὴτε αὐτῶν πρὸς ἡδονῇ ὁμιλεῖν,  
 μὴτε

διὰ τὴν ἀρρώστια  
 καὶ ἐνδοξίαν  
 αὐτῶν εἶναι ἐν παθείας  
 καὶ τ. π. τρεῖς

μήτε παρ' ἄλλωρ τὰ πρὸς ἡδονὴν προσδέχεσθαι.  
καὶ ἄλλωρ δὲ εἶναι αὐστηρὸν παραπλοσίως λεγόμε-  
νον ἢ αὐστηρῶ οἶνω. ὃ πρὸς μὲν φαρμακοποιίαν  
χρῶνται. πρὸς δὲ πρόπσιμ' ὅ πάνυ. ἀκιβδηλῶν  
αὐτοῦ απουδαίω, φυλακτικούς τε εἶναι τοῦ ἡδὲ ἢ  
βέλτιον αὐτῶν παρῆσαν, ὅς τε παρασκευῆς τῆς  
τὰ φαῦλα μὲν ἀκρεσπυρίας, τὰ δὲ ὑπερῶντα  
ἀγαθὰ φαίνεσθαι ποιούσης ἀπλοῦς. πρὸς ἡμεῖς  
γὰρ ἐν τῇ φωνῇ ἢ πλοσμάτι καὶ ἢ εἶδει. ἀπρὸς  
γμοναίς τε εἶναι. ἐκκλίνειν γὰρ ἢ πρὸς τὴν πᾶ-  
ρὰ ἢ κατὰ τὴν. καὶ ἐκκλίνειν γὰρ. οὐ μεθυομένη  
δαί. ἔτι δὲ οὐδὲ μακρῶς. προσπρόει-  
σθαι μὲν τοι ποτὶ αὐτῶν φαντασίας ἀλλεγοῦντος,  
ὅς τε μελαγχολίαμ ἢ λήρησιν, οὐ κατὰ τὸν τῶν αἰ-  
ρετῶν λόγον, ἀλλὰ παρὰ φύσιν. οὐδὲ μὲν λῶν  
θῆσθαι τὸν σοφόν, ὅς τε τὸ τὴν λύπῃ ἀλογον εἶ-  
ναι συσολὴν ψυχῆς, ὡς ἀπολλόδωρος φησὶν ἐν τῇ  
ἡδικῇ. θεῖς τε εἶναι. ἔχον γὰρ ἐν ἑαυτοῖς οἶον  
θεόν. τὸν δὲ φαῦλον ἄθεον. διττὸν δὲ εἶναι τὸν ἄ-  
θεον. τὸν τε ἐναντίως ἢ θεῶν λεγόμενον, καὶ τὸν  
ἐξουθενητικὸν τοῦ θεοῦ. ὃ πρὸς οὐκ εἶναι πόρι πάν-  
τα φαῦλον. θεοσεβείας αὐτοῦ απουδαίω. ἐμπείρου  
γὰρ εἶναι τῶν πόρι θεῶν νομίμων. εἶναι τὴν τὴν  
ἐνσίβειαν ἐπισήμῃν θεῶν θεραπείας. ἀλλὰ μὲν  
καὶ θύειν αὐτῶν θεοῖς, ἀγνοῦς τε ὑπερῶν.  
ἐκκλίνειν γὰρ τὰ πόρι θεοῦ ἀμαρτήματα. καὶ



οὗ θεοῦ ἀγαθὰ αὐτοῖς. ὅσιν οὖν τί γὰρ εἶναι καὶ  
 δικαίον πρὸς τὸ θεῖον. μόνον ἰδρίας οὗ σοφούς.  
 ἐπιδεικνύμεθα γὰρ ποῦ θυσιῶν, ἰδρύσεων, καὶ θυσιασμῶν,  
 τῶν ἄλλων τῶν πρὸς θεοῦ δικαίων. δοκεῖ δὲ αὐτοῖς  
 καὶ γυνίας σεβήσεσθαι, καὶ ἀδελφοὺς ἐν δούλοισιν  
 μοῖρα μετὰ θεοῖς. φασὶ δὲ καὶ τῶν πρὸς τὰ τέκνα  
 φιλοσοφίαν, φυσικῶς εἶναι αὐτοῖς, ἔν τινι φαύλοισι μὴ  
 εἶναι. ἀφίσκει τί αὐτοῖς ἴσα ἡγεῖσθαι τὰ ἀμαρτήματα  
 καὶ ἀφ᾽ ἑκείνου χεύσιωσθαι ἐν τῷ τεταρτῷ τῶν ἡδονῶν  
 καὶ ζητημάτων, καὶ πόσεσθαι, καὶ ζῶντων. εἰ γὰρ  
 ἀληθεῖς ἀληθοῦς μάλλον ἢ ἐσιν, ὅθεν εὐδελθῶ εὐδελ-  
 θῶν, οὕτως ὅθεν ἀπάτη ἀπάτης, ὅθεν ἀμαρτήματα  
 ἀμαρτήματα. καὶ γὰρ ὁ ἡγεῖται σαδίσου ἀπείχων  
 καὶ ἡνώβου, ἔν ὅντι, ἐπίσης ἢ ἐσιν ἐν καὶ ἡνώβου. οὕτω καὶ  
 ὁ πλείων καὶ ὁ ἑλάττω ἀμαρτάνων, ἐπίσης ἢ ἐσιν ἐν  
 ὧ καὶ τρυφῶν. ἡρακλείδης μὲν γὰρ ὁ ταρσεὺς ἀντιπάρ-  
 τρου τοῦ ταρσεὺς γινώσκουσιν καὶ ἀθλῶν ὁδῶν, ἀντι-  
 πόντα φασὶ τὰ ἀμαρτήματα. πρὸς τούτοις φασὶ τὸν  
 σοφὸν αὖ μὴ πικρῶς, ὥς φησι χεύσιωσθαι ἐν πρῶ-  
 τῷ ποῦ βίωσιν. καὶ γὰρ καὶ ἡλικίαν ἐφίξειν, ἐπὶ ἀρετῶν πα-  
 ρορμήσειν. καὶ γὰρ γὰρ γὰρ, ὥς ὁ ζῶντων φησὶν ἐν πρῶ-  
 τῇ καὶ παιδευτηρίῳ. ἐπὶ τὴν μὴ δεξασθαι τὸν  
 σοφόν, τὰ τῶν εὐδελθῶν μὴ συγκαταβήσεσθαι μηδε-  
 νί. καὶ οὕτως αὐτοῖς. εἶναι γὰρ τὸν καὶ οὐκ ὁδὸν σω-  
 νορ ἐπὶ ἀρετῶν ὁδῶν, ὥς ἀθλῶν ὁδῶν ἐν τῇ ἡδονῇ.  
 γινώσκουσιν αὖτε καὶ ἀνθρωπίνων σαρκῶν καὶ τὰ πόρ-  
 τας

σασιμ. μόνον τὴν ἐλευθέρου. οὗτος δὲ φαύλους δούλους.  
 εἶναι γὰρ τὴν ἐλευθέρου ἀξιοσύνην αὐτοπραγίας. τὴν  
 δὲ δουλείαν σόφισιμ αὐτοπραγίας. εἶναι δὲ καὶ ἄλ-  
 λων δουλείαν τὴν ἐν ὑποταξίῃ. καὶ τρίτῃ τὴν ἐν  
 κτήσει τὴν καὶ ὑποταξίῃ. ἢ ἀντίκειται ἢ ὁδοῦ τρεῖς  
 φαύλη ἔσται καὶ αὕτη. ἔ μόνον δὲ ἐλευθέρου εἶναι  
 οὗτος σοφούς, ἀλλὰ καὶ βασιλείας. τῆς βασιλείας οὐ-  
 σης ἀρχὴς ἀντιπαραβίου ἢ πρὸς πόλιν μόνον. αὐτὸς  
 σοφὸς σαίν. καὶ ἀφ᾽ οὗτος χεύσιππῳ ἐν τῷ πόλιν τοῦ  
 κυρίου κεχεῖσθαι ζῶντα τὴν ὀνόμασιμ. ἐγνωσθῆναι  
 γὰρ φησι δὲ ἢ ἀρχὴν πόλιν ἀγαθῶν καὶ κακῶν.  
 μηδὲν δὲ τῶν φαύλων ἐπίστασθαι ταῦτα. ὁμοίως  
 δὲ καὶ ἀρχικὸν διηγεσιμὸν τε καὶ ἐκτελεστικὸν μόν-  
 ον εἶναι. τῶν δὲ φαύλων ἔσται. ἐπὶ καὶ ἀναμαρτή-  
 τος τῷ ἀποδιδωτῶν εἶναι ἀμαρτήματα. ἀβλα-  
 βεῖς τε εἶναι. ἔ γὰρ ἄλλου βλαπτειμ, ἔτε αὐτοῦ.  
 ἐλεήμονος τε μὴ εἶναι, συγγνώμῃ τὴν ἔχειμ μηδὲν.  
 μὴ γὰρ παρὶναι τὰς ἐν τῷ νόμῳ ὑπερβαλόντας καὶ  
 λαλοῦσιν. ἐπεὶ τό γε εἶκειμ καὶ ὁ ἐλεῖ. αὐτὴ τε ἡ ὑπὲρ  
 εἰκεία ἔδεμα ὅτι ψυχὴν προαποιομένην χρεώσθη-  
 τα, μηδὲ διοδοῦσιν σκληροτόρας αὐτὰς εἶναι. ἐπὶ γε  
 ἢ σοφὸν ἔδεμ δαυμάζειμ τῶν δουλώτῃν παραδό-  
 ξων. οἷον χαράσσειμ, καὶ ἀμωπῆς, καὶ πηγὰς βοδμῶν  
 ὑδατῶν, καὶ πυρὸς ἀναφυσήματα. ἀλλὰ μὴν ἔσται ἐν  
 ἐρημίᾳ φασὶ βιώσεται ὁ ἀποδιδωτῶν. κρινωνικὸς γὰρ  
 φύσει καὶ πρακτικὸς. τὴν μὲν γὰρ ἀσκησιμ ἀποδέξειμ



ἐν πίστι  
ἢ φιλία

ται ἑωφ' τῆς τοῦ σώματος ὑπομονῆς. ἔνδεαί τε  
φασίη ὁ σοφός, αἰνύμενθ' τὰ ἀγαθὰ παρὰ τῶν  
θεῶν. καὶ δὲ φησι προειδώνθ' ἐν τῷ πρώτῳ πόδι κα  
βηκόντων, καὶ ἐκείνων ἐν τρισηκιδεκάτῳ πόδι πα  
ραδόξων. λέγουσι δὲ καὶ τὴν φιλίαν ἐν μόνοις τῆς  
παιδαγωγίας εἶναι ὅτι τὴν ὁμοιότητα. φασὶ δὲ αὐτῆς  
κοινωνίαν τινὰ εἶναι τῶν κατὰ τὴν βίον, χρωμένων  
ἡμῶν τῆς φύσεως ὡς ἑαυτοῖς. δι' αὐτὸν τε ἀρετὸν  
τὸν φίλον ἀποφαίνονται, καὶ τὴν πολυφιλίαν ἀ  
γαθόν. ἐν τε τοῖς φαύλοις μὴ εἶναι φιλίαν. μηδενί  
τε τῶν φαύλων φιλονεκίαν. πάντας τε τοὺς ἀφρο  
νας μαίνεισθαι. οὐ γὰρ φρονίμους εἶναι, ἀλλὰ κατὰ  
τὴν ἴσιν τῇ ἀφροσύνῃ μακίαν προσηλόν. πάντα  
τε εἰς ποιῆν τὸν σοφόν. ὡς καὶ πάντα φασὶν τὰ  
αἰδήματα εἰς αἰδέσθαι τὸν ἰσχυρίαν. καὶ τῶν σο  
φῶν δὲ πάντα εἶναι. Δεδωκέναι γὰρ αὐτοῖς παν  
τελῆ δυνάμει τὸν νόμον. τὸν δὲ φαῦλον εἶναι πι  
νὰ λέγεται ὁμολογῶν καὶ τὸν ἀδύνατον. ἄλλως μὲν  
τῆς πόλεως. ἄλλως δὲ τῶν χρωμένων φασίη. τὰς  
δὲ ἀρετὰς λέγουσιν αἰτακροθυμίαν ἀλκήν, καὶ  
τὸν μίαν ἔχοντα, πάσης ἔχειν. εἶναι γὰρ αὐτῶν  
τὰ θεωρήματα κοινὰ. καὶ δὲ πόδι χεύσιωπθ' ἐν  
τῷ πρώτῳ πόδι ἀρετῶν φησίη. ἀπολλόδωρος  
δὲ ἐν τῇ φυσικῇ κατὰ τὴν ἀρχαίαν. ἐκείνων δὲ  
ἐν τῷ τρίτῳ πόδι ἀρετῶν. τὸν γὰρ ἐνδεκάτον θεω  
ρητικόν τε εἶναι καὶ ποιητικόν τῶν πρακτέων.

τὰ δὲ

τὰ Δὲ πρακτικά καὶ αἰρετικά ὅστι καὶ ὑπομονητικά  
καὶ ἀπονεμητικά, καὶ ἐμμενητικά. ὥς τε εἰ τὰ μὲν,  
αἰρετικῶς ποιεῖ, τὰ Δὲ ὑπομονητικῶς, τὰ Δὲ ἀ/  
πονεμητικῶς, τὰ Δὲ ἐμμενητικῶς, φρόνιμός τε  
ὅστι καὶ ἀνδρείῃ καὶ Δίκαιῃ καὶ σώφρων. κε/  
φαλαιοῦσθαι τὴν ἐκείνῃ τῶν ἀρετῶν πόρῃ π' ἵ, *πόρῃ τινὰ*  
δορ κεφαλαιον. οἷον τὴν ἀνδρείαν πόρῃ τὰ ὑ, *αἱ ἀρεταί*  
πομονητικά. τὴν φρόνησιν πόρῃ τὰ ποιητικά, καὶ  
μὴ, καὶ οὐδέτερον. ὁμοίως τε καὶ τὰς ἄλλας πε/  
ρὶ τὰ οἰκεία τρέπεσθαι. ἔπονται Δὲ τῇ μὲν φρονή/  
σει ἐνβουλία καὶ συύδσις, τῇ Δὲ σωφροσύνῃ ἐντα/  
ξία καὶ ἡρωμότης. τῇ Δὲ Δικαιοσύνῃ ἰσότης, καὶ  
ἐνγνωμοσύνη. τῇ δὲ ἀνδρείᾳ ἀπαρραλλαξία καὶ ἐν, *τὰ ἀρεσκόν-*  
τονία. ἀρέσκει Δὲ αὐτοῖς μηδὲν μίσον εἶναι ἀρε, *τα αὐτοῖς*  
τῆς καὶ ἡσυχίας. τῶν πόρῃπατητικῶν, μεταξὺ ἀ/  
ρετῆς καὶ ἡσυχίας εἶναι λεγόντων τὴν προσηπλί.  
ὥς γὰρ Δεῖν φασιν ἢ ὀρθὸν εἶναι ξύλον ἢ σρεβλὸν  
ἢ οὕτως ἢ Δίκαιον ἢ ἀδίκον. οὐτε Δὲ Δικαιοτόρον,  
οὐτε ἀδικοτόρον. καὶ ὡς τῶν ἄλλων ὁμοίως. καὶ  
μὲν τὴν ἀρετὴν χρύσιον μὲν ἀποβλητὴν.  
κλεινὸς Δὲ ἀναπόβλητος. ὁ μὲν, ἀποβλητὴν δὲ  
μέθην καὶ μελαγχολίαν. ὁ Δὲ, ἀναπόβλητος δὲ  
βεβαίως ἡσυχία. καὶ αὐτὴν Δὲ αἰρετὴν εἶ/  
ναι. αἰσχυρόμεθα γὰρ ἐφ' οἷς ἡσυχῶς προσηπν,  
ὥς ἂν μόνον τὸ ἡλὸν εἰδότες ἀγαθόν. αὐτὰρ  
ἡ τὴν εἶναι αὐτὴν πρὸς ἐνδοκίαν, ἡσυχίαν φησι  
ζῶν



Ἰνδὰς Διδάκ  
Χορηγίας

ζῶων καὶ χεύσιπτωθ' ἐν τῷ πρώτῳ ποδὶ ἀρετῆν,  
καὶ ἐν ἑκτῇ ἐν τῷ δευτέρῳ ποδὶ ἀγαθῶν. εἰ γὰρ φη-  
σιν αὐτάρκης ὅστις ἡ μεγαλοψυχία πρὸς τὸ πάν-  
τῃν ὑποδράνῃ πρῆν, ἐσι δὲ μὲν ἀρετῆς, αὐτάρκης  
ὅστις καὶ ἡ ἀρετὴ πρὸς ἐνδαιμονίαν, καταφρονούσῃ  
καὶ τῇ δουρωτῇ ὀχλησῶν. ὁ μὲν γὰρ παναίτιος,  
καὶ προσιδώνιός ἐκ αὐτάρκης λέγουσι τὴν ἀρετὴν  
ἀλλὰ χρεῖαν εἶναι φασὶ καὶ ὑγείας καὶ ἰσχύος. ἀρε-  
σκεῖ δὲ αὐτοῖς καὶ διαπαντὸς χεῖσθαι τῇ ἀρετῇ, ὥς  
οἱ ποδὶ κλεανθλῷ φασὶν. ἀναπύβλητος γὰρ ὅστις, καὶ  
πάντα τῇ ψυχῇ χεῖται ὅση τελεία ὁ πονοδῶν.  
φύσει τὴν δίκαιον εἶναι καὶ μὴ θέσει. ὥς καὶ τὸν νό-  
μον καὶ τὸν ὁρθὸν λόγον. καὶ δὲ φησι χεύσιπτωθ' ἐν  
τῷ ποδὶ καλοῦ. δοκεῖ δὲ αὐτοῖς μήτε τὴν διαφανί-  
αν ἀφίστασθαι φιλοσοφίας, ἐπεὶ τῷ λόγῳ τούτῳ  
προλείπειν ὅλον τὸν βίον, ὥς καὶ προσιδώνιός φη-  
σὶν ἐν τοῖς προτρεπτικαῖς. ἐν χρεσῆν δὲ καὶ τὰ ἐγ-  
κύκλια μαθήματα φησὶν ὁ χεύσιπτος. ἐπ' ἀρεσκεί-  
αυτοῖς μηδὲν εἶναι ἡμῖν δίκαιον πρὸς τὰ ἄλλα ζῶα,  
διὰ τὴν ἀνομοιότητά, καὶ δὲ φησι χεύσιπτωθ' ἐν τῷ  
πρώτῳ ποδὶ δικαιοσύνης, καὶ προσιδώνιός ἐν πρῶ-  
τῳ ποδὶ καθήκοντος. καὶ ἐραδῆσθαι δὲ τὸν βόθρον,  
τῇ νύκτι τῇ ἐμφαινόντῃ διὰ τοῦ εἶδ' οὗ τὴν πρὸς  
ἀρετὴν ἐνφύειαν. ὥς φησι ζῶων ἐν τῇ πολιτείᾳ, καὶ  
χεύσιπτωθ' ἐν τῷ πρώτῳ ποδὶ βίον, καὶ ἀφελόδω-  
ρος ἐν τῇ ἡδικῇ. εἶναι δὲ τὸν ἔρωτα ὑπερβολῶν φιλο-  
ποιίας

πρῆας δὲ καὶ ἡγάμθ' ἐμφαινόμενον. καὶ μὴ εἶναι σωφ-  
 σίας, ἀλλὰ φιλίας. ὅρ γοῦν θρασωνίδην καὶ πόρ  
 ἣν θηουσία ἔχοντα τὴν ἐρωμένην δὲ καὶ ὁ μισεῖσθαι ἀ-  
 πέχεσθαι αὐτῆς. εἶναι δὲ οὕτω ὅρ ἐρωτα φιλίας. ὥς καὶ  
 χεύσιπποθ' ἣν ἱερὸν πόδ' ἐρωτᾷ φησί. καὶ μὴ εἶναι  
 ἐπίμεμωρην αὐτόν. εἶναι δὲ καὶ τὴν ὥραν ἀνέθ' ἀ-  
 ρετῆς. βίωρ δὲ τειῶρ ὄντων θεωρητικοῦ καὶ πρακτι-  
 κοῦ καὶ λογικοῦ, ὃ τείρ φησίρ ἀρετέον. γέγονε γὰρ  
 γὰρ ἔκ τ' ἰφύσεως ἐπίπιδος ὃ λογικὸν ζῶον πρὸς  
 θεωρίαν καὶ πρᾶξιν. ἐν λόγῳ τε φασὶν ἀναλεῖν ἑαυ-  
 τὸν τοῦ βίου ὅρ σοφόν, καὶ ἔκ τ' πατρίδ' ἔκ τ' ἑωρ  
 φίλων. καὶ ἣν σκληροτόρα γήνηται ἀλγυδιόνι, ἢ πη-  
 ρώσδιν ἢ νόστις ἀνιάρης. ἀρεσκὴ δὲ αὐτῆς καὶ κρι-  
 νὰς εἶν' τὰς γυναικας δὲ παρὰ τῆς σοφῆς. ὥς τε  
 ὅρ ἣν τυχεύοντα τῇ ἣν τυχεύσει χεύσθαι. καὶ φησὶ γή-  
 νωρ ἣν τῇ πολιτείᾳ. καὶ χεύσιπποθ' ἣν ἱερὸν πόδ' πη-  
 λείας. ἀλλὰ τε διογένης ὁ κωικός, καὶ πλάτων.  
 πάντας τὲ γὰρ ἐπίσης σόρξομιν πατόρων τρέον,  
 καὶ ἡ ὡδ' μοιχείᾳ ζηλοτυπία πόδ' αἰρεθήσεται. πη-  
 λείαν δὲ ἀρίστῳ τὴν μικτὴν ἢ τε δημοκρατίας ἔ-  
 βασιλείας. καὶ τὸ τῶν πλείω μετὰ τῶν οἰκείων ἀρ-  
 δειξέωρ. ταῦτα δὲ ὥς ἣν κεφαλαίοις ἡμῶν δὲ ἀλελέ-  
 χθω καὶ σοιχειώδως. ὅρ δὲ φυσικὸν λόγον δὲ αἰροῦ,

διαίρεσις  
 τοῦ φυσικοῦ



πρὸς τὸν τε πόδιν κόσμον, καὶ ἔν τῳ πόδιν τῶν σοιχείων,  
 καὶ τρίτῳ ἔν ἀπολογισμῷ. ἔν δὲ πόδιν τοῦ κόσμου  
 διακρίνεται φασὶν εἰς δύο μέρη. μὲν γὰρ σκέψαι ὡς  
 κρινωνεῖν αὐτὸ καὶ οὗ ἄρ' τῶν μαθηματικῶν. καθ'  
 ὡς ζητῶσι πόρι τε τῶν ἀπλανῶν καὶ τῶν πλανωμέ-  
 νων. οἷον εἰ ὁ ἥλιος ὅστις τηλικούτος ἥλικος φαίνε-  
 ται; καὶ ὁμοίως εἰ ἡ σελήνη, καὶ πόδιν διήσεως, καὶ  
 τῶν ὁμοίων τέτραις ζητηματῶν. ἐτόρξαν δὲ αὐτὸ σκέ-  
 ψιν εἶναι ἢ τις μόνοις ῥίς φυσικῆς ὡς βάλαι, καθ'  
 ὡς ζητεῖται ἢ τε εἰς αὐτὸ καὶ ὁ ἥλιος, καὶ εἰ γιν-  
 ομένης ἢ ἀγνύμενης, καὶ εἰ ἐμψυχῆς ἢ ἀψυχῆς, καὶ  
 εἰ φθαρτῆς ἢ ἀφθαρτῆς, καὶ εἰ πρηνόα διοικεῖται,  
 καὶ πόδιν τῶν λοιπῶν. τὸν τε ἀπολογισμὸν εἶναι καὶ αὐ-  
 τὸν διμυρῶ. μὲν δὲ αὐτὸ ὡς σκέψαι ὡς κρινωνεῖν  
 πῶς ἰατρῶν ζήτησις, καθ' ὡς ζητῶσι πόρι τε τοῦ ἡγε-  
 μονικοῦ τῆς ψυχῆς καὶ τῶν ἐν ψυχῇ γινομένων, καὶ  
 πόδιν ἀπορροατῶν καὶ τῶν τέτραις ὁμοίων. τοῦ δ' ἐτέ-  
 ρου καὶ οὗ ἄρ' τῶν μαθηματῶν ἀντιπρὶν εἶναι. οἷον  
 πῶς ὁρῶμεν. τίς ἡ αἰτία τῆς κατὰ πρηνόας φαντασί-  
 ας, ὅπως νέφη σωίσανται, βρονταὶ καὶ ἱερὸς, καὶ  
 ἄλλως, καὶ κομῆται, καὶ τὰ παρὰ πρηνόα. δοκεῖ δ'  
 αὐτοῖς ἀρχὰς εἶναι τῶν ὅλων δύο. τὸ πρηνόον καὶ τὸ πρηνό-  
 οχον. τὸ μὲν ὅσον πρηνόον εἶναι πῶς ἀπριον εἰς αὐτὸ πῶς  
 ὡς. τὸ δὲ πρηνόον, ἔν τῳ αὐτῇ λόγον τὸν θεόν. εἴθε  
 γὰρ οὐτα αἰσίου ὡς πρηνόας αὐτῇ δημοσεργεῖν ἔχου-  
 σα. τίθησι δὲ τὸ δόγμα εἴθε ζῶντων μὲν ὁ κτιστὴς ἐν  
 τῷ πόδιν

Σινδὴ καὶ ἑχά  
 ἔν τῳ τὴν μαλὶ





ποῦ αὐτῶν ζῶντων τὴν ἐν τοῖς ποῦ τοῦ οὐλοῦ, καὶ χεῦ  
 σιππῶ ἐν τῇ πρώτῃ τῶ φυσικῶν, καὶ ἀρχιδιμηθ  
 ἐν πινι ποῦ σοιχείων. ἔσι δὲ σοιχείου θὲ δὲ πρώτῳ γέ  
 νεται τὰ γινόμενα, καὶ εἰς ὃ ἴσχαρρ αἰαλύνεται. τὰ  
 σοιχείου Δὴ τέτταρα σοιχεία εἶναι ὁμοῦ τῶν ἀπριου οὐσίαν  
 τῶν ὑλῶν. εἶναι δὲ ὅ μὴ πῦρ ὅ θερμόν. ὅ δὲ ὕδωρ  
 ὅ ὑγρόν. ὅρ τε ἀόρα ὅ ψυχρόν. καὶ τῶν γλῶ ὅ ξη  
 ρόν. ὅ μὴ ἀλλὰ καὶ ἐπὶ ἐν τοῖς ἀέρι εἶναι ὅ αὐτὸ μέ  
 ρῳ. αἰωταῖτω μὴ ὅω εἶν ὅ πῦρ. ὅρ δὴ ἀβόρα κα  
 λείσθαι. ἐν ᾧ πρώτῳ τῶν ἀπλανῶν σφαῖραν γῆ  
 νᾶσθαι. εἶτα τῶν τῶν πλανωμένων. μεθ' ἧν ὅρ ἀόρα.  
 εἶτα ὅ ὕδωρ. ἑποσθμῶν δὲ πάντῃ τῶν γλῶ μέ  
 σω ἀπάντῃ ὅσαρ. λέγῃσι δὲ κῶσμον τειχῶς. αὐ  
 πόρ τε ὅρ θερμόν, ὅρ ἐκ τῆς ἀπάσης ὁσίας πριόρ. ὅς δὴ  
 ἀφδρετῳ ὅσι καὶ ἀγῆνητῳ, διημουργὸς ὅρ τῆς  
 δλκροσμῆσεως, κατὰ χρόνων πριάς ποῦ δόσ. αἰαι  
 λίσκωρ εἰς ἑαυτὴν τῶν ἀπασαρ οὐσίαν, καὶ πάλιν  
 θὲ ἑαυτοῖς γῆνῶν. καὶ αὐτῶν δὲ τῶν δλκροσμησιρ τῶν  
 ἀσδῶν κῶσμον εἶναι λέγουσι. καὶ τείρρ ὅ σωεση  
 κὸς θὲ ἀμφοῖρ. καὶ ἔσι κῶσμῳ ὁ ἰδίως πριὸς τῆς  
 κῶσμῳ ὅλων οὐσίας. ἢ ὥς φησι προσιδῶνιθ ἐν τῇ μετεωρο  
 λογικῇ σοιχείῳσει, σύστημα θὲ οὐρανοῦ καὶ γῆς καὶ  
 τῶν ἐν τούτοις φύσεων. ἢ σύστημα ἐκ θεῶν καὶ ἀνθρώ  
 πων καὶ τῶν ἐν ἐν ἑαυτῶν γεγονότῃν. οὐρανόσ δὲ ὅσιρ  
 ἢ ὅς χάτῃ ποῦ φόρεια. ἐν ἢ πᾶν ἴσθεται ὅ θεῖον. ὅρ  
 δὴ κῶσμον οἰκείσθαι κατὰ νοῦν καὶ προσνοῖαν κατὰ  
 φησι

φησι χρύσιπποϑ ἐν τῇς πόδι προνοίας, καὶ προσιδῶ  
 νιϑ ἐν τεισκαυδεκῆτω πόδι θεῶν, εἰς ἅπαρ αὐτοῖ  
 μὲρϑ διήκοντο τοῦ νοῦ, καὶ δὲ πόρ ἐφ' ἡμῶν τῆς  
 τυχῆς. ἀλλ' ἦδη δι' ὧν μὲν μᾶλλον, δι' ὧν δὲ ἡττορ.  
 δι' ὧν μὲν γὰρ ὥς ἐξίς κεχώρηκον, ὥς δὲ τῶν ὁσῶν  
 καὶ τῶν νόμων. δι' ὧν δὲ ὥς νοῦς ὥς δὲ τοῖς ἡγεμονι  
 κῶν. οὕτω δὲ καὶ τὸν ὅλον νόσμον ζῶον ὄντα καὶ ἡμι  
 τυχερ καὶ λογικόν, ἔχει ἡγεμονικόν μὲν τὸν αὐθόρᾳ  
 καὶ δὲ φησι ἀντίπατροϑ ὁ τίειϑ ἐν τῷ ὁγδόῳ πε  
 ρὶ νόσμον. χρύσιπποϑ δὲ ἐν τῷ πρῶτῳ πόδι προ  
 νοίας καὶ προσιδῶνιϑ ἐν τῷ πόδι θεῶν τὸν οὐρανόν  
 φησι τὸ ἡγεμονικόν τοῦ νόσμον. κλειάνθης δὲ τὸν ἡ  
 λιον. ὁ μὲν γὰρ χρύσιπποϑ δὲ φορῶτόρομ πάλιν τὸ  
 καὶ δὲ φησι ἀντίπατροϑ ἐν τῷ τῷ τῷ. ὁ καὶ πρῶτον  
 θεὸν λέγεισιν αὐθόρᾳ ὥς πόρ κεχώρηκον δὲ τῶν  
 ἐν αἰετ, καὶ δὲ τῶν ζώων ἅπαν τῶν καὶ φυτῶν.  
 δὲ δὲ τῷ γῆς αὐτῆς καὶ ἔξιν ἕνα τὸν νόσμον εἶναι,  
 καὶ ἔξιν πεπορασμένον, ἀχῆμα ἔχοντα σφαιροει  
 δές. πρὸς γὰρ τῷ κίνησιν ἀρμοδιώτατον τὸ τριῶν,  
 καὶ δὲ φησι προσιδῶνιϑ ἐν τῷ τοῦ φυσικοῦ λόγου. καὶ  
 οἱ πόδι ἀντίπατροϑ ἐν τῇς πόδι νόσμον. ἐξωθεν δὲ αὐ  
 τοῖς πόδι κεχυμένον τὸ κενόν ἀπειρον. ὁ πόρ ἀσώμα  
 τῶν εἶναι. ἀσώματα δὲ τὸ οἶον καὶ τελεῖται ὑπὸ σώμα  
 τῶν ὅ καὶ τελεμένον. ἐν δὲ τῷ νόσμῳ μηδὲν εἶναι κε  
 νόν. ἀλλ' ἡνωθαι αὐτόν. ἔξιν γὰρ ἀναγκάζειν τῷ  
 τῶν οὐρανίων πρὸς τὰ ἐπίγεια σύμπνοια καὶ σωμα



τρυίαν. φησὶ δὲ πόρι τοῦ κρυοῦ χεύσιπτωθ καὶ ἐν τῇ  
 πρῶτῃ τῶν φυσικῶν τεχνῶν. καὶ ἀρχιμοφάνης ἐν τῇ  
 φυσικῇ. καὶ ἀρχιμόδωρθ καὶ προσιδώνιθ ἐν δούτε  
 ρω τοῦ φυσικοῦ λόγῳ. εἶναι δὲ καὶ ταῦτα ἀσώματα  
 ὅμοια. ἐπὶ δὲ καὶ τὸν χρόνον ἀσώματον, διασημα ὄν-  
 τα τῆς τοῦ κρόμου κινήσεως. τὰ τὰ δὲ τὸν μὲν παραι-  
 χωρηκῶτα καὶ τὸν μέλλοντα ἀπείρως. τὸν δὲ ἐνεσῶ-  
 τα πεπορασμένον. ἀφίσκει δὲ αὐτοῖς καὶ φθαρετὸν εἶ-  
 ναι τὸν κρόμον, ὅτε γῆνη τὸν ἑλδ λόγῳ τῶν δι' αἰσθή-  
 σεως νοουμένων. ὅτε τὰ μόρη φθαρεταὶ ὅτι καὶ τὸ ὁ-  
 λον. τὰ δὲ μόρη τοῦ κρόμου φθαρεταί. εἰς ἄλληλα γὰρ  
 μεταβάλλει, φθαρετὸς ἄρα ὁ κρόμος. καὶ εἰπὺν δὲ  
 κτηνὸν ὅτι τῷ ὡδὶ τὸ χεῖρον μεταβολῆς φθαρετόν ἐ-  
 σι. καὶ ὁ κρόμος δὲ. θύαυχομῶται γὰρ καὶ θύαυδα-  
 τῶται. γίνεσθαι δὲ τὸν κρόμον ὅταν ἐν πυρὸς ἢ ὁσίας  
 τραπῇ δι' ἀόρθ εἰς ὑγρόν. εἶτα τὸ παχυμόρες αὐ-  
 τοῦ συσαὺν ἀρτελεσθῇ γῆ. τὸ δὲ λεπτομόρες θύαυδα-  
 τῶ. καὶ τοῦτ' ὡδὶ πλείον λεπτωθὲν πῦρ ἀργῆνησθῇ. εἶ-  
 τα καὶ μίξις ἐν τῷ τῶν φυτῶν καὶ ζῶα καὶ τὰ ἄλλα  
 γῆνη. πόρι δὲ ἐν τῇ γῆσεως καὶ τῆς φθορᾶς τοῦ κρό-  
 μου, φησὶ ζῶων μὲν ἐν ἑλδ πόρι ὅλον. χεύσιπτωθ δὲ  
 ἐν ἑλδ ἅ τῶν φυσικῶν. καὶ προσιδώνιθ ἐν ἅ πειρὶ  
 κρόμου. καὶ κλεάνθης καὶ ἀντίπατρος ἐν ἑλδ ἱ πειρὶ  
 κρόμου. παναίπιος δὲ ἀφθαρετὸν ἀπεφήναρ ἐν ἅ πει-  
 ρὶ πρηνείας. Ἐ ἀρχιμόδωρθ φησὶ ἐν τῇ φυσικῇ, Ἐ  
 προσιδώνιος, ζῶον μὲν οὕτως ὄντα ὁσίαν ἐμφυχορ αἰ-  
 σθητικῶν

διηπικλώ. ὃ γὰρ ζωὸν τοῖ μὴ ζῶν κρείττορ. ζωὸν ἄρα  
 ὁ κόσμος. ἔμψυχον δὲ ὡς διήλογον ἐκ τῆς ἡμετέρας  
 ψυχῆς, ἐκείθεν ὅσης ἀκρωτισματῶ. βοηθὸς δὲ φη  
 σιρ ἐκ εἶναι ζωὸν τὸν κόσμον. ὅτι τί εἰς ὅτι ζῶντων  
 φησὶν ἐν τῷ πόρῳ ὅλου, καὶ χεύσιππῶ καὶ ἀκρό  
 δωρῶ ἐν τῇ φυσικῇ. καὶ προσιδῶνι ἐν αἰ τῷ φυ  
 σικῷ λόγῳ. τὸ δὲ παῦν λέγεται ὡς φησιρ ἀκρόδω  
 ρῶ ὅτε κόσμος καὶ κατ' ἐτόρον τρόπον τὸ ἐκ τοῦ  
 κόσμου, καὶ τοῖ ἐξωθεν κινῶ σύστημα. ὁ μὲν κόσμος πρὸ ἄστρον  
 πεπόρασμένῳ ἐστὶ. τὸ δὲ κινῶν ἄπειρον. τῶν δὲ ἄ  
 στρον τὰ μὲν, ἀπλανῆ συμπόδι φέρεσθαι τῷ ὅλῳ οὐρα  
 νῳ. τὰ δὲ πλανόμηνα κατ' ἰδίαν κινεῖσθαι κινήσεις,  
 τὸν δὲ ἥλιον λοξῶν τῶν πρεῖαν πριεῖσθαι δὲ τῷ ζῶ  
 ντι κινῶν. ὁμοίως καὶ τῶν σελλῶν ἐλικοειδῶ.  
 εἶναι δὲ τὸν μὲν ἥλιον ἐλικοειδῆ πῦρ. κατὰ φησιρ ἥλιος  
 προσιδῶνι ἐν τῷ τῷ πόρῳ μετεώρων, ἢ μείζονα γῆ  
 γῆς, ὡς ὁ αὐτὸς ἐν τῷ τῷ φυσικῷ λόγῳ. ἀλλὰ  
 καὶ σφαιροειδῆ, ὡς οἱ πόρῳ αὐτὸν ὅσον φασίρ, ἀ  
 ναλόγως τῷ κόσμῳ. πῦρ μὲν δὲ εἶναι ὅτι τὰ πυρὸς  
 πάντα πριεῖ. μείζω δὲ τῆς γῆς τῷ πάσῃ ὑφ' αὐ  
 τοῦ φωτίζεσθαι, ἀλλὰ καὶ τὸν οὐρανόν. καὶ τὸ τῶν  
 γῶν δὲ κωνοειδῆ σκιαὶ ἀρτελεῖρ, τὸ μείζονα εἶναι  
 σημαίνει. πάντῃ δὲ βλέπεσθαι δὲ τὸ μέγεθος.  
 γνωθεσθῆναι δὲ τῶν σελλῶν, ἅ τε καὶ προσγειοτέ  
 ραν ὅσαρ. τρέφεσθαι δὲ τὰ ἔμπυρα ταῦτα καὶ τὰ ἄλ  
 λα ἄσρα, τὸν μὲν ἥλιον ἐκ τῆς μεγάλης θαλάττης  
νοδῶν



νοδρὸν ὄντα ἀνάμμα. τὴν δὲ σελλώλω ἐκ πρτίμων ὕ-  
 δωτῶν, ἀδρομεγὺ τυγχάνουσιν, καὶ πρόσγειον οὐ-  
 σαν ὡς ὁ πρσειδιώνιθ ἐν τῷ ἐκτῷ τοῦ φυσικῶν λό-  
 γου. τὰ δ' ἄλλα ἀπὸ τῆς γῆς. δοκεῖ δὲ αὐτῆς σφαι-  
 ροειδὴ εἶναι καὶ τὰ ἄστρα, καὶ τὴν γλῶσσαν ἀκίνητην εἶσιν.  
 τὴν σελλώλω ἐκ ἰσθίου ἔχειν φῶς, ἄλλα παρ' ἡλίου  
 λαμβάνειν ὑπὸ λαμπρομένην. ἐκλείπει δὲ τὴν μὲν  
 ἡλίου ὑπὸ πρσειδύσεως αὐτῆς σελλώλης, κατὰ τὸ πρὸς  
 ἡμᾶς μέρθ, ὡς ζώων ἀναγράφει ἐν τῷ πρὸς ὅλθ.  
 φαίνεται γὰρ ὑπορχομένη ταῖς σωόδοις καὶ ἀπὸ  
 κρύπτουσα αὐτὴν καὶ πάλιν παραλατρυσα. γνω-  
 εῖται δὲ εἶδε δὲ λεγάνης ὕδατος ἐχρύσεως. τὴν δὲ  
 σελλώλω ἐμπύπτουσαν εἰς τὸ τῆς γῆς σκίασμα.  
 ὅθεν καὶ ταῖς πανσελλώοις ἐκλείπει μόναις, καὶ  
 πόρ κατὰ διαμετρον ἰσαμένην κατὰ μὲν τῷ τῷ ἡ-  
 λίῳ, ὅτι κατὰ λοξοῦ ὡς πρὸς τὴν ἡλίου κινουμένη πα-  
 ραλαττει τῷ πλαττει, ἢ βορειοτόρα, ἢ νοτιοτόρα  
 γινουμένη. ὅταν μὲν γὰρ πλαττῇ αὐτῇ κατὰ τὴν  
 ἡλιακὴν καὶ τῷ δὲ μείσων γήνηται, εἶτα δὲ μείσων  
 ἐν χηλαῖς καὶ σκυρπίῳ, καὶ κριῳ, καὶ ταύρῳ, ὡς οἱ  
 πρὸς τὴν πρσειδιώνιον. θεῖον δὲ εἶναι ζῶον ἀθάνατον, λα-  
 θεὸς γινόν, ἢ νοδρὸν ἐν ἐνδαιμονίᾳ, καὶ καὶ πινθ ἀνεπίδε-  
 κτην. πρνονηπικὸν κρῶμον τὸ καὶ τῷ ἐν κρῶμῳ. μὴ  
 εἶναι μὲν γὰρ ἀνθρωπόμορφον. εἶναι δὲ τὴν μὲν, δημιου-  
 γόν τῷ ὅλων, ὡς πόρ καὶ πατόρα πάντῳ· κοινῶς  
 τὸ καὶ τὸ μέρθ αὐτῷ τὸ διήκον δὲ πάντῳ, ὃ πρλα-  
 λαῖς

λαῖς προσφορίαις προσονομάζεται κατὰ τὰς διυ-  
 ναμεις. δία μὲν γὰρ φασὶ δι' ὅρ τὰ πάντα. ζῶα δὲ ζεύς  
 καλοῦσι παρ' ὅσων τοι ζῶα αἰτιῶ ὄσιρ. ἢ ὄσιρ τοι ζῶα  
 κεχώρηκον. ἀθλιωαὶ δὲ κατὰ τὴν εἰς αἰθόρα διατά-  
 σιν τοι ἡγεμονικῶ αὐτοῖ. ἦσαν δὲ κατὰ τὴν εἰς ἄδρα. ἀθηνᾶ  
 καὶ ἡφαιστον κατὰ τὴν εἰς ῥ τεχνικὸν πῦρ. καὶ πρ-  
 σειδῶνα κατὰ τὴν εἰς ῥ ὑγρόν. καὶ δ' ἡμνησαν καὶ  
 τὴν εἰς γλῶ. ὁμοίως δὲ καὶ τὰς ἄλλας προσηγορίας  
 ἐχόμενοι τινὸς δικειότητι ἀπέδυσαν. ἐσίαν δὲ θεοῦ  
 ζῶων ῥν ὅλον ἡρόσμον καὶ ῥν οὐρανόν. ὁμοίως δὲ  
 καὶ χρύσιππῶ ἐν ῥα. ἵα ποδὶ θεῶν. καὶ προσειδῶ-  
 νι ἐν πρῶτῳ ποδὶ θεῶν. καὶ ἀντίπατρῶ ἐν ῥ  
 ποδὶ ἡρόσμου ἀδρῶειδ' ἢ φησιν αὐτοὶ τὴν οὐσίαν. βοη-  
 θος δὲ ἐν τῇ ποδὶ φύσεως, οὐσίαν θεοῦ τὴν τῶν ἀπλα-  
 νῶν σφαίραν. φύσιν δὲ πρτε μὲν ἀρφαίνονται, τὴν  
 σωέχρυσαν ῥν ἡρόσμον, πρτε δὲ τὴν φύουσιν τὰ  
 ὡδ' γῆς. ἔσι δὲ φύσις ἔξις δὲ αὐτῇ κινουμένης κατὰ φύσις  
 σποδματικῶν λόγου ἀρτελοῦσα τέ καὶ σωέ-  
 χρυσά τὰ δὲ αὐτῆς ἐν ὡρισμένοις χρόνοις, καὶ ριαῦ-  
 τα δρῶσα ἀφ' οἷων ἀπεκρίθη. ταύτῃ δὲ καὶ τοι συμ-  
 φόρουντ' εὐχαλίζεσθαι ἡδυνῆς, ὡς διήλθον ἐν τῆς τοι  
 ἀνθρώπων δημιουργίας. καθ' ἑμαρμηνίᾳ δὲ φασὶ  
 τὰ πάντα γίνεσθαι, χρύσιππῶ ἐν ῥις ποδὶ ἑμαρ-  
 μηνίης ἐ ζῶων. βοηθός δὲ ἐν ἵα ποδὶ ἑμαρμηνίης.  
 ἔσι δὲ ἑμαρμηνίη αἰτία τῶν νόμων ἑρομηνίη. ἢ λό-  
 γῳ καθ' ὅρ ἡρόσμου διδράγεται. καὶ μὲν καὶ μαν-  
 bb πικλῶ



πικλῶ ὑφισταῖναι πᾶσαν φασίμ ἢ καὶ πρὸνοιαν εἶναι.  
 καὶ αὐτῶν τέχνῳ ἀρφαίνεσθαι διὰ πῦας ἐκβολαίς  
 ὥς φησι ζῳῶν τε καὶ χεύσιππο, ἐν γὰρ ποδὶ μαν-  
 τικῆς. καὶ ἀθλωδωρ καὶ πρσιδώνι καὶ ἴβ  
 το φουσιχοῦ λόγῳ. καὶ ἐν ἴβ εἰ ποδὶ μαντικῆς. ὁ μὲν  
 γὰρ παναίτιον ἀντιπρόσθετον αὐτῶν φησιν. ὁ δὲ  
 φασὶ τῶν ὄντων ἀπάντων τῶν πρώτων ὕλην, ὥς καὶ  
 χεύσιππο ἐν τῇ πρώτῃ τῶν φυσικῶν, καὶ ζῳῶν.  
 ὕλη δὲ ὅστις ἐξ ἧς ὁποδηπρωῦ γίνεται. καλεῖται δὲ  
 διχῶς, ὁσία τε καὶ ὕλη, ἢ τε τῶν πάντων καὶ ἢ τῶν  
 ὑπὸ μορῶν. ἢ μὲν οὖν τῶν ὅλων ὅτε πλείων ὅτε ἐ-  
 λωπῶν γίνεται. ἢ δὲ τῶν ὑπὸ μορῶν. σῶμα δὲ ὅστις  
 κατ' αὐτὸς ἢ ὁσία καὶ πεποδρασμένη κατὰ φησὶ ἐν  
 δούτορῳ ποδὶ ὁσίας. καὶ ἀρμολόδωρ καὶ τῇ φυσι-  
 κῇ. καὶ ἀπαθητὴ δὲ ὅστις ὥς αὐτὸς φησιν. εἰ γὰρ ἡ  
 ἀτρεπτοῦ ἐκ αὐτὰ γινόμενα ἐξ αὐτῆς ἐγίνετο. ἐν  
 θῶν κακείνως ἢ τε ρμὴ εἰς ἀπειρόν ὅστις, ἡ ἀπειρομ  
 φασίμ ὁ χεύσιππο. ὁ γὰρ ὅστις τὴν ἀπειρομ εἰς ὃ γίνε-  
 ται ἢ ρμὴ. ἀλλὰ ἀκατάληκτο ὅστις. καὶ τὰς κρῶ-  
 σεις δὲ διόλου γίνεσθαι, κατὰ φησιν ὁ χεύσιππο  
 ἐν τῇ τρίτῃ τῶν φυσικῶν, καὶ μὴ κατὰ ποδὶ γραφῶν  
 καὶ παρὰθεσιν. καὶ γὰρ εἰς πέλαγος ὀλίγος οἶ-  
 νος βληθεὶς, ὑπὸ πρὸς ἀντιπαρεκταθήσεται, εἴτα  
 συμφταρήσεται. φασὶ δὲ εἶναι καὶ πῦας δαίμονας  
 ἀνθρώπων συμπαθεῖαν ἔχοντας, ἐπὶ πῶτα τῶν ἀν-  
 θρωπείων πραγμάτων. καὶ ἡρώας τὰς ὑπολελειμ-  
 μένας

μύνας τῶν ἀπὸ δαίμων ψυχάς. τῶν δὲ ἐν αἰεὶ γινομένων  
 νωρ, χειμῶνα μὲν εἶναι φασὶ τὸν ἑσπέρῳ γῆς ἄδρα κα-  
 τεψυγμένον, ὅθεν τῷ τοῦ ἡλίου πρόσω ἀφοδῶν. ἕως δὲ  
 τῷ ὑπερασίαν τοῦ ἁδρόθου κατὰ τῷ πρὸς ἡμᾶς πρ-  
 ρείαν. θρόθου δὲ τὸν ἑσπέρῳ γῆς ἄδρα κατὰ δαλτῆρ με-  
 νορ τῇ τοῦ ἡλίου πρὸς ἀφῆρρ πρρεία. μετόπωρον δὲ  
 τῇ παλινδρομῶ τοῦ ἡλίου ἀφῆρρ γίνεσθαι.\* παρὰ  
 αὐτὸν τόπον ἀφῆρρ ῥέουσι. τῇ δὲ γνῆσεως αὐτῶν αἰ-  
 πορ γνῆσθαι τὸν ἡλιον διὰ τμίζοντα τὰ νέφη. ἴσμεν ἴσμεν  
 δὲ εἶναι αὐτὰς διὰ ὑγρῶν νεφῶν ἀνακεκλασμένας,  
 ἢ ὡς πεσειδῶνιθ φησὶν ἐν τῇ μετεωρολογικῇ ἔμ-  
 φασιν ἡλίου τμήματθ, ἢ σελῶνις ἐν νέφει δεδρω-  
 σισμῶν κρῖλῳ καὶ συνεχεῖ πρὸς φαντασίαν, ὡς  
 ἐν κατόπτρῳ φανταζομένη κατὰ κύκλου ποδιφέ-  
 ρειαν. κομήτας τὲ καὶ πογωνίας καὶ λαμπαδίας,  
 πυρᾶ εἶναι ὑφεσῶτα παλχῶν ἁδρόθου εἰς τὸν αἰ-  
 θρώδην τόπον ἀννεχθῆντθ. σέλας δὲ πυρὸς αἰ-  
 θρώδου ἕξαψιν ἐν αἰεὶ φθρομῶν ταχίως, καὶ φαν-  
 τασίαν μήκῃς ἐμφαίνοντθ. ὑετὸν δὲ ἐν νέφῃς ὑετὸς  
 μεταβολῶν εἰς ὕδωρ, ἱπειδὴν ἢ ἐν γῆς ἢ ἐν θα-  
 λῶνις ἀννεχθεῖσθαι ὑπερασία ἀφῆρρ ἡλίου μὴ τυγ-  
 χαλὴν κατὰ βρασίας. κατὰ ψυχθῆν δὲ τοῦτο παλ-  
 χῶν καλεῖσθαι. χαλαρὰν δὲ νέφθ πεπηγὸς χαλαρὰ  
 ὑπὸ πνύματθ διὰ βρυθῶν. χιόνα δὲ ὑγρῶν ἐν  
 νέφῃς πεπηγότθ, ὡς πεσειδῶνιθ ἐν τῷ ὅγ-  
 νόῳ τοῦ φυσικοῦ λόγου. ἀστραπὴ δὲ ἕξαψιν νεφῶν



παρατειβομένων, ἢ ῥηγνυμένων ὑπὸ πνύματ<sup>Θ</sup>,  
 ὡς ζώων ἐν τῷ ποδὶ ὅλου. βροντῶν δὲ ῥη τὰ τῶν πο-  
 δῶν, ἐκ παρατείφους ἢ ῥήξεως. κδραυὸν δὲ ἔξα-  
 σφοδρὰν μετὰ πλῆθους βίας πίπτουσαν ὑπὸ γῆς νε-  
 φῶν παρατειβομένων ἢ ῥηγνυμένων. οἱ δὲ, συσρο-  
 φῶν πυρώδους ἀδρ<sup>Θ</sup> βιάως ηγαταφορομένη. τυ-  
 τυφῶν φῶνα δὲ κδραυὸν πλὴν βίαιον καὶ πνύματ<sup>Θ</sup> ὡς  
 ἢ πνεῦμα ηγαπῶν δὲ ἐρῶ γότ<sup>Θ</sup> νέφους. πρηνήρας  
 νέφ<sup>Θ</sup> ποδ<sup>Θ</sup> χυθέρ ποδὶ μετὰ \* πνύματ<sup>Θ</sup> εἰς τὰ  
 κοιλώματα τῆ γῆς. ἢ ηγαθειρ χυθέρ πνύματ<sup>Θ</sup>  
 ἐν τῇ γῇ, ηγαθά φησι προειδῶνι<sup>Θ</sup> ἐν τῇ ἡ. εἶν<sup>Θ</sup> δὲ  
 αὐτῶν σὺ μὲν, σεισματίας. σὺ δὲ, χασματίας. σὺ  
 δὲ, ηγαυματίας. σὺ δὲ, βρασματίας. ἀρίσκει δὲ αὐ-  
 ρίς εἰ τῶν σελήνησμησι ὥς ἔχει. μέσῳ τῶν γλῶ-  
 κνήτεσ λόγον ἐπέχουσαν. μεθ' ἧν ῥ' ὕδωρ σφαιροει-  
 δές, ἔχει ῥ' αὐτῶν κνήτεσ τῇ γῇ. ὡς τε τῶν γλῶ ἐν ὕ-  
 δια πείναι. μετὰ ῥ' ὕδωρ δὲ ἀδρὰ δὲ σφαιρωμένη. κύ-  
 κλους δὲ εἶν<sup>Θ</sup> ἐν τῷ οὐρανῷ πέντε. ὧν πρῶτον ἀρκτι-  
 κόν, ἀεί φαινόμενον. δεύτερον τροπικόν, θερινόν. τρί-  
 τῳ ἰσημερινόν. τέταρτον χιμωρινόν, τροπικόν. πέμ-  
 πτον ἀνταρκτικόν ἀφανῆ. λέγονται δὲ παραλλήλους  
 ηγαθό π' ὅ συμβαίνουσιν εἰς ἀλλήλους. γινώσκονται  
 μέν τι ποδὶ. ῥη αὐτῶν πόλον. ὁ δὲ ζωστικός λεξός ἐ-  
 σιν ὡς ὡπλῶν σὺ παραλλήλους. ζῶναι τὴν τῇ γῆς  
 εἰσι πέντε, πρῶτη βόρει<sup>Θ</sup>, καὶ ἑσπέρ<sup>Θ</sup> ῥη ἀρκτικόν  
 κύκλον, ἀρίνητ<sup>Θ</sup> δὲ χυθ<sup>Θ</sup>. δεύτερ<sup>Θ</sup> ἀνταρκτικόν.  
 τρίτη

τρίτη ἀοίκητο ὑπὸ χειμαλῶν, ἡ δὲ κεχειμαμένη  
 χαλουμενή. τετάρτη ἡ ἀντὶ δούρατο. πέμπτη νό-  
 πτο ἀοίκητο δὲ ψυχῶ. δοκεῖ δὲ αὐτοῖς τῶν μὲν  
 φύσιν εἶναι πῦρ τεχνικόν, ὁ δὲ βαδίζον εἰς ἡνδερν.  
 ὁ πόρ δὲ πνεῦμα πυροειδὲς καὶ τεχνοειδὲς. τῶν  
 δὲ ψυχῶν αἰσθητικῶν. ταύτῃ δὲ εἶναι ὅτι συμφύεις ἡ  
 μῖν πνεῦμα. διὸ καὶ σῶμα εἶναι, καὶ μετὰ θάνατον  
 ὑπὸ μύσει. φθαρτὴν δὲ εἶναι. τῶν δὲ τῶν ὅλων ἀφθαρ-  
 τῶν, ἡς μόρῃ εἶναι τὰς ἐν τοῖς ζώοις. ζῶων δὲ ὁ κιττιεύς  
 καὶ ἀντίπατρος ἐν τοῖς ποταμῶν ψυχῶν καὶ προσειδῶν  
 νιτο πνεῦμα ἡνθόμορον εἶναι τῶν ψυχῶν. τὸ τῶν γὰρ  
 ἡμῶν εἶναι ἐμπνόου καὶ ὑπὸ τῶν κινεῖσθαι. κλεαν-  
 θῆς μὲν οὖν πάσας ὑπὸ δαμνῶν τὰς μέχρι ἐκφυ-  
 ρώσεως. χεύσι πᾶσι δὲ τὰς τῶν σφῶν μόνων. μόρῃ <sup>μέρη τῶν</sup>  
 δὲ ψυχῶν λέγουσιν οὐκ ὄν, τὰς πᾶν αἰσθήσεις, καὶ <sup>ψυχῶν</sup>  
 οὐκ ὄν ἡμῖν σωματικῶν λόγων, καὶ ὅτι φωνητι-  
 κόν, καὶ ὅτι λογιστικόν. ὁρᾶν δὲ τὸ μεταξὺ τῆς ὁρασε-  
 ως καὶ τὸ ὑποκειμένου φωτὸς ἡντείνοντες κωνοει-  
 δῶς καὶ φησι χεύσι πᾶσι ἐν δούτορῳ τῶν φυσί-  
 κων καὶ ἀκρομάδων. γίνεσθαι μὲν γὰρ κωνοειδὲς  
 τὸ ἀόρτο πρὸς τῇ ὁφει. τῶν δὲ βάσιμ πρὸς τῇ ὁ-  
 ρωμένῳ. ὡς δὲ βακτηρίας οὖν τὸ ταθγντο ἀόρος  
 ὅτι βλέπτον ἀναγγέλλεσθαι. ἀκούειν δὲ τὸ μετα-  
 ξὺ τῶν φωνουῶντο ὅτι ἀκούοντο ἀόρτο πλητ-  
 τμένη σφαιροειδῶς, εἶτα κυμαρυμένη, καὶ ταῦς  
 ἀκροῖς προσιπύοντο, ὡς κυματῶνται ὅτι ἐν δεξίᾳ



μὴ ὕδωρ κατὰ κύκλους ὑπὸ τοῖς ἐμβληθέντι Λί-  
 θου. ὅρ δὲ ὕπνον γίνεσθαι ἐκλυομένην τοῖς αἰσθητικοῦ  
 τόνου πόδι ὃ ἡγεμονικόν. αἰτίας δὲ τῶν παθῶν ἀκρι-  
 λείπουσι τὰς πόδι ὃ πνεῦμα τροπῶς. πᾶρμα δὲ  
 λέγουσιν εἶναι ὃ οἶον τε γήναῦν τριαῦτα ἀφ' οἷου καὶ  
 αὐτὸ ἀπεκρίθη. αἰσθητὸν δὲ πᾶρμα ὃ μεδίησιρ ὃ αἰσ-  
 θρωπῶ μεθ' ὕγρου συγκιρναῖσθαι τῆς φη ψυχῆς μέ-  
 ροισι, κατὰ μεγῶν τοῖς τῶν πρεσόντων λόγου. εἶναι  
 δὲ αὐτὸ χεῦσιπῶ φησίρ ἐν τῇ δούτορ τῶν φυσι-  
 κῶν πνεῦμα κατὰ τῶν οὐσίαν. ὡς δὲ ὕδωρ ἐν τῶν εἰς  
 τῶν γλῶ κατὰ βαλλομένων πᾶρμα τῶν. ἃ παλαιῶ  
 θγῖτα ἐκ ἐπ' ἐφέται, ὡς δὲ ὕδωρ δὲ ἀπεπυκνίας αὐ-  
 τῆς τῆς δυνάμεως. καὶ ἀφ' ὧν δὲ τῶν σωματῶν  
 αὐτὸ φασὶ κατὰ φέρεσθαι οἱ πόδι ὅρ σφαῖρον. πάν-  
 τῶν τοῦ γήνητικόν εἶναι τῶν τοῖς σώματι μέρω. ὃ  
 δὲ φη θηλείας αἰσθητὸν ἀκρφαίνεται ἀρνόν τε εἶναι καὶ  
 ὀλίγον, καὶ ὕδατῶ δὲ, ὡς ὃ σφαῖρ φησίρ. ἡγεμονι-  
 κόν δὲ εἶναι ὃ κυριώτατον τῆς ψυχῆς, ἐν ᾧ αἱ φαντα-  
 σίαι καὶ αἱ ὁρμαὶ γίνονται, καὶ ὅθεν ὁ λόγος ἀναπύ-  
 πεται. ὃ πόρ εἶναι ἐν καρδίᾳ. ταῦτα μὲν καὶ τὰ φυσι-  
 κῶν, ὃ ὅσον ἡμῖν ἀκρχεισικῶς ἔχειρ δοκῇ, σοχαξομέ-  
 νοις φη συμμετρίας τοῖς συγγράμματι. ἃ δὲ πινδ-  
 ρεῖ αὐτῶν διλυέχθησαν, ἐσι ταῖς δὲ. ἀείσωρ ὃ χιῖ ὃ  
 αἰείσωρ φαλλανθῶ, ὡν καλούμεν σερῶν, τέλῶ ἔφησιν  
 ὃ χιῖ εἶναι ὃ ἀσφαφῶς ἔχοντα ζῶν πρὸς τὰ μετὰ ἀρετῆς  
 καὶ κακίας, μηδὲ ἐντινοῦν ἐν αὐτῆς παραλλαγῶν  
 ἀκρ

[illegible]



πρὸς δὲ τὸν φαμένον ἀναδημαῖον οὐδὲν ἡγῶμαι  
 λαμβάνειν, ἅρ' οὐδὲ τὸν πλησίον σου ἡγεθήμενον δι-  
 ρᾶς; ἀρνησαμένου δέ,  
 τίς σ' ἐτύφλωσ' ἔφη, τίς ἀφείλεθ' λαμπάδος αὐγᾶς.  
 Βιβλία δὲ αὐτὸ φέρεται τὰ δὲ. προτρεπικῶν υ'.  
 ποδὶ ζυγίων θ' δογματικῶν διαλογιστολογικῶν ς'. πε-  
 ρὶ σοφίας διατριβῶν ζ'. ἐρωτικὰ διατριβαί. ὑπο-  
 μνήματα ὑποδιδασκαλίας. ὑπομνήματα τῶν ἡ-  
 ἀκμνημονοιουμένων γ'. πρὸς τοὺς ἑταίρους. πρὸς  
 τὰς ἀλδρίνου ἀντιγραφάς. πρὸς τοὺς διαλεκτικούς  
 γ'. πρὸς κλεαῖθλου ὑπολογισμῶν δ'. παναίτιον δὲ  
 καὶ σωσικῆς τῆς μόνας αὐτὸ τὰς ὑπολογισμῶν φασί.  
 τὰ δὲ ἄλλα τοῖς ποδὶ πατητικοῦ ἀρίστων θ'. ἑῶν λό-  
 γον φαλακρὸν οὐτα ἐγχευθῆναι ὑπὸ ἡλίου, καὶ ὥστε  
 τελευτῆσαι. προσηπαίξαμεν δὲ αὐτὸς τοῦ δὲ τοῦ τρέ-  
 πω τοῦ ἰαμβω τοῦ χελῶ.  
 τί δὲ γόρων ὦν καὶ φαλακρὸν ἀρίστων  
 τὸ βρέγμα διώκας ἡλίω ἡγερωτῆσαι;  
 τὸ γὰρ τὸ θεῶν πλεονὸν ἢ δεινὸν ζητῶν  
 τὸν τυχερὸν οὐτως εὐρεῖς ὃ θέλω ἀδύνατον.  
 γέγονε δὲ καὶ ἅμα ἀρίστων ἰλιήτης ποριπατη-  
 τικός. ὃ δὲ τις μουσικός ἀβλωαῖος. τέταρτος πρι-  
 κτὴς τραγωδίας. πέμπτος ἀλακτὴς τέχνης γε-  
 γραφὸς ἡγερωτῆς. ἕκτος ἀλδριανός. πέρι πα-  
 τητικός.

Ἡμεῖς

## ΗΡΙΑΛΟΣ

**Η**ΡΙΜΘ ΔΕ Ο ΗΓΕΡΧΗΔΟΝΙΘ ΤΕΛΘ ΕΠΕ ΤΙΩ  
 ΨΩΣΗΜΩ. Ο ΠΟΡ ΘΣΙ ΖΙΩ ΑΕΙ ΠΑΝΤΑ ΑΝΑΦΟΡΑΝ  
 ΤΑ ΠΡΟΣ Τ ΜΕΤ ΨΩΣΗΜΗΣ ΖΙΩ, ΚΑΙ ΜΗ ΤΗ ΑΓΝΟΙΑ ΣΤΑ  
 ΒΕΒΛΗΜΕΝΟΝ. ΕΝΑΙ ΔΕ ΤΙΩ ΨΩΣΗΜΩ ΞΙΡ ΕΚ ΦΑΝΤΑ  
 ΣΙΩΝ ΠΡΟΣ ΔΕΞΙΑΝ ΕΠΟΠΤΩΡΩΝ ΕΠΟ ΛΟΓΟΝ. ΠΡΤΙ ΔΕ  
 ΕΛΕΓΕ ΜΗΔΕΡ ΕΝΑΙ ΤΕΛΘ. ΑΛΛΑ ΚΑΙ ΤΑΣ ΠΟΔΙΣΑΙΣ  
 ΚΑΙ ΤΑ ΠΡΑΓΜΑΤΑ ΑΛΛΑΤΗΘΑΙ ΑΥΤΟΝ, ΩΣ ΚΑΙ ΤΗΝ ΑΥ  
 ΤΗΝ ΧΑΛΚΟΝ Η ΑΛΔΕΙΑΝΘΡΩ ΓΙΝΟΜΕΝΟΝ ΑΝΔΡΙΑΝΤΑ Η ΣΩ  
 ΚΡΑΤΟΥ. ΣΤΑΦΟΡΕΙΡ ΔΕ ΤΕΛΘ ΚΑΙ ΕΠΟΤΕΛΙΔΙΑ. ΤΗ  
 ΜΩΝ ΓΩΡ, ΚΑΙ ΕΩ ΜΗ ΣΟΦΟΥ ΣΟΧΑΖΕΘΑΙ. ΤΟ ΔΕ, ΜΟΝΟΝ  
 ΤΗ ΣΟΦΟΝ. ΤΑ ΔΕ ΜΕΤΑΞΥ ΑΡΕΤΗΣ ΚΑΙ ΗΓΑΚΙΑΣ ΑΣΤΙΟΦΟ  
 ΡΑ ΕΙΝ. ΕΣΙ ΔΕ ΤΑ ΒΙΒΛΙΑ ΑΥΤΟ, ΟΛΙΓΟΣΙΧΑ ΜΩΝ, ΔΙΩΑΙ,  
 ΜΕΩΣ ΔΕ ΜΕΣΑ, ΚΑΙ ΠΟΔΙΕΧΟΥΤΑ ΑΝΤΡΩΓΗΣΙΣ ΠΡΟΣ ΖΗ  
 ΝΩΝΑ. ΛΕΓΕΤΑΙ ΔΕ ΟΤΙ ΠΑΙΔΟΣ ΟΥΤΘ ΑΥΤΟ ΗΓΩΔΗ  
 ΣΑΡ ΙΗΓΗΝΟΙ. ΘΣ ΑΡΤΕΓΕΤΑΙ ΒΟΥΛΟΜΕΝΘ Ο ΖΩΩΝ ΗΝΑΓ  
 ΗΓΑΤΕ ΞΥΡΑΘΑΙ ΗΕΙΛΛΟΝ. ΟΙ ΔΕ, ΑΠΕΤΡΑΠΗΝΤ. ΤΑ ΔΕ ΒΙ  
 ΒΛΙΑ ΕΣΙ ΤΩ ΔΕ. ΠΟΔΙ ΑΣΚΗΣΕΩΣ. ΠΟΔΙ ΠΑΘΩΝ. ΠΟΔΙ Ψ  
 ΤΗΛΕΩΣ. ΝΟΜΟΒΕΤΗΣ. ΜΑΙΔΥΠΗΘΣ. ΑΝΤΙΦΟΡΩΝ ΔΙΔΑ  
 ΣΤΗΛΘ. ΣΤΑΘΟΚΟΝΑΖΩΝ. ΕΥΘΥΩΝ. ΕΡΜΗΣ. ΜΗΔΕΙΑ. ΔΕ  
 ΩΛΟΓΟΙ. ΘΕΙΣΕΩΝ ΗΔΙΚΩΝ. ΔΙΟΝΥΣΙΘ ΔΕ Ο ΜΕΤΑΘΕΜΕΝΘ,  
 ΤΕΛΘ ΕΠΕ ΤΙΩ ΗΔΗΝΩ, ΣΤΑ ΠΟΡΙΣΑΣΙΝ ΟΦΘΑΛΜΙΑΣ.  
 ΑΛΓΗΣΑΣ ΓΩΡ ΨΩΠΡΩΝΩΣ, ΩΚΗΝΗΣΗΝ ΕΙΠΕΙΡ ΤΗ ΤΡΥΝΟΝ Α  
 ΣΤΙΟΦΟΡΟΝ. Ω ΔΕ ΠΑΙΣ ΜΩΝ ΘΕΟΦΑΝΤΟΣ. ΠΡΩΕΩΣ ΔΕ ΗΡΑ  
 ΚΛΕΙΑΣ. ΗΚΟΥΣΕ ΔΕ ΗΓΑΘΑ ΦΗΟΙ ΔΙΟΚΛΗΣ, ΠΡΩΤΩΝ ΜΩΝ Η  
 ΡΑΚΛΕΙΔΟΣ ΤΟ ΠΡΛΙΤΟΣ. ΕΠΕΤΑ ΑΛΕΞΙΝΟΣ ΚΑΙ ΜΩΝΕΔΗΝ

ΔΙΟΝΥΣΙΘ Ο  
 ΜΕΤΑΘΕΜΕΝΟΣ



μου. τελευτούον δὲ ζώνωνθ'. καὶ κρατερῆς μὲν οὐ  
 λογαζόμενατ' ὡρ πανρδαπρὶς ἐπεχείρει πρὶν ἡμᾶ  
 σιν. ἐπειτα δὲ καὶ ἄρα τῇ ἀπεδέχθητο ζήλῳ αὐτόν.  
 ἀρσὰς δὲ τοῦ ζώνωνθ', πρὸς αὐτὸν κυβερναῖκόν τ' ἀπε  
 τραπή. καὶ εἰς τὰ χαμαιτυπεία ἔωσέη. καὶ  
 τὰλλα παραηγάλῳ τῶν ἡδονῶν. βιτὺ δὲ πρὸς  
 τὰ ὀγδοήκοντα ἄσπια κατέστρεψε. βιβλία δὲ αὐτοῦ  
 φόρεται τὰδε. ποῦ ἀπαθείας ὤ. ποῦ ἀσκήσεως  
 β. ποῦ ἡδονῆς Δ. ποῦ πλούτου καὶ χαλάρου  
 καὶ τιμωρίας. ποῦ ἀνθρώπων χερίσεως. ποῦ ἐντυχί  
 ας. ποῦ ἀρχαίων βασιλείων. ποῦ τῶν ἐπαινουμί  
 νων. ποῦ βαρβαρικῶν ἠθῶν. καὶ ἔτι μὲν οἱ διεκ  
 θνήσκουσιν. Διεδέξατο δὲ τὸν ζώνονα κλεάνθης, ποῦ  
 οὐ λεκτέον.

## ΚΛΕΑΝΘΗΣ

**Κ**λεάνθης φανίου ἄσπι. οὐτ' ἄρα πρῶτον ἰὼ  
 πύκτης, ὡς φησὶν ἀντιπαρ' ἑνὸς ἐν δισκοχαῖς.  
 ἀφ' ἡμέρου δὲ εἰς ἀθλίας τέσσαρας ἔχων δραχι  
 μάς καὶ φασὶ τινὲς καὶ ζώνονι παραβαλὼν, ἐφί  
 λασόφησε γυμνασιότατα. καὶ ὑπὸ τῶν αὐτῶν ἔμεινε δο  
 γμῶν τῶν. δευτέρῃ δὲ ὑπὸ φιλοπρηνείας. ὡς γὰρ πρὸς ὡρ  
 ἄγαν ὥρμησε μεθοφορεῖν. καὶ νύκτωρ μὲν ἐν τοῖς κή  
 ρις ἦν τλη. μεθ' ἡμέραν δὲ ἐν τοῖς λόγοις ἐγυμνάζ  
 ετο. ὅθεν καὶ φρεανίτης ἐκλήθη. φασὶ δὲ καὶ εἰς δι  
 κασίαν ἀχθῆναι λόγῳ δῶσεντα πρὸς αὐτὸν ὅτι τσού  
 τῃ





ἀφ' ἑμαῖτα

καὶ σκωπτόμεν· ὑπὸ τῶν συμμαθητῶν ἠνεῖχτο.  
καὶ οὖν ἀκούων προσεδίεχτο, λέγων αὐτὸς μόνος  
δύνασθαι βασιλεῖν τὸ ζῶντων φορτίον. καὶ πρὶν  
ὀνειδίζομεν ὡς δειλὸς, ὃς εἶπε ὀλίγα ἀ-  
μαρτανῶ. προκρίνων δὲ τὸν ἑαυτοῦ βίον τοῦ τῶν πλη-  
σίου ἔλεγον, ὃν ὅσφαιρίζουσιν ἐκείνοι τῷ σκληρῶν  
καὶ ἀναστρεφόμενοι ἐργαζέσθαι σιγῶν. πολλὰ καὶ  
ἑαυτοῦ ἐπέπληττον. ὧν ἀκούσας ἀείσω τίνι ἔφη ὑπὸ  
πλήθεις. καὶ ὅς γε γλώσσας, πρὸς βύτη φησὶ πηλὰς  
μὲν ἔχοντι νοῦν δὲ μή. εἰπὺντο δὲ πῶν ἀρκυδί-  
λαον μὴ πρὶν τὰ δέοντα, παύσαι ἔφη, καὶ μὴ φέρε-  
ναι γὰρ καὶ λόγῳ τὸ κατὰ νόμον ἀναστρεφόμεναι, τοῖς τοῦ ἑαυτοῦ  
αὐτὸ πρὶν. καὶ ὁ ἀρκυδίλαος ὁ κατὰ νόμον φησὶ.  
πρὸς δὲ ὁ κλεάνθης, καὶ ἔφη σε κατὰ νόμον φησὶ.  
νῦν, ἄλλα μὲν λέγειν, ἔτι δὲ πρὶν. ἐρομένης πρὸς  
τί ὑποτίθεσθαι δεῖ τοῦ ἑαυτοῦ. τὸ ἐκ τῆς ἡλικίας ἔφη.  
σίγα, σίγα, λεπτὸν ἔχον.

λαλῶν πρὸς εἰπὺντο ὅτι ὁ πρὶν ἀγαθὸν ὅσον  
χρῆσθαι φησιν.

αἵματ' εἰς ἀγαθοῦ ὅσον τέκον.

φησὶ δὲ ὁ ἐκείνῳ ὃν τοῖς χρεῖαις, ἐν μόρῳ μετὰ  
ἑαυτοῦ εἰπὺντο, εἰ ὁ εἰς τῷ γαστρίᾳ τῶν γαστρί-  
ναι, καὶ ὁ εἰς τοῦ μηρὸς τῶν πύων μετὰ, ἔφη. σὺ μὲν  
τοῦ ἀγαθοῦ μετὰ ἔχει μετὰ. αἱ δ' ἀνάλλογαι  
φωναὶ τὰ ἀνάλλογα ὁ πάντως σημαίνουσι τὰ πράγ-  
ματα. μετὰ πρὶν ὅσον ἐπύθετο εἰ αἱ  
δαίαι

θανέται. τοι δ' ὠνιδύσαντο· ὅτε τὴ δ' ὕμῳ εἶπεν ἐγὼ  
 ἐκ αἰδάνομαι ὅπ' αἰδάνῃ. σωσθῆεν τοι πρὶν τοι εἶναι  
 θεῶν τρω εἶπεν· πρὸς αὐτὸν παρόντα, ὅς ἡ κλεινὴ  
 θύου μωρία βοήλατ'· ἔμεινεν ἐπὶ ταυτοὶ ὀχλήματι  
 τοῦτο. ἐφ' ᾧ ἀγαθόν τ' οὐδὲ ἀκροατὰς ἔρ' μὲν ἐκρότη  
 σαρ. ἔρ' δὲ σωσίθεος θ' ἐβέβαλλον. μεταγινώσκοντα δὲ  
 αὐτὸν ὠδὶ τῇ λοιδορίᾳ προσήγαγ' εἰπὼν. ἄρ' ἔρ' εἶπ' ἔν  
 ἔρ' μὲν δίδουσιν καὶ ἔρ' ἡρακλῆα φλυαρομένῳ· οὐ  
 πὸ τῷ πρὶν τῷ μὴ ὀργίζεσθαι, αὐτὸν δὲ τῇ τυχεύ  
 σι βλασφημίᾳ δυσχεραίνειν. ἔλεγε δὲ καὶ οὗτοί  
 τοι πόδα πάντα ὁμοίῳ τι πάσχειν τοῖς λύραις. αἱ καὶ  
 λῶς φθεγξόμεναι αὐτῷ ἐκ ἀκροῦσι. λέγεται δὲ  
 φασκόντο αὐτὸ κατὰ ζῶντα, κατὰ ληπτόν· εἶπ' ἔν  
 ἔρ' ἦτο· θ' εἰδὼς, νεανίσκου τινὸς ἐντραπίλ' οὐκ  
 γαγῆρ' πρὸς αὐτὸν κίνασθαι δ' ἐκληραγωγημένον  
 ἐν ἀγρῷ, καὶ ἀξιοῦν ἀρφαίνεσθαι πόδα τοι ἦτο. ἔρ'  
 δὲ, ὅτε προύμνον κελεύσαι ἀπιγῆναι ἔρ' ἀνθρώπων.  
 ὥς δὲ ἀπιγῆναι ἔρ' ἀνθρώπων. ὥς δὲ ἀπιῶν ἐκείνῳ  
 ἐπ' αὐτῷ, ἔχω εἶπεν αὐτὸν ὁ κλεινός, μαλακός ὅστις.  
 πρὸς δὲ ἔρ' μονήρη καὶ ἰαυτῷ λαλοῦντα, ὅ φασίλω  
 ἔφ' ἀνθρώπων λαλεῖς. οὐκ εἰδὼς αὐτῷ πινός εἰς  
 ἔρ' γῆρας, καὶ γὰρ ἔφ' ἀπιγῆναι βέλομαι. ὅταν δὲ παν  
 ταχέως ἐμαυτὸν ὑγιαίνοντα πόδινοῦ καὶ γράφοντα  
 καὶ ἀναγινώσκοντα, πάλιν μὲν. ὅτε φασίμ· εἰς δι  
 σραγῆ καὶ βοῶν ὠμοπλάτας γράφειν ἅπαν ἡνουν  
 ἐν ἀπ' αὐτῷ ζῶντο· ἀρεῖα καὶ μολτὶν ὥς τε ὠνή



σπασαι χαρτία. τοιοῦτ' ὅτι Δι' ὧν διέχουσε, πολ-  
 λῶν καὶ ἄλλων ὄντων ἀξιολόγων ζῴων' μαθη-  
 τῶν, αὐτὸς διαδίδεσθαι τὴν σχολήν. βιβλία δὲ  
 αὐτοῦ καλλιστὰ κατὰ λέγειν ἃ ὅτι τὰδε. περὶ χρο-  
 νου. περὶ τῆς τοῦ ζῴων' φυσιολογίας. Δύο τῶν  
 Ἡρακλείτου διηγήσεις. τέσσαρα περὶ αἰσθήσεως.  
 περὶ τέχνης. πρὸς Δημόκριτον. πρὸς Ἀρίσταρ-  
 χον. πρὸς Ἡέλλαν. περὶ ὁρμῆς Δύο. ἀρχεολογία  
 περὶ θεῶν. περὶ γιγαντων. περὶ ὑμνησίων. περὶ  
 τοῦ ποιητοῦ. περὶ τοῦ καθίκοντ' γ'. περὶ ἐν-  
 βουλίας. περὶ χαλεπῶν. πρὸς τρεπτικῶν. περὶ ἀν-  
 ρετῶν. περὶ ἐνφυίας. περὶ γορσίωπον. περὶ φθο-  
 ρίας. περὶ ἔρωτ' ὅτι. περὶ ἐλευθερίας. ἐρωτικὴ  
 τέχνη. περὶ τιμῆς. περὶ Δόξης. πολιτικῶν. πε-  
 ρὶ βουλῆς. περὶ νόμων. περὶ τοῦ δικαίου. πε-  
 ρὶ ἀγωγῆς. περὶ τοῦ λόγου γ'. περὶ τέλ' ὅτι.  
 περὶ καλῶν. περὶ πρᾶξεων. περὶ ἐπιστήμης.  
 περὶ βασιλείας. περὶ φιλίας. περὶ συμποσίου.  
 περὶ τοῦ ὅτι ἡ αὐτὴ ἀρετὴ καὶ ἀνδρὸς καὶ γυναι-  
 κός. περὶ τοῦ τῶν σοφῶν σοφισδύων. περὶ χρε-  
 ῶν. Διατειβῶν β'. περὶ ἡδονῆς. περὶ ἰδίων.  
 περὶ τῶν ἀπόρων. περὶ Διαλεκτικῆς. περὶ τρέ-  
 πων. περὶ κατηγορημάτων. τὰυτὰ αὐτῶν τὰ βι-  
 βλία. καὶ τελευτᾷ τὸνδε τὸν τρόπον. Διῶδην  
 σὺν αὐτῶν τὸ οὔλον. ἀπαγορεύσαντων Δι' τῶν  
 ἰατρῶν Δύο ἡμέρας ἀπείχου τροφῆς. καὶ πως  
 ἔοχε

τοχε καλῶς. ὥς τε σὺ ἰατρὺς αὐτοῖς πάντα τὰ  
σωθήθῃ συγχωρεῖν. ὅρμ Δέ, μὴ ἀνασχέσθαι. ἀλλ'  
εἰπόντα ἤδη αὐτοῖς προσδοιπορεῖσθαι. καὶ τὰς λοι-  
πὰς ἀνασχόμενον τελειοποιεῖν. καὶ φασὶ τι-  
νὲς π' ἔτι βιώσαντα, καὶ ἀκούσαντα ζῶντων  
ἔτι ἐννεακαίδεκα. ἐπαύξαμεν Δέ καὶ ἡμεῖς πρὸς  
αὐτὸν οὕτως.

αὐτῷ κλεάνθῳ, ἀλλὰ μᾶλλον αἰδῶ.  
ἰδὼν γὰρ αὐτὸν πρὸς βίῳ ἔκ ἡνέσχετο  
μὴ ἔ' ἔτι λοιπὸν αὐδῶν ἐν φθιρὶς ἔχειν  
ῥοσὺν αὐτλήσαντα τῷ βίου χρόνῳ.

## ΣΦΑΙΡΟΣ

**Τ**οῦτου καὶ πρὸς προειρήκαμεν, ἤκουσε με-  
τὰ ζῶντων καὶ σφαῖρ' ὁ βοσποριανός. ὃς  
προκοπῶν ἰσχυρῶς προηποιοῦμεν λόγων εἰς  
ἀλεξάνδρειαν ἀπῆλθε πρὸς πτολεμαῖον τὸν φι-  
λοπάτορα. λόγου Δέ ποτε γενομένου πρὸς τοῦ  
δοξαστῆν τὸν σοφόν, καὶ τοῦ σφαίρου εἰπόντ',  
ὥς οὐ δοξάσει, βουλόμεν ὁ βασιλεὺς ἐλέγχει  
αὐτὸν, κηρύνας ῥόας ἐκέλευσε παρατεθῆναι. τοῦ  
δὲ σφαίρου ἀπατηθῆντ' ἀνεβόησεν ὁ βασιλεὺς,  
ἰδὼν δὲ συγκατατεθεῖσθαι αὐτοῖς φαντασίαν. πρὸς  
ὃν ὁ σφαῖρ' ἐνσώχως ἀπεκρίνατο ἐπ' αὐτῷ. οὕτως  
συγκατατεθεῖσθαι, οὐχ ὅτι ῥόαι εἰσιν, ἀλλ' ὅτι  
ἔνλογον ὅτι ῥόας αὐτὰς εἶναι. Διαφέρει Δέ  
τῷ



Βιβλία  
σφαίρας

τῶν ἡγεταλῆων πικρὴν φαντασίαν τοῖς ἐν λόγῳ. πρὸς δὲ  
μνησίεσθαι ἡγετηγοροῦντα αὐτοὶ ὅτι ὡς τῶν ἡγεταλῶν  
φησι βασιλεία εἶναι, ἡγετῶν δὲ οὐκ ὅτι ὡς τῶν ἡγεταλῶν  
καὶ βασιλεία εἶναι. βιβλία δὲ γέγραφε τάδε. πόδι κῆρ  
μου ὤ. πόδι σοιχείων ἀσπίδα. πόδι τύχης.  
πόδι ἐλαχίστων. πρὸς τὰς ἀτόμους ἡγετὰ εἰδωλὰ.  
πόδι αἰσθητῶν. πόδι ἡρακλείτου ἐσθλα βῶν.  
πόδι τῆς ἡδονῆς ἐσθλα βῶν. πόδι ἡγετῶν. πόδι  
ὁρμῆς. πόδι παθῶν ὤ. ἐσθλα βῶν. πόδι βασιλεί-  
ας. πόδι λακωνικῆς πελιδνίας. πόδι λυκούργου καὶ  
σωκράτους γ. πόδι νόμου. πόδι μαθητικῆς. ἐσθλα  
λόγου ἐρωτικῆς. πόδι τῶν ἐρετῶν καὶ φιλοσό-  
φων. πόδι ὁμοίων. πόδι ὁρῶν. πόδι ἐξέως. πόδι τῶν  
ἀντιπεγομένων τρεῖς. πόδι λόγου. πόδι πλούτου.  
πόδι δόξης. πόδι θανάτου. τέχνης ἐσθλα βῶν ὤ.  
πόδι ἡγετηγορημάτων. πόδι ἀμφοβολίων. ἐπι-  
σολῶς.

## ΧΡΥΣΙΠΠΟΣ

**Χ**ρύσιππος ἀφ' Ἀλμανίου σολεύς ἢ τερσεύς, ὡς  
ἀλέξανδρος ἐν ἐσθλα βῶν. μαθητὴς κλεάν-  
θους. ἐστὶ πρότοτον μὲν δολιχὸν ἤσκει. ἐπειτα ἀ-  
κούσας ζώνων ἢ κλεάνθους, ὡς διοκλῆς καὶ οἱ  
πλείους, ἐπὶ τὴν ζώναν ἀπῆλθεν αὐτοῖς, καὶ ὁ τῶν  
χωρὶς ἐγένετο ἡγετὰ φιλοσοφίαν. ἀνὴρ ἐυφυὴς καὶ ὀξύ-  
τατος ἐν παντὶ μὲν οὐτως, ὡς τε καὶ ἐν τῇ πλεί-  
στοις διωχέσθην πρὸς ζώναν, ἀλλὰ καὶ πρὸς κλεάν-  
θου.

θλῶ. ὧ καὶ τῆς μάχης ἔλεγε μόνος τῷ τῷ δογματῇ  
 διδασκαλίας χεῖρει. τὰς δὲ ἀκροατοὺς αὐτῶν ἐν-  
 ρήσει. μετῴνει μὲν γὰρ ὅτε πρὸς αὐτῶν ἀκροατοὶ  
 γ. ὡς τε σωεχὺς προφύεσθαι ταῦτα.

ἐγὼ δὲ τὰλλα μακροῦ πένον ἀνὴρ  
 πλὴν εἰς κλεαίνθω, ὅσον δ' ἐκ ἐνδοκίμου.

οὕτω δ' ἐπίδωξεν ἑνὶ τῶν διαλεκτικῶν ἐγὼ, ὡς  
 τε δοκῇ σὺ πλείον ὅτι ἐκ παρὰ θεοῖς ἢ ἡ δια-  
 κλη, ἐκ αὐτῶν ἢ ἀλλῇ ἢ χευσίππει. πλεονάσεις δὲ  
 τῶν πραγμάτων, τὴν λέξιν δὲ κατάρθωσε. πρῶτον  
 τὸς τε παρ' οὐκινου γέγονεν, ὡς δὴ λόγος ἐκ τῶν συγ-  
 γραμμάτων αὐτοῦ. τὸν ἀριθμὸν γὰρ ἑκάστου πέντε καὶ  
 ἑκατοῦσία ἐστίν. ἐπλήθυσε δὲ αὐτὰ τῆς μάχης ἑκά-  
 στου αὐτοῦ δόγματ' ὑπὸ χειρῶν, καὶ παῦν ὅσον  
 πέντε γραμμάτων καὶ διορθούμεν πλεονάσεις, πλεί-  
 ον τὴν μαρτυρίων παραθήσει χεῖρ' ὡς τε  
 καὶ ἐπειδὴ ἦν πέντε τῶν συγγραμμάτων παρ' οὐ-  
 λίγον τὴν ἐν ἐπιδόξῃ μὲν οὖν ὅλως παρετίθητο, καὶ  
 τις μετὰ χεῖρας εἶχε τὸ βιβλίον, πρὸς τὸν πυθόμε-  
 νορ τὴν ἀφ' ἐχθρῶν χευσίωπος μὲν οὖν. καὶ ἀκρό-  
 δωρ δὲ ὁ ἀβλαβὴς ἑνὶ τῇ συναγωγῇ τῶν δογμα-  
 τῶν βουλόμεν παρὰ τὰς οὐκινου οὐ  
 κεία δυνάμει γεγραμμένα καὶ ἐν παρὰ θεοῖς οὐκ  
 μνησὶ πλείον ὅτι τῶν χευσίωπου βιβλίων. ὅς ἂν  
 τρια παρὰ τίθεται, καὶ αὐτὸς ὁ χάρτης κατὰ  
 δείτεται. καὶ ταῦτα μὲν ἀκρόδωρ. ἡ δὲ παρὰ

dd

διδύσσε



φρόνισα πρὸς βύτης αὐτῶν ὡς φησι Διοκλῆς ἔλεγε,  
 ὡς πεντακοσί-σσι γράφει σίχ-σσι ἡμῶν σί-σσι. ἐν δὲ  
 τῇ δὲ φησιν ἔλθειν αὐτῶν ὑπὸ φιλοσοφίαν, τῆς ὅσιν  
 αὐτοὶ τῆς πατρώας εἰς τὸ βασιλικὸν ἀναληφθεῖ-  
 σης. ὡς δὲ καὶ τὸ σωματοποιεῖν τελέως. ὡς δὲ ἄλλοι ἐκ τοῦ  
 ἀνδραγαθίου τοῦ ἐν κορυφαίῳ. ὅς ἔστιν ὁ πρὸς  
 κίερος τῶν πρὸς πλησίον ἰππεῖ. ὅθεν αὐτῶν ὁ κίερος αὐ-  
 τῶν κρύπτωπον ἔλεγε. οὗτο ὅθεν διδοῖς τὸ πρὸς  
 νῦν ὅτι ἔστι παρὰ ἀρίστων μετὰ πολλῶν σχολαστῶν,  
 εἰς τῶν πολλῶν εἶπε προσέειχε, ὅτι αὐτὸν ἐφιλοσόφησα.  
 πρὸς δὲ τὸν ἡγετῆρα κίερος κίερος τῶν σχολαστῶν  
 κίερος καὶ προτείνοντα αὐτῶν σοφίσματα, πέπαυσεν  
 εἶπε παρὲν κίερος τὸν πρὸς βύτης ὅτι τῶν πραγμάτων  
 πικρῶν. ἡμῶν δὲ τῶν νέων ταῦτα προτίθει. πάλ-  
 λιν δὲ εἶπε τις ζητῶν ἡγετῆρα αὐτῶν διελίγει  
 εὐσαφῶς, εἶπε θεωρῶν προσιόντα ὅχλῳ ἢ ἑστῶτι  
 λουεῖν, ἔφη,  
 οἱ μοὶ ἡγετῆρες ὅμμα σὸν ταρασσεται.  
 ταχὺς δὲ μετέθετο λύσαν αὐτίως φρονῶν.  
 ἐν μὲν γὰρ τοῖς οὐνόσιν ἡσύχαζε παραφροσύνῃ  
 νῦν γὰρ σκέλδιν. ὡς τὸ εἶπερ τῶν δούλων, χρε-  
 σίωπου μόνον τὰ σκέλη μεθύει. οὕτω δὲ ὡς φρονήμα-  
 τίας, ὡς τὸ ἐρομένου πνὸς τῶν συστήσω τὸν υἱὸν εἶ-  
 περ ἡμοί. εἰ γὰρ ὑπελαμβανόντων εἶναι τινὰ ἡμοῦ  
 βελτίονα, παρὰ αὐτῶν ἂν ἐγὼ ἐφιλοσόφω. ὅθεν ἐπὶ  
 αὐτοῦ λεχθῆναι.

οἱ οὖν πίπνυται, ῥι δὲ σκιαὶ αἰώσουσι. καὶ,  
 εἰ μὴ γὰρ ὡς χεύσιππος ἐκ αὐτοῦ σωθῇ.  
 τελευτᾷ δὲ ἀρκυδιλαῶ καὶ λακύνῃ καὶ δά φησι σωτί-  
 ωμ ἐν τῷ ὀγδόῳ, παραγνομήνους ἐν ἀναδημίᾳ συ-  
 νεβλίσσονται. δι' ὧν αἰτίαν, καὶ κατὰ συνήθειαν, ὅ-  
 τῳ αὐτῆς οἶον ἐπεχείρησε, καὶ πόδι μεγάλῳ καὶ  
 πληθύνῃ τῇ τῶν ἀναδημαϊκῶν σάλσει χροσάμεν.  
 ὅθεν ἐν τῷ ὀγδοῷ σχολάζοντα φησὶν ἐρμύππος  
 ὡς θυσίαν ὑπὸ τῷ μαθητῇ κληθῆναι. ἔνθα προσε-  
 νεγνόμενον γλυκύρ' ἀκρατῆρ, καὶ ἰλιγγιάσαντα,  
 πεμπότατον ἀπελθεῖν, βιάσαντα ἔτι κατὰ τὴν τεί-  
 τῃ καὶ τετρακυστὴν ὀλυμπιαδα τεῖα καὶ ἑβδι-  
 μήκοντα, καὶ δά φησιν ἀρκυδιλαῶν ἐν χροσάμεν.  
 καὶ ἐς ἡμῶν εἰς αὐτόν.

ἰλιγγίασε βαλὼν ἐκπιῶν χανδρῶν  
 χεύσιππος, ὅς δ' ἐφείσατ' ὅς δὲ τῇ σωθῇ,  
 ὅς δ' ἦς πάτρης, ὅς τῇ τύχῃς, ἀλλ' ἦλθε δ' ὦμ'  
 ὅς αἰδέω.

ἐνίοι δὲ φασὶ γέλωτι συσχεθῆναι αὐτὸν τελευτῆ-  
 σαι. οὐνοῦ γὰρ τὰ σὺν αὐτῷ φαγόντες, εἰρήντα τῇ  
 γαίᾳ διδουῖναι ἀκρατῆρ ὑπὲρ ῥοφῆσαι τῷ ὄνῳ, ὑπὸ  
 καυχώσαντα τελευτῆσαι. δοκεῖ δὲ ὑποπόπτῃς  
 τῆς γέροντος. ῥοαῦτα γοῶν συγγραψας, ὅς δὲ τῇ  
 βασιλείῳ προσεφώνηκεν. ἤρκειρ τὲ γαῖδ' ἰὼ μό-  
 νῳ. καὶ δὲ καὶ Δημήτριος ἐν ὁμωνύμοις φησί. ὡρ-  
 λεμαίου τὲ πρὸς κλεαίνῳ ὑπὲρ ἰλάντες ἢ αὐτὸν  
 dd 2 ἰλθεῖν



ἔλθειν, ἢ πίμψαι πινά, σφαῖρεθ' μὲν ἀπὸ ἡλθε, χεῦ  
 σιπώθ' δὲ ποδὲϊδε. μεταπιεμψαμῶθ' δὲ αὖτ' ἦ  
 ἀδελφῆς υἱεῖς, ἀριστοκρίοντα καὶ φιλοκράτῳ συνε-  
 κρότησε. καὶ πρῶτ' ἰδάξῃσε σχολῶν ἔχειν ὑπὸ  
 θροῦν ἐν λυκείῳ. καὶ δὲ πόρ' ὁ προειρημῆν' Δημή-  
 τρι' ἰσορεῖ. γέγονε δὲ καὶ ἄλλ' ἑρῶσιππ' κνί-  
 δι' ἰατρός. παρ' ὅφ' ἡσιν αὐτ' ἱρασίερατ' πα-  
 μάλισα ὠφελῆσθαι. καὶ ἑτορ' υἱὸς τῶν ἰατρῶν  
 πρλεμαίου. ὅς σφ' ἀβληθεῖς ποδὲϊχθῃ, καὶ μασιγού-  
 μῶθ' ἐκτολῶσθαι. ἄλλ' μαθητὴς ἱρασίερατ' καὶ  
 τῆς γεωργικῆς γεγραφῶς. ὁ δὲ φιλόσοφ' καὶ τριού-  
 τῳ πινάσ' ἡρώτα λόγῳ. ὁ λέγων τῆς ἀμνήτης τῆς  
 μυσήρια ἀσεβῆ. ὁ ἰδοφαῖτης τῆς ἀμνήτης λέγει.  
 ἀσεβῆ ἄρ' ὁ ἰδοφαῖτης. ἄλλο. ὁ δὲ τῇ τῆς πόλεως  
 καὶ ἐν τῇ οἰκίᾳ. ἐν ἑσὶ δὲ φρίατ' ἐν τῇ πόλει. ὁ δὲ ἄρ' αὖ  
 ἐν τῇ οἰκίᾳ. ἄλλο. \* ἑσὶ δὲ γε τῆς κεφαλῆς. ἐν ἄρ' ἑ-  
 χεις κεφαλῶν. ἄλλο. εἰ πρὸς τῇ ἐν μεγάροις ἐν ἑσὶ  
 ἐν ἀθλῶν. ἀνθρώπῳ δὲ δὲ τῇ ἐν μεγάροις. ἐν ἄρ' αὖ  
 ἑσὶ ἀνθρώπῳ ἐν ἀθλῶν. καὶ πάλιν. εἰ πάλιν, εἰ  
 πάλιν τῇ τῆς σώματος σφ' διορῆται. ἀμαξαν δὲ λα-  
 λῆς. ἀμαξα ἄρ' αὖ τῇ τῆς σώματος σφ' διορῆται.  
 καὶ εἰ πάλιν ἀπὸ βάλου, ἑσὶ ἑσὶ ἑσὶ. κόρατα δὲ ἐν ἑ-  
 πίβαλου, κόρατα ἄρ' αὖ ἑσὶ. οἱ δὲ ἐν βουλίδ' ἑσὶ  
 φασίρ. εἰσὶ δὲ οἱ ἑσὶ τῇ τῆς χρυσίως ὡς  
 πρὸς αἰσχροῦ καὶ ἀρξήτης ἀναγεγραφῶτ'. ἐν μὲν  
 γὰρ τῇ ποδὲϊ τῇ ἀρχαίῳ φυσιολόγῳ συγγράμ-  
 ματι

ματι αἰοχρῶς τὰ πόδι τῷ ἦραν καὶ ῥῃ Δία ἀνα-  
 πλώττει, λέγων κατὰ σὺ θξακροσίτου σίχτου ἀμη-  
 δείς ἡτυχηκῶς μολυμῆν ῥ σόμα, εἴπρι αὐ. αἰοχροί-  
 τωτῳ γὰρ φασι ταύτῳ ἀναπλώττει ἰσορίαν, εἰ δὲ  
 ἐπαυεῖ ὡς φυσικῶν, χαμαυτίπαις μᾶλλον πρίπρι-  
 σαρ ἢ θεοῖς, ἐπὶ τὴν παρὰ ῥῃς πινοῦκωρ κατακε-  
 χωρισμῶν. μήτε γὰρ πρὸς ῥῃς μήτε παρὰ ῥῃς φικρά-  
 τει, ἀλλὰ μηδὲ παρὰ αὐτοῖς εἶναι. ὥς αὐτοὶ δὲ πε-  
 πλώσθαι. ἐν δὲ τῷ πόδι πρὸς ῥῃς, καὶ μητρῶσι λέ-  
 γει σωδὸρ χεῖρα, καὶ θυγατρῶσι, καὶ υἱοῖς. τὰ δὲ αὐ-  
 τὰ φησι καὶ ἐν τῷ πόδι τῷ μὴ δὲ ἰαυτὰ αἰρετῶν ἐν-  
 θὺς ἐν ἀρχῇ. ἐν δὲ τῷ γὰρ πόδι δικαίον, κατὰ σὺ  
 χιλίτου σίχτου, καὶ σὺ ἀκροδανόντας κατὰ σὺ κα-  
 λούσιν. ἐν δὲ τῷ Δουτόρῳ πόδι βίου καὶ πρὸς μού-  
 πρὸν οἰεῖν λέγων, ὅπως πρὸς ῥῃς σφῶ. καὶ ῥῃς τί-  
 νθῃ χεῖρ πρὸς ῥῃς αὐτῷ. εἰ μὲν γὰρ τὸ ζῆν ἐνεκῆν,  
 ἀδελφοφορὸν ῥ ζῆν. εἰ δὲ ἡδονῆς, καὶ αὐτῇ ἀδελφο-  
 ρῶ. εἰ δὲ ῥῃς ἀρετῇ, αὐτῇ αὐτῇ πρὸς ἐνδοιμο-  
 νίαν. κατὰ γέλασιν δὲ καὶ οἱ τρέπρι τὸ πρὸς μού. οἷον  
 ἀπὸ βασιλείας. εἴκειν γὰρ αὐτῷ δέήσει. καὶ οἱ ἀπὸ φι-  
 λίας. λήμματῶ γὰρ ὥνιθ ἡ φιλία ἔσται. καὶ οἱ ἀπὸ  
 σοφίας. μεθαρνήσει γὰρ ἡ σοφία. καὶ ταῦτα μὲν ἐγ-  
 ηγλείται. ἐπεὶ δὲ ἐνδοξότατα βιβλία ὄντι αὐτῷ ἐν  
 δοξέ μοι καὶ τῷ πρὸς εἰδῶ ἀναγραφῶν αὐτῷ ἐν συγγράμμα-  
 ταῦτα κατὰ χωρίαι. καὶ ἔστι τὰς δὲ. λογικῶν τόπος καὶ αὐτῶ  
 θέσεις. λογικῶν, καὶ τῷ τὸ φιλοσόφον κειμῶν τῷ.



ὄρων ὁλεκτικῶν πρὸς μητρόδωρον ε. πὸς τῶν  
 καὶ ὁλεκτικῶν ὀνομάτων πρὸς ζώνωα α. τέχνη  
 ὁλεκτική πρὸς ἀριστοφάνη α. (σημειώων πίδα  
 νῶν πρὸς διοσκουρίδην Δ. λογικῶν τόπος τοῦ πρὶ  
 τὰ πλάσματα συντάξις πρώτη. πρὶ ἀξιωματικῶν α.  
 πὸς τῶν ἔχοντων ἀξιωματικῶν α. πὸς τοῦ συμφε  
 πλεγμένου πρὸς ἀθλωπιδίου α. ὑ. πὸς ἀρχαίαν π  
 κῶν πρὸς ἀριστοφάνη γ. πρὶ τῶν κατὰ σοφόν πικῶν  
 πρὸς ἀθλωπιδίου α. πὸς τῶν καὶ σοφιστικῶν λεγομένων  
 ὑ. πὸς σωτελικῶν ἀξιωματικῶν ὑ. συντάξις  
 δευτέρα. πὸς ἀληθοῦς διεξοδικῶν πρὸς σοφιστικῶν  
 πιδίου Δ. ὁρίσεις πρὸς σοφιστικῶν α. πρὸς  
 ἢ πρὶ ἀκροατικῶν α. πὸς τοῦ ὁρίσιν πάλιν πρὸς  
 σοφιστικῶν α. πὸς δὲ πρὸς πρὸς κλείων Δ.  
 πρὸς ἢ πὸς σημασιῶν ὁρίων α. πὸς τοῦ τίνα  
 ὅτι τὰ φύσει α. συντάξις τρίτη. πρὶ προσαγμα  
 τῶν ὑ. πὸς ἐρωτήσεων β. πὸς πώσεως Δ. ὡς  
 μὴ περὶ ἐρωτήσεως ἢ πώσεως α. ὡς μὴ περὶ ἀρ  
 κείων α. ζητήσεως β. περὶ ἀρκείων Δ. συν  
 τάξις τετάρτη. πρὶ τῶν κατηγορηματικῶν πρὸς μη  
 τρώδωρον ι. πρὶ ὁρίων καὶ ἑστίων πρὸς ὁρίων  
 α. πρὶ τῶν συναμμοτικῶν πρὸς ἀκλωνίδην  
 α. πρὸς πάσων πρὶ κατηγορηματικῶν Δ. συν  
 τάξις πέμπτη. πρὶ τῶν πώσεων α. πρὶ τῶν καὶ  
 ἢ ἀποκρίσεων ὡς σημειώων ἐκφορῶν α. πρὶ παρεμ  
 φάσεως πρὸς σηλοφάνη β. πρὶ τῶν προσηγορικῶν  
 β. λθ

β. λογικῶν τόπων πρὶ τὰς λέξεις καὶ ἄν ηὐτ' αὐτῶν  
 λόγον συντάξις πρώτη. πρὶ τῶν ἑθνικῶν ἐκφορῶν ε.   
 πρὶ λέξεων πρὸς σωσιγνίῳ καὶ ἀλέξανδρον ε. πρὶ  
 στ' ἢ τὰς λέξεις ἀνωμαλίας πρὸς δίωνα δ. πρὶ  
 τῶν πρὸς τὰς φωνὰς σωρεῖ τῶν λόγων γ. πρὶ σολοι  
 κιστῶν λόγων πρὸς διονύσιον α. λόφοι παρὰ τὰς  
 ἱωνθείας α. λέξεις πρὸς διονύσιον α. συντάξις δευ  
 τέρη. πρὶ τ' σοιχείων τοῦ λόγου καὶ τ' λεγομένων ε.   
 πρὶ τ' ἱωτάξεως τ' λεγομένων δ. πρὶ τ' ἱωτάξεως  
 ε' σοιχείων τ' λεγομένων πρὸς φίλιππον γ. πρὶ τ'  
 σοιχείων τοῦ λόγου πρὸς νικίαν α. πρὶ τ' πρὸς ἑτοῖρα  
 λεγόμενα α. συντάξις τρίτη. πρὸς σὺ μὴ ὁραῖσθαι  
 νδς β. πρὶ ἀμφοβολιῶν πρὸς ἀρχιμῶν δ. πρὶ τ'  
 τρωτικῶν ἀμφοβολιῶν α. πρὶ ἱωνημένων τρωτικῶν  
 ἀμφοβολίας εἰσαγωγικῆς ε. ὑπὸ μὴ τ' πρὸς ὑπὸ κρᾶ  
 τιν ἀμφοβολιῶν α. ἱωνημένα πρὸς τιν εἰσαγωγικῶν  
 τ' εἰς τὰς ἀμφοβολίας β. λογικῶν τόπων. πρὸς σὺ λό  
 γος ἢ σὺ ἔρως ἱωτάξας. πρώτη τέχνη λόγων ἢ  
 τρώων πρὸς διοσκυρίδην ε. πρὶ τ' λόγων γ. πρὶ  
 τρώων συστάσεως πρὸς σισαγόραν β. σύγκρισις  
 τῶν τρωτικῶν ἀξιωματῶν α. πρὶ ἀντιστεφόντων λό  
 γων καὶ ἱωνημένων α. πρὸς ἀγαθωνα ἢ πρὶ τῶν  
 ἐξῆς περὶ βλημάτων α. περὶ τοῦ τὰ συλλογιστικῶν  
 πνθ' μεταλλάττει τὰ μεταλλάων α. πρὶ τῶν ὑπὸ  
 φορῶν πρὸς ἀριστοτέλην α. πρὶ τοῦ τὰ πλεονάζειν ἢ  
 ἢ λόγον ἢ πλείοσι τρόποις α. πρὸς τὰ ἀντιφθι  
 μνά



μνία τῶν αὐτῶν λόγων ἐν συλλογιστικῶ καὶ ἀσυν-  
 λογίστῳ τετάχθαι τρώω β. πρὸς τὰ ἀντειρημέ-  
 να τοῦς τῶν συλλογισμῶν ἀναλύσδω γ. πρὸς  
 ὃ ποῦ τρώωμ φίλων θ, πρὸς πμόστρα γμ α. λο-  
 γικὰ συνημιμνία πρὸς πμοκράτῳ καὶ φιλομαθῇ.  
 εἰς τὰ ποῦ λόγων, καὶ ποῦ τρώωμ α. συντάξις  
 δούτορά, πδρὶ τῶν πδραυνόντῶν λόγων πρὸς ζῴω-  
 να α. πδρὶ τῶν ἀναλύσεως τῶν συλλογισμῶν α.  
 πδρὶ τῶν πδρότῶν καὶ ἀναπιδείκτῶν συλλογισμῶν.  
 περὶ τῶν παρεληόντῶν λόγων πρὸς πάσυλον β.  
 πδρὶ τῶν εἰς τοῦ σολοικισμοῦ θεωρημάτων α. πε-  
 ρὶ συλλογισμῶν εἰσαγωγικῶν πρὸς ζῴωνα α.  
 τῶν πρὸς εἰσαγωγῶν τρώωμ πρὸς ζῴωνα γ.  
 πδρὶ τῶν κατὰ φύδῳ σχήματα συλλογισμῶν ε.  
 λόγοι συλλογιστικοὶ κατὰ ἀνάλυσιν ἐν τῇ ἀναπο-  
 δείκτις α. τροπικὰ ζητήματα πρὸς ζῴωνα καὶ  
 φιλομαθῇ α. ἔδω δοκεῖ φύδεπίγραφον. συντά-  
 ξις τρίτη, πδρὶ τῶν μεταπιπτόντῶν λόγων πρὸς  
 ἀθλῶαδῳ α. φύδεπίγραφον λόγοι μεταπί-  
 πτυντο πρὸς τῶν μδτότητα γ. φύδεπίγραφα  
 πρὸς τοῦ ἀμείντο δλαζδουκτικούς α. συντάξις  
 τετάρτη, πδρὶ ὑποθέσεων πρὸς μελέαχρον γ. λό-  
 γοι ὑποθετικοὶ εἰς τοῦ νόμο τοῦ πρὸς μελέαχρον πά-  
 λιν α. λόγοι ὑποθετικοὶ πρὸς εἰσαγωγῶν β. λό-  
 γοι ὑποθετικοὶ θεωρημάτων β. λύσις τῶν ἡδύλλα  
 ὑποθετικῶν β. λύσις τῶν ἀλδζανόδου ὑποθεπι-  
 κῶν,

κῶν γ. φουδεπίγραφα πόρι ἐκθέσεων πρὸς λαοί  
 δάμαντα α. σώταξις πέμπτῃ. πόρι τῆς εἰς τὴν  
 φουδόμενον εἰσαγωγῆς πρὸς ἀεισουργίοντα. λόγοι  
 φουδόμενοι πρὸς εἰσαγωγῇ α. πόρι τοῖς φουδ  
 μένου πρὸς ἀεισουργίοντα δ. σώταξις ἑκτῇ. πρὸς  
 τοῦ νομίζοντα καὶ φουδῇ καὶ ἀληθῇ εἶν' α. πρὸς  
 τοῦ δὲ γμῆς δαλύνοντας τὴν φουδόμενον λόγον  
 πρὸς ἀεισουργίοντα β. ἀπείδεις πρὸς τὴν μὴ δειν  
 τέμνειν τὰ ἀόριστα α. πρὸς τὰ ἀντειρημένα τῆς  
 καὶ τῆς γμῆς τῶν ἀορίστων πρὸς πάσυχον γ. λύ  
 σις καὶ τοῦ ἀρχαίου πρὸς διοσκουρίδω α. πε  
 ρὶ τῆς τοῖς φουδόμενον λύσεως πρὸς ἀεισουργίοντα  
 γ. λύσις τῶν ἐδύλλων ὑποθετικῶν πρὸς ἀεισουργί  
 οντα καὶ ἀρχαίων. σώταξις ἑβδόμῃ. πρὸς τοῦ φα  
 σκοντα τὰ λέμματα ἔχειν φουδῇ τὴν φουδόμε  
 νον λόγον α. πόρι ἀφασκοντὸ πρὸς τὴν ἀεισο  
 κρίοντα β. λόγοι ἀφασκοντὸ πρὸς γυμνασί  
 αιν α. πόρι τοῖς παρὰ μικρὸν λόγῳ πρὸς σισαγό  
 ραν β. πόρι τοῖς ἐκκεκαυμένον πρὸς ἀεισάβουλον  
 β. πόρι τοῦ δαλεληθότῳ πρὸς ἀθλωαδῶν α.  
σώταξις ὀγδόῃ. πόρι τοῖς ἔτιδῳ πρὸς μινεκρατίω  
 η. πόρι τῶν δὲ ἀορίστων καὶ ὤρισμένων λόγων πρὸς  
 πάσυχον β. πόρι ἔτιδῳ λόγου πρὸς ὑπὲρ  
 τῶν α. σώταξις ὄγδοῃ. πόρι τῶν σοφισμῶν τῶν  
 πρὸς ἡρακλείδω καὶ πύλλω β. πόρι τῶν ἀπέρων  
 δαλεκτικῶν λόγων πρὸς διοσκουρίδω ε. πρὸς  
 εε ὁ ἀρ



ἢ ἀρκεσιλάτῃ μεθόδιον πρὸς σφαῖρον ᾱ. συντά-  
 ξις δεκάτη. κζλ ϥλ σωηθείας πρὸς μητρόδωρον ε̄.  
 ποδὶ τῆς σωηθείας πρὸς γοργιππίδῳ ς. λογι-  
 κοῦ τόπος τὰ τῶν προειρημένων τετάρτων διαφορῶν  
 ἐκτὸς ὄντα, καὶ ποδεῖχοντα ποροδίδῳ καὶ ὁ σωμα-  
 τικὰς ζητήσεις λογικὰς, ποδὶ τῶν ἡγεταλεγομένων  
 ζητημάτων λθ. ὁμοῦ τὰ πάντα τοῖς λογικοῦ τι ᾱ.  
 συντάξις πρώτη. ὑπογραφή τοῦ λόγου τοῦ πρὸς θεότο-  
 ρον ᾱ. θέσεις ἡδικοὶ ᾱ. πιδανὰ λήμματα εἰς τὰ  
 δόγματα πρὸς φιλομαθῆ γ. ὅρων τῶν τοῦ ἀσείου  
 πρὸς μητρόδωρον β. ὅρων τῶν τοῦ φαύλου πρὸς  
 μητρόδωρον β. ὅρων τῶν ἀναμέσων πρὸς μητρό-  
 δωρον β. συντάξις δευτέρα. ποδὶ τῶν ὁμοίων  
 πρὸς ἀεισουλία γ. ποδὶ τῶν ὅρων πρὸς μητρόδω-  
 ρον ς. συντάξις τρίτη. ποδὶ τῶν ἐκ δεξιῶς τοῖς ὁ-  
 ροῖς ἀντιλεγομένων πρὸς λαοδιδμαντα ς. πιδαν-  
 νὰ εἰς τοῦ ὅρου πρὸς διοσκουρίδῳ β. ποδὶ ἐν-  
 δῶν καὶ γυνῶν πρὸς γοργιππίδῳ β. ποδὶ τῶν δι-  
 αίρεσεων ᾱ. ποδὶ τῶν γιναντίων πρὸς διονύσιον β.  
 πιδανὰ πρὸς τὰς διαίρεσεις καὶ τὰ γένη καὶ τὰ εἶδη.  
 ποδὶ γιναντίων ᾱ. συντάξις τετάρτη. ποδὶ τῶν ἐτυ-  
 μολογικῶν πρὸς διοκλία ς. ἐτυμολογικῶν πρὸς  
 διοκλία Δ. συντάξις πέμπτη. ποδὶ παροιμιῶν  
 πρὸς ξινοδότῳ β. ποδὶ πρηνμάτων πρὸς φιλομα-  
 θῆ ᾱ. ποδὶ τοῦ πᾶν δὲ τῶν πρηνμάτων ἀκούειν β.  
 πρὸς τοῦ κελύκους πρὸς διοδωρον ᾱ. ἡδικοῦ τόπος  
 ποδὶ

πορί τῶν κρινῶν λόγων, καὶ τὰς ἐκ τούτων σωσισαμέ-  
 νας τέχνας καὶ ἀρετάς. σωταξίς πρώτη. πρὸς τὰς  
 ἀναζωγραφήσεις πρὸς τιμῶνακτα ᾱ. πρὶ τοῦ πῶς  
 ἔχασα λίσσον καὶ δακνύμεθα ᾱ. πορί τῶν ἡναι-  
 ῶν πρὸς λαοδωμαντα β̄. πορί ὑπολήψεως πρὸς  
 πιθόναντα γ̄. ἀποδείξεις πρὸς ὃ μὴ δεξιόσειν ἔρ-  
 σοφον ᾱ. πορί ηὐταλήψεως καὶ ὑψηλότητος καὶ ἀ-  
 νοίας Δ. πορί λόγου β̄. πορί τῇ χρησεως τοῦ λό-  
 γου πρὸς λεπίσαν. σωταξίς δευτέρα. πορί τοῦ ἐγ-  
 κρίνειν οὗ ἀρχαίον τὴν δακνύμεν (ὡς τοῦ ἀ-  
 ποδείξει πρὸς ξυῶνα β̄. πορί τῆς δακνύμενης  
 πρὸς ἀεισοκρίοντα Δ. πορί τῶν ἀντιδακνύμε-  
 νων ὡς δακνύμεν γ̄. πορί τῆς ἡναιότητος πρὸς  
 διοσκουρίδην Δ. σωταξίς τρίτη. πρὶ ἑξέως πρὸς  
 κλίωνα γ̄. πορί τέχνης καὶ ἀτεχνίας πρὸς ἀει-  
 σοκρίοντα Δ. πορί τῇ διαφορᾷ τῶν ἀρετῶν πρὸς  
 διοσκουρίον Δ. πορί τοῦ πρὸς εἶναι τὰς ἀρετάς ᾱ.  
 πορί ἀρετῶν πρὸς πόλιν β̄. ὑδινού τοῦ πορί  
 ἀγαθοῦ καὶ κακῶν σωταξίς πρώτη. πορί τοῦ καλοῦ  
 καὶ τῆς ἡδονῆς πρὸς ἀεισοκρίοντα ῑ. ἀπόδειξις  
 πρὸς ὃ μὴ εἶναι τὴν ἡδονὴν τέλει Δ. ἀπόδειξις  
 πρὸς ὃ μὴ εἶναι τὴν ἡδονὴν ἀγαθόν Δ. πορί τῶν  
 λεγομένων.





ΣΟ ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ ΛΑΕΡ-  
ΤΙΟΥ ΒΙΩΝ ΚΑΙ ΓΝΩΜΩΝ ΤΩΝ ΕΝ  
ΦΙΛΟΣΟΦΙΑ ΕΥΔΟΚΙΜΗΣΑΝ-  
ΤΩΝ ΤΩΝ ΕΙΣ ΔΕΚΑ  
ΤΟ ΟΓΔΟΟΝ

ΠΥΘΑΓΟΡΑΣ



Πεί δὲ πῶς ἰωνικῶς φιλοσοφίαν πῶς  
ἀπὸ θαλάσσης καὶ τοῦ ἐν ταύτῃ στρατηγῶν  
μὲν τοὺς ἀνδρας ἀξιολόγῃσι διελκν  
λύδαμιν, φόρε καὶ πόδα τῆς ἰταλιν  
κῆς στραταβωμιν. ἥς ἥρξε πυθαγόρ  
ρας μνησάμενον Δακτυλιογλύφου ὡς φησιν ἑρμιπ  
πῶ, ἡ ὡς ἀεισόξενος, ἀπὸ μᾶς τῶν νήσων, ἃς καὶ  
τέτονον ἀθλιωταῖοι τυρξέμενοι ἐμβαλόντες. γῆιοι δὲ,  
υἱὸν μὲν εἶναι μαρμαῖνον τοῦ ἰσπαλίου, τοῦ ἐυθύφρου  
πῶ, τοῦ κλεωνύμου φυγάδιος ἐκ φλιουῦτος. οἰκῆν  
δὲ ἐν σάμῳ τῶν μαρμαῖνων. ὅθεν σάμοι τῶν πυθαγόρ  
ραν λέγεσθαι. σὺς μὲν δὲ εἰς λίσβοι ἐλθόντα φόρε  
κύδῃ ἐπὶ ζωίλου τοῦ θείου. καὶ τρία πετρεῖα καὶ  
σκιδνασάμενος ἀργυρᾶ, Δῶρον ἀπλῆεγκην ἐμάσω  
τῶν ἰδρίων εἰς αἰγῶν. ἔσχε δὲ ἀδελφῶν πρὸς  
βύτορον μὲν, ἑωμορον. μέσση δὲ, τυρξέμενος. καὶ πρὸς

λον ραμολξιν, ὡς γέται θύουσι, κρόνον νομίζοντες, ὡς  
 φησιν Ἡρόδοτος. **ἔ**στι **θ** ἤκουσε μὲν καὶ πρὸς ἑρμῆ  
 τὸν φερένδον τὸ σκεῖνον. μετὰ δὲ τῷ ἐκείνου τῷ  
 λῶν τῷ, ἦκον εἰς σάμον. καὶ ἤκουσεν ἐρμῆος ἀμάν  
 τος τὸ ἀργόνοον κρεοφίλου, ἡδὲ πεδυντόρου. **ν**ί **θ**  
 δὲ ὦρ καὶ φιλομαθὲς, ἀπεδήμησε τῆς πατρίδος.  
 καὶ πάσας ἐμνήθη τὰς τε ἰλλυρικὰς καὶ βαρβαρῶν  
 καὶ τελευτὰς. ἐγὼ δὲ οὐκ ἔγνων, ὅπῃ ἴκῃ καὶ  
 πρηνεῶς αὐτὸν ἀμολασιδὶ σωῖσκει Διὶ ὡπῶν  
 λῶν. καὶ θέμαθε τῷ φωνῶν αὐτῷ καὶ φησι ἀντὶ  
 φῶν **ἔ**ν **θ**ρὸς πόδι τῷ **ἔ**ν ἀρετῇ πρῶτον σάντῃ. **ἔ**ν καὶ  
 παρὰ χελδαίοις ἐγὼ καὶ μάγοις. **ἔ**ν κρήτη (ὡν  
 ὡπῶν δὲ καὶ τῇλθον εἰς τὸ ἰδῶν ἀντὶ. ἀλλὰ καὶ  
**ἔ**ν ἀγύπτῳ εἰς τὰ ἄδυτα. καὶ τὰ πόδι θεῶν **ἔ**ν ἀρετῇ  
 δῆρις ἐμαθον. **ἔ**στιτα ἐπανήλθον εἰς σάμον, καὶ ἐν ὧν  
 τῷ πατρίδα τυραννομένην ὑπὸ πρηνεῶντος,  
 ἀπῆγον εἰς κρώπωνα τῆς ἰταλίας. καὶ κῆι νόμος θεῶν  
 ρῖς ἰταλιώταις, ἐδιδάσθη (ὡν ρῖς μαθηταῖς. οἱ περ  
 εἰς τὸν τριακσίον ὄντες, ὡς κρόνον ἄρῃα τὰ πρὶ  
 λιπνὰ, ὡς τε σχεδὸν ἀρῃσιν κρῆσαν εἶναι τῷ πρὶ  
 τείαν. **ἔ**στι φησὶν Ἡρακλείδης ὁ πρηνεὶς πόδι αὐτῷ  
 τὸ τὰ δὲ λέγειν, ὡς εἶναι πρὶ γεγονὸς ἀθαλίδης,  
 καὶ ἑρμού υἱὸς νομοθεῖν. γὰρ δὲ ἑρμῶ ἐπείν αὐτῷ  
 ἐλδύσεσθαι ὅπῃ ἀν βούληται, πλὴν ἀθανασίας. αὐτῇ  
 σαδαι ὅν ῥῶντα καὶ τελευτῶντα μνήμῃ ἔχειν  
 τῷ συμβαινόντῃ. **ἔ**ν μὲν οὐκ τῇ ζωῇ, πάντῃ δὲ



μνημονεύει. ἔπει δὲ ἀκράδανοι, τηρεῖν τὴν αὐτὴν  
 μνήμην. χρόνῳ δὲ ὕσθρον, εἰς ἑυφορβὸν ἔλθειν, καὶ  
 ὑπὸ μνήμῃ τρωβιῶναι. ὁ δὲ ἑυφορβῶ ἔλεγον, ὡς αἰ-  
 θαλίδης πρὶ γένουσι. καὶ ὅτι παρ' ἐρμῶ τὸ δῶρον λα-  
 βοί, καὶ τὴν τῆς ψυχῆς πόδιν πλῆσιν ὡς πόδιε πλῆ-  
 θη, καὶ εἰς ὅσα φυτὰ καὶ ζῶα πόδιε γήϊον, καὶ ὅσα ἢ  
 ψυχὴ ἐν τῷ ἄδῃ ἔπαθε. καὶ αἱ λοιπαὶ, τίνα ὑπομεί-  
 νουσιν. ἔπει δὲ ἑυφορβῶ ἀκράδανοι, μεταβιῶναι τὴν  
 ψυχὴν αὐτὴν εἰς ἐρμότιμον. ὅς καὶ αὐτὸς πίσιον δοῦ-  
 ναι θέλων, ἐπανήλθεν εἰς βραγχίδας. καὶ εἰσελθὼν  
 εἰς τὸ ἀπὸ λωνῶ ἰδρὸν, ἐπίδειξεν τὴν μνήμην  
 ἀνέθηνεν ἀσπίδα. ἔφη γὰρ αὐτὸν ὅτ' ἀπὸ πλοῦσεν ἐκ-  
 τρεῖας, ἀναθῆναι τῷ ἀπὸ λωνι τὴν ἀσπίδα, δεῖξει  
 σπηυῖαν ἦδη. μόνον δὲ δεῖξαι, τὸ ἐλεφαντίνον, πρό-  
 σωπον. ἔπει δὲ ἐρμότιμῶ ἀπείδανε, γνέσθαι πύρ-  
 ρον τὸν δῆλιον ἀλίαν. Ἐπὶ πάντα πάλιν μνημονεύει,  
 ὡς πρόδεν αἰθαλίδης, εἶτα πύρρῶ γήϊον. ἔπει  
 δὲ πύρρῶ ἀπείδανε, γνέσθαι πυθαγόραν, καὶ πάν-  
 τῃ τῇ εἰρημνίῳ μεμνῆσθαι. γνῶσι μὲν οὖν πυθαγό-  
 ραν, μὴ δὲ ἐν κατὰ λιπὲρ σύγγραμμα φασὶ δεῖσαι  
 ζουτὸς. ἡρώκλειτῶ σοῦν ὁ φυσικὸς μονονουχὶ κέ-  
 κραγε καὶ φησί. πυθαγόρης μνησάρεχθ' ἰσορίων ἦσκη-  
 σεν ἀνθρώπων μάλιστ' πάντῃ. καὶ ἐκλεξαμένῳ  
 ταῦτας τὰς συγγραφάς, ἐπρήσατο ἑαυτοῦ σοφίῳ, πε-  
 λυμαδίῳ, κακοτεχνίῳ. οὕτω δὲ ἔπην, ἔπει δὲ πόρ-  
 ρον ἀρχόμενῳ ὁ πυθαγόρας τὸ φυσικὸν σύγγραμμα  
 τῷ

τῷ λέγει ὥδε. οὐ μὰ τὸν ἄδρα τὸν ἀναπνέω, οὐ μὰ  
 τὸν ὕδωρ τὸν πίνω, ἔκκαρῖσω φόρον πορὶ τοῦ λόγου τοῦ  
 δε. γέγραπται δὲ ἱερὰ πνυδαφόρα συγγραμματα γ.  
 παιδιστικόν, πρλιπτικόν, φυσικόν. τὸ δὲ φερρόμνον ὡς  
 πνυδαγόρου, λύσιδῳ ἔστι τοῦ ταραινίνου πνυδαγοί  
 ρικου φυγόντῳ εἰς θήβας, καὶ ἐπαμυνώνδῳ καὶ  
 θηγησαμένῳ. φησὶ δὲ Ἡρακλείδης ὁ τοῦ σαραπίων  
 υἱῷ ἐν τῇ σωτίωνῳ ὑπὲρ μῆ, γέγραφενα αὐτόν,  
 καὶ περὶ ὅλου ἐν ἔπαι. δδύττορον τὸν ἰδρόν λόγον.  
 οὗ ἡ ἀρχή,  
 ὦ νῆοι, ἀλλὰ σέβετε μεθ' ἡσυχίας ταῦτα πάντα.  
 τείρε, πορὶ ψυχῶν. τέταρε, πορὶ ἐυσεβείας. πέ  
 μωρε, ἡσθαλῇ τὸν ὑπὲρ χάριτος τοῦ κῶς πατόρα. ἐκ  
 τὸν κρότωνα, καὶ ἄλλου. τὸν δὲ μυσηκόν λόγον, ἱππά  
 σου φασὶν εἶναι, γέγραμμένον ὑπὸ δισβολῇ πνυδαφό  
 ρου. πολλοὺς δὲ καὶ ὑπὸ ἄσων τοῦ κροτωνιάτου γρα  
 φήτας, ἀνατεθεῖναι πνυδαφόρα. φησὶ δὲ καὶ ἀριστόξεν  
 υἱῷ τὰ πλείστα τῶν ἡδικῶν δογματῶν λαβεῖν τὸν  
 πνυδαγόραν, παρὰ θεμισουλείας τῆς ἀδελφῆς. ἴωρ  
 Διὸς χιῶν ἐν τοῖς τελαγίνοις φησὶν αὐτόν ἐνια  
 πρὶς σάουτα, ἀνενεγκεῖν εἰς ὀρφία. αὐτοῦ λέγουσι,  
 καὶ εἶς κοπιᾷδῳ. οὐ ἡ ἀρχή, μὴ ἀναΐδου μηδε  
 νί. σωκρατῆς δὲ ἐν δισδοχαῖς, φησὶν αὐτὸν ἐρωτη  
 θήντα ὑπὸ λείοντῳ τοῦ φλιασίωρ τυραννοῦ τίς  
 εἶναι, φιλόσοφῳ εἰπεῖν. καὶ τὸν βίον ἱοικῆναι πα  
 νηγύρε. ὡς ὅτε εἰς ταύτην, οἱ μὲν, ἀγωνιούμενοι,  
 οἱ δὲ



οἱ δὲ, κατ' ἐμπειρίαν. οἱ δὲ γὰρ βέλτεροι ἔρχονται θεαί-  
 ται. οὕτως γὰρ ἔφη βίω. οἱ μὲν ἀνδραποδῶδεις ἔφη φύν-  
 ονται, δόξης καὶ πλεονεξίας θηραταί. οἱ δὲ φιλόσο-  
 φοι τῇ ἀληθείας. καὶ τὰ δὲ μὲν, ὥδε. γὰρ δὲ τις τεισὶ  
 γράμμασι τις προειρημένους φόρεται πυθαγόρου  
 τὰ δὲ καθολικῶς. οὐκ ἐλέγχεσθαι ὑπὸ αὐτῶν ὅλα ὅ-  
 μὴ εἰδέναι ὅτι συμφόρον. τίς μὲν γὰρ ἀνθεὶ νοός,  
 βλαβὴ καὶ λεί. καὶ πλησμονὴν πᾶσαν ἀφροδισιμῶν  
 ζει, λέγων μὴ παραβαίνειν, μήτε τῶν πόνων, μήτε  
 τῶν σιτίων μὴδ' ἄλλὰ τίς συμμετερίαν. καὶ πόδι ἀφρο-  
 δισίων δὲ φησὶ οὕτως. ἀφροδίσια χειμῶν ὅτι πρίν  
 ὄντα μὴ θόρε. φθινοπύρου δὲ καὶ ἡρῶ, κρυφότορα.  
 βαρύνει δὲ πᾶσαν ὥρην καὶ οὐκ ὑγείῳ εἶναι. ἀλλὰ καὶ  
 πρὶν ἐρωτηθεῖς, πρὶν δὲ πηλοῖα ζεῖν, ὅτε βούλει γὰρ  
 νύκτα σαυτοῦ ἀδελφίσκου ἔπειν. ὅστις εἴρεται δὲ καὶ  
 ὅτι τὸ ἀνθρώπου βίον, οὕτως. πᾶς εἴησι ἔτεα. νεωὶ  
 σκῶ, εἴησι. νεωὶς εἴησι. γόρων ἡ. αἱ δὲ ἡλι-  
 κίαι πρὸς τὰς ὥρας ὥδε σύμμετροι. πᾶς ἔαρ. νεωὶ  
 σκῶ, θόρε. νεωὶς, φθινόπωρον. γόρων, χειμῶν.  
 ἔσι δὲ αὐτῶν, ὁ μὲν νεωὶς σκῶ, μαιράκιον. ὁ δὲ νεωὶς,  
 ἀνῆρ. εἴπε τίς πρῶτ' ὥς φησι τίμαι ὅτι κρινὰ τὰ φί-  
 λων εἶναι. καὶ φιλίαν, ἰσότητα. καὶ αὐτὸ οἱ μαθηταὶ  
 ἡγάγετον τὰς ἐστίας εἰς ἑνὶ πριούμνῳ. πρὶν ταῖς  
 τὴν ἡσυχάζον. μόνον ὅτι λόγον ἡγαγεῖν οὐκ ἔ-  
 δέω πυθαγόραν ὁρῶντας, εἰς ὃ δοκιμασθεῖν. τού-  
 τε ὅτι δὲ ἐγίνοντο πῶς οἰκίας αὐτοῦ, καὶ τῇ ὁφείως με-  
 τείχε

τῆι χερ. ἀπείχοντ δὲ καὶ στροῦ κυπαρισίνης, ὅθεν ὁ  
 τοῦ διὸς σκῆπτρον ἐν τεύθει πεπεριείσθαι. ὡς φησὶν ἔρ  
 μπιπθ. ἐν δούτορῳ ποδὶ πυθαγόρου. καὶ γὰρ, καὶ σε  
 μυοπεπέσαιτ λέγεται γνέσθαι. καὶ αὐτοὶ οἱ μαθη  
 ται, δόξαν ἔχον ποδὶ αὐτοῦ, ὡς εἶν ἀπὸ λωρ δὲ ἑσπέρ  
 βορέων ἀριγμνίθ. λέγεται δὲ αὐτοὶ πρὶ παρα/  
 γυμνωθέντ ὅν μὲν ὀφθλῦναι χερσὶν. καὶ ὅτι  
 νίαςθ ὁ πρταμὸς δὲ βαίνοντα αὐτὸν πρσαφορεῦ/  
 ραι, πλὺς λῦ ὁ φασικωρ. τίμαίος τε φησὶν ἐν δεκα/  
 τῇ ἰσορῶν λέγειν αὐτὸν τὰς συνοικιούσας ἀνδράσι,  
 θεῶν ἔχειν ὀνόματα, κῆρας, νύμφας, ἔτα μητόρας  
 καὶ συγγάσ. ἔδωκεν καὶ γωμετείαν αὐτὸν πόδας ἀγα  
 γείν, μοιειδθ. πρῶτον ἐνρόντ τὰς ἀρχὰς τῶν  
 σοιχείων αὐτῆς, ὡς φησὶν ἀντικλείδης ἐν δούτορῳ  
 ποδὶ ἀλδζαίνδρου. μαλιστα δὲ σχολαίραι ὅν πυθαγό  
 ραν ποδὶ ὁ ἀριθμητικὸν εἶδθ. αὐτῷ. τὸν τε καυόνα  
 ὅν ἐκ μᾶς χερδὺς ἐνρεῖν. ἐκ ἡμίλησε δὲ ἐδὲ ἰατεῖ  
 κῆς. φησὶ δὲ ἀρελλόδωρθ ὁ λογιστικὸς ἐκ αὐτόμβλι  
 βύραι αὐτὸν ἐνρόντα ὅτι τοῦ ὀρθογωνίου τριγώνου ἢ ὑπὲρ  
 τείνδσα πλὺς ῥά, ἴσον δύνάται ταῖς ποδὶ χύραις.  
 καὶ ἴσιν ἐπίγραμμα, οὕτως ἔχον.

ἦνυκε πυθαγόρης ὁ ποδὶ κλείς ἐνρεῖν γραμμα,

κῆν ἐφ' ὅτω κλεινὸν ἦγαγε βεθυσίλιν.

λέγεται δὲ καὶ πρῶτθ κρίασις ἀσκήραι ἀθλητὰς  
 καὶ πρῶτον γε ἐνρεμνίλιν, καὶ δὲ φησι φαβωρίνθ ἐν  
 τρίτῳ τῶν ἀρμνημονοματῶν. τοῦ πρὸτόρου ἰσχυρ

ff

σι ξη



σι ξηραῖς, καὶ τυροῖς ὕγραῖς, ἀλλὰ καὶ πυροῖς σωμα-  
 σκεῖν αὐτοῖς, καὶ δὲ πόρ ὁ αὐτὸς φαβωρεῖν. ἢ οὐ  
 δόη πανρ διαπῆς ἰσορίας φησί. οἱ δὲ πυθαγόραν ἀ-  
 λειπτῶν πινά, ἔδωκεν σιτίσαι ἢ τρόπον, μὴ ἔδωκεν.  
 καὶ ἢ φουδύειν ἀπαγορεύειν, μὴ ὅτι γε ἀποτεοδα  
 τῶν ζώων, κρινὸν δίκαιον ἡμῖν ἐχόντων ψυχῆς. καὶ  
 τόδε μὲν ἡν ἢ πρόσχημα, τόδε ἀληθές, τῶν ἐμψύχων  
 ἀπηγόρευον ἀποτεοδα, σωμασκήων καὶ σωμαδίμων  
 εἰς ἐκβολίαν βίου τοῦ ἀνθρώπου. ὥς τε ἐντροῖς τοῦ  
 αὐτοῖς εἶναι τὰς τροφὰς, ἀπυρα προσφθωμενίοις,  
 καὶ λιγρὸν ὕδωρ πίνουσι. ἢ τε ὕβρις γὰρ καὶ σώματος  
 ὑγίειαν, καὶ ψυχῆς ὀξύτητα ποδὶ γνήσεοδα. ἀμέλει  
 καὶ βωμόν προσκυῖναι μόνον ἢ δὴ λωτὸ ἀπὸ λω-  
 τῶν τῶν γνήρεθ, ὅς ὅστις ὁπιοδὲν τοῦ κοδρατίνου, ὅστις  
 ἢ πυρετοῦ, καὶ κραιβάς, καὶ τὰ κῆπανα μόνον τίθεοδα  
 ἐπ' αὐτὸν αὐτοῦ πυρετοῦ, ἱερεῖον δὲ μηδὲν ὥς φησι ἀριστο-  
 τέλης, ἢ δὴ λωτὸν κελιτεία. πεῶν τὲ φασι ἔδωκεν ἀ-  
 τρεφῆναι τῶν ψυχῶν, κύκλον ἀναλγῆς ἀμείβεσθαι,  
 ἄλλο τε ἄλλοις ἢ δὲ εἶοδα ζώοις. καὶ πεῶν εἰς τοῦ  
 ἐμψύχου μέτρα καὶ σαθμὰ εἰσηγήσεοδα, καὶ δὲ φη-  
 σιν ἀριστόξενος ὁ μουσικὸς. πεῶν τὲ ἑσπεροφωσι  
 φόρον ἢ αὐτὸν εἰπεῖν, ὥς φησι παρμενίδης. οὕτω  
 δὲ ἐδαυματοδὲ, ὥς τε ἔλεγον τοῦ γνωρίμου αὐτοῦ  
 παντρίας θεοῦ φωνῶς. ἀλλὰ καὶ αὐτὸς ἢ τῇ γραφῇ  
 φησι ἑωτὰ καὶ διακροσίω ἐτέρω δὲ αἰδέω παραι-  
 γνήσεοδα ὅς ἀνθρώπου. γὰρ γὰρ καὶ προσεκηρετέ-  
 ρου

ρουο αὐτοῦ, καὶ τῶν λόγων ἐνεκα προσήδσαν, καὶ  
 λουηανοὶ καὶ πονηέτιοι, μισαλπιοὶ τε καὶ ξωμαῖοι.  
 μέχει δὲ φιλολαου, οὐκ ἔω τί γινῶναι πυθαγόρειον  
 λόγμα. οὐτῷ δὲ μόνῳ ἐξέλεγε τὰ δεικνύοντα,  
 διανοήματα τρία βιβλία, ἀπλωτῶν ἐπίσειλγν ἐν  
 κατὰ μιν ἰωνηλῶν. τῶν τε διακροσίων οὐκ ἐλάτ,  
 τῶν ὡδὶ τῶν νυκτερινῶν ἀκρόασιν ἀπλωτῶν αὐτῶν  
 τοῦ. καὶ εἰ τινος ἀξιοθεῖν αὐτὸν θεοσάδαι, ἔχον  
 φορ πρὸς τοὺς οἰκείους, ὡς μεγάλου τινος τετυ  
 χηκός. μεταποντῖνοι γὰρ μὲν τῶν οἰκείων αὐ  
 τοῦ, δῆμης δὲ ἰδὸν ἐχέλου. ἔρ σγνωπὸρ δὲ μου  
 σείον, ὡς φησι φαβωρῖν ὃν παντοδιαπᾶς ἰσορί  
 ας. ἔλεγόν τε καὶ οἱ ἄλλοι πυθαγόριοι, μὴ εἶναι  
 πρὸς πάντας πάντα ζητᾶν, ὡς φησιν ἀεισόξει  
 νῷ ὃν δεκάτη παιδούτικῶν νόμων. ἐνθα καὶ ξυνο  
 φιλον ἔρ πυθαγορικὸν ἐρωτηθέντα πῶς αὐτὸν μάλλι  
 σα τὸν υἱὸν παιδούσειν, εἶπεν. πόλεως ἰωομου  
 μένης, γυνηθεῖν. ἄλλοι τε καὶ τῶν ἰταλίων ἀπόρ  
 γασαδα καλούς τε καὶ ἀγαθὸν ἀνδρας. ἀτὰρ,  
 καὶ ραλδουκὸν καὶ χαρόνδιαν τοὺς νομοθέτας. ἰκα  
 νός τε γὰρ ἔω φιλίας ἐργατης τὰ τε ἄλλα, καὶ εἰ  
 πνα πείθοι τῶν συμβόλων αὐτῶν κενονωνηκός,  
 ἐνθὺς τε προσητρίξο, καὶ φίλον κατὰ δούαι  
 ρην. ἔω δὲ αὐτοῦ τὰ σύμβολα, τὰ δὲ. πῦρ καὶ σύμβολα  
 χαίρα μὴ σκαλόμεν. ζυγὸν μὴ ἀπορβαίνειν. ἐν αὐτῶ  
 πεί χρίνικῳ μὴ καδίζειν. καρδίαν μὴ ὀσδίζειν. φορ  
 11 2 1100



τίον συγκαταίρει, καὶ μὴ σωεπιτηθῆναι. τὰ σρώ-  
 ματα αἰσιωδεδέμνια ἔχει. χύτρας ἔχει. συ-  
 χεῖρ ἐν τῇ τέφρᾳ. ἐλαδίῳ εἰς δάκρον μὴ ὁμόργυ-  
 οῦται. πρὸς ἥλιον τετραμμένον, μὴ ὁμῶς. ἐκ τῶς  
 λεοφόρου μὴ βαδίζει. μὴ ῥαδίως δεξιὰν ἐμβαλ-  
 λει. ὁμοροφίτου χελιδόνας μὴ ἔχει. γαμψώνυ-  
 χα μὴ τρίφει. ἀκρυχίσμασι καὶ κουραῖς μὴ ἐπεί-  
 ρει, μὴ δὲ ἐπίσασθαι. ὀξείαν μάχαιραν ἀκρὴς φέρει.  
 ἀκροδημοῦντα ὑπὲρ τῶς ὄρεσις ἀνεπιστρέψει. ἤθελε δὲ  
 αὐτῷ, ὅτι μὴ πῦρ μαχαίρα μὴ σιχαλόνειν, δῶκα-  
 σῶν ὀργλῶν καὶ οἰδυῶντα θυμὸν μὴ κινεῖν. ὅτι δὲ ζυ-  
 γόν μὴ ἐπὶ βαίνειν, τὸ τέστι ὅτι ἴσον καὶ δίκαιον μὴ  
 ἐπὶ βαίνειν. ὑπὲρ τε χρίνεται μὴ ἡσυχάζειν, ἐν ἴσῳ  
 τοῖς ἐνέσῳ τῷ φροντίζοντι πρὸς τῷ ἐλπίσθαι, καὶ τοῖς μέλλουσιν.  
 ἢ γὰρ χρίνεται, ἢ μὲν ἡσυχάζει τροφή. ὅτι δὲ τοῖς ἡσυχάζον-  
 μὴ ὁρῶν, ἐδὴ ἡσυχάζει μὴ τῶν ψυχῶν αἰνίας ἐλπίσθαι  
 ἡσυχάζειν. ὅτι δὲ τοῖς εἰς ἀκροδημίαν βαδίζοντα μὴ  
 ὑπὲρ τρέφεται, παρήναι τοῖς ἀπαλατρυμένους τοῖς  
 βίου, μὴ ὑπὲρ μνηστικῶς ἔχει τοῖς ζῶν. μὴ δὲ ὑπὲρ τῶν  
 ἐν ταῦτα ἡσυχάζοντων ἐπάγειν. καὶ τὰ ἄλλα πρὸς ταῦ-  
 τα λοιπὰ ὅτι ἐκλαμβάνειν, ἵνα μὴ παρέλκωμι.  
 παντὶ δὲ μᾶλλον ἀπὸ φόβου μὴ τε ἐρυθίνον ὁρῶν-  
 ται, μὴ τε μελαίνουσαν. ἡσυχίας τε ἀπὸ χεῖρας καὶ  
 κυσίων. ἀριστοτέλης δὲ φησὶ καὶ μήτρας, καὶ τῶν  
 γλῆς ἐνίοτε. αὐτὸν δὲ ἀρκέειν, μέλιτι μόνῳ φασὶ π-  
 νοῦν ἢ κηρῶν ἢ ἄρτω. οἶνον δὲ μεθ' ἡμῶν μὴ γινέσθαι.

ὅτι

ἐξήγησης τῶν  
 συμβόλων

ὅσον τὲ τὰ πολλὰ λαχαίοις ἐφοῖς καὶ ὤμοις. ᾧ δὲ  
 θαλαπῖοις, πωανίως. σολῇ δὲ αὐτῷ λούκῃ καὶ θαλά.  
 τὰ γὰρ λιναῖ, ὅπως εἰς ἐκείνους ἀφῖνται τοῦτον. ὅ  
 δὲ πῶποτε ἐγνώσθη ὅτε διαχερῶν, ὅτε ἀφροδιταί,  
 ζῶν, ὅτε μεθυοίς. ἀπείχου καὶ ταγέλωτος καὶ πά  
 σης ἀφροδισίας, οἷον σκαμμοῦ τῶν καὶ διηγυμνοῦ τῶν.  
 ὁργιστόμενός τε, ὅτε οἰκίτῳ ἐκόλαζεν, ὅτε ἐλδύθει  
 ρον. ἐκάλει δὲ τὸν νοθετῆρα, πελαργαῖον. μαντικῇ τε  
 ἐχεύει, τῇ δὲ τῶν κληδόνων τε καὶ οἰωνῶν. ἡκιστα δὲ  
 δὲ τῶν ἐμπύρων, ἔξω τῇ δὲ λιβαίνῃ. θυσίαις τε ἐ  
 χεύει ἀψύχοις. οἱ δὲ φασιν, ὅτι ἀλέκτροσι μόνον καὶ  
 εἰφοῖς γαλαθλοῖς ᾧς λεγομένοις ἀπαλίας. ἡ  
 κιστα δὲ ἀφῆσιν. ὁ γὰρ μὲν ἀριστότερος, πάντα μὲν  
 τὰ ἄλλα συγχωρεῖν αὐτῷ δὲ δεινὸν ἐμψυχα. μόνον  
 δὲ αὐτῷ ἀπείχεσθαι, ἀροτῆρος βοῶς καὶ κελού. ὁ δὲ  
 αὐτὸς φησιν ὡς προείρηται καὶ τὰ δόγματα λα  
 βεῖν αὐτῷ, παρὰ τῇ γὰρ δελφοῖς θεμιστοκλείας. φησὶ  
 δὲ ἰδρῶνυμῶ καὶ τελεθόντα αὐτῷ εἰς ἄδου, τῷ μὲν  
 ἡσιόδῳ ψυχλὸν ἰδεῖν πρὸς κίονα χαλκῷ δεδεμένῳ  
 καὶ τείρουσαρ. τῷ δὲ ὁμήρου κρεμαμένῳ ἀπὸ δειν  
 οῦ, καὶ ὅφεις πόδι αὐτῷ, ἀνθ' ὧν εἶπε πόδι θεῶν.  
 καλαρομένης δὲ ἐκ τοῦ μὴ θέλοντας σιωπεῖναι ταῖς,  
 αὐτῷ γυναιξί. καὶ δὲ τῷ πικρῶναι, ἔπειτα τῷ γὰρ  
 κρότῳ. φησὶ δὲ ἀρίσιππος ὁ κυρτωαῖος γὰρ τῷ πε  
 ρὶ φυσιολογιῶν, πυνδαφόραν αὐτῷ ὀνομασθῆναι, ὅτι  
 τῷ ἀλίσθαι ἡφόδου, ὅχι ἡττορ τοῦ πυνδῖς. λίγχι  
 ff 3 παρῆγι



παρεγγιαῦ αὐτῶν ἐμάσσοτε τίς μαθηταῦς, τὰ δὲ λεί-  
γειν εἰς τὸν οἶκον εἰσιούσι.

πῶ παρὲβλιν, τί δ' ἔρδξα, τί μοι δέον ἐκτελείσθαι.  
σφαλγιά τε θεοῖς προφόμεν κωλύειν. μόνον δὲ τὸν  
αἰναιμακτρὶ βωμόν προσκυωεῖν. μὴ ὀμνυώεσθαι θε-  
οὺς. ἀσκήν γὰρ αὐτῶν Δεῖν ἀξιόπιστον παρὲχειν.  
τὸς τε πρὸς βυτόρτου τιμᾶν δεῖν, τὸ προηγούμε-  
νον ἱερὸν χρόνον τιμώτορον ἡσυνεγόντου. ὥς ἐν κόσμῳ  
μὲν, ἀνατλήν δ' ὕσεως. ἐν βίῳ δὲ, ἀρχὴν τελευτῆς.  
ἐν ζωῇ δὲ, γῆρας φθορᾶς. Ἐ θεὸς μὲν, δαιμόνων προ-  
τίμα. ἥρωας δὲ, ἀνθρώπων. ἀνθρώπων δὲ μαλίστα, το-  
νίας. ἀλλήλοισι τὴν ὁμιλίαν. ὥς σὺ μὲν φίλους, ἐχθροὺς  
μὴ πρὶν εἶναι. σὺ ἐχθροὺς δὲ, φίλους ἐργάσασθαι. ἰδίον  
τε μηδὲν ἡγείσθαι. νόμῳ βοηθεῖν. ἀνομίᾳ πλεμεῖν. φυ-  
τὸν ἡμῶν μήτε φθίνειν, μήτε σίνεσθαι. ἀλλὰ μηδὲ  
ζῶον, ὃ μὴ βλάπτει ἀνθρώπου. αἰδέσθαι καὶ ἐυλαβεῖσθαι  
εἶναι. μήτε γέλωτι κατεχεσθαι, μήτε σκυθρωπάζειν.  
φύγειν πλεονασμόν. ὁδοιπορίας ἀνέσθαι Ἐ πίπτασθαι  
πρίσθαι. μνήμῳ ἀσκήν. ἐν ὁργῇ μήτε τί λείγειν, μή-  
τε πλεονάζειν. μαντικῶν πᾶσαν τιμᾶν. ὡδ' αἰς χρῆσθαι  
πρὸς λύραν. ὕμνον τὴν θεῶν καὶ ἀνδρῶν ἀγαθῶν, ἔνδο-  
ξον χεῖρ ἔχειν. τῶν δὲ κωλύων ἀπησφόδρην ἔχειν  
οὐκ ἔστι τὸ πνέυματῶδες ὄντας, μάλλον μετέχειν  
τοῦ ψυχικοῦ. καὶ ἄλλως, κοσμητόρας ἐργαζέσθαι  
τὰς γαστέρας μὴ πρὸς ἀληφθγίας. καὶ οὐκ ἔστι Ἐ τὰς  
καθυπνύς φαντασίας, λείας καὶ ἀπαράχους ἀρτε-  
λεῖν

λειρ. φησὶ δὲ καὶ ὁ ἀλέξανδρος ἐν ταῖς τῶν φιλοσό-  
φων διαδοχαῖς, καὶ ταῦτα ἐνεκγίαι, ἐν πυθαγορεί-  
 κῳ ὑπερμνήμασι. ἀρχὴν μὲν τῆ ἀπάντην, μονάδα.  
 ἐκ δὲ τῆ μοναδίδου, ἀόριστον δύαδα, ὡς αὖ ὑλλῶ πῆ  
 μοναδί αὐτῶ ὄντι ὑποσῶναι. ἐκ δὲ τῆ μοναδὸς καὶ  
 τῆ ἀορίστου δύαδίδου, σὺ ἀριθμός. ἐκ δὲ τῶν ἀριθ-  
 μῶν, τὰ σημεία. ἐκ δὲ τῶν, τὰς γραμμάς. διὲ ὥρ  
 τὰ ἐπίπεδα σχήματα. ἐκ δὲ τῶν, τὰ αἰσθητὰ σώ-  
 ματα. ὥρ καὶ τὰ σοιχεῖα, εἶναι τέτταρα, πῦρ, ὕδωρ,  
 γῆ, ἀέρα. μεταβάλλειν δὲ καὶ τρίπεδα δι' ὅλων,  
 καὶ γίνεσθαι αὐτῶν, κόσμον ἑμφυχον, νοσθον, σφαι-  
 ροειδῆ, μέσῳ ποδὲ χοντα τῶν γῆ, καὶ αὐτῶν σφαι-  
 ροειδῆ, καὶ ποδικορυμνῶν. εἶναι δὲ καὶ ἀντίπεδας,  
 καὶ τὰ ἡμῖν ἡγῶν, ἐκείνοις αὖν. ἰσόμοιρά τε εἶναι ἐν  
 τῷ κόσμῳ. φῶς καὶ σκότος. καὶ θερμὸν, καὶ ψυ-  
 χρὸν. καὶ ξηρὸν, καὶ ὑγρὸν. ὥρ ἡγῶν ὑπὸ κρατεῖαν θερ-  
 μῶν μὲν, θερμὸν γίνεσθαι. ψυχροῦ δὲ, χειμῶνα. ἐὰν ἰ-  
 σομοιρῇ, τὰ ἡγῶν εἶναι τὸ ἔττυ. δ' ἂν μὲν δάλλον,  
 ἡγῶν ὑγρὸν. δ' ἂν φθινόρον, φθινόπωρον νοσθον. ἀλ-  
 λά καὶ τῆς ἡμέρας, βάλλειν μὲν τῶν ἡγῶν. φθίνειν δὲ  
 τῶν ἡσπέρων, ὅθην καὶ νοσθωτόραν εἶναι. τὸν τε  
 ποδὲ τῶν γῆ ἀέρα, ἀσείστον καὶ νοσθον, καὶ τὰ ἐν  
 αὐτῷ πάντα θυητά. γῆ δὲ ἀνωτάτω, ἀεικνητῶν  
 τε εἶναι, καὶ ἡγῶν, καὶ ὑγῶν, καὶ πάντα τὰ ἐν αὐτῷ,  
 ἀθάνατα. καὶ οἷα εἶδε θεῖα. ἡλιόρ τε καὶ σελῶν,  
 καὶ σὺ ἄλλου ἀσθῶν εἶναι θεός. ὑπὸ κρατεῖ γὰρ  
 ὁ θεός

δοξαὶ αὐτῶν



ἢ θορμὸν ἐν αὐτοῖς. ὁ πόρ δ' ἐστὶ ζωῆς αὐτοῖν. τὴν τε σε  
 λῶν λαμπροῦται ὑφ' ἡλίου. καὶ ἀνθρώπων εἶναι  
 πρὸς θεοὺ συγγένειαν, κατὰ τὸ μετέχειν ἀνθρώ-  
 πῳ θορμῇ. διὸ καὶ προνοεῖται ἡμῶν. ἡμᾶρ  
 μέν τ' ἐν ὅλῳ εἶναι, καὶ τὰ κατὰ μόρθ' αὐτί-  
 αν τῆς διοικήσεως. δέκναι τὸ ἀπὸ τοῦ ἡλίου ἀκτῖνα  
 ὅλῳ τοῦ αὐτοῦ τοῦ τε ψυχροῦ καὶ παχέως. καλοῦσι  
 δὲ ἡμῶν μὲν ἄδρα, ψυχρὸν αὐτόρα. πάντῳ δὲ τὴν ἀκ-  
 τῖνα, καὶ εἰς τὰ βάθη δύεσθαι. καὶ ὅλῳ ἔδωκε, ζωοποι-  
 εῖν πάντα. καὶ ζῶν μὲν πάντα, ὅσα μετέχει τοῦ θορ-  
 μῶν. διὸ καὶ τὰ φυτὰ, ζῶα εἶναι. ψυχλὴν μέν τ' ἡ-  
 χειρ πάντα. εἶναι δὲ τὴν ψυχλὴν, ἀπ' ἀσπασμα αὐτῆ-  
 ς. ὅλῳ φέρειν ψυχλὴν, ζωῆς. ἀθάνατόν τε εἶναι αὐ-  
 τῶν. ἐπειδὴ πόρ καὶ τὸ ἀπὸ δ' ἀπ' ἀσπασαι ἀθάνατόν  
 ἐστὶ. τὰ δὲ ζῶα γίνεσθαι ἢ ἀλλήλων, ἀπὸ πόρμῳ.  
 τῶν. τὴν δὲ ἐκ γῆς γίνεσθαι, ἀδύνατον ὑποτίθεσθαι. ἢ  
 δὲ πόρμα, εἶναι σαφὲς ἐγκεφαλίου, πόρμῳ χροσσε-  
 ῖν αὐτῇ θορμὸν ἀτμόν. πάντῳ δὲ προσφορομένην  
 τῇ μήτρᾳ, ἀπὸ μὲν τοῦ ἐγκεφαλοῦ, ἰχῶρα, καὶ ὑγρὸν,  
 καὶ αἷμα προϊέσθαι. ἢ ὡς σέρηας τὴν καὶ νεῦρα, καὶ  
 ὅσα, καὶ τείχεα, καὶ τὸ ὅλον ὑποτίθεσθαι σῶμα. ἀπὸ δὲ  
 τοῦ ἀτμοῦ, ψυχλὴν καὶ αἰσθησιν. μορφοῦνται δὲ τὸ μὲν  
 πρῶτον, παγερὸν ἐν ἡμέραις τεσσάρων. κατὰ δὲ  
 τοῦ πρὸς ἀρμονίας λόγου, ἐν ἑπτὰ, ἢ ἐν οὐκ, ἢ δέκα. ἢ  
 πλείους μισὶ τελευθῆν, ἀκνύσκειται ἢ βρείφθ'.  
 ἢ χειρ δὲ ἐν αὐτῷ πάντας τοῦ λόγου πρὸς ζωῆς ὥν.

εἰρομενῶν, συνίχεσθαι κατὰ τοῦ τῆς ἀρμονίας λό-  
 γου, ἐκείνων ἐν τεταγμένοις καιροῖς ὑπὸ γινομενῶν.  
 τῷ τε αἰσθησιν, κρινῶς καὶ κατ' εἶδ' τῷ κερ-  
 σιν, ἀτμόν πνα εἶναι ἄγαν θερμόν. καὶ ὅρα ὅσον λέ-  
 γεται δι' ἀόρατον ὁραῖν, καὶ δι' ὕδατος. αὐτοῖς δὲ  
 ὁραῖν γὰρ τὸ θερμόν, ἀπὸ τοῦ ψυχροῦ. ἐπεὶ γὰρ εἰ ψυ-  
 χροῦς ὡς ὁ ἐν τοῖς ὀμμασιν ἀτμός, δεισθήκει αὐτὸς  
 τὸν ὁμοίον ἀόρα. νῦν δὲ, ἔστιν ἐν οἷς ἡλίου πύλας κα-  
 λεῖ τοῦ ὀφθαλμοῦ. τὰ δ' αὐτὰ καὶ πόδι τῇ ἀκροῦς,  
 καὶ τῇ λειπῶν αἰσθήσεων δογματίζειν. τῷ δὲ αὐ-  
 θρώπῳ ψυχῶν, διακρίνεται τριχῶν. εἰς τε νοῦν, καὶ  
 φρενῶν, καὶ θυμόν. νοῦν μὲν ὅτι εἶναι καὶ θυμόν, καὶ ἐν  
 τοῖς ἄλλοις ζώοις. φρενῶν δὲ, μόνον ἐν ἀνθρώπῳ. εἶναι  
 δὲ τῷ ἀρχῶν τῇ ψυχῆς, ἀπὸ καρδίας μέχρι ἐγκε-  
 φαλου. καὶ τὸ μὲν ἐν τῇ καρδίᾳ μόρον αὐτῇ, ὑπαρ-  
 χεῖν θυμόν. φρενῶν δὲ καὶ νοῦν, τὰ ἐν τοῖς ἐγκεφα-  
 λῳ. σαφόνους δὲ εἰδέναι ἀπὸ τῶν τῶν, τὰς αἰσθήσεις. ὅ-  
 τ' μὲν φρόνιμον, ἀδάνειον. τὰ δὲ λοιπὰ, θνήσκουσι. τρεῖς φε-  
 οδαί τε τῷ ψυχῶν ἀπὸ τοῦ αἵματος. τοῦ δὲ λό-  
 γου, ψυχῆς ἀνέμῳ εἶναι. ἀόρατόν τε εἶναι αὐτῷ  
 καὶ τοῦ λόγου. ἐπεὶ καὶ ὁ αἰσθητὴς, ἀόρατος. δογμα-  
 τὴν εἶναι τῇ ψυχῆς, τὰς φλέβας καὶ τὰς ἀρτηρίας,  
 καὶ τὰ νεῦρα. ὅταν δὲ ἰσχύη, καὶ κατ' αὐτῷ γηρομεί-  
 νῃ ἡρεμῇ, δόξα μὲν γίνεσθαι αὐτῇ τοῦ λόγου καὶ τὰ  
 ἔργα. ἐξελθοῦσαν δὲ αὐτῷ ὑπὸ γῆς, πλωζεσθαι ἐν  
 τοῖς αἵματι, ὁμοίαν τοῖς σώματι. τὸν δὲ ἐρμῶν, ταμίαν εἶ-

διαίρεσις  
 ψυχῆς



ναι τῶν ψυχῶν. καὶ ὅλα ἑῶν, πρὸς πᾶσι λέγεσθαι, καὶ  
 πυλαῖον, καὶ χθόνιον. ἐπεὶ δὲ πόρ' ἔτ' εἰς πέμ-  
 πει ἀπὸ τῶν σωματικῶν τὰς ψυχὰς, ἀπ' τε γῆς καὶ  
 ἐκ θαλάσσης. καὶ ἀγαθὰ μὲν τὰς κατὰ γῆν, ὡς τὸν  
 ὕψιστον. τὰς δὲ ἀκαθάρτους μήτε ἐκείναις πελα-  
 ρεῖν, μήτε ἀλλήλαις. δεῖσθαι δ' ὧν ἀρρήτης δαίμοις  
 ὑπὸ εἰρηνύων. εἶναι τὲ πάντα τὸν ἀόρατον ψυχῶν ἐμ-  
 πλεον. καὶ τούτου, δαίμονας τε καὶ ἥρωας νομίζε-  
 σθαι. καὶ ὑπὸ τούτων πέμπεσθαι ἀνθρώποις, τὸς τε  
 οὐρανοῦ καὶ τὰ σημεῖα, νόστον τε. καὶ ὁ μόνον ἀν-  
 θρώποις, ἀλλὰ καὶ πρὸς βέλους, καὶ τοῖς ἄλλοις κτελέ-  
 σιν. εἰς τε τούτου γίνεσθαι τὸς τε κατὰ γῆν, καὶ  
 ἀστρονομίους. μαντικῶν τε πᾶσαν, καὶ κληδόν-  
 νας καὶ τὰ ὅμοια. μέγιστον δὲ φησι τῶν ἐν ἀνθρώποις  
 εἶναι, τὴν ψυχὴν πείσαι ὡς τὸν ἀγαθόν, ἢ ὡς τὸν κα-  
 κόν. ἐνδοξαμονεῖν ἀνθρώπων ὅταν ἀγαθὴ ψυχὴ πρὸς  
 γῆνται. μὴδὲ ποτε δὲ ἡρεμείν, μὴδὲ τὸν αὐτὸν φόρον  
 κρατῆν. ὁρμήον τε εἶναι τὸν δίκαιον. Ἐπεὶ δὲ ἑῶν, δία  
 ὁρμήον λέγεσθαι. τὴν τε ἀρετὴν, ἀρμονίαν εἶναι. καὶ  
 τὴν ὑγίειαν καὶ τὸν ἀγαθὸν ἄπαν. καὶ τὸν θεόν. διὰ, Ἐ-  
 καθ' ἀρμονίαν συνεσθῆναι τὰ ὅλα. οὐλίαν τε εἶναι, ἢ  
 ἀρμόνιον ἰσότητα. τιμὰς θεοῖς δεῖν νομίζειν καὶ ἥρω-  
 σιν, μὴ τὰς ἴσας. ἀλλὰ θεοῖς ἀεὶ, μετ' εὐφημίας. ἥρωσι  
 δὲ, ἀπὸ μέσου ἡμάρτας. τὴν δὲ ἀγνοίαν εἶναι, ὅλα κατὰ  
 μῶν καὶ λουτρῶν ποιεῖν ῥάντην. καὶ ὅλα τὸν αὐτὸν κα-  
 τὰ δόξαν ἀπ' τε κήδους, καὶ λήχους, καὶ μάσματος,  
 καὶ ἀπὸ

καὶ ἀπὲς χεῖρας βρωτῶν θυησιδίωρ τὲ κρεῶν, ἔλαιον  
 γλῶν, καὶ μελανόχρωρ, καὶ ὠτῶν, ἔλαιον ὠτοτόκωρ ζώων,  
 καὶ κυσάμωρ, καὶ τῶν ἄλλωρ ὧν παρακελεύονται ἔλαιον  
 οἱ τὰς τελετὰς ἐν τοῖς ἱεροῖς ὑπὸ τελευτῶντος. φησὶ δὲ  
 ἀριστοτέλης ἐν τοῖς τῶν κυσάμωρ παραγγέλλειν ἀπὲς  
 χεῖρας, ἢ ὅτι αἰσίοις εἰσὶν ὅμοιοι, ἢ ὅτι ἀδύω πύλαις,  
 ἀφύοντες γὰρ μόνον. ἢ ὅτι φθείρει, ἢ ὅτι τῇ τοῦ ὄλου φύ-  
 σει ὅμοιον, ἢ ὅτι ὀλιγαρχικόν. κληρουῦντο γὰρ αὐτοῖς.  
 τὰ δὲ πρὸς τὰ μὴ ἀνακεῖσθαι, ἵνα τὸ ἐδίξεσθαι μὴ  
 ἀκροατῶν δὲ διείρη, ἢ ὅτι ὑπὸ τελευτῇ πνός. ἀριστοφά-  
 νης δὲ, τῶν κρεῶν φησὶν εἶναι τὰ πρὸς τὸν λῆγον ἐν  
 τοῖς ἱεροῖς, μὴ γινώσκειν ἅπλῃ ἀνὰ ταπείνην τῇ τραπε-  
 ζῆς ἐν τῷ. ἀλεκτρυνόντων μὴ ἀπὲς τὰ λουκῶν, ὅτι ἐν  
 τοῖς τοῦ μύου καὶ ἐκείνης. ἢ δὲ ὑπὸ τῶν ἀγαθῶν. τοῖς  
 τε μύου, ἱεροῖς. σημαίνει γὰρ τὰς ὥρας. τῶν ἰχθύων  
 μὴ ἀπὲς τὰ, ὅσοι ἱεροῖ. μὴ γὰρ δεῖν τὰ αὐτὰ τελευ-  
 τῶν θεοῖς καὶ ἀνθρώποις. ὡς πρὸς τὸ ἐλδυσθῶν καὶ  
 δούλοις. καὶ ἢ μὴ λουκῶν, τῇ ἀγαθοῦ φύσεως. ἢ δὲ  
 μέλαν, τοῦ κληρουῦ. ἀφῶν μὴ κληρουῦνται. ὅτι ὑπὸ ἵνα  
 οἱ πάλαι τῶν φίλων ἐφοίτων, κληρὸν πρὸς καὶ νῦν οἱ  
 βαρβαροὶ. μὴ δὲ διακρίνειν ὅς σιωπῶν αὐτῶν. οἱ δὲ,  
 πρὸς τῶν ἐν ἀδύω κρείσσιν. οἱ δὲ δὲ πόλεμον δειλίας  
 κρείσσιν. οἱ δὲ, ἐπεὶ ἀπὸ τῶν ἀφῶν καὶ ὅλων. καὶ τῶν  
 σχημάτων τῶν ἡγάμισον, σφαῖραν εἶναι τῶν σφαιρῶν, τῶν  
 ἢ ὑπὸ πείδωρ, κύνων. γῆρας καὶ παῦν ἢ μετῴμιον, ὅμοι-  
 ον. ἔλαιον ἔλαιον νεότητα, παῦν ἢ γίγαν, τῶν τῇ εἰδῶν



δεικνύναι. νόστον, τὴν τέττα φθοράν. πόθεν τῶν ἀλῶν  
 ὅτι δέει παρὰ πείθεσθαι πρὸς ὑπόμνησιν τοῦ δικαίου. οἱ  
 γὰρ ἄλλοι πᾶν σώζουσιν ὅτι καὶ παραλάβωσι. καὶ  
 γεγονόσιν ἐκ τῶν κατὰ τὴν ὑδρατῶ καὶ δαί-  
 λω. καὶ ταῦτα μὲν φησὶν ὁ ἀλέξανδρος ἐν τῇ  
 πυθαγορείᾳ ὑπομνήμασιν ἐνρηκνύει. καὶ τὰ ἐκεί-  
 νων ἐχέμενα, ὁ ἀριστοτέλης. τὴν δὲ σεμνοπείπειαν τῇ  
 πυθαγορείᾳ καὶ τῶν ἐν τῇ σίλλοις διακινῶν αὐτῶν,  
 ὅμως ὁ παρὲλπιπεν εἰς τὴν οὐτῶν.

πυθαγορείᾳ τὴν γοητείας ἀρχαίων ἐπίδοξον  
 θήρη ἐπὶ ἀνθρώπων σεμνοπείπης ἀεικνύει.  
 πόθεν δὲ τοῦ ἄλλου τε ἄλλου αὐτῶν γεγνησθαι, ξυνοφά-  
 νης ἐν ἐλεγείᾳ προσμαρτυρεῖ. ἥς ἀρχή,  
 νῦν οὕτω τὸ ἄλλου ἐπειμὶ λόγον, δειξὼ δὲ κέλδυσον.  
 ὁ δὲ πόθεν αὐτῶν φησὶν οὕτως ἔχει.

καὶ πρὶν μὲν συφελιζομένου σκύλακος παριόντα,  
 φασὶν ἐπικτεῖραι, καὶ τότε φάσθαι ἔπειτα,  
 πᾶσι, μὴ δὲ ῥάπιζ'. ἐπεὶ ὁ φίλου ἀνδρὸς ὅτι  
 ψυχῇ, τὴν ἔγνω φθεγξαμένης αἰῶν.

καὶ ταῦτα μὲν ὁ ξυνοφάνης, ἔστω δὲ αὐτῶν κρατὶ  
 νῦν μὲν ἐν πυθαγορείᾳ, ἀλλὰ καὶ ἐν ταραντίνῳ  
 φησὶν οὕτως.

ἔπειτα αὐτῶν ἀνὰ πινὰ ἰδιώτῳ  
 λάβωσι πρὸς εἰσελθόντα δεικνύναι ῥάμνον,  
 ὅτι τῶν λόγων ῥάμνος, καὶ κυκλῶν τῶν ἀντιθέτων,  
 τῶν πόρᾳσι, τῶν παρὰ ῥάμνοισι, τῶν ἀφ' ἑαυτοῖς,

ῥίς μεγέθειρ ἐ βυσικῶς.

Μνησίμαχ<sup>Θ</sup> Δαλμαῶνι.

ὥς πυθαγορεῖς ἠύομεν ἔδ' ἁγία

ἔμψυχον ἐδέρ' ἐκδιδόντες παντελῶς,

Αἰσοφῶν Πυθαγορεῖς.

ἔφη τέ κατὰ βᾶς εἰς τὴν δίαίταν τῶν ἡρώτων,

ἰδέειν ἡγάσθαι, δὲ φάσκειν δὲ πᾶμπαν

αὐτὸν πυθαγορεῖς τῶν νεκρῶν. μόνοισι γὰρ

τότ' ἔτι, ὅτε πλούτωνα συσσιτέειν ἔφη

δί' ἐυσέβειαν. ἐυχόμενοι θεὸν λέγεις,

εἰ ῥίς ἔνθα μνηοῖσιρ ἡδέται ξυῶν.

ἔτι γὰρ ἔδ' αὐτῶν,

ἐκδιδόντες τε λαλῶντες, καὶ πίνουσιν

ὡδ' ἔτι τῶν ὕδατος, φθίρας δὲ καὶ τριβῶνα,

τὴν τ' ἀλυσίαν, ἐδίδας αὖ ἑπομείνεις

τῶν νεωτόρων.

ἔτελεύτα δ' ὁ πυθαγόρας, ἔδωκεν ὅτε τῶν. σωκε

διδόντες μετὰ τῶν σωκῶν γὰρ τῇ μύλων<sup>Θ</sup> οἰκίᾳ

τότ' ἔτι, ἑπὶ τῶν μὴ παραδοχῆς ἀξιοθῆναι τῶν,

δὲ φθόνον ἑποπειδιῶναι τὴν οἰκίαν σωκῆν. πνίς

δ' αὐτῶν αὐτὸν κροτωνιάτας ἔδωκεν πρᾶξαι, τυραννίδ<sup>Θ</sup>

ἐπίθουσιρ ἐν λαβουμνῶν. ὅτε δὲ πυθαγόραν ἡγαθὴν

φθιῶναι διδιδόντες. καὶ πρὸς πνί χωρὶν γνόμεν<sup>Θ</sup>

πλήρει κυκλῶν, αὐτὸν δὲ ἔσθ' ἐπὶ, ἀλῶναι μᾶλλον

ἢ πατῆσαι. ἀναιρεθῆναι δὲ κρείττερον, ἢ λαλῆσαι. καὶ

ὡδὲ πρὸς τῶν δεικνόντων ἀποφαγεῖν. οὕτω δὲ ἔ



σὺ πλείους τῶν ἰταίων αὐτοὶ διαφθαλῶναι, οὐκ ἔστι  
 πρὸς τετάρτου. διαφυγεῖν δ' ὀλιγίς σου. ὦρ ἴω  
 καὶ ἀρχύτας ὁ ταρακτῆρ, καὶ λύσις ὁ προσημεί-  
 νῃ. φησὶ δὲ δικαίαν γὰρ πύδατον ἀφαιεῖν  
 κατὰ φύσιν εἰς τὴν μεταπύττω ἰδὼν τῶν μου-  
 | σῶν, τετάρτου ἡμῶν ἀσιτήσονται. ἡρακλῆς  
 δὲ φησὶ τῇ τῶν σατύρου βίῳ ὑπὸ τῆς, μὲν τὸ δὲ  
 καὶ φθονῶν δὲ τῇ δὲ τῇ, ἰπαινεθεῖν εἰς ἰταλίαν.  
 καὶ πανδοσίαν ἐνόντα κύλων τῷ προσημείω  
 εἰς μεταπύττω θηλεθεῖν. καὶ καὶ τὴν βίον κατὰ φύ-  
 | καὶ ἀσιτή, μὴ βυλόμενον προσημείω ζῶν. ἔρμινος  
 δὲ φησὶ πλεμμούτῃ ἀκραγαντῶν καὶ συρακῶν  
 σίω, θηλεθεῖν μετὰ τῇ συνηθῶν τὴν πύδατον, ὅ-  
 | προσημείω τῇ ἀκραγαντῶν. προσημείω δὲ γνομῶν,  
 προσημείω αὐτὴ τῇ τῇ κυάμων χῶρον, ὅ-  
 | τῇ συρακῶν αὐτοῦ προσημείω. τὸς τε λοιπὸς οὐκ ἔστι  
 πρὸς σὺ πρῶτον καὶ τετάρτου, τῇ τῇ κατὰ  
 | κατὰ φύσιν, θέλοντας αὐτὴν προσημείω τῇ προσημείω  
 | σι. ἄλλοι, προσημείω πύδατον φησὶν ὁ ἔρμινος. λέγει  
 γὰρ ὡς γνομῶν τῇ ἰταλίᾳ, καὶ γὰρ δικίον προσημείω  
 | σαι, καὶ τῇ μητρί τῇ τῇ τῇ γνομῶν εἰς δὲ τῇ  
 | τῇ γράφει, σημειομῶν καὶ τῇ χρόνον. ἔπειτα  
 κατὰ φύσιν αὐτὸς εἰς τὸν αὐτὸν ἀνέλθῃ. ὅθεν προσημείω τῇ μη-  
 | τῇ. τῇ δὲ πύδατον μὲν χρόνον ἀνέλθῃ ἰσχυρὸν  
 καὶ κατὰ φύσιν μετῶν. εἰσελθόντα τὸ εἰς τῇ τῇ  
 | κλησίαν, φάσκειν ὡς ἀφῇται δὲ ἄδου. καὶ δὲ καὶ αὐ-  
 | νεγίνω

νεγίνωσκον αὐτοῖς τὰ συμβεβηκότα. οἱ δὲ, σαινόμενοι  
 τοῖς λεγομένοις, ἐδάκρυον τε καὶ ὤμωρον, ἔ' ἐπίστυ-  
 ον εἶν' ὅτι πυθαγόραν θεῖον πινά, ὥς τε ἔ' τὰς γυναι-  
 κας αὐτῶν παραδιδύαι, ὥς ἔ' μαθησομένης τί τ' αὐ-  
 τοῖς καὶ πυθαγόρας κληθῆναι. καὶ ταῦτα μὲν, ἔρι-  
 μπος. ὡς δὲ πυθαγόρα ἔ' γυνή, θεανῶ ὄνομα, βρον-  
 τίνος τοῦ κρωτωνιάδος θυγατρὸς. οἱ δὲ, γυναικὶ μὲν εἶν'  
 βροντίνος, μαθήτειαν δὲ πυθαγόρα. ἦν αὐτῶν δαμῶ,  
 ὥς φησι λύσις ἐν ὑπόλοιπῃ τῇ πρὸς ἵππαρχον ποῦ-  
 πυθαγόρα λέγων οὕτως. λίσονται δὲ πολλοί τινι ἔ' δια-  
 μασία φιλοσοφείν. ὅπου ἀπαξιῶν πυθαγόρας. ὅς γε  
 τὰ δαμοὶ τὰ ἴαυτο θυγατρὶ παρακαταθήμεν. τὰ  
 ὑπομνήματα, ἐκείλυσσε μηδενὶ τῶν ἐκ τῶν τὰς οἰκίας  
 παραδιδόμεν. ἃ δὲ, διωαμένα πολλῶν χρημάτων. ἀ-  
 πρὶδδοται τὴν λόγως, ὅτι ἐβουλήθη. πρὶν αὖ γὰρ καὶ  
 τὰς τοῦ πατρὸς ὑπόκλητας, ἐνόμιζε χρυσῶ πμωτέ-  
 ρας εἶναι. καὶ ταῦτα γυνά. ὡς καὶ τηλαυγὴς ὑὸς αὐ-  
 τοῦ, ὅς καὶ διεδέξατο ὅτι πατὴρα, ἔ' κατὰ τινας, ἐμ-  
 πεδοκλήτου καθηγήσατο. ἵπποβοτοῦ γὰρ φησὶ λέ-  
 γειν ἐμπεδοκλήτα τηλαυγῆ. κλυτὴ κοῦρε θεανῶς  
 πυθαγόρεώ τε. σύγγραμμα δὲ τοῦ τηλαυγοῦς, ὁ δὲ  
 τῆς δὲ μητρὸς αὐτοῦ θεανῶς, πινά ἄλλα. καὶ φασὶν  
 αὐτῷ ἐρωτηθεῖσαν περὶ γυνή ἀπ' ἀνδρὸς καθεσθῆναι  
 φαῖναι, ἀπὸ μὲν τοῦ ἰδίου, παραχεῦμα. ἀπὸ δὲ τοῦ ἁλ-  
 λοτρίου, ὁ δὲ περὶ. τῇ δὲ πρὸς τὸν ἴδιον ἀνδρα  
 μελλούσῃ προσέειπαι, παρήναι, ἅμα τοῖς ἐνδύμασι  
 σι καὶ τῷ αἰσχυρῶν ἀκρίβειαν. αἰσαμύνω τε



πώλιρ ἅμα αὐρίσιρ ἀναλαμβάνειρ. ἐρωτηθεῖσθε  
 πρῖα, ἔφη ταῦτα δι' ἃ γυνὴ κέκλημαι. ὁ γοῦν πυθαγό-  
 ρας ὡς γοῦν Ἡρακλείδης φησίρ ὁ τοῖ σαραπίων Θ,  
 ὁ γυνήκοντ' ἑτῆς ἐτελεύτα, κατὰ τῶν ἰδίων ὑπογρα-  
 φῶν τῶν ἡλικιῶν. ὡς δὲ οἱ πλείους, ἔτι βιτὺ ἐννεμή-  
 κοντα. καὶ ἡμῶν ὅστιρ εἰς αὐτὴν πεπαιγμένα οὕτως  
 ἔχοντα.

ὁ μόν' Θ' ἐμψύχωρ ἀπὶ χόρ' ἔχουσα, ἀλλὰ Ἐ' ἡμεῖς.

τίς γάρ ὁς ἐμψύχωρ ἦταρ πυθαγόρας;  
 ἀλλ' ὅταν ἐφθῇ τε, καὶ ὀπτηθῇ καὶ αἰσθῇ  
 δὴ τότε καὶ ψυχῇ ὅκ' ἔχουσα διόμην.  
 ἀλλ' ὡς πυθαγόρης γὰρ σοφός, ὡς τε μὲν αὐτὸς  
 μὴ φαίνειν κρείων, καὶ λέγειν ὡς ἄσθενος.  
 σιτίζειν δ' ἄλλους. ἄγαμαι σοφόν, αὐτὸς μὲν γάρ  
 ὅκ' ἀσθενεῖν, ἄλλοι δ' αὐτὸς ἔτ' εἶχ' ἀσθενεῖν.

Καὶ ἄλλο.

τὰς φρενας ἡμ' ἐβίλησ' τὰς πυθαγόρα νοῦσαι,  
 ἀσπίδ' Θ' ἐυφρέβη βλέφορ ὅς ὁμφαλόμ.  
 φησὶ γάρ ὅτ' Θ' ἐγὼν ἡμῶν πρῶτον βροτῶν, ὅς δὲ  
 ὅτε ὅκ' ὡς φασκεῖν, ὅς τις ἔλω ὅτε ὡς.

Καὶ ἄλλο ὡς ἐτελεύτα.

αἱ αἱ πυθαγόρης, τί τόσον κυνέμωσι δέεβαλθης;  
 καὶ δάνε φοιτηταῖς ἀμμιγα γῆς ἰδίοις.

χωρίον ὡς κυνέμων, ἵνα μὴ τῶν δὲ πατήσῃ  
 δὲ ἀκράγαυτων ἡρώταν' ἐνὶ τριόδῳ.

ἡμᾶρ δὲ κατὰ τῶν ἐξήκοντων ὀλυμπιαδῶν, καὶ αὐ-  
 τοῖς.

το ὃ σῶμα δέμεινε, μέλει γνηῶν ἐννεακαίδεκα.  
 τελευταῖοι γὰρ ἐγγίοντο τῶν πυθαγορείων, ὅς καὶ ἀ-  
 ριστόξανθ' εἶδε, ξυνόφιλός τε ὁ χαλκιδεύς ἀπὸ θρασί-  
 κης, καὶ φαίντ' ὁ φλιασιθ', καὶ ἐχεκράτης, καὶ διο-  
 κλῆς, καὶ πρὶ μύναςθ', φλιασιοὶ καὶ αὐτοί. ἦσαν δὲ  
 ἀκροαταὶ, φιλολάτ' καὶ ἐνέχυτ' τῶν ταραντίνων. γὰρ  
 γούνασι δὲ πυθαγορεῖ, τέτταρτος ποῦντος αὐτοῦ χρό-  
 νου ὅτε πρὶν ἀπ' ἀλλήλων ἀπέχοντο. εἰς μὲν κροτω-  
 νιάτης, τυραννικὸς ἀνθρώπου. ἐτόρθ', φλιασιθ'-  
 σωμασκητής, ἀλείωτης ὡς φασὶ πινδ. τρίτ'θ', ζα-  
 κινύθ'. ὅ φασιν εἶναι τὰ πρόρητα, ὅτι φιλοσοφίας  
 αὐτῶν διδασκαλῶν, ἐφ' ὃ καὶ ὃ αὐτὸς ἔφα παροι-  
 μακὸν εἰς τὴν βίον ἦλθεν. οἱ δὲ, καὶ ἄλλων ἀνδρείων  
 πρὶν ἐγγίοντο γούνασι φασὶ πυθαγορεῖ, πρῶτον δὲ  
 κροῦτα ἐνθου καὶ συμμετερείας ἐσοχᾶσθαι. καὶ ἄλ-  
 λων ἀνδρείων πρὶν, σάμιον. καὶ ἐτόρθ' ἔρηρα μοχι-  
 θηρόν. καὶ ἰατρόν ἄλλον, τὰ ποῦν κήλης γεγραφότα.  
 καὶ πινὰ ποῦν ὁμήρου σιωπεταγμένον, καὶ ἐτόρθ'  
 δωρικὰ πεπραγματόμενον, ὡς διονύσι'θ' ἰστέει.  
 ἔρατοδίνης δὲ φησι καθὸ καὶ φαβωρεῖνθ' ἐν τῇ παν-  
 ροδίᾳ ἰσορία παρατίθεται, ὅτι εἶναι τὴν πρῶτον  
 ἐντέχνως πυνκτούσαντα, ὡδ' ὅτι ὁ γούνης καὶ τέττα-  
 ρακοσὴς ὀλυμπιάδ'θ', νομίτῳ καὶ ἀλευργίδια φο-  
 ροῦντα. ἐκείφθῳαι τὲ ἐν τῶν παίδων, καὶ χλῶναι  
 ὡδ' ὅτι, αὐτῆς προσβλέψαι τοῦ ἀνδράς, καὶ νικῆ-  
 ῖαι. ἀπὸ αὐτοῦ δὲ τὸ πῶ καὶ τὸ πῆγμα, ὅτι ἐπὶ τῇ  
 h h σε θεαί



σε θεαίτητΘ.

πυθαγόρῳ πινά, ὃ ξεῖνε, κομήτιω ἀδόμνον  
 πύκτιω εἰς ἡστέχεις σάμιον, πυθαγόρης ἐγώ εἰμι.  
 τὰ δ' ἔργα μὲ εἰς πν' ἔροιο ἡλείων,  
 φήσεις αὐτῶν ἄπιστα λίγειν.

ἔσθ' ὁ φαβωρῖνΘ φησὶν ὅροις χεῖρασθαι ὅλα τῆς  
 μαθητικῆς ὕλης. ὡδ' πλείον δὲ σωκρατικῶν, καὶ σὺν ἐλ  
 κείνῳ πλησιόσσαντας. καὶ μετὰ ταῦτα, ἀεισοτέλιον  
 καὶ σὺν σωϊκούς. ἀλλὰ μὲν καὶ τῶν ἑξακτῶν περὶ τῶν  
 νομαλῶν κῶσμον, καὶ τῶν γλῶττολογίῶν. ὡς δὲ θεοί  
 φραςΘ, παρμηνίδειον. ὡς δὲ ζῴων, ἡσίοδον. τὰ τῶν  
 φασὶν ἀντιπαράτασθαι κύδιονα. καὶ δὲ πόρ ἀν  
 τίδικον, σωκρατικῶν. ἐπεὶ δὲ τοὶ ἀθληταὶ πυθαγόρου,  
 καὶ ἔσθ' ἐλίσσοντο ἐπὶ ἡστέχειν.

ἔτΘ πυκτοσύσων ὅς ὀλυμπίαν παύσιν ἀνῆβΘ  
 ἡλυθε πυθαγόρας ὁ κρατίτεω σάμιΘ.

ὁ δὲ φιλόσοφΘ καὶ ὡδὲ ἐπίσειλε.

Πυθαγόρας Αναξιμανεύει.

Καὶ σὺ ὡ λῶσε, εἰ μὴδὲρ ἀμείνων ἦς πυθαγόρειον  
 γνέω τε καὶ κλέθ, μεταναστὰς ἀν, ὃ χεῖρ ἐκ μιλῆ  
 τῶν. καὶ δὲ κατὰ φύσιν σε, ἡ πατρίδα ἐκ κλέθ, καὶ ἐμὲ  
 τὴν ἀν κατὰ φύσιν ἀναξιμανεύει ἰοικότα. εἰ δ' ὑμεῖς οἱ  
 ὄντοισι τὰς πόλεις ἐκλείψετε, ἀπὸ μὲν αὐτέων, ὁ κῶσι  
 μΘ αἰρεθήσεται. ὡδὲ κινδυνότορα δ' αὐτῶν τὰ ἐκ  
 μίλιον. ἔτε δὲ αἰεὶ καλὸν ἀποδοχολογίην, μελεδωνόμ  
 τῶν εἶν τῇ πατρίδι καλῶν. καὶ ἐγὼ δὲ, ὅ πάντα περ  
 εἰ σὺ

εἰ τοῦ ἐμεινυτο μύθου. ἀλλὰ καὶ ἐν πλείμοις ὅς σ' εἶ  
 φόρτισιν εἰς ἀμύλησιν ἰταλιῶται.

Ἐπειδὴ δὲ ποῦ πυνδαγόρου διελκιδάρην, ζητήσαν πε  
 εἰ τ' ἐλλογίμων πυνδαγομένων. μεθ' ὅς ποῦ τῷ ἀπο  
 ραδῶν κατὰ πινας φθορομένων. ἔπειθ' οὕτως θ' ἀρ  
 τωμέν τῷ ὁρῶν χῶν, τῷ ἀξίω λόγῳ, ἕως ὠκύν  
 ρου, κατὰ καὶ προειρήσμεν. ποῦ μὲν οὖν θεανούς  
 καὶ τηλαυγούς, διηλέγμεθα. λεκτέον δὲ νῦν, ποῦ  
 ἐμπεδοκλέους πρῶτον. κατὰ γὰρ πινας, πυνδαγοῦ  
 δῆκοντες.

## ΕΜΠΕΔΟΚΛΗΣ

Ἐμπεδοκλῆς ὡς φησιν ἰωπόβοτος, μέτων  
 ὧν υἱὸς τοῦ ἐμπεδοκλέους, ἀκραγαντίνος. ὃ δ'  
 αὐτὸ καὶ τίμας ἐν τῇ πυντικαυδεήτῃ τῷ ἰσοει  
 ῶν, ἐπίσημον ἀνδρα γενέσθαι τὸν ἐμπεδοκλήα,  
 τὸν πάππον τοῦ ποικτοῦ. ἀλλὰ καὶ ἔρμηνος,  
 τὰ αὐτὰ τούτω φησὶν. ὁμοίως καὶ ἡρακλείδης ἐν  
 τῷ πορὶ νήσωρ. ὅτι λαμπρᾶς ὧν οἰκείας ἰωποτρο  
 φηκότητος τοῦ πάππου. λέγει δὲ καὶ ἡρακλείδης  
 ἐν τοῖς Ὀλυμπιονίκαις, τὴν πρώτῃ καὶ ἐβδόμῃ  
 καὶ Ὀλυμπιάδα νενικησέναι τὸν τοῦ μέτων  
 πατρός, μάστιγι χρώμενος ἀριστοτέλει. ἀπολι  
 λόδωρ δὲ ὁ γραμματικὸς ἐν τοῖς χρονικοῖς φη  
 σὶν, ὡς ὧν μέτων μὲν υἱός. εἰς δὲ θουρίου αὐ  
 τὸν νεωστὶ παντιλῶς ἐκτισμένον γλαῦκος ἐλθεῖν  
 h h 2 φησὶν



φησίμ. εἴθ' ἔποβαίς. οἱ δ' ἰσοροῦντο, ὥς οἰκοθεν περ  
 φύγῃς εἰς τὰς συρακούσας, μετ' ἐκείνων ἐπείλει  
 πρὸς σὺν ἀθλῶν αἶσιν, τελείως ἀγνοεῖν δοκοῦσιν. ἢ γὰρ  
 ἐκ' ἐτ' ἴω, ἢ παντελῶς ἔπορχει γηρακῶς, ὃ πόρ' ἔφαί  
 νεται. αἰσοτέλης γὰρ αὐτῶν, ἐπὶ τῇ ἡρακλήτῃ, ἐξήν  
 κοντα ἐτῶν φησι τετελευτηκῆναι. ὃ δὲ πρῶτῳ καὶ  
 ἐβδμηκῶς ἴω Ὀλυμπιάδα νενικηκῶς κέληπ, τότ' αὖ  
 πάντως ἴω ὁμώνυμῳ, ὥς θ' ἅμα καὶ τῶν χρόνον, ὅ  
 ποτ' ἀφ' Ἠλίου σιμαίνεσθαι σάτυρ' δὲ ἐν τῇ  
 βίοις φησίμ, ὅτι ἐμπεδοκλῆς, υἱὸς μὲν ἴω θηαινέτῃ.  
 κατέλιπε δὲ καὶ αὐτὸς υἱὸν θηαινέτῃ. ὡς γὰρ αὐτῷ  
 ὦν Ὀλυμπιάδῃ, τῶν μὲν ἵππῳ κέληπ νενικηκῆναι.  
 τῶν δὲ υἱὸν αὐτοῦ, πάλλῃ. ἢ ὥς ἡρακλείδης ἐν τῇ ὡν  
 μῇ, εὐόμῳ. ἐγὼ δὲ εὐρομ ἐν τῇ ἔπομνήμασιν φαβω  
 εἶναι, ὅτι καὶ βοῶν ἔβουσε τῇ θεοῖς ὃ ἐμπεδοκλῆς  
 ἐκ μέλιτ' καὶ ἀλφίτῃ, καὶ ἀδελφὸν ἔαχε καλλι  
 κρατίδῳ. τηλαυγῆς δὲ ὁ πυθαγόρου παῖς ἐν τῇ  
 πρὸς φιλόλαον ὡν σολῇ φησί τῶν ἐμπεδοκλῆα ἀφ'  
 χινόμου εἶναι υἱόν. ὅτι δὲ ἴω ἀκραγαντίν' ἐκ σικε  
 λίας, αὐτὸς ἐναρχόμενος τῶν καδαμεῶν φησίμ.  
 ὡς γὰρ οἱ μέγα ἄστυ καὶ ξανθὸν ἀκραγαντίν'  
 ναίετ' αὐτὸν ἀκραγαντίν'.

καὶ τὰ μὲν ποιεῖ τοι γῆναι αὐτοῦ, τὰ δὲ ἀκούσαι δ'  
 αὐτῶν πυθαγόρου τίμαι' ὅσα τῇς ἐνάτης ἰσορεῖ λέ  
 γων ὅτι καταγινώσκεις ὡς λογισπεία τότε καθεῖ  
 καὶ πλάτῃ, τῇ λόγων ἐκωλύθη μετέχει. μεμνή  
 σται

ὅσα δὲ καὶ αὐτὸν πυθαγόρου λίσονται.  
 ὧ δὲ τις ἐν κείνοισιν ἀνὴρ, ποδωδίστα εἰδὼς  
 ὅς δὴ μήκισον παρπιδίων ἐκτίσας πλοῦτον.  
 οἱ δὲ, ἔδωκε ἑὶς παρμυλίδην αὐτὸν λέγειν ἀναφορῶν  
 τα. φησὶ δὲ νεάνθης ὅτι μέγιστον φιλολατῶν καὶ ἐμπεδοκλή-  
 κλῆτος, ἐκρινώμενος οἱ πυθαγόρειοι τῷ λόγῳ. ἐπεὶ  
 δ' αὐτὸς δὴ τῇ πρὸς ἡμᾶς ἐδημοσίωσεν αὐτὰ, νόμον  
 ἔβηντ' ἐκτὸς μετὰ δώσειν ἐπ' ἡρώ. τὸ δ' αὐτὸ καὶ  
 πλωτῶνα φησὶ παθεῖν. καὶ γὰρ ἔδωκεν κωλυθῆναι. τί  
 μὲν γὰρ αὐτῷ ἤκουσεν ἐμπεδοκλήης, ὅτι εἶπεν.  
 τίς γὰρ προφθορὸς ἐστὶν πρὸς τηλαυγοῦς ὑψιστοῦ  
 ὅτι μετὰ χεῖρ ἰπποκράτους καὶ βροντίνου, μὴ εἶναι ἀξιοπύ-  
 σον. ὁ δὲ θεόφραστος παρμυλίδης φησὶ ζηλωτὴν αὐ-  
 τὸν γινώσκειν, μὴ μὴ τῶν ἐν τῷ τῆς τῆς. καὶ γὰρ ἐκεί-  
 νος ἐν ἑπείδει τὸν ποδωδίστα λόγον ἐξενεγκεῖν. ἐρ-  
 μωπῶ δὲ, ὅτι παρμυλίδης ἐξνοφάστου δὲ γέγονε  
 ζηλωτὴν. ὧ καὶ συσφραττεῖται καὶ μὴ ἴσασθαι τὴν  
 ἐπ' ἡρώ. ὕψιστον δὲ τῶν πυθαγορείων ἐντυχεῖν. ἀλ-  
 κιδάμας δ' ἐν τῷ φυσικῷ φησὶ καὶ αὐτὸν αὐτὸν χεῖρ  
 ν. τὸν ζῶονα καὶ ἐμπεδοκλήα ἀκούσαι παρμυλίδης.  
 εἴθ' ὕψιστον ἀπεχωρῆσαι. καὶ τὸν μὲν ζῶονα, καὶ πρὸς  
 δῖαν φιλοσοφῆσαι. τὸν δὲ, ἀναξαρξοῦς δὴ ἀκούσαι καὶ  
 πυθαγόρου. καὶ τὸ μὲν, τὴν σεμνότητά ζηλωσαι, τοῖς  
 τε βίου καὶ τοῖς ὀφείμασι. τὸ δὲ, τὴν φυσιογνωσίαν.  
 αἰσοτέλης δὲ ἐν τῷ σοφιστῇ φησὶ, πρῶτον ἐμπεδοκλή-  
 κλήα ἐκτὸς ἐντυχεῖν. ζῶονα δὲ, δὴ ἀλεκτικῶν. ἐν δὲ



ἴσθ' ποῦ πρὶν τῶν, φησίμ. ὅπ' καὶ ὁμηγευὶς ὁ ἐμπεδοκλῆς  
 κλέος, καὶ δεινὸς ποῦ τῶν φράσιμ γέγονε, μεταφορῶν  
 κὺς τε ὧν, καὶ ρίς ἄλλοις ρίς ποῦ πρὶν πρὶν πρὶν πρὶν  
 γυμνασι γυμνασίῳ. καὶ διόπ' γυμνασίῳ αὐτὸ καὶ  
 ἄλλα πρὶν πρὶν, τῶν τε τοῦ ξοῦρου δεινὰσιμ, καὶ  
 πρὶν πρὶν εἰς ἀπὸ λῶνα, ταῦθ' ὕσθ' ὅρ' καὶ τέχνησιν  
 ἀδελφῶν πρὶν αὐτὸ ἢ θυγατρῶν. ὥς φησίμ ἰδρῶνυμῶν.  
 ἢ μὲν πρὶν πρὶν ἀκούσα. τὰ δὲ πόρσι καὶ βουληθεῖν  
 σα, ὅθ' ἢ ἀτελείωτα εἶναι. καὶ θόλου δὲ φησί καὶ τρα-  
 γωδίας αὐτὸν γυμνασίῳ, καὶ πρὶν πρὶν. ἡρακλείδης  
 δὲ ὁ τοῦ σαραπίωνῶν, ἰδρῶν φησίμ εἶναι τὰς τραγω-  
 δίας. ἰδρῶνυμῶν δὲ φησίμ τοῖς καὶ τεπαρακλῶντα  
 ἐν τετυχηκέναι. φησί δὲ σάτυρῶν ἢ ρίς βίοις, ὅπ'  
 καὶ ἰατρὸς ἢ καὶ ἰητὼρ ἄεισθ'. γοργίαν Γοῦν ἢ  
 λεοντίνον αὐτὸν γυμνασίῳ μαθητῶν, αὐτὸν ἢ ἰατρῶν  
 ταῦν ἢ ἰητῶν, καὶ τέχνησιν ἀπὸ λῶντα. ὅρ' φησίμ  
 ἀπὸ λῶντα ἢ χρονοῖς, ἐννεία πρὸς ρίς ἰητῶν  
 ἢ βιῶναι. ὅθ' φησί ὁ σάτυρῶν λέγειμ, ὥς αὐτὸς  
 παρσίμ ἴσθ' ἐμπεδοκλῆς γοητῶν. ἀλλὰ καὶ αὐτὸν  
 ὅθ' τῶν πρὶν πρὶν ἐπαγγέλλεσθαι ὅθ' τὲ, καὶ ἄλ-  
 λα πρὶν, δι' ὧν φησί.  
 φάρμακα δὲ ὅσα γυμνασίῳ καὶ γυμνασίῳ ἄλλοις  
 πρὶν, ἐπεὶ μοιῶσσι ἐγὼ κρανίω ταῦτα πάντα.  
 παύσεις δὲ ἀπὸ μᾶτῶν ἀνέμων μένος, οἳ τ' ἢ γυμνασίῳ  
 ὀρνύμνοι πρὶν πρὶν καὶ ταφιδνύθσιμ ἀφ' ἑαυτῶν.  
 ἢ πάλιν ἢ ἢ ἐβίλησθαι πάλιν ταῦτα πρὶν πρὶν ἐπ' ἑαυτῶν  
 θήσεις

θήσεις δ' ἔξ ὀμβροιο κελαυνῶ, καί τοι αὐχμόν,  
 ἀνθρώποις, θήσεις δὲ καὶ ἔξ αὐχμοῖο θόρυβον  
 ῥόυματα δ' ἐνδοθεὶς ἐπὶ αὐτὰ δ' ἐν θόρῳ ἀήσαντα.  
 ἄξεις δ' ἔξ αἰδαο κατὰ φθιμένην μένος ἀνδρός.  
 φησὶ δὲ ἔτι μάλ' ἐν τῇ ἡν καὶ πολλὰς τρέπεις τε  
 θαυμάζεις ἔν τ' ἀνδρά. καὶ γὰρ ἐτῆσι πρὶ σφοδρῶς  
 πυδυσάντων ὡς σὺ καὶ πρὶς λυμνῶναι, κελύσας ὁ  
 νος ἐκ διαρῶναι, καὶ ἀσκήσεις πρὶς αὐτῶν, πρὶς σὺ λόφου  
 καὶ τὰς ἀκροῖας δὴ τῶν πρὶς ὅτι συλλαβεῖν ὅτι πνεῦ  
 μα. λύσαντες δὲ, καὶ λυανέμαν κληθῆναι. ἡρακλείδης  
 δὲ ἐν ᾧ ποδὶ νόσω, φησὶ καὶ παυσανία ὑψηλίσταται  
 τὰ ποδὶ τῶν ἀπὸ πρὶς. καὶ δὲ φησὶ παυσανίας, ὡς φησὶν  
 ἀρίστη πρὶς καὶ σάτυρ, ἐρωτῶν αὐτῶν. ᾧ δὲ καὶ  
 τὰ ποδὶ φύσεως προσφώνηκεν οὐτῶν,  
 παυσανία σὺ δὲ κλυδί διαίφρου ἀγχιτὸς ὑῖ.  
 ἀλλὰ καὶ ἐπὶ γράμμα εἰς αὐτὸν ἐπρήσε,  
 παυσανίῳ ἡγετὸν ἐπὶ νόμον ἀγχιτὸς ὑῖ  
 φῶτ' ἀσκληπιάδῳ πατεὶς ἐβρεττε γέλα,  
 ὅς τ' ἄλλους μογερτοῖσι μαρτυρομένην καὶ μαρτυρί  
 φῶτας ἀπὸ σφύων πόρσεφόνης ἀδύτῳ.  
 τῶν Γούῳ ἀπνοῦ, ὁ ἡρακλῆτης φησὶ τριτὸν πρὶς  
 ὡς τεινόντα ἡμόρας σωτηρεῖν ἀπνοῦ καὶ ἀσκη  
 πρὶς ὅτι σῶμα. ὅθεν καὶ ἐπὶ αὐτὸν ἔτι ἰατρὸν ἔτι μάλ'  
 πρὶς λαμβάνων ἅμα ἔτι ἀπὸ τῶν τῶν σίχων.  
 ᾧ φίλοι οἱ μέγα ἄστυ καὶ ξανθὸν ἀκραγαντῶ  
 καί τ' ἀκρὰ πρὶς ἀγαθῶν μελεδήμονος ἔργων  
 χαίρει



χαίρετ'. ἐγὼ δ' ὕμῃν θεὸς ἄμβροτ' ἔν' ἐπ' οὐκῆρς  
 πωλεῦμαι μῦθε πάσι τε τιμήμην, ὥς πόρ' ἴοικε,  
 ταινίαις τε πόρισε πῆλ' ἑσφιδί τε θαλείης  
 ῥῖσιρ ἄμ' ἐν τ' αὖ ἱκώμαι δὲ ἄξια πηλεθόωντα  
 ἀνδρασιρ ἡδὲ γυναιξὶ σεβίζομαι. οἶδ' ἄμ' ἔπνυται  
 μύριοι, δὲ δρῶντες ὅπῃ πρὸς κοῖρδ' ἄταρ πὸς,  
 οἱ μὲν μανρωσύνων κεχρημένοι, οἱ δὲ πνέσων  
 παντρίων ἐπύθοντο κλύειν ἐυσκία βοδξιν.

μέγαν δὲ τὸν ἀκράγαντα εἰπέμ φησιν ἐπεὶ  
 μυροδιδὸς αὐτὸν ηγατῶκω οὐ γδοήκοντα. ὅθεν ῥῃ  
 ἐμπεδοκλῆα εἰπέμ τρυφόντων αὐτῶν. ἀκράγαντι  
 τῖνοι τρυφῶσι μὲν ὡς αὐτοῖς ἀφθανούμενοι. οἰκίας  
 δὲ ηγατασκιδναζονται, ὡς πάντα ῥῃ χρόνον βιω-  
 σόμενοι. αὐτῶν δὲ τῶν τῶν καδαμετῶν ἐν ὀλυμ-  
 πῷ ἡ ἀφωδῆσαι λέγεται κλειομένη ῥῃ ἀφωδῆν,  
 ὡς καὶ φαβωρεῖν ἐν ἀφμνημονομάτῃ. φησὶν δ'  
 αὐτῇ καὶ ἀριστοτέλης ἐλδύθδον γέρονται καὶ πᾶς  
 σης ἀρχῆς ἀλότητος. εἰ γὰρ τῷ βασιλείᾳ αὐτῶν δι-  
 δομένη παρητήσατο κατὰ πόρ ξανθῶν ἐν ῥῖς πε-  
 ρὶ αὐτῶν λέγει, τῷ λιτότητα δηλονότι πλείον ἀγα-  
 πῆσας. τὰ δ' αὐτὰ καὶ τίμαι εἰρηκε, τῷ αὐτίαν  
 ἅμα παραπθήμεναι τὸ δημοτικὸν εἶναι ῥῃ ἀνδρα.  
 φησὶ γὰρ ὡς κληθεῖν ἔω πνῶ τῶν ἀρχόντων, καὶ  
 προβαίνοντες τὸ πρὶν ῥ' εἰπνομ ἐν εἰσεφορῶ.  
 τῶν δ' ἄλλων ἡσυχάζοντων μισοτηνέως διατεθείς  
 ἐκίλδουσιν εἰσφορεῖν. ὁ δὲ κεκληκὼς ἀναμνήσιν ἔφη  
 ῥῃ

ἔμ. τῇ βουλῇς ὑπερέτιμι. ὡς δὲ παρεγρήσο ἔγρηθη  
 συμπροσίαρχο, τῷ κεκληνητόθ δηλονόπι ηγασή  
 σεντο, ὅς ὑπεγράφο τρυαννίδο ἀρχῆς. ἐκέν  
 λουσε γὰρ, πίνειν ἢ ηγασχέοιδο τῇ κεφαλῇς. τότε  
 μὲν ὁὖν ὁ ἰμπεδοκλῆς ἡσύχασε. τῇ δ' ὕσδορ αἶα εἰσα  
 γαγῶν εἰς διησήμεον, ἀπέντενε ηγασδικασας  
 ἀμφοτόρτου, τὸν τε κλήτρεα καὶ τὸν συμπροσίαρχον.  
 ἀρχὴ μὲν ὁὖν αὐτῇ τῆς πελιτείας. πάλιν δὲ ἀκρω  
 νῶ τῷ ἱατροῦ τῆς αἰγῶντο παρὰ τῆς βουλῆς  
 εἰς ηγασκλῶν πατρώου μνήματόθ δῆα τὴν ἐν  
 τῇς ἱατροῖς ἀκρότητα, παρελθὼν ὁ ἰμπεδοκλῆς, ἐκώ  
 λυσε, τῷ τε ἄλλα πόδι ἰσότητόθ δῆλεχθεῖς, καί  
 γι καὶ τριούτῳ ἐρωτήσας. τί δὲ ὑπὲρ γράφομεν ἔλε  
 γειον; ἢ γὰρ;

ἀκρον ἱετῶν ἀκρων ἀκραγαντῖνον πατρός ἀκρῶ  
 κρύπτει κρημνὸς ἀκρῶ πατρίδο ἀκροτάτης.  
 πνὺς δὲ τὸν δούτορον σίχρ, οὕτω προφύονται.

ἀκροτάτης κορυφῆς τύμβο ἀκρῶ ηγαστέχει.  
 γὰρ πνὺς σιμωνίδος φασὶν εἶν. ὕσδορον δ' ὁ ἰμπεδο  
 κλῆς καὶ τὸν τῶν χιλίων ἄθροισμα ηγαστέλυσε σωει  
 τῶς ὑπὲρ τῆς τεῖας. ὡς τε ὁ μόνον μὲν τῶν πλουσίων  
 ἀλλὰ καὶ τῶν τὰ δημοτικὰ φρονουμένων. ὁ γὰρ τιμὰ  
 ῶ τῇ πρῶτῃ καὶ δούτορα, πελάκεις γὰρ αὐτοῦ  
 μνημονοῦει, φασὶν ἐναντίαν τῇ πελιτεία δούχην ἔχει  
 γνώμῳ αὐτῷ, ὅπερ δὲ ἀλαζόνα καὶ φίλαυτον ἐν τῇ  
 περὶ σέ. φασὶ γοῶν.



χαίρει' ἐγὼ δ' ὑμῖν θεὸς ἄμβροτ' ἐκ' ἐπιθυηρῶν  
 πωλεῦμαι. καὶ τὰ ἐξῆς. καθ' ὃν δὲ χρόνον ἐπεδύ-  
 μει ὀλυμπιοισιν ὤλιστροφῆς ἡξιᾷ πλείον', ὥς τε  
 μηδιστὸς ἐτόρ' ἀνέειαν γίνεσθαι ἐν ταῖς ὁμιλίαις τρι-  
 σαύτῳ ἐμπεδοκλήσῳ. ὅσδ' ὁρ' ἔμ' ἔρι τοῖς ἀκράγαν-  
 ὅς οἰκιστομένους, ἀνέστησαν αὐτοὶ τῇ καθόδῳ οἱ τ' ἐχί-  
 βρων ἀπρόνοι. διό πορ εἰς πελοπόννησον ἀρχωρῆας  
 ἐτελεύτησε. ὃ παρῆκε δὲ ὅδε ἔδωκεν ὁ τίμων. ἄλλως  
 δ' αὖτ' ἡσυχάσθαι λέγων, ἡ ἐμπεδοκλῆς ἀγορεύων  
 κηλητὴς ἐπείω, ὅσα δ' ἔδωκεν τρασάδε εἶλιν  
 ἀρχων. ὃς δὲ ἔθνη ἀρχὰς ὤλιδ' ὀνίας ἄλλων.  
 ποῦ δὲ τοῖς θανάτοισιν αὐτοῖς ἀφ' ὅσων ὁ λόγος.  
 ἡρακλείδης μὲν γὰρ τὰ ποῦ τ' ἄπυσσ' ἀνιησάμε-  
 νος, ὥς ἐδιδάκθη ἐμπεδοκλῆς ἀρσεύας τῷ νεκρῷ  
 ἀνθρώπων ζῶσαν, φησὶν ὅτι θυσίαν (ὡς ἐτελεί πρὸς ὃν  
 πεισιπύαντος ἀγρῶ. (ὡς ἐκίχλιν δὲ τ' ἐλιν πύας  
 ἐν οἷς καὶ πανσενίας. ἔτα μὲν τῷ ἐνωχίαν οἱ μὲν ἄλ-  
 λοι χωροδύντες ἀνεπαύοντο. οἱ μὲν ἔπο' ῥις δένδρεσις  
 ὥς ἀγρῶ παρακειμένους. οἱ δ' ὅπη βόλιν. αὐτὸς δ'  
 ἔμεινεν ὡδ' τοῖς τόποις ἐφ' ὃ πορ ἡρακλῆος. ὥς δὲ ἡ  
 μόρας γνηθείσης ἀνέστησαν, ὃ χ' ἐνέβη μόνον. ζή-  
 τος μόνου δὲ καὶ τῶν οἰκετῶν ἀνακεινομένων (ὃ φασί-  
 νον τῶν μὴ εἰδέναι, εἰς πρὸς ἐφ' ἡ μίσωρ νυκτῶν φωνῆς  
 ἔπορ μετὰ τοῦ ἀκούσαι προσήλου μόνους ἐμπεδο-  
 κλῆα. ἔτα ἀνασας ἐρακύναι φῶς ὁρασίον, ὃ λαμ-  
 πρῶν φέγγος, ἄλλο δὲ μηδὲν. τῶν δὲ, ὃς ὃ γηομένον  
 ἐκ

ἐκπλαγῆ τῇ καρτὰς ὁ πανανίας ἐπεμψέναις ἐν  
 τῇσιν. ὕσδρον δὲ ἐκωλύθη πλυπραγμονεῖν, φασί  
 κωρ ἐν χῆς ἄξια συμβεβηκέναι. καὶ θύμῃ αὐτῷ δέειν, κα  
 δὰ πρὶς ἐκγονότι θεῷ. ἐρμυππῶ δὲ ἔφη πείθειαν ἵνα  
 ἀκραγαντίνω ἀπηλπισμένην καὶ τῷ ἰατρῶν θόρα  
 πεύσαι αὐτῇ, καὶ ὅτε ἔσται τῷ θυσίαν ὡς τελεῖν. σὺ δὲ  
 κληθέντας εἶναι πρὸς σὺν ὁ γδοήκοντα. ἰππόβορος δὲ  
 φησὶν ἐξακασάντα αὐτῇ ὠδενκέναι ὡς τῷ αὐτίνω.  
 ἔτα πῶς ἀγρόμηνον τῷ σὺν κρατῆρας τοῦ πυρὸς ἐναλὲν  
 ὅς τῳ ἀφανισθῆναι, βυλόμενον τῷ ποδὶ αὐτῇ φήμην  
 βεβαιῶσαι ὅτι ἐκγονοὶ θεός. ὕσδρον δὲ γνωσθῆναι ἀ  
 ναρξίω πιδείσης αὐτὸ μᾶς τῇ κρηπίδω. χαλκᾶς γὰρ  
 εἰδισο ὡς δέει. πρὸς ἔσται ὁ πανανίας αὐτὸς τελεῖν.  
 διόδορος δὲ ὁ ἐφίσιος ποδὶ ἀναξιμασίδου γραφῶν  
 φησὶν ὅτι ἔσται ἐκλήκει τραγικὸν ἀσκήτων τυφόν  
 σεμνὴν ἀναλαβὼν ἀσθῆτα. γὰρ δὲ σελινδυνίοις ἐμπε  
 σόντες λαιμὸς ὅς τας ἀπὸ τοῦ ποδὶ κημένους ποταμὸς δυ  
 σωδίας, ὡς τε ἔσται αὐτῷ φθείρεας καὶ τας γυναικας  
 δυσουεῖν, ὡς νοσῆσαι τῇ ἐμπεδοκλήα καὶ δύο ἵνας ποτα  
 μὸς τῇ σωέγγυς ἐπαγαγεῖν, ἰδίαις διαπάναις. καὶ κα  
 ταμίξαντα γλυκάναι τὰ ξεύματα. οὕτω δὲ λήξαντες  
 τοῦ λαιμοῦ, καὶ τῇ σελινδυνίῳ ἐνωχόμενων ποτὶ πῶς  
 ὅς ποταμῷ ὡς φανῆναι τῇ ἐμπεδοκλήα. σὺ δὲ ἔξανα  
 σάντας προσκυνεῖν καὶ προσδύχεας καὶ ἀπαρτῆς θεῷ.  
 ταύτῃ οὕτω θέλοντα διαβεβαιῶσαι τῷ διαληψίῳ  
 εἰς τὸ πῦρ ἐναλῆναι. τῷ γὰρ δὲ ἔξανα πῶται τίμαι



ξητῶς λέγων ὡς θζεχώρησεν εἰς πελοπόννησον καὶ  
 ἢ σωόλορ ἐκ ἐπανήλθεν. ὅθεν αὐτὸ καὶ τῷ τελευ-  
 τῷ ἄδηλορ εἶναι. πρὸς δὲ ἢ ἡρακλείδω καὶ θζε ὁ  
 νόματ' ἡριεῖται τῷ ἀντήρησιρ ἐν τῇ τεταρτῇ.  
 συρξαναρούσιόρ τε γὰρ εἶναι ἢ πεισιανῆκα καὶ ἀ-  
 γρόρ οὐκ ἔχειρ ἐν ἀκραγαντι. παυσανίαν τὲ μνη-  
 μέιορ πεπρικέναι τὸ φίλου, τριούρου δ' ἀδουθγντ'  
 λόγῳ, ἢ ἀγαλμάτιόρ π' ἴσηκεν οἷα θεοῦ. καὶ γὰρ πλού-  
 σιορ εἶναι. ὥς ὅω φησίρ εἰς σῶς κρατῆρας ἤλατ',  
 ὡρ συώγγυς ὄντ' ἢ ἐδὲ μνείαν ἡρτίεπετρήν. τετε-  
 λούτηκεν ὅω ἐν πελοπόννησῳ. ἐδὲρ δὲ παρὰ δρομ-  
 τάλφορ αὐτὸ μὴ φαίνεσθαι. μηδὲ γὰρ ἄλλωρ πολλῶν.  
 τριαῦτα πινὰ εἰπὼρ ὁ τίμαι' ὡιφόρει. ἀλλὰ δ' ἔ-  
 παντός ὅστιρ ἡρακλείδης τοιοῦτ' ἡ παρὰ δρολό-  
 γ' καὶ ἐκ τῆς σελλώης πεπτωκέναι ἀνθρωπρ λέ-  
 γωρ. ἰωπρόβοτ' δ' εἴ φησίρ ὅτι, ἀνδρείας ἐγκυκαλυμ-  
 μέν' ἐμπεδοκλῆς ἐκείρ πρότορορ μὲν ἐν ἀκρα-  
 γαντι, ὕσδορορ δὲ πρὸ τοῦ ξωμαίων βουλομένης ἀ-  
 κήλυφ', δηλονότι μεταθγντ' αὐτ' ἢ ξωμαίων.  
 γραπταὶ μὲν γὰρ εἰσι πνῆς, καὶ νῦν ποδιφόρονται.  
 νεαύθης δ' ὁ κυζικεύς ὁ καὶ πόδι τῶν πυθαγορεικῶν  
 εἰπὼρ, φησί μὲν τῶν τελευτήσαντ' τυραννίδ' ἡ-  
 ἀρχὴν ὑποφύεσθαι. εἴτα ἢ ἐμπεδοκλῆα πείσαι σῶς  
 ἀκραγαντίνου παύσεσθαι μὲν τῶν σάσεων. ἰσότη-  
 τα δὲ πλιπικῶν ἀσκήειρ. ἐπ' τε πρὸς τῶν πλιτί-  
 δωρ ἀπείκους ὑπαρχούσας, αὐτ' ἢ πνῆσαι, δ' ἔ-  
 παρόντα

παρόντα πλοῦτον. διὸ δὴ προφύσαν τὲ ἀναλαβείν  
αὐτὸν καὶ σφόδρον ὑπὲρβῆσαι χρυσοῦν ὡς φαβωρίν·  
ἐν ἀκρυνημονοῦμαί τῃ πρώτῃ. ἐπὶ τὴ ἐμβάδας χαλ  
κᾶς καὶ σίμα δελφινὸν. κόμητε ἡμεῖς αὐτῷ βαθεία,  
καὶ παῖδες ἀκόλουθοι. καὶ αὐτὸς ἀεὶ σκυθρωπὸς ἐφ'  
ἐνὸς σχήματι· ἡμεῖς ῥιούτῃ δὴ προήει, τῇ περὶ  
τῇ ἐντυχόντῃ, καὶ ἔδωκε ἀξιοσάντῃ οἰονεὶ βασιλεί  
ας πινὸς παρὰσημον. ὕσδρον δὲ διαί τινα παυήγυ  
ριν προδούμνον ἐφ' ἀμολξῆς ὡς εἰς μεσλήν, πε  
σεῖν καὶ ἔρ μηρὸν κλάσαι. νοσήσαντα δ' ἐκ τῶν  
τελευτήσασιν ἐτῶν 7 καὶ 6. εἶναι δ' αὐτὸ καὶ τὰ  
φορὴν μεγάλους. πόδι δὲ τῇ ἐτῇ ἀριστοτέλης ὄρα  
φόρεται. φησὶ γὰρ ἐκεῖν· 5 ἐτῶν αὐτὸν τελευτή  
σαι. οἱ δὲ 8 καὶ 9. ἡμεῖς δὲ κατὰ τὴν Δ καὶ  
π ὀλυμπιάδα. δημόκειτ· δὲ ὁ τριζών· ἐν  
τῷ ἡγεμονιστῶν βιβλίῳ φησὶν αὐτὸν καὶ ὁμηρον.  
ἀφ' αὐτῶν βρόχον αἰώνιον ἀφ' ὑψηλοῦ κραναίης  
αὐχρὴν ἀκρυρεμάσαι. ψυχὴν δ' αἰδός· δε κατελθεῖν.  
Εἰ δὲ τῷ προειρημένῳ τηλαυγοῦς ὑπὲρβῆσαι λέγε  
ται αὐτὸν εἰς θάλατταν ὑπὸ γήρας ὀλιόθῃσαντα τε  
λευτήσαι. καὶ ταῦτα μὲν πόδι τοῦ θανάτου καὶ ῥοαῖ  
ται. φόρεται δὲ καὶ ἡμῶν εἰς αὐτὸν ἐν τῇ παμμέτρῳ  
σκηωπικόν μὲν, ἔδωκε δ' ἔχον ἔρ τρέπον.  
ὡς σύ περ' ἐμπεδόκλης διορῇ φλογὶ σῶμα καθήρας  
πῦρ ἀπὸ κρατήρων ἐκπιδὼ ἀθανάτῃ.  
ἐκείνῳ δ' ὅτι σαρτὸν ἐβαλεῖς ὅς ῥοον αὐτῆς.



ἀλλὰ λαβῆν ἐβέλων ἔμπροσθεν ἐκ ἐβέλων.

Καὶ ἄλλο.

ναὶ μὲν ἔμπεδοκλεία θανεῖν λόγῳ ὥς πρὸ ἁμάξης  
ἐκπόμε καὶ μηρὸν κλάσας τ' δεξιτόρῳ.

εἰ δὲ πρὸς κρατῆρας δούλας καὶ πῖε τ' ῥεῖν  
ὥς αὖ ἐτ' ἐν μεγάροις δεικνύν τ' ὅδε τὰ φθ;  
ἰδόνει δὲ αὐτῷ τὰ δὲ. σοιχεῖα μὲν εἴη τέτρατα, πῦρ,  
ὔδωρ, γλῶ, ἄδρα. φιλίαν τ' ἢ συγκρίνει, καὶ νείκε  
ὧ δ' ἀκρίνεται. φησὶ δ' οὕτω,

ζεὺς ἀργῆς, ἤρητε φορέσβι, ἡδ' αἰδωνεύς  
νῆσις θ' ἢ δακρύοις ἐκ πικροῖ ὄμμα βρότειον.

Δία μὲν τὸ πῦρ λέγων. ἥρην δὲ τῶν γλῶ. αἰδων  
νῆα δὲ τὸν ἄδρα. νῆσις δὲ τὸ ὔδωρ. καὶ ταῦτα  
φησὶν ἀματόμενα διαμπεδρὺς οὐδ' αὖ μοῦ λήγει,  
ὥς αὖ αἰδίου τῆς τοιαύτης διακροσμήσεως οὐσης.  
ὡς φέρει γούν.

ἄλλοτε μὲν φιλότιπ' σιωδ' ἰχθύν' εἰς ἕρ' ἅπαντα,  
ἄλλοτε δ' αὖ δίχ' ἐκασα φορδύμνα νείκε ἔχθει.  
καὶ τ' μὲν ἥλιον φησὶ πρὸς ἄθροισμα μέγα, καὶ  
τῆς σελιώης μείζω. τὴν δὲ σελιώην Διοκρεῖ  
δῆ. αὐτὸν δὲ τὸν οὐρανὸν κρυσαλλεῖ δῆ. καὶ τῶν  
φυχλῶ παντοῖα εἶδ' ἡ ζώων καὶ φυτῶν ἐνδύεσθαι.  
φησὶ γούν.

ἡδ' ἡ γὰρ πρὶ ἐγὼ γρόμιον κοῦρ' ἡδ' ἡ κρήν' ἡ  
δάμν' ἡ τ' οἰωνός τε, καὶ ἡ ἀλὸς ἔμπροσθεν ἡ χθὺς.  
τὰ μὲν οὖν ποδὶ φύσεως αὐτῶν καὶ οἱ κηδεσμοὶ εἰς  
ἴση

ἔπη τείνουσι πνυτακιοχίλια. ὁ δὲ ἰατρικὸς λόγος  
εἰς ἔπη θζακόςια. πόρῃ δὲ τῶν τραγωδιῶν πρὸς  
ρήμασιν.

## ΕΠΙΧΑΡΜΟΣ

**Ε**Πίχαρμος ἡλεδαλοῦς κῶτος καὶ ἔτος ἦκον  
σε πυθαγόρου. τριμυιαῖος δ' ὑπαρχων, ἀ/  
πλώιχθη τῆς σικελίας εἰς μέγαθα. ἐντεῦθεν δὲ εἰς  
συρακούσας, ὡς φησιν καὶ αὐτὸς ἐν τῆς συγγραμ/  
μασι. καὶ αὐτῷ ὑπὸ τοῦ ἀνδριαντοῦ ἐπιγέγρα/  
πτου τόδε.

ὅτι παραλαβὸς φαίθωρ μέγας ἄλιος ἄσρων  
καὶ πόντος πταμῶν μείζον' ἔχει δυνάμιν,  
φημὶ ροδῶν ἐγὼ σοφία πρὸς ἐπίχαρμον  
ὃν πατέρις ἐσεφάνωσ' ἄδελφον συνηροσίωρ.

ἔργα ὑπομνήματα καταλέλοιπεν, ἐν οἷς φυσιολογῇ,  
γνωμολογῇ, ἰατρολογῇ. καὶ παρασιχίδια τῆς πλεί/  
στοις τῶν ὑπομνημάτων πεπρίκην. οἷς ὁλοσπερ εἶπεν  
αὐτὸς ὅτι τὰ συγγραμματα. βιστὸν δὲ ἔπη ἐν γνήκον/  
τα κατέστρεψεν τὸ γλῶ.

## ΑΡΧΥΤΑΣ

**Α**Ρχύτας μνησαγόρος παραντίνος, ὡς δὲ ἀριστό/  
ξενος, ἰσικαίου, πυθαγορικὸς καὶ αὐτός. ἔτος  
ἔστιν ὁ πλάτωνας ἐν σάμῳ δι' ὑπὸ σολῆς παρὰ διο/  
νυσίου μέλλοντα ἀναιρεῖσθαι. ἰθαυμαζέτω δὲ καὶ πα/  
ρὰ τοῖς πολλοῖς ὑπὸ πάσης ἀρετῇ. καὶ Δὴ ἔωτα,



κίς τῶν πρὸ τῶν ἱσραήλ γινώσκουσιν, τῶν ἄλλων μὲν πλείονος  
 ἔνιαυτοὺς στρατηγουῦν τῶν δὲ ἄλλων ἡ κωλύειν ἢ νόμος.  
 πρὸς ἑαυτὸν καὶ πάλιν γέγραφε ὑπὸ τοῦ Διὸς  
 ἐπειδὴ πόρ αὐτῷ πρὸς τὸν γέγραφε ἑαυτὸν τὸν  
 τρόπον.

Ἀρχύτας πάλιν ὑγιαίνειν.

Καλῶς πρὶς ὅτι ἀκρίβους ἐκ τῶν ἀρξῶν  
 αὐτῶν γὰρ αὐτὸς τε ἐπέσταλτος, καὶ ἡ πόλις δια-  
 μνησκὸν ἀπὸ γένους. πόλις δὲ τῶν ὑπομνημάτων ἐπε-  
 μελήθημεν καὶ ἀνέληθον ὡς λυσιτελεῖν καὶ ἐνέτι-  
 χοντες ἡ δὲ ἐκείνῳ ἐκείνοις. τὰ μὲν ὅν ποδὶ νόμῳ καὶ  
 βασιλείᾳ καὶ ὁσιώτατος καὶ τὰς τῶν πάντων γι-  
 νῶσι αὐτὸς τε ἔχοντες καὶ πᾶσι ἀπεσταλμένοις.  
 τὰ δὲ λοιπὰ ἔτι νῦν γε δύνανται ἐνρεθῆναι. αὐτὸς  
 ἐνρεθῆναι ἔχειν. ὥστε μὲν ὁ ἀρχύτας, ὁ δὲ πάλιν  
 ἀντεπιστέλλει ἑαυτὸν ἢ τὸν τρόπον.

Πάλιν Ἀρχύτας ἐν πρᾶττι.

Τὰ μὲν παρὰ σοῦ ἐλθόντα ὑπομνήματα δαυμα-  
 σῶς ἄσμενοι τε ἐλάβον καὶ τοὺς γράψαντας αὐτὰ  
 ὑγαλάνην ὡς ἐνὶ μάχῃ. καὶ ἔδωκεν ἡμῖν ἀνὴρ ἄ-  
 ξιος ἐκείνων τῶν παλαιῶν προσόντων. λέγονται γὰρ  
 οἱ ἀνδρὲς ἔτι μυρᾶναι εἶναι. ἔτι δὲ ἦσαν τῶν λαοῦ  
 μέδοντες ἡ ἀνασάντων τρώων, ἀνδρὲς ἀγαθοὶ ὡς ὁ  
 παραδεδωκέναι μὲν δὲ δυνάμεις. τὰ δὲ παρὰ ἐμοὶ ὑπο-  
 μνήματα ποδὶ ὅν ἐπέσταλτος ἡμεῖς μὲν ἔτι  
 ὡς Διὶ γὰρ τυγχάνει ἔχοντες ἀπὸ ἐσταλθέν σοι ποδὶ  
 δὲ ἔτι

δε ὅτι φυλακῆς ἀμφοτέρωθεν συμφωνῶν, ὥς τε ὁ δὲ  
 δεῖ παρακελεύεσθαι. ἔρῳσθ.  
 καὶ ὥστε ἢ πρὸς ἀλλήλους αὐτῶν ἔχουσιν αἱ ὑψολαί.  
 γλόνιασι Δ' ἀρχύται τέταρτος αὐτῶν δ'  
 τῷ. διδύτῳ μετυλλωαῖ μουςικῶς. τρίτῳ  
 πῶδε γαργίας συγγεγραφῶς. τέταρτῳ ὑψογραμ-  
 μαρτηριός. ἔνιοι καὶ πέμπτῳ ἀρχιτεκνῶνα φασί. ὁ  
 φόρεται βιβλίον πῶδε μηχανῆς, ἀρχὴν ἔχον ταύ-  
 τῳ. τῷδε παρὰ τούτου καρχηδονίου δεικνύσθαι.  
 πῶδε δὲ τὸ μουσικῶν φόρεται. καὶ τῷδε, ὥς οὐκ ἐπιζο-  
 ρῶν ὡς μὴ δεκνύεσθαι εἴπῃ. ὁ γὰρ ὅργανον  
 ἐπὶ ἐμοῦ δὲ γωνιζόμενον λαλεῖ. ὅν δὲ πυθαγόρου  
 κῶν ἀεισόξῳ φησὶ μηδὲ πρὶν στρατηγῶντα ἡτῆ-  
 ρῶναι. φθονοῦμενον δ' ἀπαξ ἐκχωρῶντα ὅτι στρατηγί-  
 ας, καὶ οὗ αὐτίκα ληθῶναι. ὅτῳ πρῶτῳ τὰ μη-  
 χανικὰ ταῖς μηχανικαῖς προσχεσάμεν ἀρι-  
 χαῖς ἐμεθώδισσε. καὶ πρῶτῳ κίνησιν ὀργανικῶν  
 ἀεζαμματα γωμετρικῶν προσήγαγε δὲ τῆς ρι-  
 μῆς τὸ ἡμικυλίνδρου δύο μῖσας ἀνάλογον λαβεῖν  
 ζητῶν εἰς τὸν τοῦ κύβου διπλασιασμόν. καὶ γω-  
 μετρία πρῶτῳ κύβον εὗρεν, ὥς φησι πλάτων ἐν  
 πολιτείᾳ.

## ΑΛΚΜΑΙΩΝ

**Α**λκμαίωρ κροτωνιάτης καὶ ὅτῳ πυθαγόρου  
 δεικνύσθαι καὶ τὰ πλείστα γὰρ ἰατρικὰ λέγει. ὁ  
 μὲν δὲ καὶ φυσιολογεῖ ἔνιοι λέγων. δύο τὰ πρῶτα  
 k k      351



ἔστι τῷ ἀνθρώπῳ. δοκεῖ δὲ πρῶτος φυσικὸν λόγον  
 συγγεγραπῆναι καὶ φησι φαβρίνθον ἐν παντοδα-  
 πῇ ἰσορίᾳ, καὶ τῷ σελυῶνι καθόλου ταύτῃ ἔχει  
 αἰδιον φύσιν. ὡς δὲ πείθει ὅς, ὡς αὐτὸς ἐναρχόμε-  
 νος τοῦ συγγραμματος φησί. ἀλκμαίω κροτωνι-  
 ήτης, τῷ δὲ ἔλεξε, πείθει ὅς, βροτίνω, καὶ λείοντι,  
 καὶ βαθύλῳ. ποῦ γὰρ ἀφανίω ποῦ τῷ θνητῷ σε-  
 φύειαν μὲν θεοὶ ἔχουσι. ὡς δὲ ἀνθρώποις τεκμαίρεται  
 καὶ τὰ ἑξῆς. ἔφη δὲ καὶ τῷ ψυχλῷ ἀδάναρρ καὶ κί-  
 νησθαι αὐτῷ συνεχῶς ὡς ὅτι ἡλιον.

## ΙΓΓΑΣΟΣ

ΙΓΓασος μεταπνυτίνος καὶ αὐτὸς πυθαγορείος.  
 ἔφη δὲ χρόνον ὡρισμένον εἶναι τῆς τοῦ νόμου με-  
 ταβολῆς, καὶ πεπρασμένον εἶναι ὅτι πᾶν καὶ ἀεικί-  
 νητον. φησὶ δ' αὐτὸν Δημήτριον ἐν ὁμωνύμοις μη-  
 δερ καταλιπέιν σύγγραμμα. γεγόνاسι δὲ ἴστωσσι  
 δύο. ἓτ' ὅτι, καὶ ἑτέρ' ὅτι γεγραφὼς ἐν βιβλίοις  
 λακόνων πολιτείας. ὡς δὲ καὶ αὐτὸς λακων.

## ΦΙΛΟΛΑΟΣ

Φιλόλαος κροτωνιάτης πυθαγορείος. παρὰ τῷ  
 τῷ πλάτῳ ὠνήσαται τὰ βιβλία τὰ πυθαγο-  
 ρικά δίδωνι γραφῆ. ἐτελεύτα δὲ νομοθεῖς ὑπὸ πείρας  
 τυραννίδος. καὶ ἡμῶν ὅστις εἰς αὐτόν.  
 τῷ ὑπόνοιαν πᾶσι μάλιστ' ἀλέγω θόραπύειν,  
 εἰ γὰρ

εἰ γὰρ καὶ μὴ δὴ ἄς ἀλλὰ δοκῆς, ἀτυχῆς.  
 οὕτω καὶ φιλόλορον ἀνέειλε κρότῳ πρὶ πάντων  
 ὥς μιν ἔδωξε θέλει δῶμα τύραννον ἔχειν.  
 δοκεῖ δὲ αὐτῷ πάντα ἀναλγῆ καὶ ἀρμονία γίνεσθαι.  
 καὶ κύκλον τῷ γλῶσφι κινεῖσθαι πρῶτον εἰπεῖν, οἱ δὲ ἐν  
 κέταρ συρακούσιον φασί. γέγραφε δὲ βιβλίον ἐν, ὃ  
 φησιν ἐρμυπῶ λέγειν πινὰ τῷ συγγραφίῳ πλά  
 τωνα τὸν φιλόσοφον πειγνόμενον εἰς σικελίαν  
 πρὸς διονύσιον ὠνήσασθαι παρὰ τῷ συγγενῶν τοῦ  
 φιλολάου, ἀργυρίου ἀλδραυδενῶν μυῶν μ. καὶ  
 ἐντεῦθεν μεταγγραφεῖν τὸν τίμαιον. ἐτόροι δὲ λέ  
 γουσι τὸν πλάτωνα λαβεῖν αὐτὰ παρὰ διονυσίου  
 παραιτησάμενον ἐκ τῆς φυλακῆς νεανίσκον ἀπηνυμέ  
 νων τῷ τοῦ φιλολάου μαθητῶν. ἔδωκε φησὶν διημή  
 τριον ἐν ὁμωνύμοις πρῶτον ἐκδοῦναι τῷ πυθαγο  
 ρικῶν φύσεως. ὧν ἡ ἀρχὴ ἦδε. φύσις δὲ ἐν τῷ κρό  
 μω ἀρμόχθη δὲ ἀπείρων τὴ καὶ πόραινόν τῳ, καὶ ὅ  
 λον κρόμον, καὶ τὰ ἐν αὐτῷ πάντα.

## ΕΥΔΟΞΟΣ

Εὐδοξὸς αἰσχίνου κνίδιον, ἀσρόλογος, γωμῆ  
 τῆς, ἰατρὸς, νομοθέτης. ἔτῳ τὰ μὲν γωμετρικὰ  
 καὶ ἀρχύτα διήκονσε. τὰ δὲ ἰατρικὰ φιλιζίου τοῦ  
 κελιώτου, καὶ ἡγελλίμαχος ἐν τοῖς πίναξι φησὶν. σω  
 τίων δι' ἐν ταῖς ὁδοῦχαῖς λέγει, ὅτι πλάτῳ αὐτὸ  
 ἀκούσαι. γνόμενον Νῆτ γ' πρὸς ἡ ὑστερῶς ὁρακεῖ  
 k k 2 μλλον



μλνορ κτλ κλέθ τῶ σωκρατικῶρ εἰς ἀθλῳας ἀπά-  
 ραι (ὡν θόρυμίδου τι τοῖς ἰατροῖς τρεφόμενον ἔω αὐτοῖς.  
 οἱ δὲ, καὶ παιδικὰ ὄντα. καὶ ἡγεταχθέντα Δὴ εἰς τὴν  
 πφρακίαν ὅσημόραι ἀνιγναι ἀθλῳαζε, καὶ ἀκούσαντα  
 τῶ σοφιστῶν αὐτόδι ἔπος ἐφειρ. δύο δὴ μιλῶας δὲ  
 τείλαντα, οἱ καὶ ἐπαυελθεῖν, καὶ πρὸς τῶ φίλων  
 ἐραυιότῳ εἰς αἰγῶν ἁπᾶραι μετὰ χερσὶν  
 πα τοῖς ἰατροῦ, συστατικὰς φόροντα παρ' ἀγνοήτου  
 πρὸς νεκταρίαβιν. τὸν δὲ τὸς ἰδρυοῖσιν αὐτὸν συστή-  
 λαι. καὶ τέταρτος μιλῶας πρὸς ἐνὶ αὐτοῖς δὲ τείλαντα  
 αὐτόδι ξυρόμενον τε ἡβλῶ καὶ ὄφρῳ τῷ ὀκταετηρί-  
 δια ἡγετοῖ πινας συγγραφαί. ἐν τεύθειν τε γνέσθαι ἐν  
 κυζίκῳ καὶ τῇ προπντίδι σοφιστῶντα. ἀλλὰ ἐῖς  
 μαρσῶλὸν ἀφικέσθαι. ἐπειθ' οὕτως ἐπαυελθεῖν ἀθῆ-  
 ναζε πάνυ πολλοὺς πόδι ἰατρὸν ἔχοντα μαθητὰς, ὡς  
 φασὶ πῖνις ἔσθ' τοῖς πλάτωνι ἀνὴρ, ὅτι τῷ ἀν-  
 χλῶ αὐτὸν παρεπέμψατο. πῖνις δὲ φασὶ καὶ συμπί-  
 σιον ἔχοντι τοῖς πλάτωνι αὐτὸν τῷ ἡμεκύνλιον καὶ  
 τάλκῃσιν πολλῶν ὄντων εἰσηγήσεσθαι. φησὶ δ' αὖ-  
 τὸν νικῶμαχῶ ὁ ἀριστοτέλους τῷ ἡδονῶν λέγειν τὸ  
 ἀγαθόν. ἀπεδέχθη δὴ ἐν τῇ πετρίδι μεγαλοτίμως  
 ὡς τό γε πόδι αὐτοῖς φήσιν ἡμῶν γνόμενον διηλῶ. ἀλλὰ  
 καὶ παρὰ τὸς ἑλλήσιν ὑπὸ φανέσας τῶ ἐγγύς. γρά-  
 φας τὸς ἰδίοις κλίτοις νόμοις, ὡς φησὶ ἑρμῆς  
 ἐν τεταρτῇ πόδι τῶ ἔωτὰ σοφῶν, καὶ ἀστρολογούμηναι,  
 καὶ γεωμετρούμηναι, καὶ ἑτὶ ἄλλα ἀξιόλογα. ἔχει δὲ  
 καὶ

καὶ θυγατράς τρεῖς, ἀκτίδα, φιλιππία, δελφία. φησι  
 δ' αὐτὸν ἐξαπατάσθαι ἐν τοῖς πρὸς ἐχθρούς, καὶ κυ-  
 νῶν ἀγρόχους συνθέσθαι. οἱ δὲ γεγραφεῖν μὲν αἰγυ-  
 πτίαν, τῇ αὐτῇ φωνῇ. ἔπειτα δὲ μεθωρύσσοντα  
 ἐκδιδῶναι τοῖς Ἕλλησι. τὸ τὸ δεικνύσει χεύσι ππθ' ἐρ-  
 νειω κνίδιθ' τὰ τε πόλι βεῶν καὶ νόσμον καὶ τῇ  
 μετεωρολογουμένων. τὰ δὲ ἱατρικὰ παρὰ φιλιππία  
 νθ' το σικελιώτῃ. κατέλιπε δὲ καὶ ὑπομνήματα  
 ἡμέλιστα. τὸ τὸ γέρονε πᾶς ἀριστοφάνης. δ' χεύσι π-  
 πθ' ἀεθλίσ μαθητῆς. δ' τὰ θόρακός ματα φόρεται  
 ὀρατιγῇ, τῇ φυσικῶν θεωρηματῇ ὑπὸ τῶν διάνοι-  
 αν αὐτὰ πιδόντῃ. γαρόνασι δὲ ἑυδοξοὶ τρεῖς. αὐτὸς  
 δ' τθ'. ἐτόρθ' ῥόδιθ' ἰσορίας γεγραφώς. τρίτθ'  
 σικελιώτῃς πᾶς ἀγαθοκλῆς, πρηντῆς κωμωδίας.  
 νήκας ἰλὼν ἀσινὰς μὲν τρεῖς, λιναῖκας δὲ πέντε,  
 καὶ φησι ἀρμόδιος ἐν χρονοῖς. ἐνρίσιν μὲν  
 δὲ καὶ ἄλλων ἱατρῶν κνίδιον. πόλι δ' φησι ἑυδοξοῦ  
 ἐν γῆς πιδόδω ὡς εἴη παραγγέλλων ἀεὶ σιωπῶν  
 κινεῖν τὰ ἀθήρια πάση γυμνασίᾳ. ἀλλὰ καὶ τὰς αἰ-  
 ὁρήσεις ὁμοίως. ὁ δ' αὐτὸς φησι ἔν κνίδιον ἑυδοξοῦ  
 ἀκμαῖα καὶ τῶν γ καὶ ο ὀλυμπιακά. ἐνρίν  
 τε τὰ πόλι τὰς καμπύλας γραμμάς. ἐτελεύτησε  
 δὲ τρίτην ἄγων καὶ μ' ἐτθ'. ὅτε δὲ συνεγέρθη ἐν  
 αἰγύπτῳ ἰχθυόφυτῳ ἡλιουπρίτη, ὃ ἅπας αὐτὸς θοι-  
 μάποιον πόλι λιχμήσατο. ἐνδοξοῦ ἐν αὐτῇ ἀλλ' ὀλι-  
 γοχρόνιον ἱφασάκ οἱ ἰοδρεῖς ἴσεσθαι, καὶ φησι φαβω-



ρῖν Θ' ἐν ἀκρμνημονόμασιρ. ἔσι δὲ καὶ ἡμῶν εἰς αὐ-  
 τῶν οὕτως ἔχρ. ἐν μέμφει λόγῳ ὅτι προμαθεῖν  
 τῶν ἰδίων ἐνδοξον πρὶ μοῖραν παρὰ τοι χαλκίκοι  
 ταύρα. καὶ ὅδε μ' ἔλεξε. βοὶ γὰρ πρὶν λόγῳ φύσις ὅτι  
 ἴδωκε μόχῳ λαλῶν ἀπιδι σόμα. παρὰ δὲ αὐτῶν λέ-  
 χει Θ' σὰς ἐλιχμήσατ' σολῶν, προφανῶς ἴδωκε δι-  
 δασκῶν. ἀκρδύση βιοτῶν ὅσον ἔπω. διὸ καὶ οἱ ταχί-  
 ως ἦλθε μόρε Θ', δεηγίς πρὶν τε ὡδὶ τρεῖς εἰσιδόντι  
 πλειοδας. ἴδωκε αὐτὶ ἐνδόξον, ἐνδοξον ἐν ἁλώω  
 ὅλα τῶν λαμπρότητα τῆς φήμης. ἐπειδὴ δὲ πόδι  
 τῶν ἱλαγίμων πυθαγορικῶν διελκλύδαμιν  
 ἦδη πόδι τῶν ποροαδίων, ὥς φασι  
 ὅλα λεχθῶν. λεκτίον δὲ  
 πρὶν πόδι ἡρα,  
 κλείτῃ.



ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ ΛΑΕΡ-  
ΤΙΟΥ ΒΙΩΝ ΚΑΙ ΓΝΩΜΩΝ ΤΩΝ ΕΝ  
ΦΙΛΟΣΟΦΙΑ ΕΥΔΟΚΙΜΗΣΑΝ-  
ΤΩΝ ΤΩΝ ΕΙΣ ΔΕΚΑ  
ΤΟ ΕΝΝΑΤΟΝ

ΗΡΑΚΛΕΙΤΟΣ

**Η**ΡΑΚΛΕΙΤΟΥ ΒΛΥΣΩΝΤ, ἢ ὡς πινθε ἡ-  
ρανιόντ' ἐφίσι. εἴτ' ἡμαρ μὲν  
κατὰ τὴν γνῶσιν καὶ ἐξηκὸς αὐτῶν οὐμι-  
πιδία. μεγαλόφρων δὲ γέγονε παρ' ὅν-  
τινα οὐκ καὶ ἐπαρόπτει, ὡς καὶ ἐν τῷ συγγράμματι  
αὐτοῦ δὴ λυγρῶς φησι, πελυμαθεῖν νόον ἔστι δὲ  
σκεπτικὸς ἡσίοδος γὰρ αὐτὸν ἐδίδασκε καὶ πυνδαγόρεω, αὐτὸς  
τὸ ξυνοφάνειον τε καὶ ἡγεταῖον. εἶναι γὰρ ἐν τῷ σοφῶν  
ἐπίσταται γνώμῃ ὅτι ἐγκυβόρηνται πάντα οὐκ  
πάντων. τὸν τε ὁμηροῦ ἔφασκεν ἄξιον ἐκ τῶν ἀγῶ-  
νων ἐκβαλλεῖσθαι καὶ ῥαπίζεσθαι, καὶ ἀρχιλοχοῦ  
ὁμοίως. ἔλεγε δὲ καὶ ὕβριν καὶ σβηνύειν, μᾶλλον ἢ  
πυρκαϊλῶν. καὶ μάχεσθαι καὶ τὸν δῆμον ἐπὶ τῷ  
νόμον ὅπως ἐπὶ τείχεωσ. καθεστέται δὲ καὶ τῶν  
ἐφ' οἷσιν, ὡς δὲ τῶν ἐπ' αὐτοῖς ἐκβαλεῖν ἐρμόδωρον  
ἐν οἷς φησιν ἄξιον ἐφ' οἷσιν ἡβηδὸν ἀφ' οὗτοι πάντων.  
καὶ



καὶ ῥίς ἀνήβοις τῶν πόλιν κραταλιπεῖν, οἱ πυνδὲ ἐν  
 μόδωρον ἰωντῶν ὀνηισὸν θείβαλον λίσοντες, ἡμῶν  
 μηδὲ εἰς ὀνηισὸς ἔσω. εἰ δὲ πῖς ριῖτθ, ἄλλοι τε καὶ  
 μετ' ἄλλων. ἀξιούμην δὲ καὶ νόμου θείναι πρὸς  
 αὐτῶν, ὑποφείδε δὲ ῥ' ἦδη κεκρατῆσθαι τῇ πρηνεῖ  
 πρλιτεία τῶν πόλιν. αἰαχωρήσας δὲ εἰς ῥ' ἰδρὸν ρ  
 ἀγτέμειδθ μετὰ τῶν παίδων ὑστραγαλίζει. πόδι  
 σάντῶν δ' αὐτῶν τῶν ἐφθείων, τί ὦ κῆκισοι θανυμῶ,  
 ζετέ' ἔφη, ἢ ὅ κρείττερ ἔδωκε πρῖν ἢ μεθ' ὑμῶν πρλι  
 τούεσθαι; καὶ τέλθ μισανθροπῆσας καὶ ἐκπατή  
 σας ῥ' ῥίς ὀρδοῖ διηῖδωκε, πῶς σιτῆμην καὶ βοτῆ  
 νας. καὶ μὲν ῥι καὶ δὲ ῥ' ἔδωκε πόδιτραπείς ὑδρὸν  
 κρατῆλθην εἰς ἄστυ, καὶ τῶν ἰατρῶν ἀνιγματοδῶς  
 ἐπυωδάνθω εἰ δυνάων θείεπμβείας αὐχμόν πρην  
 λα. τῶν δὲ μὴ σωικῆντῶν, αὐτῶν εἰς βούσησιρ κρατῶ  
 ξας τῇ τῶν βολίτῶν ἀλῖα ἤλπισον θεατμοθήσασθ.  
 ὅδε μὲν ἀνύων ὅδ' οὕτως, ἐτελεύτα βίος ἔτη ξ'. καὶ  
 ἔσιρ εἰς αὐτῶν ἡμῶν οὕτως ἔχρη.  
 πρλιωκίς ἡρακλειτῶν ἰθαύμασα, πῶς πρτι ῥ' ζῶ  
 ὦδε δειντλήσας δύσμορθ, εἴτ' ἔθανεν.  
 σῶμα γὰρ ἀρδδίσασα κῆκὴ νόσθ ὑδαπ, φέγγθ  
 ἴσβόνην ἐκ βλεφαῶν, καὶ σῆόρρ ἡγώλθω.  
 ἔρμιππθ Δε φησι λέγειν αὐτῶν ῥίς ἰατροῖς, εἰ πῖς  
 δυνάται ῥ' τόρα ταπεινώσας ὑγρὸν θείδρῶλα. ἀπει  
 πρυντῶν δὲ, θείναι αὐτῶν εἰς ῥ' ἡλίον, καὶ κελύειν ῥ' ῥ'  
 πῶδας βολίρις κραταπλάθειρ. οὕτω δὲ κρατατεῖ  
 νόμνον

νόμῳ διούτοράϊον τελευτῆσαι, καὶ ταφῆσαι ἐν τῇ  
 ἀγορᾷ. νεαῖθης δ' ὁ κυρικλῶς φησι μὴ δυνάμεντα  
 αὐτὸν ἀφ' αὐτῶν τὰ βόλιτα μῆναι, καὶ δεῖ τῷ μεν-  
 ταβολῶν ἀγνοηθέντα κυρόβροτον γνέσθαι. γέγονε δὲ  
 δαυμῶσιθ' ἐν παίδων, ὅτε καὶ νῆθ' ἔφασκε μηδὲρ  
 εἶναι. τέλειθ' μὲν γι γνόμενθ' πάντα ἐγνωκῆναι.  
 ἦκουσέ τε ἑδισνός. ἀλλ' αὐτὸν ἔφη διζήσεσθαι καὶ μα-  
 θεῖν πάντα παρ' ἑαυτοῦ. σωτίων δ' ἔφησιμ εἰρηκῆναι  
 πινὰς ξυνοφάντου αὐτὸν ἀκηκοῆναι. λέγειν τὲ ἀρίστω  
 να ἐν τοῦ ποδὶ ἡρακλείτῳ, καὶ τὸν ὑδρόρον αὐτὸν θει-  
 ραπυθῆναι. ἀφ' αὐτοῦ δὲ ἄλλη νόσῳ. ἑὸν δὲ καὶ ἰω-  
 πρότος φησι. τὸ δὲ φερόμενον αὐτοῦ βιβλίον ἔστι μὲν  
 ἀφ' τοῦ σωίχοντ' ποδὶ φύσεως. διήρηται δὲ εἰς  
 τρεῖς λόγους, εἰς τε τὸν ποδὶ τοῦ παντὸς, καὶ τῇ τι-  
 κῶν, καὶ θεολογικῶν. ἀνέθηκε δὲ αὐτὸν εἰς τὸν αἰτέμι-  
 διθ' ἰδρὸν, ὡς μὲν πινδὸς ὑπὸ τῆς δύνσεως ἀσαφὲς δρόρον  
 γραφαί, ὅπως οἱ δυνάμενοι προσίοιεν αὐτοῦ, καὶ μὴ  
 ἐκ τοῦ δημῶδ' ἐν ἡγεταφρόνητῳ ἦ. ἑὸν δὲ καὶ ὁ  
 τίμων ὑπογράφει λέγων. τίς δ' ἐνὶ κυκλῆσιν ὀχλο-  
 λοῖδρ' ἡρακλείτ' ἀνικτὴς ἀνόρουσε. θεόφρα-  
 σθ' δ' ἔφησιμ ὑπὸ μελαγχολίας τὰ μὲν ἡμῶν τελεῖ,  
 τὰ δὲ ἄλλοτε ἄλλως ἔχοντα γραφαί. σημεῖον δ' αὐ-  
 τοῦ τῇ μεγαλοφροσύνης ἀντιδρῆναι φησὶν ἐν δεξιᾷ  
 χαῖς. ἐκχωρῆσαι γὰρ τ' ἀδελφῷ τῇ βασιλείας. τῇ  
 σαύτῳ δὲ δόξαν ἔσχε τὸ σύγγραμμα, ὡς καὶ αἰρετι-  
 σὰς ἀπ' αὐτοῦ γνέσθαι τοῦ κληθέντος ἡρακλήτῳ.



ἰδόνει δὲ αὐτῷ καθολικῶς μὲν ταῦτα. ἐκ πυρός τὰ  
 πάντα συνεσάναι, καὶ εἰς ἑῷ ἀναλύεσθαι, πάντα τὰ  
 γίνεσθαι καὶ ἑμαρμένῳ, ἔστι δὲ τὸ ἐναντιοτροπῆς  
 ἡρμόδου τὰ ὄντα, καὶ πάντα ψυχῶν εἶναι καὶ δαιμό-  
 νων πλήρη. εἰρηκε δὲ καὶ πόλι τῶν ἐν τῷ κόσμῳ συ-  
 σαμνῶν παθῶν. ὅτι τὸ ἡλίον δὲ τὸ μέγαν οἶον  
 φαίνεται. λέγει δὲ καὶ ψυχῆς παρὰ τῷ, ὅτι ἐκ αὐ-  
 τῶν οἱ παῖδες ὑπὸ πρὸς νόμος ὁδῶν, οὕτω βαθὺν λε-  
 γομεν ἔχει. τῷ τε οἰσιν ἰδὲν νόστον ἔλεγε ἔτι τῷ ὄρα-  
 σιν εὐδεδας. λαμπρῶς τε ἐνίοτε ἐν τῷ συγγράμμα-  
 τι ἑστῶς ἐκβολῶς τὴν, καὶ τὴν νόστον ἐκείνως γινώ-  
 ναι ἔστι δὲ ψυχῆς λαβεῖν. τὸ τε βραχὺ τὸ ἐρμη-  
 νείας ἀσύγκειρτον. ἔστι τὰ μὲν ὁδὸς δὲ αὐτῷ ὥστε ἔχει  
 τῶν δαγμάτων. πῦρ εἶναι σοιχείον, ἔστι πυρός ἀμοιβῶν  
 τὰ πάντα ἀφαιώπει ἔστι πυκνῶσαι γινόμενα. σαφῶς δὲ  
 ἐξερ ἐκτίθεται. γίνεσθαι πάντα κατ' ἐναντιότητα. καὶ  
 εἶναι τὰ ὅλα ἡγεμῶν δύνει. πεπορᾶς τὴν πᾶν ἔ-  
 ἵνα εἶναι κόσμον. γινώσκου τὴν αὐτὴν ἐκ πυρός. καὶ πᾶν  
 λιμ ἐκπυρᾶσθαι κατὰ πᾶς ποσειδῶνος ἐναλλαξ τὴν  
 σύμπαντα αἰῶνα. ἑῷ δὲ γίνεσθαι καὶ ἑμαρμένῳ.  
 τῶν δὲ ἐναντίων τὸ μὲν τῷ γινώσκον ἄστον, καλεῖσθαι  
 ἡλέμορ, καὶ εἶναι. τὸ δ' αὖτὶ τῷ ἐκπύρωσι, ὁμοιογί-  
 ναι καὶ εἰρηνίῳ, καὶ τῷ μεμβολίῳ ὁδῶν αἰῶν κατὰ  
 τὸν τε κόσμον γίνεσθαι κατὰ ταῦτα. πυκνῶμενον γὰρ  
 τὸ πῦρ ἐκπυρᾶσθαι, σπινθηρίον τὴν γίνεσθαι ὕδωρ.  
 πυκνῶμενον δὲ τὸ ὕδωρ, εἰς γλῶτρίεσθαι. καὶ ταῦτα  
 τῷ

δόγματα  
 αὐτοῦ

τῶν ὁδῶν ὡς ἡ ἡμέρα εἶναι. πάλιν τὲ αὐτῶν τῶν γλῶ  
 χείας, δεξὴς ἢ ἡ ὕδωρ γίνεσθαι. ἐκ δὲ τούτου, τὰ λοιπὰ  
 σχεδὸν ἄγνω τῶν ἀπὸ τῆς θαλάσσης. αὕτη δὲ ὅστις ἡ  
 ὕδωρ ἁπλοῦς. γίνεσθαι δὲ ἀναθυμιάσεις ἀπὸ τοῦ γῆς  
 καὶ θαλάσσης. ἅς μὲν λαμπρὰς καὶ καθαράς. ἅς δὲ  
 σκοτεινὰς. αὐξάνει δὲ ἡ μὲν πῦρ ἔξω τῶν λαμπρῶν.  
 ἡ δὲ ὑγρὸν ἔξω τῶν ἰσχυρῶν. ἡ δὲ ποταμὸν ὁριῶν ἐν  
 σὺν, ὅς δηλοῖ. εἶναι μὲν γὰρ αὐτῶν σημεῖα ἐπεσεῖς  
 μὲν κατὰ τοὺς πῦρ ἡμᾶς, ἐν αἷς ἀβροχομηνίας  
 τὰς λαμπρὰς ἀναθυμιάσεις ἀπὸ τῶν φλόγας.  
 ἅς εἶναι τὰ ἄστρα. λαμπροτάτῃ δὲ εἶναι τῶν τοῦ ἡ  
 λίου φλόγα, καὶ θερμότητι. τὰ μὲν γὰρ ἄλλα ἄ  
 στρα πλείον ἀπείχου ἀπὸ γῆς ὥστε ὁ ἥλιος ἵπτον λαμ  
 πειν καὶ δαλπειν. τῶν δὲ σελήνῃ προσγειοτόξαν  
 οὖσαν μὴ καθαροῦ φέρεσθαι τόπον. ἡ μὲν γὰρ ἡλιον  
 ἐν διαυγῇ καὶ ἀμυγῇ κείσθαι, καὶ σύμμετρον ἀπὸ ἡ  
 μῶν ἔχειν διασημα. γιγασκὶν μᾶλλον θερμότη  
 νειν τὴν καὶ φωτίζειν. ἐκλείπειν τὴν ἡλιον καὶ σελή  
 νῃ ἀνὰ σφαιρομηνίῃ τῶν σημεῖων. τὰς τε κατὰ μῆ  
 να τῆς σελήνης σχηματισμούς γίνεσθαι σφαιρομην  
 νης ἐν αὐτῇ κατὰ μικρὸν τῆς σημεῖας. ἡμῶν τὴν  
 καὶ νύκτα γίνεσθαι καὶ μῆνας καὶ ὥρας καὶ ἡμέρας  
 οὖν, ὕδους τε καὶ πνέσματα καὶ τὰ τέρας ὅμοια  
 καὶ τὰς ἀεφύρας ἀναθυμιάσεις. τῶν μὲν γὰρ λαμ  
 πρῶν ἀναθυμιάσεων φλογωθεῖσαν ἐν τῇ κύκλῳ τοῦ ἡ  
 λίου ἡμῶν πρὶν. τῶν δὲ ἐναντίαν ὡς κατὰ τῆς



νύκτα ἀρτελῆν. καὶ ἐν μὲν τοῖς λαμπροῦς ὅς θορυμὸν  
 αὐξανόμενον θορόν πρὸς τὴν νύκτα. ἐν δὲ τοῖς σκοτεινοῦς ὅς ὑπὸ  
 γῆρας πλεονάζον χερσὶν ἀποργαζέσθαι. ἀκροῦ  
 θως δὲ τῶν καὶ πόδι τῶν ἄλλων ἀπολογεῖ. πόδι  
 δὲ τῶν γῆρας ὅς ἐν ἀρφαίνεται πρὸς τὴν νύκτα. ἀλλ' ὅς  
 πόδι τῶν σκαφῶν. καὶ ταῦτα μὲν εἶναι αὐτῶν τὰ δὲ  
 κρούτα. τὰ δὲ πόδι σωκρατῶν, καὶ ὅσα ἐντυχῶν  
 τῶν συγγραμμάτων εἴποι κομίσαντο ἐνυπιδίῳ καὶ  
 δάφνησι ἀρίστων, ἐν τῶν πόδι σωκρατῶν εἰρήνην.  
 σέλδοντο μὲν γὰρ φησὶν ὁ γραμματικὸς κρότωνα π  
 νὰ ἰσορεῖν ἐν τῶν κατεκλυμβητῇ κρωπτικῶν πινά  
 πρῶτον εἰς τὴν ἐλαδία κομίσαι ὅς βιβλίον. ὅς καὶ  
 εἰπεῖν δηλὸς πινὸς δέσθαι κωλυμβητῶν, ὅς ἐν ἀρ  
 πνιγῆσεται ἐν αὐτῶν. ὑπὸ γὰρ φονοῖ δὲ αὐτό. οἱ μὲν,  
 μούσας. οἱ δὲ, πόδι φύσεως. διόδοτος δὲ ἀκρίβεις οἰα  
 κισμα πρὸς σωθμῶν βίβ. ἄλλοι, γνώμῃ ὑβῶν. τρῶν  
 πρὸς νόμον ἐνὸς τῶν συμπαντῶν. φασὶ δὲ αὐτῶν ἐρω  
 τηθέντα ὅς τί σιωπᾷ, φαῖναι, ἵν' ὑμεῖς λαλήτε. ἐπὶ θη  
 σε δὲ αὐτῶν καὶ Δαρῆος μεταχῆν καὶ ἔγραψαν  
 ὡς πρὸς αὐτῶν.

Βασιλεὺς Δαρῆος πατρὸς ὑσώππεω, ἡρακλεί  
 γρ ἐφίσορ σοφὸν ἀνδρα προφασισθεῖ, χαίρειν.

Καταβέβληται λόγος πόδι φύσεως δυσνόητόν τε  
 καὶ δυσδιήγητον. ἐν τῶν μὲν ὅς ἐρμηνεύοντο καὶ  
 τὰ λέγειν σὺν, δὲ καὶ δυνάμει πινὰ πόδι χερσὶ θεωρίας  
 νόστος τὴν τοῦ συμπαντος καὶ τῶν ἐν τῶν γινόμεν

νωρ. ἃ πόρ' ὅτις ἐν θειοτάτῃ κείρῳ κινῆσθαι. τῶν δὲ  
 πλείσων ἐπ' ἑλὼν ἔχοντα. ὥς τε καὶ τοῦ ὑπὸ πλείσων  
 μετασχηκτότας συγγραμμάτων δὲ πρὸς εἶδαι. τῶν δὲ  
 θῆς δοκούσης γὰρ γράφεται παρὰ σοι διηγήσεως. βασι  
 σιλεὺς δὲ δαρεῖσθαι ὑσάπασσιν, βέλεται τῶν σῆς ἀν  
 κροσσεως μετασχεῖν καὶ παιδείας ἐλλωκίης. ἔρ  
 χσ δὲ σωτόμως πρὸς ἐμὴν ὄψιν, καὶ βασιλείου ὅτι  
 κομ. ἔλλανδρ' ὑπὸ ὡδ' ἢ πλείσων ἀνεπισήμαντι σοι  
 φοῖς ἀνδράσιμ' ὄντες, παρορῶσι τὰ καλῶς ἔσθ' αὐτῶν  
 ἐνδρακνύμενα πρὸς ἀποδιδάσκον ἀκροῦν καὶ μάθησιν.  
 παρ' ἐμοὶ δὲ ἔσθ' ἀφ' ἑσσι πᾶσα μὲν προεδρία. καὶ  
 ἡμῶν δὲ καλὴ καὶ ἀποδιδάσκον προσαφ' ὁδοῦσι, καὶ  
 βίῃ ἐνδοκίμῃ σαῖς παραινέσδιν.

Ἡράκλειτος ἐφίσιθαι βασιλεῖ δα  
 ρεῖω πατρὸς ὑσάπασσιν χαίρειν.

Οἱ ὅσοι τυγχάνουσιν ὄντες ὑπὸ χερόνιοι τῶν μὲν ἀν  
 ληθείης καὶ δικαιοπραγμοσύνης ἀπείχονται. ἀπλη  
 σίη δὲ καὶ δοξοκρατίῃ προσέχουσι κακῆς ἐνεργα ἀνοί  
 ης. ἐγὼ δὲ ἀμνησίῳ ἔχωρ πάσης πνεύσεως καὶ κῶ  
 ρον. φόβω παντὸς δικαιομνῆς φθόνου, καὶ δὲ τῶν  
 ποδίσσασθαι ἐσθ' ἡφανίας, ἐκ αὐτῶν ἀφ' ἡμῶν εἰς  
 πόρῳ χῶρην ὀλίγοις ἀφ' ἡμῶν κατ' ἐμὴν γνώ  
 μιν. τῶν δὲ μὲν αὐτῶν, καὶ πρὸς βασιλείαν.

Δημήτριος δὲ φησιν ἐν τῶν ὁμωνύμοις, καὶ ἀθλωαί  
 ων αὐτῶν ἐσθ' ἡφανίας Δόξης ἔχοντα παμπλεί  
 σιν. κατὰ φρονούμενον τὸ ἐσθ' ἡφανίας ἐλπίσθαι



μᾶλλον τὰ οἰκεία. μέμνηται αὐτὸ καὶ ὁ φαληρεὺς  
 δημήτριος ἐν τῇ σωκρατικῇ ἀπολογία. πλείοι τὲ  
 εἰσὶ ὅσοι διηγύονται αὐτὸ ἢ σύγγραμμα. καὶ γὰρ  
 αὐτοδύνης, καὶ Ἡρακλείδης ὁ πεντικὸς, κλεάνθης τὲ  
 ὁ πεντικὸς, καὶ σφαῖρος ὁ σωϊκός. πρὸς δὲ πανσα-  
 νίας ὁ κληθεὶς Ἡρακλείτης. νικημένης τὲ, καὶ διο-  
 νύσιος. τῶν δὲ γραμματικῶν, διόδωτος, ὃς ἔφησι  
 πᾶσι φύσεως εἶναι ἢ σύγγραμμα, ἀλλὰ πᾶσι πη-  
 λειτίας. τὰ δὲ πᾶσι φύσεως ἐν παραδείγματι εἶ-  
 δει κείσθαι. ἰδοῦν μὲν δὲ φησι καὶ σκυθίνον ἢ τῶν  
 ἰαμβῶν πηκτικῶν ὑποβληθεῖν ἢ ἐκείνου λόγον  
 εἶναι μέτρον ἐμβαλεῖν. πολλὰ τε εἰς αὐτὸν ὑπογραμ-  
 ματα φέρεται. ἀτὰρ δὴ καὶ τόδε.

Ἡρακλείτης ἐγὼ, τίμ' ὦρ ἡγάτω ἔλκετ' ἄμφοσι

ἔχ' ὑμῖν ἐπνοῶν, τίς δέ μ' ὑπὸ σαμῶνι.

εἰς ἐμοὶ ἀνθρώπων τρισμύριοι, οἱ δ' ἀνελθῆμοι

ἔδεις. ταῦτ' ἀδῶ καὶ παρὰ πόρσεφόνῃ.

Καὶ ἄλλοι τριόρδε.

μὴ ταχὺς Ἡρακλείτης ἐπὶ ὀμφαλὸν εἴλεο βίβλον

τὸ ἐφ' ὅτις μάλα γὰρ δύσβατος ἀτραπικός.

ὄρφνη δὲ σκότος ἔστιν ἀλαμπύρον. ὡς δὲ σε μύσης

εἰσαγάγῃ, φανόρου λαμπρότερον ἡλίου.

γεγονασὶ δὲ Ἡρακλείτοι πέντε. πρῶτος αὐτὸς ἑρμ.

δύτος πηκτικὸς λυακός. ἔστι τῶν δώδεκα θεῶν

ἐγκώμιον. τρίτος ἐλεγείας πηκτικὸς ἀλχηρνασεύς

εἰς ὃν ἡμίμαχος πεπρήκεν οὕτως.

ἔπε

εἶπε τις ἡρώκληιτε τὸν μόρον, ὅς δ' ἔμει δακρυ  
 ἤγαγν, ἐμνήσθη δ' ὁσώκεις ἀμφοτέρω,  
 ἤλιον γὰρ λείχῃ κατελύσαμεν. ἀλλὰ σὺ μὲν πε  
 ξεῖν ἀλὶ καὶ ἄσπετον τέφρα πάλαι ποδὶ.  
 αἱ δὲ καὶ ξώσιν ἀνδρόνους, ἡσιν ὁ πάντων  
 ἀρπάκτης αἰδῆς ἐκ ὠδὶ χεῖρα βαλεῖ.  
 τέταρτον δὲ λίσβιν γεγραφὸς μακεδονικῶ. πέμ  
 πτον δὲ αὐτοδολογῶν ἀπὸ κιδαρωδίας μεταβε  
 βηκὼς εἰς τὸ εἶδον.

## ΞΕΝΟΦΑΝΗΣ

— Εὐνοφάνης Δελίου, ἢ ὡς ἀπολλόδωρον ὀρθο  
 — μὲν τοῦ κολοφώνου ἐπαινεῖται πρὸς τοῦ τί  
 μων. φησὶ γοῦν.

Ξενοφάνην ἑσπέρην ὁμηρεῖα πάντα πῶς ὠκλήσῃ.  
 ὅτι ἐκ ποδῶν τῇ πατρίδι γὰρ ῥαγκῇ τῇ σικε  
 λίας δέτεται καὶ γὰρ κατὰ τὴν δίκησιν δὲ κατ' ἐνί  
 οὐς μὲν ἐδιδόσιν. κατ' ἐνί τοις δὲ βότῃν ἀβλυαίου.  
 ἢ ὡς πινὸς ἀρχελαίου. καὶ ὡς σωτίων φησὶ κατ' αἰ  
 ξίμανδρον ἴω. γεγραφε δὲ γὰρ ἐπὶ τοῖς καὶ ἐλεγείας καὶ  
 ἰαμβοῖς καὶ ἡσιόδοτον καὶ ὁμήρου ὠκλήσῃ αὐτῶν  
 τὰ ποδὶ θεῶν εἰρημνία. ἀλλὰ καὶ αὐτὸς ἐρῶτα φάσκει  
 τὰ ἑαυτοῦ ἀνποδοξάσκει τὴν λέγεται θαλῇ καὶ πυθα  
 γόρα. κατὰ φάσκει δὲ καὶ ὠκλήσῃ. μακροβιώτατος  
 τὴν γένοντι ὡς πᾶς καὶ αὐτὸς φησιν.

ἤδη δ' ἐπὶ τ' ἴασι καὶ ἐξήκοντ' ἐνισαυρί  
 βλησεῖζοντο ἐμὴν φροντίδι αὐτὴν ἰλλάδα γλῶ.  
 ἐκ γένεσιν



ἐκ γῆς φησὶ δὲ τότε ἦσαν εἰρησὶ πᾶν τε τὴ πρὸς τοῖς  
 εἰ πόρ ἐγὼ πόρ τῇ δ' οἶδα λέγειν ἐτύμως.  
 φησὶ δὲ τέτταρα εἶναι τῇ ὄντων σοι χεῖρα, κρόσσος δ'  
 ἀπείρου, ἀπαράλλακτος δὲ. τὰ νέφη σωίσασθαι  
 φησὶ ἀφ' ἡλίου ἀτμίδι. ἀναφροσύνης καὶ αἰρούσης  
 αὐτὰ εἰς τὴν πόρ ἐχρμ. ὅσιν θεοῦ σφαιροειδῆ μηδὲν  
 ὁμοίον ἔχουσιν ἀνθρώπων. ὅλον δὲ ὄραν καὶ ὅλον ἀκού  
 εἰν, μὴ μὲν γὰρ ἀναπνέειν. σύμπαντα τε εἶναι νοῦν  
 φρόνησιν καὶ αἰσιν. πρῶτον τε ἀπεφύνατο πᾶν  
 τὸ γινώμενον, φθαρτὸν ὅτι. καὶ ἡ ψυχὴ πνεῦμα. ἔφη  
 δὲ καὶ τὰ πᾶν νοῦ εἶναι. ἐμπεδοκλῆς δὲ εἰ  
 πᾶν τὸ αὐτὸ ὅτι αἰσιν φησὶ ὅτι σοφός, εἰκότως  
 ἔφη. σοφὸν γὰρ εἶναι. Δεῖ γὰρ ὑπὸ γινώσκοντος τὸν σο  
 φόν. φησὶ δὲ σωτήρ πᾶν τὸν αὐτὸν εἰπεῖν ἀμειντάλη  
 πᾶν εἶναι τὰ πάντα πλανώμενον. ἐπρίκει δὲ καὶ κολο  
 φῶν. κτίσιν. καὶ τὸν εἰς ἑλίκην φησὶ ἰταλίας ἀρρικισ  
 μὸν ἔπει διὰ χίλια. καὶ ἡμᾶς κατὰ τὴν ἐξηκοντὴν  
 ὀλυμπιάδα. φησὶ δὲ δὴμήτει. ὁ φαληρεὺς γὰρ τὸν  
 πόρ γῆρας καὶ πᾶν αἰπὸν ὁ σωτὴς γὰρ τὸν πόρ ἐνθυ  
 μίας, ταῖς ἰδίαις χερσὶ δάψαι τοὺς υἱεῖς αὐτὸν, καὶ  
 δά πόρ καὶ ἀναξάφοραν. δοκεῖ δὲ πεπεσῆαι ὑπὸ τῇ  
 πυθαγορείῳ παρμενίσκῳ καὶ ὀρεσάδῳ καὶ δά φη  
 σι φαβωρίν. γὰρ ἀρμυνημονδύματῃ πρῶτον. γέγονε  
 δὲ καὶ ἄλλοι ξενοφάνης λίσβι. πριητὴς ἰάμβων.  
 καὶ ἔτι μὲν οἱ ἀποράδῳ.

Παρμενί

## ΠΑΡΜΕΝΙΔΗΣ

**Π**Αρμενίδης πύρην Θ' ἐλεαίτης, δῆκρυνε ξυνο-  
 φάντου. εἴθερ θεόφρας Θ' ἐν τῇ ὡν ἡμῇ ἀναξί-  
 μανδρος φησὶν ἀκούσαι. ὅμως δ' ὅω ἀκούσας καὶ  
 ξυνοφάντου, ἐκ ἡκολούθησεν αὐτῷ. ἐκρινώνησε δὲ καὶ  
 ἀμεινία καὶ διοχαίτη τῷ πυνδαφορικῷ, ὡς ἔφη σωτί-  
 ων, ἀνδρὶ πγνήτι μὲν καλῷ δὲ καὶ ἀγαθῷ, ὃ δὲ μάλ-  
 λον ἡκολούθησε καὶ ἀφαινόοντο ἡρώων ἰδρύσασα. γέ-  
 νου τὲ ὑπάρχων λαμπροῦ, καὶ πλούσιου, ὑπὸ ἀ-  
 μεινίας ἀλλ' ἔχ' ὑπὸ ξυνοφάντου εἰς ἡσυχίαν προει-  
 τρώπη. πρῶτο δὲ ἔτοτο τῷ γλῶσφι φαίνεται σφαι-  
 ροειδῆ καὶ ἐν μέσῳ κείσθαι. δύο τὲ εἶναι σοιχεῖα, πῦρ,

δόγματα  
 αὐτῶ

καὶ γλῶσφι. καὶ ὁ μὲν, δημουργεῖ τὰ ξίμα. τῷ δὲ,  
 ὕλης. γῆ δὲ τὴν ἀνθρώπων ἐξ ἱλυσ πρῶτον γνέσθαι.  
 αὐτὸν δὲ ὑπάρχειν ὁ θεός μορ καὶ ὁ ψυχρόν. ἐξ ὧν  
 τὰ πάντα συνεσάναι. καὶ τῷ ψυχρῷ, καὶ ὁ νοῦν  
 παύρην εἶναι, καὶ ἀμεινία καὶ θεόφρας Θ' ἐν τῇ  
 φυσικοῖς, πάντων σχεδὸν ἐκπύρην τὰ δόγματα.  
 διὰ τὸν τε εἶναι τῷ φιλοσοφίαν. τῷ μὲν καὶ τὰ ἀλή-  
 θειαν. τῷ δὲ καὶ τὰ δόξαν. διὸ καὶ φησὶ πῶ.

χεῖρ δὲ σε πάντα πυνθίοντα

ἡμῶν ἀληθείης ἐν πειθίῳ ἀτρεκέως ἡρῶ

ἡ δὲ βροτῶν δόξας, τῶν ἐκ πίσις ἀληθείης.

καὶ αὐτὸς δὲ δὲ πρὶν μαλ' ἔτι φιλοσοφῇ καὶ πόρ ἡ

σίοσι δὲ καὶ ξυνοφάνης καὶ ἐμπειροκλῆς. κειθελί

ον δὲ ὁ λόγος εἶπε. τῶν τε αἰσθήσεις μὴ ἀκρεβῆς

m m

ὑπάρχει



ἔπαρχειν. φησὶ γοῦν.  
 μηδ' ἐπεὶ θεὸς πρὸς πειρομ' ὁδὸν ἤλπιτ' ὅτε βιασθεῖσθε,  
 νωμαῖν ἄσκησεν ὄμμα καὶ ἤχηδ' ὅσαρ' ἀκουσὶν  
 ἔγλωσσαν, κρῖναι δὲ λόγῳ πρὸς δειρὴν ἔλεγχον.

Διὸ καὶ πῶς αὐτὸ φησὶ ὁ τίμων.

παρμυλίδου τε βίῳ μεγαλόφρονα τίῳ πρὸς δειρὴν.  
 ὅς ῥ' ὡδ' ἄντασις ἀπ' αὐτῆς ἀντιφάσκει ὥσπερ.  
 εἰς ἑὸν καὶ πρὸς τὴν ἑρ' ἀλλογομ' ἡγήσασθαι, παρ-  
 μυλίδου ὑπὸ γράφας ἢ πῶς ἰδεῖσθαι. ἡμαρ δὲ κατὰ  
 τίῳ ῥ' ἔειπεν ὁλυμπιάδα. καὶ δοκεῖ πρῶτον  
 πεφωρακῆναι ἑρ' αὐτὴν εἶναι ἑσπερίαν καὶ φωσφορί-  
 ρον. ὡς φησὶ φαβωρεῖν ἑρ' ἐν πέμπτῃ ἀφ' ἀμνημονεύ-  
 ματ' ἑρ'. οἱ δὲ πυνδαγόραν. καλλίμαχος δὲ φησὶ μὴ  
 εἶναι αὐτὴν ἑρ' πρῶτα. λέγεται δὲ καὶ νόμος θῆναι  
 τῆς πρὸς τῆς, ὡς φησὶ ἀδύσιππον ἑρ' ἑρ' πῶς ἑρ'  
 λυσιφών. καὶ πρῶτον ἐρωτῆσαι ἑρ' ἀχιλλεῖα λόγον  
 ὡς φαβωρεῖν ἑρ' παντοδραπῆ ἰσορίαν. γέγονε δὲ καὶ  
 ἑρ' παρμυλίδου ἑρ' τεχνολογία.

## ΜΕΛΙΣΣΟΣ

Μελισσὸς ἰθαγενεὺς σάμῳ. ἔτ' ἡκούσε  
 παρμυλίδου. ἀλλὰ καὶ εἰς λόγον ἦλθεν ἡρα-  
 κλείτω, ὅτε καὶ σωῖσθαι αὐτὴν τῆς ἐφ' ὅτις ἀγνο-  
 οῦσι, κατὰ πόρ' ἰωποικρῆς δημόκλειον ἀβδηρῶ-  
 νας. γέγονε δὲ καὶ πρὸς τῆς αἰνῆς καὶ ἀφ' ὅτις πα-  
 ρὰ τῆς πρὸς τῆς ἡξιομῆν. ὅθεν ναύαρχος αἰρε-  
 θείσθαι

θεῖς ἐπὶ καὶ μάλλον ἰθακυμάλῃη, ὅρα τὴν οὐκ εἶαν ἀ-  
ρετῶν. ἰδόνει δὲ αὐτῷ ὅτι παῦν ἄπειρον εἶναι καὶ ἀ-  
ναλλοίωτον, καὶ ἀκίνητον, καὶ ἐν ὁμοιοῖα αὐτῷ, καὶ  
πλήρως. κίνησιν τε μὴ εἶναι, δοκεῖν δὲ εἶναι. ἀλλὰ  
καὶ πόδι θεῶν ἔλεγε μὴ δεῖν ἀρφαίνεσθαι. μὴ γὰρ  
εἶναι γυνῶσιν αὐτῶν. φησὶ δὲ ἀρμολόδωρ ὁ ἡμῶν  
ναὶ αὐτῶν κατὰ τὴν τεταρτῶν καὶ ὁ γδοηκὸς τὴν δι-  
λυμπιῶν δα.

## ΖΗΝΩΝ

**Ζ**ΗΝΩΝ ἡλεώτης, ὅστις ἀρμολόδωρ φησὶ εἶ-  
ναι ἐν χρονοῖς πύργῃη. ὅν δὲ παρμυνί-  
διον, φύσει μὲν τελευταγόρου. θέσει δὲ παρμυνίδου.  
πόδι τέττα καὶ μελίσσας τίμων φησὶ ταῦτα.  
ἀμφοτέρω γλώσσας τὴν μέγα δὲ τὴν ὅτι ἀλαπαδύον  
ζώων ὅτι πλατωναπὶλήωρον ὅτι μελίσσας,  
πρὸς φαντασμοῦν ἐπάνω, παύρων γε μὲν εἶσω.  
ὁ δὲ ζώων ὅτι κήκοι παρμυνίδος. καὶ γέγονεν αὐτῷ  
παίδης. καὶ ἐν μνήμῃς αὐτῷ φησὶ πλάτῃ ἐν τῷ  
παρμυνίδῃ. ὁ δὲ αὐτῶν ἐν τῷ σοφιστῇ καὶ ἡλεατικῶν  
παλαμῶν αὐτῶν καλεῖ. φησὶ δὲ ἀριστοτέλης ἐν  
τῷ αὐτῶν γνῶσθαι ὅτι κήκοι. ὡς πρὸς ἐμπεδοκλήα  
ἐν κήκοι. γέγονε δὲ αὐτῶν γυναιότατος καὶ ἐν φιλοσο-  
φία καὶ ἐν πολιτείᾳ. φέρεται δὲ αὐτῷ βιβλία πρὸς  
λῆς σωίσεως γέγοντα. καθελεῖν δὲ θελήσας νῆ-  
αρχῶν ὅν τύραννον, οἱ δὲ, διομέδοντα, σωελήφθη  
κατὰ φησὶν ἡρακλείδους, ἐν τῇ σατύρῳ αὐτῶν.

mm z ὅτι



ὅτε καὶ ἔξεταζόμενοι τοῦ σιωπιδότου καὶ πόλι τῶν  
 ὀπλων ὧν ἦν εἰς λιπέραν, πάντας ἔφη αὐτὸ τοῦ  
 φίλου αὐτὰ ταῦτα σιωπιδότου, βουλόμενοι αὐτὸν  
 ἔρημον κρατεῖν. εἶτα πρὶ πινωρ ἔχον πινὰ εἰπεῖν  
 αὐτοῖς. καὶ δακῶν, ἐκ αὐτῶν ἕως αὐτὸν ἀπεικνύσθαι,  
 τὰς αὐτοῖς ἀεισογείναι τοῖς τυραννοκτόνοις παθῶν. διημή-  
 τριον δὲ φησὶν ἐν τοῖς ὁμωνύμοις τὸν μυκητῆρα αὐ-  
 τὸν ἀφτραγέιν. αὐτοῖς γὰρ δὲ ἐν ταῖς δευδαχῶς  
 φησὶ μετὰ τὸ μινύσαι τοῦ φίλου ἐρωτηθῆναι πρὸς  
 τοῖς τυράννοις, εἴ τις ἄλλος εἴη. τὸν δὲ εἰπεῖν. σὺ ὁ γὰρ  
 πλείους ἀληθέως. πρὸς τε τοῦ παρσιώτου φαῖναι.  
 θανμάζω ὑμῶν τὴν δειλίαν, εἰ τὸ τῶν ἑνεκῶν ὧν  
 νῦν ἐγὼ ὑπομένω δουλεύετε τοῖς τυράννοις. καὶ τέ-  
 λει ἀφτραγόντα τὴν γλῶτταν προσηύδα αὐ-  
 τοῖς. τοῦ δὲ πλείους παρορμηθέντος αὐτῆς τὸν τυ-  
 ραννον κραταλεῖναι. ταῦτα δὲ σχεδὸν οἱ πλείους λα-  
 λοῦσιν. ἐρμωπὸν δὲ φησὶν, εἰς ὅλμον αὐτὸν βληθῆ-  
 ναι καὶ κραταροπλῆναι. καὶ εἰς αὐτὸν ἡμεῖς εἴποι-  
 μεν οὕτως.

ἤβελος ὁ ζῴων καλὸν ἤβελος ἀνδρα τύραννον  
 κτείνας, ἐλκύσαι δουλοσιώας ἐλάν.

ἀλλ' ἐδωμης. διὸ γὰρ σε λαβὼν ὁ τύραννος ἐν ὅλμῳ  
 νότῃ. τίς γὰρ λέγω; σῶμα γὰρ ἔχει δέ σε.

γέροντες δὲ τὰ τε ἄλλα ἀγαθὸς ὁ ζῴων. ἀλλὰ καὶ ὁ  
 πόρωτικὸς τῶν μεγάλων κρατῶν ἡρακλείτω. καὶ  
 γὰρ ἐπὶ τὴν πρόδορον μὲν ὑλῶν ὑπόδορον δὲ ἐλάν,

φωγα

φωγαίωρ ἔσαρ ἀφικίαν, αὐτὸ δὲ πατερίδα, τέλιρ ἐν  
 τελῇ, καὶ μόνον ἀνδρας ἀγαθὸν τρίφειρ ὡλσαμέ-  
 νιν, ἡγάπησε μᾶλλον τῆς ἀβλυαίωρ μεγαλαυχί-  
 ας. ἐκ ὡλδημίσας τὰ πρὸς αὐτοῦ, ἀλλ' αὐτὸ  
 δι ηγαταβιούς. οὐτ' καὶ ῥ' ἀχιλλία πρῶτ' λό-  
 γον ἤρώτησε. φαβωρίν' δέ φησι παρμυλίδω καὶ  
 ἄλλου συχνοῦς. ἀρίσκει δὲ αὐτῷ τὰδε. κῶσμου  
 εἶναι, κενόν τε μὴ εἶναι. γεγνήσθαι δὲ τῶν τῶν πάν-  
 τῶν φύσιρ, ἐκ θορύμου, καὶ θυχεοῦ, καὶ ξηροῦ, καὶ ὑ-  
 γροῦ, λαμβανόντῶν αὐτῶν εἰς ἄλληλα τῶν μεταβο-  
 λῶν. γήδιν' τε ἀνθρώπων ἐκ γῆς εἶναι, καὶ θυχλῶ  
 κρᾶμα ὑπάρχειρ ἐκ τῶν πλειρημνῶν, κατὰ μη-  
 δυνὸς τὸ τῶν ὡλκράτῃσι. ῥῶν φασι λαιδουρού με-  
 νορ ἀγανακτῆσαι. ἀπασαμνὸς δέ τιν' φαῖναι, ἐκ  
 λαιδουρού μιν' προποιοῦμαι, ἐδὲ ἐπαινούμιν' ἢ  
 ἀδύσσομαι. ὅτι δὲ γεγόνῃσι ζῶωνδ' οὐκ τῶν, ἐν τῷ κί-  
 πει διελίγμεθα. ἡμαρ δὲ οὐτ' κατὰ τῶν ἐβδ,  
 μνηστῶν ὀλυμπιῶν δα.

## ΛΕΥΚΙΓΓΟΣ

ΔΕΥΚΙΩΤΩ ἱερατῆς, ὡς δὲ πινδ' αὐδ' ἡρίτης.  
 κατ' ἐνίτῃ δὲ μήλι. ἐτ' ἡκουσε ζῶων  
 ν'. ἤρθε δὲ αὐτῷ ἄπειρα εἶναι τὰ πάντα, καὶ  
 εἰς ἄλληλα μεταβάλλειν. τὸ τε παῦν εἶναι κενόν,  
 καὶ πλῆρ' σωμάτων. τὸς τε κῶσμου γίνεσθαι σω-  
 μάτῃν εἰς ῥ' κενὸν ἐμπιπτύντῃν καὶ ἀλλήλοις πόδι





ὥρ αὖ ὑπὸ φαῦσιν, ταῦτα ὑπὸ κτᾶσθαι. τούτων δὲ π  
να συμπλεκόμενα, πριεῖρ σύστημα. ὃ μὲν πρῶτον, καὶ  
θυγρον καὶ πηλῶδον, ξηρανθέντα καὶ ποδιφορῶμε  
να σὺν τῇ τοῦ ὅλου Δίνῃ. ἔτ' ἐκ πυρωθέντα, τὴν  
τῶν ἀσδῶν ἀποτελείσαι φύσιν. εἶναι δὲ τὸν τοῦ  
ἡλίου κύκλον, θζώτατον. τὸν δὲ τῆς σελλώης,  
προσυεότατον, τῶν ἄλλων μεταξὺ τούτων. καὶ  
πάντα μὲρ ἄσρα, ἐκ πυροῦσθαι. τὴν δὲ σελλώην,  
τοῦ πυρὸς ὀλίγον μεταλαμβάνειν. ἐκλείπει δὲ  
ἡλίου καὶ σελλώην, ἵνα κεκλίθαι τὴν γλῶ πρὸς  
μόσμηβείαν. τὰ δὲ πρὸς ἄρκτον, αἰετὶ νίφεσθαι  
καὶ κατὰ ψυχρὰ εἶναι, καὶ πήγνυσθαι. καὶ τὸν μὲν  
ἡλίου, ἐκλείπειρ πωαίως. τὴν δὲ σελλώην σιωι  
χῶς. Διὰ τὸ αἰίσθαι εἶναι τοὺς κύκλους αὐτῶν.  
εἶναι τὴν ὥς πρὸς γνέσεις κῶσμον, οὕτω καὶ αἰξή  
σεις, καὶ φύσεις, καὶ φθοράς, κατὰ τινὰ ἀναγκῆν  
τὴν ὁποῖα ὅστις, ὁρᾷ σκφεῖ.

## ΔΗΜΟΚΡΙΤΟΣ

Δ Ημόκειτ' ἡ γησις αὐτοῦ. οἱ δὲ, ἀβλινονεῖτ' δ.  
πνὶς διαμασίωπον, αὐδινεῖτης. ἢ ὡς ἔνιοι, μι  
λήσιτ'. οὗτ' ὁ μάγων τινῶν Διήκουσε, καὶ χαλ  
δαίων, ξοῖξου τοῦ βασιλείως ἐπιστάτας ἵνα πατεῖ  
αὐτὸ κατὰ λιπόντ', ἡνίκα θζηνίον παρ' αὐτοῦ,  
καὶ δὲ φησι καὶ ἡρόδοτ' ὅτι. παρ' ὧν τὰ τε ποδὶ θεολο  
γίας καὶ ἀστρολογίας ἔμαθον ἐπὶ πᾶσι ὧν. ὕσδορον δὲ  
λουκίπ



λουκίπῳ παρήβαλε. καὶ ἀναξασόρα ηγατοί πινας.  
 ἔτδσιρ ὦρ αὐτοὶ νεώτορ τε Περσέωντα. φαβωρί  
 νθ δέ φησιρ ἐν πανρ διαπῇ ἰσορία λέγειρ διημόκη  
 ρρ ποῦ ἀναξασόρου, ὡς ἔκ εἴησαν αὐτοὶ αἱ δόξαι αἱ  
 τε ποῦ ἡλίου καὶ σελλωῆς. ἀλλὰ ἀρχαῖαι. ἥρ δὲ ὕφῃ  
 ρῦοται. δῖα σύρειρ τί αὐτοὶ τὰ ποῦ ρῖ δῖα κροσμήσει  
 ως καὶ τοῖ νοῦ, ἐχθεῶς ἔχοντα πρὸς αὐτῶρ, ὅτι δὴ μὴ  
 προσήκαρ αὐτῶρ. πῶς οὖν ηγατοί τινθ ἀκήκον αὐ  
 τοῖ. φησί δὲ διημήτειθ ἐν ὁμωνύμοις, καὶ ἀντιοδῆ  
 νης ἐν δῖαδρχαῖς, ἀκρδιμήσαι αὐτῶρ καὶ εἰς αἰγυ  
 πωρρ, πρὸς οὗ ἰδρίας, γεωμετρίαν μαθησόμενον. ἔ  
 πρὸς χαλδαίους εἰς τὴν πόρσιδα. καὶ εἰς τὴν ἱερ  
 θραὶν δάλασαν γνέοται. ρῖς τε γυμνοσολισαῖς φαί  
 σι πινδ συμμίξει αὐτῶρ ἐν ἰνδία, καὶ εἰς αἰδιοπίαν  
 ἰλθεῖρ. τρίρρ τὲ ὄντα ἀδελφόν, νείμασται τὴν ἔσσι  
 αν. καὶ οἱ μὲν πλείου φασι. τὴν ἰλατῶ μοῖραν ἰλί  
 ας, τὴν ἐν ἀργυρίῳ, χρεῖαν ἔχοντα ηγατ' ἀκρδιμήαν,  
 ἔδρ κἀκείνωρ δολίως ἔποπτοῦσάν τῶν. ὁ δὲ διημή  
 τειθ ἔπορ ἡγατόρ τάλαντα. φησίρ εἶναι αὐτῶρ ῥ  
 μόρθ. ἀπαντα δὲ ηγαταλῶσαι. λέγει δὲ ὅτι ρῖ  
 σούρρ μῶ οἰλόρηθ, ὡς τε τοῖ πορ κήπρ δωμάπι  
 ὁρ π ἀκρτεμόμνθ, ηγατακλειςθ μῶ. καί ἥρ τε τοῖ  
 πατρός αὐτοῖ πρὸς θυσίαν βοῦν ἀγαγόντθ καὶ  
 αὐτόδι προσδήσαντθ, ἰχανόν χρέονρ μὴ γινῶναι,  
 ἕως αὐτῶρ δῖακασήσας προφάσει τῆς θυσίας, καὶ τὰ  
 ποῦ ῥρ βοῦν διηγέσας. δοκεῖ δὲ φησι καὶ ἀθλιώαζε  
 ἰλθεῖρ

ἔλθειν, ἵνα μὴ ἀποσπάσαι γνώσιν αὐτοῦ, δόξης καὶ ταφρα  
 νῶν. καὶ εἰδέναι μὲν σωκράτῳ. ἀγνοεῖν δὲ ἄλλοι αὐ  
 τοῦ. ἦλθον γὰρ φησὶ εἰς ἀθλήσας, καὶ ὅτις με ἐγνώκειν.  
 εἰ πόρ οἱ αὐτόρας αὐτοῦ πλὴν τῶν θεῶν εἰσὶ, φησὶ θρασυ  
 λος, ὅτι αὐτὸν εἴη ὁ παραγνώμενος αὐτῶν αὐτῶν πε  
 ρὶ οὐνοπίδῳ, καὶ ἀναξαγόρας ἐτόρθε, ἐν τῇ πρὸς  
 σωκράτῳ ὁμιλίᾳ διαλεγόμενος πρὸς φιλοσοφίας.  
 ὡς φησὶ ὁ φιλόσοφος ὡς πρὸς τὰ θλάτῳ ἵσκει. καὶ αὐτὸς ὡς  
 ἀληθῶς ἐν φιλοσοφίᾳ πάντα θλάτῳ. τὰ γὰρ φυσικὰ,  
 καὶ τὰ ἡθικὰ, ἀλλὰ καὶ τὰ μαθηματικὰ, καὶ αὐτὸς ἐγ  
 κυκλίσας λόγῳ, καὶ πρὸς τεχνῶν πᾶσαν ἔχεν ἐμ  
 πειρίαν. τὰ δὲ καὶ τὸ λόγῳ ἔργῳ σκίη. διημή  
 τει δὲ ὁ φαληρεὺς ἐν τῇ σωκράτους ἀκροασίᾳ, μὴ  
 δὲ ἔλθειν φησὶ αὐτὸν εἰς ἀθλήσας. ἴσως δὲ μέγιστον, εἰ  
 γε ῥαυτὴς πόλεως ὑποφρονήσας, ὅτι ἐν τόπῳ δό  
 ξαν λαβεῖν βουλόμενος, ἀλλὰ τόπῳ δόξαν πρὸς θεῶν  
 ναὶ προελόμενος. δῆλον δὲ καὶ τῶν συγγραμμά  
 των, οἳ αὐτὸν δὲ φησὶ ὁ θρασυλός, ζηλωτὴς  
 γεγονέναι τῶν πυθαγορικῶν. ἀλλὰ καὶ αὐτὸ τοῦ πυ  
 θαγόρα μίμνηται, θαυμαζῶν αὐτὸν ἐν τοῖς ὁμωνύ  
 μῳ συγγραμμάτι. πάντα δὲ δοκεῖν παρὰ τὰς  
 λαβεῖν. καὶ αὐτὸ δὲ αὐτὸ ἀκηροῦναι, εἰ μὴ τὰ τῶν χρο  
 νῶν ἐμάλχῳ. πάντως μὲν γὰρ τῶν πυθαγορικῶν π  
 νὰς ἀκοῦσαι φησὶ αὐτὸν γλαῦκος ὁ ῥηγίτης, καὶ  
 τὰ αὐτὸς αὐτὸς χροῦντος αὐτοῦ γεγονώς. φησὶ δὲ καὶ  
 ἀρχιμόδῳ ὁ κυζικεύς, φιλολαῶν αὐτὸν συγγε  
 γονέναι



γονγύαι. ἤσκει δὲ φησὶν ὁ ἀντιπρόσθετος, καὶ τρικίλως δὲ  
 κινάζειν τὰς φαντασίας, ἐρημαζὼν ἐνίοτε καὶ ρίς  
 ταύροις ἐνδύειν βωρ. ἐλθόντα δὲ φησὶν αὐτὸν ἐν τῇ  
 ἀφρημίας, ταπεινότητα διάγειν, ἃ τε πᾶσαν τὴν  
 οὐσίαν καταναλωσάτα, τρέφεται τε δὲ τὴν ἀφρη-  
 αν ἀπὸ τὰ δελφοῦ Δαμάσπου. ὥς δὲ προειπὼν πῶς  
 τῶν μελόντων ἐνδοκίμει, λοιπὸν ἐνθίου δόξης πα-  
 ρὰ πλείους ἡξιώθη. νόμου δὲ οὐτὸς τὸν ἀναλώσκειν  
 τα τὴν πατρῴαν οὐσίαν μὴ ἀξιοῦσθαι ἐν τῇ πατρὶ-  
 δι, φησὶν ὁ ἀντιπρόσθετος, σωσέμεν μὴ ἐπιδύωμεν γῆν  
 θείην πρὸς πτωρ φθονουώτων καὶ συκοφαντωμάτων, ἀ-  
 ναγνῶναι αὐτοὺς τὸν μέγαν διακροσμορ. ὅς ἀπάντων  
 τῶν αὐτῶ τῶν συγγραμμάτων, πλείχει. καὶ πρὸς τα-  
 κροσίοις ταλαίροις πικρῶναι. μὴ μόνον δὲ, ἀλλὰ καὶ  
 χαλκῶς εἰκόσι. καὶ τελευτήσαντα αὐτὸν, δημοσίᾳ  
 ταφῶναι, βιώσαντα ἑπὶ τὰ ἱερὰ τὸν ἔτη. ὁ δὲ δὴμῶν  
 τει. οὗ συγγενίας αὐτὸ φησὶν, ἀναγνῶναι τὸν μέ-  
 γαν διακροσμορ, καὶ μόνον ἱερὰ τὸν ταλαίρων πικ-  
 ρῶναι. ταῦτα καὶ ἰππόβοτος φησὶν. ἀεισόξενος δὲ  
 ἐν ρίς ἰσοεικοῖς ὑπομνήμασι φησὶ πλάτωνα θελόν-  
 ται συμφλέξαι τὰ δημοκρίτου συγγραμματα. ὅπου  
 ἔα ἡδωκῆν (ὑποαγαγείν). ἀμύκταν δὲ καὶ κληνίαν οὗ  
 πυθαγορείους κωλύει. αὐτὸν, ὥς δὲ δὲ ὅφελος. πα-  
 ρὰ πολλοῖς γὰρ εἶναι τὰ βιβλία ἡδὴ. καὶ δὴλον δὲ,  
 πάντων γὰρ σχεδὸν τῶν ἀρχαίων μεμνημένους ὁ  
 πλάτων, ὅς δαμοῦ δημοκρίτου δὲ μνημονεύει, ἀλλ' ὅ-  
 δε ἐνδεὲς ἀντιπίπτειν αὐτῶν δέιοι, δὴλον εἶδὼς ὡς πρὸς

ἔρμ' αἰῶσον οὕτω τῷ φιλοσόφῳ ἴσοι· ὅρ γε καὶ πί-  
μων ἔδεικνυται παλαιότητας ἔρμ' τρέπον ἔχει.

οἷον δημόκριτος τε ποδὶ φρονεῖ, τριμηνία μύθων  
ἀμείνουσι λίσχων, ἀ μὲν πρῶτισιν αἰετῶν.

γεγονε δὲ τῆς χρόνοις ὡς αὐτὸς φησιν ἐν τῷ μικρῷ  
διακρομῷ, νῆϛ κτλ πρὸς βύτιον ἀναξασόρα, ἔτδτιν  
αὐτὸ νεώτερόν τε πλάκοντα. σωτεταλχθαι δὲ φη-  
σι ἔρμ' μικρὸν διακρομὸν ἔτδτιν ὑσδορὸν φη' ἰλίου ἀ-  
λώσεως, τριμηνία καὶ ἐπὶ αἰσίοις. γέγονοι δ' αὖν, ὡς  
μὲν ἀκρομάθων ἐν χρόνοις, κτλ τῷ ὀγδοηκοσίων  
ὀλυμπιάδα. ὡς δὲ θράσυλλος ἐν τῷ ὑπὲρ γραφομένη  
τὰ πρὸ τ' ἀναγνώσεως τῷ δημοκρίτῃ βιβλίων, κτλ  
ἔρμ' τρέπον ἔρμ', τ' ἐβδόμης καὶ ἐβδμηκοσῆς ὀλυμπιά-  
δος, ἐν τῷ τῷ φησι πρὸς βύτιον ὡς σωκρατὸς. εἴη  
αὖν ἐν κτλ ἀρχίλαον ἔρμ' ἀναξασόρα μαθητῶν, καὶ εἴη  
ποδὶ οἰνοπίδῳ. καὶ γὰρ τέττα μέμνηται, καὶ ποδὶ φη'  
τὸ ἐνὸς δόξης τῷ ποδὶ παρμηνίδῳ καὶ ζώνῳ, ὡς  
κατ' αὐτὸν μάλιστ' ἀβελονομένων. ἔ' προτασόρα τὸ  
αὐδινεῖται. ὅς ὁμολογεῖται κατὰ σωκρατῶν γεγονέ-  
ναι. φησὶ δὲ ἀβελονομένων ἐν ἡ ποδὶ πᾶσι τῶν ἐλθόν-  
των ἱπποκράτῃ πρὸς αὐτὸν, κομῶναι γὰρ.  
καὶ θεασάμενον ἔρμ' γὰρ εἰπεῖν, καὶ αὐτὸς πρῶτος  
κονὸν καὶ μελαίνης. ὅθεν τῷ ἀκρίβειαν αὐτὸ δαυμάσαι  
ἔρμ' ἱπποκράτῳ. ἀλλὰ ἔ' κῆρης ἀκροατοῦ ὡς ἱππο-  
κράτῃ, τῇ μὲν πρῶτῃ ἡμῶν ἀσπασαδαι οὕτω, χαῖ-  
ρε κῆρη. τῇ δ' ἐχρημένη, χαῖρε γυναι. καὶ ἡ ἡ κῆρη τ'



υυκῆς διεφθαρμένη. τελευτῆσαι δὲ ἔρμ δημόκλειον  
 φησὶν ἑρμιπποῦ, ἔδωκεν ἔρμ τρόπον. ἢ δὲ ὑποβόρην  
 ὄντα, πρὸς τοῦ κατὰ σφίρειν εἶναι. τὴν οὖν ἀδελφὴν  
 λατρεῖσθαι ὅτι ἐν τῇ τῶν βοδμοφόρων ἱερῇ μέλλοι  
 τεθυῆσθαι. καὶ τῇ θεῷ ἔκαθενον αὐτῇ ἔπριον.  
 ἔρμ δὲ, διαρξέειν εἰπεῖν. καὶ κελεύει αὐτὸν προσφύ  
 ρειν ἄρτους βοδμοῦ ὅσημόροι. τῶν δὲ ταῦς ἑρ  
 σὶ προσφόρων, διεκράτησεν αὐτὸν τὴν ἱερῇ. εἰ  
 πεί δὲ παρῆλθον αἱ ἡμόροι, τρεῖς δὲ ἦσαν, ἀλλὰ  
 τατα ἔρμ βίον προήγαγε, ὥς φησιν ἱππαρχῶ, ἐννέα  
 πρὸς τοὺς ἑκατὸν ἔτη βιούς. ἡμεῖς τε εἰς αὐτὸν ἐν τῇ  
 παμμίτρω, ἔδωκεν ἐπρίονα μὲν ἔρμ τρόπον.

καὶ τίς ἐφύσσοδος ὦδε, τίς ἐρξὸν ἐρξεν γαστῆρ,

ὅσων ὁ πανρδαῆς μένυσεν δημόκλειον.

ὅς δὲ ἀναγνῶντα, τρεῖς ἡμέρας δώμασιν ἔσχε,

καὶ βοδμοῖς ἄρτων ἄσπασιν ἐξήνισε.

διξαι αὐτὸν

τριῶν μὲν ὁ βίος ταῖς ἡμέραις. δοκεῖ δὲ αὐτὸν ταῦτα  
 ἀρχὰς εἶναι τῶν ὅλων ἀτόμων, ὅτι κενόν. τὰ δ' ἄλλα  
 πάντα, νομοῦνται δοξαζοῦνται. ἀπείρτου τὸ εἶναι  
 νόσμου, καὶ γνηστοῦ καὶ φθαρτοῦ. μηδὲν τε ἐκ τοῦ  
 μὴ ὄντος γίνεσθαι. μηδὲ εἰς τὸ μὴ ὄν, φθίρεσθαι. καὶ  
 τοῦ ἀτόμου δὲ ἀπείρτου εἶναι κατὰ μέγεθος καὶ  
 πλήθος. φθίρεσθαι δ' ἐν τοῦ ὅλου, δινομύνας. καὶ ὄν  
 τω πάντα τὰ συγκείμενα γήναϊν, πῦρ, ὕδωρ, ἀέρα,  
 γῆν. εἶναι γὰρ καὶ ταῦτα ἐξ ἀτόμων πνῶν συστήμα  
 τα. ἃ πόρ εἶναι ἀπαθῆ καὶ ἀαλλοίωτα ὅτι τὴν σεξ

ξόπηται

ξόπηται. τὸν τε ἥλιον καὶ τὴν σελήνην ἐκ τοῦ οὐρανοῦ π  
 νῶν καὶ ποταμῶν ὄγκων συγκεκρίσθαι, καὶ τὴν ψυ  
 χὴν ὁμοίως. ἡν καὶ νοῦν ταυτέρῃ εἶναι. ὁρᾷ δ' ἡμᾶς  
 κατ' εἰδῶλων ἐκπύσεις. πάντα τὰ κατ' ἀναγκῆν  
 γίνεσθαι, τῆς δυνάμεως αἰτίας ὅσης τῆς γένεσως πάντι  
 τῇ, ἡ ἀναγκῆν λέγει. τέλος δὲ εἶναι τὴν ἐνθυμίαν  
 αὐτῆς. καὶ τὴν αὐτὴν ὅσαρ τῇ ἡδονῇ, ὡς ἔνιοι παρανοή  
 σαντες διηγέσαντο. ἀλλὰ καὶ ἡ γαλῶν καὶ ἐν  
 σαθῶς ἡ ψυχὴ διαγίγεται, ἔκ τῃς μνηστῆρας ταρατρυγῆ  
 φόβου, ἢ δεισιδαιμονίας, ἢ ἄλλου πινός πάθους. καὶ  
 λέει δ' αὐτὴν καὶ ἐνέσῳ, καὶ πολλοῖς ἄλλοις ὀνόμασι.  
 τριητὰ δὲ νόμιμα εἶναι. φύσει δὲ ἄρμα, καὶ κενόρ. ἐ  
 ταῦτα μὲν αὐτῇ εἰδόμενα. τὰ δὲ βιβλία αὐτῇ, καὶ θρά  
 συλλῶ ἀνέγραφε κατὰ τάξιν οὕτως, ὡς ποιεῖ καὶ βιβλία αὐτῇ  
 τὰ πάλαι τῇ, καὶ τὰ τετραλογίαν. ἔστι δὲ ἡδονὰ μὲν,  
 τὰ δὲ. πυνδαγόρης. ποῦ τῆς τοῦ σοφοῦ διαθέσεως. πε  
 ρὶ τῆς ἐν ἀδῇ. τριγυγία. ἔστι δὲ ὅτι, ὅτι τρία γί  
 νεται διὰ αὐτῆς, ἃ πάντα ἀνθρώπων σωτὴρ. ποῦ  
 ἀνδραγαθίας ἢ ποῦ ἀρετῆς. ἀμαλθείας κόρας. ποῦ  
 ἐνθυμίας. ἔκ τῃς μνηστῆρας, ἢ οἰκῶν. ἢ γὰρ ἐνέσῳ ὅχι  
 εἰσκέταται. καὶ ταῦτα μὲν τὰ ἡδονὰ. φυσικὰ δὲ τὰ δὲ.  
 μέγας διακροσμός, ὅν οἱ ποῦ θεόφραστον, λελυκίππ  
 φασίρ εἶναι. μικρὸς διακροσμός. κροσμογραφία. ποῦ  
 τῇ πλανήτῃ. ποῦ φύσεως πρῶτον. ποῦ ἀνθρώπου  
 φύσεως, ἢ ποῦ σαρκὸς ὤ. ποῦ νοῦ, ποῦ ψυχῆς ἐκ  
 πηγὰς φυσικῆς. ποῦ χυμῶν. ποῦ χροῶν. ποῦ τῇ δια  
 νη 3 φερών



φερόντων ἑνὸς μῶν. πόδι ἁμειψιῶν μῶν. κρατῶν  
 ρα, ἑπὶ δὲ τῶν ὑπὸ κρατῶν τῶν προσημνίων. πόδι  
 εἰδῶν, ἢ πόδι πρηνείας. πρὶ λογικῶν καὶ ἁπλῶν αὐτῶν  
 γ. ἀπὸ ῥημάτων τῶν. ταῦτα καὶ πόρι φύσεως. τὰ δὲ  
 ἀσώτακτα, ἔστι τὰδε. αἰτίαι ἔραναίαι. αἰτίαι ἀδρίοι.  
 αἰτίαι ἐπίπεδοι. αἰτίαι πόρι πυρὸς καὶ τῶν ἐν πυρὶ.  
 αἰτίαι πόρι φωνῶν. αἰτίαι πόρι σπέρματι τῶν, καὶ φυ  
 τῶν, καὶ κερῶν. αἰτίαι πόρι ζώων γ. αἰτίαι σύμ  
 μικτι. πόρι τῶν λίθων. ταῦτα καὶ τὰ ἀσώτακτα. μα  
 θηματικά δὲ τὰδε. πόρι διαφορᾶς γνώμης, ἢ πόρι  
 φύσεως κύκλου καὶ σφαίρας. πρὶ γεωμετείας. γεω  
 μετεϊκόν. ἀριθμοί. πρὶ ἀλόγων γραμμῶν εἰς νασῶν  
 ὑ. ἐκπετάσματα. μέγας ἐνιαυτός, ἢ ἀστρονομία. πα  
 ραπληγμα. ἁμλλα κλεψύδρας. ἔρανογραφία. πρὶ  
 γραφία. ἀκτινογραφία. ῥαῦτα εἰς τὰ μαθηματικὰ.  
 μεσικά δὲ τὰδε. πόρι ἑνὸς μῶν καὶ ἀρμονίας. πρὶ πρ  
 ἥσεως. πόρι καλοσύνης ἐπείων. πόρι ἐμφώνων καὶ δυο  
 φώνων γραμμάτων. πόρι ὁμήρων ἢ ὁρθοεπέων καὶ γλώ  
 σεων. πόρι ἀοιδίης. πρὶ ῥημάτων. ὀνομαστικόν. ῥαῦ  
 τα καὶ τὰ μεσικά. τεχνικά δὲ τὰδε. πρόγνωσις.  
 πόρι ὁραίτης, ἢ ὁρατικῆς, ἢ ἰατρικῆς γνώμης. αἰτίαι  
 πόρι ἀκακίῶν. πόρι γεωργίας, ἢ γεωμετεϊκόν. πρὶ  
 ζωγραφίας. τακτικόν, καὶ ὁπλομαχικόν. ῥαῦτα  
 καὶ τὰδε. τὰ τρυσι δὲ πνέει κατ' ἰδίαν ἐκ τῶν ἑπο  
 μνημάτων, καὶ ταῦτα. ἢ πρὶ τῶν ἐν βαθυλῶν ἰδῶν  
 γραμμάτων. πόρι τῶν ἐν μόρῳ ἰδῶν γραμμάτων.  
 πρὶ

περὶ ἰσορείης. χαλδαϊκὸς λόγος. φεϋγιος λόγος.  
 πορὶ πυρετου, καὶ τῷ ἀπὸ νόσου βησσόντων. νομικὰ  
 αἵτια. χόρνιθα ἢ προβλήματα. τὰ δ' ἄλλα ὅσα ἴνεις  
 ἀναφόρουσι εἰς αὐτόν, τὰ μὲν ἐκ τῷ αὐτοῦ διδουμένου  
 αἰσῶν, τὰ δὲ ὁμολογουμένως ὅτιν ἁλότης. ταῦτα  
 καὶ πορὶ τῷ βιβλίῳ αὐτοῦ ἢ ῥα αὐτά. γέγονασι δὲ  
 δημόκειρι, ἔξ. πῶτος αὐτοῦ δὲ τῷ διδύτῳ χι  
 ος μουσικὸς καὶ τὰ ῥα αὐτοῦ χρόνον. τρίτῳ ἀνδρι  
 ανηριός, ὃ μέμνηται ἀντίγονος. τέταρτῳ πορὶ  
 τοῦ ἰδου τοῦ ἐν ἐφίσω γεγραφώς, καὶ τῷ πλείως σα  
 μοβρακίης. πέμπτῳ, ποιητῆς ὑπὲρ γραμματέων  
 σαφῆς καὶ ἀνθηρός. ἕκτῳ, πορὶ γαμίνος ἀπὸ ῥητο  
 ρικῶν λόγων.

## ΠΡΩΤΑΓΟΡΑΣ

**Π**ρωταγόρας ἀρτέμωνος, ἢ ὡς ἀπὸ Μόδωρος  
 καὶ Δίῳ ἐν πορὶ σικῶν, μαιανδρείου ἀνδρι  
 τῆς, καὶ ἀφῆσιρ Ἡρακλείδης ὁ πεντικὸς ἐν τῷ πε  
 ρὶ νόμων, ὃς καὶ θουρίοις νόμοις γεγράφαι φησὶ αὐ  
 τόν. ὡς δὲ ἔντελις ἐν νόλῳ, τῷ φησὶ γὰρ.  
 ἐνδοθὶ μὲν ὅτι πρωταγόρας ὁ τῷ.  
 οὗτος καὶ πορὶ δὲ λόγῳ ἀναγινώσκοντες ἡρα  
 νίζοντες. καὶ πλάτων ἐν τῷ πρωταγόρᾳ φησὶ, βαρύ  
 φωνος εἶναι τὸν πορὶ δὲ. Διήκουσε δὲ ὁ πρωταγό  
 ρας, δημοκρίτης. ἐκλείναι τὴν σοφίαν, ὡς φησὶ φαβωρί  
 νος ἐν πανυρδιαπῇ ἰσορείᾳ. πῶτος ἔφη δύο λόγους εἶναι  
 περὶ παντός πᾶν γὰρ ἀντικειμένους ἀλλήλοις. οἷς  
 καὶ



καὶ σωτηρώτα πρῶτ' ὁ ἄνθρωπος πλάσας. ἀλλὰ καὶ ἤρξατο  
 τὸ πρῶτον ἔργον τὸν τρόπον. πάντων χρημάτων μέτρον  
 ἀνθρώπου. τῶν μὲν οὐτῶν ὡς ὅτι. τῶν δὲ ἐκ οὐτῶν, ὡς  
 ἐκ ἐσίων. ἔλεγε τε μηδὲν εἶναι ψυχῶν παρὰ τὰς αἰ-  
 σθήσεις. καὶ πάλιν φησὶ ἐν θειότητι. καὶ  
 πάντα εἶναι ἀληθῆ. καὶ ἀλλαχού δὲ ἄλλοι ἤρξαντο τὸν  
 τρόπον. ποῦ μὲν θεῶν, ἐκ ἔχοντες εἰδέναι, εἰθ' ὡς εἰσίων,  
 εἰθ' ὡς ἐκ ἐσίων. πολλὰ γὰρ τὰ κωλύοντα εἰδέναι ἢ  
 τε ἀδελφότης καὶ βραχυς ὥρ' ὁ βίος τοῦ ἀνθρώπου.  
 διὰ ταύτην δὲ τὴν ἀρχὴν τοῦ συγγραμματος διε-  
 βλήθη πρὸς ἀθλοαγῶν. καὶ τὰ βιβλία αὐτοῦ κατέ-  
 ηρσαν ἐν τῇ ἀγορᾷ, ὑποκέρυχα ἀναλυσάμενοι ἐκεί-  
 νου τῶν κερταμῶν. ἔτι πρῶτον μοδὸν εἰσε-  
 ῖν ἤρξατο μῦθον ἐκείνου. καὶ πρῶτον μόρην χρόνου δι-  
 ὠρησε καὶ καιροῦ δυνάμει διεξέθετο, καὶ λόγων ἀγῶ-  
 νας ἐθεώσατο, καὶ σόφισμα τοῖς πραγματολογοῦσι  
 προσήγαγε. καὶ τὴν διανοίαν ἀφείρετο πρὸς τοῦτομα-  
 θελίχθη. καὶ τὸν νοῦν ὑπὲρ λαοὺς γένετο τῶν ἐκείνων  
 ἐκείνων. ἵνα καὶ τίμων φησὶ ποῦ αὐτοῦ.  
 πρῶτα γόρης τ' ἐπίμνητο. ἐκείνων ἐκείνων ἐκείνων.  
 ἔτι καὶ τὸ σωκρατικὸν εἶδος τῶν λόγων πρῶτος  
 ἐκείνησε, καὶ τὸν ἀντιπρόσωπον λόγον τὸν περὶ ὧν ἀν-  
 τιστείνοντες, ὡς ἐκ ἐσίων ἀντιπλέγειν, ἔτι πρῶτον  
 διέλεκτο, καὶ φησὶ πάλιν ἐν ἐκείνῳ. καὶ  
 πρῶτον κατέλειξε τὰς πρὸς τὰς θέσεις ὑπὲρ χειρῶ-  
 νας, ὡς φησὶ ἀντιπρόσωπον ὁ διέλεκτικός ἐν τῷ  
 πρὸς

πρὸς χεύσιωπρ. καὶ πρῶτ' τὴν ἡαλουμένην τὴν  
 λωῖφ' ἧς τὰ φορτία βασιλίσσιν ἐν ῥῶν ὡς φησὶν αἰ  
 ρισοτέλης ἐν τῷ ποδὶ παιδείας. φορμοφόρ' γὰρ  
 ἴω, ὡς καὶ ἐπὶ κρυφὸς πρὸς φησί. καὶ ἔσται ἡν τρέπορ  
 ἤρθη, πρὸς διημόκειρ ξύλα δεδωκὼς ὀφθεῖς. διείλε  
 τὴν ῥῶν λόγον πρῶτ' εἰς τέσσαρα, ἐν χωλῶν, ἐρώτη  
 σιν, ἀπὸ κεισιν, ἐν ῥῶν. οἱ δὲ, εἰς ἑωτὰ, διήγησιν, ἐρώ  
 τησιν, ἀπὸ κεισιν, ἐν ῥῶν, ἀπαγγελίαν, ἐν χωλῶν,  
 κλῆσιν, ὅς καὶ πυθμῆας εἶπε λόγων. ἀλκιδάμας  
 δὲ, τέσσαρας λόγους φησί. φασιν, ἀπὸ φασιν, ἐρώτη  
 σιν, προσαγόρευσιν. πρῶτ' δὲ τῶν λόγων ἰαυτὸ αἰ  
 νίγνω ἡν ποδὶ θεῶν. ὅ τὴν ἀρχὴν αἰώ παρθεμέμεθα.  
 αἰνίγνω δὲ ἀβλῶσιν ἐν τῇ ἐνυπιδὸς οἰκία. ἢ ὡς πινδ  
 ἐν τῇ μεγακλείδω, ἄλλοι ἐν λυκείω, μαθητὸ τὴν φω  
 νῶν αὐτῷ χεῖσαντ' ἀρχαγόρ' τὸ θεοδότ' ἡσπ  
 γόρησε δὲ αὐτὸ πυθόδωρ' ἡλυζήλ' εἰς τῶν τε  
 τρακισίωρ. αἰρσοτέλης δ' ἑυαθλον φησί. ἔσι δὲ τὰ  
 σωζόμενα αὐτὸ βιβλία τὰδε. τέχνη ἐπισκευῶν. ποδὶ  
 πάλης. ποδὶ τῶν μαθημῶν τῶν. ποδὶ ἡλιτείας. ποδὶ  
 φιλοτιμίας. ποδὶ ἀρετῶν. ποδὶ τῶν ἐν ἀρχῇ ἡσπασα  
 σεως. ποδὶ τῶν ἐν ἁδ' υ. ποδὶ τῶν ἐν ὀρθῶς τῶς αἰ  
 θρώπ' ἡσπασομένων. προσεκτικὸς. δίκη ἑωτὸ μ  
 αῖου. αἰτιολογῶν Δύο. καὶ ταῦτα μὲν αὐτῷ τὰ βι  
 βλία. γέγραφε δὲ καὶ πάλ' τῶν εἰς αὐτὸν διαλογον.  
 φησί δὲ φιλόχορ', πλείοντ' αὐτὸ ὅς σικελίαν,  
 τὴν ναυὺ ἡσπαπνυλῶναι, καὶ ἔσται αἰνίπτεσθαι ἐν

βιβλία αὐτ'



πίδω εἴς τινι ἐξίονι. ἤνιοι κατὰ τὴν ὁδὸν τελευτῆσαι  
αὐτόν. ἀκροδόμεθ' δέ φησι σφιστεύσαι αὐτὸν τε  
σαφηνεῖν τὴν καὶ ἀκροαζέμεν κατὰ τὴν τεταρτίαν  
ἐὺ γυμνασίου Ὀλυμπιαδα. εἰς καὶ εἰς ἑῶν ἡμῶν  
οὕτως ἔχον.

καὶ σε πρωταγῶν φαίην ἐκλυοῦ ὥς ἄρ' ἀθληαίω  
ἐκ πρ' ἰώρ, καὶ ὁδὸν πρὸς ἐὼν, ἔδανδ.

εἰλεῖ γὰρ σε φυγεῖν κίερος πῆλιν. ἀλλὰ σὺ μὲν πρ  
παλαιδίθ' ἄστυ φύγεις, πλουτέα δ' ἐκφυγεις.  
λέγεται δέ πρτε αὐτὸν ἀπαρτῶντα τὸν μισθὸν εὐαι  
θλοῦ τὸν μαθητῶν, ἐκείνους ἐπένειμε, ἀλλ' ἐδὲ πω νε  
νίκηκα, εἰπὲν. ἀλλ' ἐγὼ μὲν αὖ νικήσω, ὅτι ἐγὼ ἐνίκη  
σα, λαβὲν με εἰδὲ. εἰάν δ' ἐσὺ, ὅτι σὺ. γέγονε δ' ἐπ' ἄλ  
λ' πρωταγῶρας, ἀσρολόγ' εἰς ὃν καὶ εὐφορέων ἐν  
ποικίλοις ἔγραφε. καὶ τρίτ' ὁ σωϊκὸς φιλόσοφ'.

## ΔΙΟΓΕΝΗΣ

Διογένης ἀκροαθόμενος ἀκροατοῦ, αὐτὸς φυ  
σικός. ἐπ' ἄγαν ἐμλόγιμ' ἤκουσε δέ φησιν αὐ  
πιδέχης, ἀναξιμάντι. τῷ δ' ἐν τῇς χρόνοις, καὶ αὐαί  
ξατόραν. ἑῶν φησὶν ὁ φαληρεὺς δημήτριος, ἐν τῇ  
σωκρατίστῃ ἀκροασίᾳ, εἶπε μέγαν φθόνον μικροῦ κιν  
δυνεύσαι ἀθλητήσιν. εἰδόμεν δ' αὐτὸν τὰ δέ. σοιχείοι  
εἶν' τὸν ἀδρά. κρόμ' ἀπείρ' αὐτοῦ, καὶ κρόν' ἀπείρο.  
τόν τε ἀδρά πικνούμενον καὶ ἀρεοῦμενον, γυννηπικόν  
εἶν' τὸν κρόμ' αὐτοῦ. ἐδὲ ἐκ τοῦ μὴ οὐτ' γίνεσθαι. ἐδὲ  
εἰς τὸ μὴ ὃν φθείρεσθαι. τὴν γὰρ σφύλλῳ ἡμεῖς  
μὲν

μὲν τὸν ἐν τῷ μέσῳ. τὴν σύστασιν εἰληφύϊαν καὶ τὴν  
ἐν τοῖς ὁδοῦ ποδικοῖς καὶ πῆξιν ὑπὸ τοῖς χυχοῖς.  
ἀρχὴ δὲ αὐτῶν τοῦ συγγραμματος, ἡ δὲ λόγος παν-  
τὸς ἀρχόμην, δὲ μοι χρεὼν εἶναι τὴν ἀρχὴν ἀ-  
ναμοισβίτην παρῆχεσθαι. τὴν δὲ ἐρμηνείαν, ἀ-  
πλὴν καὶ σεμνὴν.

## ΑΝΑΞΑΡΧΟΣ

**Α**ΝΑΞΑΡΧΟΣ αὐτοκράτης, ὅτι ἤκουσε διομή-  
νους τοῦ σμυρναίου. οἱ δὲ, μητροδώρῳ τοῦ χίς, ὃς  
ἔλεγε, μηδὲ αὐτὸν εἶδέναι ὅτι ἔδερ οἶδε. μητρο-  
δώρῳ δὲ νέσθαι τοῦ χίς. οἱ δὲ, δημοκρίτῳ φασίρῳ ἀ-  
κούσας. ὁ δὲ ἐν ἀναξάρχῳ, καὶ ἀλδζανδρῳ συλλύ.  
καὶ ἡμαρξὴ καὶ τὴν δεκάτῳ ἐξαρχῶν ὀλυμπια-  
δα. καὶ ἔχων ἐχθρόν, νικηκρίοντα τὸν κύπρου τύραν-  
νον. καὶ πρὸς τὸν συμποσίῳ τοῦ ἀλδζανδρῳ ἐρωτήσαν-  
τῶ αὐτὸν, τί ἄρα δυνεὶ τὸ δειπνον, εἰπεῖν φασίρ,  
ὦ βασιλεῦ, πάντα πλυτελῶς. ἔδει δὲ λοιπὸν καὶ  
φαλὴν σατραπείῃ πινὸς παρατεθεῖσθαι, ἀπὸ γίγνῃ  
πρὸς τὸν νικηκρίοντα. ὁ δὲ μνησικακίας μετὰ τὴν  
τελευτὴν τοῦ βασιλείῳ, ὅτε πλείων ἀκουσίως προ-  
σλήχθη τῇ κύπρῳ ὁ ἀναξάρχῳ, συλλαβὼν αὐ-  
τὸν εἰς ὄλμον βαλὼν, ἐκέλευσε σιδηροῖς ὑπόδοις τύ-  
πτεσθαι. τὸν δὲ οὐ φροντίσαντα τῆς πτωχείας εἰπεῖν.  
ἐκείνο δὲ εἰπεῖν τὸ ποδικοδόμην. πτύσε τὸν ἀνα-  
ξάρχου θύλακον. ἀναξάρχον δὲ οὐ πλῆθεις. κελύ-  
σαντῶ δὲ τοῦ νικηκρίοντῶ καὶ τὴν γλῶτταν αὐτοῦ



κτιμένη λῶαι, λόγῳ ἀκρτεροῦντα ἐμπτύσαι αὐτῶν.  
καὶ ἔσιρ ἡμῶν εἰς αὐτῶν οὕτως.

ωτίσσετε μάλορ ἐπὶ καὶ μάλορ, θύλακός ὅστι

ωτίσσετ' ἀνάξαρχῳ δ' ἐν δῖός ὅστι πάλαι.

καὶ σε δῖα σείλαι ὀλίγοι τὰ διυσινεφῶ τάδε λῖξει

ρήματα \* πόρσε φόνη ἔρει.

ἔτῳ δῖα τῶν ἀπειθείων καὶ ἐνκολίων τοῦ βίου, ἐν

δαιμονικὸς ἐπαλείψ. καὶ λῶ ἐκ τοῦ ῥάσθ δῖα ἄρσ σω

φρονίζειν. ἔν τῳ αὐτῷ ἀλέξανδρον οἰόμενον εἶν θεόν, ἐπὶ

τρεῖς. ἐπειδὴ γὰρ ἐκ τινῶ πληγῆς εἶδεν αὐτῶν

καταρῆϊον αἶμα, δειξας τῇ χειρὶ πρὸς αὐτῶν φησί.

τὸ τί μὲν αἶμα καὶ ὅτι ἰχθῶρ

οἷῳ πόρ τε ῥέει μακρότεροι θεοῖσι.

πλούταρχῳ δὲ αὐτῶν ἀλέξανδρον ῥάσθ λῖξει πρὸς

αὐτῶν φησί. ἀλλὰ καὶ ἄλλοι τε προπίνοντα αὐτῶν

τῶν ἄνδραρχων, δειξαι τῶν κύλικα καὶ ἐπεῖν.

βληθήσεται δὴ τίς θεῶν βροτοῦσία χειρὶ.

## ΠΥΡΡΩΝ

**Π**Υρρῶν ἡλῆι πλεισάρχου μὲν λῶ υἱός. καθὰ

καὶ διοκλῆς ἰσορῆι. ὡς φησι δὲ ἀκρλόδωρ ἐν

χρονικῶς, πρὸ τῶν λῶ ζωγράφῳ καὶ ἠκούσε δῖον

σων τοῦ σίλων, ὡς ἀλέξανδρῳ ἐν δῖα δῖον

χαῖς. εἶτα ἀναξάρχῳ ξυνακολουθῶν πανταχῶ, ὡς

καὶ τῶν γυμνοσφαιστῶν ἐν ἰνδία συμμίξαι, καὶ τῶν

μαλῶν. ὅθεν γυμναϊότατα δοκεῖ φησὶν αὐτῶν ὅτι

ἀντα

ἀγαθυνῆς καὶ ἐρχῆς εἰσαγαγῶν, ὡς ἀ-  
 σκάνῃ ὁ αὐτοῦ τοῦ φησὶν. ἔδερ γὰρ ἐφασκεν ἔτε  
 καλόν, ἔτε αἰσχρόν, ἔτε δίκαιον, ἔτε ἄδικον. καὶ ὁ  
 μοίως ὡς πάντῃ μὴδὲν εἶναι, τῇ ἀληθείᾳ νόμῳ δὲ  
 καὶ ἔθι πάντα εἶναι ἀνθρώπου πλάττειν. ἔ γὰρ μάλ-  
 λον τόδε, ἢ τόδε εἶναι ἔχον. ἀκούσθῃ δὲ ὡς ἐν  
 βίῳ, μὴδὲν ἐκτρέψῃ μὴδὲ φυλαττόμεν. ἀ-  
 παντα ὑφίσταμεν. ἀμάξας εἰ τύχοι καὶ κρημνός,  
 καὶ κνώας, καὶ ὅσα μὴδὲν ταῦς αἰσθάνονται ὑπὸ τρε-  
 πῶν. σώζεσθαι μὲν γὰρ καὶ φασὶν οἱ πόρι τὴν καρύ-  
 σιον ἀντίγονον ἑπὶ τῇ γνωρίμῳ παρακρολουθῶν  
 τῇ. αὐτοῦ δὲ φησὶν φιλοσοφῆν μὲν αὐτὸν καὶ  
 τὴν ἐρχῆς λόγον. μὴ μὲν γὰρ ἀπροσάπτως ἔχοντα  
 πλάττειν. ἀντίγονον δὲ φησὶν ὁ καρύσιον ἐν τῷ πε-  
 ρὶ πύργων τάδε πόρι αὐτοῦ. ὅτι τὴν ἀρχὴν ἀδ-  
 ξός τε ὡς καὶ πένης, καὶ ζωγράφῃ. σώζεσθαι τε αὐ-  
 τοῦ ἐν ἡλίδι ἐν τῷ γυμνασίῳ, λαμπραδίνας μετρί-  
 ως ἔχοντας. ἐκπατεῖν τε αὐτὸν καὶ ἐρημάζον πα-  
 νίως πρὶν ὑπὸ φαινόμενον τῆς οἰκῆς. εἶτα δὲ πρὶν ἀ-  
 κούσαντα ἰνδὺ πνέοντι δίδουρας ἀναξάρχῳ, ὡς  
 ἔκ ἀντιτόρον πνα διδάξαι ἑρὸς ἀγαθὸν αὐτὸς αὐ-  
 λὰς βασιλικὰς θόραπδύων. αἰετὲς εἶναι ἐν τῷ αὐτῷ  
 καταςήματι. ὡς τε εἰ καὶ πρὸ αὐτὸν καταλίπρι με-  
 ταξὺ λέγοντα, αὐτῷ δὲ διαπορεύειν τὸν λόγον, καὶ  
 γὰρ κεννημένον ὄντα ἐν νεότητι. πρὸς ἀντι-  
 πεδίμει μὴδὲν πρὸς πῶν, καὶ συνεπρόσβρο οἷς  
 ποιῇ



ποῖρ ἤβελον. καὶ πρτε ἀναξάρχῃ δὲ τέλμα ἱμπε  
 σόντ' ὅ, παρῆλθεν δ' βοηθήσας. πινῶν δὲ ἀπωμέ  
 νων, αὐτὸς ἀνώλαρχ' ὅ ἐπῆναι ῥ' ἀδισφορομ καὶ αἰ  
 σορφομ αὐτοῖ. καταληφθεὶς δ' ἔπρτε καὶ ἰαυτοῖ λα  
 λῶν, καὶ ἐρωτηθεὶς τίνω ἀπῆναι, ἔφη, μελεταῖν χρεῖσός  
 εἶναι. ἦν τε ταῖς ζητήσεσι, ἕως δ' ἰδνός καταφρονεῖ  
 ρ, δὲ ῥ' ἰσοδικῶς λέγειν καὶ πρὸς ἐρώτησι. ὅθεν ἔ  
 ναυσιφαίνω ἦδη νεανίσκοι ὄντα, θηραβλῶναι. ἔφασι  
 κεν σοῦ γίνεσθαι δ' εἰρ τῆς μὲν δ' ἰσθίσεως τῆς πυρρῶ  
 νείου. τῶν δὲ λόγων τῶν ἰαυτοῖ. ἔλεγε τε πρλαλκίς ἢ  
 ἐπίκουρομ θανμαλξοντα τίνω πυρρῶν ὅ ἀναστροφῶν,  
 σιωχίς αὐτοῖ πωθάνεσθαι ποδὶ αὐτοῖ. ὄντω δὲ αὐ  
 τῶν ὑπὸ τῆς πατοῖδ' ὅ πμηνῶναι, ὥς τε καὶ ἀρχι  
 ορία κατασῆσαι αὐτῶν, καὶ δι' ἐκείνορ πᾶσι ρίς φη  
 λασόφοις ἀτέλειαν ἡφίστασθαι. ἢ δὲ ζηλωτὰς ἔχε  
 πολλοὺς ῥ' ἀπεγμοσιώνης. ὅθεν ἔ' ὁ τίμωρ ποδὶ αὐ  
 τοῖ φησι οὕτως ἦν τῶν πύθωνι καὶ ἦν ρίς σίλλαις.  
 ὦ γόρρομ, ὦ πύρρῶν, πῶς ἢ πρῶν ἐκλυσιμ ἐνρδ  
 λατρείης δόξῶν τε κρηνοφροσιώνης τε σοφισῶν,  
 καὶ πάσης ἀπάτης πειθῶς τ' ἀπελύσας δόδμα,  
 δ' δὲ μέλει σοι ταῦτα μετλήσειν πινός αὔρας  
 ἱμαλδ' ἔχουσι, πρῶν δὲ καὶ εἰς ὅτι κυρεῖ ἱμασα.  
 καὶ πάλιν ἦν ρίς ἰνδιαλμοῖς.

τοτό μοι ὦ πύρρῶν ἱμείρεται ἦρρ ἀκούσαι,  
 πῶς πρ' ἀνὴρ ἔτ' ἄγεις ῥάσα μεθ' ἡσυχίας.  
 μοῦν ὅ ἦν ἀνθρώποισι θεῶ τρόπερ ἡγεμονόων.

ἀθλιωταῖοι δὲ καὶ πελιτεία αὐτῶν ἐπίμνησεν, καὶ δὲ φη-  
 σι δοκλῆς, ὡς ἴδω ἡρώτω τὸν θεῶνα δὲ χεῖρα δα-  
 ῖνσεβῶς δὲ καὶ τῇ ἀδελφῇ συμβίῳ, μαίᾳ ὅση καὶ δὲ  
 φησι ἐρατοδῆνης ἐν τῷ πῶδι πλούτῳ καὶ πνίᾳς,  
 ὅτι καὶ ἔτ' ὁ φόρῳ εἰς τὴν ἀφορᾶν, ἐπίπρασιν ὅρ-  
 νίδια καὶ χροῖδρα. καὶ τὰ ὡς τῆς οἰκίας καὶ δὲ τοῖς ἀ-  
 δελφοῖς. λέγεται δὲ καὶ δὲ λφαια λφῆν αὐτῶς ἔσθ' ἂν  
 ἀδελφορίας. καὶ χηλήσας τί πῶδι τῇ ἀδελφῆς. οὐλί-  
 σα δὲ ἐπαλεῖν, πρὸς τὸν λαβόμνον εἰπεῖν, ὡς ἐκ  
 ἐν γυναικί ἢ ἐπὶ δειξίς τῇ ἀδελφορίας. καὶ κινῶς πρὶ-  
 τε ἐπνεχθῆντ' ὁ δὲ σοβηθῆντα, εἰπεῖν πρὸς τὸν  
 αὐτοστέμνον, ὡς χελεπὸν εἶν' ὁλοχρῶς ἐκδῶναι  
 αὐθροπῶν. δὲ γωνίρεσθαι δὲ ὡς οἶον τε. πρῶτον μὲν  
 τῶς ἐρῶς πρὸς τὰ πλάγματα. εἰ δὲ μὴ, ὡς γὰρ λόγῳ.  
 φασὶ δὲ καὶ σπηληῶν φαρμακῶν καὶ ῥμῶν, ἔ' καὶ  
 σεωρ ἐπὶ τῷ ἔλκον αὐτῶν προσνεχθῆντ' ἂν, ἀλ-  
 λὰ μὴ δὲ τὰς ὁφρῶς σωμαγαγῆν. καὶ ὁ τίμων δὲ δὲ  
 σαφῆ τὴν διαδοῖν αὐτῶν, ἐν οἷς πρὸς πύθωνα δὲ  
 ξεισιν. ἀλλὰ καὶ φίλων ὁ ἀθλιωτῶν γινώσκουσιν αὐτῶν  
 γέγονος ἔλεγον, ὡς ἐμῆμνην μὲν δημονεῖται. ἔτα δὲ  
 καὶ ὁμῆς, θανμάζων αὐτῶν καὶ συεχῆς λέγων.  
 οἷον πῆρ φύλων γνῆν ῥήδε καὶ αὐθροῶν.  
 καὶ ὅτι φησὶ καὶ μυίας καὶ ὀρνέοις εἰσὶν ἔσθ' ἀνθρώ-  
 πους. προσφῶρεσθαι δὲ καὶ τὰ δὲ.  
 ἀλλὰ φίλ' ὁ δὲ καὶ σὺ, τὴν ὁλοφύρει αὐτῶς,  
 καὶ τὸ δὲ ἔ' πάτροκλος, ὡς πῶρ σέο πρὸς ἀμείνων.

καὶ



καὶ ὅσα σωτεῖν εἰς τὸ ἀβέβαιον, καὶ κενόσωτον δὲ  
 ἅμα καὶ παιδαριῶδες τῶν ἀνθρώπων. προσιδώνιος  
 δὲ καὶ ριούτο πείξεισι πόρι αὐτοῖ. τῶν γὰρ ἐμπει-  
 ὄντων δεκνυροπακότην ὑπὸ χειμῶνος, αὐτὸς γαλή-  
 νος ὦρ, ἀνέρξωσε τὴν ψυχὴν, δείξας ἐν τῷ πλείω  
 χειρίδιον δεδίον, καὶ εἰπὼν, ὡς χεὶρ τὸν σφοδρὸν ἐν ρι-  
 αὐτῇ καθεσάναι ἀταραξία. μόνος δὲ νομιώιος καὶ  
 δογματίσαι φησὶν αὐτόν. τὸ τὸ πρὸς τῆς ἄλλοις,  
 καὶ μαθηταὶ γεγόνασιν ἐμλόγιμοι. ὦρ ἐνυλόχος δὲ  
 φέρεται ἐλάσσωμα τόδε. φασὶ γὰρ ὡς οὕτω παρω-  
 ξυνήκηται, ὡς τε τὸν ὀβελίσκον ἀφ᾽ αὐτοῦ μετὰ τῶν κρη-  
 ῶν, ἕως τῆς ἀγορᾶς ἐδίωκε τὸν μάγειρον. καὶ ἐν ἡλί-  
 δι καταπνούμενος ὑπὸ τῶν ζητυώτων ἐν τῆς λό-  
 γοις, ἀκρῶς ἔχας θοιμάποι, διγνήξαι τὸν ἀλφειόν. ὡν  
 ὅσω πλεμώταρς τῆς σοφισαῖς, ὡς καὶ τίμωνα φα-  
 σὶν. ὁ δὲ τίμων, τὰ πλείσα διελέγεται. ὅθεν καὶ ποῦ  
 τὸ τὸ φησὶν ἔρς.

ἢ τῶν ἀπὸ ἀνθρώπων ἀπρόχολον, ἀντλαλὴν  
 δὲ ἐμπαρόμνον δόξης ἐρίδων τε φίλωνα.  
 πρὸς τὸ τῆς, δίκηονε τοῖς πύρρωνος, ἐκαταῖος τὲ ὁ αὐ-  
 δηρίτης. καὶ τίμων ὁ φιλάσιος ὁ αὐτοῦ σίλλωνος πεπρω-  
 κῶς. πόρι δὲ λέξομεν. ἐπὶ τὴν ναυσιφανῆς πῆις. δὲ φασὶ  
 πινδὸς ἀκοῦσαι ἐπίκουρον. ἔρι πάντῃς, πυρρῶναιοι  
 μὲν ἀπὸ τοῦ διδασκάλου, ἀκρητηκοὶ δὲ καὶ σκεωπι-  
 κοὶ, καὶ ἐπὶ ἐφεκτικοὶ, καὶ ζητητικοὶ, ἀπὸ τοῦ οἴου δό-  
 γμαρς προσηγορόντων. ζητητικὴ μὲν ὅσω φιλοσο-  
 φία

θία, ἀπὸ τοῦ πάνυ τε ζητῆν τὴν ἀλήθειαν. σκεπτι-  
 κή δὲ, ἀπὸ τοῦ σκέπτεσθαι αἰεὶ, καὶ μηδέποτε ἐνέ-  
 σκειν. ἐφεκτική δὲ, ἀπὸ τοῦ μὲν τὴν ζήτησιν πάθου.  
 λέγω δὲ τὴν ἐπὶ χλὺν. ἀκρητικὸι δὲ, ἀπὸ τοῦ οὐδὲ  
 ματηκούς ἀκρεῖν, καὶ αὐτοῖς. πυρρῶναι δὲ, ἀπὸ πυρ-  
 ρῶν Θ. θεοδόσιος δὲ ἐν τοῖς σκεπτικαῖς κεφαλαίοις, ὅ-  
 φησι δεῖν πυρρῶναι καλεῖσθαι τὴν σκεπτικὴν. εἰ  
 γὰρ ὅτι καὶ ἐκ τῶν κινήσεων τῆς ψυχῆς ἀληθινὰ  
 ὅτι, ὅτι εἰσόμεθα τὴν πυρρῶν Θ διαβάσειν. μὴ εἰδόν-  
 τες δὲ, ὅτι πυρρῶναι καλεῖσθαι, ἀντὶ τοῦ μὴ δεῖν  
 ἐν ἐκείνῃ τὴν σκεπτικὴν πυρρῶνα, μηδὲ ἔχειν  
 τί δόγμα. λέγουσι δ' αὖ πυρρῶναι Θ ὁμοτρόπως. ταύ-  
 τῃ δὲ τῆς αἰρέσεως, ὅτι φασι ὁμηροῦ κατὰ ἄξιν.  
 ἐπεὶ παρ' οὐτιν' ἄλλοτε ἄλλως ἀρφαίνεται, καὶ ὅ-  
 δὲν οὐκ ὡς δογματίζει ποῦ τὴν ἀρφασιν. ἐπεὶ καὶ  
 τῶν ἑωτὰ σοφῶν σκεπτικὰ εἶναι, οἷον, ὅτι μηδὲν ἄ-  
 γαν. καὶ, ἐγγύα πάρα δ' ἄτα. δηλοῦσθαι τοῦ βεβαίως  
 ὅτι πεπεισμένως διεγνυνμένῳ ἐπακροβυθεῖν ἄτλη.  
 ἀλλὰ καὶ ἀρχιλόχον καὶ ἐν ἐπιπίδῳ, σκεπτικῶς ἔ-  
 χειν. ἐν οἷς ἀρχιλόχ Θ μὲν φησι.

τοῖς ἀνθρώποις νοῦς γλαῦκε λεωτίνε ὦ παῖ  
 γίνεται θυητοῖς οὐρίῳ ζεὺς ἐφ' ἡμόρῳ ἄγει.  
 ἐν ἐπιπίδῳ δὲ.

τί δὴ ταῦτά τ' εἰς τοῦ ταλαιώρου φρονεῖν  
 βροτοῦ λέγεις; ὅτι γὰρ ἐξηρτημένα,  
 οὐκ ὡς τὰ τῶν ἀνθρώπων τυγχάνει βέλων.



ὃ μὲν ἀλλὰ καὶ ξυνοφάνης καὶ ριῶν ὁ ἐλεάτης καὶ  
δημόκριτος καὶ αὐτοὶ σκεωπικοὶ τυγχάνουσιν.  
ἐν οἷς ξυνοφάνης μὲν φησι.

καὶ ὁ μὲν οὖο σαφὲς ἔστι ἀνὴρ ἰδεῖν, ὃ δὲ τις ἔσαι  
εἰδώς. ριῶν δὲ τῶν κίνησιμ ἀνὴρ λέγων. ὁ  
κινούμηνον ἔτε ἐν ᾧ ὅστις τόπω κινεῖται, ἔτε ἐν ᾧ μὴ  
ἔστι. δημόκριτος δὲ τὰς πριότητας ἐκβαλὼν, ἵνα φη-  
σί. νόμω ψυχρόν, νόμω θερμόν. αἰτὴν δὲ ἄρμα, ἐκ  
νόμ. καὶ πάλιν. αἰτὴν δὲ ὃ δὲ ἰδμεν, ἐν βυθῷ γὰρ ἡ ἀ-  
λήθεια. καὶ πάλιν τὸ μὲν ἀληθὲς θεοῖς τε καὶ θεῶν  
πᾶσι ἐκχωρεῖν. ὁ δὲ εἰκότα λόγον ζητεῖν. καὶ ἐν  
ἐπιδιδῶν λέγειν.

τίς δ' οἶδεν εἰ ὁ ριῶν μὲν ὅστις κατθανεῖν,  
ὁ κατθανεῖν δὲ ριῶν νομίζεται βροτῆς;  
ἀλλὰ καὶ ἐμπεδοκλῆα οὕτως. ἐπεὶ ὃ δ' ὄρα τὰ τὰ  
δι' ἀνδρασιμ ἔτ' ἐπακροῦσα, ἔτε νόω πᾶσι ληπῆ. καὶ  
ἐπάνω. αὐτὸν μόνον πιδεῖν ἵνα προσέκυρσεν ἑκαστος.  
ἐπὶ μὲν ἡρώκλειον. μὴ εἰκὴ πᾶσι τῶν μεγίστων συμ-  
βαλόμεθα. καὶ ἱπποκράτῳ ἔπειτα ἐν ὁρίσας ἐκ  
θρωπίνως ἀρφαίνεσθαι. καὶ πρὸς ὁμηρον.  
σεπὶ δὲ γλώσσ' ὅστις βροτῆς, πρῆξ δ' ἐνὶ μῦθοι. ἐ  
ἐπὶ ὧν δὲ πρὸς νόμῳ ἔνθα καὶ ἔνθα. καὶ

ὁ πρὶον κ' εἰπῆσθαι ἐπὶ, ῥιον κ' ἐπακρούσας.  
τῶν ἰσοδύναμον λέγων καὶ ἀντίθετον τῶν λόγων. δι  
ετέλει δὲ οἱ σκεωπικοί, τὰ τῶν αἰρέσεων δόγματα  
πάντα ἀνατρέποντας. αὐτοὶ δὲ ὃ δὲ ἀρφαίνοντες  
μηδὲ

μηδ' αὐτ' ἴδω. ὥς τε καὶ ὃ μὴ ὀρίζει ἀνέρου λεί-  
 γοντ' οἶον, ὃ δὲ μὴ ὀρίζοντι, ἔπει ὀρίζον αὐτ'. περὶ φόροι  
 μὲν δὲ φασὶ τὰς ἀρχαίας εἰς μνήσιν τῆς ἀπροι-  
 πτωσίας. ὥς εἰ καὶ νούσαντας ἴδω, ἐνεδίχθη δὴ  
 λῶσαι, ὅθεν τῆς ὃ δὲ μὴ ὀρίζοντι φωνῆς. ὃ γὰρ ἀρρετί-  
 παθὲς δηλοῦται. ὁμοίως δὲ καὶ ὅθεν τῆς ὃ δὲ μὴ μά-  
 λον, καὶ ὃ γὰρ παντὶ λόγῳ ἀντίκειται, ὅ ταις  
 ὁμοίαις. λέγεται δὲ γὰρ ὃ δὲ μὴ μάλλον καὶ θετικῶς, ὥς  
 ὁμοίως πινῶν ὄντων. οἶον ὃ δὲ μὴ μάλλον ὁ πειρατὴς κα-  
 κὸς ὅστις ἢ ὁ φόβος. ἔπει δὲ τῶν σκεπτικῶν, ὃ θεπι-  
 κῶς, ἀλλ' ἀναιρετικῶς λέγεται. ὥς ἔπει τῶν ἀνασκού-  
 αζοντων ὅθεν λέγοντων, ὃ μάλλον ἢ σκύμα γέγονεν,  
 ἢ ἢ χίμαιρα. αὐτ' δὲ ὃ μάλλον, πρὶν ὅσον συγκριτικῶς  
 ἐκφέρεται, ὥς ὅταν φῶμι μάλλον ὃ μέλι γλυκὺ ἢ  
 τὴν σαφίδα. πρὶν δὲ θετικῶς ἐκφέρεται, ὥς ὅταν φῶ-  
 μι, μάλλον ἢ ἀρετὴ ὠφελεῖ ἢ βλάβη. σημαίνοντι  
 ὅτι ἢ ἀρετὴ ὠφελεῖ, βλάβη δὲ ὃ. ἀναιρεῖται δὲ οἱ σκε-  
 πτικοὶ αὐτῶν τῶν ὃ δὲ μὴ μάλλον φωνῶν. ὥς γὰρ ὃ μά-  
 λον ὅστις πρόνοια ἢ ὃ ἐστι, οὕτω καὶ ὃ δὲ μὴ μάλλον  
 ὃ μάλλον ὅστις, ἢ ὃ ἐστι. σημαίνει οὕτω ἢ φωνὴ κατὰ  
 φησι καὶ τίμων ἐν τῷ πύθωνι, ὃ μὴ δὲ μὴ ὀρίζει ἀλι-  
 λὰ προδετεῖν. ἢ δὲ παντὶ λόγῳ φωνὴ, καὶ αὐτὴ συ-  
 ναίνει τῶν ἐποχῶν. τῶν μὲν γὰρ πραγμάτων τῶν ὅθεν φων-  
 νοῦν τῶν, τῶν δὲ λόγων ἰσοδυναμοῦν τῶν, ἀγνωσία τῆς  
 ἀληθείας ἐπακολουθεῖ. καὶ αὐτῶν δὲ τῶν λό-  
 γων, λόγῳ ἀντίκειται. ὅς καὶ ὅθεν μὴ ὃ ἀνελείμ-



αὐτὸν ἄλλους, ὅφ' ἑαυτοῖς ποδὶ τραπέεις, ἀπὸ λυτοῦ, καὶ  
 τ' ἴσον ῥίς καὶ ἀσκητοῖς, ἀπὸ τῶν ὕλιν προεκκρίναν-  
 τα, καὶ αὐτὰ ὑπεκκρίνεται καὶ ἀπὸ λυτοῦ. πρὸς  
 ὅ φασι οἱ δογματικοί, μὴ αἶραι τὴν λόγον, ἀλλὰ προ-  
 σεπιοχρεῖται. μόνον οὖν διακρίνοισι ἔχων ῥίς λό-  
 γοις. ὅ γὰρ οἶον τε ἴω μὴ λόγῳ λόγον ἀνελθεῖν. καὶ ὁ  
 τρέπον ἐνώπιον λέγειν τόπον αἰ. εἶναι. καὶ δ' εἰ πάν-  
 τως τὴν τόπον εἰπεῖν. ἀλλ' ὅ δογματικῶς. ἀπὸ δ' αἰ-  
 τικῶς δέ. καὶ μηδὲν γίνεσθαι κατ' ἀνάγκην καὶ δ' εἰ  
 τῶν ἀνάγκην εἰπεῖν. ριζὶ τῶν τρέπον τῶν ἐρμηνεί-  
 ας ἔχων ῥίς. οἷα γὰρ φαίνεται τὰ πράγματα μὴ ρι-  
 αῦτα εἶναι τῇ φύσει, ἀλλὰ μόνον φαίνεσθαι. ζητεῖν τε  
 ἔλεγχον ὅχ' ἂν πόρ. νοοῦσι. ὅπ' γὰρ νοεῖται, διήλθον.  
 ἀλλ' ὡς ταῖς αἰσθήσεσι μετέχουσιν. ἔστιν ὅ πυρρῶν  
 νοῦ λόγῳ, μνήμη τις τῶν φαινομένων ἢ τῶν ὅπως  
 σοῦ νοομένων, καὶ τῶν πάντων πᾶσι συμβαλλετῶν,  
 καὶ συγκρινόμενα, πρὸς αὐτὴν ἀντιφάσκειν. ἔτι τὰ  
 ἔχοντα ἐνρίσκειται, καὶ δ' αἰσθητοῖς ἀντιφάσκειν. ὅπ' ἡ  
 εἰς τὰ πυρρῶν αἰσθητοῦ ὥστε τυπώσεται. πρὸς δ' εἰς  
 σκέψασιν ἀντιφάσεις, πρὸς τὰ δεικνυμένα καὶ ὅς  
 τρέπον πείθει τὰ πράγματα, καὶ τὰ αὐτὸν αὐτὸν ἀντι-  
 ροῦ τῶν ποδὶ αὐτῶν πίσι. πείθει γὰρ τὰ τε κατ'  
 αἰσθητοῖς συμφώνως ἔχοντα, ἔτι τὰ μηδέποτε ἢ πα-  
 νίως σοῦ μεταπίπτοντα. τὰ τε συσώθη καὶ τὰ νό-  
 μοις δεσαλμῶνα καὶ τρέποντα. καὶ τὰ δαυμαζόμε-  
 να. ἐδείκνυσαν οὖν ἀπὸ τῶν ἑναιτίων ῥίς πείθουσιν.  
 ἴσας

ἴσας τὰς πεθανότητας. αἱ δὲ ἀκρίαι καὶ τὰς συμ-  
 φωνίας τῶν φαινομένων ἢ νοουμένων, ὥς ἀπιδίδου-  
 σαι, ἦσαν κατὰ διέξιν τῶν, καὶ ὅς τὰ ὑποκεί-  
 μενα παραλλάττοντα ἐφαίνοντο. τούτων δὲ οὗ διέ-  
 ξιν τῶν τίθησιν. ἐν πρῶτον δὲ παρὰ τὰς διαφορὰς  
 τῶν ζώων πρὸς ἡδονὴν, καὶ ἀλγυδιόνα, καὶ βλάβην  
 καὶ ὠφέλειαν. συνίσταται δὲ διὰ αὐτῶν, ὅτι μὴ τὰς αὐ-  
 τὰς ἀπὸ τῶν αὐτῶν προαίωται φαντασίας. καὶ ὅτι  
 διότι τῇ τριακτῇ μάχῃ ἀκολουθεῖ ὅτι ἐπέχει. τῶν  
 γὰρ ζώων τὰ μὲν, χεῖς μίξεω γίνεσθαι, ὡς τὰ πυρί-  
 βια, καὶ ὁ ἀράβις φοίνιξ, καὶ ἑλαιοῦ. τὰ δὲ ὅτι ὡς ὡς  
 κῆς, ὡς ἀνθρώπων, καὶ τὰ ἄλλα. καὶ τὰ μὲν, οὕτως. τὰ  
 δὲ οὕτως συγκρίνεται. διὸ καὶ τῇ αἰσθάνει διαφορεῖ.  
 ὡς κίρκη μὲν, ὀξύταται. κυνὸς δὲ, ὀσφηνόταται. ἑνδὴ  
 λον δὲ οὗ τῆς διαφορῆς οὗ ὀφθαλμοῦς, διαφορὰ καὶ  
 τὰ φαντασμάτα προαίωται. καὶ τῇ μὲν αἰσθάνει,  
 ὅτι θάλλοι εἶναι ἐδωδισμόν, ἀνθρώπων δὲ πικρόν. καὶ  
 ὅτι κύνισον, ὀρετυγι μὲν τρώοιμον, ἀνθρώπων δὲ θανασί-  
 μον. καὶ ὁ ἀπὸ πατὸς, ὅτι μὲν ἐδωδισμόν, ἴσως δὲ ὅτι.  
 διὸ τούτων ὁ παρὰ τὰς τῶν ἀνθρώπων φύσεις, κατὰ  
 ἔθνη καὶ συγκρίσεις. δημοφῶν δὲ οὗ ὁ ἀλέξανδρου τρα-  
 πεζοκόμος ὅτι σκιά ἐδάλλετο. ὅτι ἡλίω δὲ ἐξήλθον. ἀν-  
 δρῶν δὲ ὁ ἀργεῖος ὡς φησιν ἀεισοτέλης δὲ τῇ αὐ-  
 τῶν λιβύης ὡς οὕτως ἀπὸ τῶν. καὶ ὁ μὲν ἰατρικῆς, ὁ  
 δὲ γεωργίας, ἄλλοι ἐμπειρίας ὀρέγεται. καὶ πάντα  
 ὅς μὲν βλάπτει, ὅς δὲ ὠφελεῖ. ὅθεν ἐφεκτίον. τρέ-





γυναικας. ἔλκυνδ δὲ, ὅ. κίλικίς τε λησεῖα ἔχειρον,  
 ἀμ' ὅχ' ἔλκυνδ. θεός τε ἄλλοι ἄλλος ἡγῶν. καὶ οἱ μὲν  
 πρηνόεσθαι. οἱ δ' ὅ. δάπτουσι δὲ αὐγύπσιοι μὲν, παρὶν  
 χόοντ' ὅ. ῥωμαῖοι δὲ, καίοντ' ὅ. παίονδ' δὲ εἰς τὰς  
 λίμνας ῥίπτοντ' ὅ. ὅθεν ποδὶ τὰ ληθεῖς ἢ ἐπ' ἡ. ἔκρς,  
 ὁ παρὰ τὰς μίξεις καὶ κρινωνίας, καθ' ὅρ' εἰλικρινῶς  
 ὁ δὲ καθ' αὐτ' φαίνεται. ἀλλὰ (ὡς αἶρι, (ὡς φωτί, (ὡς  
 ὕδρῳ, (ὡς σφραῖ, θορμότητι, ψυχρότητι, κινήσει, αἰα/  
 θυμωσει, αἰαίς δυνάμει. ἢ γὰρ πρὸς φύρα, διὰ  
 φορορ ὑποφαίνει χρωμα, ἐν ἡλίῳ, καὶ σελλῶν, ἔλκυν/  
 χνω. καὶ ὅ. ἡμέτερον χρωμα, ἄλλοιον ὑπὸ τῇ με/  
 συμβεῖα φαίνεται. καὶ ὁ ἡλιος. καὶ ὁ ἐν αἶρι ὑπὸ δυ/  
 οῖρ κρουζόμενος λίθος, ἐν ὕδατι ῥαδίως μετατίθε/  
 ται. ἢ ἡ βαρὺς ὡρ καὶ ὑπὸ τοῦ ὕδατος κρουζόμε/  
 νος. ἢ ἡ λαφρὸς ὡρ καὶ ὑπὸ τοῦ ἀέρος βαρυμόλνος.  
 ἀγνοοῦμεν οὖν ὅτι κατ' ἰδίαν ὡς ἔλαιον ἐν μύρῳ. ἔβ/  
 δομεθ', ὁ παρὰ τὰς ὑποστάσεις, καὶ πρὸς θέσεις καὶ  
 οὐ πῶς καὶ τὰ ἐν τῇ τοῖς. κατὰ τὸ ὅσον ὅρ' τὸ  
 περὶ τὰ δοκῶντα εἶναι μεγάλα, μικρὰ φαίνεται, τὰ  
 τε πρὸς γωνία, ἐξοχὰς, τὰ ὁμαλὰ, ἐξοχὰς ἔχοντα, τὰ  
 ὀρθὰ, κεκλασμένα, τὰ ὡχρὰ, ἐξοχὰς. ὁ γοῦν ἡ/  
 λιος παρὰ ὅ. διασημα πρὸς ὅθεν φαίνεται. καὶ τὰ  
 ὅθεν πρὸς ὅθεν ἀδρῶν καὶ λεία. ἐγγύθεν δὲ τρα/  
 χία. ἔτι ὁ ἡλιος ἀνίσχων μὲν, ἄλλοις. μόνον  
 ῥαῶν δὲ, οὐχ ὅμοιος. καὶ τὸ αὐτὸ σῶμα ἐν μὲν  
 ἔλσει, ἄλλοις. ἐν δὲ τῇ γῇ, ἔτδρον. καὶ ἢ εἰκὼν,  
 παρὰ



παρὰ τῶν πρὶαν θείων. ὅτε γὰρ πρὸς δὲ τῶν τριῶν χηλῶν  
 παρὰ τῶν τροφῶν. ἐπεὶ οὖν ἐκ γένεω τῶν πατρῶν καὶ θε-  
 σεων ταῦτα καὶ ταυνοῦσαι, ἀγνοεῖται ἡ φύσις αὐτῶν.  
 ὅθεν οὖν, ὁ παρὰ τὰς προσότητας αὐτῶν ἢ θερμότη-  
 τας, ἢ ψυχρότητας, ἢ ταχύτητας, ἢ βραδύτητας, ἢ  
 ὠχρότητας, ἢ ἐτόροχρησιότητας. ὁ γὰρ οὖν οἶν οὖν μέτριος  
 μὲν ληθεῖς, ὁ δὲ πλείων. πλείων δὲ, παρὲν οἶν. ὁμοίως καὶ  
 ἡ τροφή, καὶ τὰ ὅμοια. γὰρ οὖν, ὁ παρὰ τὴν ἐνδελεχίαν,  
 ἢ ξηρόν, ἢ ἀσπύριον. οἱ γὰρ σειςμοὶ παρὰ οἷς σπινθηρῶς  
 ἀκτινοῦται ἐκ δαυμαλίζονται. ἐκ δὲ ὁ ἥλιος ὅτι καὶ  
 θ' ἡμῶν ὁράται. γὰρ γὰρ φαβωρῶν οὖν. σεί-  
 τῳ δὲ καὶ αὐτοδιδήμῳ, ἰ. ἀλλὰ καὶ γὰρ ἰ σεί-  
 τῳ ἢ φησὶ. φαβωρῶν δὲ θ. δὲ καὶ οὖν, ὁ κατὰ  
 τῶν πρὸς ἀλλήλα σύμβλησιν. καὶ δὲ πρὸ γὰρ κοῦφορ  
 παρὰ γὰρ βαρύν. γὰρ ἰσχυρόν παρὰ γὰρ ἀσθενές. γὰρ μετρίον  
 παρὰ ἔλαττον. γὰρ αὖν παρὰ γὰρ ἡγῶν. γὰρ γὰρ δεξιόρ  
 φύσει μὲν ἐκ ἐξὶ δεξιόρ. κατὰ δὲ τῶν ὡς πρὸς γὰρ ἐπε-  
 ρον οὐκ ἐπὶ νοεῖται. μετατεθέντῳ γὰρ ἐκείνου, οὐκ  
 ἔσαι δεξιόρ. ὁμοίως καὶ πατὴρ καὶ ἀδελφός, ὡς πρὸς  
 π. καὶ ἡμῶν ὡς πρὸς γὰρ ἡλίον. Ἐπὶ πάντα ὡς πρὸς  
 τῶν διαύοιαν. ἀγνοῦσα οὖν τὰ πρὸς π, ὡς καὶ ἔαν-  
 ται. καὶ ἔτι μὲν οἱ δὲ καὶ τῶν πρὸς π. οἱ δὲ πρὸς ἀγρίων  
 τῶν ἄλλων πρὸς π. πρὸς π. πρὸς π. πρὸς π. πρὸς π. πρὸς π.  
 διαφωνίας, καὶ γὰρ εἰς ἀπειρον ἐμβαλλονται, καὶ γὰρ  
 πρὸς π, καὶ γὰρ ἐκ ἀποθέσεως, καὶ γὰρ δι' ἀλλήλων. ὁ  
 μὲν οὖν ἀπὸ γὰρ διαφωνίας, ὁ δὲ πρὸς π. γὰρ πρὸς π.

ρὰ τῆς φιλοσόφοις ἢ τῇ σωηθείᾳ, πλείους μάχης  
 καὶ παραχῆς πληροῦς ἀποδεικνύει. ὁ δὲ εἰς ἀπειρομ  
 ἐμβάλλων ἐκ ἐᾶ βεβαιῶσαι τὸ ζητούμενον, ὅλῃ τὸ ἄλ  
 λω ἀπὸ ἄλλου τῶν πῖσιρ λαμβάνει, καὶ οὕτως εἰς  
 ἀπειρομ. ὁ δὲ πρὸς τι, ἐδὲν φησι κατ' αὐτὸ λαμβάνε  
 σθαι, ἀλλὰ μετ' ἐτόρσε. ὅθεν ἀγνοῦσα εἶναι. ὁ δ' ἔξ ὑπο  
 θέσεως τρὸς σωίσαται, ὁιομνῶν τινῶν τὰ πρῶ  
 τα τῶν πραγμάτων αὐτόθεν δεῖν λαμβάνειν ὡς  
 πῖσιρ, καὶ μὴ αὐτεῖσθαι. ὁ δὲ μάλιστα. τὸ ἐναντίον  
 γὰρ τις ὑποθέσεται. ὁ δὲ δι' ἀλλήλων τρὸς σωί  
 σαται, ὅταν τὸ ὀφείλον τοῦ ζητυμένου πραγμάτων  
 εἶναι βεβαιωπύρ. οἷον εἰ τὸ εἶναι τίς βεβαίῳ, ὅλῃ τὸ  
 ἀρκείας γίνεσθαι. ἀνθρώπου δι' ἑρῖ, ἔσῃ παρὰ ἀπὸ δέξιμ,  
 καὶ κριτικῶν, καὶ σημείων, καὶ αἰτιῶν, ἔσῃ κινήσιν, καὶ μάθιν  
 σιν, καὶ γῆδισιν, καὶ τὸ φύσει τί εἶναι ἀγαθὸν ἢ κακόν.  
 πᾶσα γὰρ ἀπὸ δειξίς φασίρ, ἢ ἔξ ἀποδείξει γμνῶν  
 σύγκειται χημάλτῃ, ἢ ἔξ ἀναπρδείκτῃ. εἰ μὲν  
 ὅμως ἔξ ἀποδείξει γμνῶν κακῆνα δέσεται πνὸς ἀπο  
 δείξεως. καὶ τεύθην εἰς ἀπειρομ. εἰ δὲ ἔξ ἀναπρδεί  
 κτῃ, ἢ ἑρῖ πάντῃ, ἢ πνῶν, ἢ καὶ ἑνὸς μόνου δισαζομέ  
 νου, καὶ τὸ ὅλον εἶναι ἀναπρδείκτῃ. εἰ δὲ δοκῇ φασίρ  
 ὑποᾶρχειν πνὰ, μηδεμιᾶς ἀποδείξεως δέομνα, θαν/  
 μασοὶ τῆς γνώμης, εἰ μὴ σωίασιν ὅτι εἰς αὐτὸ ἔσῃ  
 πρῶτῃ ὡς ἄρ' ἔξ αὐτῇ ἔχει τῶν πῖσιρ, ἀποδείξεως  
 χεῖ. ἐδὲ γὰρ τὸ τέπαρα εἶναι τὰ σοιχεία, ἐκ τοῦ τέτ/  
 παρα εἶναι, βεβαιώτερον. πρὸς τοῦ καὶ τῇ κατὰ μέ/



ρθ' ἀφ' ἀδείξεωρ ἀπισουμένων ἀπισοι ἐναι καὶ τῶν  
 γρηκῶν ἀφ' ἀδείξεωρ. ἵνα τὲ γινώσκῃ, ὅτι ἔστιν ἀφ' ἀδείξεωρ,  
 κριτικὸς δέ ἐστι. καὶ ὅτι ἔστι κριτικὸν ἀφ' ἀδείξεωρ δέ ἐστι.  
 ὅθεν ἐκ γὰρ ἀφ' ἀδείξεωρ ἀναπεμψόμενα ἐπὶ ἀλ-  
 ληλα. πῶς ἂν ὁμοῦ καὶ ἀλλήλοισιν τὰ ἀδύνατα, τῆς  
 ἀφ' ἀδείξεωρ ἀγνοουμένης. ζητεῖται δὲ ἔκ ἐκείνης φαίνεται  
 ῥαῦται. ἀλλ' εἰ καὶ ἔστι ἡ ἀπόφασις οὕτως ἔχει. ἐνέστις  
 δὲ τοῦ διγυματικῆς ἀπίφανοι. ὅτι γὰρ ἐκ ἐκείνης  
 ὡς ποραινόμενον, ὅτι σκέψας, ἀλλὰ θέσεως ἔχει λό-  
 γον. ῥιθ' τῷ δὲ λόγῳ, καὶ ἔστι ἀδύνατον ὅτι οὐκ ἔστι  
 χερσὶν. τοῦ δὲ διομενέου μὴ δεῖν ἐκ τῆς κατὰ πε-  
 ρισασιν κριτικῆς τὰ ἀληθῆς, μὴ δ' ἐκ τῆς κατὰ φύσιν, νομοθε-  
 τείν. ἔλεγον αὖτε μίτρα τὴν πάντων ὁρίζεσθαι, ὅτι ὁρῶν-  
 τας ὅτι πᾶν ὅτι φαίνεται, καὶ ἀντιπρόστασιν ἢ διὰ  
 θεσιν φαίνεται. ἢ γὰρ πᾶν ἀληθὺς ἢ ἡ πᾶν  
 τοῦ δὲ. εἰ δ' ἐστὶν ἔστιν ἀληθὺς, τῆς δὲ ἀφ' ἀδείξεωρ. ὅτι γὰρ  
 αὐτοῦ τὰ καὶ αὐτοῦ, πᾶν τῆς ἴσως αὐτῇ φαινομέ-  
 νων, ὅτι νοήσας δὲ τῶν ῥαῦται αὐτῶν. ἄλλῃ δὲ πᾶν  
 τῶν εἰς ἐπίκρισιν δυνάμεις ὅτι ὁρᾷται. ὅτι ἐν φασὶ  
 πρὸς ἑαυτοῦ ἀφ' ἀδείξεωρ αὐτοῦ ἢ νοητοῦ, πρὸς τὸν  
 ὁφείλει τὰς πόλιν τὰ τῆς δόξας κατὰ τὴν αὐτῆς. ὁμοῦ δὲ,  
 τῶν ταῦτα. οἱ δὲ, τῶν ταῦτα ἀνερμήνευτοι. δέ ἐστι δὲ, ἢ δὲ αὐτοῦ,  
 ἢ νοητοῦ κριτικῶν. ἐκ γὰρ ἀφ' ἀδείξεωρ δὲ ἀμφοσβητεῖται. ὅτι  
 νῦν δυνάμεις τὰς πόλιν αὐτοῦ ἢ νοητοῦ ὡς κριτικῶν  
 δόξας. εἴτε δὲ τῶν ἐν ταῖς νοήσας μοχλῶν ἀπα-  
 ρητοῦ, πᾶν ἀναιρεθῆσεται ὅτι μέτρον, ὅτι δὲ τὰ  
 πάντα

πάντα ὁρᾷ βούδαι. πάν' οὖν ἴσον ἡγήσονται. ἐπὶ  
 φησὶν ὁ συζητῶν ἡμῖν, ὅτι φαινόμενον πισὸν ὅστις, ἢ  
 οὐ. εἰ μὲν οὖν πισὸν ὅστις, ὅθεν ἔξει λέγειν πρὸς τὸν  
 ὃ φαίνεται τοῦναντίον. ὥς γὰρ αὐτὸς πισὸς ὅτι φαι  
 νόμῳ λέγων, οὕτω καὶ ὁ ἐναντίος. εἰ δ' ἄπιστος,  
 καὶ αὐτὸς ἄπιστος ῥησεται ὅτι φαινόμενον λέγων. τὸ τε  
 πείθον ὅτι ὑποληπτόν ἀληθὲς ὑποφύχει. ὅτι γὰρ  
 πάντας ὅτι αὐτὸ πείθει. ὅθεν οὖν αὐτοῦ συνεχίς. γί  
 νεται δὲ καὶ παρὰ τὸ ἐκ τῶν ἡ πιθανότης, παρὰ τὸ ἐν  
 δεξιῷ τοῦ λέγοντος, ἢ παρὰ τὸ φροντιστικόν, ἢ παρὰ τὸ  
 αἰμύλον, ἢ πρὸς τὸ συνήθως, ἢ παρὰ τὸ κεχειρισμένον.  
 ἀνῆρου δὲ καὶ τὸ κριτικόν, λόγῳ τῷδε. ἡ γὰρ κριτικὴ  
 καὶ τὸ κριτικόν, ἢ ἀκριτόν ὅστις. ἀλλ' εἰ μὲν ἀκριτόν  
 ὅστις, ἄπιστος ἡγεθήσεται, ὅτι διημάρτηκε τοῦ ἀληθοῦς ὅ  
 τοῦ φεύδους. εἰ δὲ κριτικὴ, ἐν τῷ καὶ μὲν ὅτι ἡγήσε  
 ται κρινόμενον. ὥς τ' αὖν ὅτι αὐτὸ καὶ κρίνει καὶ κρίνε  
 σθαι. ὅτι κρινόμενος ὅτι κριτικόν ὑφ' ἐτοῦτον κρινέσθαι  
 καὶ κρινόμενος ὑπὸ ἄλλου, καὶ οὕτως εἰς ἄπειρον. πρὸς τοῦ καὶ  
 ὁρᾷ φωνεῖται ὅτι κριτικόν. τὸ γὰρ, τὸ ἀνθρώπου κριτικόν  
 εἶν' λεγόντων. τὸ γὰρ, τὰς αἰσθήσεις. ἄλλων, τὸ λόγον. ἐνί  
 κων, τὴν ἡγεταληπτικὴν φαντασίαν. καὶ ὁ γὰρ ἀνθρώπος, καὶ  
 πρὸς αὐτὸ ὁρᾷ φωνεῖται, καὶ πρὸς τοῦ ἄλλου. ὥς διήλυν ἐκ  
 τὸ ὁρᾷ φωνεῖται νόμων καὶ ἐθῶν. αἱ δὲ αἰσθήσεις, φεύδου  
 τζ. ὁ δὲ λόγος, διάφωτος. ἢ ὅτι ἡγεταληπτικὴ φαντασία,  
 ὑπὸ νῦν κρίνεται, καὶ ὁ νῦν πρὸς τὴν κρίσιν. ἀγνώστον ἐν  
 ἐπὶ τὸ κριτικόν, καὶ ὁρᾷ φωνεῖται ἢ ἀλήθεια. σημεῖον τὸ



ἔκ εἶναι. εἰ γὰρ ὅτι φασὶ σημείον, ἢ ῥι αἰσθητὸν ὅτι  
 ἢ νοητόν. αἰσθητὸν μὲν ἔκ ὅτι. ἐπεὶ ῥ αἰσθητὸν καὶ  
 νόμ ὅτι. ῥ δὲ σημείον, ἴδιον. καὶ ῥ μὲν αἰσθητὸν καὶ  
 τὰ διαφοραῖν. ῥ δὲ σημείον, τῶν πρὸς π. νοητὸν δὲ ἔκ  
 ἔστιν. ἐπεὶ ῥ νοητόν ἢ ῥι φαινόμενον ὅτι φαινομένου,  
 ἢ ἀφανὲς ἀφανὲς, ἢ ἀφανὲς φαινομένου, ἢ φαινόμενον  
 ἀφανοῦς. ὃ δὲ μὲν δὲ τὸ τῶν ὅτι, ἔκ ἄρα ὅτι σημείον.  
 φαινόμενον μὲν ὁμο φαινομένου ἔκ ἔστιν, ἐπεὶ ῥ φαινό  
 μενον ὃ δὲ τίται σημείον. ἀφανὲς δὲ ἀφανοῦς ἔκ ἔστιν.  
 ἐπεὶ δὲ φαίνεσθαι ῥ ἐκκαλῶ τὸ μενον ὑπὸ πινθ.  
 ἀφανὲς δὲ φαινομένου ὃ δυνάται, καὶ θόπι δὲ φαίνε  
 σθαι ἔσθι ἐπὶ τῶν παρὲξ ἀφορμῶν ἀποκαλύψεως.  
 φαινόμενον δὲ ἀφανοῦς ἔκ ἔστιν, ὅτι ῥ σημείον τῶν  
 πρὸς π ὁρ, συγκαταλαμβάνεσθαι ὀφείλει ἔσθι ὃ ἔστι  
 σημείον. ῥ δὲ, μὴ ἔστιν. ὃ δὲ μὲν ἄρα τῶν ἀδήλων αὐ καὶ  
 καταλαμβάνοι. ὅτι γὰρ τῶν σημείων λέγεται τὰ αὐ  
 δηλα καὶ καταλαμβάνεσθαι. ἀναιροῦσι δὲ ῥ αἰτιον ὡ  
 δε. ῥ αἰτιον τῶν πρὸς π ἐσθι. πρὸς γὰρ ἔσθι αἰτιον  
 ὅτι. τὰ δὲ πρὸς π ἐννοεῖται μόνον, ὑπάρχει δὲ οὐ.  
 καὶ ῥ αἰτιον, ἐπεὶ ἔκ ἔσθι αἰτιον. καὶ ὡς πρὸς ὁ πα  
 τὴρ μὴ παρὸν τῶν πρὸς ὁ λέγεται πατὴρ, ἔκ αὐ  
 εἶν πατὴρ, οὕτως δὲ ἔσθι ῥ αἰτιον. ὃ παρὲς δὲ πρὸς  
 ὁ νοεῖται ῥ αἰτιον. ὅτε γὰρ γνέσθι, ὅτε φθορᾷ, ὅτε  
 ἄλλο π. ἔκ ἄρα ὅτι αἰτιον. καὶ μὲν εἰ ἔστιν αἰτιον, ἢ  
 ῥι σῶμα, ἢ ἀσώματον ἔστιν αἰτιον, ἢ ἀσώματον ἀσώ  
 μάτῳ. ὃ δὲ μὲν δὲ τὸ τῶν, ἔκ ἄρα ὅτι αἰτιον. σῶμα μὲν  
 ὁμο

ὁμοῦ σώματ' ἔκ' ἂν εἴη αἵ πορ, ἵπ' αἰ ἀμφοτέρω τῶν  
 αὐτῶν ἔχει φύσιν. καὶ εἰ τ' ἑτέρω αἵ πορ λέγεται  
 παρ' ὅσων ἔστι σῶμα, καὶ τ' λοιπὸν σῶμα ὅρ, αἵ πορ  
 γνῆσεται. κοινῶς δὲ ἀμφοτέρω αἰτίω ὄντ' ἔδερ  
 ἔσαι τ' πάχορ. ἀσώματ' δὲ ἀσωμάτ' ἔκ' ἂν εἴη  
 αἵ πορ ὅτ' αἵ τ' αὐτ' ῥ' λόγ' ὁρ. ἀσώματ' δὲ σώματ',  
 ἔκ' ἔσαι αἵ πορ. ἵπ' αἰ ἔδερ ἀσώματ' πρὶ σῶμα. σῶ  
 μα δὲ ἀσωμάτ', ἔκ' ἂν εἴη αἵ πορ. ὅτ' αἵ τ' γνόμενον  
 τῆς παχέστες ὕλης ὁφείλει εἶναι. μηδὲρ δὲ πάχορ  
 ὅτ' αἵ τ' ἀσώματ' εἶναι, ἔδ' ἂν ἔπο πνθ' γήοιτ'. ἔκ'  
 ἔσαι ῥίνω αἵ πορ. ὅτ' αἵ σωματ' ἔκ' αἵ τ' αὐτ' ὅτ' αἵ  
 εἶναι τὰς τῶν ὅλων ἀρχάς. δέι γὰρ εἶναι π' τ' πρῶτον  
 καὶ δῶρ. ἀλλὰ μὴν ἔδ' κίνησις ἔστι. τ' γὰρ κινού/  
 μιν, ἢ ῥ' ἔκ' ἔστι τῶν κινεῖται, ἢ ἔκ' ἔκ' ἔσαι ἔδ' κινεῖται.  
 ἔκ' ἔσαι ὁμοῦ κίνησις. ἀνέρου δὲ καὶ μαθή/  
 ματ'. εἰ πόρ φασὶ διδασκεταί π. ἢ ῥ' τ' ὅρ τῶν εἶ/  
 ναι διδασκεταί. ἢ τ' μὴ ὅρ, τῶν μὴ εἶναι. ἔτε δὲ τ' ὅρ  
 τῶν εἶναι διδασκεταί. ἢ γὰρ τῶν ὄντ' φύσις, πᾶσι  
 φαίνεται καὶ γινώσκεται. ἔτε τ' μὴ ὅρ, τῶν μὴ ὄντ'.  
 τῶν γὰρ μὴ ὄντ', ἔδ' συμβέβηκεν. ὥς τε ἔτε τ' διδασ/  
 κεῖται. ἔδ' μὴ γνῶσις ἔστι φασί. ἔτε γὰρ τ' ὅρ γί/  
 νεται. ἔσαι γὰρ. ἔτε τ' μὴ ὅρ. ἔδ' γὰρ ὑφέστηκε. τὸ δὲ  
 μὴ ὑφέτως μηδὲ ὅρ, ἔδ' τὸ γίνεσθαι ἐντύχηκε. φύσις  
 τὴ μὴ εἶναι ἀγαθὸν ἢ κακόν. εἰ γὰρ ἔστι φύσις ἀγα/  
 θόν καὶ κακόν, πᾶσι ὁφείλει ἀγαθόν ἢ κακόν ἔπασ/  
 χαι, ὥς πόρ ἢ χιῶν πᾶσι ψυχόν. κοινὸν δὲ ἔδ'



πάντων ἀγαθὸν ἢ κακὸν ὅστις, ἐκ αἵα ὅστις φύσει ἀγα-  
 θὸν ἢ κακὸν. ἢ γὰρ πᾶν τὸ ὑπὸ πυθ δόξαζόμενον  
 ἤντικον ἀγαθὸν ἢ κακὸν. καὶ πᾶν μὲν ἔντικον, ἐπεὶ τὸ  
 αὐτὸ ὑφ' ἑ μὲν δοξάζεται ἀγαθὸν ὡς ἡ ἡδονή. ὑφ' ἑ  
 δὲ κακὸν ὑπὸ ἀποδείξεως. συμβέσεται γίνωσι τὸ αὐ-  
 τὸ, ἀγαθὸν τε εἶναι καὶ κακὸν. εἰ δ' ἔτι πᾶν λείγοιεν τὸ  
 ὑπὸ πυθ δόξαζόμενον ἀγαθὸν, δείξει ἡμᾶς διακρί-  
 νειν τὰς διόξας. ὁ πόρ ἐκ ἐνδεχόμενον ὅστις διακρί-  
 νειν τὰς διόξας. ἢ γὰρ λόγῳ. ἀγνοῶσι οὖν τὸ φύσει ἀγα-  
 θὸν. εἰσι δὲ καὶ τὸν ὅλον τῆς σωτηρίας αὐτῶν τρέ-  
 πη σωιδεῖν, ἐκ τῶν ἀφαιρεθεισῶν σωταξίω. αὐ-  
 τὸς μὲν γὰρ ὁ πύρξωρ ἔδει ἀπέλιπεν. οἱ μὲν γὰρ συ-  
 νήθεις αὐτὸ τίμωρ καὶ ἀνδρίδην, καὶ νομωδίας  
 καὶ ναυσιφανείας, καὶ ἄλλοι γιούρι. οἷς ἀντιλέγοντες  
 οἱ δογματικοὶ φασιν αὐτῶν καὶ ταλαμβαίνειν καὶ  
 δογματίζειν. ἐν ᾧ γὰρ δοκῶσι δειλύνειν, καὶ τα-  
 λαμβαίνονται. καὶ γὰρ ἐν τῷ αὐτῷ κρατυῶν καὶ  
 δογματίζειν. καὶ ὅτε φασὶ μηδὲν ὀρίξειν καὶ παντὶ  
 λόγῳ λόγον ἀντικείμεναι, αὐτὰ ταῦτα καὶ ὀρίζονται  
 δογματίζειν. πρὸς δὲ ἀκροκρίνονται. πόδε μὲν ὡς  
 ἀνθρώπῳ πάσχομεν ὁμολογῶμεν. καὶ ὅτι ἡμῶν ὅστις  
 καὶ ὅτι ζῶμεν, καὶ ἄλλα πολλὰ τῶν ἐν τῷ βίῳ φαινο-  
 μένων διαγινώσκουμεν. πόδε δὲ ὡς οἱ δογματικοὶ δια-  
 βεβαιοῦνται τῷ λόγῳ, φαίμενοι κατελήφθη, ἐπὶ  
 χερσὶν πόδε τὰ τῶν ὡς ἀδελφῶν. μόνον δὲ τὰ πάθη γι-  
 νώσκουμεν. πῶς δὲ ὀρίμεν, ἢ πῶς νοσῶμεν, ἀγνοῶμεν. ὅτι

ὅτι τόδε λούκον φαίνεται, ὃ δὲ βαβαίουμνοι εἰ καὶ  
 ὅντως ὅστι. πόθεν δὲ τῷ ὅτι δὲ ὀρίζω φωνῆς καὶ τῷ ὁμοί  
 ων λέγομεν, ὡς οὐ δογματίζω. οὐ γὰρ εἰσὶν ὁμοία τὰ  
 λέγειν ὅτι σφαιροειδὲς ὅστις ὁ κόσμος. ἀλλὰ γὰρ  
 τὸ μὲν, ἀδελφον. ἐν ᾧ λέγομεν, μηδὲν ὀρίζειν, οὐδ' αὖ  
 τὸ ὅτι ὀρίζομεθα. πάλιν οἱ δογματικοὶ φασί, καὶ  
 τὸν βίον αὐτοῦ ἀναιρεῖν, ἐν ᾧ πάντα ἐκβαλλουσιν,  
 ὡς ὅτι βίος σωτήριον. οἱ δὲ, ψεύδεσθαι φασὶν αὐ  
 τοῦ. οὐ γὰρ τὸ ὅτι ἀναιρεῖν, ἀλλὰ τὸ πᾶσι ἀγνο  
 εῖν. καὶ γὰρ τὸ φαινόμενον τιθέμεθα, οὐχ ὡς καὶ τὸ  
 ὅτι. ὅτι πῦρ καίει αἰσθανόμεθα, εἰ ἡ φύσιν ἔχει  
 καυσικὴν ἐπὶ χυμῶν. καὶ ὅτι κινεῖται τίς βλέπουμεν, καὶ ὅτι  
 φθείρεται. πᾶσι ταῦτα γινώσκουσιν, ὅτι ἴσμεν. μόνον ἐν φασὶν  
 ἀντιστάμεθα, πρὸς τὰ πρὸς τὰς φαινόμενοις  
 ἀδελφαι. καὶ ὅτι τῷ εἰκόνα, θεοχὰς λέγομεν ἔχειν, τὸ  
 φαινόμενον δὲ λαφύμεν. ὅταν ἡ εἰπωμεν μὴ ἔχειν αὐ  
 τῷ θεοχὰς, οὐκ ἐστὶν ὁ φαίνεσθαι, ἔσθον ἡ λέγομεν. ὅθεν  
 ὁ τίμων ἐν ᾧ πύθωνι φησί. μὴ ἐκβεβηκέναι τῷ (ἡνί  
 κειαν. καὶ ἐν τῷ ἰνδαλμοῖς οὕτω λέγει.

ἀλλὰ τὸ φαινόμενον παντὶ ὁρᾷ ὃ πορ αὐτὸ ἔλθῃ.  
 καὶ ἐν τῷ πόθεν αἰσθάνομεν φησί. τὸ μὲν ὅτι ἐστὶ γλυ  
 κὺ, οὐ τίθημι. τὸ δὲ ὅτι φαίνεται, ὁμολογῶ. καὶ αὖτε  
 σίδηρον ἐν τῷ πρῶτῳ τῷ πυρρῶν λόγων, οὐ  
 διὰ φησὶν ὀρίζειν τὸν πυρρῶνα δογματικῶς δὲ τῷ  
 ἀπολογίαν. τῷ δὲ φαινόμενοις ἀπολογεῖν. ταῦτα δὲ  
 λέγει καὶ τῷ καὶ σοφίας, καὶ τῷ πόθεν ζητήσεως.

ἀλλὰ



ἀλλὰ καὶ ζεύξεις ὁ ἀντιδιδήμεν γνώειμθ ἢ τῶν πε-  
 ρὶ διτῶν λόγων, καὶ ἀντίοχθ ὁ λαοδικεὺς, ἔπει-  
 λᾶς ἢ ὃ ἀγρίππα πῆλασι τὰ φαινόμενα μόνα. ἔστιν  
 ἔν κελθελον κῆλ δὲ συνεπληροῦς τὸ φαινόμενον ὡς ἔ-  
 ἀντιδιδήμεθ φησίμ. οὕτω δὲ καὶ ἐπὶ κούρθ. δημό-  
 κελτθ δὲ μηδὲρ εἶν τῶν φαινομένων. τὰ δὲ, μὴ εἶ-  
 ναι. πρὸς ἑξῆς τὸ κελθελον τὸ φαινόμενον οἱ δογμα-  
 τικοί φασίμ, ὅτι ὅτε ἀπὸ τῶν αὐτῶν διάφοροι προσι-  
 πῆσι φαντασίαι ὡς ἀπὸ τοῦ πύργου ἢ τροχούλου, ἢ τε-  
 τραγώνου, ὁ συνεπληρὸς εἰς ἐξελθὼν προκρίνη, ἀπὸ  
 κτήσιν. εἰ δὲ τῇ ἐξελθῶν κηρανοσυνθῆσιν, ἐκίπ τὸ ἴσον  
 ὁρμὴς φασίμ ὅτις φαινομένοις ἀπὸ δῶσιν. πρὸς ἑξῆς οἱ  
 συνεπληροὶ φασίμ, ὅτι ὅτε προσιπῆσιν ἀλλοῖαι φαν-  
 τασίαι, ἐκελθῶν ἐξελθὼν φαίνεσθαι. καὶ ἑξῆς τὰ  
 φαινόμενα πῆλασι ὅτι φαίνεται. τέλθ δὲ οἱ συνεπλη-  
 ροὶ φασίμ, τὴν ἐπὶ χλῶ, ἢ σκιᾶς τῶν ἐκ κηρανοσυνθῆσιν  
 ἀπαρξία, ὡς φασίμ οἱ τε πῶν τὸν ἴμωνα καὶ ἀνεσί-  
 δημον. ἔτε γὰρ τὰ δὲ ἐλθόμεθα, ἢ ταῦτα φθούμε-  
 θα ὅσα πῶν ἡμᾶς ὅσι. τὰ δὲ ὅσα πῶν ἡμᾶς ἔκ ἔστιν,  
 ἀλλὰ κητ' ἀναγκῶν ἐ δὴ δυνάμεθα φθύγειν, ὡς τὸ  
 πεινῶν διτῶν ἀλγείν, οὐκ ἔστι λόγῳ πῶν ἐλθῆν ταῦ-  
 τα. λεγόντθ δὲ τῶν δογματικῶν ὡς δυνάσεται βι-  
 οῦν ὁ συνεπληρὸς μὴ φθύγων τὸ, εἰ κελθούσθιν κηρανο-  
 γείν τὸν πατῶν, φασίμ οἱ συνεπληροὶ πῶν τὸ δογμα-  
 τικῶν ὡς δυνάσεται βιοῦν κητῶν ἀπὲχθ, οὐ  
 πῶν τῶν βιωτικῶν καὶ κηρανοσυνθῶν. ὡς τε καὶ αἰρούμε-  
 θά π

θά τι ἡγάτα σωθήσεται, καὶ φόβου μὲν, καὶ νόμοις χρω-  
 μέθα. πῶς δὲ καὶ τὴν πρῶτην. ἄλλοι δὲ τὴν ἀπά-  
 θειαν τέλει εἰπεῖν φασι τοῦ σκεπτικῆς.

## ΤΙΜΩΝ

Τιμῶν ἀρχωνίδης ὁ νικαεὺς, ὁ πατὴρ ἡμῶν ἐν τοῖς  
 πρώτοις εἰς τοῦ σίλβου ὑπομνήματι, ὃ πρὸς  
 φωνῇ πβορίῳ καίσαρι, φησὶ ὅτι τῶν τιμῶνα εἶναι πατρὸς  
 μὲν πμάχου, φλιασιον δὲ τὸ γένος. ἰὸν δὲ ἡγάτα  
 λειφθέντα χρῶναι, ἔπειτα ἡγάτα γνόντα, ἀφ' ἡμῶν  
 λαί εἰς μέγα φωνῇ πρὸς σίλβου. καὶ κείνῳ σωθεῖν  
 φαίνεται, αὐτοῖς ἐπανελθεῖν οἷα δὲ καὶ γῆμαι. ἔτα  
 πρὸς πύργου εἰς ἡλιν ἀφ' ἡμῶν μὲν γυναικὸς  
 καὶ κείνῳ σφαιρεῖν. ὡς αὐτὸς πᾶσι δὲ ἐγγόντων. ὡν τὸν  
 μὲν πρὸς βύττορον, ξανθὸν ἐγγόντων, καὶ ἰατρικῶν ἐγγόν-  
 των, καὶ διαδοχῶν τοῦ βίου ἡγάτα λειπέ. ὁ δὲ, ἐλλόγι-  
 μῶν. ὡς καὶ σωπῶν ἐν τοῖς δευτέροις φησὶν. ἀφ' ὧν  
 μὲν τὸν τροφῶν, ἀπὸ τῶν εἰς τὸν ἐλλήσποντον, καὶ τὴν  
 πλοπυπιδά, ἐν χαλκιδόνι τὴν σοφιστῶν ὑπὸ πλείον  
 ἀφ' ὧν χῆς. ἡξιώθη. ἐν τεύθῃ τὴν πρὸς ἀμύν, ἀπὸ τῶν  
 εἰς ἀθλῶν. καὶ κείνῳ δίδειν μετὰ καὶ τελευτῇ, ὅτι  
 τὸν χρόνον εἰς θήβας σφαιραμῶν. ἐγνώσθη δὲ καὶ αὐ-  
 τῶν τοῖς βασιλεῖ, καὶ πρὸς μαίῳ τοῖς φιλαδέλφῳ,  
 ὡς αὐτὸς ἐν τοῖς ἰαμβοῖς αὐτῶν μαρτυρεῖ. ὡς δὲ φησὶν  
 αὐτῶν, καὶ φιλοπῆς, καὶ ἀφ' τῶν φιλοσόφων  
 ἀφ' ὧν λαρε. καὶ γὰρ πρὸς πρῶτα σωζομένη, καὶ ἔπειτα  
 τραγωδίας, καὶ σατύρας, καὶ δράματα κωμικὰ



τριώκοντα. τραγικά δὲ ἐξήκοντα, σίλων τὲ καὶ κί-  
 ναίδων. φόρεται δὲ αὐτοὶ καὶ χαταλογισθῆναι βί-  
 βλία, εἰς ἑπτὰ τείνουντα μυριάδας δύο, ὧν καὶ αὐτί-  
 γουθὸς ἡαρύσιθὸς μέμνηται, ἀναγεγραφὼς αὐτοὺς καὶ  
 αὐτὸς ἑνὶ βίῳ. τῶν δὲ σίλων τρία ὄντι, ἐν οἷς ὡς αὐ-  
 σκεωπικὸς ὧν, πάντας λειδορεῖ καὶ σιλαίνει σὺν δὲ  
 γμαπικὸς ἐν παρωδίας εἶδει. ὧν τὸ μὲν πεῶν,  
 αὐτοδὴ γῆν ἔχει τὴν ἐμμεσίαν. τὸ δὲ διούτορον  
 καὶ τείν, ἐν δὲ λόγῳ οὐκ ἔστι φαίνεται τοῦ αἰ-  
 κρινὸς ξυνοφανῆν ἑνὶ κορυφῶνι πᾶσι ἐκείνῳ. ὁ δὲ,  
 αὐτοδὴ γῆν ἔχει. καὶ ἐν μὲν τῷ διούτῳ πᾶσι  
 τῶν ἀρχαιοτέρων. ἐν δὲ τῷ τείν, πᾶσι τῶν ὑστέρων.  
 ὅθεν δὴ αὐτὸς πῶς ἐπὶ ὑπὸ λόγον ἐπέγραψαν. τὸ δὲ πεῶ-  
 ν, ταῦτα πᾶσι ἔχει πλάγματα. πᾶσι ὅτι μονοπερί-  
 στωθὸς ὄντι ἢ πρὸς αἰσ. ἀρχὴ δὲ αὐτῶν, ἡ δὲ.

ἴσπετε νῦν μοι ὅσοι περὶ πλάγμων εἰς ἐσθλὰ.  
 ἴσπετε ἐγὼ καὶ ἐτορόφθαλμον ἤκουσα. ἐπεὶ ἐπὶ αὐτὸς  
 αὐτὸν κύκλωπα ἐκάλει. γέγονε δὲ καὶ ἐτορός τίμων,  
 ὁ μισάνθρωπος. ὁ δ' ἐν φιλόσοφῳ, καὶ φιλόκωπῳ  
 ἡ σφόδρα καὶ ἰδιοπλάγμων ὡς καὶ αὐτίσθου φησὶ  
 λόγῳ τοῦ εἰπεῖν ἰδρώνυμον ἑνὶ πᾶσι τῶν  
 ἐπ' αὐτοῖς, ὡς παρὰ τοῖς σκύδασι καὶ οἱ φύγοντες ἑ-  
 ξεύουσι καὶ οἱ δῶκοντες, ὅντων τῶν φιλοσόφων οἱ μὲν  
 δῶκοντες θηρῶσι σὺν μαθηταῖς, οἱ δὲ φύγοντες  
 ἡγάδα πόρ καὶ ὁ τίμων. ἡ δὲ καὶ ὅξυς νοῦσαι καὶ δει-  
 μνηθῆναι. φιλογραμμάτος τε καὶ τοῖς πρὸς αὐτοῖς  
 μύθος

μύθος γράψαι ἱκανός, καὶ δράματα (ὡς) ἀνέχονται. με-  
 τεδίδοις ἢ τὸ βραγυσιῶν, ἀλεξάνδρῳ καὶ ὁμήρῳ. θορυβὸς  
 μὲνός τε ὑπὸ τῷ βραγυσιῶν καὶ κυνῶν, ἐπὶ μὲν, αὖτε  
 δαδῶν πρὶ ἢ ἡρέμα ζῆν. φασὶ ἢ καὶ ἄρα τὸν πονηρὸν αὐτῷ  
 πῶς τὴν ὁμήρῳ πρὶν ἀσφαλῶς κτεῖναι. τὸ ἢ ἐπεὶ  
 εἰς αὐτοῖς ἀρχαίοις ἀνέγραφοις ἐντυγχάνοι. καὶ μὴ τοῖς ἡ-  
 σθεσιν διορθωμένοις. εἰ καὶ αὐτὸς ἐκ τῶν πρὶν ματαίων. ἐνίοτε  
 ἡμῶν. ὡς τε καὶ ζωπύρῳ ὃ ῥήρει ἀναγινώσκοντι ἐν  
 πωτιλίπῳ, καὶ καὶ ἢ ἐπελθὼν διεξίεναι. ἐλθόντα τὸ ἐφ'  
 ἡμῶν οὕτως εἶναι ἢ ἀπ' αὐτοῦ τῆς ἀγνοουμένης.  
 ὅθεν ἢ ἀσάφους, ἀλλὰ καὶ ἢ ὡς μὴδε ἀριστὸν συγ-  
 χροῦν. φασὶ ἢ αὐτὸ ἀρκεσίλαον θεασάμενον δὲ τὸ καὶ  
 κῶπων ἰόντα εἶπεν. τί σὺ δεῦρο ἔνθα πρὸς ἡμεῖς οἱ ἐλεύ-  
 θροι. (ὡς) χεῖς τε ὑπὸ τῶν εἰσὼν πρὸς αὐτοῦ τὰς αἰσθή-  
 σεις μετ' ὑμῶν ὡς τὸ νῦν ἐγκρίνοντας, (ὡς) ἡλθεν  
 ἀπ' αὐτοῦ τε καὶ νῦν μῆνιος. εἰσὼν δὲ, καὶ παύειν τὰ αὐτά.  
 πρὸς ἢ τὸ θαυμάζοντα πάντα ἔφη. τί δὲ ἢ θαυμάζεις  
 ὅτι οἱ οὐκ ἐπὶ τὰς τέχνας ἔχοντες ὁφθαλμοί. ἢ καὶ αὐτὸς  
 ἐπὶ τὸν ὁφθαλμόν καὶ ὁ διοσκουμένης μαθητὴς αὐτοῦ. καὶ  
 ὁ πρὸς ὃν ἔλεγον ὑγίης. ἐρωτηθεὶς δὲ καὶ τὸ ἀπὸ ἀρκε-  
 σιλάου ἢ τοῖς σίλλοις ἐπιλέγοντες αὐτὸν τὸν αὐτὸν  
 φορμῶν ἀρκεσιλάου πρὸς δὲ πῶς. τὰ τὰ διαδοχῶς  
 ὡς μὲν μιν ὁδοῦ φησὶ, γέγονεν οὐδὲν. ἀλλὰ διὲν  
 λιπὼν ἢ ἀγῶν ἔως αὐτῶν πρὸς μετὰ ὃν κυρίως  
 ἀνεκτίσθη. ὡς δὲ ἰσχυρότερος φησὶ καὶ σώπῳ,  
 διήκουσα αὐτοῦ διοσκουμένης κύπει, καὶ νιώσει



χ<sup>ο</sup> ρόδι<sup>ο</sup>, καὶ ἐυφρανώωρ σελδουκένς, πρᾶυλ<sup>ο</sup> τὲ  
 ἀπ' πρῶαδ<sup>ο</sup>. ὅς ἐντω κερτερικὸς ἐγρί<sup>ο</sup> καὶ δάφν/  
 σι φύλαρχ<sup>ο</sup> ἰσορῶρ, ὥς τε ἀδίκως ὑπομείναι ὥς  
 ὡπ' προδοσίᾳ κολαδιῶναι, μηδὲ λόγον εἶναι πλῆτας  
 ἀξιόσας. ἐυφρανόωρ δὲ διήκουσεν ἐμβλ<sup>ο</sup> ἀλε/  
 ξανδρένς, ὃ πρλεμαῖ<sup>ο</sup>, ὃ σαρπηδιῶρ, καὶ Ἡρακλεί/  
 δης. Ἡρακλείδης ἀνδρὶ δὴ μ<sup>ο</sup> κνώσιν<sup>ο</sup>, ὃς εἰ πύρ/  
 ρωνείωρ λόγων ὀκτῶ σωέγραφε βιβλία. ὃ ρεῦξις ὁ  
 γωνιόπ<sup>ο</sup>ς. ὃ ἀντίφον<sup>ο</sup> λαοδικένς ἀπ' λύκου. τὰ τ<sup>ο</sup>  
 δε μλωόδοτ<sup>ο</sup> ὁ νικημθενς, ἰατρὸς ἐμπεικός, καὶ  
 θειώδης λαοδικός. μλωοδότ<sup>ο</sup> δὲ, Ἡρόδοτ<sup>ο</sup> ἀρε/  
 ῶς ταρσός. Ἡροδότ<sup>ο</sup> δὲ διήκουσε σέξτ<sup>ο</sup> ὁ ἐμπει/  
 ρικός. ὃ καὶ τὰ διέγα τῶ σκεπτικῶρ, καὶ ἄλ/  
 λα ηἰάλλισα. σέξτ<sup>ο</sup> δὲ διήκουσε σα/  
 ρενῖν<sup>ο</sup> ὁ κυθλιῶς, ἐμπειρ/  
 κός καὶ αὐτός.



ΔΙΟΓΕΝΟΥΣ ΛΑΕΡ-  
ΤΙΟΥ ΒΙΩΝ ΚΑΙ ΓΝΩΜΩΝ ΤΩΝ ΕΝ  
ΦΙΛΟΣΟΦΙΑ ΕΥΔΟΚΙΜΗΣΑΝ-  
ΤΩΝ ΤΩΝ ΕΙΣ ΔΕΚΑ  
ΤΟ ΔΕΚΑΤΟΝ

ΕΡΙΚΟΥΡΟΣ



Πίκουρ<sup>Θ</sup> νεοκλίσυ καὶ χόρεκρ<sup>α</sup>,  
τ<sup>α</sup>, ἀθλιωαῖ<sup>Θ</sup> ἔρ δῆμορ γαργήτι  
π<sup>Θ</sup>, γή<sup>α</sup> τ<sup>ο</sup> τῷ φιλαίδωρ, ὥς  
φησι μητροδωρ<sup>Θ</sup> ἦν τ<sup>ο</sup> πόδι ἐν χει  
ρείας. ὅ<sup>α</sup> φασίμ ἄλλοι τ<sup>ε</sup> καὶ ἡρα  
κλείδης ἦν τῇ σωπίων<sup>Θ</sup> ὑπὸ γμή, κληρουχ<sup>ο</sup> σάν τῷ  
ἀθλιωαίωρ τῷ σέμορ, ἐκεί τ<sup>α</sup> φιλῶναι. οὐτω χαίδει καὶ  
τῇ δὲ ἐλθεῖν εἰς ἀθλιώας, ξυνοκρ<sup>α</sup> τ<sup>α</sup>ς μὲν ἦν ἀναδην  
μία, ἀριστοτέλους δ' ἦν χαλκίδι στρατεῖον τ<sup>ο</sup>. τε  
λοῦντοσαντ<sup>ο</sup> δὲ ἀλδ<sup>α</sup> αὐ<sup>ο</sup> τ<sup>ο</sup> μακεδόν<sup>ο</sup>, καὶ  
τῷ ἀθλιωαίωρ ἐκπ<sup>ο</sup> δ<sup>ο</sup> τῷ ὑπὸ πόρδ<sup>ο</sup> ἰκ<sup>ο</sup>ν, μετελ  
θεῖν εἰς κοροφῶνα πρὸς ἔρ πατό<sup>α</sup>. χέονορ δὲ πιν<sup>α</sup>  
στρατεῖ<sup>α</sup> τ<sup>α</sup> αὐτό<sup>ο</sup>, καὶ μαθητ<sup>α</sup>ς ἀθροίσαντα, π<sup>α</sup>  
λιρ ἐπανελθεῖν εἰς ἀθλιώας ὑπὸ αἰαξικ<sup>α</sup> τ<sup>α</sup>ς. καὶ  
μέχε<sup>α</sup> μ<sup>α</sup> π<sup>ο</sup> κατ' ὑπ<sup>ο</sup> μ<sup>α</sup> ξίαν τ<sup>α</sup>ς ἄλλοις φιλοσο  
φ<sup>α</sup>ι<sup>α</sup>. ἔπειτα ἰδία πῶς τῷ ἀπ' αὐτό<sup>ο</sup> κληθεῖσαι αἰ



ρόσιμους ἤσαντα. ἐφάτα δ' αἱ τε φιλοσοφίας αὐτὸς  
 φησιν, ἔτι γέγονός τε Πάρα καὶ Δίη. ἀρχολόδωρ  
 δ' ὑπὸ κούρειο ἐν τῷ πρώτῳ ποδὶ τοῦ ὑπὸ κούρου βί-  
 ου φησὶν ἐλθεῖν αὐτὸν ὑπὸ φιλοσοφίαν ηἰσταγνόντα  
 τῷ σοφιστῶν καὶ γραμματιστῶν. ἐπειδὴ μὴ ἐδωθή-  
 σαι ἐμὴν λύσιν αὐτῷ τὰ ποδὶ τοῦ πατρὸς ἡσιόδοιο χά-  
 ους. φησὶ δὲ ἐρμύππο γραμματισταδασχηγὰρ αὐ-  
 τὸν γένησθαι. ἐπειτα μὲν γὰρ ποδὶ τυχόντα τῆς δι-  
 μοκρίτου βιβλίοις, ὑπὸ φιλοσοφίαν αἰεῖν. διὸ καὶ τὸν  
 τίμωνα φασκεῖν ποδὶ αὐτοῦ.

ὤσατο δ' ἐν φυσικὸς καὶ κινῆσθαι ἐκ σάμης ἐλθὼν  
 γραμμοδιδασχηγὰς ἀναγασθῆναι τὸν ζώνοντῶν.  
 συνεπιλοσόφουσι δὲ αὐτῷ περὶ τῆς ἀμείνων. ὅτι ἀδελ-  
 φοὶ τρεῖς οὐδὲ νεοκλῆς, χαίρει δὲ ἡμῶν, ἀριστοβύλος.  
 ἡγετὰ φησι φιλόδοξοι οὐκ ὑπὸ κούρειο ἐν τῷ δευτέ-  
 ρῳ τῷ τῷ φιλοσόφῳ σωτῶν. ἀλλὰ καὶ δοῦλος  
 μὲν ὄνομα, ἡγετὰ φησι μυρωναίου ἐν νόμοις ἰσοκρί-  
 κεφαλαίοις. διότι μὲν δὲ ὁ σωῖκός δυνάμει ἔχω  
 πρὸς αὐτὸν, πικρότατα αὐτὸν διαβέβληκεν, ὑπὸ  
 λὰς φόβῳ πρὸς τὴν ἀσελγείαν, ὡς ὑπὸ κούρου, καὶ  
 τὰ εἰς χρύσιον ἀναφορὰ ὑπὸ σόλῳ, ὡς ὑπὸ  
 κούρου σωτῶν. ἀλλὰ καὶ οἱ ποδὶ σωῖκός, καὶ κί-  
 κῶλα, καὶ σωτῶν ἐν τῆς δώδεκα τῷ ὑπὸ γραφῆ-  
 μένῳ διοκλείῳ ἐλέγχῳ, αἱ δὲ ποδὶ τῷ κ' δ', ὅ-  
 διοῦσι οὐκ ἀληθινὰς. καὶ γὰρ (ὡς τῇ μητρὶ πε-  
 ριόντα αὐτὸν εἶναι τὰ οἰκία, ἡγετὰ μόνος ἀναγινώ-  
 κειν

κειρ. καὶ (ὡν) ἔθ' πατεῖ γραμματα διδασκειρ λυ  
 προῦ πινθ' μοδαρίου. ἀλλὰ καὶ τῶν ἀδελφῶν ἕνα  
 προαφορεύειρ, λεοντία τὲ σωεῖναι τῇ ἑταίρᾳ. τὰ δὲ  
 δημοκρίτῳ ποδὶ τῶν ἀτόμων, ἐ' αἰσίππῳ ποδὶ ἡδὺ  
 νῆς ὡς ἰδῆα λέγειρ. μὴ εἴν' τὲ γνησίως ἀξόν, ὡς τιμοί  
 κρωτῆς φησὶ καὶ ἡρόδοτ' ἐν ἔθ' ποδὶ ὑπὸ κούρῃ ἐν  
 φηβείᾳς. μίθελω τὲ αἰοχρῶς κολακσίφρ' ἔρ' λυσιμά  
 χῳ διοικητῶν ἐν ταῖς ὑπὸ σολῶν παιαῖνα ἐ' ἀνάκτα  
 κελωῦντα. ἀλλὰ καὶ ἰδομνείᾳ καὶ ἡρόδοτῳ καὶ τιμοί  
 κρωτῶν, οὗ ἐκπυσᾶ αὐτὸ τὰ κρύφια πρήσαντας,  
 ἐγκωμολογεῖρ καὶ κολακσίφρ' αὐτῶν τῷ τῷ. ἐν τε ταῖς  
 ὑπὸ σολῶν, πρὸς μὲν λεοντίαν, παιαν' ἀνάξ, φίλον λε  
 ονταίριον, οἶον κροτθούβῳ ἡμᾶς ἐνέπλησεν ἀναγνόν  
 τας σοὶ ἢ ὑπὸ σολίου. πρὸς θεμίσαν τῶν λείοντ' ὡς  
 νοῦν. οἶον τέ φησιρ ἐμὶ ἑάν' μὴ ὑμεῖς πρὸς με ἀφί  
 κηθε, αὐτὸς τεκνύλις ἐ' ὅπῃ αὐτὸς ὑμεῖς καὶ θέμισα  
 παρακλῆται ὡθεῖσθαι. πρὸς δὲ πυθοκλῆα ὡραῖον  
 οὐτα. καθεδύμαι φησὶ προσδοκῶν τῶν ἰμδρῶν ἐ'  
 ἰσθμείον σου εἰσοδόν. καὶ πάλιν ὡς θεμίσαν γραφῶν,  
 νομίζειρ αὐτῶν πδραίνειρ, καὶ δὲ φησι θεόδοτ' ὡς  
 ἐν ἔθ' τεταγμένῳ τῶν πρὸς ἐπίκουρον. καὶ ἄλλαι δὲ  
 πρὸς ἑταίρῃς γραφεῖρ καὶ μάλιστα λεοντία, ἥς  
 καὶ μητροδωρον ἐραδῶναι. ἐν τε ἔθ' ποδὶ τέλ' οὗ  
 γραφεῖρ οὕτως. οὐ γὰρ ἔγωγε ἔχω τὲ νοήσω τὰ  
 γὰθόν, ἀφαιρῶν μὲν τὰς δῖα χυλῶν ἡδοναῖς, ἀ  
 φαιρῶν δὲ τὰς δι' ἀφροδισίων, καὶ τὰς δι' ἀκροα  
 ματῶν



μολτῶν καὶ τὰς δὲ μορφᾶς. ἐν τε τῇ πρὸς πυθουκλίᾳ  
 ὑπὸ σολῆ γραφῆν. παιδείαν δὲ πᾶσαν μακροὶ φέρου-  
 γατε. ἐπίκτητός τε, κιναιδιολόγον αὐτὸν καλεῖ, καὶ  
 τὰ μάλισα λισθρεῖ. καὶ μὲν καὶ πιμονεράτης ἐν τῇ  
 ὑπὸ γραφομένοισι ἐμφανῆς. ὁ μητροδωρὸς μὲν ἀδελ-  
 φός. μαθητῆς δὲ αὐτοῦ τῆς σχολῆς ἐκφοιτήσας. φησὶ  
 δὲ αὐτὸν τῆς ἡμέρας ἐμὲν ἀπὸ τρυφῆς. ἑαυτὸν τε δὲ  
 ηγεῖται μόγις ἐκφυγεῖν ἰσχύει τὰς νυκτερινὰς ἐν-  
 κείνας φιλοσοφίας, καὶ τὴν μουσικὴν ἐκείνῳ σωμα-  
 γωγίῳ. τὸν τε ἐπίκουρον, πρὸς κατὰ τὸν λόγον ἢ  
 γνοηκέναι. καὶ πρὸς μᾶλλον κατὰ τὸν βίον. τότε σῶν-  
 μα ἐλεεινῶς δὲ καὶ κείσθαι. ὡς πρὸς ἐτῶν μὴ δύναι-  
 ας ἀπὸ τοῦ φορέου δὲ καὶ ἀσπῶναι. μὲν τὴν ἀναλίσκειν  
 ἡμῶν ἡσίοις εἰς τὴν τρυφάν, ὡς αὐτὸς ἐν τῇ πρὸς  
 λείοντι ὑπὸ σολῆ γραφῆν, καὶ ἐν ταῖς πρὸς αὐτὸν ἐν με-  
 τυλῶν φιλοσοφίᾳ. συνεῖναι τὴν αὐτὴν καὶ μητροδω-  
 ρῷ ἐταίρας καὶ ἄλλας, μαρμαίον καὶ ἡδῆσαν, καὶ  
 ἐρώπον, καὶ νικίδιον. καὶ ἐν ταῖς ἐποταῖς καὶ τριανθῶν  
 τα βίβλοις, ταῖς ποδὶ φύσεως ταῦτα τὰ πλεῖστα ἀν-  
 τηγραφεῖν. καὶ ἀντιλέγειν ἐν αὐταῖς ἄλλοις τε, καὶ  
 ναυσίφαι τὰ πλεῖστα, οὕτως. ἀλλ' εἶχε γὰρ κένθη,  
 ὡδίνων τὴν ἀπὸ τοῦ σώματος καὶ χύσιν τὴν σοφισ-  
 κίῳ, κατὰ πόρ καὶ ἄλλοι πολλοὶ τῶν ἀνδραπόδων.  
 καὶ αὐτὸν ἐπίκουρον ἐν ὑπὸ σολῆς ποδὶ ναυσίφαι  
 λέγειν ταῦτα. ἢ γὰρ αὐτὸν εἰς ἑκαστὴν ῥαυτὴν  
 ὡς τε μὴ λισθρεῖσθαι, καὶ ἀπὸ καλεῖν διδασκαλῶν.  
 πλὴν

πλὴμονα τε αὐτὸν ἱγάλει καὶ ἀγροῦ ματρ, καὶ ἀ/  
 πατεῶνα. τὸς τε πόδι πάλτωνα, διουσοιόλαησ,  
 καὶ αὐτὸν πάλτωνα χρυσού. καὶ ἀεισοτέλιω ἄσω/  
 ρη, καταφαγόντα τὴν πατρώαν ὅσιν σφατύνεσθαι  
 καὶ φαρμακοπωλεῖν. φορμοφόρον τὲ πρωταφόραν ἔ/  
 γραφία διημόκειρ, καὶ ἔν κώμας γραμματα δι/  
 δασκειν. ἡρακλειτόν τε κυνητὴν, καὶ διημόκειρ,  
 ληρόκειρ. καὶ αὐτὸν δῶρον, σταννίδωρον. τὸς τε κυζι/  
 κλωδς, ἐχθερς τῆς ἐλαδῶ. καὶ αὐτὸν δῶρον πηλόν  
 πλυνθονδρς. πύργων δὲ ἀμαθῶ καὶ ἀπαίδουρ.  
 μεμλῶσι δὲ ἔρι. τῶν γὰρ αὐτῶν μαρτυρεῖ ἱερνοὶ  
 τῆς αὐτοῦ βλήτῃ πρὸς πάντας ἐγγνωμοσύνης, ἢ  
 τε πατεῖς χαλκίς εἰνὸς τιμήσασα. οἱ τε φίλοι ρ/  
 σούρι ὃ πλῆθῃ ὥς μηδ' αὐτὸν πόλιν ὅλως μετρεῖ/  
 σθαι δυνάσθαι. οἱ τε γνώριμοι πάντες τοῦς δογμα/  
 τισιν αὐτοῦ σιρῇσι προηαταχεθῆναι πλῶν μη/  
 προσώρῃ τοι σφαρμικῶς πρὸς καρνεαδῶν ἀρχω/  
 εἰσαντῇ, τῶν βαρυνθῆναι τοῦς αὐτοῦ βλή/  
 ρις αὐτοῦ χερσότησι. ἢ τε δῶρον πασῶν σχεδὸν  
 ἐκλιπτοῦν τῶν ἄλλων ὅσιν δῶρον ἀμείνεται, καὶ νηρ/  
 θμους ἀρχὰς ἀκλύσας ἄλλω δὲ ἄλλῃ τῶν γνωρί/  
 μων, ἢ τε πρὸς αὐτὸν ἰονίας ἐν χειρὶ καὶ ἢ πρὸς αὐτὸν  
 ἀδελφούς ἐν τῇ. πρὸς τε αὐτὸν οἰκίτας ἡμῶν, ὥς  
 διῶν κακτῶν δῶρον αὐτοῦ, καὶ ὅτι αὐτὸν συνεχι/  
 λασόφου αὐτοῦ. ὡν ἡν δὲ δόξα τῇ ὁ προειρημέ/  
 νος μῦς. καθόλου δὲ ἢ πρὸς πάντας αὐτοῦ φιλανθρω



πία. ὦ μὲν γὰρ πρὸς θεὸς ὁσιότητι, καὶ πρὸς πα-  
 τέρειαν φιλίας, ἀλεκτὸς ἡ διαβολῆς. ὑπερβολῇ γὰρ  
 ὑπεικείας, ἐδὲ πολιτείας ἡ ψαυ. καὶ χαλεπωτά-  
 τῃν τὴν καὶ εὐὴν ηἰσπαχούτῃν τιμησάδε τὴν ἐλλάδα,  
 αὐτόδι ηἰσπαβίῳναι, δὲς ἢ καὶ τοῖς σὺ πόδι τὴν ἰω-  
 νίαν τόπος διαφραμόντα πρὸς σὺ φίλους. οἱ καὶ  
 πανταχόθεν πρὸς αὐτὸν ἀφικνουῦντο καὶ συνεβί-  
 ουν αὐτῷ ἐν τῷ κήπῳ ηἰσπα φησὶ ἀφελόδωρος. ὅρ  
 καὶ ὀγδοήκοντα μῶν πείρασι. διοκλῆς δὲ ἐν τῇ τεί-  
 τη τῆς ὑπὸ φρομῆς φησὶ ἐντελίστατα καὶ λιτότατα  
 διαίτῳ μῶν, κοτύλη γούῳ φησὶ διονιδίου ἡρηοῦ γ. ὅρ  
 δὲ πᾶν ὑδωρ ἴω αὐτῶς πρὸν. τὸν τε ἐπίκουρον μὴ  
 ἀξιούῳ εἰς τὸ κοινὸν ηἰσπατίθεσθαι τὰς ἐσίας, ηἰσπα  
 πόρ ὅρ πυθαγόραν κοινὰ τὰ φίλων λίσσονται. ἀπι-  
 σουῦτῃ γὰρ εἶναι τὸ γιούρ, ἐδὲ φίλων. αὐτὸς τέ  
 φησὶ ἐν ταῖς ὑπὸ σολαῖς, ὑδᾶπ μόνον ἀρκεῖσθαι, καὶ  
 αὐτῷ λιτῷ. καὶ πέμφοι μοι τυροῦ φησὶ κυβερδίου,  
 ἐν ὅτῳ βούλωμαι πολυτελίστασθαι δύνωμαι. γιού-  
 τῳ ἴω ὁ τὴν ἡδονὴν εἶναι τέλῳ δογματίζω. ὅρ  
 καὶ ἀθλῶναι δι' ὑπὸ γράμματῳ οὕτως ὑμῖν.  
 ἀνθρώποι μοχθεῖτε τὴν χεῖρνα, ἐδὲ ἀκόρδῳ  
 ἀπλησὸν, νεκίῳ ἀρχεται καὶ πλέμω;  
 ὦ φύσις δι' ὁ πλούτῳ ὅρον πνὰ βαίον ἐπίσχει.  
 αἱ δὲ κηναὶ κρείσσει, τὰν ἀπόρῳ γρ ὁδῶν,  
 ἐδὲ νεοκλήῳ πλυντὸν τέκῳ, ἢ παρὰ μεσάω  
 ἐκλυγ, ἢ πυθῶς ἐξ ἰδῶν τριπύδωρ.

εἰσόμεθα δὲ καὶ μᾶλλον προΐοντες, ἔκ τε τῶν δογ-  
 ματῶν, ἔκ τε τῶν ῥημάτων αὐτοῦ. μάλιστα δὲ ἀπεδέ-  
 χετό φησι διουκῆς, ὅτι ἀρχαῖον ἀναξαγόραν, καὶ ῥι-  
 νῶ ποιη αἰτετικῶς αὐτῷ, καὶ ἀρχέλαον ὅτι σωκρά-  
 τος διδασκαλόν. ἐγύμναζε δὲ φησι τοῦ γνωρί-  
 μτου, καὶ διαμνήμης ἔχειν τὰ ἑαυτοῦ συγγραμμά-  
 τα. ἔδοξε ἀρχιλόδωρ<sup>Θ</sup> ὅτι χρονοῖς, λυσιφανέ<sup>ς</sup> αὐ-  
 τοῦ<sup>ς</sup> φησί, καὶ πρᾶξιφανέ<sup>ς</sup> αὐτοῦ<sup>ς</sup>. αὐτὸς δὲ ὅ<sup>ς</sup> φησι, ἀλ-  
 λ' ἑαυτοῦ ὅτι πρὸς ἐνθύδιον ὑπὸ λῶ<sup>ς</sup>. ἀλλ' ὅ<sup>ς</sup> δὲ  
 λόνικωπὸν πῖνα γεγνήσθαι φιλόσοφον ὅ<sup>ς</sup> τ' αὐτὸς, ὅ<sup>ς</sup>  
 τε ἔρμαχ<sup>Θ</sup>. ὅ<sup>ς</sup> ἔνιοι φασὶ καὶ ἀρχιλόδωρ<sup>Θ</sup> ὁ ὑπὸ  
 κούρει<sup>Θ</sup>, διδασκαλόν δημονκί<sup>ς</sup> γεγνήσθαι. δη-  
 μῆται<sup>Θ</sup> δὲ φησι ὁ μάγνης, καὶ ξυνοκερά<sup>ς</sup> αὐ-  
 τοῦ<sup>ς</sup> ἀκροῦ<sup>ς</sup>. κίχεται δὲ λίξει κυρία κατὰ τῶν πρᾶ-  
 γμάτων. ὡς ὅτι ἰδιωτῶ<sup>ς</sup> τῷ ὅ<sup>ς</sup> τινι, ἀριστοφάνης ὁ γραμ-  
 ματικὸς ἀπαῖται. σαφὲς δ' ὡς οὕτως ὡς καὶ ὅ<sup>ς</sup> τινι  
 πῶ<sup>ς</sup> τῷ ῥητορικῶς ἀξιοῖ, μηδὲν ἄλλο ἢ σαφινῶ<sup>ς</sup> ἀ-  
 παιτέ<sup>ς</sup>. καὶ ὅ<sup>ς</sup> τινι αὐτοῦ ὑπὸ λῶ<sup>ς</sup> αὐτὸ τοῦ χαίρειν  
 πρᾶτ<sup>ς</sup>. καὶ αὐτὸ δαί<sup>ς</sup> αὐτὸν ἀφίσιον. οἱ δὲ φασιν ὅ<sup>ς</sup> τινι  
 ἐπινοῦ<sup>ς</sup> βίω<sup>ς</sup> ὅ<sup>ς</sup> τινι καὶ νόνα γρά<sup>ς</sup> αὐτὸ ἐν τοῦ ναυσιφά-  
 νος τείρε<sup>ς</sup>, ὅ<sup>ς</sup> καὶ ἀκροῦ<sup>ς</sup> φησὶν αὐτὸν. ἀλλὰ καὶ  
 παμφίλ<sup>ς</sup> τοῦ πλατωνικῶ<sup>ς</sup> ὅ<sup>ς</sup> τινι σάμω. ἀφῆκα<sup>ς</sup> αὐτὸ τε φιλο-  
 σοφῆ<sup>ς</sup> ἐτῶν ἑωφύχοντα δυοικίδε<sup>ς</sup>. ἀφηνῆσκα<sup>ς</sup>  
 δὲ τῷ σχολῆ<sup>ς</sup>, ἐτῶν ὅ<sup>ς</sup> τινι δύο πρὸς τῶς τριῶν.  
 ἐγνήθη δὲ φησι ἀρχιλόδωρ<sup>Θ</sup>, ὅ<sup>ς</sup> τινι τείρε<sup>ς</sup> ἐτ<sup>ς</sup>  
 τῆς θ' καὶ ἑκατῶ<sup>ς</sup> ὀλυμπικῶ<sup>ς</sup>, ὡς σωσιγίου<sup>ς</sup>



ἀρχοντῷ, μινὸς γαμηλιῶν ἑβδόμης. ἔτδσιν ὕ-  
 σδρσν φη πλωτῆν τελευτῇ ἰωτα. ἔπαρχοντα  
 δὲ αὐτῶν ἐτῶν δύο καὶ τριῶν κόντα, ὃν μετυλιῶν καὶ  
 λαμψαίω, πρῶτον συστήσασθαι σχολίῳ ὡδὶ ἔτη πρῶ-  
 τε. εἴθ' οὕτως εἰς ἀθλῶας μετελθεῖν. καὶ τελευτῇ  
 κατὰ τὸ δούτοδρον ἔτῳ τῆς ἑβδόμης καὶ ἑκατῶς  
 ὀλυμπιαδῷ, ὡδὶ πυδαρωτῶ ἔτη βιώσαντα δύο  
 πρὸς τῆς ἑβδόμης κόντα, τῷ τε σχολίῳ διαδέξασθαι  
 ἔρμαχον ἀγμάχου μετυλιῶν. τελευτῇ δὲ  
 αὐτῶν λίθῳ τῶν θυρῶν ὡδὶ χερσὶν ὡς φησι καὶ ἔρ-  
 μαχῷ ὃν ὡδὶ σολαῖς ἡμόρας νοσήσαντα τελευτῇ  
 καὶ δέξασθαι. ὅτε καὶ φησὶν ἔρμαχῷ ἐμβαίντα αὐτῶν  
 εἰς πύλον χαλκῶν κεραμειῶν ὡδὶ θορμῶ καὶ  
 αὐτῇ ἀκρῶν ὡδὶ φησὶν. τῆς τε θύρας παραγγεί-  
 λαντα τῶν δογματῶν μεμνησθαι, οὕτω τελευτῇ  
 καὶ ἔσιν ἡμῶν εἰς αὐτῶν οὕτω.

χαίρετε καὶ μεμνησθε τὰ δόγματα. τοτ' ἐπίκουρος  
 ὕσαρν εἶπε θύρας οἷσιν ἀκρῶν.

θορμῶν ὡδὶ πύλον γὰρ εἰσέλυσθαι, καὶ τῶν ἀκρῶν  
 ἰσασθαι, εἴτ' αὐτῶν θυρῶν ἐπεσπασθαι.

ἔτῳ μὲν ὁ βίῳ τ' ἀνδρός, ἡ δὲ ἡ τελευτῇ. καὶ δὴ  
 θορμῶν κατὰ τὰ δὲ δίδωμι τὰ ἐμαυτῷ πάντα, ἀ-  
 μωμοῦ χῶ οἰονοῦντα βατῆν, καὶ τιμονοῦντα  
 δημητείου πταμῶ. κατὰ τὴν ὃν ὡδὶ μητρῶν ἀνα-  
 γγρῶν ὡδὶ κατὰ δὲ δόσιν. ἐφ' ὃ τε τῶν κῆρυ,  
 καὶ τὰ προσόντα αὐτῶν, παρὲξουσιν ἔρμαχῶ ἀγ-  
 μάχου

διαβῆναι  
 αὐτῷ

μαρῶν μετ' ἡμῶν, καὶ τῆς συμπελοσοφούσιν αὐ-  
 τῶν. καὶ οἷς ἀν' ἑρμαχ<sup>Θ</sup> κατὰλίπη δ' αὐτοῦ τῆς  
 φιλοσοφίας. ἐν δ' αὖτε βίῃ καὶ φιλοσοφίᾳ. καὶ αἰ-  
 δὲ τῆς φιλοσοφούσιν ἀφ' ἡμῶν. ὅπως αὖ συνδιδάσω-  
 σιν ἀμυνόμενοι καὶ τιμωροῦνται κατὰ τὸ δυνάμει  
 τῶν ἐν τῷ κήτῳ δ' αὖτε βίῃ, παρακατατίθεμαι τῆς  
 τ' αὐτῶν κληρονομοῖς, ἐν ᾧ αὖ τρέπω ἀσφαλίσαν-  
 ῃ. ὅπως αὖ κακῆνοι δ' αὖτε τῶν ἐν κήτῳ, κατὰ πόρ-  
 καὶ αὐτῶν, οἷς αὖ οἱ ἀφ' ἡμῶν παραδίδωσι. τῶν δὲ οἱ  
 κίαν τῶν ἐν μελίτῃ παρεχέτωσαν ἀμυνόμενοι καὶ  
 τιμωροῦνται ἐν οἰκίᾳ ἐρμαχ<sup>Θ</sup> καὶ τῆς μετ' αὐτοῖς  
 φιλοσοφούσιν, ἕως αὖ ἐρμαχ<sup>Θ</sup> ἡ. ἐν δὲ τῶν γινομέ-  
 νων προσώπων τῶν δεδωμένων ἀφ' ἡμῶν ἀμυνόμε-  
 νων καὶ τιμωροῦνται κατὰ τὸ δυνάμει μετρίως  
 σαρ μετ' ἐρμαχ<sup>Θ</sup> σὺν πᾶσι τοῖς εἰς τὰ ἐναγίσμα-  
 τα τῶν τε πατρὶ καὶ τῇ μητρί. καὶ τῆς ἀδελφοῖς  
 ἡμῶν εἰς τῶν εἰδισμένων ἀγαθῶν γένεθλιον ἡμῶν  
 ἐκείνῳ ἐστὶ τῇ προδορᾷ δεκτῇ τοῖς γαμηλιῶν<sup>Θ</sup>.  
 ὥς τε καὶ εἰς τῶν γινομένων συνέδῳ ἐκείνου μετὸς  
 ταῖς ἐκείνῳ τῶν συμπελοσοφούσιν ἡμῶν εἰς τῶν  
 ἡμῶν τε καὶ μητροδῶρου κατὰ τεταγμένῳ. σωτε-  
 λείτωσαν δὲ καὶ τῶν πρυαίνου τοῖς μεταγεινιῶν,  
 τ<sup>Θ</sup>. σωτελείτωσαν δὲ καὶ τῶν τῶν ἀδελφῶν ἡμέ-  
 ραν, τοῖς προσδεῶν<sup>Θ</sup>, κατὰ πόρ καὶ ἡμεῖς. ὡς μελεί-  
 δω δὲ καὶ ἀμυνόμενοι καὶ τιμωροῦνται, τοῖς ἡμῶν  
 τοῖς μητροδῶρου ὡς κούρου, καὶ τοῖς ἡμῶν τοῖς πρυαίνου



φιλοσοφούτῃ αὐτῇ, καὶ συζόντῃ μεθ' ἑρμάχου.  
 ὡσαύτως δὲ τῆς θυγατρὸς τῆς μητροδώρας τὴν ἐπι-  
 μέλειαν τριείδωσαν. καὶ εἰς ἡλικίαν ἔλθουσιν, ἐκ-  
 δότωσαν ὥσπερ ἑρμάχου ἔλθεται τῇ φιλοσοφίᾳ,  
 τῇ μετ' αὐτὴν ὅσῃς αὐτῇ ἐνταλνται καὶ παιδαρχεί-  
 σης ἑρμάχου. διδότωσαν δὲ ἀμυνόμαχον καὶ πρ-  
 μοκράτης ἐκ τῇ ὑπαρχουσῶν ἡμῖν προσώδων, εἰς  
 τροφὴν τέρεσι ὅτι αὐταῖς κατ' ἐνιαυτὸν ἐπιδίδε-  
 σθαι δοκῇ σφοδρύνουσι μεθ' ἑρμάχου. τριείδωσαν  
 δὲ μεθ' αὐτῇ καὶ ἑρμάχου κύριον τῇ προσώδων,  
 ἵνα μετ' αὐτῇ συγκαταγεγενηκότες ἡμῖν ἐν φιλο-  
 σοφίᾳ, ὅσα ταλελεῖ μὲν ἡγεμόντος τῇ συμφιλο-  
 σοφούτῃ ἡμῖν, ἐκείνη γίνηται. τὴν δὲ προῖχα ἱερ-  
 θήκει παιδίῳ ἐπειδὴ εἰς ἡλικίαν ἔλθῃ, μεδισάτω-  
 σαν ἀμυνόμαχον καὶ πρνοκράτης, ὅσῃ αὐτὴν ἐπιδίδ-  
 χηται ἀπὸ τῇ ὑπαρχούτῃ ἀφαιρουμένων μετ' αὐτῆς  
 ἑρμάχου γνώμης. ἐπιμελείδωσαν δὲ καὶ νηαύρορος  
 καὶ πόρ, καὶ ἡμεῖς, ὅσοι τῇ συμφιλοσοφού-  
 τῃ ἡμῖν χρεῖαν ἐν τοῖς ἰδίοις παρδύχημοι, καὶ  
 τὴν πᾶσαν οὐκείότητα ἐνδεδειγμένοι, συγκαταγε-  
 γασκεῖν μεθ' ἡμῶν προείλουρ ἐν φιλοσοφίᾳ, μηδε-  
 νὸς τῇ κατεσηκότες ἐνδεεῖς κατεσηκώσιρ ὡς τὴν  
 ἡμετέρων δυνάμει. δοῦναι δὲ τὰ βιβλία τὰ ὑπαρ-  
 χοντα πάντα ἑρμάχου. ἐὰν δὲ πῶς ἀνθρώπων πε-  
 ς ἑρμάχου γίνηται, πρὸ τοῦ τὰ μητροδώρας παιδία  
 εἰς ἡλικίαν

εἰς ἡλικίαν ἐλθεῖν, δοῦναι ἀμυνόμεχρον καὶ πμοι  
 κρᾶτῳ ὥπως αὐτὸν ἐντακρυώτῃ αὐτῷ ἐκείνῳ γῆνι  
 ται, τῷ ἀναγκάειω κατὰ τὸ δῶματῳ ἀπὸ τῷ καί  
 παλελημμένω ὑφ' ἡμῶν προσώδωρ. καὶ τῷ λοιπῶν  
 ἀπάντῃ ὡς σωτῆτά χερσὶν ἐπιμελείδωσαρ, ὥπως  
 δὴ κατὰ τὸ ἐνδεχόμενον ἐκείνῳ γίγνηται. ἀφ' ἡμῶν δὲ  
 τῷ παίδωρ ἐλδύθδωρ ἡμῖν, νικίαν, λύκωνα. ἀφ' ἡμῶν  
 δὲ καὶ φαίδειον ἐλδύθδωρ. ἦδη δὲ τελευτῇ γρά  
 φει πρὸς ἰδρυμένη τῷδε ἐπισολῷ. τῷ μακρῶν  
 ἄσπονδῳ ἅμα τελευτῇ τῷδε ἡμόρῳ τοῦ βίου, ἐγρά  
 φον ἐμῖν ταυτή. σραγγεῖα τίς τε παρηκολευμένη  
 καὶ δυσχερεῖα πάθη, ἐπὶ βολῷ δὲ ἀρλείπυ  
 τα τοῖς ἐν αὐτοῖς μεγάλῃ. αὐτὸν παρετάτῃ δὲ πᾶ  
 σι τέτῃς, κατὰ ψυχῇ χάριον, καὶ τῇ τῷ γεγο  
 νότῳ ἡμῖν σφελογισμῶν μνήμη. σὺ δὲ ἀξίως τῆς  
 ἐν μερακίῳ πόρισάσεως πρὸς ἐμὲ καὶ φιλοστομί  
 αμ, ἐπιμελοῦ τῶν παίδων μητροδῶρον. καὶ ἔθῃ  
 μὲν ὥδε. μαθητὰς δὲ ἔσχε πᾶσι μὲν, σφόδρα δὲ  
 ἐλλογίμῃς, μητροδῶρον ἀθλῶν, καὶ τιμοκρα  
 τῳ, καὶ σάνδῳ λαμψακινῳ. ὅς ἀφ' οὗ τὸν ἄνδρα  
 ἔγνω, οὐκ ἀπίσῃ ἀπ' αὐτοῦ πλὴν ἐξ ἐμῶν εἰς τῷ  
 δικίῳ. ἐπειτα ἐπανήλθε. γέγονε δὲ ἀγαθὸς πάντα.  
 καθὰ καὶ ἐπίκουρεθ' ἐν προηγούμεναις γράφει.  
 μαρτυρεῖ καὶ ἐν τῷ τρίτῳ τιμοκρατῆς. τοιοῦτῳ  
 δὲ ὡρ, καὶ τῷ ἀδελφῷ βατίδια θξέδοτο ἰδομε  
 νεῖ, καὶ λεοντίαν τῷ ἀπικλῷ ἐταίρῳ ἀναλαβῶν,  
 ἔχε



εἶχε παλακιδίω. ὡς δὲ καὶ ἀναταπληκτῶ, πρὸς τὰς  
 τὰς ὀχλήσεις καὶ τὴν θάνατον, ὡς ἐπίκουρῶ ἐν τῷ  
 πρῶτῳ μητροδώρῳ φησί. φασὶ δὲ καὶ πρὸς ἑωτὰ ἐπὶ  
 αὐτὸ τελευτῆσαι, πνευτικὸν τὸν τῶν ἄλλων  
 τῶ. καὶ αὐτὸς ἐπίκουρῶ ἐν ταῖς προειρημεῖαις  
 διαθήκαις ὡς προαποθανόντῶ αὐτὸ δηλονότι, ὡς  
 σκήπτει πᾶσι τῆς ὡν μελείας αὐτὸ τῶ παίδων. ἔ-  
 σκε δὲ καὶ τὴν προειρημεῖον εἰκαῖον πινὰ ἀδελφῶν  
 τὸ μητροδώρου τιμοκρατίῳ. βιβλία δὲ ὅστις τοῦ  
 μητροδώρου τὰς δε. πρὸς αὐτὰς τρεῖς γ. πᾶσι αἰσθί-  
 σιν πρὸς τιμοκρατίῳ. πᾶσι μεγαλοφυχίας. πᾶσι  
 τῆς ὡν κούρου ἀρξωσίας. πρὸς αὐτὸν διαλεκτικῶν.  
 πρὸς αὐτὸν σοφιστῶν. πᾶσι τῶν σοφίαν πρῆξας. πε-  
 ρὶ τῆς μεταβολῆς. πᾶσι πλούτου. πρὸς δημόκριτον.  
 πᾶσι ἐυγυνείας. ὡς καὶ πρὸς αὐτὸν ἀθλοδωρῶν λαμ-  
 φακιδῶν ὡν κούρου, καὶ φιλικῶν, ὡς οἱ πᾶσι φιλόδοξοι  
 μοι φασί. καὶ ὁ διαδεξαμένῶ αὐτὸν ἔρμαχῶ ἀγ-  
 μαρξῶ μυτιλλωαῖῶ ἀνὴρ, πατὴρ δὲ μὲν πρῶτῶ,  
 τὰς δὲ ἀρχὰς προσέχωρ ἡμερικῶν. φόρεται καὶ  
 τὰς βιβλία ἡμέτερα τὰς δε. ὡς ὡν κούρου πᾶσι ἐμπε-  
 ρμαχῶ δούλειος κβ. πᾶσι τῶν μαθητῶν πρὸς πλάτωνα.  
 πρὸς ἀριστοτέλῳ. ἐτελεύτα δὲ παρὰ λυσία, γινόμε-  
 νῶ ἡμερικῶ ἀνὴρ. λεοντῶν τε λαμ φακιδῶν ὁμοίως.  
 καὶ ἡ τὰς γυνὴ θεμισα. πρὸς ὡς καὶ γέγραφεν ὁ ἐ-  
 πίκουρῶ. ἐπὶ τῇ κωλώτῃ, καὶ ἰδρυμένῳ, καὶ αὐτὸν  
 λαμ φακιδῶ. καὶ ἔρι μὲν ἐλλόγιμοι. ὡς ὡς καὶ πρὸς  
 στρατῶ

βιβλία  
 μητροδώρου

βιβλία  
 ἔρμαχου

στρατῷ ὁ δὲ δεξιὰ μὲν ἔρμαχον, ὁ μὲν δὲ διέξαγ' ἀπο  
 νύσει, ὁ μὲν βασιλίδης. καὶ ἀπὸ Μόδωρ δὲ ὁ κηρυ  
 πύσαν, γέγονεν ἐλλόγιμος. ὁ δὲ ὑπὲρ τετρακόνσια  
 σιῶν γραφεὶ βιβλία. δύο τὲ πρὸς λεμαῖοι ἀλδξανδρεῖς,  
 ὁ τε μέλας, καὶ ὁ λευκός. βιῶν τὲ ὁ σιδῶνι ἀκρο  
 ατῆς ἀπὸ Μόδωρ πρυγραφέα ἀνὴρ. καὶ δὴ μὲν τε  
 ὁ ὑπὸ κληθεὶς λαλῶν. διογῆνης τὲ ὁ ταρσεύς, ὁ τὰς  
 ὑπὸ λίκτου σχολὰς συγγράφας, καὶ ὠρίων καὶ ἄλ  
 λοι, οἳ οἱ γνήσιοι ὑπὸ κληθεῖς στωϊκὰς ἀρχηγλοῦσιν. ἦ  
 σαρ δὲ καὶ ἄλλοι ἐπίκουροι τρεῖς. ὁ τε λεοντίωνος υἱός  
 καὶ θεμίστας. ἐτόρ' ὁ μάγνης. τέταρτος ὁ πλεμα  
 χος. γέγονε δὲ πρυγραφέα τῷ ὁ ἐπίκουρος  
 πάντας ὑπὲρ βαλλόμενος πλήθει βιβλίων. κύλιον  
 δ' οἱ μὲν γὰρ πρὸς τοῦ τετρακόνσιον εἰσί. γέγραπται  
 δὲ μαρτύριον ἔξοθεν ἐν αὐτοῖς, ὅτι γν'. ἀλλ' αὐτοὶ εἰ  
 σὶν ὑπὸ κληθεῖς φωναί. ἐκλήλου δὲ αὐτὸν χεύσι πω  
 ἐν πρυγραφείᾳ. καὶ δὲ φησι καρυναίδης παραλοιστρῶ  
 αὐτοῖς τῶν βιβλίων ἀρχηγλῶν. εἰ γὰρ τι γράφαι ὁ  
 ἐπίκουρος ἐλθονικεῖ, ἡσούτ' γράφαι ὁ χεύσι πωπος.  
 καὶ δὲ εἶδεν καὶ πρὸς αὐτοὺς ταῦτα γέγραφε ἵνα μὴ  
 ἐπιελθεῖν, καὶ ἀδιόρθωτα εἴληκε ἵνα ἐπείγῃται, καὶ  
 τὰ μαρτύρια ἡσούτα ὅτι, ὡς ἐκείνων μόνων γέ  
 μειν τὰ βιβλία. καὶ θὰ καὶ παρὰ ζῶντι ὅτι ἐν εἰρήνῃ,  
 καὶ παρὰ ἀριστοτέλει. καὶ τὰ συγγράμματα μὲν  
 ὑπὸ κληθεῖς ἡσούτα καὶ πηλικαῦτα, ὡς τὰ βέλπιστα  
 ὅτι τῶδε. πόρ' φύσεως ἄλ'. πόρ' ἀτόμων καὶ κει

συγγράμματα  
 τὰ ὑπὸ κληθεῖς



νοῦ. ποῦ ἔρωτ'· ὡς μὴ τῷ πρὸς τοῦ φυσικοῦ.  
 πρὸς τοῦ μεγαλειῶνς δὲ πρὸς αἰεταί. κύρια δόξα. ποῦ  
 αἰετῶν. ποῦ φυτῶν. ποῦ τέλει. ποῦ κελτηρίου,  
 ἢ ἡγνῶν. χερσὶ δὲ ποῦ θεῶν. ποῦ ὁσιότητος, ἢ  
 γισιανίας. ποῦ βίῳ Δ. ποῦ δικαιοπραγίας. νεοί  
 κλῆς πρὸς θεμίσαν, συμπίστον, ἐνυλὸς ποῦ  
 μητρόδωρον. ποῦ τοῦ ὁραῖν. ποῦ τῆς ἐν τοῦ αὐτοῦ  
 γωνίας. ποῦ ἀφῆς. ποῦ ἐμαρμενῆς. ποῦ παθῶν δό-  
 ξαι πρὸς τιμοκράτῳ. προγνωσικῶν. προτρεπτι-  
 κῶν. ποῦ εἰδῶν. ποῦ φαντασίας. αἰετῶν. ποῦ  
 μουσικῆς. ποῦ δικαιοσύνης, καὶ τῶν ἄλλων ἀρε-  
 τῶν. ποῦ δώρων καὶ χαλῶν. ποῦ πλυνμῆδης. τιμο-  
 κράτης τε. μητρόδωρος ἔ. ἀντίδωρος ὤ.  
 ποῦ νότων δόξα πρὸς μίθρῳ. ἡγνισόλας, ποῦ  
 βασιλείας ἀναξιμενῆς. ὡς τοιαῦτα. μίαν δὲ αὐτῶν εἰ-  
 δοκῆν, ἐκείνῳ πειρασομαι, τρεῖς ὡς τοιαῦτα αὐτοῦ  
 παραθέμεν, ἐν αἷς πᾶσιν τῶν αὐτοῦ φιλοσο-  
 φῶν ἐπέτεμε. θέσομεν δὲ καὶ τὰς κυρίας αὐτοῦ  
 δόξας, καὶ εἴ τι ἔδοξεν ἐκλογῆς ἀξίως ἀνεφθέγχειν.  
 ὥς τί σε πανταχόθεν ἡγεταμαθεῖν τὸν αὐτῶν καὶ  
 μὲ κρῖναι εἰδέναι. τῶν μὲν ὅσα πρῶτον ἐπισο-  
 λῶ, γράφει πρὸς ἡρόδοτον, ποῦ τῶν φυσικῶν.  
 δούτοράν πρὸς πυθολίαν, ἢ τις ὅστις ποῦ μετα-  
 σίωρ. τῶν τρίτῳ, πρὸς μενοικία. ἔστι δ' ἐν αὐτῇ  
 τὰ ποῦ βίῳ. ἀρκτέον Δὲ ἀπὸ τῆς πρώτης, ὅ-  
 λίγα προειπόντα ἀπὸ τῆς διαρίσεως τῆς κατ'  
 αὐτῶν

αὐτὸν φιλοσοφίας. Διακρίνεται τοίνυν, εἰς τρία. τὸ  
 τε μαθηματικόν, καὶ φυσικόν, καὶ ἠθικόν. τὸ μὲν ὁ μαθηματικόν,  
 ἐφόδ' οὗ ὡς τὸ πρᾶγμα ἔχει. καὶ ἔστιν ἐν ἐνὶ τῷ ἐπιγραφόμενῳ μαθηματικῷ. τὸ δὲ φυσικόν,  
 τὸ πρὸς φύσεως θεωρίαν πᾶσα. καὶ ἔστιν ἐν ταῖς πρὸς φύσεως βίβλοις λ'. καὶ ταῖς ἐπιστολαῖς  
 κατὰ σοιχείου. τὸ δὲ ἠθικόν, τὰ πρὸς αἵρεσεως καὶ φυγῆς. ἔστι δὲ καὶ ἐν ταῖς πρὸς βίω  
 βίβλοις καὶ ἐπιστολαῖς, καὶ τῷ πρὸς τέλους. εἰ  
 δασι μὲν τοι τὸ μαθηματικόν ὁμοῦ τῷ φυσικῷ συ  
 τάλπειν. μαθηματικὸν δὲ αὐτὸ πρὸς κριτικόν καὶ ἀρι  
 χῆς, καὶ σοιχειωτικόν. τὸ δὲ φυσικόν, πρὸς γενέ  
 σεως, καὶ φθορᾶς, καὶ πρὸς φύσεως. τὸ δὲ ἠθι  
 κόν, πρὸς αἵρετῶν καὶ φθικτῶν, καὶ πρὸς βίω  
 καὶ τέλους. τὸν Διαλεκτικὸν ὡς παρέληκτο  
 ἀποδοκιμαζουσιν. ἀρκεῖν γὰρ τοὺς φυσικοὺς χω  
 ρεῖν κατὰ τοὺς φθόγγους ἐν τίνι τῷ μαθηματικῷ. λέ  
 γει οὖν ὁ ἐπίκουρος, καὶ τῆς ἀληθείας εἰ  
 ναι τὰς αἰσθήσεις, καὶ προλήψεις, καὶ τὰ πω  
 λη. οἱ δ' ἐπιμενέουσι, καὶ τὰς φανταστικὰς ἐπιβολὰς  
 τῆς διανοίας. λέγει δὲ καὶ ἐν τῇ πρὸς ἡρόδοτον ἐπι  
 τιτομῇ, καὶ ἐν ταῖς κυρίαις δόξαις. πᾶσα γὰρ φη  
 σιν αἰσθησις, ἀλογός ἐστι. ὁ μνήμης δ' ἀδεύμας δεκτι  
 κή. ὅτε γὰρ ὑφ' αὐτῆς, ὅτε ὑφ' ἐτόρου κινηθεῖσα ἀ  
 δωατῇ τὶ προδεῖναι ἢ ἀφελῆναι. ὅτε ἔστι ὁ δυνα  
 ναμνησθῆναι αὐτὰς διελίγξαι. ὅτε γὰρ ἡ ὁμογενεία

δοξα αὐτῶ



αἰδιόσεως τῶν ὁμογενέων ὅσα τῶν ἰσοδυνάμεων, ὅθ' ἢ  
 ἀνομογενέων τῶν ἀνομογενέων. ὃ γὰρ τῶν αὐτῶν εἰσὶ  
 κερπικαί. ὅτε μὲν λόγῳ. πᾶς γὰρ λόγῳ, ἀπὸ τῶν  
 αἰδιόσεων εἴρηται. ὅθ' ἢ ἐτόρρα τῶν ἐτόρραν. πάσαις  
 γὰρ προσέχουσιν. καὶ ὅτι τὰ ἀνεπαίδητα ὑφίστανται,  
 πιστεύεται τῶν τῶν αἰδιόσεων ἀληθείαν. ὑφίστηκε δὲ  
 τό τε ὁραὶν ἡμᾶς καὶ ἀκούειν, ὥς πόρ' ὅτι ἀλγύνει. ὁ  
 θέν καὶ πόρ' ἀδύλων ἀπὸ τῶν φαινομένων χρεῖσται  
 οὐδαί. καὶ γὰρ ἐπίνοιαί πᾶσαι ἀπὸ τῶν αἰδιόσεων γε  
 γόνασαι, κατὰ τε πόριπτοις καὶ ἀναλογίαν, καὶ ὁ  
 μοιότητα, καὶ συνύδου, συμβαλλομένην τί καὶ τὰ  
 λογισμοῦ. τὰ τε τῶν μαινομένων φαντασμάτα,  
 καὶ κατ' ὄναρ ἀληθῆ. κινεῖ γὰρ. ὅτι μὴ ὄν, ὃ κινεῖ.  
 τῶν δὲ πρόσληψιν λέγουσιν οἰοῦν κατὰληψιν, ἢ δόξ  
 ξαν ὁρθλῶν, ἢ ἐννοίαν, ἢ καθελοικλῶ νόησιν ἐναρκειμέν  
 υλῶ. τὰ τέσι μνήμῳ τὰ πρῶτα κινεῖ. οἷον ὅτι ριούτῳ  
 ὅτι ἀνθρώπῳ. ἅμα γὰρ ὅτι ἐκινῶναι ἀνθρώπῳ ἐν  
 θύς κατὰ πρόσληψιν καὶ ὁ τύπῳ αὐτὸ νοεῖται, προ  
 κινουμένων τῶν αἰδιόσεων. παντὶ ὅτι ὄνομα π' ὅ  
 πρῶτος ὡς τεταγμένον, ἐναρκέσ' ὅτι, καὶ ὅτι αὐτὸ ἐκ  
 τῶν πρῶτων ὅτι κινῶν, εἰ μὴ πρότορον ἐγνώκειμεν  
 αὐτό. οἷον, ὅτι πρῶτος ἐσὼς, ἴπῳ ὅτι ὅτι ἢ βοῦς. δεῖ γὰρ  
 κατὰ πρόσληψιν ἐγνώκειναι πρὶ ἴπῳ καὶ βοῦς μορ  
 φῶν. ὅτι αὐτὸ ὀνομασάμεν τι μὴ πρότορον αὐτὸ κατὰ  
 τὰ πρόσληψιν ὅτι τύπῳ μαθόντες. ἐναρκέσ' ὅτι εἰσιν  
 αἱ πρόσληψεις. καὶ ὅτι δεξασθὲν ἀπὸ πρότορον πινός.  
 ἐναρκέσ'

ἐναργούς ἦρτηται. ἐφ' ὃ ἀναφύονται λέγοντες. οἶον,  
 πρὶν ἰσμεν εἰ εἶδε ἔστιν ἀνθρώπου. τῷ δὲ δόξαν, ὅ  
 ὡς ὅλην ψυχὴν λέγουσι. ἀληθὴ τέ φασι καὶ ψεύδῃ. ἀν  
 ῥῶν γὰρ ὡς μαρτυρεῖται, ἢ μὴ ἀνμαρτυρεῖται, ψεύ  
 δῶν τυγχάνει. ὅθεν προσμνησθὲν εἰσέχθη. οἶον, ὅ  
 προσμῆναι καὶ ἐγγὺς γινώσκειν ὅσον πύργῳ, καὶ μα  
 θέειν ὅπῃ ἔγγυς φαίνεται. πάθῃ δὲ λέγουσι εἶναι  
 ἡδονὴν καὶ ἀλγηδόναν, ἰσαμενὰ πᾶσι πάντων ζῶον. καὶ  
 τῷ μὲν, ὁκνέειν. τῷ δὲ, ἀλλόττειν. δι' ὧν κρινέσθαι  
 τὰς αἰρέσεις καὶ φυγάς. τῶν τε ζητήσεων εἶναι τὰς  
 μὲν, πᾶσι τῶν πραγμάτων. τὰς δὲ, πᾶσι φιλήν τῷ  
 φωνῶν. καὶ ταῦτα δὲ, πᾶσι τῇ διαίρεσις, καὶ τοῖς κρι  
 τῆρι σοιχειώδως. ἀντίον δὲ ὡς τῷ ὡς ὅλην.

Ἐπὶ τοῦτο Ἡροδότῳ χαίρειν.

Τοῖς μὴ δυνάμενοις ὡς ἠρόδοτε ἔγραψα τῶν πᾶσι  
 φύσεως ἡμῖν ἀναγεγραμμένων διακειβοῦν, μηδὲ  
 τὰς μεῖζους τῶν σωτεταγμένων βίβλους διαθεῖναι,  
 ὡς ἡμῶν τῆς ὅλης πραγματείας εἰς τὴν ἡγεμονίαν  
 τῶν ὁλοχρόνων τῶν δόξων τῷ μνήμῳ ἡγεμῶν αὐ  
 τῆς παρδυσίας. ἵνα παρ' ἡγεμονίας τῶν καίρων ἐν  
 τῆς κυριότητος βοηθεῖν αὐτῆς δυνάμει, καὶ ὅσον  
 αὐτὴ ἐφάπτεται τῆς πᾶσι φύσεως θεωρίας. καὶ οὗ  
 προβεβληκότες δὲ ἡγεμῶν ἐν τῇ τῶν ὅλων ὡς βλέ  
 πει τὴν τύπην τῆς ὅλης πραγματείας τὴν ἡγεμονίαν  
 χειμῶν δὲ μνημονεύειν. τῇ γὰρ ἀθρόας ὡς βολ  
 λῆς πυκνὸν δέομεθα. τῆς δὲ ἡγεμονίας μὲν, ὅσον



ως. βαδισίον μὲν οὖο καὶ ἐπ' ἐκείνα συνεχῶς ἐν τῇ  
 μνήμῃ. ποσῶν τριηκτίον, ἀφ' ὃ ἡ τε κυριωτάτη ὑπὸ  
 βολὴ ὑπὸ τὰ πλάγματα ἔσαι. καὶ δὴ καὶ ὁ κατὰ  
 μόρθ' ἀκρίβωμα παῦν διεσπείσεται, τῷ ὅλοσ' ὁδῶν  
 τὰ τῶν τύπων ἐν ποδὶ εἰλημμένον, καὶ μνημονοῦν  
 μένον. ἐπεὶ καὶ τὸ τελεσίου εὐρημμένου ὁδῶν κυριώ  
 τατον τὸ παντὸς ἀκρίβωμ' οὗ γίνεται, ὁ τοῦ ὑπὸ βολ  
 λαῖς ὁξέως δυνάσται, καὶ πρὸς ἀπλᾶ σοιχείωματα  
 καὶ φωνὰς συναγομμένων. ὃ γὰρ οἶον τὸ πύκνωμα  
 τῷ συνεχῶς τῷ ὅλῳ ποδὶ οὐδ' εἴς ἐν, μὴ δυνάμε  
 νοι δὲ βραχέων φωνῶν ἀπαρ' ἐμπόδι λαβεῖν ἐν αὐ  
 τῷ ὁ κατὰ μόρθ' αὖν διεσπείσεται. ὁθεν δὴ πᾶσι χρε  
 σίμης ὅσης τις ἀκρίβωμ' οὖν φυσιολογίᾳ, τῆς τριακ  
 τῆς ὁδῶν παρεγγυῶν τῶν συνεχῶς ἐν ὁδῶν ἐν φυσιο  
 λογίᾳ ἐν τῷ τῷ μάλιστα ἐγγαλμιζόντῶν βίῳ τρι  
 κτάσται καὶ τριακτῶν πινὰ ὑπὸ τῶν καὶ σοιχείωσι  
 τῶν ὅλῳ δὲ ξῶν. περὶ μὲν οὖο τὰ ὑποτεταγμένα  
 τῶν φθόγγοις ὡς ἡρόδοτε διείληφέναι, ὅπως αὖν τὰ  
 δεξαζόμηναι ἢ ἀκρίβωμ' ἔχωμην, εἰς δ' αἰσθάνονται,  
 ὑπὸ κέρειν, καὶ μὴ ἀκρίβωμ' πάντα ἡμῖν εἰς ἀπειρον  
 ἀκρίβωμ' οὖν, ἢ κενὸς φθόγγος ἔχωμην. αἰσθάνονται  
 ὁ περὶ τῶν ἐν νόμῳ κατὰ ἐκείνων φθόγγον βλέπειν.  
 καὶ μὴ κενὸς ἀκρίβωμ' προσδέσται, εἴ πορ' ἔξομν ὁ  
 ζητῶμην, ἢ ἀκρίβωμ' οὖν, καὶ δεξαζόμην, ἐφ' ὃ αἰσθ  
 ξομν εἴτε κατὰ τὰς αἰσθήσεις διεί πάντα τῶν, καὶ  
 ἀπλῶς τὰς παρὰ τὰς ὑπὸ βολὰς, εἴτε δὲ αἰσθάνονται, εἴθ'

ὁδὴ ἦρτε τῶν κρητηρίων. ὁμοίως δὲ καὶ τὰ ὑπαρχόν  
 τα πάθη, ὅπως αὖν καὶ τὸ προσμύον, καὶ τὸ ἄδηλον  
 ἔχων ὅς σημειωσόμεθα. ταῦτα δὲ διαλαβόντας,  
 σωροῦν ἦδη ποῦ τῶν ἀδελῶν. πρῶτον μὲν ὅτι ἔδερ  
 γίνεται ἐκ τοῦ μὴ ὄντος. παῦ γὰρ ἐκ παντὸς γίνεται  
 τὸ αὖν, ἀπορρωμάτων γὰρ ἔδερ προσδεόμενον. καὶ εἰ  
 ἐφθείρω δὲ τὸ ἀφανιζόμενον εἰς τὸ μὴ ὄν, πάντα αὖν  
 ἀφώλει τὰ πράγματα, ὅτι ὄντων τῶν εἰς ἀδιελύ-  
 ρο. καὶ μὲν καὶ τὸ παῦ ἀείριοῦν μὲν, οἷον νῦν ὅστις,  
 καὶ ἀείριοῦν ἔσαι. οὐθὲν γὰρ ὅστις εἰς ὃ μετα-  
 βάλλει. παρὰ γὰρ τὸ παῦ οὐθὲν ὅστις, ὃ αὖν εἰσελθόν  
 εἰς αὐτὸ τὴν μεταβολὴν πρῆσαι. καὶ ἐν τῇ πρώ-  
 τῃ ποῦ φύσεως τὸ παῦ ὅστις. σώματα μὲν γὰρ ὡς ἔ-  
 σιν, αὐτὴ ἡ αἰσθησις αὐτῇ πάντων μαρτυρεῖ. καθ' ἣν  
 ἀναγκάσιον τὸ ἄδηλον τοῦ λογισμῶ τεκμαίρεται  
 ὡς πόρ προῖπρ τὸ πρῶτον. εἰ μὴ μὲν ὃ κινόν καὶ  
 χώραν, καὶ ἀναφῇ φύσιν ὀνομαζομένη, οὐκ αὖν ἔχε  
 τὰ σώματα ὅπου εἴη. οὐδὲν δ' ἐκινεῖτο κατὰ πόρ  
 φαίνεται κινούμενα. παρὰ δὲ ταῦτα οὐθὲν οὔτε  
 ἐπινοηθῆναι Διόταται, οὔτε ποδληπτῶς, οὔτε ἀ-  
 ναλόγως τοῖς ποδληπτοῖς, ὡς καθ' ὅλας φύσεις  
 λαμβανόμενα, καὶ μὴ ὡς τὰ τούτων συμπτώμα-  
 τα, ἢ συμβεβηκῶτα λεγόμενα. καὶ μὲν, καὶ ταυ-  
 τὸν τούτω, καὶ ἐν τῇ πρώτῃ ποδὶ φύσεως, καὶ  
 τῇ τε παρακαταδεκτικῇ καὶ πρῶτε κατεκτικῇ, καὶ  
 τῇ μεγάλῃ ἐπιτομῇ. τῶν σωμάτων τὰ μὲν ὅστις  
 συγ-



συγκρίσεις. τάδ' ὅτι ὡς αἱ συγκρίσεις πεπρίλυται.  
ταῦτα δὲ ὅστις ἄρμα καὶ ἀμετάβλητα, εἰ πόρ μὴ  
μίμει πάντα εἰς τὸ μὴ ὄν φθαρέσειν. ἀλλ' ἰσχύον-  
τα ὑπομνήειν, ὅτι ταῖς διαλύσεσι τῶν συγκρίσεων.  
πλήρη τῶν φύσιν, ὅταν δὲ ἔχοντα ὅπῃ ἢ ὅπως διαλυ-  
θῇσεται. ὥς τε τὰς ἀρχὰς ἀτόμου ἀναγκαῖον εἶναι  
σωμάτων φύσεις. ἀλλὰ μὲν καὶ τὸ πᾶν ἀπειρόν ὅστις,  
τὸ γὰρ πεπόρασμένον ἄκρον ἔχει. τὸ δὲ ἄκρον, παρ  
ἐτόρόν τι θεωρεῖται, ὥς τε τὸ δὲ ἔχον ἄκρον, πόρας  
δὲ ἔχει. πόρας δὲ δὲ ἔχον, ἀπειρον αὖ εἶναι καὶ εἰς πε-  
πόρασμένον. καὶ μὲν καὶ τοῦ πλήθει τῶν σωμάτων,  
ἀπειρόν ὅστις τὸ πᾶν, καὶ τοῦ μεγέθει τοῦ κενού. εἴτε  
γὰρ ὡς τὸ κενόν ἀπειρον, τὰ δὲ σώματα ὠρισμένα,  
ἐδαμοῦ αὖ ἔμεινεν τὰ σώματα. ἀλλ' ἐφόρῳ κατὰ τὸ  
ἀπειρον κενόν διδοῦναι παρμένα, δὲ ἔχοντα τὰ ὑπορεῖν  
δόντα καὶ εἰλόντα κατὰ τὰς ἀναγκὰς. εἴτε τὸ κε-  
νόν ὡς ὠρισμένον, δὲ αὖ εἶχε τὰ ἀπειρα σώματα ὅ-  
τις ἐνέστη. πρὸς τε τὰς τὰς ἀρχὰς τῶν σωμάτων  
καὶ μεσά, ὅτι ὡς αἱ συγκρίσεις γίνονται, καὶ εἰς αἱ  
διαλύονται, ἀπόρρηπτα εἰς ταῖς διαφοραῖς τῶν  
οχημάτων. ὅ γὰρ διωκτὴρ γινώσκει τὰς ῥαυτάς  
διαφορὰς ἐν τῶν οχημάτων ποσειλημμένων. καὶ κα-  
θ' ἡμέτερον δὲ οχημάτων ἀπλῶς ἀπειροί εἰσι ἄρι-  
μοι. ταῖς δὲ διαφοραῖς δὲ ἀπλῶς ἀπειροι. ἀλλὰ μο-  
νον ἀπειρία ληπτί. ὅ δὲ γὰρ φησὶν ἐνδοτόρῳ εἰς ἀ-  
πειρον τῶν ῥημάτων τυγχάνειν. λέγει δὲ ἐπειδὴ αἱ  
πρίοται

πριότῃ τὸ μεταβάλλονται, εἰ μέλλῃ τις μὴ καὶ τῆς  
 μεγέθυς ἀπλῶς εἰς ἀπειρον αὐτὰς ἐκβάλλειν.  
 κινουῦντάς τε συνεχῶς αἱ ἄρμοι. φησὶ δὲ παρὰ τοῦ  
 μένου ἐνδοτόρῳ καὶ ἰσοταχῶς αὐτὰς κινεῖν τοὶ κει-  
 νοῦ. τὴν ἴξιν ὁμοίαν καὶ τῇ βαρυτάτῃ ἢ αἰῶνα. καὶ  
 αἱ μὲν, εἰς μακρὰν ἀπ' ἀλλήλων διιστάμεναι. αἱ δὲ,  
 αὐτὴν ἢ παλμὸν ἰσχυοῦσιν, ὅταν τύχωσι τὴν ποδὶ  
 πλοκῶν κεκλιμέναι, ἢ σεγαζόμεναι ποδὶ τῇ πλεκ-  
 τῶν. ἢ τε γὰρ τοῦ κενού φύσις ἢ διορίζουσα ἐν ἑαυτῇ αὐ-  
 τὴν ὅσον παρασκηναίνει τὴν ὑποδύσειν ἔχουσα τὴν  
 ὅσον πριεῖσθαι. ἢ τε σθερότης ἢ ὑπαρχουσα αὐταῖς  
 κατὰ σύγκρισιν, ἢ ἀπὸ παλμὸν πριεῖσθαι ὅσον αὐ-  
 τὴν ποδὶ πλοκῇ τὴν ἀρμηγὰς αἰσιν ἐκ τῇ συγκρούσε-  
 ως διδῶ. ἀρχὴ δὲ τῶν ἔκ τῶν, αἰπὴν τῇ ἀτό-  
 μων ὅσον καὶ τοῦ κενού. φησὶ δ' ἐνδοτόρῳ, μηδὲ πρι-  
 ὀτῃται πινὰ ποδὶ τὰς ἀτόμους εἶναι. πλὴν ὀχλήματος  
 καὶ μεγέθους, καὶ βαρύτης. ἢ δὲ χεῶμα παρὰ τὴν θέ-  
 σιν τῇ ἀτόμων ἀλλοτρίωσθαι ἐν ταῖς διώδεκα σοι-  
 χειώσεσσι φησὶ. πάντες μίχθῃ μὴ εἶναι ποδὶ αὐ-  
 τῶν. ὅθεν τε διὰ ἄρμῳ ὥφθη αἰσθήσει. αὐτὴ δ' ἢ  
 φωνὴ τῶν πάντων μνημονοπομῶν ἢ ἰσχυρὸν τύ-  
 πον ὑποβάλλει τῇ τῇ ὄντῃ φύσεως, ὑπὸ νοίας. ἀλ-  
 λά μὲν καὶ κῆρυμοι ἀπειροὶ εἰσὶν. εἴθ' ὅμοιοι τῶν  
 εἴτ' αἰόμοιοι. αἱ τε γὰρ ἄρμοι ἀπειροὶ εἶναι. ὥς ἀπὸ  
 πεδείχθην, φέρονται καὶ πρὸς τῶν. ὅθεν γὰρ κατὰ τὴν  
 ὁρῶνται αἱ τῶν αὐτῶν ἄρμοι εἰς ὅσον αὐτῶν γήνοιν κῆρυμῳ ἢ



ὑφ' ὧν αὖν κτηθεῖν, ὅτ' εἰς ἕνα, ὅτ' εἰς πεπόμεν  
 νου, ὅθ' ὅσοι ριούρι, ὅθ' ὅσοι διαφοροί τέρει. ὥς τε  
 ὅδε μὲν ἢ ἐμπρόδιστον ὅστις πρὸς τὴν ἀπειρίαν τῇ ρι  
 ούτων νόσμων. καὶ μὲν καὶ τύποι ὁμοιοσχήμενός  
 τῆς σφραγισμοῖς εἰσι, λεωτότησιν ἀπέχοντός μα  
 κρὰν τῇ φαινομένην. ὅτε γὰρ ἀκρίσεις ἀδυνα  
 τισιν ἐν τῇ πόρῃ χοντι γίνεσθαι ριαῦται, ὅτε ὡν  
 τηθεῖσθαι, τὰς κατὰ γαστρίαν τῇ κολιωματῇ  
 καὶ λεωρτήτων γίνεσθαι, ὅτε ἀκρίσεις τὴν ἐξέ  
 θῆσιν καὶ βασιρὶν σφραγισμοῖς, ἢν πόρ καὶ ἐν τῆς σε  
 ρεμνίσις εἶχον. τὸ τῶν δὲ σφρ τῶν εἰδωλα πρὸ  
 σαγορδύμεν. καὶ μὲν καὶ ἡ σφρ τοῦ κενού φορὰ κατὰ  
 μηδεμίαν ἀπάντησιν τῇ ἀντικριστῇ γινόμενῃ  
 παῦν μὲν καὶ πόρλησιν ἐν ἀποκρίσιν χερόν σφρ  
 τελεί. βραδύτητ' γὰρ καὶ τάλχου ἀντικριστῇ  
 καὶ οὐκ ἀντικριστῇ, ὁμοίωμα λαμβάνει. ὅ μὲν ὅδε  
 ἅμα κατὰ σφρ σφρ λόγου θεωρητῶν χερόν σφρ κατὰ  
 ἢ φερόμενον ὡς σφρ πλείον τῶν σφρ ἀφικνέται.  
 ἀδυνατότητ' γὰρ καὶ σφρ, σφραγισμοῖς ἐν αὐ  
 τῇ σφρ χερόν ὅθεν δὴ ποτε τοῦ ἀπείρου. ὅθ' οὐ  
 αὖν πόρλησιν τὴν φορὰν τόπ' ἔσαι ἀφικ  
 νόμενον. ἀντικριστῇ γὰρ ὁμοίον ἔσαι, καὶ μὲν  
 χερόν σφρ τὸ τάλχ' τῆς φερόσας μὴ ἀντικρι  
 στῇ. χερόν σφρ δὴ καὶ τοῦτο κατὰ χερόν τὸ σφρ  
 χερόν, εἰθ' ὅτι τὰ εἰδωλα ταῖς λεωτότησιν ἀντι  
 πόρλησιν κίχεται, ὅθεν ἀντικριστῇ τῶν  
 φαινο

φαινομένων, ἢ ὅτι καὶ τὰ λη ἀντιδρῶντα ἔχει.  
 πάντα ἥρην σύμμετρον ἔχοντα πρὸς τοῦ ἀπείρου  
 αὐτῶν μηδὲν ἀντικρίπτειν, ἢ ὀλίγα ἀντικρίπτειν.  
 πολλὰς Δὲ καὶ ἀπείροις ἐνθὺς ἀντικρίπτειν τί.  
 πρὸς τε τέρας ὅτι ἡ γένεσις τῶν εἰδολῶν ἅμα νοή-  
 ματι συμβαίνει. καὶ γὰρ ξενίσις ἀπὸ τῆς σωμῶτῶν  
 ὑπερλήθους σωμοχῆς ἢ μειώσεται ὅλα τὴν ἀναπλήρω-  
 σιν σώρουσα τὴν ὑπὸ τοῦ σφιδμενίου θέσιν καὶ τὰ ξίρ  
 τῶν ἀτόμων, πρὸς τὴν πλὴν χρόνον εἰ καὶ ἐνίοτε συγχεο-  
 μὴν ὑπάρχει καὶ συστάσεις ἐν τοῦ πᾶσι χροῦντι ὁξεί-  
 αι ὅλα τὸ μὴ δεῖν ἡγετὰ βολῶν τὸ συμπλήρωμα γί-  
 νεσθαι. καὶ ἄλλοι δὲ τρόποι πῶς γέννηται τῶν τριού-  
 τῶν φύσεων εἰσὶν. ἔστιν γὰρ τὸ τῶν ἀντιμαρτυρεῖ  
 ταῖς αἰσθησίαις, ἀνὰ βλέποντις πᾶσι τρόποις τὰς ἐν  
 ὁρῆσιν, ἵνα καὶ τὰς (ὑπερβείας ἀπὸ τῶν ἔξωθεν πρὸς  
 ἡμᾶς ἀνοίση. εἰ δὲ καὶ νομίζειν, ἐπεισίνοντο πινὸς  
 ἀπὸ τῶν ἔξωθεν, τὰς μορφὰς ὁρᾶν ἡμᾶς καὶ διακρί-  
 νουσι. ἔστι γὰρ ἂν ἀρσφραγίσαι τὰ ἔξω τὴν ἑαυτῶν  
 φύσιν, τοῦ τε χρώματος καὶ τῆς μορφῆς καὶ τοῦ αἰ-  
 ρῶν τοῦ μεταξὺ ἡμῶν τὸ κακύνειν, ἔστι δὲ ὅλα τῶν ἀκτῶ-  
 νων, ἢ οἷον δὴ πρὸς τὸν ὁρῶν τῶν ἀπὸ ἡμῶν πρὸς ἐκεί-  
 να παραγινομένων, οὕτως ὡς τύπων πινῶν ἐπεισι-  
 νόντων ἡμῖν ἀπὸ τῶν πραγματικῶν ἀπὸ χρόνων καὶ ὁμο-  
 ομορφῶν, ἡγετὰ τὸ ἐναρμόττειν μέγεθος, εἰς τὴν ὁ-  
 λήν ἢ τὴν διαίνοιαν ὡκίως ταῖς φασαῖς χρωμάτων.  
 εἴτα ὅλα ταύτῃ τὴν αἰτίαν τοῦ ἐνὸς καὶ συνεχοῦς



τῶ φαντασίῳ ἀφ' ἑδόντων, καὶ τῶ συμπάθει  
 ἀφ' τοῦ ὑποκειμένου σώζοντες κατὰ τὸ ἐκείθεν  
 σύμμετρον ἐπὶ δόξῳ ἐκ τῆς κατὰ βολῆς ἐν τῷ  
 σδρεμνίῳ τῶ ἀτόμῳ πλάσεως, καὶ ὡς ἀναλαμβάνει  
 μὲν φαντασίαν, ὡς βλητικῶς τῇ δόξῳ ἢ τῆς αἰσθη-  
 τηρίῳ, εἴτε μορφῆς, εἴτε συμβεβηκότῳ, μορφῆ  
 ὅστις αὐτὴ τοῦ σδρεμνίου γινομένη κατὰ τὸ ἐξ ἑσὺ πύ-  
 κνωμα, ἢ ἐγκαταλειμμα τοῦ εἰδώλου. τὸ δὲ φεῦ-  
 δῶ καὶ τὸ δημαρτημένον, ἐν τῷ πρὸς δόξαν ὁμι-  
 νῶ ἀεὶ ὅστις ὡς μαρτυρηθῆσεται, εἴτ' ἐκ ὡς μαρτυ-  
 ρουμένου κατὰ τῶ ἀκίνητον ἐν ἡμῖν αὐτῆς σωτη-  
 ρίῳ τῇ φαντασίῳ ὡς βολῇ, διαλεξιμὴ δὲ ἐχέσθαι  
 καὶ ὡς τὸ φεῦδῶ γίνεται. ἢ τε γὰρ ὁμοίότης τῶν  
 φαντασμάτων οἷον ἐν εἰρήνῃ λαμβανόμενων, ἢ κα-  
 θ' ὅπως γινομένων, ἢ κατ' ἄλλας πᾶς ὡς βολῆς  
 τῆς δόξας, ἢ τῶν λοιπῶν κριτηρίων, ἐκ αὐτῶν  
 ὑπὸ τῆς τῆς δόξας καὶ ἀληθείας πρὸς ἑαυτοὺς ὁμοίους  
 εἰ μὴ ὡς πᾶς καὶ ταῦτα πρὸς ὁ βολῆς. τὸ δὲ δη-  
 μαρτημένον ἐκ αὐτῶν ὑπὸ τῆς, εἰ μὴ ἐλαμβαίνοντων  
 καὶ ἄλλῳ πᾶς κίνησιν ἐν ἡμῖν αὐτῆς σωτη-  
 ρίῳ, διαλεξιμὴ δὲ ἐχέσθαι. ἐὰν μὴ ὡς μαρτυρη-  
 θῇ, ἢ ἀντιμαρτυρηθῇ, τὸ φεῦδῶ γίνεται. ἐὰν δὲ ὡς  
 μαρτυρηθῇ ἢ μὴ ἀντιμαρτυρηθῇ, τὸ ἀληθές. καὶ ταῦ-  
 τῶν ὅσων σφόδρα γε δεῖ τῶν δόξαν κατὰ χεῖρ. ἵνα μὴ  
 τε τὰ κριτήρια ἀναρῶνται τὰ κατὰ τὰς ἐνδογείας,  
 μήτε τὸ δημαρτημένον ὁμοίως βεβαιούμενον πάν-

τα (σωταράτη. ἀλλὰ μὲν καὶ ἀκούειν γίνεται πνύ-  
 ματος πνύ φθορομένης, ἀπὸ τοῦ φωνοῦντος ἢ ἡ-  
 χροῦντος ἢ λοφοῦντος ἢ ἔως δὴ πρὶν, ἀκουσικὸν  
 πάθος κατὰ σκοῦνται. ὃ δὲ ξέῦμα ἴδω εἰς δι-  
 μοιομεδρεῖς διασπείρεται, ἅμα πνύ διασώζοντας  
 συμπάθειαν πρὸς ἀλλήλους καὶ ἐνότητά ἰδιότροι  
 πρὶν διατείνουσιν πρὸς ὃ ἀρσέλαν, καὶ τὴν ἐπαί-  
 οδον πνύ ἐπ' ἐκείνου ὡς τὰ πρὸς ποιοῦσιν. εἰ δὲ  
 μή γε ὃ ἔξωθεν μόνον ἐνδὲν παρασκοῦνται.  
 αὐτοὶ γὰρ ἀναφθορομένης πνύς ἐκείθεν συμπάθειας,  
 ἐκ αὐτῶν γήνοιν ἢ ριανύτη ἐπαίδοις. ἐκ αὐτῶν οὖν δὲ  
 νομίζειν ὃν ἀδρά τὸ πρὸς μεμένης φωνῆς, ἢ καὶ  
 τῶν ὁμογενῶν σχηματίζονται. πρὸς γὰρ ἐνδείαν  
 ἔξει ἴδω πάσχωρ τὸ ἐκείνης. ἀλλ' ἐνθὺς τὴν γίνο-  
 μένῃ πληγῇ ἐν ἡμῖν ὅταν φωνῇ ἀφώμην, ριανύ-  
 τὴν ἐκ πνύς ὅγκων ὁδύμας πνύματῶδους ἀρ-  
 λεισικῶν πρὶν εἶναι. ἢ ὃ πάθος ὃ ἀκουσικὸν ἡμῖν πα-  
 ρασκοῦνται. καὶ μὲν καὶ τὴν ὁσμὴν νομίζειν. ὡς  
 πόρ καὶ τὴν ἀκρόν, ἐκ αὐτῶν πρὶν πάθος ἐθὲρ ἐργα-  
 σονται, εἰ μὴ ὅγκοι πνύς ἥσαν ἀπὸ τοῦ πλάγματος  
 ἀρφροδόμνοι, σύμμετροι πρὸς ὃ ἴδω ὃ αἰδομένη  
 εἰς κινεῖν. οἱ μὲν ῥῖοι, τεταραγμένως καὶ ἀλλοτρί-  
 ως. οἱ δὲ ῥῖοι, ἀταράχως καὶ οἰκείως ἔχοντες. καὶ  
 μὲν καὶ τὰς ἀτόμους νομίζειν, μηδεμίαν πριότητα  
 τῶν φαινομένων πρὸς φθορῆναι. πλὴν σχήματος ἐ-  
 βαρῆς καὶ μεγάλου, καὶ ὅσα δὲ ἀνάγκης σχήμα



τῷ συμφυῇ ὅτι. πρώτης γὰρ πᾶσα μεταβαλ-  
 λει. αἱ δὲ ἄρμῳ, ὅθεν μετεβάλλουσιν. ἐπειδὴ πόρ ἀεί-  
 τι ὑπομῖνει ἐν ταῖς διαλύσεσι τῇ συγκρίσειν σε-  
 ρεῖν καὶ ἀδιωλυτῇ, ὅ τὰς μετεβολὰς ὅκεις ὅ μὴ ὅρ  
 κρίσεται, ὅδ' ἐκ τοῦ μὴ ὄντος, ἀλλὰ κατὰ μεταθέ-  
 σεις ἐκ πολλῶν. πυνῶν δὲ καὶ προσόδους καὶ ἐφόδους.  
 ὅθεν ἀναγκαῖον τὰ μὴ μετατιθέμενα ἀφαιρετὰ εἶναι,  
 καὶ τὴν τοῦ μεταβαλλόντος φύσιν ὅκ' ἔχοντα. ὅγι-  
 κους δὲ καὶ σχηματισμοὺς ἰδίους. ὅθεν γὰρ καὶ ἀναγ-  
 καῖον ὑπομῖνειν. καὶ γὰρ ἐν τοῖς παρ' ἡμῖν μετασχ-  
 ματισμοῖς κατὰ τὴν προαίρεσιν ὅ οὐκ ἔστιν ἐν  
 πάσῃ λαμβάνει. αἱ δὲ πρώτης δὲ ὅκ' ἐν παρ' ἡμῖν  
 ἔστιν ἐν τῷ μεταβαλλόντι ὡς πόρ ἐκείνο κατὰ λεί-  
 πεται. ἀλλ' ὅθεν τοῦ σώματος ἀκλύμενα. ἰθα-  
 νὰ ὅσω τὰ ὑπολείμενα ταῦτα τὰς τῇ συγκρίσει  
 ὡς διαφορὰς κρίειν. ἐπειδὴ πόρ ὑπολείπεται γέ-  
 τινα ἀναγκαῖον, καὶ εἰς τὸ μὴ ὅρ φθίρειται. ἀλλὰ  
 μηδὲ αἰ νομίζειν παῦν μέγθ' ἐν ταῖς ἀτόμοις ὅ  
 παρ' ἡμῖν, ἵνα μὴ τὰ φαινόμενα αἰτιμαρτυρή. πα-  
 ραλλαγὰς δὲ πινὰς μεγθῶν νομίσαντες εἶναι. βέλπο-  
 γὰρ. καὶ τῶν προσόντων κατὰ τὰ παρ' ἡμῖν καὶ τὰς  
 αἰσθήσεις γινόμενα, ἀκλύμενα. παῦν δὲ μέγθ'  
 ὑπολῆγον, ὅτε χρήσιμόν ὅτι πρὸς τὰς τῇ πρώτης  
 τῶν διαφορὰς, ἀφίχθαι τὴν ἀμίλει καὶ πρὸς ἡμᾶς  
 ὅρατὰς ἀτόμους. ὅ θεωρεῖται γινόμενον. ὅθ' ὅπως  
 αὖ γινώσκοντο ὅρατὰ ἄρμ' ὅτι ὅσον ὡνυῶσαι. πρὸς δὲ  
 τῶν

τῶν τριῶν δ' εἰς νομίζειν ὡς ἴσμεν ὅτι σῶμα τι  
 ἀπειροῦ ὄγκου ἐστίν, ὅτι πηλικοῦ σῶματος. ὥς τε ὁ  
 μόνον τῶν εἰς ἀπειρον ῥυθμῶν ὑπὸ τῆς λατρεῖς ἀναιρε-  
 τῆτος, ἵνα μὴ πάντα ἀδυνάτωρ ᾖ, καὶ ταῖς πόδεσσιν  
 ἴδωμεν τῶν ἀνθρώπων εἰς τὸ μὴ ὅτι ἀναγκασθῶμεθα τὰ ὄν-  
 τα θλίβοντες κατὰ ἀνάγκην· ἀλλὰ καὶ τῶν μετα-  
 βασιμῶν μὴ νομίσαι ὅτι γινώσκουσι ὡς ἴσμεν εἰς ἀ-  
 πειρον, μὴ δὲ τῆς λατρεῖς. ὅτι γὰρ ὅπως ἐπειδὴν ἀ-  
 παξ τις εἴπῃ ὅτι ἀπειροὶ ὄγκοι ὡς πῦρ ὑπάρχει, ὅτι  
 ἢ ὁ πηλικόσι δὲ νοῦσαι ὡς τὰ ἐπὶ πεπρασμέ-  
 νων εἶναι ὅτι μέγας. πηλικοὶ γὰρ πῦρ, δὴ ὅσον  
 ὡς ἀπειροὶ εἰσι ὄγκοι. καὶ ὅτι δὲ ὡς ὁ πηλικὸς ἀνὰ π-  
 τε ὡς, ἀπειρον αὖ καὶ τὸ μέγας. ἀλλὰ τὸ ἔχον  
 τὸ ὅτι ὑποπρασμένον διακρίνωμεν. εἰ μὴ καὶ κατὰ  
 ἑαυτὸ θεωρητόν, ὅτι εἰ μὴ καὶ τὸ ἐξ ἑστέ τὸ τριῶν  
 νοῦσι. καὶ οὕτω κατὰ τὸ ἐξ ἑστέ εἰς τὸ ἐμπροσθεν βαδίν-  
 ζοντα, εἰς τὸ ἐμπροσθεν ὑπάρχει κατὰ τριῶν ἀ-  
 φημιεῖναι τῇ ἐννοίᾳ. τὸ τε ἰσχυρὸν ὅτι ἐν τῇ αἰσθή-  
 σει δὲ κατὰ νοῦν, ὅτι ὅτι τριῶν δὲ οἷον ὅτι τὰς  
 μεταβάσεις ἔχον, ὅτι πάντα πάντῃ αἰσθητοῖς.  
 ἀλλ' ἔχον μὴ πῦρ καὶ ὁμοιότητα τῶν μεταβαίνοντων. δι-  
 ακρίνωμεν δὲ μὲν ὅτι ἔχον. ἀλλ' ὅτι δὲ τῶν τριῶν καὶ  
 νότῃ πρὸς μετὰ δὲ οὐκ ἀδυνάτωρ διακρίνωμεν αἰσθη-  
 τῶν, ὅτι μὴ ὑπὸ τὰς δὲ, ὅτι ἐπὶ ἐκείνῃ, ὅτι ἴσμεν ἡμῖν  
 δὲ πρὸς αἰσθητοῖς. ἐξ ἑστέ τε θεωροῦμεν πάντα ἀπὸ τοῦ  
 πρώτου κατὰ ῥυθμῶν. καὶ ὅτι ἐν τῶν αὐτῶν, ὅτι δὲ μέ-  
 γας



εἶσι μὲν ὧν ἀποτόμῃ, ἀλλὰ ἐν τῇ ἰδιότητι τῇ ἑαυ-  
 τῶν τὰ μέγιστα κατὰ μετρουῦντα τὰ πλείω πλείον,  
 καὶ τὰ ἐλαττω ἐλαττω. ταύτη τῇ ἀναλογίᾳ νομίζου-  
 ρν ὅτι ἐν τῇ ἀποτόμῃ ἐλαττω καχεῖσθαι. μικρότητι  
 γὰρ ἐκείνο δὴλον ὡς διαφόροι τοῖς κατὰ τὴν αἰσθη-  
 σιν θεωρουμένων. ἀναλογία δὲ τῇ αὐτῇ καχεῖσθαι. ἐ-  
 πεί πόρ καὶ ὅτι μέγιστον ἔχει ἢ ἄρμεστον κατὰ τὴν  
 ἐν ταῦτα ἀναλογίαν κατηγορήσαμεν, μικρόν τι μό-  
 νον, μακρόν ἐκβαλλοντός. ἐπὶ τὰ ἐλαττω καὶ  
 ἀμυγῇ πόρτατα δεῖ νομίζειν τῶν μακρῶν ὅτι κατὰ  
 μέγεθος, δεῖ αὐτῶν πρῶτον τοῖς μέγεθος καὶ ἐλαττω-  
 σι παρασκευάζοντα τῇ διαλόγων θεωρίᾳ ὡς τῶν  
 ἀορατῶν. ἢ γὰρ κοινότης ἢ ὑπερχεῖσθαι αὐτοῖς πρὸς  
 τὰ ἀμεταβόλα, ἡγεῖν ὅτι μέχει τὰς σωματικὰς.  
 συμφορῆσιν δὲ ἐκ τῶν κινήσεων ἔχοντων, ὅτι οἶον  
 τὴν γνῶσιν. καὶ μὴ καὶ τοῖς ἀπείρου, ὡς μὴ ἀνωτά-  
 τω ἢ κατωτάτῳ, ὅτι δεῖ κατηγορεῖν. ὅτι αὐτῶν ἢ κατω-  
 μέν τι ἢ ὑπὸ κεφαλῆς. ὅθεν αὐτῶν μὴ εἰς ἀπειρον  
 ἄγειν ὅτι, μηδὲ ποτε φανείσθαι ὅτι ἡμῖν. ἢ ὅτι ὑπὸ κα-  
 τὰ τοῖς νοηθέντων εἰς ἀπειρον ἅμα αἰῶν τε εἶναι καὶ  
 κατω. πρὸς ὅτι αὐτῶν ὅτι γὰρ ἀδύνατον διανοηθῆναι.  
 ὡς τὸ εἰς μίαν λαβεῖν φεραν τὴν αἰῶν νοουμένων εἰς  
 ἀπειρον. καὶ μίαν τὴν κατω αὐτῶν καὶ μυριάσις πρὸς  
 τοῦ πόδας τῶν ἐπάνω ὅτι παρ' ἡμῶν φερόμενον τοῖς  
 ὑπὸ κεφαλῆς ἡμῶν τόπος ἀφικνῆται, ἢ ὡς τὴν  
 κεφαλὴν τῶν ὑπὸ κατω ὅτι παρ' ἡμῶν κατω φερόμε-  
 νον.

ἴοι. ἡ γὰρ ὅλη φορὰ, ἔθελ' ἤτ' ἢ ἡ ἀπορία ἀντικειμένη  
 ἐπ' ἀπειρομ νοεῖται. καὶ μὴν καὶ ἰσοταχεῖς ἀναγι-  
 καῖον τὰς ἀτόμους εἶναι, ὅταν ὁλὰ τοῦ κενοῦ εἰσφεί-  
 ρωνται, μηδ' ἄνδ' ἀντικρύωσιν. ὅτε γὰρ τὰ βα-  
 ρία θάτ' ἢ ὁ ἀπορία τῶν μικρῶν καὶ κρύφων, ὅταν  
 γὰρ δὲ μηδ' ἀπαντᾷ αὐτοῖς, ὅτε τὰ μικρὰ τῶν με-  
 γάλων, πάντα πρὸς σύμμετρον ἔχοντα, ὅταν μη-  
 θὲρ μηδ' ἐκείνοις ἀντικρύωσιν, ὅθ' ἢ αὐτῶν, ὅθ' εἰς τὸ  
 πλεονέκον ὁλὰ τῶν κενῶν φορὰ, ὅθ' ἢ ἡ ἀπορία τῶν ἰδί-  
 ων βαρῶν. ἐφ' ὅπως γὰρ αὐτὴν ἡ ἀπορία ἡ ἀπορία, ὡς  
 ἡ ἀπορία ἡ ἀπορία νοήματα τῶν φορὰν οὐκ ἔχουσιν, ὡς ἀντι-  
 κρύωσιν ἢ ἐξωθεν ἢ ἐκ τοῦ ἰδίου βαρῶν πρὸς τῶν τοῦ  
 πλεονέκοντος δυνάμει. ἀλλὰ μηδ' ἡ ἀπορία τὰς συγκερί-  
 σεις, θάτ' ἢ ἡ ἀπορία ἐπὶ τῶν ἀτομῶν, ἰσοταχῶν ὅσων ἂν  
 εἴη τὸ πρὸς τὴν ἀπορία τὴν ἀπορία, ὡς ἀντι-  
 κρύωσιν ἡ ἀπορία τὴν ἀπορία, καὶ ἡ ἀπορία ἐλαχίστων συ-  
 νεχῶν χρόνον, εἰ μὴ ἐφ' ἑνὰ ἡ ἀπορία τοῦ λόγου θεωρητοῦ  
 χρόνου, ἀλλὰ πικρὸν ἀντικρύωσιν ὡς ἀντι-  
 κρύωσιν αὐτῶν τὸ συνεχὲς τῆς φορᾶς γέννηται. τὸ γὰρ  
 πρὸς τὴν ἀπορία τὴν ἀπορία, ὡς ἀπορία καὶ οἱ ὁλὰ  
 λόγος θεωρητὶ χρόνοι τὸ συνεχὲς τῆς φορᾶς ἔξουσιν,  
 ὅθ' ἀληθὲς ὅστις ὡς τῶν ῥιού τῶν. ἐπεὶ τὸ γὰρ θεωρού-  
 μιν παῖν, ἢ ἡ ἀπορία τῶν βολῶν λαμβανόμενον τῆς ὁλᾶς  
 νοῖα, ἀληθὲς ὅστις. μὲν δὲ ταῦτα δὲ σιωρᾶν ἀναφεί-  
 ροντα ὡς τὰς ἀπορίας καὶ τὰ πάθη. οὕτω γὰρ ἢ  
 βεβαιωτῶν τῆς πίσις ἔσαι, ὅτι ἢ τὴν ψυχὴν σώμα ὅτι λε-



πωρμδρίς, παρ' ὅλον ὃ ἄθροισμα παρεπαρμγνόν.  
 προσεμφοδρίςα γρ δὲ ἀπόρματι θοδμοῦ τινα κρᾶ-  
 σιμ' ἔχοντι. καὶ πῦ μιν, τὸ τῷ προσεμφοδρίς. πῦ δὲ,  
 τὸ τῷ. ἔσι δὲ ὃ μόνον πρὸς πᾶσι παραλλαγῶν εἰλη-  
 φός τῇ λεωρμδρίᾳ καὶ αὐτῇ τὸ τῷ. συμπαθὲς  
 δὲ τὸ τῷ μᾶλλον καὶ ἴσῳ λειπῶ ἄθροισματι. ἔστι δὲ  
 πᾶν αἰ δυνάμεις τῆς ψυχῆς διήλον καὶ τὰ πάθη  
 καὶ αἰ ἐκινήσεις, καὶ αἰ διανοήσεις, καὶ ὧν εὐδου-  
 μνοι θυήσονται. καὶ μὴ καὶ ὅπ' ἔχει ἡ ψυχὴ ὅτι αἰ-  
 οδήσεως τῷ πλείονι αἰτίαν, δεῖ κατέχει. ὃ μὴ  
 εἰλήφει αὐτῷ, εἰ μὴ ἔσθ' ὅτι λειπῶ ἄθροισμα-  
 τος ἐσεγάζετο πως. ὃ δὲ λειπὸν ἄθροισμα παρ-  
 σκύνεται τῷ αἰτίαν αὐτῷ, μετείληφε καὶ αὐτὸ  
 ῥιζὸς συμπήματα παρ' ἐκείνης. ὃ μὲν γὰρ πᾶν  
 τῷ ὧν ἐκείνη κίνηται. διὸ ἀπαλλαγείσης τῆς ψυ-  
 χῆς, ὃ καὶ ἔχει τῷ αἰοδησιμῷ. ὃ γὰρ αὐτὸ ἐν ἰσῷ ἴσῳ  
 τῷ ἐκείνη τῷ δυνάμει. ἀλλ' ἐπὶ ὅτ' αἰμα συγγε-  
 νημῶν αὐτῷ παρεσκόναζε, δεῖ ὅτι (ὡς τελεοείσης  
 πόδι αὐτῷ δυνάμει, καὶ τῷ δυνάμει συμπήματα  
 αἰοδησιμῷ ἐκείνης ἀρετῶν ἰσῷ, ἀπεδίδοι κατὰ  
 τῷ ὁμοῦρησι καὶ συμπάθειαν, καὶ ἐκείνη κατὰ πᾶ-  
 ῖν. διὸ δὴ καὶ ἐν τῷ ἀρχῇ ἡ ψυχὴ ὃ δὲ πρὸς ἄλ-  
 λου πινὸς μόνος ἀπηλλαγμένον αἰοδησιμῷ. ἀλλὰ αὐ-  
 καὶ αὐτὴ ξυμπαράληται τῷ σεγάζοντι λυθῆναι,  
 εἴθ' ὅσον, εἴτε καὶ μόνος πινὸς, καὶ πόρ' ὅσον μὲν ὅσον  
 τῷ αἰοδησιμῷ, ἐκείνη ἀπηλλαγμένον ὅσον πρὸς ὅσον  
 σωτῆι

σωτῆινον τῷ ἀτόμῳ πλήθῳ εἰς τὴν ψυχῆς  
 φύσιν. Ἐμὴν ἔλνομεν τὸ ὅλον ἀθεοίσματос, ἡ ψυ  
 χὴ διασπείρεται. καὶ ἐκείνῃ ἔχει τὰς αὐτὰς δυνάμεις,  
 ὅδε κινεῖται, ὡς τε ὁ αἰσθησιμὴ κίνησις. ὁ γὰρ  
 οἶον τε νοεῖν αὐτὸν αἰσθανόμενον, μὴ ἐν τῷ τῷ θεῷ συ  
 σήματι ταῖς κινήσει ταύτους χρώμενον, ὅταν σεγά  
 ζοντα ἢ ποθέχοντα μὴ ριαῦτα ἢ ἐν οἷς νῦν ἔσα ἔχῃ  
 ταύτας τὰς κινήσεις. ἀλλὰ μὴν καὶ τόδε λέγει ἐν ἄλ  
 λοις, Ἐπεὶ ἀτόμῳ αὐτῷ συγκείσθαι λειοτατῆν ἔ  
 σρογυλωτατῆν πρὸς τὴν διαφορὰν τῶν τοῦ πυ  
 ρός. καὶ ὁ μὲν γὰρ ἀλογον αὐτῷ ὁ θεὸς λογικῶ παρῆσαι  
 θρεῖ σώματι. ὁ δὲ λογικὸν ἐν θεῷ σώματι, ὡς διήλυν  
 ἔκ τε τῶν φόβων καὶ τῇ χαρᾷ. ὕπνον τὲ γίνεσθαι τῶν  
 ψυχῆς μερῶν τῶν παρ' ὅλλω τὴν σύγκρισιν πα  
 ρεσπαρμενίων ἐγχετε χρέμετων, ἢ διαφορὰ χρέμετων. ἔτα  
 συμπιπθόντων ῥίς ἑσπαρμενίοις. τότε πᾶρμα ἀφ' ὅ  
 λων τῶν σωμάτων φόρεσθαι γε δεῖ προσηστανοεῖν.  
 λέγει γὰρ καὶ τὴν πλείω ὁμίλιαν τοῦ ὀνόματ' αὐτοῦ  
 τοῦ κατ' ἑαυτὸν νοηθέντος αὐτοῦ. κατ' ἑαυτὸν δὲ ἐκείνῃ νοῦ  
 ἔκ τε ἀσώματ' αὐτοῦ, πλὴν τοῦ κατ' αὐτόν. ὁ δὲ κατ' αὐτόν, ὅτε πρὸς  
 ἑαυτὸν, ὅτε παθεῖν δύνάται. ἀλλὰ κίνησις μόνον δι' ἑαυ  
 τοῦ ῥίς σώμασι παρέχεται. ὡς θ' οἱ λέγουσιν ἀσώ  
 ματ' εἶναι τὴν ψυχὴν ματαιολογίαν. ὁ θεὸς γὰρ αὐ  
 τοῦ σώματος πρὸς, ὅτε πάσχει, εἰ μὴ ριαῦται. νῦν δ' ἐν  
 ἀργῶς ἀμφοτέρω ταῦτα διαλαμβάνει πρὸς τὴν  
 ψυχὴν τὰ συμπτώματα. ταῦτα ὅσω πάντα τὰ



δ'αλογίσματα αἰσλγωρ τίς ὡδ' τὰ πάθη καὶ τὰς  
 αἰσθήσεις, μνημονύωρ τῶν ἐν ἀρχῇ γνηνῶν, ἵνα  
 νῶς κατὰ τὴν τοῖς τοῖς ἐμπειρημημένα εἰς ἡ  
 κατὰ μόρῳ ἀπ' τῶν θ'ακριβοῦσαι βεβαίως. ἀλ  
 λὰ μὲν καὶ τὰ σχήματα καὶ τὰ χρώματα καὶ τὰ  
 μεγέθη καὶ τὰ βάρεα, ἢ καὶ ὅσα ἄλλα κατηγορεῖται  
 σώματῳ, ὡς ἂν εἰς αὐτὰ βεβηκῶτα, ἢ πᾶσι, ἢ τοῖς  
 ὁρατοῖς, καὶ ἢ τῶν αἰσθησιμῶν γινωσκοῖς, ὅθ' ὡς  
 καὶ ἑαυτοῖς εἰσι φύσεις δοξασίον. ὅ γὰρ δ'ωαὶ ἡ  
 ὑπὸ τοῦ αἰσθῶ. ὅτε ὅλως ὡς ὅκ' εἰσὶν, ὡς ὅθ' ἑτοῖα  
 τὰ προσπαφέντα τῶν σώματα. ὅθ' ὡς μόρια  
 τῶν, ἀλλ' ὡς ὅλον σῶμα, καὶ ὅλον μὲν τῶν  
 πάντων τῶν ἑαυτοῖς φύσις ἔχον αἰσθῶ, ὅχ' οἶον τ' εἶ  
 ναι συμπεφορημένον. ὡς πόρ' ὅταν θ' αὐτῶν τῶν ὄγ  
 κων μείζον ἀθροισμα συσῆ ἢ τῶν πρῶτων ἢ τῶν το  
 ὅλον μερῶν, τοῖς δ' ἐπὶ ἐλαττόνων. ἀλλὰ μόνον  
 ὡς λέγω ἐκ τῶν ἀπάντων τῶν ἑαυτοῖς φύσις ἔχον  
 αἰσθῶ. καὶ ὑπὸ τοῦ μὲν ἔχοντα ἰδίως πάντα ταῦ  
 τα ὅθ' καὶ δ'αλήφεις. συμπαρολουθούτῳ δ' ἐ  
 τοῖς ἀθροῦν καὶ ὅδ' αὖ μὲν ἀποχιζομένη, ἀλλὰ ἢ τῶν  
 ἀθροῦν γήνοιν τῶν σώματῳ κατηγορεῖται εἰληφό  
 τῳ. καὶ μὲν καὶ τοῖς σώμασι συμπύπτει πρῶτα  
 κισ καὶ ὅκ' αἰσθῶ παρολουθεῖν, ὅτ' ἐν τοῖς ἀορα  
 τοῖς. καὶ ὅτε ἀσώματα. ὡς τε δ' ἡ κατὰ πλείων φο  
 ραῖν, τῶν τοῦ ὀνόματι χρώμιν, φανερὰ πρῶτον  
 τὰ συμπτώματα. ὅτε τῶν τοῦ ὀλον φύσις ἔχει. ὁ  
 συνα

συλλαβόντες ἡγάτ' ὃ ἀβρόον, σῶμα πρσαγορεύο-  
 μιν. ἔτε τὴν τῶν αἰδίων παρακλουθούτων, ὡς ἂν  
 νοῦ, σῶμα ἔδωκα ἡμῖν νοεῖσθαι. ἡγάτ' ὑπὸ βολὰς δι' αὐ-  
 πνας παρακλουθούτων τοῦ ἀβρόου ἡγάσα πρσα-  
 γορεύθειν. ἀλλ' ὅτε διήκτε ἡγάσα συμβαίνοντα θεω-  
 ρεῖται, ἐκ αἰδίων τῶν συμπτωμάτων τῶν παρακλου-  
 θούτων. καὶ ἐκ δεξατέρῃ ἐκ τοῦ οὐτ' αὐτῶν τῶν  
 ἡγάγειαν, ὅτι ἐκ ἔχει τὴν τοῦ οὐνοῦ φύσιν ὡς συμβαί-  
 νει, ὃ διὰ καὶ σῶμα πρσαγορεύομεν, ἔδωκε τὴν τῶν  
 αἰδίων παρακλουθούτων. ἔδωκε αὖ καὶ αὐτὰ νομι-  
 σίον. ἔδωκε γὰρ ἑῶς διακοντήριον. ἔτ' ὑπὸ τῶν αἰδίων  
 συμβεβηκότες. ἀλλ' ὁ πόρ καὶ φαίνεται, συμπτώ-  
 ματα πάντα τὰ σώματα νομισίον, καὶ ἐκ αἰδίων  
 παρακλουθούτων. ἔδωκε αὖ φύσεως καὶ αὐτὰ τὰ  
 γμα ἔχοντα. ἀλλ' ὁρ τὸν αὐτὴν ἢ αἰδίων τῶν ἰ-  
 διότητε πρὸς θεωρεῖται. καὶ μὴν καὶ τό γε διὰ πρσα-  
 γατνοῦσαι σφοδρῶς. τῶν γὰρ διὰ χρόνον, ἔζητητέ-  
 ον ὡς πόρ καὶ τὰ λοιπὰ ὅσα ἐν ὑποκειμένῳ ζητοῦ-  
 μιν, ἀναλγόντες ὑπὸ τὰς βλέπεμνας παρ' ἡμῖν αὐ-  
 ρῖς πρσλήψαι. ἀλλ' αὐτὸν ὃ ἡγάγειαν καὶ ὁρ πρ-  
 λὺν ἢ ὀλίγον χρόνον ἀναφωνοῦμεν συγγενικῶς ἑῶς  
 πρσφύροντες, ἀναλογισίον. καὶ ἔτε δεξατέρῃ ὡς  
 βελτίου μεταληπτήριον. ἀλλ' αὐταῖς ταῖς ὑπαρ-  
 χέσας ἡγάτ' αὐτὸν χρῆσιον. ἔτε ἄλλο τι καὶ αὐ-  
 τὸ ἡγάγειαν, ὡς τὴν αὐτὴν ἐσίαν ἔχοντες  
 τοῦ ἰδίου ματῶν. καὶ γὰρ ἑῶς πρσφύσι πρσφύσι. ἀλλὰ



μόνον ὡς συμπλήρομιν ἢ ἴδιον τὸ τῷ καὶ παραμει-  
 τρουμένῳ, μάλιστα ὑπὸ λογισίῳ. καὶ γὰρ εἴθε ἔκ ἀρχῆς  
 δείξεως προσδίδεται, ἀλλ' ὑπὸ λογισμοῦ, ὅτι ταῦς ἢ  
 μόρσι καὶ ταῦς νυξὶ συμπλήρομιν. καὶ τῆς τὸ τῷ  
 μόρσι. ὡσαύτως δὲ καὶ τῆς πάθου καὶ ταῦς ἀπα-  
 θείας, καὶ κινήσεις, καὶ σαύσεις, ἴδιόν τι σύμπαντι  
 μα πόδι ταῦτα πάλιν αὐτῷ εἴθε ἐννοουμένῳ καὶ  
 χρόνον ὀνομαζομένῳ. φησὶ δὲ καὶ ἐν τῇ ὑπὸ  
 φύσεως. καὶ ἐν τῇ μεγάλῃ ὑπὸ γῆ. ὑπὸ τῆς προει-  
 ρημγόνος, αὐτὸς κῆρυς δὲ καὶ πᾶσαν σύγκρισιν πε-  
 πόρασμένην, ἢ ὁμοειδὲς τῆς θεωρουμένης πυκνῶς  
 ἔχουσαν, νομίζειν γεγονέναι ἀπὸ τοῦ ἀπείρου πάντων  
 τῶν ἐκ συστροφῶν ἰδίῳ ἀρκεκλειμένῳ, καὶ μετὰ  
 νῶν καὶ ἐλαττώσεων. καὶ πάλιν διαλύεσθαι πάντα. τὰ  
 μὲν, θάπτον, τὰ δὲ, βραδύτορον. καὶ τὰ μὲν ἔωδ' τῶν  
 τῶν δὲ. τὰ δὲ, ἔωδ' τῶν δὲ πύχοντα. ἀδύνατον ἔν ὡς καὶ  
 ἀφάριστος φησὶ αὐτὸς κῆρυς μετὰ βαλόντων τῶν ἡμε-  
 ρῶν. καὶ ἐν ἄλλοις τῶν γὰρ τῶν ἀόρι ἐπὶ χεῖρτα. ἐπὶ  
 δὲ καὶ αὐτὸς κῆρυς ἔτε' ἀναλογικῆς δὲ νομίζειν εἶνα  
 σχηματισμὸν ἔχοντας. ἀλλὰ καὶ ἀφόρους αὐτῶν ἐν  
 τῇ τῇ πόδι τὰ τὰ φησὶν. ὅς μὲν γὰρ σφαιροειδὴς, ὅς  
 ὡφδὲς ἄλλος, ὅς ἀμοιοσχημονας ἰσόρους. ὅς μὲν γὰρ  
 παῦ σχῆμα ἔχει. ὅς δὲ ζῶα εἶν' ἀρκεκλειμένα ἀπὸ τοῦ  
 ἀπείρου. ὅς δὲ γὰρ αὐτὸ ἀρκεκλειμένα ὅς δὲ, ὡς μὲν τῶν  
 ἔτω, ὅς ἔκ αὐτῶν ἐμπόδιελήφθη τὰ τῶν ἀπὸ ἀόριματα.  
 ὅς ὡν ζῶα τὰ καὶ φυτὰ, καὶ τὰ λοιπὰ πάντα θεωρεῖ  
 μὲν





μαχηρότητα ἔχοντες, μετὰ ἀφθαρσίας. ὃ γὰρ  
 συμφωνοῦσι πρᾶγματῆται καὶ φροντίδους καὶ ὀργαί  
 καὶ χαλεπὸς μαχηρότητι, ἀλλ' ἀδυνεία καὶ φό  
 βω καὶ προσδέήσει τῷ πλησίον ταῦτα γίνεται.  
 μήτε αὖ πῦρ ἅμα ὄντα συνεσρατοῦμεν ἢ τὴν μα  
 χαιρότητα κεντημένα, κατὰ βούλησιν τὰς κινή  
 σεις ταύτας λαμβάνειν. ἀλλὰ πᾶν τὸ σέμνωμα τη  
 ρεῖν κατὰ πάντα ὀνόματα φερόμενα ὡς τὰς ριαι  
 τας ἡννοίας, ἐὰν μὴ δ' ὑποφραντίαι θῆ αὐτῷ ἱερ  
 μνώματι δόξαι. εἰ δὲ μὴ τὸν μέγιστον τάραχον ἢ  
 ταῖς ψυχαῖς αὐτῇ ὑποφραντιότητι παρασκυβάσει.  
 ὅθεν δὴ καὶ τὰς ἀρχαῖς ἡγεμονίαις τῷ συσρό  
 φων τὸ τῶν ἐν τῇ τοῦ κόσμου συστολῇ δέει δεξασθῆναι  
 καὶ τὴν ἀναγκὴν ταύτην καὶ πόριον σιωτῆσαι  
 ὅταν καὶ μὴ καὶ τὴν ὑπό τῶν κινεωμένων αἰτίαν  
 ἀνακρίβωσαι, φυσιολογίας ἔργον εἶναι δέει νομίζειν,  
 καὶ τὸ μαχηρόν ἐν τῇ πόρῃ τῷ μετέωρον γινώσκει, ἢ  
 ταῦτα πεπωτωκέναι. καὶ ἢ ἱερ πινὲς φύσεις αἰ θεω  
 ρούμεναι κατὰ τὰ μετέωρα ταῦτα, καὶ ὅσα συγγενῇ  
 πρὸς τὴν εἰς ἑῶν ἀκρίβειαν. ἐπὶ τὴν δὲ πλεοναχῶς  
 ἢ τῆς ριούρις εἶναι. καὶ τὸ ἢ δεχόμενος, καὶ ἄλλως  
 πῶς ἔχειν. ἀλλ' ἀπλῶς μὴ εἶναι ἢ ἀφθάρτω καὶ μα  
 χαιρία φύσει τῷ διακρίσειν ὑποβαλλόντων, ἢ τὰ  
 ραχον μὴ εἶναι. καὶ ἑῶν κατὰ λαβὴν τῇ ἡγεμονίᾳ ὅστις  
 ἀπλῶς εἶναι. τὸ δ' ἐν τῇ ἰσορίᾳ πεπωτωκὸς τῆς δύσε  
 ως καὶ ἀναρλῆς καὶ τροπῆς καὶ ἐκλείψεως, καὶ ὅσα  
 συγγενῇ

συγγενῇ τῆς, μὴ ἐπὶ πρὸς τὸ μακρότερον τῇ γνώ-  
 σεως σωτίνειν. ἀλλ' ὁμοίως αὐτὸ φόβον ἔχειν αὐ-  
 τῶντα κατεπιδόντας, τίνος δὲ αἱ φύσεις ἀγνοοῦντας  
 καὶ τίνος αἱ κυριώταται αἰτίαι. καὶ εἰ μὴ προσήδνη-  
 σάν ταῦτα τὰ χαλεπὰ καὶ πλεία. ὅταν γὰρ δάμβῃ  
 ἐκ τῆς τῆς πρὸς κατανόσεως, μὴ δυνάσεται τὴν  
 λύσιν λαμβάνειν, καὶ τὴν πόδιν τῆς κυριώτατ' ἴν δι-  
 κρονομίαν. διὸ δὴ καὶ πλείονος αἰτίας ἐνείσκηρμιν τρο-  
 πῶν, καὶ δύσεων, καὶ ἀναρλῶν, καὶ ἐκλείψεων, καὶ  
 τῆς ριζῆς τροπῶν. ὡς πόρ καὶ ἐν τῆς καὶ μὲν  
 γινομενίοις, ἢ δ' εἰ νομίζειν τὴν ἑσπέρ' τῆς χρεί-  
 αν, ἀκρίβειαν μὴ ἀπειληφέναι, ὅση πρὸς τὸ ἀτάχα-  
 χον καὶ μακρότερον ἡμῶν σωτίνει. ὡς τε παραθεω-  
 ροῦντας προσχῶς παρ' ἡμῖν τὸ ὅμοιον γίνεται, αἱ  
 πολυγνητίον ἑσπέρ' τε τῆς μετεώρων καὶ παντὸς τοῦ  
 ἀδύτου κατανόουντας, τῆς δὲ μοναχῶς ἔχον, ἢ  
 γινόμενον γνωρίζοντ' ἴν, ὅτε τὸ πλεοναχῶς συμβαῖ-  
 νοι τὴν ἐκ τῆς ἀρσημῶν φαντασίαν παραδιδόν-  
 τ' ἴν. ἐπὶ τὴν ἀγνοοῦντ' ἴν, καὶ ἐν πρίοις δὲ ἴσιρ ἀταρα-  
 κτῆσαι. ἀν' οὗν οἷον οἰώμεθα καὶ ὠδίως ἐνδεχόμενον αὐ-  
 τὸ γίνεσθαι, καὶ ἐφ' οἷοις ὁμοίως ἀταρακτῆσαι αὐτὸ γὰρ  
 ὅτι πλεοναχῶς γίνεται γνωρίζοντες, ὡς πόρ καὶ οἱ  
 πὶ ὠδίως γίνεται εἰδῶμεν, ἀταρακτῆστ' ἴν. ὡς δὲ  
 τῆς ἀπασιν, ἐκείνο δ' εἰ κατανόειν, ὅτι τὰ χαλ-  
 ὁ κυριώτατ' ἴν τοῖς ἀνθρώποις ψυχῶς γίνεται  
 ἐν τῇ ταῦτα μακρότερον τε δεξιᾷ καὶ ἀφ' ἄρτα



καὶ ἐπιφανείας ἔχειν τέττις βουλῆσεις ἅμα καὶ  
 πράξεις, καὶ αἰτίας, καὶ ἦν ἔθ' αἰωνιόρ π θεινόνρ καὶ  
 προσδύκῃ καὶ ὑποωτδύειρ κατὰ σὺ μύθ-συ. εἴτε  
 κατὰ ταύτῃ τῷ ἀναιδῆσίαν τῷ ἦν ἔθ' τεθναίνει  
 φοβουμένην, ὥς πῶρ ἔσται καὶ αὐτῷ, καὶ ἦν ἔθ' μὴ  
 δόξαις ταύτους πείσχειρ, ἀλλ' ἀλόγῳ γ' ἐνι παρὰ  
 σάσει. ὅθην μὴ οἰζόντας ῥ θεινόνρ τῷ ἴσῳ ἢ καὶ  
 ὑπὲρταγμένην ταραχὴν λαμβάνειρ ἔθ' εἰ καὶ  
 ἐδόξαζον ταῦτα. ἡ δὲ ἀταραξία, ῥ τέττιν πάντῃ  
 ἀκλελύομαι. καὶ συνεχῇ μνήμῃν ἔχειρ τῷ ὅλῳ  
 καὶ κυριωτάτῃ. ὅθην ῥίς πᾶσι προσεκτίον ῥίς πα-  
 ρούσι. κατὰ μὲν ῥ κρινόνρ τοῖς κρινούσι. κατὰ δὲ ῥ  
 ἴδιον, τοῖς ἰδίαις, καὶ πάσῃ τῇ παρούσῃ καὶ ἔχῃ  
 σον τῷ κειθέρῳ ἐναργείᾳ. αὖ γὰρ τέττις προσέ-  
 χωρῶν, ῥ ὅθην ὁ τάχα χῶ καὶ ὁ φόβῳ ἐγίνετο, δε-  
 αιπολογήσομεν ὁρθῶς καὶ ἀκλύστομεν, ὑπορ' τε με-  
 τώρων αἰτιολογουμένων, καὶ τῷ λειπῶν τῷ αἰετῷ  
 ρεμπιπτόντῃ, καὶ ὅσα φοβεῖ σὺ λειπῶν ἐσχα-  
 τως. ταῦτα σοι ὡς ἡρόδοτε, ἔσι κεφαλαιοδίδεσθαι  
 ὑπορ' τῆς τῷ ὅλῳ φύσεως ὑπὲρ τε μνημένα, ὥς τε αὖ  
 γῆνοιρ ἐτῶ ὁ λόγῳ δυνάτῃς κατὰ χεῖρ μετὰ αἰ-  
 κειβείας οἶμαι· εἰ μὴ πρὸς ἅπαντα βαδίσῃ τις  
 τῷ κατὰ μόρῳ ἀκλειβωμάτων, ἀσύγκειρτῳ αὖ  
 ῥρ πρὸς σὺ λειπῶν ἀνθρώπου ἀδρότητα λήψαι  
 οὔται. καὶ γὰρ καὶ κατὰρὰν ἀφ' ἑαυτοῦ πρίσσει πρὸς  
 ῥίς κατὰ μόρῳ δεξακλειβουμένοις κατὰ τῷ ὅλῳ  
 πρᾶγμα

πλεγματίαν ἡμῖν. καὶ αὐτὰ ταῦτα ἐν μνήματι θίμε-  
ν. ὁ σωεχὼς βοηθήσει. τριαῦτα γὰρ ὅστις, ὥς τε καὶ  
τοῦ κατὰ μόρ. ἡδὴ θλακείβουυτας ἰηανῶς, ἢ καὶ  
τελείως εἰς τὰς τριαῦτας ἀναλύοντας ὑπὸ βολὰς,  
τὰς πλείους τῶν πόδιον ἑαυτοῦ τῆς ὅλης φύσεως  
πριεῖσθαι. ὅσα δὲ μὴ παντελῶς αὐτῶν τῶν ἀρτελων  
μυῶν ἐκ τῶν εἰσῖν, ἢ καὶ τῶν αἰσθ. φθόγων τρέ-  
πρ. τῶν ἅμα νοήμασι πόριον τῶν κυριοτατῶν,  
πρὸς γαλλωισμὸν προῖται.

Καὶ ἡδε μὲν ὅστις αὐτῶν ὑπὸ σολῆ πόδι τῶν φυσικῶν.  
πόδι τῶν μετεώρων ἡδε.

Επίκουρ. Πυθοκλῆι χαίρειν.

Ηνεγκέ μοι κλέων ὑπὸ σολῶ παρὰ σοῦ, ἐν ἡ. φιλο-  
φρονούμηνός τε πόδι ἡμᾶς διετέλεις, ἀξίως τῆς ἡμε-  
τέρας πόδι σεαυτοῦ απουδῆς, καὶ ἐκ ἀπειθάνως ἐπει-  
ρῶ μνημονεύειν ὅτι εἰς μακρότερον βίον σωτηριῶν τῶν  
σφαλογισμῶν. ἰδίον τε σεαυτοῦ πόδι τῶν μετεώρων  
σωτήριον καὶ ἐν πόριον σφαλογισμὸν ἀρσέν-  
λαι, ἵνα ῥαδίως μνημονεύης. τὰ γὰρ ἐν ἄλλοις ἡμῖν  
γεγραμμένα, δις μνημόνυτα εἶναι. καὶ ὡς ἔφης,  
σωεχὼς αὐτὰ βασάλζειν. ἡμεῖς δὲ ἡδῆως τε σου  
τῶν δέησις ἀπεδέξαμεθα, ὧς ἐλπῖσις ἡδείαις σωε-  
σθήμεν. γὰρ ταῦτα ἐν τὰ λοιπὰ πάντα σωτηριῶν  
μὲν ἀπὸρ. ἡξίως, πολλοῖς καὶ ἄλλοις ὁδοῦναι χρέ-  
σιμα τὰ σφαλογισμάτα ταῦτα, καὶ μάλιστα τῶν νεω-  
στὶ φυσιολογίας γνησίῳ γεγεμένους. καλῶς δὲ αὐτὰ



διαλαβε. καὶ ὅσα μνήμης ἔχω, ὁξέως αὐτὰ ποδιδό-  
 δονε μετὰ τῶν λοιπῶν ὧν ἐν τῇ μικρᾷ ὑπὸ γράμῃ πρὸς  
 ἡρόδοτον ἀπεσεύλαμην. περὶ μὲν οὖν, μὴ ἄλλο π-  
 τέλῃ ἐκ τῆς ποδὶ μετεώρων γνώσεως, εἴτε καὶ συ-  
 ναφῶν λεγομένων, εἴτε αὐτοτελῶς νομίζω εἶναι, ἢ  
 πορ' ἀταραξίαν καὶ πίσιν βίβαιοι καὶ δὴ πορ' καὶ τῶν  
 λοιπῶν. μήτε γὰρ ἀδύνατον παραβιάζεσθαι, μή-  
 τε ὁμοίαν κατὰ πάντα τῶν θεωρίαν ἔχειν, ἢ τις πε-  
 ς βίῳ λόγοις, ἢ τις κατὰ τῶν ἄλλων φυσικῶν προ-  
 βλημῶν τῶν καὶ ἀπορίων, οἷον, ὅτι γὰρ πᾶν σῶμα καὶ αἶμα  
 φύσις ὅστις, ἢ ὅτι ἄρμα σοιχεῖα, καὶ πάντα τὰ  
 τριαῦτα, ἢ ὅσα μοναχῶν ἔχει τις φαινομένων συμ-  
 φωνίαν, ὃ πορ' ὡς τῶν μετεώρων ἔχει ἑαυτῶν. ἀλλ-  
 λά ταῦτα γὰρ πλεοναχῶν ἔχει καὶ τῆς γνώσεως αἰ-  
 νίαν, καὶ τῆς ἐσίας ταῖς αἰσθήσεσι σύμφωνον καὶ τι-  
 σορίαν. ὃ γὰρ κατὰ ἀξιώματα καὶ αὐτὰ καὶ νομοθεσίας  
 φυσιολογητέον. ἀλλ' ὡς τὰ φαινόμενα ἐκκαλεῖται. ὃ  
 γὰρ ἡδὴ ἀλογίας καὶ κενῆς δόξης ὁ βίῃ ἡμῶν ἔχει  
 χρεῖαν, ἀλλὰ τοῦ ἀπορύτου ἡμᾶς ξιῶν. πάντα μὲν ὃ γί-  
 νεται ἀσείσως κατὰ πάντῃ, κατὰ πλεοναχὸν τρέ-  
 πον, ἐκκαθαυρομένων συμφώνως τις φαινομένων, ὅ-  
 ταν τις γὰρ πιδανολογῶμενον ἑαυτῶν αὐτῶν δέοντως  
 κατὰλίπῃ. ὅταν δὲ τις γὰρ μὲν ἀκρίτως, γὰρ δὲ ἐκβα-  
 λῃ, ὁμοίως σύμφωνον ὅρ' ὅτι φαινομένων, δηλονότι καὶ  
 ἐκ παντὸς ἐκπίπτει φυσιολογήματι, ὡς δὲ γὰρ  
 μῦθον κατὰρξῇ. σημεῖα δὲ τίνα τῶν ἐν τις μετεώ-  
 ροις

ροις συντελευμένων φέρει τῶν παρ' ἡμῖν τινα φαι-  
 νομένων. ἃ θεωρεῖται ἢ ὑπαρχει, καὶ ὃ τὰ ἐν τοῖς  
 μετέωροις φαινόμενα. ταῦτα γὰρ ὁδεύεται πλεονα-  
 χῶς γινώσκει. ὃ μὲν γὰρ φαινόμενα ἐκείνων τηρεῖ-  
 ον, καὶ ὡς τὰ συνωπτόμενα τὸ τῶ διαρετέον. ἃ δὲ  
 ἀντιμαρτυρεῖται τοῖς παρ' ἡμῖν γινομένοις πλεονα-  
 χῶς συντελείσθαι. κὺς μὲν ὅτι, ποδολοχὴ τις ἔρα-  
 νοῦ, ἄσρα τὴ καὶ γλῶ καὶ πάντα τὰ φαινόμενα ποδολο-  
 χουσα, ἀρρηκτὴ ἔχουσα ἀπὸ τοῦ ἀπείρου, καὶ κρατα-  
 λήγουσα ἐν πόρᾳ, ἢ ἀραιῶ ἢ πυκνῶ, καὶ ὁ λυομένης,  
 πάντα τὰ ἐν αὐτῇ σύγχυσις λήφεται, καὶ λήγου-  
 σαρ ἢ ἐμπόδια γινώσκω, ἢ ἐνέστασις ἔχουσι, καὶ σφογγύ-  
 λω ἢ τείγωνον ἢ οἷον δὴ πρὸ ποδολοχῆς. παντα-  
 χῶς γὰρ ἐνδεύεται. τῶν δὲ φαινομένων ὁ δὲ ἀντιμαρ-  
 τυρεῖ τῷ δὲ τῷ κὺς μὲν, ἐν ᾧ λῦγον δὲ ἐστὶ κραταλα-  
 βῆν. ὅτι δὲ καὶ ριούρι κὺς μοι εἰσὶν ἀπειροὶ ὃ πλη-  
 θὺς ἐστὶ κραταλαβῆν. καὶ ὅτι καὶ ὁ ριούρι δυνά-  
 ται κὺς μὲν γίνεσθαι καὶ ἐν κὺς μὲν καὶ μετακρο-  
 μίω, ὁ λέγονται μετὰ κὺς μὲν διαδύμα. ἐν πρηνέ-  
 νω τόπῳ καὶ δὲ ἐν μεγάλῳ εἰλικρινεῖ καὶ κενῶ, καὶ  
 δὲ πόρ πινὰ φασὶν ὑπὸ τηδεῖωρ πωδολοχῆς ἐν ἐν-  
 τῶν ἀφ' ἐνὸς κὺς μὲν καὶ μετακρομίσ, ἢ καὶ ἀπὸ πλει-  
 ὄνων κρατὰ μικρὸν προδίδεις τὴ δὲ διαρεθρώσεις τρι-  
 ουν τῶν ἐπ' ἄλλων τόπων ἀν' οὕτω τύχη καὶ ἐπαρδιδύ-  
 σεις, ἐκ τῶν ἐχόντων ὑπὸ τηδεῖως καὶ τελειώσεως καὶ  
 διαμονῆς ἐφ' ὅσον τὰ ὑποβληθέντα θεμέλια τῶν προ-





καὶ δύσεως ἡλίου καὶ σελλῶν καὶ τῶν λογῶν ἀ-  
 στρον, καὶ κατὰ ἀνάψιν γυγνέσθαι δύνανται καὶ κα-  
 τὰ σβέσιν, τριαύτης ὕσης πόρισαισεως καὶ θ' ἑτέ-  
 ρου σὺ τόπου, ὡς τε τὰ πειρημαγία ἀποτε-  
 λείσθαι. οὐδὲν γὰρ τῶν φαινομένων ἀντιμαρτυ-  
 ρεῖ. κατ' ἐμφανείᾳ τε ἐπὶ γῆς, καὶ πάλιν  
 ὡς προδίτησιρ ὅ πειρημαγίον δύναιτ' ἂν σω-  
 τελεῖσθαι. οὐδὲν γὰρ τι τῶν φαινομένων ἀντιμαρ-  
 τυρεῖ. τὰς τε κινήσεις αὐτῶν, οὐκ ἀδύνατον μὲν  
 γίνεσθαι κατὰ πλῆθος τοῦ οὐρανοῦ δύναν, κατὰ  
 πλῆθος θ' ἀρχῆς ἐν τῇ γυγνέσει τοῦ κόσμου ἀναγκασ-  
 ἀπογεννηθεῖσαι ἐπ' ἀνατολῇ. ἔτα τῇ θορυμασίᾳ  
 τοῦ πυρὸς ἀεὶ ὡς τοὺς ἐξῆς τόπου ἰόντῃ. τρι-  
 πὰς ἡλίου καὶ σελλῶν, ἐνδέχεται μὲν γίνεσθαι,  
 κατὰ λόξωσιρ οὐρανοῦ, οὕτω τοῖς χρόνοις κατὰ  
 ναυησμογίου. ὁμοίως δὲ καὶ κατὰ ἀδρῶ ἀντέξω-  
 σιν, ἢ καὶ ὕλης ἀεὶ ὡς τελεθῆς ἐχρησμένης ἐμπιπαι-  
 μῆς. τῆς δὲ κατὰ λιπύσης, ἢ καὶ θ' ἀρχῆς τριαύ-  
 πλῆθος δύναν τῆς ἀστροῖς τέτρως, ὡς θ' οἶον τὴν ἑνὶ κα-  
 τακινεῖσθαι. πάντα γὰρ τὰ τριαύτα καὶ τὰ τέτρως  
 συγγενῆ, ἐθὲρ τῶν ἐναργηματῶν διαφωνεῖ. ἐὰν πε-  
 ἀεὶ ὡς τῶν τριῶν μὲν ἐχρησθῇ τοῦ δυνάτου  
 εἰς ὅ σύμφωνον τῆς φαινομένων ἐκαστον τέτῃ δύ-  
 νητ' ἀπάγει, μὴ φοβέμεν τὰς ἀνδραπεδῶδεις  
 τῶν ἀστρολόγων τεχνικίας, κινήσεις τε σελλῶν,  
 καὶ πάλιν πληρώσεις, καὶ κατὰ σφοδρὸν τοῦ σώματος.

ἴδω



τὸ τὸ δυνάει' αὖ γίνεσθαι, καὶ κατὰ σχηματισμὸν  
 ἀδρ' ὁμοίως. ἔτι τὲ καὶ κατὰ προδετησεις, καὶ κα-  
 τὰ πάντας τρόπους. καὶ ὅς καὶ τὰ παρ' ἡμῖν φαι-  
 νόμυνα ἐκκαλεῖται εἰς τὰς τὸ τὸ εἶδ' αὐτοῦ ἀκρό-  
 σεις. ἐὰν μὴ τις ἢ μοναχῇ τῶν κατὰ γαπηκῶς  
 αὐτῷ ἄλλ' αὐτοῦ κενῶς ἀκροδοιμαζῇ. ὅτε θεωρητικῶς π-  
 δυνάει ἀνθρώπῳ θεωρῆσαι, καὶ π' ἀδυνάει. καὶ  
 εἴτε εἴτε ἀδυνάτα θεωρεῖν ὑπὸ θυμῶν. ἔτι τὲ ἐνδέχε-  
 ται τῷ σελῶνι θ' ἐαυτῆς ἔχειν ὅπως. ἐνδέχε-  
 ται δὲ ἀπὸ τοῦ ἡλίου. καὶ γὰρ παρ' ἡμῖν θεωρεῖται  
 πολλὰ μὲν θ' ἐαυτῶν ἔχοντα. πολλὰ δὲ ἀφ' ἐτόρων. ὅ-  
 ὅδε μ' ἐμπροσθεν τῶν ἐν τῇς μετεώροις φαινομέ-  
 νων. ἐὰν τις τοῦ πλεοναχῶς τρόπου αἰετὶ μὴ μὲν ἔχῃ.  
 καὶ τὰς ἀκροθῶν αὐτῆς ἀποθέσεις ἅμα καὶ αἰ-  
 τίας συνθεωρῇ, μὴ ἀναβλέπων εἰς τὰ ἀνακρύβου-  
 σα ταυτὰ, καὶ κατὰ ῥέπεθ' ἄλλοτε ἄλλως ὡδ' ἢ  
 μοναχῶν τῶν. ἡ δὲ ἔμφασις τοῦ προσώπου ἐν αἰ-  
 τῇ δύνάται μὲν γίνεσθαι καὶ κατὰ παραλλαγὰς με-  
 τῶν καὶ κατὰ ὑπὸ προδετήρη. ὅσοι πάντα αὖ τῶ  
 πρ' θεωροῦν ὅς σύμφωνον τῇς φαινομένων. κεντη-  
 μένοι ὡδ' πάντῃ τῶν μετεώρων τῷ τριαύτῳ ἔχ-  
 νόμεν, ὅς προδετήρη. ἢ γὰρ ποι βαλλομένων τῇς  
 ἐναργήμασι δ' ἐπὶ δυνάσει ἀταραξίας γνη-  
 σίου μεταλαβείν. ἐκλείψις ἡλίου καὶ σελήνης, δύν-  
 αται μὲν γίνεσθαι καὶ κατὰ σβέσιν. καὶ δὲ πόρ καὶ  
 παρ' ἡμῖν εἴτε θεωρεῖται γινόμενον. καὶ ἡδὲ κατὰ  
 ὑπὸ προδετήρη

ὑπὲρ τοῦ ἐκείνου ἄλλωρ πνῶν, ἢ γῆς, ἢ οὐρανοῦ, ἢ τι-  
 νος ἑτέρου τριούτου. καὶ ὥδε εἶς οἰκείου ἀλλήλοις  
 τρόπου θεωρητόν, καὶ τὰς ἅμα συγκρίσεις πνῶν  
 ὅτι οὐκ ἀδυνατῶν γίνεσθαι. ἐν δὲ τῇ δινοδεησάτῃ ποῦ  
 φύσεως ταῦτα λέγει. καὶ ὅτι ἡλίου ἐκλίπαι σελή-  
 νης ὑποκοπῆς. σελιῶν δὲ τοῦ τῆς γῆς σκιασι-  
 ματῶ, ἀλλὰ κατ' ἀναχώρησιν. εἶς δὲ καὶ διο-  
 γνήης ὁ ὑποκρύπτει ἐν τῇ πρώτῃ τῇ ὑπὲρ λέντων.  
 ἐπὶ τὴν τάξιν πορίσθαι, καὶ πᾶσι πόρ ἡνία καὶ παρ' ἡ-  
 μῖν τῇ τυχόντων γίνεται λαμβανέσθαι. καὶ ἡ θεία  
 φύσις πρὸς ταῦτα μηδ' ἀμὴν προσάγει. ἀλλὰ ἀ-  
 λειτῆρ' ἐκ διατηρείσθαι, καὶ ἐν τῇ πάσῃ μαχα-  
 ριότητι. ὥς εἰ εἶς μὴ πρὸς χθῆσεται, ἀπασα ποῦ  
 τῶν μετῴρων ἀντιλογία ματαία ἔσται. καὶ πᾶσι πόρ  
 πῶν ἡδὴ ἐγίνετο οὐδ' ἀδυνατοῦ τρόπου ἐφαπταμένοισι,  
 εἰς δὲ τὸ μάλιστα ἐκπύουσι, ἵνα καὶ ἕνα τρόπον  
 οἶεσθαι γίνεσθαι μόνον, εἶς δὲ ἄλλου ἀπαντας εἶς  
 κατὰ τὸ ἐνδεχόμενον ἐκβάλλειν, εἰς τε τὸ ἀδυνα-  
 τὸν φερόμενον, καὶ τὰ φαινόμενα δὴ σημεῖα  
 ἀποδέχεσθαι μὴ δυνάμενον (ὡς θεῶ χαίρειν. μή-  
 νη νυκτῶν καὶ ἡμερῶν παραλλωτρυτα καὶ παρὰ  
 τὸ ταχέως ἡλίου κινήσεις γίνεσθαι, καὶ πάλιν  
 βραδείας ὑπὲρ γῆς. παρὰ τὸ μήνῃ τόπων παραλ-  
 λωτρυτα καὶ τῶν πνῶν ποραιοῦντα ταχέως,  
 ὥς καὶ παρ' ἡμῖν ἢ καὶ βραδύτόρον πῶν θεωρεῖται.



οἷς συμφώνως Δεῖ λῆγειν ὡδ' τῶν μετιώρων. οἱ δὲ  
τὸ ἐν λαμβάνοντες, ρῖς τε φαινομένοις μάχον-  
ται, καὶ τοῦ εἰδωλῶν ἀνθρώπων θεωρῆσαι, δῖα πει-  
πτῶν ἡσυχίᾳ ἐπεισημασίαι δύνανται γινέσθαι, καὶ  
ἡσυχίᾳ συγκρίσεις καιρῶν, καὶ δὲ πόρ ὅν ρῖς ἐμφαν-  
νίσαι παρ' ἡμῖν ζώοις. καὶ παρ' ἑτοῖοις ὡς εἰ ἀδύνατον  
καὶ μεταβολῆς. ἀμφοτέρωθεν γὰρ ταῦτα οὐ μάχον-  
ται ρῖς φαινομένοις. ἐπὶ δὲ, πρὶς παρὰ ἑαυτοῦ ἢ ἑαυτοῦ  
ἢ αἰτιᾶ γίνεσθαι, οὐκ ἔστι σωιδεῖν ἐφ' ἧ γίνεσθαι καὶ  
σωιδεσθαι δύνανται. καὶ παρὰ πηλὴσεις ἀδύνατον  
πνέοντων σωιδεσθαι, καὶ παρὰ πόριπληκὰς ἀλ-  
ληλούχων ἀτόμων, καὶ ὑπὸ τηλεείων εἰς ἑαυτοῦ τελεί-  
σαι, καὶ ἡσυχίᾳ ἑαυτοῦ πνέοντων συλλογῶν ἀπὸ τε γῆς καὶ  
ὑδάτων. καὶ ἡσυχίᾳ ἄλλους δὲ τρώοντες πλείους αἰ-  
τῶν ριούτων συσώσεις οὐκ ἀδυνατῶσι σωτελεῖν  
ἔσθαι. ἡ δὲ δι' ἐπ' αὐτῶν, ἡμῶν, θλιβομένων, ἡ δὲ με-  
ταβαλλόντων, ὅθεν ταῦτα δύνανται σωτελεῖσθαι. ἐπὶ  
τὴ πνέοντα, ἡσυχίᾳ ἀποφορὰν ἀπὸ ὑπὸ τηλεείων τό-  
πων, δι' ἀδύνατον κινουμένων, ῥτόρας ἐπαφιδύσεως  
γινόμενης ἀπὸ τινῶν ἀθροισμάτων, ἐπιτηλεείων  
εἰς τὰς ριαύτας ὑπὸ πίεμψις. βροντὰς ἐνδέχεται  
γίνεσθαι, καὶ πνέοντα ὅν ρῖς κρηλώμασι τῶν  
νεφῶν ἀνείλησιν, καὶ δὲ πόρ ὅν ρῖς ἡμετέροις ἀγγεί-  
οις καὶ παρὰ πυρὸς πεπνέματωμένου βόμβου ἐν  
αὐτοῖς. καὶ ἡσυχίᾳ ἑξῆς δὲ νεφῶν, καὶ δῖα σωσεις.  
ἡσυχίᾳ

κατὰ παρατείλεις δὲ νεφῶν, καὶ κατὰ ξείς πύξιν.  
 εἰληφότων κρυσαλοειδῆ, καὶ ὃ ὅλον καὶ ῥῶσιν ὃ μί-  
 ρον γίνεσθαι λέγειν ἐκκαλείται τὰ φαινόμενα. καὶ  
 ἀσραπαὶ δι' ὧσαύτως γίνονται καὶ πλείους τρόπους.  
 καὶ γὰρ κατὰ παρατείλειν καὶ σύγκρυσιν νεφῶν,  
 ὁ πυρὸς ἀποτελεσικὸς σχηματισμὸς διζολιοδαίνων.  
 ἀσραπὴν γένει. καὶ κατ' ἐκρηπισμὸν ἐκ τῶν νεφῶν.  
 ἔκ τῶν πνύματων. ἂν τὴν λαμπηδύνα ταύτῃ παρα-  
 σκευάζει. καὶ κατ' ὠπασμὸν θλίψεως τῶν νεφῶν γι-  
 νομένης, εἴθ' ἔκ τῶν ἀλλήλων, εἴθ' ἔκ τῶν πνύματων.  
 καὶ κατ' ἐμπόριληψιν δὲ τοῖς ἀπὸ τῶν ἀσρων κατε-  
 σπειραμένης φωτός. ἔτα συνελαυσμένης ἔκ τῆς  
 κινήσεως νεφῶν τῆς καὶ πνύματων, καὶ διεκπίπτου-  
 τος δὲ τῶν νεφῶν. ἢ κατὰ διήθησιν τῶν νεφῶν τοῖς  
 λεωρμυδρεσώτερος φωτός. ἢ ἀπὸ τοῦ πυρὸς νέφη σωει-  
 λείχθαι, καὶ τὰς βροντὰς ἀρτελείσθαι, καὶ κατὰ  
 τὴν τέττα κίνησιν, καὶ κατὰ τὴν πνύματ' ἐκ  
 πύρωσιν, τὴν γινομένην διὰ τε σωρύναν φορᾶς,  
 καὶ δὲ σφοδρὰν κατείλησιν. καὶ κατὰ ῥήξεις δὲ  
 νεφῶν ἔκ τῶν πνύματων ἐκπτώσιν τῶν πυρὸς ἀρτε-  
 λεσικῶν ἀτόμων, καὶ ὃ τῆς ἀσραπῆς φαίτασμάς  
 ἀρτελουσῶν. καὶ κατ' ἄλλου δὲ πλείου τρόπους  
 ῥαδίως ἔσαι καθοραῖν ἐχόμενον καὶ τῶν φαινομένων  
 καὶ ὃ γύρις ὁμοιον δυνάμενον σωθεωρεῖν. προ-  
 τέρει δὲ ἀσραπὴ βροντῆς, ἣν ῥαδίοντι πόρτισται



νεφῶν καὶ διατόλμα· ἴδ' τὸ πνεῦμα ἐμπίπτειν,  
 θζωθεῖσθαι τὸν ἀσραπῆς ἀποτελεσικὸν σχηματισμὸν.  
 ὕσθρον δὲ τὸ πνεῦμα ἀνελούμενον, τὸν βόμβον  
 ἀποτελεῖν τοῦτον. καὶ κατ' ἐμπροσθὶν δὲ ἀμφοτέρων  
 ἀμὰ ἴδ' τάχει σωτονωτόρῳ κεχεῖσθαι πρὸς ἡμᾶς  
 τὴν ἀσραπὴν. ὕσθρην δὲ τὴν βροντὴν, καὶ  
 παρὰ ἐπ' ἡνίων θζ ἀποσήματ' θεωροῦμενων  
 καὶ πληγὰς πῦας ποιοῦμενων. κοδραῖνός ἐνδέχεται  
 γίνεσθαι, κατὰ πλείονας πνύματων συλλογὰς,  
 καὶ κατεῖλησιν ἰσχυράν τε ἐκπύρωσιν, καὶ  
 κατὰ ῥῆξιν μόνον, καὶ ἐκπτώσιν ἰσχυροτέραν  
 αὐτοῦ ὡς καὶ τὸ τόπον, τῆς ῥήξεως γινομένης  
 ὅτε τὸ τοῦ ἐξῆς τόπου πυκνωτόρ' εἶναι ὅτε  
 πίλησιν τῶν νεφῶν. καὶ κατὰ ταύτην δὲ τὴν  
 τοῦ πυρὸς ἐκπτώσιν ἀνελουμένην, καὶ καὶ βροντὴν  
 τὴν ἐνδέχεται πλείον' γίνεσθαι γνησιμὴν καὶ  
 πνύματωσιν ἰσχυρότορον, καὶ ῥήξαντ' τὸ νύφ' ὅτε  
 ῥ' δύναισθαι ὑποχωρεῖν εἰς τὰ ἐξῆς, ἴδ' πίλησιν  
 γίνεσθαι. τὸ μὲν πρὸς ὅτε τὴν ὑψηλὸν ἐν ὧ  
 μάλισα κοδραῖνοί πίπτουσιν αἰ πρὸς ἄλληλα.  
 καὶ κατ' ἄλλ' οὗ δὲ τῶν πλείονας ἐνδέχεται  
 κοδραῖνός ἀποτελεῖσθαι, μόνον ὁ μῦθος ἀπίστω.  
 ἀπίστω δὲ ἴστω τις καλῶς τοῖς φαινομένοις ἀκρουσθῶν  
 παρὰ τῶν ἀφανῶν σημειῶται. πρὸς ἡμᾶς  
 ἐνδέχεται γίνεσθαι, καὶ κατὰ θεῖσιν νύφ' οὗ  
 εἰς οὗ

εἰς τοὺς καὶ τῷ τόπῳ, ἀλλοειδῶς ὑπὸ πνύματι  
 τῷ ἀβρόου ὠθύντῃ, καὶ οἷα τῷ πνύματι πλῆ-  
 λου φθρομένη. ἅμα καὶ τὸ νέφθ εἰς τὸ πλυσίον  
 ὠθοῦντῃ τοῦ ἐκτὸς πνύματι. καὶ κατὰ περὶ  
 σασιν δὲ πνύματι εἰς κύκλον ἀδρῷ τινὸς ἐν  
 πιστωθουμένη ἀνῶθεν. καὶ ῥύσεως πολλῆς πνύ-  
 ματων γυνομένης, καὶ οὐ δυνάμενης ὅτε τὰ πλά-  
 για διαρρύνῃαι διὰ τὴν πίεξ τοῦ ἀδρῷ πίλη-  
 σιν. καὶ ἕως μὲν γῆς, τοῦ πρησῦρ καδιεμένου,  
 εἰσβολαὶ γίνονται, ὥς αὖ καὶ ἡ ἀπογεννήσις κατὰ  
 τὴν κίνησιν τοῦ πνύματι γίνονται. ἕως δὲ θα-  
 λατῆς δῖνοι ἀποτελοῦνται. σεισμὸς γινέχεται  
 γίνεσθαι, κατὰ πνύματι ἐν τῇ γῇ ἀπόλη-  
 σιν, καὶ παρὰ μικρὸν ὄγκου αὐτῆς παρὰ θόδιν, καὶ  
 συεχῇ κίνησιν ὅταν κραδασὸν τῇ γῇ παρασκη-  
 ῶν. καὶ τὸ πνεῦμα τοῦτο, ἢ ἔξωθεν ἐμπροσθαμι-  
 βόλη ἐκ τοῦ πίπτειν εἰς ἰδιότητα, ἢ εἰς ἀντροειδεῖς  
 τόπων τῆς γῆς ἐκ πνύματων τὸν πεπιλημέ-  
 νοι ἀδρῶ. κατὰ ταῦτῃ δὲ τὴν διαδοσιν τῆς κί-  
 νησεως ἐκ τῶν πτώσεων ἰδιαφῶν πολλῶν, καὶ πα-  
 λιν ἀνταποδίδωσιν ὅταν πυκνώμασι σφοδρῶτε-  
 ροις τῆς γῆς ἀπαντήσῃ, γινέχεται σεισμὸς ἀ-  
 ποτελείσθαι. καὶ κατ' ἄλλους δὲ τρόπους πλείο-  
 νας τὰς κινήσεις ταύτας τῆς γῆς γίνεσθαι. τὰ δὲ  
 πνύματα συμβαίνει γίνεσθαι, ἀλλοφυλίας τι-



υὸς αἰ, καὶ κτλ' μικρὸν παρειαδινμένης, καὶ καθ' ὅ  
 διατ' ἀφθόνου συλλογῇ. τὰ δὲ λοιπὰ πνύμα  
 τα γίνετο, καὶ ὀλίγων πνύοντων εἰς τὰ πρὸ καὶ  
 λώματα, διαδόσεως τύπων γινόμενης. χαλαζα  
 σωτελείται, καὶ κατὰ πῦξιν ἰσχυροτέρων, πάντῃ  
 θεν δὲ πνύματωδων πόρισασιρ πνύων ὁμοῦ ῥῆξιν  
 ἅμα τῷ τε σωώσιρ αὐτῶν ποιουμένην καὶ διαρῆ  
 ξιν πρὸς ἡ κατὰ μόρην σωίσαοθαι, πηγνύμενα  
 καὶ κατὰ ἀθρότητα. ἡ δὲ πόριφορία, οὐκ ἀδυνα  
 τως μὲν ἔχει γίνεσθαι, πάντῃ θεν τῶν ἀκρῶν καὶ ἐν  
 τῇ συσώσει πάντοθεν ὡς λέγεται, καὶ τὰ μόρην ὀ  
 μαλῶς ποδισαμένην, εἴτε ὑδατρείδων πνύων, εἴ  
 τε πνύματωδων. χιόνα δὲ ἐνδέχεται σωτελεῖ  
 σθαι καὶ ὑδατ' ὡς λεπτῇ ἐν χειρομένην ἐν τῶν νεφῶν  
 διαφορῶν σύμμετρίως, καὶ θλίψεως ὡπτηθείων νε  
 φῶν, καὶ ὑπομνήματ' ἀπορῆς. εἴτα τύρην πῦ  
 ξιν ἐν τῇ φορᾷ λαμβάνουτ', διαπνύα ἰσχυρὰν ἐν  
 ρίς κατωτάρις τόποις τῶν νεφῶν ψυχρασίας πε  
 ρίσασιρ. καὶ κατὰ πῦξιν δι' ἐν ρίς νέφειρ ὁμαλῶν  
 ὡραιότητα ἔχουσα τριαύτη προαίρεσις ἐν τῶν νε  
 φῶν γίνοιντο, πρὸς ἀλλήλα θλιβομένων ὑδατρε  
 ιδῶν καὶ συμπαρακειμένων. ἃ οἰοῦνται σωώσιρ ποι  
 ούμενα, χαλαζαν ἀποτελεῖ. ὃ μάλιστα γίνετο  
 ἐν τῷ ἀόρι. καὶ κατὰ τείφιρ δὲ νεφῶν, ἀπόπαλι  
 σιν ἀναλαμβάνει τὸ τῆς χιόν' τουτο ἀθροισ  
 μα. καὶ

μα. καὶ κατ' ἄλλου δὲ τρόπου γινώσκεται χιό-  
να σωτελείσθαι. δρόσθ' σωτελείται, καὶ κα-  
τὰ σνώδον πρὸς ἄλληλα ἐκ τοῦ ἀδρόθ' τῇ ριού-  
τῃ, ἃ τῆς ριούτης ὑγρασίας ἀποτελεστικὰ γίνε-  
ται. καὶ κατὰ φορὰν δὲ, ἢ ἀπονωτόρων τόπων, ἢ ὑ-  
δατα κερτυμένων ἐν τοῖς τόποις μάλιστα δρόσθ'  
σωτελείται. ἔτα σνώδον ρύτῃ εἰς τὸ αὐτὸ λα-  
βόντῃ καὶ ἀποτέλεισιν ὑγρασίας. καὶ πάλιν φο-  
ρὰν ὡς τοὺς κἄτω τόπου, κατὰ πόρ ὁμοίως καὶ  
παρ' ἡμῖν ἐπιωλεόνων σωτελείται ριούτα τινα.  
τῇ δρόσων ρύτῃ πῦξιν πινὰ ποικίλ λαβόντῃ δὲ  
πόρισασιρ πινὰ ἀδρόθ' ψυχροῦ, κρύσαλθ' σωτε-  
λείται. καὶ κατ' ἐκθλίψιν μὲν, τὸ πόριφοδρὸς οὐκ  
μαψμοῦ ἐκ τοῦ ὕδατθ'. σνώσιρ δὲ τῇ σκαλη-  
νὴ καὶ ὀξυγωνίῳ τῇ ἐν τῷ ὕδατι παρὰ χέντῃ.  
καὶ κατὰ ἔξωθιν δὲ τῇ ριούτῃ πρόσκεισιρ. ἃ συ-  
νελασθέντα, πῦξιν τῷ ὕδατι παρεδουλόασε ποι-  
σὰ τῶν πόριφοδρὸν ἐκθλίψαντα. ἴσιν γίνεται ἀ-  
δρόθ' φύσιρ ἰδίαν τοῦ τε φωτὸς καὶ τοῦ ἀδρόθ',  
ἢ τὰ τῶν χρωμάτων τούτου ἰδιώματα ποιήσει,  
εἴτε πάντα, εἴτε μονοειδῶς. ἀφ' οὗ πάλιν ἀπο-  
λαμποντθ' τὰ ὁμορουῦτα τοῦ ἀδρόθ' χένσιρ  
ταῦτα λήφεται, οἷον θεωροῦμεν κατὰ πρόσλαμ-  
ψιν πρὸς τὰ μόρη. τὰ δὲ τῆς πόριφοδρείας τοῦτο  
φαινάσμα γίνεται, δὲ τὸ διάστημα πάντῃ ἐσορ-  
τῶ τῆς



ἔκτ' αὖ τῆς ὀφείας θεωρεῖσθαι, ἢ συνώσιν τοιαύτῳ  
 λαμβανουσῶν τῶν ἐν τοῖς ἀόροι τομῶν, ἢ ἐν τοῖς νέ-  
 φουσι ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ ἀόρου προσφορομένου πρὸς  
 τὴν σελήνῳ. ἢ τὰ ἀπ' αὐτῆς ῥόματα ἀποφορο-  
 μενα ὁμαλῶς ἀνασέλλοντα ὡς τοσοῦτον ἐφ' ὅσον  
 κύκλῳ περὶ τῆς εἰς τὸ νεφοειδὲς τοῦτο, καὶ μὴ τὸ  
 παραπὰν διακρίνει, ἢ καὶ τὸν πόριξ ἀόρα αὐτῆς,  
 ἀνασέλλοντες συμμέτρως παλινθῆν, εἰς τὸ περὶ  
 φορὸς τὸ περὶ αὐτῶν καὶ παχυμερὲς περὶσθῆναι.  
 ὃ γίνεται κατὰ μόρην τινα. ἢ ἔξωθεν βίασμενου  
 τινὸς ῥόματ' ἢ τῆς θερμασίας ἐπιτηδείων τῶν  
 ῥων ἐπιλαμβανομένης, εἰς τὸ τοῦτο ἀπεργάζεσθαι.  
 κομῆται ἀσφόδ' γίνονται, ἢ πυρὸς ἐν τοῖς  
 ποῖσι ποτὶ διὰ χρόνων τινῶν ἐν τοῖς μετεώροις σωμα-  
 τρεφομένου, περὶσσεύσεως γινομένης, ἰδίαν τινα κί-  
 νησιν διὰ χρόνων τοῦ οὐρανοῦ ἰσχύοντες ἔκτ' ἡ-  
 μᾶς. ὥς τε τὰ τριᾶντα ἄστρα ἀναφανῆναι, ἢ αὐτὰ  
 ἐν χρόνοις ποτὶ ὁρμῆσαι διὰ τινα περὶσσεύσιν, καὶ  
 εἰς τοὺς κατ' ἡμᾶς τόπους ἰλθεῖν καὶ ἐφανῆ γί-  
 νεσθαι. τὴν τε ἀφανισμὸν τούτων γίνεσθαι παρὰ  
 τὰς ἀπικειμένης ταύταις αἰτίας πρὸς ἀναστροφή-  
 ται αὐτοῦ. ὃ συμβαίνει, οὐ μόνον τοῖς τὸ μόρ' ἢ  
 τοῦ τὸν ῥόμον ἐκείνου περὶ ὃ τὸ λοιπὸν ἀναγρῶ-  
 φεται, κατὰ πόρ' τινος φασί, ἀλλὰ καὶ τοῖς δύνῳ  
 ἀόρ' ἐγκυκλῶν αὐτῶν περὶσσεύειν, ἢ πολυτικῇ  
 γίνεται





μνησάμενος τῆς αὐτῆς Δίνης, καὶ παρὰ τὸ ποδριφορέν  
 θαι, τὰ μὲν Διὰ πλείονος τόπου, τὰ δὲ Δι' ἐν  
 λαττρῇ τῷ αὐτῷ δίνῳ ποδρικυκλωῦται. τὸ δὲ  
 ἀπλῶς ἀποφαίνεσθαι πόρι τούτων, καὶ θῆκοι ὅτι  
 τοῖς τδρατύνεσθαι πρὸς τοὺς πολλοὺς βουλο  
 μένοις. οἱ λεγόμενοι ἀσδρόβει ἐκπίπτειν, καὶ παρὰ  
 μόρῳ, καὶ παρὰ τριψῇ αὐτῶν δύνανται σω  
 τελεῖσθαι, καὶ παρὰ ἐκπτώσει οὐ αὖν ἢ ἐκπνύματι  
 πωσις γίνεται, καὶ παρὰ πόρ καὶ ὡδ' τῶν ἀσραπῶν ἐν  
 λέγομεν. καὶ κατὰ σωόδοι δὲ ἀτόμων πυρὸς ἀπο  
 τελεσιῶν, συμφιλίας γνησιότης εἰς τὸ τοῦτο τε  
 λίσαι, καὶ κατὰ κίνησιν οὐ αὖν ἢ ὁρμὴ κατὰ τῷ σύ  
 νοδοι δὲ ἀρχῆς γνήνται. καὶ κατὰ πνύματι δὲ  
 συλλογῇ ἢ πνύμασι ποίρ ὁμιχλαῖς, καὶ  
 τ' ἐκπύρωσιν τούτων δὲ τῷ κατὰ λυσι. ἔτ' ἐπε  
 κρήξιν τῶν πόρι χόντων, καὶ ἐφ' ὅν αὖν τόποι ἢ ὁρ  
 μή γνήνται τῆς φορᾶς εἰς ὅσον ποδρικυκλῆς. καὶ ἄλ  
 λοι δὲ τρόποι εἰς τὸ ὅσον τελίσαι ἀμύθητι εἰσίρ. αἱ  
 δ' ὑψημασίαι αἱ γινόμεναι ὑπὸ ποίρ ζώοις, κατὰ  
 συγκύρημα γίνονται τοῦ καιροῦ. οὐ γὰρ τὰ ζῶα αἰ  
 ναγκῇ τινὰ προσφύεται τοῦ ἀποτελεσθῆναι  
 χειμῶνα. οὐδὲ καθηκταί τις θεία φύσις παρατηροῦ  
 σα τὰς τῶν ζῶων τούτων δὲ δόξας, καὶ πείτα τὰς ἐν  
 πισσημασίας ταύτας ἀποτελεῖ. οὐδὲ γὰρ εἰς τὸ πν  
 χόν ζῶον καὶ μικρῷ χαλεπότητι ἢ, ἢ τριῶν μω  
 ρία ἐκπί

ρία ἐκπίση, μὴ ὅτι εἰς παντελὴ ἰουδαϊσμοῦ ἡμετέ-  
 ρου. ταῦτα δὲ πάντα πυθόκλεις μνημόνους. κατὰ  
 πολὺ τε γὰρ τοῦ μύθου ἐκβήσῃ, καὶ τὰ ὁμογενή  
 τῶν ῥύρις συνοραῖν διωκῇ. μᾶλλον δὲ σεαυτοῦ ἅ-  
 ποδώσεις τῶν τῶν ἀρχῶν, καὶ ἀπειρίας, καὶ τῶν  
 συγγενῶν ῥύρις θεωρίας. καὶ οὗ ἐνεκὴν ταῦτα ἐκ-  
 λογισζόμεθα. ταῦτα γὰρ μάλιστα συνοθεωρούμενα  
 ῥαδίως τὰς περὶ τῶν κατὰ μόρῃ αἰτίας συνο-  
 ραῖν ποιήσει. οἱ δὲ ταῦτα μὴ καταγαπήσαν-  
 τός, ἢ μάλιστα, οὔτε αὐτὰ ταῦτα χαλῶς συνο-  
 θεωρήσασιν, οὔτε οὗ ἐνεκὴν δεῖ θεωρεῖν ταῦτα πε-  
 ριποιήσαντο.

Ταῦτα αὐτοῦ καὶ περὶ μετεώρων δοκεῖ. Περὶ δὲ  
 τῶν βιωτικῶν, καὶ ὅπως χρὴ τὰ μὲν ἡμᾶς ἐκφύ-  
 γειν, τὰ δὲ αἰρεῖσθαι οὕτως γράφει. πρότερον  
 δὲ Διέλθωμεν ἅ τε αὐτοῦ δοκεῖ περὶ τοῦ σοφοῦ,  
 καὶ τοῖς ἀπ' αὐτοῦ. Βλαβας δὲ ἀνθρώπων, ἢ  
 οἷα μῖσος, ἢ οἷα φθόνος, ἢ οἷα καταφρόνισις γί-  
 νεσθαι. ὧν ἅν σοφὸν λογισμῷ περὶ γίνεσθαι. ἀλλὰ  
 καὶ τὸν ἅπαξ γινόμενον σοφόν, μὴκέτι τῷ ἔναι  
 τίαν λαμβάνειν διαβάσειν, μὴδὲ πλάττειν ἐκόν-  
 τα παθεῖν μᾶλλον συσχεθῆσθαι. οὐκ αὖ ἐμπο-  
 ρίσαι πρὸς τὴν σοφίαν. οὐδὲ μὲν ἐκπαύσεως σώ-  
 ματος ἕξως σοφὸν γινέσθαι αὖ, οὐδ' ἔν παντὶ ἔθ-  
 νει. καὶν σρεβλωθῇ δὲ ὁ σοφός, εἶναι αὐτὸν ἰουδαῖον



να. μόνον τὲ χαλεμὲν ἔξειν τὸν σοφόν, καὶ ὡς οἱ φίλοις,  
 καὶ παροῦσι καὶ ἀπουσίῃ ὁμοίως διατεθεῖσθαι. ὅτε  
 μὲν τις σρεβλεύεται, ἔνθα καὶ μύξει καὶ διμύξει.  
 γυναικί τε ἔμηνεσθαι τὸν σοφόν, ἢ οἱ νόμοι ἀπα-  
 γορεύουσιν, ὥς φησι Διογένης ἐν τῇ ἐπιτομῇ τῆς  
 ὑψηλοῦρου ἡδικοῦ δολυμάτῳ. ἔτε κολάσειν οἰκί-  
 τας. ἐλεῆσαι μὲν γὰρ καὶ συγγνώμῃ πῶς ἔξειν τῶν  
 ἀποουδαιῶν. ἐραδῆσθαι τὸν σοφόν οὐ δοκεῖ αὐ-  
 τῷ. οὐδὲ ταφῆς φρονεῖν. οὐδὲ θεόπεμπτον εἶναι  
 τὸν ἔρωτα, ὥς Διογένης φησὶν. οὐδὲ ξητορεύσειν  
 ἡγλῶς. σιωποῦσιν δὲ φασὶν ὥνῃσι μὲν οὐδέποτε. ἀ-  
 γαπητὸν δὲ εἰ μὴ καὶ ἔβλαψεν. καὶ μὴν καὶ γαμή-  
 σαι, καὶ τεκνοποιεῖν τὸν σοφόν, ὥς ἐπὶ κινυρῶ  
 ἐν ταῖς διαπορίαις, καὶ ἐν ταῖς πύξιν φύσεως. καὶ  
 τὰ πύξιν φασὶν Διέποτε βίου, γαμήσειν καὶ θῆ-  
 τραπῆσθαι τίνας. οὐδὲ μὴν τηρήσειν ἐν μίθῃ  
 φησὶν ὁ ἐπὶ κινυρῶ ἐν τῇ συμποσίῳ. οὐδὲ πολι-  
 τεύεσθαι, ὥς ἐν τῇ πρώτῃ πύξιν βίου, οὐδὲ τυραν-  
 νεύσειν. οὐδὲ κωιδεῖν, ἐν τῇ δευτέρῃ πύξιν βίου.  
 οὐδὲ πτωχεύσειν, ἀλλὰ καὶ πηρωθεῖς τὰς ὁφεί-  
 μεθῆξαι αὐτὸν τοῦ βίου, ὥς ἐν τῇ αὐτῇ φησὶ. καὶ λυ-  
 πηθῆσθαι δὲ τὸν σοφόν, ὥς Διογένης ἐν τῇ πέμ-  
 πτῃ τῶν ὑψηλοῦρων, καὶ δικασεῖσθαι. καὶ συγγνω-  
 ματα ἡγαλείψαι. οὐ πανηγυρεῖν δὲ. κτήσεως  
 προνοήσθαι, καὶ τοῦ μέλλοντος. φιλαγήσειν.

τύχῃ

τύχη τὴν αἰπτάλξασθαι. φίλων τὴν οὐδὲν κτήσεισθαι.  
 ἰσδοξίας ὑπὸ ῥουσῶν προνοήσεσθαι, ἐφ' ὅσον μὴ κα-  
 ταφρονήσεσθαι. μᾶλλον τὴν ἐνφρανθήσεσθαι τῶν  
 ἄλλων ἐν ταῖς θεωρίαις. ἀμαρτήματα ἀνίστα εἶ-  
 ναι. καὶ τῶν ὑγείων τισὶ μὲν, ἀγαθόν. τισὶ δὲ, ἀ-  
 διαφορὸν. τῶν δὲ ἀνδρείων φύσει μὴ γίνεσθαι, λο-  
 γισμῶ δὲ τοῦ συμφέροντος. καὶ τῶν φιλίων ὁρ-  
 τὰς χρείας, δεῖν μὲν γὰρ προηγεσθαι. καὶ  
 γὰρ τῶν γλῶσσοις. συνίστασθαι δὲ αὐτῶν κα-  
 τὰ κοινωσίαν ἐν ταῖς ἡδοναῖς. τῶν ἰσχυροτάτων δι-  
 χῶ νοεῖσθαι. τῶν τε ἀκροατῶν, ὅτι οὐδὲν πρὸς  
 τὸν θεόν, ἐπίτασιν οὐκ ἔχουσιν. καὶ τῶν προδόν-  
 τῶν, καὶ ἀφαιρέσειν ἡδονῶν. εἰκόνας τὴν ἀναθήσειν  
 εἰ ἔχοι ἀδιαφόρως αὐτὸν οὐκ οἶναι. μόνον τὴν τὸν σοφόν,  
 ὁρθῶς αὐτὸν πρὸς τὴν μουσικὴν καὶ ποιητικὴν διαλέ-  
 ξασθαι. ποιήματα τε ἐνδύειν, ἐπὶ τοῦ σοφωτέρως.  
 χρηματίζεσθαι τε, ἀλλ' ἀπὸ μόνης σοφίας, ἀπο-  
 ρήσαντα. καὶ μόνον καὶ καὶ καὶ καὶ καὶ καὶ καὶ καὶ καὶ  
 καὶ ἐπιχαίρεισθαι τινὶ ὑπὸ τοῦ διορθώματος, καὶ  
 σχολῶν κατὰ σκοπὸν, ἀλλ' οὐχ ὥς τε σχολαι-  
 γωγῆσαι. καὶ ἀναγνώσεσθαι ἐν πλήθει, ἀλλ' οὐχ  
 ἐν ὁρῶντα. δογματίζειν τε, καὶ ἀπορήσειν, καὶ καὶ  
 ὑπὸ τοῦ ὁμοίου ἴσεσθαι, καὶ ὑπὸ τοῦ φίλου πρὸς τὴν  
 οὐσίαν. Ταῦτα δοκεῖ αὐτοῖς. μετὰ τὸν δὲ ὑπὸ τῶν  
 ἐπιστολῶν.

ΑΑ 3

Επίκου,



Επίκουρος Μενεινέει χαίρειν.

Μήτε νίϑ τις ὦρ, μελέτω φιλοσοφεῖν, μήτε γόρῳ ἑπαρῶν, κοπιᾷτω φιλοσοφῶν. οὔτε γὰρ ἄωρ οὐδείς ὄστιν, οὔτε παρῶρ πρὸς ἧ κατὰ ψυχὴν \* ὥραρ, ἢ παρεληλυθῆναι τῷ ὥραρ, ὁμοίῳ ὄστι τοῦ λέγουσι, πρὸς ἐνδαιμονίαν ἢ μὴ παρῆναι τῷ ὥραρ, ἢ μὴ ἐπὶ εἶναι. ὥς τε φιλοσοφῆτον καὶ νίω καὶ γόρῳ. τοῦ μὲν, ὅπως γηρασκῶν νεαλῆ ρίς ἀγαθοῖς ὄσῃ τῷ χαίρει τῶν γεγονότων. τοῦ δὲ, ὅπως νίϑ ἅμα καὶ παλαιός ἢ ὄσῃ τῷ ἀφοβίαν τῶν μελλόντων. μελεταῖν δὲ χρὴ τὰ ποιουῦντα τῷ ἐνδαιμονίαν. εἴ πορ παρούσης μὲν αὐτῆς, πάντα ἔχον. ἀποούσης δὲ, πᾶντα προάτρυμιν εἰς ἧ ταύτῃ ἔχειν. ἃ δὲ σοι σιωχῶς παρέγγειλον, ταῦτα καὶ προάτρε καὶ μελέτα. σοι χεῖρα τοῖ καλῶς ζῆν ταῦντα διαλαμβάνων εἶναι. προῶν μὲν ἧρ θεόν, ζῶν ἀφθαρτῶν καὶ μακαλειον νομίζειν. ὥς ἡ κοινὴ τοῖ θεοῦ νόησις ἑπεγρᾶφη, μηδὲν μήτε τῆς ἀφθαρσίας ἀλλότριον, μήτε τῆς μακαριότητος ἀνόικειον αὐτῷ προόσαπτε. πᾶν δὲ ἧ φυλάττειν αὐτῷ Διὶ νομῶν τῷ μετὰ ἀφθαρσίας μακαριότητα περὶ αὐτῶν δόξαζε. θεοὶ μὲν γὰρ εἰσιν. ἧαργῆς μὲν γὰρ ὄστιν αὐτῶν ἡ γνώσις. οἷον δ' αὐτοὺς πρᾶτοι νομίζουσι, οὐκ εἰσιν. οὐ γὰρ φυλάτρουσι αὐτοὺς οἷον νομίζουσι. ἀσεβῆς δὲ, οὐχ ὁ τοὺς τῶν πρᾶτων

πολλῶν θεοὺς ἀναιρῶν. ἀλλ' ὁ τὰς τῶν πολλῶν δό-  
 ξας θεοῖς προσάπτωρ. οὐ γὰρ πολήεις εἰσὶν,  
 ἀλλ' ὑπολήψεις ψευδεῖς αἱ τῶν πολλῶν ὑπὸ θε-  
 ῶν ἀποφάσεις. ἤθην αἱ μέγισται βλάβαι, αἵτιαι  
 τοῖς ἡγενοῖς ἐκ θεῶν ἐπάγονται, καὶ ὠφέλειαι. ταῖς  
 γὰρ ἰδίαις οἰκείουμενοι δὴ παντὸς ἀρετοῦς τοὺς  
 ὁμοίους ἀποδέχονται, πάντες μὴ γιγνώσκοντες, ὡς ἄλ-  
 λότερον νομίζοντες. σωΐδιζε δὲ ἡν ἱερὸς νομίζειν μη-  
 δὲν πρὸς ἡμᾶς εἶναι τὸν θάνατον, ἵπαι πάντες ἀ-  
 γαθὸν καὶ ἡγεῖν ἡν αἰσθάνοιτο. σόρησις δὲ ὅτι αἱ  
 αἰσθάνοιτο, ὁ θάνατος. ὅθεν γινώσκοντες ὁρθή, μηδὲν εἶναι  
 πρὸς ἡμᾶς τὸν θάνατον, ἀφ' ἡμετέρου ποιεῖ τὸ τῆς  
 ζωῆς θνητῶν, οὐκ ἀποροῦν προσιθεῖσα χρόνον, ἀλλὰ  
 τὸν ἀθανασίας ἀφελουμένη πόθον. οὐθὲν γὰρ ὅτι  
 ἡν ἱερὸς ζῶν θνητῶν, ἱερὸς ἡγεῖται γινώσκοντες τὸ μη-  
 δὲν ὑπάρχειν ἡν ἱερὸς μὴ ζῶν θνητῶν. ὡς τε μάται-  
 οὗ ὁ λέγων, δεδιγμένοι ἡν θάνατον, οὐχ ὅτι λυπώ-  
 σαι παρῶν, ἀλλ' ὅτι λυπώει μέλλον. ὁ γὰρ παρῶν,  
 οὐκ ἡνοχλεῖ. ἡ δὲ προσδοκώμενον κενῶς λυπώει.  
 τὸ φρικτοδίστατον ὅσον τῶν ἡγεῖται ὁ θάνατος,  
 οὐδὲν πρὸς ἡμᾶς. ἐπειδή πᾶς ὅταν μὲν ἡμεῖς  
 ὄμεν, ὁ θάνατος οὐ παρῶν. ὅταν δὲ ὁ θά-  
 νατος παρῇ, τότε ἡμεῖς οὐκ ὄμεν. οὐ τε ὅσον  
 πρὸς τοὺς ζῶντας ὅτι, οὐτε πρὸς τοὺς τελευ-  
 τήσαντας. ἐπειδή πᾶς πᾶσι οὐκ ὄμεν.  
 οἱ δ' ἡν



οἱ δ' ἔκτι ἐισίρ. ἀλλ' οἱ πολλοὶ ἔρ δάναρρ' ὅτε μὲν  
 ὥς μέγισον τῶν ἡκανῶν φύγουσιρ. ὅτε δέ, ὥς ἀνάλ-  
 παυσίρ τῶν ἐν τῷ ζῴῳ. οὔτε φοβέεται ὅ μὴ ζῴῳ.  
 οὔτε γὰρ αὐτῷ προσίσταται ὅ ζῴῳ. οὔτε δοξαζει-  
 ται ἡκανὸν εἶναι ὅ μὴ ζῴῳ. ὥς πόρ δέ ὅ σιτίον οὐ ὅ  
 πλεον παύτως, ἀλλὰ ὅ ἥδισον αἰρεῖται, οὕτω καὶ  
 χρόνον δ' ὅ μῆκισον, ἀλλὰ ὅ ἥδισον ἡραπίζειται.  
 ὁ δέ παραγγέλωρ ἔρ μὲν νέον ἡγαλῶς ζῴῳ, ἔρ δέ  
 γόροντα ἡγαλῶς ἡτασρέφειρ, ἐυήθης δ' ἔστιρ, οὐ μόνον  
 δὲ ὅ τῆς ζωῆς ἀσπασόν, ἀλλὰ καὶ δὲ τὸ τῶν αὐ-  
 τῶν εἶναι μελέτιω γυῖ ἡγαλῶς ζῴῳ, καὶ γυῖ ἡγαλῶ  
 ἀποθυήσκειρ. πολὺ δέ χεῖρον καὶ ὁ λέγων, ἡγαλῶ  
 μὲν μὴ φῦναι,

φῦντα δ' ὅπως ὥκιστα πύλας αἰδέοιο πόρῳσαι.  
 εἰ μὲν γὰρ πεπιθῶς ἔδωκε φησὶ, πῶς οὐκ ἀπόρ' χε-  
 ται ἐκ τοῦ ζῴῳ; ἐν ἐρίμῳ γὰρ αὐτῷ τοῦτ' ἔστιρ, εἰ  
 πόρ ἡ βεβουλῶ μόνον αὐτῷ βεβαίως. εἰ δέ μωνῶ-  
 μενΘ, μάτουΘ ἐν τῆς οὐκ ἐπιδεχομένης. μνημο-  
 νούτιον δέ ὥς ὅ μέλλον οὔτε πάντως οὐχ ἡμέτε-  
 ρον, ἵνα μήτε πάντως προσμενῶμεν ὥς δυνάμενον,  
 μή τε ἀπελπίζωμεν ὥς πάντως οὐκ δυνάμενον. ἀ-  
 ναλογισίον δέ, ὥς τῶν ἐπιθυμιῶν αἰ μὲν, ἀναγκαῖαι.  
 αἰ δέ, φυσικαὶ μόνον. τῶν δέ ἀναγκαίων αἰ μὲν,  
 πρὸς ἐυδαιμονίαν εἰσίρ ἀναγκαῖαι. αἰ δέ, πρὸς  
 τῶν τοῦ σώματος ἀοχλησίαν. αἰ δέ, πρὸς αὐτὸ ὅ  
 ζῴῳ. τέτων

ζῶν. τὸ τῶν γὰρ ἀπλανῆς θεωρία πᾶσαν αἰσθεῖν καὶ  
 φυγῶν ἐπαναγαγεῖν οἶδεν ὡδὶ τῶν τοῦ σώματος  
 ὑγείαν, καὶ τῶν τοῦ σώματος ἀταραξίαν, ἐπεὶ εἶδεν  
 τὸ μακαρίως ζῶν εἶναι τέλος. τὸ τῶν γὰρ χειρῶν  
 ἀπαντα πλάττειν, ὅπως μήτε ἀλγῶν, μήτε ταρα  
 βῶμεν. ὅταν δὲ ἀπαξ εἶδεν ποῦ ἡμᾶς γίνονται, λυέ  
 ται πᾶς ὁ τῆς ψυχῆς χεῖμων, ὃν ἔχοντες τοῦ ζῶντος  
 βαδίζομεν ὡς πρὸς ἑνός, καὶ ζητεῖν ἐτόρμεν. ὡς  
 ὁ τῆς ψυχῆς καὶ τοῦ σώματος ἀγαθὸν συμπλη  
 ρωθήσεται. τότε γὰρ ἡδονὴς χρεῖαν ἔχοντες, ὅταν ἐν  
 τοῦ μὴ παρῆναι τῶν ἡδονῶν ἀλγῶν. οὐκ ἐπὶ τῆς ἡ  
 δονῆς δεόμεθα. καὶ οἶδεν εἶδεν τῶν ἡδονῶν ἀρχὴν καὶ  
 τέλος λέγομεν εἶναι τοῦ μακαρίως ζῶντος. ταύτῃ  
 γὰρ ἀγαθὸν πρῶτον καὶ συγγενικὸν ἔγνωμεν, καὶ  
 ἀπὸ ταύτης κατὰρχομεθα πάσης αἰρέσεως καὶ φυ  
 γῆς, καὶ ὡδὶ ταύτῃ κατὰντων, ὡς καὶ οὐκ ἔστι πά  
 ρει πᾶν ἀγαθὸν κείνους. καὶ ἐπεὶ πρῶτον ἀγαθὸν  
 εἶδεν καὶ σύμφυτον, οἶδεν εἶδεν καὶ ὅτι πᾶσαν ἡδονὴν  
 αἰρούμεθα. ἀλλ' ἔστιν ὅτι πολλὰς ἡδονὰς ἐπορβαί  
 νομεν, ὅταν πλείον ἡμῖν ὁ δυσχερὲς ἐκ τῶν ἐπι  
 ται. καὶ πολλὰς ἀλγυδιόνας ἡδονῶν κρείττους νομῶ  
 ζομεν, ἐπειδὴ μείζων ἡδονὴ παραπορευθεὶς πολλὴν  
 χρεῖαν ἐπομείναι τὰς ἀλγυδιόνας. πᾶσαι οὖν ἡδον  
 ῆς οἶδεν ὅτι φύσιν ἔχουσιν οἰκείαν, ἀγαθόν. ὅτι πᾶσαι μὲν  
 τὴν αἰσθητή. καὶ πόρ καὶ ἀλγυδιῶν πᾶσαι, καὶ κῆ. ὅτι



πᾶσα δὲ ἂν φθνηκὴ πεφυκυῖα. τῇ μὲν γὰρ συμμε-  
 τρήσει καὶ συμφθρόντῃ καὶ ἀσυμφόρῳ βλέψαι,  
 ταῦτα πάντα κερνεῖν καθήκει. χρώμεθα γὰρ ἑσθ-  
 μὲν ἀγαθῷ, κατὰ πῶς χρόνῳ, ὡς κακῷ. ἑσθὲ δὲ  
 κακῷ, ὅτι ἔμπαλιν, ὡς ἀγαθῷ. καὶ τὴν αὐτάρκειαν  
 δὲ ἀγαθὸν μέγα νομίζομεν, οὐχ ἵνα πάντως τις ὀ-  
 λίγοις χρώμεται. ἀλλ' ὅπως ἐὰν μὴ ἔχωμεν τὰ πολ-  
 λὰ, τις ὀλίγοις χρώμεται, πεπασμένοι γνησίως ὅ-  
 τι ἡδίστα πολυτελείας ἀπολαύουσιν οἱ ἥκιστα τού-  
 τῃς δεόμενοι. καὶ ὅτι ὁ μὲν φυσικὸν πᾶν, ἐκαστοί-  
 σον ὅσι. ὁ δὲ κερνόν, δυναπόρισον. οἱ τε λιγρὶ χυλοῖ  
 ἰσὺ πολυτελεῖ διαίτη τὴν ἡδονὴν ποριζόμενοι,  
 σιν ὅταν ἅπαν τὸ ἀλγούν κατ' ἡδίστα θύειται.  
 καὶ μάλα, καὶ ὕδωρ τὴν ἀκροτάτῃ ἀποδίδωσιν  
 ἡδονῇ, ἵππιδαν γὰρ δέωρ τις αὐτὰ προσνήγνη-  
 ται. τὸ σωεδίζειν δυοὶν ταῖς ἀπλάϊς, καὶ οὐ πο-  
 λυτελεῖσι διαίταις, καὶ ὑγείας ὅσι συμπληρωπ-  
 κόν, καὶ πρὸς τὰς ἀναγκαίας τοῦ βίου χρήσεις  
 ἄκοντον ποιεῖ ὅτι ἀνθρώπων. καὶ τις πολυτελεῖσιν  
 ἐκ θαλασμάτων προσδύχομενους, κρεῖττον ἡμᾶς  
 διατίθῃσι, καὶ πρὸς τὴν τύχην ἀφόβον παρα-  
 σκευάζει. ὅταν δυοὶν λέγωμεν ἡδονῇ τέλει ἑσθ-  
 χαν, οὐ τὰς τῶν ἀσώτων ἡδονὰς, καὶ τὰς τῶν γὰρ  
 ἀπολαύσει καίμας λέγομεν. ὡς πῶς ἀγνοοῦν-  
 τὸς καὶ οὐχ ὁμολογοῦντες ἢ κακῶς ἐκδεχόμενοι  
 νομίζου-

νομίζουσιν. ἀλλὰ τὸ μήτε ἄλγειν κατὰ σῶμα, μή-  
 τε ταρᾶσθαι κατὰ ψυχὴν. οὐ γὰρ πότοι καὶ  
 κῆμοι σιωεῖν οὐδὲ, οὐδὲ ἀπολαύσεις παίδων καὶ  
 γυναικῶν, οὐδὲ ἰχθύων καὶ τῶν ἄλλων ὅσα φέρει  
 πολυτελὲς τραπέζα γὰρ ἡδὺν γεννᾷ βίον. ἀλλὰ  
 νήφωρ λογισμός, καὶ τὰς αἰτίας δεδρευνῶν πάσης  
 αἰρέσεως καὶ φυγῆς, καὶ τὰς δόξας δελαυνῶν ἀφ'  
 οὐ πλείους τὰς ψυχὰς καταλαμβάνει θόρυβος.  
 τούτῃ δὲ πάντῃ ἀρχὴ καὶ τὸ μέγιστον ἀγαθόν,  
 φρόνησις. Διὸ καὶ φιλοσοφίας τιμωτόρον ἑστέ-  
 χει φρόνησις, δεῖ ἢς αἱ λοιπαὶ πᾶσαι πεφύκασιν  
 ἀρεταί, διδασκούνσαι ὥς οὐκ ἔστιν ἡδέως ζῆν, ἀ-  
 νδρὶ τοῦ φρονίμου καὶ καλῶς, καὶ δικαίως ἀνδρὶ  
 τοῦ ἡδέως. συμπεφύκασιν γὰρ αἱ ἀρεταὶ ἵνα ζῆν  
 ἡδέως. καὶ τὸ ζῆν ἡδέως, ῥύτῳ ἔστιν ἀχώριστον.  
 ἐπεὶ, τίνα νομίζεις εἶναι κρείττενον τοῦ καὶ πρὸς  
 θεῶν ὅσια δοξάζοντος, καὶ πρὸς θανάτου δια-  
 παντὸς ἀφόβως ἔχοντος, καὶ τὸ τῆς φύσεως ἐπι-  
 λελογισμῶν τέλει. καὶ τὸ μὲν τῶν ἀγαθῶν πεί-  
 ρας, ὥς ἔστιν ἐν συμπλήρωτόν τε καὶ ἐν πόσει δια-  
 λαμβάνοντος. τὸ δὲ τῶν κακῶν, ὥς ἢ χρόνου ἢ  
 πόνου ἔχει. βραχίστῳ δὲ ἐπὶ πινὼν δόσποτον εἰ-  
 σαγομῶν ἀγγέλλοντος, ἢ ἢ ἀπὸ τύχης, ἢ δὲ παρ'  
 ἡμᾶς, διὰ τὸ πᾶν μὲν ἀνάγκῃ, ἐπὶ θύωρ εἶναι,  
 πᾶν δὲ τύχῃ ἄσατον ὁρᾶν. τὸ δὲ παρ' ἡμᾶς, ἀδύ-



απορρ. ὦ καὶ ὃ μεμωρὴν καὶ ὃ φαντίον παρανο-  
 λουθεῖν πέφυκεν. ἐπεὶ κρεῖττον ἢ τῷ πόδι θεῶν μύ-  
 θω ἀκρολουθεῖν, ἢ τῇ τῶν φυσικῶν ἐμαρμυγῇ δουλεύ-  
 ειρ. ὁ μὲν γὰρ, ἐλπίδα παραιτήσεως ὑπογράφει  
 θεῶν ὄψεσιν. ἡ δὲ, ἀπαραιτήτην ἔχει τὴν ἀνάγκην.  
 τὴν δὲ τύχην, ὅχι ὡς οἱ πολλοὶ νομίζουσιν ὑπο-  
 λαμβάνων. οὐθεὶς γὰρ ἀτάκτως θεῶν πράττεται, ὅτε  
 ἀβέβαιον αἰτίαν. οἶεταί μιν γὰρ ἀγαθὸν ἢ κακὸν ἐκ  
 ταύτης πρὸς τὴν μακροῦς χρόνου ἀνθρώποις δίδωσθαι.  
 ἀρχὰς μὲν γὰρ μεγάλων ἀγαθῶν ἢ κακῶν, ὑπο-  
 ταύτης χρηγείσθαι. κρεῖττον εἶναι νομίζων ἐυλό-  
 γως ἀτυχεῖν, ἢ ἀλόγως ἐυτυχεῖν. βέλτιον γὰρ ὃ  
 κειθεὶς ἐν ταῖς πράξεσιν καλῶς, ὁρθωθῆναι ὄψεσιν  
 ταῦτα ὅσω καὶ τὰ φύσιν συγγενῇ, μελίτεσθαι  
 παντὸς ἡμόρας καὶ νυκτὸς πρὸς ἑαυτὸν, καὶ πρὸς  
 τὸν ὁμοίον σεαυτοῦ, καὶ ὅστις ἐπὶ ὑπαρξὶ ὄντα  
 ὄψεσιν ἀταραχθῆσθαι. ζῆσθαι δὲ ὡς θεὸς ἐν ἀνθρώποις. οὐθεὶς  
 γὰρ ὅμοιος θνητοῦ, ζῶν ἀνθρώπου ἐν ἀθανάτοις ἀγα-  
 θοῖς. μαυτικὴν δὲ ἀπάσαν ἐν ἄλλοις ἀναιρεῖ, ὡς καὶ  
 ἐν τῇ μικρᾷ ὑπὸ τῆς. καὶ φησὶ, μαυτικὴ ὡς ἀνύπαρ-  
 κτος. εἰ δὲ καὶ ὑπαρκτικὴ, οὐδὲν παρ' ἡμᾶς ἡγυῖται  
 γινώσκοντα. ῥαυτὰ καὶ πόδι τῶν βιωτικῶν καὶ ὑπὸ  
 πλείω διήλεκτοι ἀλλαχόθεν. ὄψεσιν φέρεται δὲ πρὸς  
 τοὺς κυβερνατικούς πόδι τῆς ἡδονῆς. οἱ μὲν, γὰρ τὴν  
 ἡγετασηματικὴν οὐκ ἐγκρίνουσι. μόνον δὲ τὴν ἐν κί-  
 νησιν

νήσει. ὁ δὲ ἀμφοτέρω, ψυχῆς καὶ σώματός, ὡς φη-  
 σιν ἐν τῷ ποδὶ αἰρέσεως καὶ φυγῆς, καὶ ἐν τῷ ποδὶ  
 τέλους, καὶ ἐν τῷ ποδὶ βίωσιν, καὶ ἐν τῇ πρὸς αὐτὸν ἐν  
 μυτλήνῃ φίλους ὑπὸ λῆν. ὁμοίως δὲ καὶ διοχλήσεως ἐν  
 τῇ ἐπὶ ἀκαίδευσί τῶν ὑπὸ λῆντων, καὶ μητροδωρεῖται  
 ἐν τῷ ποδὶ πιμοκράτει, λέγουσιν οὕτως. νοουμένης δὲ ἡ  
 δυνῆς τῆς τε καὶ τὰ κίνησιν καὶ τῆς κατὰ σωματικῆς.  
 ὁ δ' ἐπίκουρος ἐν τῷ ποδὶ αἰρέσεως οὕτω λέγει. ἡ  
 μὲν γὰρ ἀταραξία καὶ ἀκνία, κατὰ σωματικὰ εἰ-  
 σιν ἡδοναί. ἡ δὲ χαρὰ καὶ εὐφροσύνη, κατὰ κίνησιν  
 ἐνδογεία βλέπνται. ἐπὶ πρὸς αὐτὸν κυρτωαίους. οἱ  
 μὲν, γὰρ χεῖρτες τὰς σωματικὰς ἀλγηδόνας τῶν  
 ψυχικῶν. ὁλαζέσθαι γοῦν αὐτὸν ἀμαρτάνοντας σώ-  
 ματι. ὁ δὲ, τὰς ψυχικὰς. τῶν γοῦν στερηθῆναι τὸ παρὸν  
 μόνον σχηματίζειν, τῶν δὲ ψυχικῶν καὶ τὸ παρελθόν,  
 καὶ τὸ παρὸν, καὶ τὸ μέλλον. οὕτως οὖν καὶ μείζονας  
 ἡδονὰς εἶναι τῆς ψυχῆς. ἀρδείξει δὲ χρῆται τὸ τέ-  
 λους εἶναι τῶν ἡδονῶν, ὡς τὰ ζῶα ἅμα τῷ γέννηθῆ-  
 ναι, τῶν μὲν ἐναρξέσθαι. τῷ δὲ πένω πρὸς κρούειν  
 φυσικῶς καὶ χωρὶς λόγου. αὐτὰ παθῶς οὖν φύσιν  
 τῶν ἀλγηδόνων, ἵνα καὶ ὁ ἡρακλῆς κατὰ βιβρωσὴν  
 μὲν τὸ ὑπὸ τοῦ χιτῶνός,

ἀμφὶ δ' ἴσον πετρεῖται

λακρῶν τ' ὄρειοι πρῶν δὲ ἐν βοίᾳ τ' ἄκρᾳ.

Διὰ δὲ τῶν ἡδονῶν καὶ τὰς τέχνας αἰρεῖσθαι οὐ δι



αὐτὰς. ὥς πορ τῷ ἰατρικῷ ὅλα τῷ ὑγίειαν. καὶ  
 δά φησι καὶ διογῆνης ἐν τῇ εἰρήσῃ ὑπὸ λίκτω. ὃς καὶ  
 διαγωγὴν λέγει τῷ ἀγωγῷ. ὃ δ' ἐπίκουρος φη-  
 σὶ τῷ ἡδονῷ μόνῳ τῆς ἀρετῆς. τὰ δ' ἄλλα γυναι-  
 κείνα, οἷον βραταί. καὶ φοβεῖ ὅτι δὴ νῦν τὸν κη-  
 λοφῶνα, ὡς αὖ εἶπεν τις ἐπιθῶμεν τοῦ παντός  
 συγγράμματι, καὶ τοῦ βίου τοῦ φιλοσόφου,  
 τὰς κυρίας αὐτοῦ Δόξας παραθέμενοι, καὶ ταύ-  
 ταις τὸ πᾶν σύγγραμμα κατακλείσαντες, τέ-  
 λει χρησάμενοι, τῇ τῆς εὐδαιμονίας ἀρχῇ. ἥ μα-  
 κροτέρη καὶ ἀφαιρέσιμος, οὔτε αὐτὸ πρᾶγματα ἔ-  
 χει, οὔτε ἄλλω παρέχει. ὥς τε οὔτε ὀργαῖς, οὔτε  
 χολαῖς σιωπῇ. ἐν ἁδὲν γὰρ πᾶν τὸ τοιοῦ-  
 τόν. ἐν ἄλλοις δὲ φησι τὸς θεοὺς λόγῳ θεωρητοῦς.  
 οὐδὲ μὲν κατ' ἀριθμὸν ὑφιστάμενος. οὐδὲ κατὰ ὁ-  
 μοειδίαν ἐκ τῆς σιωπῆς ἐπιρρύσεως τῶν ὁμοί-  
 ων εἰδῶτων ὑπὸ τὸ αὐτὸ ἀποτελεσθέντων ἀνθρώ-  
 ποιόθεν. ὁ θαύμασθαι οὐδὲν πρὸς ἡμᾶς. τὸ γὰρ δι-  
 αλυθεῖν ἀνασθητῇ. τὸ δὲ ἀνασθητοῦ, οὐδὲν  
 πρὸς ἡμᾶς. ὅθεν τοῦ μεγίστου τῶν ἡδονῶν, ἡ παν-  
 τὸς τοῦ ἀλγοῦς ἐπαρκαλίξις. ὅπου δ' αὖ τὸ  
 ἡδόμενον ἐντὶ, καὶ ὅμ αὖ χρόνον ἢ, οὐκ ἔστι τὸ ἀλ-  
 γοῦν, ἢ τὸ λυπούμενον, ἢ τὸ σωμαφότον. οὐ-  
 χρόνιζεν τὸ ἀλγοῦν σιωπῇ ἐν τῇ σαρκί. ἀλλὰ  
 ἢ μὲν ἄκρον

τὸ μὲν ἄκρον, τὸν ἐλαχιστον χρόνον πάσχει. τὸ  
 Δὲ μόνον ὑποδρεῖνον, τὸ ἠδόμενον ἐν τῇ σαρκί,  
 καὶ εἰ πρὸς τὸ ἀλγοῦν. οὐκ ἔστιν ἡδέως ζῆν, ἀ-  
 νδρὶ τοῦ φρονίμως καὶ ἡσυχῶς, καὶ Δικαίως αἰετὶ  
 τοῦ ἡδέως. ὅτω Δὲ τοῦτο μὴ ὑπάρχει, οὐ γὰρ  
 φρονίμως καὶ ἡσυχῶς. καὶ ὃ Δικαίως ὑπάρχει,  
 οὐκ ἔστι τοῦτον ἡδέως ζῆν, ἕνεκα τοῦ θαρρῆναι ἐν  
 ἀνθρώπων, ἢ κατὰ φύσιν ἀρχῆς καὶ βασιλείας  
 ἀγαθόν, ἐν ᾧ ἂν ποτε τοῦτο οἶτο· ἢ παρα-  
 σκευάζεσθαι. ἢ Δοξοὶ καὶ πρὸς βλεπῶντι τινὲς ἐν  
 βουλήθησαν γινώσκειν, τὴν ἐν ἀνθρώπων ἀσφα-  
 λειαν οὕτω νομίζοντες πρὸς ποιήσεσθαι. ὥς τε  
 εἰ μὲν ἀσφαλὲς ὁ τῶν τοιούτων βίος, ἀπέλα-  
 βον τὸ τῆς φύσεως ἀγαθόν. εἰ Δὲ μὴ ἀσφαλὲς,  
 οὐκ ἔχουσιν οὐ ἕνεκα ἐν ἀρχῇ κατὰ τὸ τῆς φύ-  
 σεως οἰκῆσθαι ὠρέσθαι. οὐδὲ μίαν καθ' ἑαυτὴν  
 ἡδονὴν κακὴν. ἀλλὰ πινῶν ἡδονῶν ποιητικὰ, πρὸς  
 πλασίστου ἐπιφορὰς τὰς ὁχλήσεις τῶν ἡδονῶν.  
 εἰ κατεπυκνῶντο πᾶσαι ἡδοναὶ καὶ χρόνοι, καὶ πε-  
 ριόδοι ἢ ἀβροισμα ὑπερχεν ἢ τὰ κυριώτατα μέ-  
 ρη τῆς φύσεως, οὐκ ἂν ποτε διέφορον ἀλλήλων αἱ ἡ-  
 δοναί. εἰ τὰ ποιητὰ τῶν πρὸς τοῦ ἀσωματῆτος ἡ-  
 δονῶν. ἔλεγε τὸ φόβος τῆς διανοίας, τὸ τε  
 πρὸς μετεώρων καὶ θανάτου καὶ ἀλγυδόνων. ἐπὶ  
 τὸ πόδας τῶν ἐπιθυμιῶν ἐδίδασκεν οὐκ ἂν  
 ποτε εἴηλη



ηρτε εἶναι μεν ὅτι μεμψάμεθα αὐτοῖς πάντῃν εἰς  
 πληρουμένους τῶν ἡδονῶν, καὶ ἑδαιμόθεν, ὅτε ῥ' ἄλ-  
 γουῶν, ὅτε ῥ' λυπώμενον ἔχουσιν, ὁ πόρ' ὅστις ῥ' κα-  
 κόν, εἰ μὴτε ἡμᾶς αἰ τῶν μετεώρων ὑποφίαι ἡνῶν  
 χλαυ. καὶ ποῦ θανάτῳ μήποτε πρὸς ἡμᾶς εἴπῃ  
 σι τετόλμημα νοεῖν. σὺ ὅρ' οὖν τῶν ἀλγυδόνων καὶ  
 τῶν ὑπθυμιῶν ἐκ αὐτῶν προσεδόμεθα φυσιολογίας.  
 ἐκ τῶν ῥ' φοβούμενον λύειν ὑπὸ τῶν κυριωτάτῶν  
 μὴ κατειδότε τίς ἢ τοῖς σύμπαντι φύσις, ἀλλ'  
 ὑποπτοδόμενον π τῶν κατὰ σὺ μύθου. ὥς τε ἐκ  
 τῶν αὐτῶν φυσιολογίας ἀνδραίας τὰς ἡδονὰς ἀκλαμ-  
 βαίνειν. ὅθεν ὀφείλῃ τῶν πλὴν κατ' ἀνθρώπου ἀσι-  
 φαλῆαν κατὰ σκευάρεται, τῶν αὐτῶν ὑπὸ τῶν  
 καθεσότην, καὶ τῶν ὑπὸ γῆς, καὶ ἀπλῶς τῶν ἐν τοῖς  
 ἀπείρῳ, τῆς ἀσφαλείας τῆς δι' ἀνθρώπων γινομένης  
 μέχει πνός. δυνάμει τὴν διδρασιτικὴν καὶ ὑπο-  
 ρία ἐλκόμενασθαι γίνεται, ἢ ἐκ τῆς ἰσυχίας καὶ  
 ἐκχωρήσεως τῶν πρὸς ἀσφάλεια. ὁ τῆς φύσεως  
 πλοῦτος καὶ ὤρειται καὶ ὑπὸ οὐραῖς ὅστις. ὁ δὲ τῶν  
 κενῶν δοξῶν, εἰς ἀπειρον ἐκπίπτει. βραχία σοφῶ  
 τύχη παρεμπίπτει. τὰ δὲ μέγιστα καὶ κυριώτατα,  
 ὁ λογισμὸς δύνει, καὶ ἡτ' ῥ' συνεχῇ χρόνον διαν-  
 κεί, καὶ διοικῆται. ὁ δὲ καὶ ἀταρακτότατος. ὁ δ'  
 ἀδύνατος, πλείους ταραχῆς γέμων. ἐκ ἐπαύξεταί ἡ  
 ἡδονὴ ἐν τῇ σαρκί, ἐπειδὴν ἀπαξ ῥ' κατ' ἐνδεῖαν  
 ἀλγοῦν

ἀλγοῦν θλαίρεθῃ, ἀλλὰ μόνον πικίλλεται. τῆς δὲ  
 θλανοίας τὸ πόρας τὸ κατὰ τὴν ἡδονὴν ἀπεργνύνει  
 σεν, ἢ τε τῶν αὐτῶν ἐκλόγῃς καὶ τῶν ὁμογενῶν  
 τέρσις, ὅσα αὖτε μεγίστου φόβου παρδουσίαζε τῇ  
 θλανοίᾳ. ὁ ἀπειρεῖ χρόνῳ ἴσῳ ἔχει τὴν ἡδονὴν,  
 καὶ ὁ πεπόρασμένῳ. καὶ τις αὐτῆς τὰ πόρατα  
 κατὰ μετρήσῃ ἡδονῶν λογισμῶ, ἢ μὴν σὰρξ ἀπέλαβε τὰ  
 πόρατα τῆς ἡδονῆς ἀπειρα, καὶ ἀπειρεῖ αὐτῶν  
 χρόνῳ παρδουσίασεν. ἡ δὲ διάνοια τοῦ τῆς σαρκί-  
 νος, τέλους καὶ πόρατῳ λαβοῦσα τὸν ὡν λογισ-  
 μόν, καὶ αὖτε ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ φόβου ἐκλύσασα,  
 τὴν παντελῆ βίον παρδουσίασε, καὶ οὐθὲν ἐπὶ τοῦ ἀ-  
 πείρου βίου προσεδέηθημεν. ἀλλ' ὅτε ἔφυγε τὴν ἡ-  
 δονὴν, ὅδ' ἠνίκα τὴν θλαγωγίαν ἐκ τοῦ ζῆν τὰ πλά-  
 γματα παρδουσίαζεν, ὥς ἐλπίσεν ὅτι πὶ τοῦ ἀο-  
 ρίστου βίου κατέσχευεν. ὁ τὰ πόρατα τοῦ βίου κα-  
 τεδῶς, οἶδεν ὥς ἀπείριστον ὅτι τὸ ἀλγοῦν κατ' ἐν-  
 δειαν θλαίρου, καὶ τὸ τὴν ὅλον βίον παντελῆ καδι-  
 σαῖν. ὥς τε ὁ δὲ προσδίδεται πραγματῶν ἀγῶνας  
 κεντημένῳ. τὸ ὑφειρηκὸς δὲ τέλῳ ὡν λογίζεσθαι,  
 καὶ πάσαν τὴν ἐργασίαν, ἐφ' ἣν τὰ δεξαζόμενα  
 ἀνάλγομεν. εἰ δὲ μὴ, πάντα ἀκρίσιας καὶ ταραχῆς  
 ἔσαι μεσὰ. εἰ μάλ' ἡ πάσας ταῖς αἰσθησῶν, οὐχ  
 ἔξεις οὐδ' ἂν αὐτῶν φῆς διεφεύδαι, πρὸς τὴν  
 πριούμεν τὴν ἀναγωγὴν κρήνης. εἰ πῦα ἐκβαλ-



λης ἀπλῶς αἰδοῦσιν καὶ μὴ διαίρειν εἰς τὸ δοξα-  
 ζόμενον καὶ τὸ προσμεγνόν καὶ τὸ παρὸν ἢ δὴ κατὰ  
 τὴν αἰδοῦσιν καὶ τὰ πάθη, καὶ πᾶσαν φαντασιῶν  
 ὑπὸ βολῶν τῆς διανοίας, σωταρῶν καὶ τὰς λοι-  
 πὰς αἰδοῦσεις τῇ ματαίᾳ δόξῃ, ὥς τε τὸ κειτῆρι-  
 ον ἅπαν ἐμβαλεῖς. εἰ δὲ βεβαιώσεις, καὶ τὸ προσ-  
 μέγρον ἅπαν ἐν ταῖς δοξαστικαῖς ἑννοίαις, καὶ τὸ μὴ  
 τὴν ὑπερμαρτύρησιν οὐκ ἐκλείψεις τὸ διεφθυσμέ-  
 νον ὡς τετρηκῶς, εἰς ἅπασαν ἀμφοσβήτησιν, καὶ  
 πᾶσαν ξῆσιν τοῦ ὀρθῶς, ἢ μὴ ὀρθῶς. εἰ μὴ παρὰ  
 πάντα καιρὸν ἐπανοίσεις ἑκασον τῶν πατρύ-  
 νων ὑπὸ τὸ τέλος τῆς φύσεως, ἀλλὰ προκατα-  
 σφίσεις εἴτε φυγῶν, εἴτε διώξιν ποιούμενῃ εἰς  
 ἄλλο τί, οὐκ ἴσονται σοι τοῖς λόγοις αἱ πρῶται αἱ  
 κήρυκτοι. τῶν ὑπερθυμῶν ὅσαι μὴ ἐπ' ἀλγοῦν ἐπα-  
 ναλγουσιν, καὶ μὴ συμπληρωθῶσιν, οὐκ εἰσὶν αἱ  
 ναγκαῖαι. ἀλλ' ἐν διαδόχῳ τὴν ὀρεξιν ἔχουσιν,  
 ὅταν δυσπρόριστοι, ἢ βλάβης ἀπὸ γαστρὸς δόξωσιν  
 εἶναι. ὧν ἡ σοφία παρὰ σκεδάζεται εἰς τὴν τοῦ  
 ὅλου βίου μακαριότητα, πολὺ μέγιστον ὄστιν, ἢ τῆς  
 φιλίας κτήσις. ἡ αὐτὴ γνώμη θαρσύνει τε ἐπιόιν-  
 σιν ὑποδὸν τοῦ μηθὲρ αἰώνιον εἶναι Δεινόν, μηδὲ  
 πολυχρόνιον. καὶ τὴν ἐν αὐτοῖς τοῖς ὠλεσμένοις  
 ἀσφαλείαν φιλίας, μάλιστα κατέναι σωτέλου  
 μέγιστον. τῶν ἐπιθυμῶν, αἱ μὲν εἰσι φυσικαί, καὶ  
 οὐκ ἀναγ-

οὐκ ἀναγκαῖαι. αἱ δὲ, οὔτε φυσικαί, οὔτε ἀναγ-  
καῖαι, ἀλλὰ παρὰ κενὴν δόξαν γινόμεναι. φυσι-  
κὰς καὶ ἀναγκαίας ἡγέεται ὁ ἐπίκουρος, τὰς ἀλ-  
γυδιόνας ἀπολουσας, ὡς ποταῖρ ὑπὸ δίψῃ. φυ-  
σικὰς Δὲ καὶ οὐκ ἀναγκαίας, τὰς ποικιλοφύτους  
μόλις τὴν ἡδονὴν, μὴ ὑποδραμεύοντας διὰ τὸ ἀλ-  
γισμα, ὡς πολυτελὴ σιτία. οὔτε Δὲ φυσικὰς,  
οὔτε ἀναγκαίας, ὡς σεφάινουσιν καὶ ἀνδροκρίτων  
ἀναβήσεις. ἐν αἷς τῶν φυσικῶν ἐπιθυμιῶν, μὴ ἐν  
πᾶσι γούμ Δὲ ἐπαναγουσῶν ἐὰν μὴ σωτελεσθῶ-  
σιν, ὑποέρχει ἡ σπουδὴ σωτῆρος, παρὰ κενὴν  
δόξαν αὐταὶ γίνονται, καὶ οὐ παρὰ τὴν ἑαυτῶν  
φύσιν· οὐ διὰ χρεῖαν τινὰ, ἀλλὰ παρὰ τὴν τοῦ  
ἀνθρώπου κρηνοδοξίαν. τὸ τῆς φύσεως δίκαιόν ἐστι  
σύμβολον τοῦ συμφέροντος, εἰς τὸ μὴ βλάπτειν  
ἀλλήλους μηδὲ βλάπτεσθαι. ὅσα τῶν ζώ-  
ων μὴ ἡδύναντο σωθήκας ποιέειν τὰς ὑποδρῶ-  
ν μὴ βλάπτειν, ἀλλὰ μηδὲ βλάπτεσθαι, πρὸς  
ταῦτα οὐθέν ἐστιν, οὐδὲ δίκαιον, οὐδὲ ἄδικον. ὡς  
σαύτως Δὲ καὶ τῶν ἐθνῶν ὅσα μὴ ἡδυνάτο, ἢ ἐν-  
βούλῃ τὰς σωθήκας ποιέειν, τὰς ὑποδρῶν τοῦ  
μὴ βλάπτειν, μηδὲ βλάπτεσθαι. οὐκ ὡς τίς κα-  
θ' ἑαυτὸ δικαιοσύνη. ἀλλ' ἐν ταῖς μετ' ἀλλήλων  
συμφοραῖς, καθ' ὅπῃ λίκουσιν Διήποτε αἰεὶ τόπος  
σωθήκη τις ὑποδρῶν τοῦ μὴ βλάπτειν, ἢ βλά-  
πτεσθαι



πτεοῦται. ἡ ἀδικία, οὐ καθ' ἑαυτὴν κακόν. ἀλλ' ὅν  
 τῳ κατὰ τὴν ὑποψίαν φόβω, εἰ μελήσει ὑποδῶ  
 τῷ ῥιούτῳ ἐφεσηκώς κολασάς. οὐκ ἔστι ῥη λαλῶ  
 θεα τὶ ποιοῦντα ὡς σωέσθην πρὸς ἀλλήλους εἰς  
 τὸ μὴ βλάπτειν καὶ βλαπτεῖσθαι, πιστεύειν ὅτι  
 λήσει, καὶ μνησθήσεται ὑπὸ τοῦ παρόντος λαμβάνειν.  
 μέλει γὰρ κατὰ σφοδρῆς, ἀδίκου εἰ καὶ λήσει. κατὰ  
 μὲν κρινόν, πᾶσι τὸ δίκαιον ὅ καὶ τὸ συμφέρον γινώ  
 σκονται ὡς ἐν τῇ πρὸς ἀλλήλους κρινωνίᾳ. κατὰ δὲ τὸ  
 ἴδιον, χάρας καὶ ὄσωρ δέχοιτο αἰτιῶν, οὐ πᾶσι συ  
 νίπεται τὸ αὐτὸ δίκαιον εἶναι. ὅ μὲν ὑπὸ μαρτυροῦ  
 μένον, ὅτι συμφέρει ὅν ταῖς χρεῖαις τῆς πρὸς ἀλ  
 λήλους κρινωνίας, τῷ νομοδύνατον εἶναι, ἐὰν τε ὅ  
 αὐτὸ πᾶσι γινώσκται, ἐὰν τε ὅ αὐτὸ πᾶσι μὴ γινώ  
 σκται. ἐὰν δὲ νόμοθετῇται τί, μὴ ἀπ' βαίνειν δὲ κατὰ τὸ  
 συμφέρον τῆς πρὸς ἀλλήλους κρινωνίας, οὐκ ἔστι  
 ἴσα τῷ τοῦ δικαίου φύσει ἔχει. καὶ μεταπίπτει  
 τὸ κατὰ τὸ δίκαιον συμφέρον, χρόνον δὲ τινα εἰς  
 τὴν πρόληψιν ἐναρμόττει, οὐδὲν ἢ τῶν ἐκείνων τῶν  
 χρόνων ὡς δίκαιον ῥίς μὴ φωναῖς καὶ αἰσῶν  
 σὺνταράττυσι, ἀλλὰ πλείεστα πλάγματα βλέ  
 πουσιν. γινώσκει μὲν κρινῶν γνησιότητος τῷ πόσεισώτῳ  
 πεινῶντων, οὐκ ἐπὶ σωφρονεῖ τὰ αὐτὰ δίκαια καί  
 μεν. γινώσκει δὲ τότε μὲν ὡς δίκαια, ὅτε σωφ  
 ρονεῖ εἰς τὴν πρὸς ἀλλήλους κρινωνίαν τῶν πλε  
 ονέων

τδουομγνῶμ· ὕσδρον δὲ οὐκ ἴω ἔπ δίναια, ὅτε μὴ συ/  
 νίφοδον. ὁ τὸ θαρρόν ἀπ τῶν ἔξωθεν ἄρῃσα συση/  
 σάμην, οὗτ' τὰ μὲν δινάτῃ, ὁμόφυλα ηἰστέ/  
 σινδύαταρ. τὰ δὲ μὴ δινάτῃ, οὐκ ἀλλόφυλα γε,  
 ὅσα μὴδὲ ἴδω δινάτῃ ἴω, ἀνεπίμκτ' ἐγγήρ,  
 καὶ θηρίσκαρ ὅσα τοι λυσίτελῃ πρᾶτῃμ. ὅσοι τὴν  
 δινάμην ἔχον τοι θαρρόν μάλισα ἐκ τῇ ὁμορύν/  
 των παρασινδύαταται, οὗρι καὶ ἐβίωσαμ μετ' ἀλ/  
 λήλων ἡδισον, βεβαιότατ' ἐπίσωμα ἔχοντες,  
 καὶ πληρεσάτῃν ὀικεότῃτα ἀφλαβόν/  
 τες, οὐκ ὠδύροντο, ὥς ἔλεον  
 τὴν τοι τελευτήσαν/  
 τ' πρῶτα/  
 σφοδρῶ.

Τ Ε Λ Ο Σ



ΕΝΕΤΥΡΩΘΗ ΕΝ ΒΑΣΙΛΕΙΑ

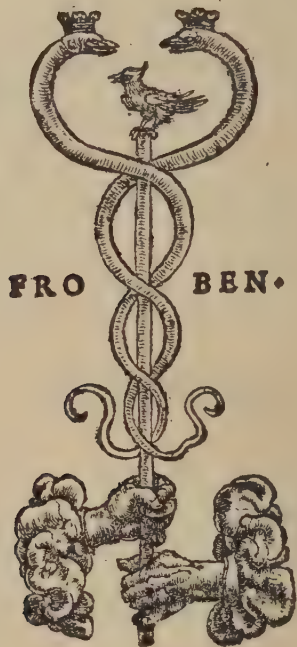
παρ' ἰδρυνύμω τῷ φρωβγνίω καὶ  
νικολαῷ τῷ ὑπὸ σκωτίω  
ἔτει θεογονίας  
ᾠ φ ᾠ γ.

Index duernionum.

ı a b c d e f g h i k l m n o p  
q r s t u x y z A B C D E F  
G H I K L M N O P Q R S  
T V X Y Z aa bb cc dd ee ff  
gg hh ii kk ll mm nn oo pp qq  
rr ss tt uu xx yy zz AA BB CC











15

10080584

27. fe 2023



